भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ।
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

वर्ग संख्या H·P
Class No. 891·4305
पुस्तक संख्या H 6171
Book No. V·7
रा० पु० / N. L. 38.

MGIPC—S19—69/1842/14 LNL (PB)—25-5-70—150,000.

Contains:
हिन्दी प्रदीप, v. 15, 16 (1891–1893)

Also includes:
भारतेन्दु, v. 5, nos. 1–6, 1890–91.

हिन्दी-प्रदीप

Rare Book

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि०-१५ सं०-१ } प्रयाग { सितंबर—१८९१

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

SHELF LISTED

Rare Book

H. P
891.4305
H6171
V.7

Rs. 7500.
Comp. Set

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १५ संख्या १ } { सितम्बर सन् १८९१

NATIONAL LIBRARY
No. 2155
DATE 2-11-74
CALCUTTA

वर्षारम्भ ॥

तीन पांच पन्दरह होते हैं लोग जहां तक होता है किसी से तीन पांच बरकाते हैं आज हम उसी तीन पांच के पेच में पड़े हैं ईश्वर ही कुशल करे—मनुष्य के अस्थिर जीवन में जहां एक दिन का भी ठिकाना नहीं वहां हम ने इतना लम्बा समय चौदह वर्ष खे डाला यह क्या उस करुणा वरुणालय की कोई असाधारण कृपा का परिणाम न कहा जायगा ?—यदि बड़ा बोल न माना जाय तो साथ ही हम यह भी कहेंगे कि हमारे ये चौदह वर्ष उस तरह के नहीं बीते कि येन केन किसी तरह दूसरों का उच्छिष्ट जूठा लेख लिख लिखाय भरती कर पत्र पूरा कर दिया गया हो बरन प्रथम अङ्क से आरम्भ कर आज तक कोई ऐसे अङ्क नहीं निकले जिस्में रसिकपाठकों के मन को विनोद देने वाली कुछ न कुछ सारगर्भित वस्तु न रही हो——यदि हमारे पढ़ने वालों का छोह हम पर ऐसा ही बना रहा दूसरे यह कि देशकालकृत कोई कराल दुर्घटना का असर हम पर न व्यापा जो सम्पादकों के लिये इन दिनों बहुत सुलभ है विशेष कर ऐसे नाजुक वख्त में जब बिन २ कर कुटिलकाल एडिटरों को कलेवा करने के लिये मुस्तैद हो रहा है—इत्यादि दुर्घटानाओं से बचे रहे तो दूसरा भी एक ऐसा ही पन्दरह वर्ष बिता देना कौनसा अचरज है—अस्तु वर्षारम्भ में मङ्गल का सूचक सरस यमकावली का यह संग्रह उपहार की भांत आप के निवेन है ।

विविध रतन मनि लसित नवल तन ।
छिन छिन छबि बर बढ़त मनहु घन ॥
सरद सुभग ससि सम सुसरस मुख ।
मुरलि रणित कर कमल श्रवन सुख ॥
ब्रज जन सुखद सकल जग परहित ।
विधि शिव नमित चरनयुग नित नित ॥
अलक झलक लखि ललकत तिय मन ।
कनक बरन पट निपट सुखद तन ॥
दरहु सकल सुख पतित अधम मम ।
प्रिय तम हरि तव चरन सरन हम ॥

अङ्गरेज़ी कानूनों का तत्त्व और उसको बर्त्ताव में लाने की प्रणाली ।

अंगरेज़ी कानूनों से हमारा प्रयोजन उस कानून से है जो हमारी सर्कार की संस्थापित कचहरियों में जारी है—हिन्दुओं के धर्मशास्त्र और मुसलमानों की शरा को जिसमें दोनो जातियों के व्यवहार और स्वत्व का निर्णय है अलग कर देखिये तो सामान्य रीति पर यह कह सक्ते हैं कि बाकी जो बचा वह सब नया और अंगरेज़ी कानून है—नये से हमारा यह मतलब है कि इन कानूनों का जन्म कर्म और वृद्धि का इतिहास केवल सौ सवासौ वर्ष के भीतर ही का है—यहां पर हम संक्षेप समालोचना इस बात की किया चाहते हैं कि यह कैसे लोगों का लाया हुआ है—स्वयं इसका तत्व किस प्रकार का है—किन लोगों में किन लोगों के वास्ते और किन लोगों के द्वारा इसका व्यवहार होता है "ऐडमिनिस्टर्ड" या काम में लाया जाता है—यह तो प्रत्यक्ष ही है कि ये कानून हम लोगों के वर्त्तमान शासकों के बनाये हुये हैं जिनके बारे में हम यह अवश्य कहेंगे कि ये स्वभावतः नियम बद्ध "कन्स्टिटूशनल" और "ला बिंग" कानून के पाबन्द विशेष हैं—तात्पर्य यह कि एशियाखण्ड

को तो सर्वथा अलग कर दीजिये यूरोपखण्ड के एक२ देश जो सभ्यता के शिखर पर चढ़ रहे हैं उन से इन के कानूनों का मिलान और तारतम्य करने पर सब भांत पूर्ण और उमदगी का पलरा इसी ओर झुकेगा—राज नैतिक आन्दोलन हमारे शासकों के मुल्क में और देशों की अपेक्षा कम नहीं हुआ "कामनवेल्थ" सर्व सामान्य प्रभुत्व इन के यहां हुआ—अपने राजा चार्ल्स पहिले का सिर इनके यहां काटा गया—इससे बढ़ कर राज विद्रोह और क्या हो सक्ता है ? किन्तु इन सब बड़े२ उपद्रवों से भी अङ्गरेज़ जाति की कुछ हानि हुई जिसके कारण इन्हें कुछ क्लेश सहना पड़ा या इनकी प्रतिष्ठा और महत्व में किसी तरह की कमी आ गई सो नहीं जैसी संपत्ति और अमन अमान पहले था उससे बढ़ कर जल्द इन लोगों ने हासिल कर लिया और दिन २ बढ़ते ही गये—वहां फ्रान्स है कि उसने भी शासन प्रणाली बदला पर परिणाम उसका यह हुआ कि मुल्क के चिथरे २ उड़ गये और अब तक अस्तव्यस्त दशा में है—कानून के पावन्द ये लोग कहां तक हैं यह इसी बात से प्रगट है कि इनके यहां राजा और बादशाहों के बनाये हुये कानूनों की परम्परा देखिये तो सैकड़ों वर्ष से है राजाओं के बनाये उन कानूनों का नाम स्टेच्यूट्स है और वे अब तक बड़े यत्न से संगृहीत हैं—

हमारे पाठक इन कानूनों को जिन्हें स्टेच्यूट कहते हैं अपने यहां की स्मृतियों के समान न समझें क्योंकि स्मृतियां अधिक तर उपदेश के ढंग पर हैं व्यवहार से उनका बहुत कम संबन्ध है जो कुछ उसमें है सो अदृष्ट से लगाव रखते केवल धर्म अधर्म के विचार पर है—इन दिनो कासा "लिटिगेशन" विवाद प्रतिवाद के निर्णय की नियामक वे स्मृतियां न थीं—बरन ये स्टेच्यूट सब "सेकशनवार" प्रकरण बहु खण्ड २ और अध्याय २ अलग २ थे जिन पर मुकदमे फैसल होते थे—यहां पर यह भी अवश्य कहेंगे कि कानूनो का "कोंडीफइड" संहिता के रूप में होना खास वख्त और खास हालत की बात है—हम लोगों के यहां इस प्रकार "कोड़ीफइड ला„ सेकशनवार कानून हुई नहीं—कानून के परमाचार्य मेन साहब ने साफ २ लिखा है कि हम लोग "कोडअफमन्ड „का जो व्यवहार करते हैं वह इस समय की पीनलकोड आदि की भांत न था कि यह कानून जो बनाया गया वह अमुक वर्ष के अमुक महीने और अमुक तिथि से व्यौहार में आने लगा बरन उनके न्याय के शासन

की प्रणाली यह थी कि वादी प्रतिवादी राजा के सामने आये और राजा ने धर्मबुद्धि के अनुसार झगड़ा फैसल कर दिया–राजा ही जज था या अगर याज्ञवल्क्य आदि स्मृति कारों ने प्राड्विवाक इत्यादि पद के नाम लिखे हैं तो उनसे भी यह नहीं पाया जाता कि ये कानून या स्मृतियां जिनके अनुसार प्राड्विवाक लोग मुकदमे फैसल करते थे अब कि भांत नज़ीर कर दिये गये होते—इन दिनों की तरह अदालत के सब सिलसिले कहां तक थे सन्दिग्ध ही है और न ये वकील मुख्तार थे जिन का जन्म अङ्गरेज़ी कानून के साथ ही साथ हुआ है इस लिये इन्हें अङ्गरेज़ी कानून के बच्चे कहें तो कुछ असंबद्ध न होगा न यही कहना अत्युक्ति होगी कि "कोर्ट अफजसटिस," "जज," "लइयर," "ला," "सिविल," और "क्रिमिनल," इत्यादि सब हमारे मुल्क में इन्हीं का लाया हुआ है–इस राज्य के पहिले हम जानते भी न थे कि ये सब किस चिड़िये के नाम हैं–और इनके यहां ये सब बातें बहुत आदि काल से हैं–यहां तक कि दो चार सौ वर्ष के मुकदमों की नज़ीरें अब तक काम में लाई जाती हैं—इसी से पाठक जन समझ लें कि इनके कानून में कहां तक एक २ लब्ज पर हिन्दी की चिन्दी की गई है—

हिन्दुस्तान के लिये जो कानून इन्हों ने गढ़ा वह तो उस्से भी अधिक सेक्शन वार और "टेकनिकल" अर्थात् हिन्दी की चिन्दी से भरा है दूसरी बात इन कानूनों पर ध्यान देने की एक यह भी है कि इस्के गढ़ने वाले दूसरे लोग हैं और उन्हें वर्त्ताव में लाने वाले दूसरे—उन्हें वर्त्ताव में लाने वालों का काम खास २ मुकद्दमें देख उन बने हुए कानूनों के शब्दों का अर्थ लगाना मात्र रह गया है—इस कारण हम यही कहेंगे कि यहां इन कानूनों का वर्त्ताव और भी संकीर्ण और पेचीदा हो गया है–स्मृतिकारों ने हमारे यहां व्यवहार के केवल १८ पाद लिखे हैं उन्हें इन के कानूनों ने बारीकी निकालते निकालते १८ के कम से कम अठारह सौ कर डाला–

इन के कानून में व्यवहार की बुनियाद साक्षी पर रक्खी गई है—जो कानून दुनियाभर के यावत् कानूनों में प्रशस्त और अग्रगण्य हो उस्का व्यवहार इस प्रकार संकीर्ण और हिन्दी की चिन्दी से भरा हुआ हो कि अभी तक पूर्णता को नहीं पहुंचा—"प्रोसिड्यूर," अदालती काम चलने की प्रणाली जिस्के अनुसार मुकदमे फैसल होते हैं वह इस्से भी अधिक पल्लवित और

सचाई की शोभा गरुआपन से है ॥

सच्चे और खरे सुनने में बहुधा आते हैं पर ऐसे लोग देखने में बहुत कम आंये—यह सन्दिग्ध ही है कि फी ज़माने ऐसे भी पुरुष रत्न कहीं किसी स्थान में विद्यमान हैं? सचाई से हमारा मतलब केवल लेन देन की सफाई से नहीं है यद्यपि मनुष्य का प्रधान पुरुषार्थ रुपया कमाना है और इस्में सफाई रखना सब से भारी बात है किन्तु हमारे लेख का विशेष उद्देश्य उस सचाई और खरापन से है जिस्का वर्त्ताव प्रतिक्षण हमारे जीवन में होता ही रहता है—विचार कर देखिये तो सब यही चाहते हैं कि हमारे ऐब ढंपे रहें और हमारे अच्छे काम प्रकाश पावें चाहो बाहर से आचरण हमारा इस लायक न भी हो—दोष देखने में जैसी चुस्ती और चालाकी देखी जाती है वैसी इस्में नहीं कि दूसरों के चरित्र पर न्याययुक्त सम्मति को काम में लायें—ऐसी दशा में प्रत्येक मनुष्य समाज में दूसरे के चरित्ररूप धरोहर का खज़ानची है वह उस्के मूल्य और जौहर को समझ सौत रक्खे या उसे उड़ा दे—जो अच्छे लोग हैं उन की यह साख है कि वे दूसरे के चरित्ररूप खज़ाने को नहीं बिगाड़ते उनकी सचाई और खरे पन की तभी शोभा है जब उनका गरुआपन भी साथ ही साथ निभता रहे—अपनी सचाई और खरेपन के जोश में आय हमने किसी के चरित्ररूप खज़ाने को बरबाद कर डाला तो कौनसी तारीफ की बात हुई बरन हमारी सूक्ष्म बुद्धि की कसौटी तो ऐसे ही नाज़ुक वख्त में हो सक्ती है कि हम अपने गरुआपन में विना दाग लगाये सचाई और खरे पन को निबाहैं—भोला यदि सच्चा और खरा हुआ तो वह वैसाही दूसरों को नुकसान पहुंचावेगा जैसा झूठा और कुटिल अपनी झुठाई और कपट से पहुंचाता है इस लिये सचाई की शोभा तभी है जब गरुआपन भी उसमें मिला हो—दूसरे के चरित्र खज़ाने की भी हम तभी अच्छी तरह सौंत सकेंगे जब गरुआपन के गौरव से आभूषित अपने को किये होंगे इस लिये निपट सचाई रूखे भोजन के समान समाज में कभी आदर नहीं पाती जब तक गंभीरता की चिकनाई से चुपड़ी हुई न हो तस्मात् यह कहना किसी तरह अयोग्य न होगा कि सचाई की शोभा गरुआपन से ही है—

लोकोक्ति कथा सरित्सागर से ॥

तत्क्षणं किन्न कुर्याद्धि प्रसादः परमेश्वरः ।

प्रभुवर यदि प्रसन्न हों तो एक दम में निहाल कर दे सक्ते हैं ॥

अक्लेशलभ्या हि भवन्त्युत्तमार्था महात्मनाम् ॥

बड़े लोगों को कठिन से कठिन बात भी विना क्लेशही के मिल जाती हैं ॥

निःशङ्कं दीयते लोकैः पश्य भस्मचये पदम् ॥

'राख के ढेर पर लोग पांव धर देने में ज़रा भी नहीं डराते—इसी तात्पर्य की एक लोकोक्ति किरात में है—

ज्वलितं न हिरण्यरेतसश्चयमास्कन्दति भस्मनां जनः ।

अभिभूतिंभयादसूनतः सुखमुज्झन्ति न धाममानिनः ।

जलती हुई आग को कोई नहीं पांव से कचरने की हिम्मत करता किन्तु राख के ढेर को सभी कचरते हैं—दूसरों से हमारा पराभव न हो इस लिये लोग जीने से हाथ धो बैठते हैं किन्तु निस्तेज हो अपनी हार नहीं चाहते—"निस्तेजः परि भूयते"—और भी—"बलवानपि निस्तेजाः कस्य नाभिभवास्पदम्"—

प्रवादमोहितः प्रायो न विचारक्षमो जनः ॥

झूठ अफवाह जो चल पड़ी सो चल पड़ी—नैषध में भी है—जनानने कः करमर्पयिष्यति"—यह अफवाह सच है या झूठ कोई नहीं विचारता—

अबुद्ध्वा चित्तमप्राप्य विस्रंभं प्रभविष्णुषु ।

न स्वेच्छं व्यवहर्तव्यमात्मनो भूतिमिच्छता ॥

मालिक का मन विना थहाये और विना उसके विश्वास का पात्र हुये कल्याण चाहने वाला अपने मन से कभी कोई काम न करै ॥

एकचित्ते द्वयोरेव किमसाध्यं भवेदिति ॥

दो आदमी एक मन हो जांय तो क्या नहीं कर सक्ते ॥

शीलं हि विदुषां धनम् ॥

शील पालन विद्वान् के लिये बड़ा धन है ॥

विभवैः किन्नु मूर्खस्य काष्ठस्याभरणैरिव ॥

कुन्देनातारात्र की दौलत वैसही है जैसा काठ के पुतले को कीमती जेवर

सम्पत्सु हि सुसत्त्वानामेकहेतुः स्वपौरुषम् ॥

पुरुषार्थियों को बड़ी सम्पत्ति प्राप्त करने का हेतु केवल उन का पुरुषार्थ है ॥

भवन्त्युदयकाले हि सत्कल्याणपरम्परा ॥

बढ़ती के समय सब अच्छा ही अच्छा होता जाता है ॥

पापं हि पदमापदाम् ॥

पाप कर्म विपत्ति का घर है ॥

मोघा हि नाम जायेत महत्सूपकृतिः कुतः ॥

अच्छे लोगों के साथ जो उपकार किया जाता है वह कभी व्यर्थ होता ही नहीं ॥

आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति ।

किसी काम के आरम्भ में कोई मङ्गल की बात हो तो उस कार्य को सिद्ध हुआ जानो—

एकोप्याश्रयहीनोपि लक्ष्मीं प्राप्नोति सत्ववान् ।

पुरुषार्थी अकेला विना किसी दूसरे के सहारे लक्ष्मी का कृपा पात्र हो सक्ता है—

वीरो हि स्वास्य महति ।

जो वीर है वही सब का स्वामी होने के योग्य है ।

किमदेयमुदाराणामुपकारिषु तुष्यताम् ।

उदार लोग अपने उपकारी पर प्रसन्न हो क्या नहीं दे देते—

कृतघ्ना धन लोभान्धा नोपकारेक्षणक्षमाः ।

कृतघ्न धन के लोभी दूसरे से किये हुये अपने उपकार को भूल जाते हैं—

दैवमेव हि साहाय्यं कुरुते सत्त्वशालिनाम् ।

पुरुषार्थी को दैव भी सहायता करता है—

वरं हि मानिनो मृत्युर्न दैन्यं स्वजनाग्रतः ।

जिन्हें अपनी प्रतिष्ठा और इज्जत का मान है वे मर जाना अच्छा समझते हैं पर अपने किसी एगाने के सामने दीन होना अच्छा नहीं मानते—

विश्वासः कुटिलेषु कः ।

कुटिल का क्या विश्वास ।

निसर्गः स हि धीराणां यदापद्यधिकं दृढाः ।

धीरज धारण करने वालों का यह स्वभाव होता है कि विपत् के समय और अधिक दृढ़ता गह लेते हैं—

भद्रकृत्प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रं चाप्यभद्रकृत् ।

अच्छा काम करने वाले का सदा अच्छा होता है बुरा काम करने वाले का बुरा ।

न तोषो महतां मृषा ।

बड़े लोगों का प्रसन्न होना व्यर्थ नहीं जाता ।

वाग्लभ्यमीश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः ।

विनोदरसिक धनीजन का मन ठठोल मनुष्य सहज में अपने मूठी में कर सक्ता है—

प्रत्ययं स्त्रीषु मुष्णाति विमर्शं विदुषामपि ।

स्त्रियों में विश्वास विद्वानों के भी विवेक को हर लेता है—

कामक्रोधौ मनुष्याणां मोक्षद्वारार्गलावुभौ ।

काम और क्रोध दोनो मनुष्य के लिये मोक्ष के द्वार की बेड़ी हैं ।

क्षेमीन्द्र कवि की उक्ति ।

संवृतान्येव शोभन्ते शरीराणि कुलानि च ।

शरीर और कुल तभी तक शोभा और प्रतिष्ठा पाता है जब तक ढंपा रहे—

त्यागिना किं दरिद्रेण किं कुलीनेन पापिना ।
तुष्टेन किं कदर्येण दर्पान्धेन बुधेन किम् ? ।

जिसे देने का स्वभाव पड गया है वह कितना ही दरिद्र हो जाय तब भी देगा—पाप रुचि के लिये उत्तम कुल में जन्म से क्या ?—कदर्य अति कृपण रीझा भी तो क्या दे सकेगा—अभिमान से अन्धा विद्वान् ही हुआ तो क्या—

दर्पभूताभि भूतस्य विद्यामूर्ख शतायते ॥

जिन पर अभिज्ञान भूतसा सदा चढ़ा रहता है ऐसें को विद्या सौ मूर्ख के तुल्य है ॥

सम्पूर्णोपि घटःकूपाद्गुण छिन्नः पतत्यधः ॥

भरी घड़ा भी गुण से छिन्न हेा नीचे गिर जाता है. "गुणशब्द यहां श्लेष युक्त है"—

दर्पः कस्य न पातायनोन्नत्यैकस्य नम्रता ॥

अभिमान किस्के अधःपात के लिये नहीं होता और नम्रता किस्की उन्नति के लिये नहीं—

युवातपस्वी किमतोऽस्ति हास्यं वृद्धः स रागः
किमतोस्ति निन्द्यम् ॥

जवान तपस्वी इस्से बढ़ कर हंसी की बात और क्या हेागी—बूढ़ा आशिक तन इस्से अधिक निन्दा और क्या है—

चतुर्वेदोपि दुर्वृत्तो शूद्रादल्पतरः स्मृतः ॥

चारोवेद का जानने वाला भी जेा दुर्वृत्त हेा तो वह शूद्र से भी अधिक नीच है—

अचरज ॥

हिन्दू धरम में एक मत—मुसल्मान का मज़हब बिना तअस्सुब—विद्यमान् राज्य की नीति और शासन प्रणाली हिकमत अमली से खाली—अंगरेज़ी कानून का सहारा पाय बेइमानी और फरेब को फरोग न होना—तालीम का उजाला पाप स्वत्व और अपने हक़ की पहचान का न होना—हिन्दुस्तान की बुझी पृथ्वी में जन्म लैके भी जोश—ब्रह्मज्ञान के विस्तार से मुल्क की तरक्की—विलाइती कारीगरी के मुकाबिले देशी चीज़ोंकी चाह—चुंगी में तरक्की के साथ ही साथ व्यौपार की तरक्की—गोरे और कालों की मुटभेड़ होने पर पक्षपात शून्य न्याय—इङ्गलेण्ड के क्षुधा की निवृत्ति—हिन्दुस्तान से अकर्मण्यता और सन्तोष का उच्छेद—विलाइत में गेहूं की रफ्तनी का बन्द होना और जिस्के बिना बन्द हुये हमारे देश में सुकाल—इत्यादि ये सब अचरज हमने

बहुत सोच समझ कर निकाले हैं इस्में एक भी झूठ और निरीगप्प नहीं हैं—अभी और बहुत से अचरज आप को बताना बाकी है पहले इतने को गौर कर अकिल के काटे में रख कर तौलिये एक साथ सब कह डालेंगे तो अचरज के समुद्र में डूबगोते खाते रहो गे—

गृहस्थी ॥

हमारे पुराने ग्रन्थकारों ने तो गृहस्थाश्रम पर बड़ा ही ज़ोर दिया है और सब आश्रमों से श्रेष्ठ इसे निश्चय कर गये हैं—और तीन आश्रम इसी गृहस्थ आश्रम के सहारे से निभते थे पर अब तो वह सब पुरानी बात हो गई और इस नई सभ्यता के ज़माने में पुरानीबात की जैसी क़दर है वह भी किसी से छिपी नहीं है—जो हो ब्रह्मचारी और वानप्रस्थ दो आश्रम तो टूट ही गये अब इस समय एक संन्यास आश्रम अलबत्ता बच रहा है जिस्के जैल में यावत् निकम्मे पेटपालने वाले सब शरीक हैं——उन्हें चाहो आप भिक्षुक कहिये चाहो विरक्त कहिये चाहो वनवासी कहिये चाहो परमहंस कहिये मठधारी वैरागी उदासी संन्यासी महन्त महन्त सब इसी गृहस्थ आश्रम के सहारे से जीरहे हैं और ये सब हमारे मुल्क में इतने अधिक बढ़े हुये हैं कि मरदुम शुमारी की किताब निकाल कर देखी जाय तो चौथाई नहीं तो कुल आबादी का छठवा हिस्सा ऐसे ही निकलेंगे जो इन गृहस्थों ही के बदौलत हलुआ पूरी छानते हैं निरे निकम्मे बेकाम बैठे रहते हैं धूनी ताप्ए करते हैं या तरह २ की आवारगी से दिन बिताते हैं—दूसरे यह कि संसार में प्रतिष्ठा जैसी गृहस्थ पासक्ता है और जैसा भारी भरखं यह समझा जाता है वैसा इन खाने बदोश टुच्चे कौपीनधारियों को कभी मिली नहीं सक्ती—यद्यपि इस अंगरेज़ीराज्य के कानून का असर बहुत दूर तक इन पर भी अब पहुंच गया है मठ तथाऔर २ ज़ायदात गांव गिराव इन का भी अब गिरों और नीलाम हो सक्ता है जैसा गृहस्थों का होता है किन्तु गृहस्थों के समान ये मठधारी रईस कभी नहीं समझे जा सक्ते न इन को गृहस्थों की भांत प्रतिष्ठा और उपाधि इत्यादि सरकार से कभी मिल सक्ती है—शास्त्र के अनुसार तो ये मठधारी सर्वथा च्युत न इधर के न उधर के वान्ताशी हुई हैं गवर्नमेण्ड भी इन की वह इज़्ज़त नहीं करता जो गृहस्थी में रह कर थोड़ी रियासत से मध्यमश्रेणी

वालों को मिल सक्ती है—तात्पर्य यह कि विवेक रहित लक्ष्मी भी इन लँगोटी वालों के पास जाय अपनी वह इज्ज़त और मान खो बैठती है जैसा गृहस्थ के पास रह कर पाती—आदमी के जीवन में सार पदार्थ गृहस्थी छोड़ और है क्या बाहर कितनी ही झँझट और दुर्दशा भोगा किये घर में पांव धरते ही दूध मुहे छोटे बालकों की मधुर तोतरी बोल सुनते ही कलेजा ठंढा हो जाता है कर्ण कुहर में मानों अमृत की वृष्टि होने लगती है उन की प्यारी २ भोली सूरत देख आंख को जो तरावट पहुंचती है वह वे ही जानते होंगे जिन को इसका अनुभव है कहने की कोई बात होती तो हम कह के आप को प्रगट कर देते सच है—

"दिगंवरं मृतव्रीडं जटिलं धूलिधूसरम् ।
भाग्यहीना न पश्यन्ति गङ्गाधरमिवार्भकं" ॥

भागवत में महर्षि कश्यप ने वर की कामना रखती दिति से गृहस्थीकी मुख्य साधन स्त्रियों ही को हर तरह पर सिद्ध किया है—

"तस्याः कामं न कः कुर्यात्सिद्धिस्त्रैवर्गकी यतः ।
सर्वाश्रमानुपादाय स्वाश्रमेण कलत्रवान् ॥
व्यसनार्णवमत्येति यलजानैर्यथार्णवम् ।
यमिहुरात्मनो ह्यर्धं श्रेयस्कामस्य मानिनि ॥
यस्यां स्वधुरमध्यास्य पुमांश्चरति विज्वरः ।
यामाश्रित्येन्द्रियारातीन्दुर्जया नितराश्रमैः ॥
वयं जयेम हेलाभिर्दस्यून्दुर्ग पतिर्यथा ।
न वयं प्रभवस्तां त्वामनुकर्त्तुं गृहेश्वरि ॥
आप्यायुषा वाकात्स्न्येन ये चान्ये गुणगृध्नवः ।"

कौन मूर्ख उन प्यारी महिलाओं के मनोरथ पुरै देने से मुह मोड़ सक्ता है जिन के द्वारा त्रिवर्ग धर्म अर्थ काम तीनों अच्छी तरह सिद्ध हो सक्ते हैं—कलत्रवान् मनुष्य जिन के आश्रय से गृहस्थी में रह अन्न वस्त्र आदि देकर

दूसरे २ आश्रम वाले सबों का क्लेश दूर करता हुआ आप भी संसार के बड़े २ क्लेशों से छुटकारा पाता है और जलयान पर चढ़े हुये की भांत विना परिश्रम ही संसारसागर के पार हो जाता है—जिसे अर्द्धांङ्गिनी कहते हैं और जिस पर गृहस्थी का सब भार रख मनुष्य सदा निश्चिन्त रहता है—जिस्का सहारा ले काम क्रोध आदि देह में स्थित अजेय शत्रुओं को और २ आश्रमों की अपेक्षा हम सहज में जीत लेते हैं जैसा किले में बैठा हुआ लुटेरे दस्यु लोगों से निर्भय रहता है—इसलिये जिन्हें किसी के सच्चेगुण की चाह है वे इन के यावत् उपकार का बदला अपनी पूरी आयुर्दाय में भी चुकाया चाहें तो नहीं चुकता कर सक्ते—

सच है विना जिनके गृहस्थी एक विटम्बना मात्र है जैसा बिना मालिक की फौज कभी क्रम पूर्वक नहीं रही वैसाही गृहेश्वरी ललनाओं के बिना गृहस्थी भी नहीं रह सक्ती—दूर से चल कर आया हुआ बटोही जैसा जेठ की कड़ी धूप और लू से अत्यन्त संतापित किसी निर्मल जल वाले ढंढे पानी के सरोवर में गोता लगाते ही प्रसन्न हो जाता है अंग अङ्ग प्रफुल्लित हो उठते हैं वैसा ही मनुष्य अनेक तरह के क्लेश आधि व्याधि संतापित होकर भी प्रियतमा ललना का मुख देखते ही सब भूल जाता है—जैसा विना पति के स्त्रियां बे कदर और दुर्भगा समझी जाती हैं वैसा ही पुरुष भी विना स्त्री के समाज में भारी भरखं नहीं माना जा सक्ता इसी लिये मर्द औरतों का सदा मुहताज है—रहुआ आज़ाद मूसलचन्द अपनी आज़ादाना बातचीत में डींग चाहो भले ही मारा करें पर चरित्र की कसौटी के समय ज़रा सी बात में ऐसा उघर गये हैं कि उन की सब कलई खुल गई और समाज में मुह दिखाने लायक न रहे यह जुदी बात है कि आंख का पानी ढरक गया हो तो लाचारी है—गृहस्थ गृहस्थी के बोझ से चूरं चूर फिकिर और तरद्दुद में लदा हुआ दांतों पसीने की मेहनत से अधनी नाक लाज ढांपे हुये चाहो दिन काट रहा हो पर चरित्र संशोधन की कसौटी से सर्वथा मुक्त है उसके चरित्र के सम्बन्ध में समाज को कभी शक होही गा नहीं जैसा आज़ाद मुजर्रद के लिये पग २ में भय और शंका का स्थान है—आज़ाद आदमी बेगुन की एक ऐसी नाव है जो परख और चरित्र संशोधन झंझा वायु में पड़ प्रतिक्षण झोके खा रही है किसी ठीक बन्दर पर जाकर टिक रहने का जिसके लिये कोई

कयाम ही नहीं है—आज़ाद आदमी अक्खड़पन में अपने मन से अपने को निर्द्वन्द बेफिकिर चाहे भले ही मान ले पर तिताई और कड़ुआहट के चर परे स्वाद की भांत अनेक तरह के क्लेश और आधि व्याधि के दुःख झेलता हुआ फिकिर और चिन्ता के समुद्र में गोते खाता हुआ गृहस्थ को जो कभी २ पुत्रजन्मोत्सव प्रभृति एक साथ सुख सन्दोह आ जाता है उसकी बराबरी इन आज़ादों के जन्म भर की निर्द्वन्दता और बे फिकरी का सुख नहीं कर सक्ता—

गृहस्थों ही के आसरे पर जीने वाले ना शुकरे कृतघ्न मुड़े हुये ऐरागी बैरागी विरक्त यती संन्यासी नाहक गृहस्थी को नरक और गृहस्थी की मूल हमारी गृहेश्वरियों को नरकपुर में प्रवेश का द्वार कह कर बदनाम किये हुये हैं—इन विरक्तों की अपेक्षा मनुष्य गृहस्थी में रह कर जितना जल्दी और सहज में परमेश्वर को ढूढ ले सक्ता है वैसा बड़ी २ तपस्या के द्वारा तन सुखाय ये विरक्त तपसी नहीं—लिखा भी तो है—

"गृहेपि पञ्चेन्द्रियनिग्रहं तपः"—

अब रहा यह कि सब सुख की खान हो कर भी यह गृहस्थी जो हमें जंजाल मालूम होती है विशेष कर दुर्भिक्ष कर पीड़ित इस अंगरेज़ी राज्य में उसका कारण बाल्य विवाह और "जवाइन्ट फेमिली" कुल कुटुम्ब का एक साथ एकही घर मे रह कर एकान्न भोजन की कुप्रथा है—सर्वथा असमर्थ किसी लायक़ बिना हुये बूढ़े बाप मा अपने लड़कों का विवाह कर दिया करते हैं उसी का यह परिणाम है कि गृहस्थी हमे जंजाल मालूम होती है—अपने सन्तान को सब भांत समर्थ और योग्य बनाय यदि उन पर गृहस्थी का भार रक्खा जाय तो यह गृहस्थी न हमी को जंजाल मालूम हो न उन नौसिखिया हमारे योग्य सन्तानों ही को इसका बोझ इतना भारी मालूम हो कि बेचारे सर्वथा पिस जाते हैं उनकी नई उमङ्ग नया उत्साह सब इस गृहस्थी के चक्कर में पड़ छार में मिल जाता है—गृहस्थी में रह कर जो कुछ इसके सुख दुःख दैवाधीन हैं उससे तो अलबत्ता लाचारी हैं किन्तु जो बात अपने करने की है और जिस्से हम आज़ादगी के साथ रह सक्ते हैं और अनेक व्यर्थ के सामाजिक बन्धनों से मुक्त हो सुख से काल को काट सक्ते हैं क्यों न काटैं—इति—

वेदान्त और आधुनिक वेदान्ती ।

इसे कौन न माने गा कि संसार में जितने प्रकार के दर्शन और फिलोसोफी आज तक बुद्धिमानों ने निकाले हमारे यहां का वेदान्तशास्त्र सब से बढ़कर उत्कृष्ट और प्रतिष्ठित है चार्वाक बौद्ध शून्यवादी योगाचार सौत्रान्तिक कापिल परमाणुवादी या नेचरिये सौत्रान्तिक प्रत्यक्षवादी इपिक्यूरियन और दहरिये आदि जितने दर्शन के रूप में ईश्वर को निराकरण करने वाले मत हैं सबों का मान मर्दन और खण्डन जैसा सहूलियत और बे परिश्रम इस वेदान्त के द्वारा हो सक्ता है वैसा किसी दूसरे दर्शन के द्वारा होना असंभव है—ईश्वर में आस्तिक्यबुद्धि और स्थिर संकल्प का होना सुख दुःख में अनुद्विग्न भाव परमशान्ति और राग द्वेष से बचना इत्यादि जैसा वेदान्त के अनुशीलन से हो सक्ता है वैसा दूसरे दर्शन के अभ्यास से नहीं और यह बात तभी हो सक्ती है जब वेदान्त का अनुशीलन किये हुये योगरत हों—इस लिये इस वेदान्त को हम योग का एक अंग कहें तो उचित है—किन्तु बन्दरों के हाथ मणि के समान अब इस समय यह वेदान्त अपने को "ब्रह्मास्मि" मानने वालों के हाथ में पड़ यहां तक बिगड़कर असत् शास्त्र होगया कि इन आधुनिक वेदान्तियों को प्रच्छन्न बौद्ध या छिपे हुये नास्तिक कहें तो असंगत न होगा—जैसा कुछ उपनिषदों में वेदान्त का प्रतिपादन है या महर्षिकृष्णद्वैपायन व्यास ने अपने वेदान्तसूत्र में इसका प्रतिपादन किया है वहां तक वेदान्त मे कोई बिगाड़ नहीं हुआ बल्कि वेदान्त का पढ़ना पढ़ाना संसार के लिये महोपकारी और परलोक साधन का एक श्रेष्ठ अङ्ग था—किन्तु जबसे शङ्कराचार्य हुये और वेदान्तसूत्रों का मन माना अर्थ कर उसमें ब्रह्मास्मि की एक पख लगा दी और योग जिसका यह एक अंग था उससे इसे अलग कर एक स्वच्छन्द दर्शन कर डाला तब से वह वेदान्त महानिकृष्ट हो गया—अब इसके पढ़ने पढ़ाने वाले दोही पाये जाते हैं एक तो मोटी तोंद वाले संन्यासी परमहंस परिव्राजक जो हिन्दुस्तान को अपनी तालीम से छार में मिलाने का बीड़ा ले उतरे हैं—धनी और राजाओं को चेला मूड़ उन के धन का संहार करते हुये नगावड़ी बैल के समान पागुर करते निकम्मे बैठे रहते हैं और वेदान्त छाना करते हैं—दूसरे इन्ही धूर्तों के चेले दंभ और

मक्कारी के स्वरूप अपने बुरे काम और कुत्सित आचरण के छिपाने को वेदान्त को एक ढाल बनाये हुये ब्रह्मास्मि की टट्टी के आड़ से शिकार करने वाले हैं—सच मानिये पिछले ज़मानो में रामानुज वल्लभ कृष्ण चैतन्य प्रभृति कई एक महापुरुषों ने हिन्दुस्तान के प्रत्येक प्रान्तों में जन्म लै प्रेम और भक्ति का उपदेश कर लोगों में परस्पर की सहानुभूति एक का दूसरे पर छोह और मैत्री भाव कायम रक्खा—नहीं तो शंकर भगवान् तो ऐसे हुये थे कि इस रूखे वेदान्त का प्रचार कर स्नेह और ममत्व का कहीं अंकुर भी न रहता-वेदान्त के कारण लोगों के विगड़ने की एक दूसरी बात और भी हमारे मन में आती है कि इसकी शिक्षा जो तलवार की धार के समान पैनी है उसके सूक्ष्म विचारों को समझने के लिये पैनी बुद्धि भी चाहिये—हमारे उपदेष्टा लोग विना सोचे समझे निरी दुकानदारी जमाने के लिये अधिकारी की पूरी कसौटी और परख किये विना ही जो ऐसे बहुमूल्य रत्न को जहां तहां फेकने लगे उसी का यह परिणाम हुआ कि ब्रह्मज्ञान में पड़ लोग कर्म की ओर से शिथिल हो गये और ब्रह्मज्ञान सो उन्हें पूरा २ आया न—केवल कथन मात्र में ब्रह्मास्मि रह गया और अपने को ब्रह्मसात् मान जीवन्मुक्त बन बैठे कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य दोनो के परे हो गये—कर्त्तव्य के लिये तो वे अब ब्रह्म-ज्ञानी ही हैं सब तरह पर आज़ाद और मुक्त उन्हें क्या प्रयोजन जो कर्म के बन्धन में अपने को छोड़ चहले में फसैं—अकर्त्तव्य के बारे में उनकी समझ है—"गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते" इन्द्रियां अपने २ विषय में तो अवश्य ही लगैं गी इसमे हमारा जो सब से परे हैं क्या विगड़ गया—इत्यादि उनके असंगत कथन का क्या मर्म है वे ही जान सक्ते होंगे हम लोगों की तो ऐसी बुद्धि नहीं है कि उनके ऐसे २ उलटे सीधे वचनों का कुछ अर्थ लगा सकें—इतना अलवत्ता देखने में आता है कि वेदान्त के जाल में फस प्रायः लोग अकर्मण्य और ज्ञानलव दुर्विदग्ध हो संसार की बड़ी हानि कर रहे हैं—

सौ अजान और एक सुजान।

पहले के आगे से ८ प्रस्ताव

अवलंबना यदि न भर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि।

अनन्तपुर की घनी बस्ती के बीचो बीच लंबे सड़क दो खण्ड का एक पक्का मकान था यद्यपि यह मकान बड़ा लंबा चौड़ा तो न था पर चारो ओर से हवा दार और ऐसे कताका बना था कि रहने वाले को सब ऋतु में आराम पहुंच सक्ता था—इस मकान के आगे के हिस्से में ऊंची पाटन का एक वसीह कमरा था जिसकी दीवालें चटकीली सुफैदी से पुति ऐसी घुटी हुई थीं मानो संग मरमर की बनी हों—और यह कमरा इस ढंग से आरास्ता था कि इसमें थोड़ी ही अदल बदल करने से अङ्गरेज़ी ढंग का उमदा ड्राइङ्ग रूम भी हो सक्ता था—बाहर से देखने वाले समझते होंगे कि यह मकान बराबर ऐसा ही पुख्ता वसीह और सुथरा होगा किन्तु इस बघमुहे मकान मे यह कमरा ही सब की नाक था इस कमरे के पीछे पांव रखते ही ओकाई आने लगती थी और दुर्गन्धि से नाक सड़ जाती थी—

हम पहले कह आये हैं हीराचन्द के समय जो अनन्तपुर काशी और मथुरा का एक उदाहरण था वह इन बाबुओं के ज़माने मे दिल्ली और लखनऊ का नमूना बन गया—कुछ अर्से से इस मकान मे एक ऐसे जीव आटिके थे जिनकी हुसन परस्तों के बीच उस समय अनन्तपुर मे धूम थी—यह कौन थे कहां से आये थे और कब से यहां आकर बसे थे कुछ मालूम नहीं न यही कुछ पता लगता कि किस वसीले से यहां अनन्तपुर ऐसे छोटे कस्बे मे आ रहे—यद्यपि दिल्ली लखनऊ कलकत्ता बंबई लन्दन पेरिस आदि बड़े नगरों में ऐसे जीवों की कमती नहीं है—हिन्दू मुसल्मान पारसी यहूदी कश्मीरी अङ्गरेज़ इत्यादि हर एक कौम और जाति में एक से एक चढ़ बढ़ के खूबसूरती और सौन्दर्य में एकता हुसन वाले सैकड़ों मौजूद हैं पर यहां स्थान भ्रष्ट के समान ऐसों का आटिकना अलबत्ता एक अचरज या कौतुक था जोहो यहां के लोग इसके निस्बत भांत २ की कल्पनायें कर रहे थे कोई लखनऊ की बेगमातों मे इसे मानते थे कोई कहते थे नहीं २ दिल्ली के शाही घरानो मे

से है किसी का खयाल था यह कश्मीर से आई है इत्यादि—वयक्रम इसका देखने में बाईस के ऊपर और पचीस के भीतर मालूम होता था गोरे रंग से दामिनी सी दमकती हुई इसके एक २ सुडौल सांचे के ढले अङ्गों पर सुन्दरा पा बरस रहा था बात चीत चाल ढाल और बजे दारी से यह किसी अच्छे घराने की मालूम होती थी—इसको परदे में रहते न देख लोगों के मन में दृढ़ विश्वास जम गया था कि यह बंबई की कोई पारसिन या यहूदिन है-थोड़ा उर्दू फारसी भी पढ़ी थी इस लिये इसकी ज़बान साफ और शीन काफ की दुरुस्त थी—एक प्रकार की संजीदगी और शऊर इसके चेहरे की मिठास और सलोनापन के साथ ऐसी मिल झुल गई थी कि देखने वाले के लोचनों को इसे बार २ देखने की प्यास कभी बुझती ही न थी—यह अपने घने केश जालों में अलकावली की गूथन तथा विकसित पुण्डरीक नेत्रों से वर्षा और शरत् ऋतुओं का अनुहार कर रही थी—वयः सन्धि के कारण यह बाला बाल भाव के पुण्य का और समझ मानो उसे छोड़ रही थी और बिना किसी के दिये भी जो मन्मथ के आवेश के परवश हो गई सो मानो यौवन की बन पड़ी किआप से आप आ कर यह उसके हस्तगत हुई—इसकी चढ़ती जवानी का जोश और लवनाई क्या थी मानो इसको अपने प्रेम की सिद्ध पीठ मानने वालों के आंख का एक ऐसा सुरमा था जिसे लगाते ही उन का मन इसकी ओर खिच आता था—अथवा यों कहिये इसका सुन्दरापा उनके मन के आकर्षण का एक मोहन मन्त्र था या नवयौवन युवराज के विजय का कीर्तिस्तम्ब था अथवा कुम्हार के समान ब्रह्मा के बार २ सृष्टि गढ़ने के अभ्यास का फल था या रूप खज़ाने की रखवाली के लिये सिपाही था जिसे कामदेव यथेच्छाचारी राजा ने तैनात कर रक्खा था—या हर नेत्र हुताशदग्ध अनङ्ग को फिर से जिलाने का संजीवन लटका था—निसन्देह यह युवती यौवन चन्द्रोदय की चांदनी थी रति रसामृत की महानदी थी कान्ति की कौमुदी थी दमकती द्युति सी दामिनी थी अनङ्ग पहलवान के खेल की रंग शाला थी—पद्मराग समान लाल और पतले होंठ गोल ठुड्ढी ऊंचा चौड़ा माथा कुन्द की कली से दांत सीधी और बराबर उतार चढ़ावदार नासिका गोल कपोल कटीली और रसीली आंख सब मिल इस के चेहरे पर एक अनोखी छबि दरसा रहे थे—यह अपने को हुमा बेगम के नाम से प्रसिद्ध किये थी—यह हुमा केवल खूबसूरती और शऊर में एकता न थी किन्तु गाना बजाना इत्यादि कई तरह के हुनर में भी अपनी सानी न रखती थी अनन्त पुर ऐसे छोटे से कस्बे में तो इस कोकिल कण्ठी के सौन्दर्य और गाने की धूम थी यद्यपि यहां के छोटे बड़े रईस सभी इसके मुश्ताक हो रहे थे किन्तु नन्दू तो इसपर तन मन से लटटू था अपने मामूली काम काज से फुरसत

पाते ही वहीं पहुंचता था—हुमा भी जो शऊर और ढंगदारी में पहले दरजे की चालाक थी इसकी नस २ पहचान गई थी और इसे अपना खेलौना बनाये थी—अस्तु उच्चपद से नीचे गिरते हुये मनुष्य को जैसा हज़ार २ ततबीर सब व्यर्थ होती है सूर्य जब डूबने लगता है तो उसे हज़ार किरनें सब एक साथ थांवती हैं पर वह नहीं रुकता इसी तरह डूबते हुये इन बाबुओं को सम्हाल रखने को चन्दू तथा रामा ने कितनी २ ततबीरें और यतन किये किन्तु एक भी कारगर न हुई और अन्त को विष की गांठ सी यह हुमा ऐसी यहां आ बसी कि नन्दू सरीखे कुढंगियों को अपने ढंग पर इन बाबुओं को ढुलका लाने और गढ़ कर अपना ही सा कर देने के लिये मानो औज़ार हुई—मसल है—एक तो तित लौकी दूसरे चढ़ी नीम ये बाबू लोग तो यों ही यौवन और धन के मद से अन्धे हो रहे थे चन्दू सरीखे चतुर सयाने प्रवीण के उपदेश का बीज लाख २ तरह पर उलटी सीधी बात सुझाने से कभी२ जम आता था तो चारो ओर से दुःसङ्ग ओले के समान गिर उस टटके जमे हुये अङ्कुर का कहीं नाम और निशान भी न रहने पाता था इसी दशा में रूप राशि हुमा ने अपने रूप का ऐसा गहरा जादू इनपर छोड़ा कि अब फिर सम्हलने की कोई आश न रही—पर चन्दू इनकी ओर से सर्वथा निराश न हुआ था यह इन्हे बार २ सीधी राह पर लाने की फिकिर में लगा ही रहा—सो अजान में एक सुजान पर ध्यान जमाये हमारे पाठक यदि हमारे साथ ऐसेही धीरे २ चले चलेंगे तो अन्त को एक बार चन्दू को कृतकार्य होते पावे हींगे—शेष—

इङ्गलेंड और यूरोप के और २ मुल्क ।

हम नहीं जानते इंगलेंड की पृथ्वी में ऐसी कौन सी चमत्कारी है जिस से वहां के लोग इतना देदीपीप्यमान हैं योरोप क्या बरन समस्त भूगोल के लोग अंगरेज़ जाति के साथ तुलना मे नहीं ठहर सक्ते—रूस जर्मनी फ्रान्स आस्ट्रिया सबी उन्नति के शिखर पर चढ़े हुये हैं बुद्धि साहस हिम्मत व्यवसाय में एक से एक चढ बढ़ कर हैं पराक्रम और दिलेरी में भी कोई किसी से कम नहीं हैं पर इनके साथ तुलना में निकृष्ट ही ठहरते हैं—फ्रान्स वाले यद्यपि विद्या वृद्धि और बहादुरी में इनसे किसी तरह कम नहीं हैं पर ऐसे विषयी और छिछोरे हैं कि जिससे हज़ार २ तरह पर कोशिश करने के बाद भी इनकी समता नहीं कर सक्ते—हिन्दुस्तान का इतिहास पढ़िये तो अंगरेज़ और फ्रेंच दोनों एक साथ यहां आये और फरासीसियों ने कौन्टलली और जेनरल बूसी तथा डूप्ले इत्यादि कई एक फरासीसी बीर बांकुरे के तहत में आरकट प्रभृति दक्षिण के देशों में पूरी तरह पर अपना अधिकार जमा लिया था यही निश्चय हो गया था कि फरासीसी ही हिन्दुस्तान के अधिपति होंगे

किन्तु केवल अपने छिछोरपन और "सेन्सअफड्यूटी" निज कर्त्तव्य की ओर ढिलाई के कारण उनका पांव यहां से उखड़ गया अंगरेजों ने अपने धैर्य गाम्भीर्य और साबित कदमी के कारण यहां जमते २ कुल हिन्दुस्तान का एकाधिपत्य कर लिया—रहे जर्मन आस्ट्रियन इत्यादि कई लोग वे भी यद्यपि विद्या वृद्धि और विज्ञान तथा कला में सब तरह प्रवीण किसी अंश में इन से कम नहीं हैं पर आलस्य इत्यादि कई एक दोषों के कारण इनकी तुलना उन्में आही नहीं सक्ती—अब एक रूस इस समय इनके साथ होड़ करने में बहुत कुछ सिर उठाये हुये है किन्तु रूस में अधिकतर असभ्यता और अत्याचार के कारन इनकी तुलना उसमें कभी आही नहीं सक्ती—"सेन्सअफड्यूटी" अपने कर्तव्य में मुस्तैदी और साबित कदमी एक ऐसा भारी गुण इनमें है जिससे ये यूरोप की और सब बड़ी २ जाति रूस फ्रांस आदि के मुकाबिले शुक्र के तारा के समान चमक रहे हैं—शुक्र यद्यपि और २ बड़े ग्रहोंकी अपेक्षा सब से छोटा है किन्तु प्रकाश में उसको कोई बड़े ग्रह नहीं पा सक्ते ऐसा ही इङ्गलेंड का मुल्क यूरोप के और २ देशों की अपेक्षा सब से छोटा है किन्तु इज्जत और प्रतिष्ठा में सब का सिरताज हो रहा है—यह निज कर्त्तव्य बुद्धि ही इनसे यह सब करा रही है जिससे ये आज दिन मध्यान्ह के सूर्य समान प्रकाशमान हो रहे हैं—यही कर्त्तव्य बुद्धि "सेन्सअफजसटिस" न्याय परायणता, स्वतंत्रता, अपने स्वत्व के कायम रखने की दृढ़ता, हुकूमत करने की लियाकत, दूसरी २ जाति या देश जो इनके आधीन हैं उन को भी अपने ही समान सभ्य सुशिक्षित और स्वतंत्र कर देने की इच्छा, उनकी आंखों में विद्या का अंजन लगा कर उन्हें चैतन्य कर देने की चेष्टा आदि यावत् उत्कृष्ट गुण का मूल हुई—सच है कर्त्तव्य बुद्धि इनसान में इनसानीयत का ऐसा ही भारी जौहर है ये अंगरेज़ जाति के लोग किसी से कम विषय लोलुप नहीं हैं नये राग द्वेष में किसी से कम हैं बरन द्वेषी तो यहां तक हैं कि न ईश्वर करे किसी को ये तक लें बिना उसका निःशेष किये कभी स्थिर होहीं गे नहीं—किन्तु कर्त्तव्य बुद्धि में ऐसे दृढ़ हैं कि जिस बात को इन्हों ने अपना कर्त्तव्य समझ रक्खा है या जिसमें अपनी कर्त्तव्य बुद्धि समझने को ये नियोजित किये गये हैं उसमें प्राण पण के साथ लगते हैं शरीर पात चाहों हो जाय पर हटेंगे नहीं—यद्यपि फ्रांस आदि देश के लोगों में सरलता और स्वाभाविक औदार्य इनकी अपेक्षा बहुत अधिक है न वे संकीर्णचित्त हैं पर इनकी सी कर्त्तव्य बुद्धि तथा कायदे की पाबन्दी या नियम बद्ध न होने से उस महत्व को न पहुंचे जैसी अंगरेज़ जाति इस समय पहुंच रही है—ड्यूकआफ वेलिंगटन ने इसी कर्तव्य बुद्धि के सहारे नेपोलियन बोनापार्ट ऐसे महायोद्धावीर को कैद कर लिया—इनका अद्भुत सेना संवि-

भाग और संग्राम में लोकोत्तर पटुता की तो यह कर्तव्य बुद्धि प्रधान कारण है इसी कर्तव्य बुद्धि पर आरूढ़ रह क्रमवेल ने "मानर्की" एकाधिपत्य इंगलेंड से उठा देने को देश का देश हिला डाला और अन्त को प्रजा प्रभुत्व करी डाला जो हो हौस अफलार्ड और हौस अफ़कामन्स पार्लियामेंट के दो दलों की बुनियाद हुई—इंगलेंड के इतिहास में ऐसे कितने हादसे पाये जाते हैं जिनमें इनकी कर्तव्य बुद्धि की भरपूर कसौटी हो गई है—वर्स फाक्स पिट सरीखे न जानिये कितने "स्पीकर" उत्तम २ वक्ताओं ने इसी कर्तव्य बुद्धि के सहारे न जानिये कै बार संपूर्ण पार्लियामेंट को हिला डाला—इनकी कर्त्तव्य बुद्धि और प्रत्येक मनुष्यों को उनका वाजिबी हक़ देने या दिला देने की अभिलाषा जो न्याय और इनसाफ की परिभाषा है "विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि" इत्यादि समबुद्धि प्रतिपादक उपदेशों की पोषक है केवल इसी कौम में देखी जाती है रूसफूस आदि जाति के लोगों से यह आशा करना सर्वथा निरर्थक है—

जब हम गवर्नमेंट की इस कर्त्तव्य बुद्धि को अपने शुद्ध चित्त से विचारते हैं तो बहुधा अधिकारियों के कोई २ अनुचित वर्त्ताव पर झुंझलाहट में जो कभी २ जट् वट् लेखनी के द्वारा निकल जाता है उस्पर बहुत ही पछतावा और शोक होता है और साथ ही खेद भी मन में आता है कि क्यों बाज़े २ अपने अधिकार के मद में अन्धे हो गवर्नमेंट के शुद्ध अभिप्राय से भटक कर हम लोगों के साथ इस प्रकार का वर्त्ताव कर गुज़रते हैं कि जिस्से उस्की निर्मलनीति में धब्बा और निष्पक्ष न्याय में दोष लगता है-जो हो जिस दिन इस कर्त्तव्य बुद्धि के साथ उदार भाव और समभाव भी पूरा २ इन्में आ जायगा जिस्का आना कोई असंभव बात नहीं है क्योंकि यह तो उसी कर्त्तव्य बुद्धि का एक अंग है—उसी दिन हम दास्य भाव से मुक्त कर दिये जायंगे पर कौन जान सक्ता है कि हमारे संचित पापों के सर्वथा संक्षय पूर्वक इस अद्भुत पुण्योदय के दिन कब आवें किन्तु इस जाति से ऐसी आशा करना निरी गप्प कभी हो ही नहीं सक्ती अद्यवा शताब्दे वा—

ऐंगलोवरनाकुलर फर्स्टबुक ।

बाबू बलदेवप्रसाद वकील हाईकोर्ट सीतापुर निवासी कृत—हम धन्यवाद पूर्वक इस पुस्तक की प्राप्ति स्वीकार करते हैं—अंगरेज़ी शब्दों का हिन्दी उर्दू अक्षरों में उच्चारण और माने समेत इस्में दिया गया है छोटे बालकों के लिये बड़ी ही उपयोगी है मूल्य ।) हम अपने बालकों को हवर्डप्रइमर इत्यादि के बदले ऐसी किताबें पढ़ाना आरम्भ कर दें तो उन्हें सुगम में बोध हो जाय—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि०-१५ सं०-२ } प्रयाग { अक्तूबर—१८९१

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १५ संख्या २ | अक्तूबर सन् १८९१

दिल और दिमाग़ ॥

दिल और दिमाग़ का कुछ ऐसा साथ है कि आदमी में पूरी आदमीयत और उस्के सब गुण तभी आते हैं जब इन दोनों में आपस का मेल हो—अगर इनसान को दिमाग़ होता और दिल न होता तो निस्संदेह विन हाड़ मास का शरीर ठठरी सा रह यह कभी शोभा न पाता—उपकार दयालुता कोमलता शील सङ्कोच-मुलाहिज़ा इत्यादि गुण पुञ्ज जिन से मनुष्य का जन्म सफल है कहीं नाममात्र को भी न रह जाते—पत्थल से कलेजे वाले बेदिल निठुर की उपमा उस निर्जीव प्रतिमा के साथ दी जा सक्ती है जिस्के एक २ अङ्ग में सजावट और सौन्दर्य भर दिया गया है पर एक जीवनी शक्ति चेतना के न रहने से सब विफल हैं—और भी जिस मनुष्य में दिमाग़ "इनटेलेक्ट" की कमी है और दिल "फीलिंग्स" की अधिकाई है उस कार्य अकार्य विवेक शून्य से बुरे काम बन पड़ने की अधिक सम्भावना है इस लिये दोनों जब अपनी पूरी ताकत के साथ मनुष्य के शरीर में काम करते रहते हैं तब यह मनुष्यता की पूर्ण शोभा के साथ दमकता है—संसार में बहुत से ऐसे फिलासोफर और दार्शनिक हुये हैं जिन का सिद्धान्त है कि दिमाग़ की ताकत को हम जहां तक पैनी कर सकें उतना ही जल्दी और अधिक सुगमता के साथ हम मोक्ष और निर्वाण पद के अधिकारी हो सकेंगे "फीलिंग्स" अर्थात् इन्द्रियार्थक ज्ञान को दबाना और दिल अर्थात् मन को मारडालना ही मुक्ति और सिद्ध

अवस्था है—जैसा ग्रीस देश के स्टोइक्स अथवा हिन्दुस्तान के रूखे वेदान्ती जो हिमाक़त में आय अपने को स्थिरधी मुनि मानते हैं—गीता में इस प्रकार की दशा का नाम ब्राह्मीस्थिति है ऐसों ने दिल को तो बिल्कुल मार ही डाला तब प्रेम दया सहानुभूति दूसरे के दुःख से दुखी और सुख से सुखी इत्यादि जितने दिल वाले काम है उन्हें अवकाश मिलने का मौका ही न रहा कट्टर ब्रह्मसात् ज्ञानी वही है कि देखते २ एक दो बार मनुष्य नहीं वरन संपूर्ण संसार का संसार चाहे नाश हो जाय पर वह ज़रा भी न हीलै डोलै—

"कल्पान्ता वायवो वान्तु यान्तु चैकत्वमर्णवाः ।
तपन्तु द्वादशादित्या न मे नाशो न मे क्षतिः ॥"

यद्यपि ऐसे दृढ़ और स्थिर प्रज्ञ इन ज्ञानियों का केवल खयाली प्रोभाव मात्र है ऐसे लोग न कभी हुये हैं न आगे को शायद कभी होंगे किन्तु दिल से सरोकार रखने वाले प्रेमादिक बन्धनों को काट डालने के लिये ऐसों की यह तालीम काफी हुई—हां यदि मन से सरोकार रखने वाली बातें दया से पिघल उठना परोपकार और भलाई में सदा दत्तचित्त रह दुःख में ऊबना नहीं और सुख में फूल न उठना इत्यादि स्थिर प्रज्ञता कही जाय तो कोई उसे कभी बुरा न कहेगाः—

"यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥"

एक दूसरे प्रकार के दार्शनिक और हैं जो "फीलिंग्स" बोधात्मक ज्ञान के प्रकाश ही को निःश्रेय या मुक्ति का साधन मानते हैं उन का मत है हम ज्यों २ इस बोधात्मक ज्ञान को अच्छी वासना की ओर लगाते जांयगे त्यों २ हमारी बुरी और दुष्ट वासनायें आप से आप हम से अलग होती रहें गी जैसा सती प्रतिव्रता को नज़र के सामने आते ही कुलटा व्यभिचारिणी अपने कुचरित्रों को स्मरण कर मुह छिपाती है—भक्ति प्रेम और श्रद्धा के उद्गारही को ये मुक्ति का महासाधन समझते हैं मनुष्य का अपने मनुष्यता के काम में पूर्ण होना ही मुक्ति है—हमारे मन में भी यही आता है विना भक्ति का शुष्क ज्ञान सिवा बुराई के कभी भलाई के लिये न होगा—भक्ति जिसका

अंकुर दिल से फूटता है और दिमाग से इस्का विशेष लगाव न रहने से अज्ञान ही अधिक तर इसका पोषक है इस लिये जैसे सीधे सरल और चित्त के भोले भक्त जन होंगे वैसे वे कट्टर ज्ञानी नहीं—दर्शन और फिलासोफी का अनुशीलन करते २ जिन का मस्तिष्क यहां तक परिष्कृत और बुद्धि इतनी पैनी हो जाती है कि उनकी बहस और तकरीर के मुकाबिले कोई बात कभी उन के अविश्वासी चित्त में स्थान पाही नहीं सक्ती—तब परमार्थ मुक्ति तथा ईश्वर के मिलने का एक मात्र द्वार चित्त की सिधाई जो भोली भक्ति में अत्यन्त सहज था कोसों उनसे दूर हट जाती है—अन्त को ये दार्शनिक तर्क वितर्क करते २ कट्टर दहरिये और नास्तिक हो इस जंगम जगत् को अपना हीसा कर देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं—संसार का जितना अनुपकार इन दिमागी ताकत का घमंडरखते पत्थल समान कलेजे वालों से हुआ है उतना इन से नहीं जिनके कोमल सरल चित्त में अभिमान या घमंड को कभी अवसर ही नहीं मिलता वरन जो मोम की भांत ज़रा में पिघल उठते हैं—दिमाग दस आदमियों का भी एक हो कर साहस को कभी नहीं बढ़ा सक्ता दिल दो आदमी का भी एक हो पहाड़ को खोद डाल सक्ता है "दोदिल एक शबद् मे कनद कोहरा„—हमारे बंगदेश में दिमाग की ताकत अपने पूरे उत्कर्ष को पहुंची हुई है पर दिली ताकत उनमें न रहने से संसार भर में भीरू और डरपोक प्रसिद्ध हैं सिवा कांवर करने के इन से कुछ होही नहीं सक्ता—अथवा यों कहिये कि हिन्दुस्तान दिमागी ताकत में कभी किसी से पीछे हटा नहीं रहा न अब इस गिरी दशा में भी मुकाबिले में किसी देश या जाति से कम है। पर न जानिये कौनसा ऐसा दैव का दुर्विपाक इस पर सवार है कि दिली ताकत इसकी बढ़ती ही नहीं—सर्वनाशकारी कुरूक्षेत्र की लड़ाई से जो इसका दिल टूटा सो फिर आज तक न जुड़ा—इसकी पस्त हिम्मती बढ़ती ही गई और एका वा एक दिली ताकत की आनन्द मयी मूर्त्ति का दर्शन इसे फिर आज तक न मिला न उसके मिलने की कोई संभावना पाई जाती है—अक्सर बोल चाल में दिल औ दिमाग का एक मुहाविरा हो गया है जिस किसी की तारीफ करना हुआ तो लोग कहते हैं ये बड़े दिल दिमाग के आदमी हैं पर यह सिर्फ कहने भर की बात है बहुधा पाया जाता हैं जहां दिल है वहां दिमाग नहीं जहां दिमाग है वहां दिल को कभी मिलते देखते

ही नहीं—यद्यपि "ब्रेनवर्क" मस्तिष्क का काम और २ शारीरिक कामों की अपेक्षा अधिक योग्यता प्रकट करता है किन्तु कसौटी के समय परख केवल दिल ही की कीजाती है किसी के लेख में इसकी पूरी परीक्षा हो सक्ती है लेख यद्यपि निरे दिमाग का काम है पर पढ़ने वाला जल्द और सहज में जान सक्ता है कि इस लेख लिखने वाले का दिल किस किस्म का है उसकी तबियत की झुकावट किस ओर को अधिक मुड़ती है रसीली तबियत वाले जो शृंगार रस में पगे हैं उनकी लेखनी से वीर रस कभी निकले ही गा नहीं ऐसों के लिये वीर रस प्रधान लेख पहले तो अति दुरूह है वीर रस यदि कुछ लिखा भी तो वह वैसा मनोरंजक न होगा जैसा शृङ्गार उन की लेखनी से बनैगा मतिराम और भूषण इसके उदाहरण हैं—तात्पर्य यह कि दिल आदमी के दिमाग का एक नमूना है जिस्से इसके तबियत का सब रंग ढंग हमे मालूम होता है—इसी दिल का दूसरा नाम मनोवृत्ति रुचि रसीलापन रसिकता स्वादु या ज़ाइका इत्यादि है —दिल औ दिमाग दोनों की एकसाई पूर्णता या उत्कृष्ट सीमा संसार भर में केवल एक ही व्यक्ति में अब तक पाई गई जिसे भावुक अपनी भावना और रुचि के अनुसार जिस भाव से ग्रहण करे उसे अपने अनुकूल भावना की पूरी पुष्टता होती है और यह व्यक्ति वही है जिसे कोई चौर जार शिरोमणे के नाम से पुकारता है कोई यावत् दार्शनिक और फिलासोफरों के पुरखाओं के भी आदि पुरखा "योगीश्वराय कृष्णाय गीतामृतदुहे" कह नमस्कार करता है कोई बड़े २ कुटिल राजनीतिज्ञों के सिरताज सर्वथा पुनः उत्थान की सम्भावना शून्य हतक हिंदुस्तान की मूल नाशक महाभारत की सरहंग जंग का बानी भुवानी इन्हें मान अचरज के समुद्र में बूड़ता उतरता अचिन्त्यशक्ति महामहिम की अपार महिमा का पार नहीं पाता—अतएव दिल और दिमाग दोनों की पूरी ताकत से जो बात हो सक्ती है वह फुट २ रहने से नहीं चाहो एक में हम कितनी ही तरक्की कर गुज़रे हो दोनों का साथ बिना हुये कुछ होही गा नहीं—

विरत होने का मन न करते प्रत्युत जो अब जबरन और लाचारी से इन के प्रति बद्धांजलि हैं सो तब उमंग के साथ ब्रिटिश राज्य की प्रजा अपने को कह भाग्य सराहते—किन्तु क्या किया जाय हमारी फूटी किस्मत में लिखा ही नहीं कि हम किसी अंश में अपना भाग्य सराहें लाचारी है—

बाल्यभाव ।

फिकिर और चिन्ता के समुद्र में दिन रात गड़ गाप तरद्दुद के तन्दूर में पड़ झुलसते हुये हमारे इस दुःख जीवन में यदि सच्चा सुख ढूंढिये तो केवल बालपने ही में पाइयेगा—जिस समय हमारा चित्त तुर्त का मथा मक्खन समान कोमल निर्मल और सर्वथा विकार शून्य रह कुटिलाई निठुराई और विषम भाव जानता ही नहीं हर एक बात को सीधे और सरल भाव से ग्रहण करने वाले हमारे ये दूध मुहें कोमल बालकों ने तिरछा और बांकापन क्या हैं कभी सीखा ही नहीं—इस समय जो २ बातें उनके नेत्र गोचर होती हैं उन्हें निष्कपट चित्त बिना किसी तरह की शंका समाधान के अत्यन्त सिधाई के साथ ग्रहण कर लेते हैं—महात्मा ईसा ने स्वर्ग जाने वालों की उपमा इन बालकों ही से दिया है—सच है जिनका मन कुटिल वासनाओं से मैला और दूषित हो रहा है उनकेलिये स्वर्ग अपवर्ग का सब सुख फीका है—एक बार हम इस बाल अवस्था का चित्र अपने पहले अंकों में उतार चुके हैं अवसर पाय आज हम फिर उसी को यहां पर दिखलाते हैं आशा है हमारे विज्ञ पाठक हमे क्षमा करेंगे—तरुनाई के आते ही बाल्यभाव के वे सब सुख सपने के से हो जाते हैं सरल भाव निष्कपट प्रीति उदार व्यवहार और वह अल्हडपन अब कहीं नाम को भी न रहा—स्कूल, मोटी२ किताबों का बोझ लादने का अभ्यास, स्कूल मित्रों के साथ एकान्त गोष्ठी, मास्टर या अध्यापक की उत्साह और उपदेश सनी बानी, गुरू जी या मौलवी साहब की झिड़की चुप चाप सुन लेने की आदतका अब कहीं लगाव भी न रहा—हमारे सहपाठी अब हमे भूल गये होंगे जिन्हें कुछ याद भी होगी तो वही स्नेह हम पर उनका अब किसी तरह न रह गया होगा जैसा तब था जब हम उनके साथ एक ही बेंच पर सट के बैठते थे और मास्टर महाशय को अनेक प्रकार का भुलावा और जुल

दै काना फुसकी में हर तरह की गप्पैं हांक २ कैसा प्रसन्न होते थे—मास्टर महाशय जैसा देखने में सख्त मिज़ाज और कड़े थे वह हम खूब जानते थे न केवल हमी बरन हमारे समान नटखट जितने हमारे सहपाठी सबी जानते थे—हम में से जो कोई कभी उनकी इच्छा के प्रतिकूल कोई काम कर गुज़रता था वह सबेरे की जून स्कूल खुलते ही रुद्र रूप मास्टर साहब की भौं चढ़ी तिरछी चितवन देख चट भांप लेता था कि देखें आज हम पर क्या भद्रा उतरै ईश्वर ही कुशल करै—अध्यापक महाशय सदा कड़ाई ही किया करते हों सो नहीं कभी २ हंसाते भी ऐसा थे कि हंसते २ पेट फूलने लगता था—जब खफा हो तड़प कर गरजते थे तो क्लास भर में सन्नाटा छा जाता था और हम सब लोग बकरी सा दबक के बैठ जाते थे—ये सब बातें उन्में केवल ऊपर से रोब जमाने के लिये थी भीतर से ऐसे कृपालु कोमल और सरस हृदय थे मानो दाख रस हो जो घुड़कते झिड़कते थे वह सब इसी लिये कि हम अपना पाठ याद करने में सदा सचेत रहें सुस्त न हों—हा ! वे सब सुख और चैन के दिन सपने के से हो गये नोन तेल लकड़ी की फिकिर में चूरं चूर कभी एक छिन भर के लिये भी अब बाल अवस्था के अल्हड़पन की सुध नहीं आती—

"भूल गये राव रङ्क भूल गई फक्कड़ी ।
तीन बात याद रही नोन तेल लक्कड़ी ॥"

केवल इतना ही नहीं कैसे २ कितने कुटिल नीरस कपट में सने भाव हमारे मन में उठा करते हैं—हम बहुत चाहते हैं कि वे दिन फिर आवैं किन्तु अब क्यों नहीं आते—जी चाहता है कि लछन मोहन बचन के साथ बैठ फिर वैसा ही गप्प हाकैं और कहकहे मार २ हँसा करैं—तब बिना कारन हँसी आती थी मास्टर साहब कितना ही खिजलाते झुंझलाते थे पर हम नहीं मानते थे अब वैसी हँसी २४ घंटे में एक मिनिट के लिये भी आवे तो अनेक तरह की चिन्ता से आकुल हमारे मन का बोझ कितना कम हो—अब हमें उन छोटे बालकों में बेधड़क मिलने से क्यों सङ्कोच होता है अब उन के साथ हमारा मिलना सींग कटाय बछेड़ा सा बन जाना क्यों जान पड़ता है ? कवियों ने जवानी को सब सुख की खान लिखा है किन्तु यह सब उन धूर्त्तों की जल्पना

मात्र है जो कुछ मन में आया बक गये "कवयः किं न जल्पन्ति"—माना ह-मने कि जवानी के आलम में दुनिया की सब तरह की लज्ज़तों का मज़ा हमें मिलता है, आशिकी का मज़ा उठाते हैं, माशूकी की लज्ज़त चखते हैं, चढ़ती जवानी के जोश में बड़े २ काम सहज में कर डालते हैं, नई जवानी नया जोश नये फेशन नई उमङ्ग नवीन उत्साह नूतन अभिलाष सब नया ही नया पुराना खयाल पुरातन रीति नीति प्राचीन जो कुछ है उसके ढिग नहीं जाया चाहते बरन पुराने के नाम से चिढ़ होती है तबियत घिनाने लगती है पर बिचार कर देखा तो सिवा हिर्स हवा के बाल्य अवस्था का सच्चा सुख कहीं ख़ाब में भी न मिला—धिक् यह बह समय है कि इसमें जो कुछ करते हैं किसी से तृप्ति नहीं होती भोग विलास जितना बढ़ाते जाते हैं मन नहीं ऊबता चौगुनी लालसा बढ़ती है जैसा आग में घी छोड़ने से अधिक २ भभकती है—

"हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते"—

धनोपार्जन यशोपार्जन गुणोपार्जन किसी से मन नहीं हटता नित नई चाह बढ़ती ही जाती है सदा यही इच्छा रहती है थोड़ा और होता—आज एक काम हो जाने पर मन आनन्द से पूर्ण हो नाचने लगता है मानो स्वर्ग सुख भी तुच्छ और किसी गिनती में नहीं है वही किसी काम के बिगड़ जाने से चित्त में ऐसी उदासी छाजाती है कि सकल संसार असार और फीका बोध होता है—वही इन बालकों का मन और अभिलाष है जो थोड़े ही में सन्तुष्ट और प्रसन्न रहता है फिकिर और तरद्दुद क्या है कभी जानते ही नहीं—जिन के सदा प्रसन्न मुख पर उदासी और सोच को कभी अवकाश ही नहीं मिलता बरन अपना मनोरथ पूरा होते न देख जब कभी बिरझाकर मचल के धरती में लोट जाते हैं तो घूंघुर वाले बालयुक्त उन के मुग्ध मुख की कुछ ऐसी अकथनीय छबि बढ़ जाती है जिसे देखते ही बनता है—सुतराम् अन्त को यही सिद्धान्त ठहरता है कि यह यौवन सुख सिवाय अतृप्त लालसा के और कुछ नहीं है सच्चे सुख का समय केवल बाल्य अवस्था है—

पानी का टैक्स ॥

जिस तरह हैज़ा या चेचक आदि बीमारियों के ज़ोर पकड़ने पर लोग चकित स्तब्ध और व्याकुल हो उठते हैं वैसा ही इस समय क्या छोटे क्या बड़े सब यहां घर २ गली २ कूंचे २ घबड़ा रहे हैं जहां देखो वहां पानी के टैक्स की पुकार मच रही है सब लोग इसी का दुःख रोना गा रहे हैं—अस्तु अब यह पुराना किस्सा फिर के नये सिरे से छेड़ना तो व्यर्थ और निरी मूर्खता है कि यह कल का पानी यहां क्यों जारी किया गया अब तो हमारे मेहरवान म्युनिसिपल कमिशनरों ने इसे मंजूर ही कर लिया और क्यों न मंजूर करते इतनी हिम्मत कहां से लावें कि कलट्टर साहब तथा लाट साहब की बात टूख सकैं—फिर क्यों दूखैं प्रजा जिन के वे प्रतिनिधि किये गये हैं उन की मूड़ी कुंचे वला से लाट साहब उनकी काररवाई से खुश रहेंगे तो शायद कभी को किसी खिताब के लिये शिफारस करदें—धिक् स्वार्थपरता सर्वसाधारण के धन को इस प्रकार बरबाद कर और उन्हें प्रबल पीड़ा पहुंचाय कर्मचारियों के बीच अपनी सूर्खरूई प्रगट करना कितनी भारी क्षुद्रता है—इस्से बढ़ के कपट और क्या हो सक्ता है कि इलेक्शन के समय उतरा चढ़ी कर एक २ आदमियों पर इतना ज़ोर छोड़ा जाता है और ऐसी बातें उनसे कही जाती हैं कि लोग यही समझते हैं कि इन्हें चुन लेने से अवश्य हमारा बड़ा ही उपकार है—जब अपनी मुराद को पहुंच गये तो कहां के तुम कहां के हम सब तरह पर उलटा हमारा ही नुकसान करने लगते हैं—लार्ड रिपन साहब ने जब "लोकल सेल्फ गवर्नमेंट" आत्मशासन प्रणाली की प्रथा निकाला था उस समय हम लोग प्रसन्न हुये थे और उन्हें बहुत २ धन्यवाद दिया गया था कौन जानता कि यह सेल्फ गवर्नमेंट जिसकी प्रतिवर्ष म्युनिसिपल एलेक्शन एक बाजगी है उलटा हमे हानि पहुंचावेगा—सच है भाग्य हीन चाहे इन्द्र का आधा आसन भी पा जाय तौ भी उसकी फूटी किस्मत वहां भी उसके साथ रहती है—खैर अब तो यह कल का पानी हमे पीना ही पड़ेगा चाहो जैसे हो—

यद्यपि इसका जारी होना बिल्कुल हमारी ख्वाहिशों के खिलाफ हुआ है—प्रजा का इतना धन सत्यानाश में मिलाय प्रजा को ज़बरदस्ती कल का पानी क्यों पिलाया गया इसका मर्म श्रीमान् सरअकलेण्ड कालविन ही की अगाधबुद्धि में होगा हम लोगों की तुच्छ बुद्धि में तो कुछ भी इसका प्रयोजन नहीं आता—पहिले की अपेक्षा जो अब चुंगी दोगुनी बढ़ाई गई है हम उसी के लिये झीख रहे थे और कई बार उसे लिख भी चुके यहां घाव पर घाव के समान यह हौस टैक्स एक दूसरी बला बरपा हो गई—यद्यपि इस बढ़ी हुई चुंगी से सब लोग अत्यन्त पीड़ित और असन्तुष्ट थे पर यह समझ कि आगरे के समान यहां भी केवल इस चुंगी ही से सब काम चल जायगा पानी के नाम से अब अधिक और कुछ न देना होगा ढाढस बांधे हुये थे सो अब न रहा सबों की हिम्मत छुट गई—अस्तु यह टैक्स लगता चुंगी ही छोड़ दी जाती तब भी हम को इतना अधिक न अखरता इस पानी के लिये चुंगी और टैक्स मानो दोहरी मौत हम लोग कैसे बरदाश्त कर सकेंगे—हम पहले ही लिख चुके कि इलाहाबाद की वह दशा नहीं है कि कलकत्ता बम्बई ऐसे सुसंपन्न नगर की भांत कलके पानी का बोझ उठा सके पर कौन कहे हमारे लाट साहब की यही रीझ है कि तुम चाहो उजड़ जाओ पर कल का पानी अवश्य पिओ—मसल है "अपना दाम खोट तो परखवैये कौन दोख" हमारे म्युनिसिपिल कमिश्नर दमदार और हिम्मत वाले होते तो कभी सम्भव था कि कर्मचारी लोग अपनी मनमानी कर गुज़रते—लोकल और इमपीरियल सब मिलाय कितने प्रकार के टैक्स इलाहाबाद पर हैं सब की पूरी फिहरिस्त लिखी जाय तो पेज का पेज रंग जाय उस्पर अब यह पानी का टैक्स सब से अधिक गिरां हुआ—इनकंटैक्स में घर की आमदनी भी शरीक है तो अब मानो घरों की आमदनी पर दोहरा टैक्स हमें देना पड़ा—इलाहाबाद में एक माघ मेला अकेले की आमदनी इतनी अकसीर है कि यदि लोकल समझ गवर्नमेण्ट उसे छोड़ बैठे तो इस पानी के खर्च का बोझ बहुत कुछ हल्का हो जाय—फिर यहां तीन ओर दरिया है उन पर जो पुल हैं उसी की आमदनी छोड़ दी जाय तौ भी हमारा बहुत कुछ उपकार हो हम नहीं समझते हमारे म्युनिसिपल मेम्बर लोग क्यों मुह सिये बैठे हैं—और भी हमारी हिन्दुस्तानी

बस्ती के एक पूरे मुहाल भर में पइप ले जाने में जितना खर्च हुआ होगा उतना खर्च अंगरेज़ी बस्ती के एक बंगले के गिर्द ले जाने में हुआ है पर आमदनी जितनी हमारे एक छोटे से मुहाल में होगी उसका दसवां हिस्सा भी अंगरेज़ी बस्ती के एक बंगले से न हो सकेगी—अस्तु इस बात का तो हमे कुछ मलाल ही नहीं है क्योंकि वे लोग देवता हैं तब उनकी हमारी क्या बराबरी—रोशनी सिरकाव और सफाई आदि का आराम और अच्छा प्रबन्ध जैसा उन अंगरेज़ी बस्ती वालों को है वैसा हमें कहां—हम लोग तो इस लिये सृजे ही गये हैं कि नारकी यातना के भांत चुंगी और टैक्स का दुःख भोगा करें और उसका सुख उन्हे मिले—गवर्नमेंटगज़ट में एक बार सवाछः रुपये सैकड़े के हिसाब से टैक्स की तादात छापी गई थी पर अब जो लगाया गया है वह साढ़े सात रुपये सैकड़े के हिसाब से लगा है सो क्यों ? किसी २ मकान पर इससे भी ज़ियादह हो गया है—बहुधा ऐसे गृहस्थ हैं जिनके बाप दादा संपन्न थे मकान बनवाय छोड़ गये उनके लड़के पोतोंको अब वह मकान ही एक सहारा रोटी चलाने का हो रहा है ऐसे लोगों को तो यह टैक्स मिट्टी में मिला देगा—अब अन्त में गवर्नमेंट से हमारी प्रार्थना है कि साध मेला तथा घाट इत्यादि कई आमदनी इसमें दे दी जाय जिससे हम इसके बोझ से बिलकुल छुटकारा पावें—या यह टैक्स लगे भी तो उन्ही के ऊपर लगे जो पाइप अपने घर में लें या कलट्टर साहब इसके जांच का काम अपने हाथ में लें नहीं तो किसी दयावान् भरेपुरे को यह काम सौंपा जाय—महा कट्टर ओछे छिछोरे को बिलकुल इखतियार इसमें दस्तंदाज़ी का न रहे—और उस भले मानुस निठुर निर्दयी की भरपूर खबर ली जाय जिस ने बेनिर्ख और बे हिसाब बिना भरपूर जांच किये इस टैक्स को लगा दिया है जिससे नगर में घर २ इतना आन्दोलन और बेकली मच गई है—दूसरे यह कि साढ़े सात रुपये सैकड़ा इन्तिहा दर्जे की शरा है वह किसी तरह न रक्खी जाय औसत दर्जे की शरा रखने से यद्यपि १५ लाख कर्ज देर में पटैगा बला से टैक्स देते इतना अधिक गढ़ाय गा तो नहीं—केवल कहने मात्र का अधिकार हमे हैं होगा तो वैसाही जैसा हमारे शासक महाशय करना चाहेंगे—

चोज़

किसी वकील से एक जज्ज ने कहा कि यदि हम और तुम दोनो घोड़ा और गदहा हों तो तुम क्या होना पसन्द करो गे- वकील ने कहा गधा—जज्ज ने पूछा क्यों? वकील ने कहा गधा तो जज्ज होते सुना है परन्तु घोड़ा नहीं=

एक वकील ने किसी डाक्तर से पूछा अगर किसान और शैतान का मुकद्दमा हो तो कौन जीते डक्तर ने कहा शैतान क्यों कि सब वकील उसी के साथी हो जांय गे—इस लिये कि अपने साथी की भलाई सब चाहते हैं कहावत है "आत्मवर्गहितमिच्छति सर्वः"—

एक वकील जज्ज के सामने बहस कर रहा था और जज्ज के पास उन का कुत्ता बैठा था जज्ज का ध्यान जो बहस से उचटा तो कुत्ते को प्यार करनेलगे—वकील साहब चुप रहे जज्ज साहब ने कहा आप बहस करते जाइये, चुप क्यों हो रहे—वकील ने कहा जो इजाज़त—माफ कीजिये—मैं इस लिये चुप हो रहा था कि मैंने समझा आप अपने अजीज़ से इस मुकद्दमे की बावत कुछ मशविरा कर रहे हैं—

एक जज्ज साहब मुकद्दमा कर रहे थे और वकील साहब बहस इतने में एक गधा बोला जज्ज ने वकील से कहा एकर बोलो जब जज्ज साहब फैसला सुनाते थे फिर गधा रेंका वकील बोला क्यों साहब यहां कैसी प्रतिध्वनि होती है—जज साहब शरमा के गरदन नीची कर ली—

एक औरत ने अपने लड़के से कहा जो तू आज कर सक्ता हो उसे कल के लिये मत छोड़ रख—लड़के ने कहा तो वह नासपाती जो तुमने कल के लिये रख छोड़ा है दे डालो मैं उसे आज ही खा सक्ता हूं—

एक आदमी बहुत बीमार था जब वह चंगा हो गया तब अपने एक मित्र से ज़िक्र किया डाक्तर ने मेरी बीमारी में बड़ी मेहनत की और मुझे चंगा कर दिया—मित्र ने कहा डाक्तर नहीं बरन ईश्वर की कृपा हुई तुम को अच्छा कर दिया—बीमार ने जवाब दिया शायद ऐसा ही हो परन्तु चंगा करने के लिये रुपया तो मुझे डाक्तर को देना पड़ा है—

सहानुभूति ॥

दूसरे के दुःख से दुखी सुख से सुखी होने का नाम सहानुभूति है--इससे यह प्रयोजन नहीं है कि दूसरे के घर कुछ उत्सव हुआ अरोसी परोसी भाई बन्धु ज़ियाफत में आप शरीक हुये उमदा से उमदा भोजन जो उन्हे कभी वर्षों में एक बार दोबार मिल सक्ता है खूब हफर के भोजन कर जलसे में भी शरीक हो मोछों पर ताव फेरते रवाना हुये मालूम हुआ कि हम को आप के साथ बड़ी ही सहानुभूति है--या हम पर कुछ दुःख पड़ा मातमपुरसी की भांत लोग आय २ जमा होते गये हमे दो चार बातें इधर उधर की समझाय बुझाय मानो घाव में नोन छिड़कने की भांत आश्वासन और दिलासा दै दिवाय घर की राह ली हम पर बड़ा एहसान हुआ कि हम आप के दुःख में शरीक हुये इस का नाम सहानुभूति नहीं है--वरन यह वह शक्ति है जिससे प्रेरित हो मनुष्य दूसरे के सुख वा दुःख को अपना ही समझ उस के कायम रखने या उसके मिटाने की वैसी ही चेष्टा करता है जैसा अपने सुख के बढ़ाने और दुःख के दूर करने की करता है---यही एक शक्ति है जो प्रत्येक मनुष्य को समाज में जकड़े है यह न होती तो मनुष्य समाज में हो कर भी न होने के बराबर था--

अब देखना चाहिये सहानुभूति की उत्पत्ति कहां से है देखने या टटोलने आदि शक्तियों की भांत यह हम्मे खुदबखुद होती है या व्यवहार में अनुभव से इसे हम अपने में पैदा कर सक्ते हैं ?--छोटे बालकों में भी जिन्हों ने संसार में अभी बहुत कम अनुभव प्राप्त किया है एक शक्ति पाई जाती है जिस्से वे दूसरों के सुख दुःख हर्ष शोक क्रोध अथवा प्रीति को बहुत जल्द समझ लेते हैं और एक शक्ति उन में ऐसी भी पाई जाती है जिससे बालक दूसरों के आनुभविक या बोधात्मक ज्ञान "फीलिंग" के रंग ढंग उतारने की चेष्टा करते हैं--ये दोनों बातें बालक में बहुत छोटी उमर में आ जाती हैं और यह कहना कि इन दोनों को इस ने ऐसा जल्द सीख लिया कुछ बेढ़िकाने कीसी बात मालूम होती है वरन इस सीख लेने के माने अनुभव कहा जाय तो ठीक है। तो सिद्ध हुआ कि यह शक्ति अत्यन्त छोटी उमर से हम्मे आ जाती है किन्तु इसे काम में न लाने से नष्ट भी हो जाती है और जब

तक वह सुख दुःख अपने को नहीं भुगतना पड़ा तब तक हम उसे आप नहीं समझ सक्ते क्योंकि इसका अनुभव हमें नहीं हुआ—इसका उदाहरण दूर क्यों ढूंढने जांय हम अपने म्युनिसिपल कमिशनरों ही को इसके दृष्टान्त में रखते हैं—उनकी वह दशा नहीं है जो हम सबों की है अर्थात् उन्हे सौ दो सौ रुपये साल में दे डालना उतना न अखरेगा जैसा चार रुपया साल उस अनाथ रांड को जिसे केवल मकान का केराया ही एक जीने का सहारा है—इसी से उन्हों ने ७॥) सैकड़ा पानी का टैक्स झट मंजूर कर अपनी२ राय दै हांमी भर लिया—न उनको किसी तरह का व्यौपार करना पड़ता है नहीं तो इतनी कड़ी चुंगी कभी न जारी होने देते—यद्यपि सहानुभूति समाज की उन्नति अवनति अथवा ह्रास या वृद्धि का एक प्रधान कारण है किन्तु ऐसे महापुरुषों को समाज के भीतर रह कर भी समाज के बाहर मानना चाहिये जैसा किसी जंजीर की दस पांच कड़ी कहीं टूटी पड़ी हों—इस सहानुभूति में एक बात और भी लक्ष्य करने योग्य है कि जिस समाज में आप जाइये उसी समाज के आप तात्कालिक सुख दुःख का अनुभव करने लगेंगे—दुखी और रोता हुआ बालक भी खेलते हुये बालकों के पास जाते ही प्रसन्न हो खेलने लगता है—

अब यह सिद्ध हुआ कि सहानुभूति के लिये कुछ अनुभव अवश्य चाहिये ज्यों २ अनुभव बढ़ता जायगा सहानुभूति या हमदर्दी भी बढ़ती जायगी—लड़के किसी तरह की पीड़ा का अनुभव पहले अपने ऊपर करते हैं फिर दूसरे अपने साथी पर उसी तरह की पीड़ा देख अपने ही समान उसे भी पीड़ित जान उसके साथ सहानुभूति करने लगते हैं—ज्यों २ उनका अनुभव बढ़ता जाता है दूसरों के सुख दुःख के सब रंग ढंग को अपने सुख दुःख के सब रंग ढंग के साथ तुलना कर उनकी सहानुभूति भी दूसरों के साथ अधिक२ बढ़ती जाती है—जैसा जिसने कभी किसी तरह का इमतिहान नहीं दिया वह दूसरों के पास या फेल होने के सुख दुःख का अनुभव भी नहीं कर सक्ता केवल इतना अलबत्ता कहेगा कि मेहनत कम किया नहीं तो ज़रूर पास हो जाता कुछ परवाह नहीं दूसरे साल देखा जायगा—मसल है—

"जिस्के पांव न जाय बेवाई सो क्या जानै पीर पराई"—

"नहि बन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम्"—

इमतिहान की तारीख से महीनों पहले जैसी कुल जी तोड़ के इसने मेहनत की थी और अब अकृतकार्य होने पर जैसी शरम और दुःख इसे है उसका अनुभव कहने वाले को क्यों कर हो सक्ता है?—इसी तरह बढ़ते२ उस बालक का अनुभव ज्यों २ अधिक२ होता जाता है त्यों २ भाई बहन बाप मा सब के साथ उसकी सहानुभूति बढ़ती जाती है अर्थात् उन सबों के साथ जिनसे उसका बहुत काम पड़ता है—यों ही होते २ उसकी सहानुभूति एक अजनबी के साथ भी वैसी ही हो जाती है जैसी अपने लोगों के साथ उसे थी अन्त को इसका दरजा यहां तक बढ़ता जाता है कि अच्छे सत्पुरुष कभी किसी को दूसरा मानते ही नहीं वरन "वसुधैव कुटुम्बकम्" ऐसों ही का सिद्धान्त और माकूला है—और इस दशा को हम सहानुभूति का पूर्ण प्रकाश कहेंगे—जब अनुभव आदि के द्वारा इस सहानुभूति के प्रकाश का हमे पूरा अधिकार है तो दूसरों के सुख वा दुख से आविष्ट हो हम यहां तक तन्मय हो जाते हैं कि उसके सुख में हसने और दुख में रोने लगते हैं—पर दुख में दुखी होने में भी एक प्रकार का सुख है—सहानुभूति से मनुष्यों की दृढ़ता काम में अधिक होती जाती है जो मनुष्य बुरी संगत में रह तरह२ की बुराई सीखते जाते हैं उनके साथ सहानुभूति करने से वे बुराई और आवारगी में पक्के होते जाते हैं इसी से यह कहावत है "एक चना भार नहीं फोड़ सक्ता है,, अर्थात् एक आदमी कोई काम कर रहा है उसकी कोई दूसरा आदमी स हानुभूति न करे तो वह अकेला लाचार हो उस काम को आप ही छोड़ दे—हमारे देश में संशोधक और संस्कारक कितनी बातें देश की भलाई और उपकार की सोचते रहते हैं और किया भी चाहते हैं पर उन्हें सहानुभूति करने वाला कोई नहीं रहता इसी से वे बहुधा अपने काम में कृतकार्य नहीं होते—हमारे म्युनिसिपल मेम्बरों में एक ने प्रजा के हित की बातों पर ज़ोर देना चाहा औरों ने कर्मचारियों की राय के विरुद्ध उसे समझ अपने२ बोट उसपर न दिये अपना विचार उसे सब तरह पर गलत मालूम हुआ और वह छोड़ बैठा—संसार में कई एक ऐसी बातें भी हैं जो सहानुभूति के सर्वथा प्रतिकूल हैं—एक "प्रेज्युडिस" हठ धर्मी जैसा हमे यह मालूम हुआ

इसने बड़ा पाप किया है तो हम कभी उस्पर सहानुभूति न करेंगे—मनुष्य में हठधर्मी होने से उदार भाव कहीं नाम को भी नहीं रहने पाता तब मनुष्य मात्र सब भाई हैं इसकी तो चर्चा ही क्या है—दूसरी डाह—जहां डाह ने मन में स्थान पाया तो पर दुःख से दुःखी होना कैसा बरन दूसरे को दुःखी देख हम सुखी होते हैं—तीसरी उमर आदि के कारण असमानशीलता जिस्से मनुष्य मात्र की पसन्द और ज़ायका "टेस्ट" के रंग ढंग इत्यादि में बड़ा अन्तर पड़ जाता है इसी कारन जवानों की बूढ़ों से बहुत कम पटती है—जैसा को तैसा मिलता है तभी पूरी सहानुभूति होती है जैसा किसी को कड़ुआ पसन्द है वह मीठा खाने वाले के साथ कब सहानुभूति कर सक्ता है ? यदि कोई फकीर जाड़े से कांपते हुये अमीर को देखे तो वह उस्की कपकपी के साथ क्यों सहानुभूति करने लगा उसे तो रोज़ही जाड़े से कांपना पड़ताहै-

सहानुभूति बढ़ाने वाली भी तीन बातें हैं—एक अदला बदला आज तुम ने हमारे साथ सहानुभूति किया कल काम पड़ने पर हम भी तुम्हारे साथ वैसा ही करेंगे जो एक प्रकार की बनियई है सच्ची सहानुभूति का दरजा इस्से बढ़ा हुआ है—किसी कवि ने भी कहा है—

"कृते प्रत्युपकारो यो वणिग्धर्मो न साधुता ।
तत्रापि ये न कुर्वन्ति पशवस्ते न मानुषाः ॥"

उपकार के बदले प्रत्युपकार वणिग्व्यापार है उसे साधुता न कहैंगे इस्पर भी जो नहीं करते अर्थात् उपकार करने वाले के साथ अनुपकार करते हैं वे पशु हैं उन्हें मनुष्य कौन कहेगा—दूसरा एक सा चित्त और एक सा अनुभव होना जैसा दो मित्रों में होता है—तीसरी बात पास बैठना उठना इत्यादि सहवास के कारन जैसा दो परोसियों में पाई जाती है हम आप के परोस में रहते हैं और बहुत कुछ हम से आप से सरोकार है तो कहां तक हमें आप के साथ सहानुभूति न होगी—अब हमें इस बात का अचरज है कि हमारे बहुत से नादेहन्द वञ्चकवृत्ति वाले बेइमान इन तीन नियमों में किसी के भीतर नहीं आते कितने तो ऐसे सत्यानाशी निकले कि उन के पास हम वर्षों तक रहे और हमारा भरपूर स्वाद लेकर अन्त में मूल्य देने के समय कालामुह कर छिप बैठे इन कृतघ्नों को किस्में गिनें—अस्तु—

कुलीनता ॥

मनुष्य में कुलीनता क्या वस्तु है? इसकी कोई चपड़ास या उर्दी नहीं है जिसे देख हम जान सकें कि यह आदमी अच्छे खानदान का है किन्तु संसार में मनुष्य का मनुष्य के साथ वर्त्ताव का रङ्ग ढंग और शील सङ्कोच उदारभाव के साथ काम में दृढ़ता निरभिमान इत्यादि हम्में कुलीनता की कसौटी है—अपसरी और मातहती तथा जित और जेता में हाकिम और वशंवद या रैयत का भाव इसकी पूरी परख है—ईश्वर शत्रु के भी वे दिन न लावे कि एक जाति को दूसरी विदेशी जाति के आधीन होना पड़े—हिन्दुस्तान इस समय कुलीन और अकुलीनों की लड़ाई का अखाड़ा बन रहा है—गवर्नमेंट और प्रजा दोनों में क्या सम्बन्ध है और दोनों में परस्पर का स्नेह और प्रेम-भाव क्योंकर निभ सक्ता है इसका मर्म और तत्त्व समझने वाले प्रजा वत्सल दयालु अपने पहिले हाकिमों की न्यायपरायणता को हम जब २ अपनी निगाह के आगे धर इस समय के निठुर हठीले दुराग्रही अविवेकी कर्मचारियों की कर्त्तव्यता को मिलाते हैं तो इस कुलीनता की भरपूर कसौटी हो जाती है—जिस समय तक विलाइत में सिविलियनों के बीच कम्पटीशन का क्रम नहीं निकला था और अच्छे कुल वाले चुन २ कर हिन्दुस्तान में भेजे जाते थे तब तक ब्रिटिश राज्य की शासन प्रणाली में किसी तरह का बिगाड़ न था तन मन से सब लोग प्रसन्न थे यह किसी को मालूम ही नहीं पड़ता था कि हम किसी विदेशीराजा की प्रजा हैं या अपनी ही जाति के राजा से शासित हो रहे हैं—वे लोग जो हाकिम बन के आते थे सब ऊंचे दरजे और ऊंचे कुल के थे अपने ज़ेर हुकूमत वालों से भरपूर उदारभाव का वर्ताव रखते थे और इस बात का विशेष ध्यान था कि कम्पनी के लाभ में चाहो कमी हो पर हमारी हुकूमत के कारण किसी के जी में असन्तोष या ऊब जगह न करने पावे जिसका परिणाम यह था कि देश सब भांत रंजा पुंजा था एक मामूली हिसाब का कर ज़मीन की पैदावारी मात्र में सरकार को दे बाकी धन सम्पति सब आप भोगते थे न तब गवर्नमेंट की क्षुधा ही इतनी विकराल थी कि सर्वस्व स्वाहा हो जाने पर भी नहीं बुझा चाहती किन्तु हमारे अभाग से वे सुख के दिन कोसों हम से दूर हट गये—इधर लोभ अन्त दरजे को पहुंचा उधर

कंपिटीशन ने ज़ोर पकड़ा, बढ़ई, लुहार, बागवान, खानसामा, धोबी, तक के नौजवान छोकड़े भरती हो हो आने लगे जो कोई कम्पिटीशन में कामयाब हुआ वही सिविलियन बनने का पूरा मुश्तहक हो गया—एक तो नौ जवानी का अल्हड़पन जिस्में अविवेक अन्धकार का छा जाना अत्यन्त सुलभ है दूसरे "एक्तिम्यूटिव पवर" का हाथ में आना—सुतरां उधर अविवेक के साथ मिला हुआ नई उमर का नया जोश इधर एक साथ ऊंचा अधिकार मिलने का अभिमान—ऐसे समय आभिजात्य कौलीन्य या ऊंची पैदाइश की खमीर ही आदमी के लिये एक कोड़ा हो सक्ती और अकार्य करने से बहुत दूर तक इसे रोक लेती सो यहां हुई नहीं तब ईश्वर ही कुशल करे—माना हमने ये लोग बहुधा पूर्ण सुशिक्षित होते हैं न इन के विद्वान् होने में कोई कसर रह जाती है किन्तु—

"दर्पभूताभिभूतस्य विद्यामूर्खशतायते"

जिन पर अभिमान भूतसा सदा सवार रहता है उन्में विद्या भी सौमूर्ख का काम देती है—दस पांच वर्ष में क्रम २ बढ़ते २ जब किसी ऊंचे से ऊंचे ओहदे पर पहुंचे तो सम्पूर्ण ज़िले का ज़िला या कई ज़िले इन के सिपुर्द कर दिये गये और लाखों मनुष्यों के जान माल की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी इन के हाथ में रख दी गयी उस समय इन की परख होती है—हमारे देश के बड़े से बड़े कुलीन जन सदा इन के सामने बद्धाञ्जलि रहते हैं और इन का बर्त्ताव जैसा उन की ओर रहता है उसे देख २ और समझ २ जीतो बहुत ही बहुत कुढ़ता है किन्तु कुछ इस खयाल से कि हमारी कुलीनता में दाग न लगे और कुछ अपनी स्वाभाविक राजभक्ति के कारण जिसे हम सब कुछ गवांय भी अपने में से जुदा नहीं किया चाहते सब सह लेते हैं—हम में अब भी ऐसे २ पड़े हैं जो बीस ऐसे बड़े से बड़े कर्मचारियों को मोल ले लें किन्तु यह समझ कि ये हमारे उसी राजा के एक अंग हैं जिस की प्रतिष्ठा हमारे धर्मग्रन्थों में इन्द्र वरुण के तुल्य मानी गई है उन के सामने केवल बद्धांजलि रहा चाहते हैं—लार्डलिटन में चाहो और सब बातें ऐसी रही हों जिस से हम लोगों का चित्त उन की ओर से उदासीन रहा पर उक्त लाट साहब इन सिविलियनों के रंग ढंग को भली भांत परख गये थे, जो हो हिन्दुस्तान इस समय दो ही

बड़ी बुराइयों से दलित हो धूर में मिल रहा है एक बाल्यविवाह दूसरे कंपिटीशन वाले इन सिविलियनों का स्वच्छन्दशासन—इस में पहिली बुराई बाल्य विवाह हमारी निज की करतूत है संशोधन चाहने वाले देशहितैषियों ने सै। २ तरह पर साबितकर दिया कि यह कुरीति बलवीर्य्य धनसंपत्ति सब की हानिकारक है पर हमारे आंख के अन्धों को सूझता ही नहीं तो क्या किया जाय—दूसरी बात कंपिटीशन की कृपा है राजा प्रजा दोनो मिल कर एक साथ इस अभागे देश का दलन कर रहे हैं तब इस के फिर के सुधरने की अब कौन आशा रही—

कुँआर के दस दिन ॥

कनागत के मनहूस मैले दिनों के बीतते ही कुँआर के ये दस दिन भी हिन्दुस्तान में क्या ही सुहावने आते हैं उधर वर्षा का अन्त इधर शरद् का आरम्भ दो वयस की सन्धि में विद्यमान नव युवती समान मनोहर ये दिन किस्के मन को विनोदित नहीं करते—ऐसे समय प्रतिवर्ष रामचन्द्र के चरित्र की ओर से छोर तक एक बार उथली हमारे आर्यों के बुद्धितत्त्व की बानगी है—सच तो यों है कि इस असार संसार में एक रामचन्द्र जी को छोड़ दूसरा कोई ऐसा पुरुष जन्माही नहीं जिस्की एक २ बात एक २ चरित्र में ऊंचे दरजे की नसीहत महत्व अथवा बड़प्पन की शिक्षा हमे न मिलती हो।—तब एक बार आदि से अन्त तक बरसवें दिन फिर लोगों के मन में उन २ बातों को ताज़ीकर देना क्या बड़े २ उपदेश और लेक्चरों से कुछ कम है बरन लेक्चर और उपदेश का फाइदा केवल उन्हीं को पहुंच सक्ता है जो उस्के अधिकारी हैं—आबाल वृद्ध वनिता छोटे बड़े अत्यन्त पामर तक के जी में कुछ असर पहुंचाने की तदबीर दूसरी और क्या हो सक्ती है सिवाय इस्के कि ऐसे उत्कृष्ट महापुरुष के उत्तम चरित्रों का अभिनय कर दिखया जाय—यह तो बड़े २ बुद्धिमानों का भी सिद्धान्त है कि कानों की सुनी हुई बातों से आंख की देखी का ज़ियादह असर होता है—हम लाला दयालदास जी को धन्यवाद्र देते हैं जिन के प्रयत्न से यहां रामलीला अब तीन वर्ष से अभिनय के क्रमपर होती है और गोबर पाथने कासा क्रम जैसा पहले था अब बिल्कुल तोड़ दिया गया—पात्र सब अभिनय करते २ बहुत प्रखर हो गये हैं उन का पाठ

भी उन्हें बहुत अच्छी तरह मँज गया है राम तथा जानकी ने अपने पाठ का अभिनय बहुत उत्तम और तारीफ के लायक किया—दूसरे दल की लीला में श्री रघुनाथ जी का नित्य नया शृङ्गार केवल एक नई बात विशेष थी जो इधर एक निपटमूर्ख उजड्ड की दस्तन्दाज़ी से न हो सका और शायद आगे को भी इसके लिये बहुत कुछ फिकिर के बाद लीला के अगुआ लोग उसे राह पर ला सकें—जुलूस तथा और सब सामान इन का अधिक था—

रामचरित्र नाटक ॥

नैनीतालस्थ बाबू मङ्गलीप्रसादकृत—हम सिद्ध कर आये हैं कि रामचन्द्र का चरित्र कैसा उपदेशात्मक है—अस्तु एक तो ऐसें महामहिम महापुरुष का उत्कृष्ट उदारचरित्र दूसरे भक्ति और ज्ञान में सना हुआ गुसाईं तुलसीदास जी का काव्य जिसे उक्त बाबू साहब ने चुन२ ऐसे मौकै से रख दिया है कि मानो रामायण का हीर सा बटोर के एक ठौर जमा कर दिया गया हो—पात्रों को उनके २ पाठ इस्के अनुसार घोखाय दिये जांय और अभिनय के ढङ्ग पर लीला की जाय तो जो कुछ अपव्यय इसे निरा खेलवाड़ समझ किया जाता है सब सफल कहाजाय परन्तु लकीर पर फकीर पुराने ढङ्ग वालों को जब रुचै तबना—जो हो यह पुस्तक बहुत उत्तम टाइप में छपी है मूल्य इस्का १।) है बाबू मङ्गलीप्रसाद डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर्स आफिस नैनीताल को लिखने से मिलै गी—

अंग्रेज़ी कविता का आनन्द हिन्दी में ॥

कविताप्रेमी हिन्दीरसिकगण, यदि आप को अङ्ग्रेज़ी कविता का आनन्द अनुभव करना हो अथवा इस बात का कौतुक हो कि उस देश वाले अपने भाव कविता में किस प्रकार

प्रकाश करते हैं तो एक प्रति हमारे कहने से "ऊजड़गाम" नामक हिन्दी पुस्तक को अवश्य मंगाइये यह पुस्तक इङ्गलेण्ड के सुविख्यात कवि गोल्ड्स्मिथ् के डिज़रटेडविलेज नामक मनोहर काव्य का अतिमधुर रोला छन्द में अनुवाद है। पं० श्रीधरपाठक ने इसे बड़े श्रम से केवल आप ही के लिये रचा है। पश्चिमोत्तर, पञ्जाब और मध्यदेश के शिक्षाविभाग के अधिकारियों ने अनेक प्रतियां मोल ली हैं और इस देश और इंगलेंड के कई प्रसिद्ध विद्वानों ने अनुवाद की बड़ी प्रशंसा की है—अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं—गुणी और गुणग्राहक आप उसके गुण देख सकेंगे—

उत्तम टाइप में उत्तम पत्र पर उत्तम रीति से छपी है और सर्वथा सङ्ग्रह के योग्य है ॥

दाम कड़ी जिल्द ॥।) प्रति पुस्तक

नरम जिल्द ॥=) " "

मिलने का पता— श्रीधर पाठक,

अहियापुर—इलाहाबाद

राजस्थान पुस्तकमाला ॥

बम्बई की काव्यमाला मासिक पुस्तक के ढंग पर—जिसे राजस्थान समाचार सम्पादक मुं० समर्थदान प्रतिमास ८० पृष्ठ की एक पुस्तक आगामी जनवरी महीने से निकाला चाहते हैं—इसमें संस्कृत और हिन्दी के हर एक विषय के पुराने तथा नये ग्रन्थ क्रम २ से छपेंगे वार्षिक मूल्य ६॥) होगा—मुं० समर्थदान के इस प्रयत्न को हम भी समर्थन करते हैं किन्तु संस्कृत तथा हिन्दी की बेकदरी देख ज़रासी खटक जी में होती है कि उक्त महाशय क्यों कर कृतकार्य हो सकेंगे—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र,

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि०-१५ सं०-३-४ } प्रयाग { नवंबर दिसंबर-१८९१

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १५ } { नवंबर—दिसंबर
संख्या ३-४ } { सन् १८९१

आत्मशोधनं और हमारे नवशिक्षित—

हमारे तालीमयाफ्ता नौजवान क्या करते हैं और उन्हे क्या करना चाहिये ? इस विषय पर सर्कारी कर्मचारी हमारे बहुतेरे देशी भाई तथा अखबार वाले भी अपना २ विचार और मन्तव्य बहुधा प्रगट कर चुके हैं और प्रगट करते रहते हैं—इस्मे सन्देह नहीं यह एक ऐसा प्रश्न है जिस्पर हमारे होनहार आगे के सन्तान का कुल दार मदार आरहा है हम इस बात को अवश्य स्वीकार करेंगे कि इस प्रश्न का उत्तर सर्वथा धुंधला है जिन दूरदर्शियों ने कभी इस बात को सोंचा है वे अपने देश के भयंकर भावी परिणाम पर अत्यन्त भयभीत हो कांपते से हैं—

यदि यह मान लिया जाय कि हमारे देश की होनहार भलाई होनहार नौजवानों पर नहीं बरन उन बुड्ढे तजरिबाकार लोगों पर मुनन्सर है जिन्हों ने अपने लम्बे जीवन मे सब तरह का अनुभव प्राप्त किया है—पुरानी लकीर के फकीर ये वृद्ध जन अपने एक बंधे हुये क्रम के अनुसार बहुत अच्छे और सर्वथा माननीय हैं—तो कौन इस बात का ठीका ले सक्ता है कि वे इस बदले हुए ज़माने मे भी सदा तक हट्टे कट्टे जिन्दा बने रहैं गे—अतएव इस्से तो कुछ तर्क करने की बात ही न रही कि अब जो देश का हित अनहित होने वाला है वह सब इन्ही तालीमयाफ्ता नौजवानो की करतूत से या उन के उपरान्त जो उस बदले हुये नये ज़माने मे नई सृष्टि होगी उनके बुरे या भले

कामों से—जिन का यह मत है कि हमारे देश का होनहार धुंधना क्यों है बरन सर्वथा उजाला है पश्चिमी सभ्यता के सूर्य की किरनें सब तरफ छिटिक रही हैं नये २ विज्ञान और दर्शन नई २ विद्या और चातुरी से लोगों के हृदय का अन्धकार दूर होता जाता है सिवाय बनने के बिगड़ने की तो अब कोई बात ही न रही—ऐसों के साथ हम सहमत नहीं हैं क्योंकि हमारा तो यही विश्वास है और किन प्रति दिन देखते भी हैं कि वह फरागती सुख चैनचान और प्रजा का सन्तुष्ट रहना इत्यादि बातें जिन से हम कह सक्ते हैं कि अमुक देश वा जाति के लोगों की हालत अच्छी है उन सब न्यामतों में हम अपने यहां रोज़ बरोज़ घटती और क्षीणता पाते हैं—इस्की मीमांसा से हमें इस समय कुछ प्रयोजन नहीं कि क्यों वह भयंकर दशा हम पर आती जाती है इस्का विचार हम फिर कभी करें गे—न हमे इन युवकजनों से कुछ शत्रुता है कि हम उन की व्यर्थ की खुचुर में प्रवृत्त रहें बल्कि ये नवशिक्षित युवक तो हमारे एक अंग हैं और हम जो कुछ लिखा चाहते हैं वह सब केवल उन्हे चितावनी देने के ढंग पर—इस लिये यदि हम उन के दोष कहैं तो आशा है कि वे हमे अपना विरोधी न समझैंगे—

शिक्षा या तालीम अर्थ के प्रकाशक अंगरेज़ी में दो शब्द हैं "इन्स्ट्रक्शन" और "एज्युकेशन" इस्में पहले शब्द का अर्थ हम पर तभी तक घटित होता है जब तक हमारी छात्र दशा है किन्तु दूसरे शब्द का अर्थ हम पर यावज्जीव के लिये घटित होता है और इस्में "मेन्टल" मानसिक "सोशल" सामाजिक "मारल" उपदेशात्मक "रिलिजस" धर्म सम्बन्धी सब प्रकार की शिक्षा अन्तर्गत है—एज्युकेशन इस शब्द का विस्तार यहां तक है कि "एज्युकेटेड" अर्थात् पढ़ा लिखा अपने चित्त को ऊपर कही उन चारो बातों में जिस ढंग का बनाया चाहे सब में "एज्युकेशन" का अर्थ सुघटित हो सक्ता है—हमारे नवशिक्षत अपनी छात्र अवस्था में जब कि वे सिवाय कालेज के लम्बे २ कमरे और वे किताबें जिन के रटने का उन्हें नित्य काम पड़ता है और संसार का सब रंग ढंग कुछ जानते ही नहीं थोड़ी सी प्रवीणता हो जाने ही से ऐसा भूल गये हैं कि सुशिक्षा या सुशिक्षित के आशय की प्राप्ति की फिकिर ही उन्हें कभी होती ही नहीं न यही कि सुशिक्षित के गुणों के उपार्जन के लिये हमे क्या करना चाहिये किस रीति पर बर्त्तना चाहिये इन सब

बातों को अपने में लाने की कभी उन्हों ने फिकिर किया हो बल्कि इस का अङ्कुर भी हम उन में नहीं पाते—खेद की बात है कि मानसिक "मेन्टल या मारलडिवेलपमेन्ट" सुधराव की ओर कभी उन का ध्यान ही नहीं जाता—एम,ए, एल, बी इत्यादि बड़े से बड़ा इमितिहान पास कर सौ दो सौ रुपये महीने की नौकरी पाय अपने को कृतकृत्य समझ लेते हैं—छात्र दशा में प्रोफेसरों ने मानसिक सुधराव इत्यादि के विषय में जो कुछ उपदेश दिया उसे पोथी का भांटा समझ भूला दिया—पान दोष एक ऐसी भारी बुराई इन्में जगह कर लेती है कि जिस्से इन के आचरणों को देख अत्यन्त जी घिना उठता है—इस्में सन्देह नहीं अंगरेजी तालीम से मनुष्य के हृदय का सब अन्धकार दूर हो जाता है और सुशिक्षित मनुष्य में इतनी योग्यता और शऊर आ जाता है कि वह अपने को भली या बुरी जिस बात में लगावे उसी में ताक और भरपूर लायक अपने को ज़ाहिर कर दिखावे गा किन्तु अफसोस कि हमारे पढ़े लिखे नौजवान अपने बुद्धि वैभव के प्रकाश को बुराई की ओर तो भले ही झुका लेते हैं किसी भली बात को अपने मन में आने ही नहीं देते—इस लिये यदि ये रुपया कमाय मामूली ऐश आराम में न फस आत्मशोधन पर भी ध्यान देते रहें जो हमारे देश और जाति के संशोधन का प्रधान कारण है तो न जानिये कितने कुसंस्कार जिन से हमारा बड़ा सत्यानाश हो रहा है हम से दूर हो जांय—और केवल नौकरी ही को जो ये अपने जीवन का सार और अपनी तालीम का नतीजा मान बैठे हैं सो बात इन्में आत्मशोधन से कम हो जाय—क्योंकि अपने लिये स्वछन्द व्यवसायको आधीनता से अच्छा समझना आत्म शोधन का मुख्य अङ्ग है—यहां पर हम इस बात को अवश्य स्वीकार करेंगे कि हमारे तजरिबाकार धर्मभीरू बुड्ढों में अकिल की चाहो कोताही हो पर चरित्र की खामी उन्में बहुत कम है इधर नई तालिम वालों मे बुद्धि की प्रवीणता है तो चरित्र संशोधन नहीं है वरन उन के ऐसे २ मैले काम देखे जाते हैं जिसे सोच समझ इन्हे अपना या आत्मीय कहते जी संकुचाता है—इस लिये यदि हमारे माननीय वृद्ध जन अपने दीर्घकाल के अनुभव को काम में लावें और ये नौशिक्षित युवक चरित्रसंशोधन में अपने को प्रवीण होते हुये प्रगट करें और उन तजरिबेकार बुज़ुर्गों को यह

निश्चय करा दें कि हमारे में सब भलाई ही भलाई है तो दोनों एक साथ मिलकर संशोधन और देश भलाई में प्रवृत्त हो। देश को उन्नति के शिखर पर स्थापित कर दें—इस समय पुराने और नये लोगों का सहमत होना ही देश का कल्याण है और वह अधिकतर इन सुशिक्षित नौजवानों ही के आधीन है—यदि ये उन माननीय वृद्धों को आत्मसंशोधन के द्वारा अपने चरित्र में पवित्रता प्रगट कर दिखावें तो अवश्य सर्वसाधारण की श्रद्धा और विश्वास इन पर दृढ़ हो और सुशिक्षा के सच्चे माने क्या हैं इसकी भी पूर्ण सफलता प्रगट हो नहीं तो यह शिक्षा उन्हे आदमी से शैतान अलबत्ता बनाती जाती है—

लोकोक्ति हेमचन्द्र सूरि के ग्रन्थ से संग्रहीत॥

अन्धस्त्रीबालवृद्धानामाग्रहो बलवान् खलु ।

अन्धा स्त्री बालक और वृद्ध इन का हठ बड़ा प्रबल होता है—

अनिषिद्धं ह्यनुमतमिति न्यायोपि वर्त्तते—

जिस की मनाही नहीं की गई उसे एक प्रकार अपने मत के अनुकूल समझाना चाहिये यह एक न्याय भी है—

अर्थाः सर्वत्र पूज्यन्ते न शरीराणि देहिनः—

धन का सब ठौर मान किया जाता है न मनुष्य के शरीर का—

आरोपितोऽतिभारो हि गात्रभङ्गाय जायते ।

जितना बोझ अपने को उठाने की सामर्थि है उस से अधिक उठाया जाय तो अङ्ग के टूट जाने का भय रहता है—

अनभ्यसनतो नश्यत्यधीतं धीमतामपि—

बुद्धिमान् को भी अनभ्यास से पढ़ा लिखा भी भूल जाता है—"अनभ्यासे विषं शास्त्रं" चाणक्यनीति में भी है—

इष्टे दृष्टे हि दुःखार्ता न दुःखं धर्तुमुत्सहे—

अपने इष्ट मित्र को देखने पर दुःखी जन फिर अपने दुःख के वेग को नहीं रोक सकते—हितोपदेश में भी इसी तात्पर्य का एक श्लोक है—

अपि मन्दत्वमापन्नो नष्टो वापीष्टदर्शनात् ।

प्रायेण प्राणिनां भूयो दुःखावेगोधिको भवेत्

किं नाम कुरुते नार्तो धूर्त्तवश्यो विशेषतः—

आर्त्त मनुष्य क्या नहीं कर डालता विशेष कर किसी धूर्त्त के जाल में फस जाने से—

किमभ्यासेन दुष्करम्—

अभ्यास से क्या नहीं होता—"करतकरतअभ्यासके जडमतिहोतसुजान"

क्लेशे हि शरणं भिषक्—

क्लेश की दशा में वैद्य ही का शरण लोग लेते हैं—

को हि स्वार्थमुपेक्षते—

कौन ऐसा मूर्ख है जो अपने स्वार्थ की उपेक्षा कर दे गा—

को हि प्राणांस्तृणीकृत्य साहसं कुरुते मुधा—

कौन ऐसा होगा जो अपने प्राणों को तृण तुल्य समझ व्यर्थ का साहस करे गा—

न मातुरुपकाराणां कोपि स्यादनृणः पुमान्—

माता के उपकार से कौन उरिन हो सकता है—

नहि केष्वपि कार्येषु सीदति द्रव्यवान् जनः—

जिसे रुपये का सुबीता है वह किसी काम के लिये नहीं अटका रह सकता—

धूर्त्तैः को नहि वंच्यते—

धूर्त्त किसे नहीं ठग लेते—

प्रायेण भाविनी लक्ष्मीरिङ्गितैरपि सूच्यते—

बहुधा होनहार संपत्ति आदमी की चेष्टा से सूचित होती है—

वीर भोग्या वसुन्धरा—

इस पृथ्वी को वही भोग सक्ता है जो वीर है—

भर्तृचित्तानुसारेण भृत्यानां हि प्रवर्त्तनम्—

अपने स्वामी के चित्त के अनुकूल नौकरों की प्रवृत्ति होती है—

भवेदभिभवायैव क्षमाह्यत्यन्तदर्शिता—.

बार२ क्षमा करने से सब लोग उस क्षमाशील को दबा लेते हैं—माघ में भी है—"क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः"—

यो यस्य नित्यमासन्नः प्रकृतिज्ञो हि तस्य सः—

जो जिसके समीप बहुत रहता है वही उसके स्वभाव को पहचान सक्ता है—

सुप्रयुक्तस्य दम्भस्य ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति—

दम्भ जो अच्छे ढंग से किया जाय तो ब्रह्मा भी दम्भी के कपट का अन्त नहीं पा सक्ते—

स्त्री ग्रहो बलवान् खलु—

स्त्रियों का हठ अतिकठिन होता है—

स्त्रीमुखाः कृतिनो नहि—

स्त्रीवश कभी कृतकार्य नहीं होते—

स सुधीर्यो हि कालवित्—

बुद्धिमान वही जो समय के अनुसार चलै—

शिक्थेनापि द्रोणपाकं जानन्ति हि मनीषिणः—

वटलोही का एक चावल टटोल बुद्धिमान् जन कुल के परिपाक का हाल जान लेते हैं—

न्यायसंग्रह ॥

काकदध्युपघातक न्याय—जैसा किसी ने कहा कौआ से दही की रखवाली करो तो इसके केवल यही प्रयोजन नहीं है कि केवल इतना ही मात्र का खयाल रहे कि कौआ दही को न जुठारने पावे किन्तु दही नाश करने के जितने विघ्न हैं सबों से दही की रक्षा की जाय—

काकमांस शुनोच्छिष्ट न्याय—यथा—

"काकमांसं शुनोच्छिष्टं स्वल्पं तदपि दुर्लभम्"—

एक तो कौआ का मांस यों ही अपवित्र सो भी उसे कुत्ते ने आकर जुठार डाला सो भी इतना थोड़ा कि जिस्से क्षुधा की निवृत्ति सर्वथा असम्भव, अस्तु वह भी सही तो सो भी दुर्लभ हो गया-यह न्याय वैसा ही है जैसा तुरुक भंये तो बेनहे के साथ-

काकदन्तगवेषण न्याय-व्यर्थ के काम में लगना जैसा कौआ के दांत हैं या नहीं और हैं भी तो स्याह हैं या सुफैद इत्यादि व्यर्थ की बातों की खोज-

मण्डूकतोलन न्याय—जैसा किसी ने कम तौलने की इच्छा से बटखरों के बीच दो चार मेढकों को रख तौलने लगा पर तोलते समय मेढक उछल २ तराजू के बाहर आने लगे उस मूर्ख तौलने वाले का सब कपट प्रगट हो गया-यह न्याय वहां लगाया जाता है जहां वादी ने अपनी बात पुष्ट करने को कोई कपट सनी युक्ति कहा हो पर वह उस्की युक्ति बहुत पुष्ट न होने से तराजू से मेढकों के उछलने की भांत आप से आप खुल पड़े—

चौरापराधेन मण्डव्यदण्डन्याय-चोरों के अपराध से माण्डव्य का शूली पर चढ़ाना पुराणों की एक प्रसिद्ध आख्यायिका है—वैसा ही एक के अपराध से दूसरे किसी निरपराधी पर दोष आरोपण करने में यह न्याय लगता है—

पुत्र लिप्सयादेवं भजन्त्या भर्त्तापि नष्टः—

पुत्र के प्राप्ति की इच्छा से किसी स्त्री ने देवाराधन आरम्भ किया यहां पुत्र मिलना दर किनारे रहा भर्त्ता को भी खो बैठी—सोलह सौ का हज़ार जैसा-

निम्बक्रिमि न्याय—नीम के कीड़े को नीम ही भाती है—

निम्बसिञ्चनवन्न्याय—

"यश्च निम्बं परशुना यश्चैनं मधुसर्पिषा ।
यश्चैनं गन्धमालाभ्यां सर्वस्य कटुरेव सः ॥"

नीम न मीठी होय सींच गुण घी से—

भृंगीकीट न्याय—भृङ्गी एक कीड़ा होता है वह झींगुर को पकड़ उस्पर बैठ भन्नाया करता है कुछ दिन में झींगुर भी वही हो जाता है-वेदान्त वालों का मत है जैसा अपने ऊपर बैठा हुआ भृङ्गी का ध्यान करते २ झींगुर तदात्मा हो जाता है वैसा ही यह जीव भी ब्रह्म का ध्यान करते २ उस्में लीन हो तदात्म हो जाता है—

सौ अजान एक सुजान ॥

पहले के आगे से

धूर्ताः जगद् वञ्चते ॥

प्रस्ताव ८

अनन्तपुर में छोटे २ मुकद्दमों की कारवाई के लिये तीसरे दरजे की मुनसिफी तहसीली की कचहरी और पुलिस का एक थाना के सिवाय और कुछ न था फौज़दारी तथा दीवानी के जो कुछ काम पड़ते थे सब वहां के ज़िले की कचहरी लखनऊ में भेज दिये जाते थे—यहां हाल में एक सदर अमीन मुकर्रर हो कर आये थे यह कौन थे क्या इन का मज़हब था कुछ पता न लगता था किन्तु अपने रंग ढंग से नेचरिये ज़ाहिर होते थे—पोशाक इन की बिलकुल अङ्गरेज़ी वज़ा की थी यहां तक कि कभी २ अङ्गरेज़ी टोपी "हैट" और क्वाप भी इसत्यमाल करते थे खाने पीने में भी इन्हे किसी तरह का परहेज़ न था पैदाइश के तो हिन्दू ही थे पर यह नहीं मालूम था कि इन की क्या जाति थी—कोई इन्हे कशमीरी समझता था—कोई इस समय के तालीम याफ्ता पढ़े लिखे लालाओं में मानता था डाढ़ी और चुटिया दोनों इन के न थी रंग भी गोरा था इस लिये ज़ियादह लोगों की यही राय थी कि यह कोई हाफ़कास्ट केरानी या यूरोपियन हैं—पंडित या बाबू की उपाधि से इन्हे बड़ी चिढ़ थी यह साहब अपने नाम के आगे मिस्टर लिखने की चाल बहुत पसन्द करते थे और अपने दोस्तों से इस बात की ताकीद भी कर दी थी—ये मिज़ाज या बर्ताव में अपने को सुशिक्षितों के सिर मौर मानते थे पर दिलपर सुशिक्षा का असर पहुंचा हो इस्का कहीं कुछ लेश भी न था—चालाकी में अच्छे खासे पट्ठे दस पन्द्रह वर्ष मुनसिफ और सदरआला रह कहीं कुछ थोड़ा बहुत नींचा खा कर बल्कि पिटपिटा कर भी आठोगांठ कुम्मैद हो चुके थे—भाड़ों की नकल है दो सौ जूते खा कर भी इज्जत न गँवाई—अपना रंग जमाने में तथा पाकेट गरम करने के फन में पूरे उस्ताद गुरुओं के भी गुरू—बल्कि यह ऐसे ही लोगों का कौल है कि ऐसा बलन्द इखतियार हासिल कर जिस ने दियानतदारी की और फूंक २ पांव रखता हुआ कोरे का कोरा बना रहा वह नुतफे हराम

है ऐसे बेअकिल को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये—ऐसे लोग इस्की दो वजेह कहते हैं एक तो सियाह सुफैदी का कुल इखतियार हाथ में आना दूसरे बमुकाबिले अङ्गरेज़ों के जो छोटे से छोटे डेढ़ हज़ार दो हज़ार महीने में तनखाह सहज में फटकारा करते हैं हम जो जन्म भर नौकरी कर लियाकत का जौहर दिखलाते हुये बराबर नेक नाम रह बुड्ढे होते २ पांच सौ छः सौ महीने में पाने लायक समझे गये तो इतने में होता क्या है इतना तो हमारे शराब कबाब का खर्च है—सोचने की बात है ऐसे एक जो अपने सब गुनों में सब तरह भरे पुरे हैं किसी नये जिले में पहुंचते ही पहली बात उन की शरिस्ते की जांच और मातहतों पर तन्दीही करना है जिन्हे अपने काम में बर्क और जांच की कसौटी में कसने पर खरे और बेलौस पाया उन्हे तबदील या सोकूफ करने की फिकिर में लगे—और यह सब इस लिये करते हैं जिस्में ऊपर के हाकिमों को सबूत हो जाय कि यह दफ्तर की सफाई और अपने शरिस्ते का काम दुरुस्त रखने में बड़े निपुण हैं—निश्चय जानिये यह सब उसी से बन पड़े गा जो कलम का ज़ोरावर ज़बान का तर्रार और हिम्मत का दबंग हो और जो ऐसा नहीं है बोदा और लियाकत में खाम है वह पाकेट गरम करने में भी सदा डरा करेगा उसे चालाकी के खुल जाने का खौफ हमेशा दमनगीर रहेगा—पहले वर्ष छः महीने भीतर २ उस ज़िले का हाल दरियाफ्त करेंगे कि यहां कौन २ रईस हैं किस हैसीयत के मुकद्दमे लड़ने वाले हैं क्या उन की चाल चलन है किस तरह की उन की सोहबत है क्या काम उन के यहां होता है इत्यादि इत्यादि—किसी छोटे वकील को अपने इजलास में बढ़ा रखना भी एक ढंग ऐसे लोगों का रहता है—अस्तु हमारे उक्तसदर अमीन साहब यह सब भरपूर समझ बूझ गये थे और अब इस समय डेढ़ वर्ष के ऊपर यहां जमे इन्हें हो भी गया था—उन के ज़िले भर में जो जहां जैसे छोटे बड़े तअल्लुकेदार रईस तथा सेठ साहूकार महाजन थे सब इन की निगाह पर चढ़गये थे—उन्ही में ये दोनों बाबुओं का भी सब कच्चा हाल दरियाफ्त किये हुये यही ताक में थे कि किसी तरह कोई मुकद्दमा इन बाबुओं का दायर हो—दो एक मुलाकात भी उन की इन से हो चुकी थी तोहफे और नज़र भेंट की चीजें तो अक्सर आया ही करती थीं—नन्दू जिसे बाबुओं ने थोड़े दिनों से अपना

मुखतार आम कर रक्खा था सदर अमीन साहब तक बाबुओं की रसाई करा देने का एक ज़रिया था—

मसल है "चोरै चोर मौसियायत भाई" इधर ये तो कुछ अपनी गैं में थे कि यह एक बड़े आला रईस के घर का गुर्गा है इसके ज़रिये मन मानता माल कट सक्ता है—उधर ननूदू अपनी ही घात में था कि ऐयाशी का चस्का तो इसे लगाही है किसी तरह इस मरदूद को भी बाबुओं की भांत अपने चंगुल में फसा लें तब क्या हमीहम देख पड़ें और अवध में बड़े से बड़े नवाबों से मेरा रुतबा और ठाठ कुछ कम न रहै—बस यही हुमा बेगम इसके लिये भी काफी होगी—इसी नीयत से यह अकसर किसी न किसी बहाने लखनऊ में महीनों आकर टिका रहता था और सदर अमीन साहब से रम्ज़ जम्ज़ भी खूब पैदा करली थी—यहां अपनी गैर हाज़िरी में हकीम साहब से खूब ताकीद कर दिया था कि बाबुओं के रहन सहन और चाल चलन को अच्छी तरह चौकसी के साथ देखते रहैं क्योंकि उसे यह डर बनी ही रही कि कहीं ऐसा न हो कि चनूदू फिर कोई उपाय बाबुओं को ढंग पर लाने की कर गुज़रै और उसका जमा जमाया सब खेल उचट जाय—इस बीच यहां हकीम साहब से बड़े बाबू की बेहद्द घिष्ट पिष्ट बढ़ गई दिन२ भर रात २ भर बाबू गायब रहते थे बाबू हकीम और ननूदू ये तीनों हुमा के ऐसे भक्त हो गये कि रातों दिन उसकी उपासना में लगे रहा करते थे पर इन्में मुख्य उपासना बाबू ही की थी क्योंकि वे दोनों तो मानो भारे के टट्टू से थे उपासना काण्ड का पूरा दार-मदार केवल बाबू ही पर आ लगा था—उधर छोटे बाबू की एक निराली ही गुट्ट कायम हो गई और दोनों मिल कर सेठ हीराचन्द के संचित धन को दोनों हाथों उलचने लगे—बड़े बाबू को चिट्ठी पत्रियों पर दस्तखत करना भी बहुत जबुर होता था कोठी तथा इलाकों का सब काम मुनीम गुमाश्ते और कारिन्दों के हाथ में आ रहा बहती गंगा में हाथ धोने की भांत सबी अपना २ घर करने लगे—नन्दू माला माल हो गया क्योंकि हुमा की फरमाइशें इसी के ज़रिये मुहैया की जाती थीं और वहां का कुल हिसाब किताब सब इसी के सिपुर्द था—यद्यपि बाबू की हुमा से रसाई कराने का खास ज़रिया हकीम ही था पर इसके हाथ केवल ढांक के तीन पत्ते रहे—कारण इसका यही था कि

ननूदू जात का बक्काल रुपये को अपनी ज़िन्दगी का सर्वस्व मानने वाला महा टञ्च बनिया था—रुपये की कदर समझता था और यह इसका सिद्धान्त था कि मान प्रतिष्ठा बड़ाई शील संकोच मुलाहिज़ा सब रुपये के आधीन है उसमें यदि हानि होती हो तो उसदा २ सिफतें और बड़े २ गुन भार में झोंक दिये जांय—

"अर्थोस्तु नः केवलं येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे"

इधर हकीम एक तो मुसल्मान दूसरे पुराने समय की अमीरी की बू में पगा हुआ घर में भूंजी भांग भी चाहो न हो पर ज़ाहिरा नुमाइदा नौबाबों ही कीसी रहना चाहिये—हकीम साहब जो दाने दाने को मुहताज़ थे बाबू के बदौलत अमीरों का सा सब ठाठ बास और ऐश आराम में ग़र्क हो गये बाबुओं का सवाई डेढ़ुड़ा खर्च हकीम साहब का हो गया जोड़ने की कौन कहे कर्ज़दार रहा किये—दूसरी बात हकीम साहब के यह भी ज़िहन नशीन थी कि हुमा की यह सब कमाई जो इस समय यह बाबू को फसा बेशुमार माल चीर रही है वह भी तो आखिर मेरी ही है—क्योंकि सिवा मेरे हुमा के और दूसरा है कौन—हुमा भी ज़ाहिरा में तो हकीम से कुछ सरोकार न रखती थी पर भीतर २ तो दोनों एक ही थे सूरत शकल में भी दोनों के एक ऐसा मेल था कि ताड़बाज़ों के लिये बहुत कुछ शक़ करने की गुंजाइश थी—रमा अपने दोनों लड़कों के कुढंग से सोने का घर मिट्टी होते देख भीतर ही भीतर चूरंचूर थी खाना पीना तक छोड़ दिया और दुबला कर लकड़ी सी हो गई थी सौ २ तद्बीर उन के सम्हलने की कर थकी पर इन दोनों को राह पर आते न देख जहां तक हो सका कारबार सब तोड़ बैठी बाहर की दुकानें सब उठा दिया केवल उतना ही मात्र रख छोड़ा जिसे वह अपने आप सम्हाल सक्ती थी और जिसे इस ने देखा कि उठा देने से बड़े सेठ हीराचन्द के नाम की हलकाई होगी और उसका स्थापित ठौर २ धर्मशाला पाठशाला सदावर्त्त इत्यादि का खर्च न सँट सकेगा—दूसरी बात रमा को यह भी मालूम हुई कि एक चन्दू को छोड़ और जितने लोग पुराने पुराने इस घर के असरइत थे सब किसी को सम्हालने वाला न पा कर जिस्से जहां जितना लूटते खाते बना मन मचता लूटा खाया मानो सेठ के घराने के बिगड़ने के लिये उलटा माला सा फेर रहे

थे—चन्दू अलबत्ता बाबुओं को राह पर लाने की फिकिर में लगा ही रहा छिपा २ रोज़ २ का इन दोनों का सब रंगढंग तजबीज़ा किया और अपने भरसक छल बल कल से न चूका जब तब आ कर रमा को भी ढाढस दे जाता था—रमा का मन तो यद्यपि इन लड़कों की ओर से बिलकुल बुझसा गया था पर यह अब तक हिम्मत बांधे था कि इन दोनों को राह पर एक दिन अवश्य ही लाऊंगा किन्तु जब तक ये गदह पचीसी के पार न होंगे और नई उमर का तकाज़ा उबर के समान चढ़ा रहैगा तब तक इन का ढंग से होना दुर्घट है—उसे विश्वास था कि यदि बड़े सेठ साहब की सुकृत की कमाई है और सिवाय भले कामों के मन से भी कभी किसी बुरी बात की ओर नहीं गये तो सम्भव नहीं कि उन की औलाद पर उस भलाई का असर न पहुंचे—यह कहावत है कि "बाढ़ैं पूत पिता के धर्मैं" कभी उलटी हो ही गी नहीं—चन्दू इसी फिकिर में था कि किसी तरह नन्दू से बाबुओं का लगाव छूट जाता तो इन दोनों का ढंग से हो जाना कुछ कठिन न रहता—इधर नन्दू भी मन में खूब समझे हुए था कि यह पण्डित मेरा पक्का दुश्मन है—यह यहां का रहने वाला नहीं एक अजनबी परदेशी ऐसा कदम जमा रक्खा है कि बड़ी सेठानी बहू मा जो यह कहता है वही करती हैं नहीं तो जैसा मैं ने बाबू को काठ का उल्लू बनाय अपने ताबे में कर छोड़ा था वैसा ही रमा बहू को भी जो स्त्री की जाति हैं मुट्ठी में करते क्या लगता था इस लिये इस चन्दू से मेरे जी में हर तरह पर खटक है क्या जानिये यह एक दिन मेरी सब चालाकी बाबू के जी में नक्श करा दे—खैर देखा जायगा अब तो इस समय हीराचन्द की कुल दौलत और राज पाठ सब मेरे हाथ में है अभी तो जल्दै बाबू का वह नशा उतरने वाला है नहीं तब तक में तो मैं कुल दौलत सेठ के घराने की खीच लूंगा पीछे से ये दोनों लड़के होश में आही के क्या करेंगे॥

सच है धूर्त्त और कुटिल लोगों की कारबाई का लखना ऐसाही दुर्घट है—कोई निराला ही तत्त्व है जिन से वे गढ़े जाते हैं ऐसों की ज़हरीली कुटिलनीति ने न जानिये कितनों को अपने पेच में ला जड़ पेड़ से उखाड़डाला इस लिये जो सुजान हैं वे ही उन की कुटिलाई के दांव पेंच से बचे हुए अपनी चतुराई के द्वारा दूसरों को भी अंधियारे गड्ढे में गिरने से रोक लेते हैं—शेष—

चोज़

किसी मिशन स्कूल में एक उस्ताद प्रश्नोत्तर "केटीकिसिम" की किताब पढ़ा रहे थे १४ वर्ष के एक लड़के से पूछा किस ने तुम्हे बनाया लड़के ने कहा मैं नहीं जानता ३ वर्ष का एक बालक जो वहीं पास खड़ा था बोला ईश्वर ने–बड़े लड़के ने कहा सिर्फ तीन ही वर्ष हुए तब ईश्वर ने इसे बनाया था इस से इसे याद है मुझे १४ वर्ष हुये इस से मैं भूल गया—

एक नौकर मिठाई लेने गया हलवाई कम तौल कर देने लगा—नौकर ने कहा मिठाई कम है हलवाई ने कहा तब तुम्हे बोझा कम उठाना पड़ेगा–नौकर ने पैसे कम दिये हलवाई ने कहा पैसे कम हैं नौकर ने जवाब दिया तुम्हे गिनना कम पड़ेगा—

एक गाड़ी पर चढ़े हुये एक पादरी साहब कहीं जा रहे थे उन के साथ एक दूसरे साहब भी सवार थे इस दूसरे साहब ने कहा मैं ने सुना है कि फ्रांस में जब किसी पादरी को फांसी दी जाती है तो उसी के साथ एक बन्दर को भी—पादरी ने कहा खुशी की बात है कि हम और तुम दोनों यहां हैं और उस बला से महफूज़ हैं—

सोचने की बात है कि यदि हकला वकील हो उसे ईश्वर की कृपा से बहरे जज्ज के इजलास में हकले गवाह की गवाही लेना पड़े तो सबर को कहां तक मन में जगह देना पड़े–

एक वकील ने अपनी बहस में कहा सुअर के सामने मोती नहीं फेकना चाहिये—जब वह दूसरी बार दूसरे फरीक के वकील की बात का जवाब देने को फिर उठा तो जज्ज ने कहा देखो! सुअर के सामने मोती न फेकना–वकील ने कहा आप न घबड़ाइये मैं अब जूरियों की ओर मुखातिब हूं—

एक कोई मोटे और ठिगने आदमी उछल कर घोड़े पर सवार होने लगे एक दूसरे साहब जो पास ही खड़े थे बोल उठे अल्लाह मदत करे–वह बेचारा घोड़े से गिर सड़क पर बेलन की तरह लुढ़क गया उठ कर खफा हुआ और कहा आप से किस ने कहा था कि इतनी ज़ियादह मदत मांगिये–

एक डाक्तर को एक नादेहन्द बीमार से काम पड़ा जब किसी तरह रुपया उस से वसूल न हुआ तो डाक्तर ने अपने घर में बीमार के बैठने के

ठीक सामने मनुष्य के मृतक शरीर का एक ढांचा लटका रक्खा—जब बीमार आया और डाक्तर से पूछा यह कहां से लाये डाक्तर साहब बोले एक बीमार ने मुझे कभी कुछ न दिया था जब मर गया तो उस के शरीर का ढांचा मांग लाया हूं—वह बीमार बहुत शरमाया और घर जाय डाक्तर की फीस का सब रुपया पहुंचा दिया—

एक वकील साहब ने एक बड़े रईस का मुकद्मा जीतने पर अपने मुअक्किल से शुकराने की दरखास्त की मुअक्किल ने पूछा आप का क्या शुकराना हुआ वकील साहब ने हँस के कहा अदालत का सब खरचा दे दिवाय रियासत का जो कुछ हिस्सा बच रहा है वही मेरा शुकराना हुआ—

कौमी तरक्की किन के किये होती है—

देश की उन्नति या कौमीतरक्की एक बड़ा टोटल उस तरक्की का है जो किसी देश या जाति के लोग अलग २ निज परिश्रम उत्साह व्योहार और चाल चलन में स्वच्छता चोखापन इमानदारी इत्यादि के द्वारा प्रगट कर दिखाते हैं—जो जाति हीन दशा में आ गई है उस के एक २ आदमी आलसी निरुद्यमी निरुत्साही स्वार्थी असाहसी भीरु आपस में एक दूसरे से ईर्षा द्रोह आदि अनेक घिनौनी बुराइयों में सैंदे हुये पाये जाते हैं—इस्में सन्देह नहीं बहुतसी बुराइयां जो समाज में चल पड़ी हैं कानून के द्वारा बहुधा रोक दी जा सक्ती हैं जैसा हमारे यहां सती का होना कानून के द्वारा बन्द कर दिया गया—हाल में सहवास बिल कानून बन जाने से हमारी अबोध अबलाओं की बहुत कुछ रक्षा की गई इत्यादि—किन्तु बहुतेरी ऐसी बुराइयां भी प्रचलित हैं कि उन के लिये एक नहीं सौ कानून गढ़े जांय कोई असर न होगा वरन कुछ न कुछ उन का अंकुर बना ही रहता है और जब अंकुर बना रहा तो वे किसी दूसरी शकल में पहले से भी ज़ियादह ज़ोर के साथ फबकतीं हैं—जैसा कोई २ पौधा कलम कर देने के उपरान्त पहले से भी अधिक लहलहा हो उगता और बढ़ता है—यदि यह बात सत्य है तो गवर्नमेंट की ओर से कितने ही नये २ कानून जारी होते रहैं समय २ उन्में अदल बदल भी होती रहे हज़ार प्रत्येक विषय के नये २ स्कूल और कालेज खुलते रहैं और उन की शिक्षा

प्रणाली में भी समयानुसार परिवर्तन होता रहे पर ऊंचे दरजे का वास्तविक देशानुराग जाति, वात्सल्य और सर्वहित की इच्छा जो सब बातें कौमी तरक्की में पायदारी पहुंचाने वाली हैं सर्वसाधारण में उन का कभी लेश भी न आवे गा—इस लिये जिस जाति के लोग अत्यन्त विषय, लंपट, झुठाई,-बेइमानी आदि बुराइयों के वश में हैं स्वार्थ के दास हैं उदारभाव को जिन्हों ने जाना ही नहीं उन के जीमे स्वाधीनता के सूत्रों की परिभाषायें कभी स्थान पावें ही गी नहीं चाहो वह जाति कैसी ही उत्तम रीति पर उदार गवर्नमेंट से शासित हों—

सर्कारी कानून के द्वारा लोगों को यह लाभ अलबत्ता पहुंच सक्ता है कि वें अपने शारीरिक या मानसिक परिश्रम का फाइदा उठा सकें किन्तु कानून यह नहीं कर सक्ता कि जो आलसी हैं उन्हे उद्यमी, सुस्त हों उन्हें मेहनती, डरपोक हों उन्हें शूरवीरों, फजूल कर्च हों उन्हें किफाइत से चलने वाला कर दे, क्रोधी को शान्त और गमखोर बना दे अथवा लोभी या सूम को उदार इत्यादि—किन्तु समाज में इस प्रकार का संशोधन तभी सम्भव है जब उस समाज के एक २ आदमी अलग २ इस प्रकार के सुधराव की ओर कमर बांध मुस्तैद हों—जाति या कौम के एक २ मनुष्यों के न सिर्फ ज़बान में बल्कि काम में किफायतशारी आत्मनिर्भर या अपने निज पुरुषार्थ अथवा परिश्रम का भरोसा उदारभाव आदि गुण प्रगट हों—देश के एक २ आदमियों की बुराई से अलग हो भलाई की ओर इस झुकावट ही का दूसरा नाम सभ्यता है—जिस्में प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार के गुणों से भरे पुरे हैं वही सुसभ्य जाति कही जा सक्ती है—जानस्टुअर्टमिल का मत है कि जिस देश के मनुष्यों में कौमीयत का अच्छी तरह परिज्ञान है दूसरी जाति के संपर्क में अपनी कौम या देश के एक तुच्छ से तुच्छ मनुष्य की थोड़ी भी हानि को कुल देश या जाति की हानि मानते हैं जहां सब लोग अपने स्वत्व की रक्षा को या अपने हक़ की पहचान ही को श्रेष्ठ धर्म मानते हैं वहां राजा कैसा ही अत्याचारी "डेसपाटिक" हो उस्के अत्याचार का कुछ असर लोगों पर नहीं पहुंच सक्ता वरन वहां राजा स्वाधीन हो अपने मन से कुछ करे ही गा नहीं जब तक सब लोग उस्में सहमत न हों—

याद रखना चाहिये यह कौमी तरक्की उन बड़े लोगों की करतूत का फल नहीं है—चूना पोती कबर की तरह जिन की सब चमक दमक केवल दूर से देखने ही मात्र की है वास्तव में इन के घृणित कामों पर ध्यान देने से यही जी चाहता है कि किसी तरह इन का संपर्क न रहता तो अच्छा होता—तअ-ज्जुब इस बात पर होता है कि भीतर २ ऐसे निकृष्ट आचरण के साथ भी ये समाज में अपनी प्रतिष्ठा और गौरव उन छोटे लोगों के बहुत ऊपर रखा चाहते हैं जो बेचारे चाल चलन और शुद्ध आचरण की कसौटी हैं—मुल्क की तरक्की का बाइस भी अक्सर ये छोटे ही लोग हुये हैं पर उस्के फलभागी होना उन की किस्मत में नहीं लिखा रहता—जैसा युद्ध में सिपाही अपना रुधिर बहाय लांख टके की जान को पत्ते पर रख फतहयाबी हासिल करते हैं पर नाम बड़े जेनरल या सिपहसालार का होता है तगमे उसी जेनरल को दिये जाते हैं बड़े २ खिताब और बड़ी से बड़ी तारीफ तवारीखों में उसी की छपती है—प्रायः ऐसे लोग हुये हैं जिन्हों ने अपने देश या जाति के लिये महा उपकार किया है जिन की बदौलत भाग्यवान् बड़े लोग भी इस लायक हुये कि उन का नाम तबारीखों में दर्ज किया गया और जिन का चरित्र गाया गया पर इस लिये कि वे छोटे दरजे के लोग थे उन्हे किसी ने न जाना कि मुल्क के किस कोने में हुये किस तरह अपना जीवन पार किया और कब इस संसार से विदा हो गये—बड़े लोगों को दूर की ढोल सुहावनी समझ अलग रख दीजिये जब अच्छे दिन आते हैं और कर्ता को किसी कौम की भलाई मंजूर होती है तब उस जाति के एक २ छोटे ही लोगों में ऐसी सुमति उत्सा-ह वीरता स्वत्वाभिमान पुरुषार्थ आत्मनिरभरता समा जाती है कि वे सब मिल कर तरक्की का एक बड़ा टोटल बना देते हैं—क्षतिग्रस्त इस हिन्दुस्तान को अभी बहुत कुछ यातना का भोग बाकी है यहां सर्वसाधारण में तरक्की का वह बीज कभी जमने ही वाला नहीं है—सच है नींम न मीठी होय सींच गुड़ घी से—यहां सौ २ ततबीर की जाती है कि किसी तरह इन्में कौमी तर-क्की का जोश पैदा हो जाय पर लोग सिवाय नीचे ताकने के ऊपर की ओर ताकते ही नहीं—यहां तालीम और उत्तम शिक्षा भी कुछ अद्भुत ही परिणा-म दरसा रही है गवर्नमेंट जो हमे सभ्य कर देने का ठीका लिये सिर से पांव तक सब ओर से आक्रमण किये हुये गाज रही है अपनी शासनप्रणाली को

इस ढंग पर ढुलकाये हुये हैं कि ज़ाहिरा यही मालूम हो कि मुल्क रोज़ २ तरक्की करता जाता यहां भीतर की चोट भीतर ही सालती है—भीतर चाहो हम जैसी जर्जर दशा भुगतते हों पर ऊपर आंसू पोछते हुये मुह चिकनाये अपने को प्रसन्न देखलाना ही पड़ता है—विलाइत की उच्चश्रेणी के विरुद्ध हमारे यहां की उच्चश्रेणी का भी ढंग कुछ निराला और, अद्भुत है वहां की उच्चश्रेणी बुद्धि वैभव में भी साधारण लोगों की अपेक्षा किसी तहर पीछे हटी नहीं है बल्कि वहां धनवान ही अधिक विद्वान् होते हैं हमारे यहां ऊंचे दरजे वाले जिन्हे हम बड़े लोग कहेते हैं अपनी इस मन्ददशा में भी रह कर सभ्यता के शिखर पर चढ़ने का दावा बांध रहे हैं—हमें खटका है कि हम इन बड़ों की अधिक पोल खोलने लगेंगे तो हमारे पढ़ने वाले नाराज़ होंगे लाचारी है—हम उन के बड़प्पन उच्चपद और धन संपत्ति का किस बात का शुकरियाअदा करें प्रत्युत ये हमारे गरीब छोटे लोगों के लिये उन की तरक्की में हर तरह पर बाधा पहुंचा रहे हैं—जिनके कुत्सित आचरण और कुढंग का नमूना ज़हर के समान उन छोटे निर्धन लोगों में जो बहुधा इन के आश्रित वशंवद और इन्हीं के इशारा से चलते हैं ऐसा फैल रहा है कि उन्हे सब भांत निकम्मा करडाला—और किसी पर इसका असर चाहो कुछ कम पहुंचा हो पर ब्राह्मणो की विद्यमान् हीनदीनदशा और कदर्यता का मुख्यकारण ये बड़े ही लोग हैं—इसमें सन्देह नहीं ब्राह्मण अनादिकाल से निर्धन होते आये हैं किन्तु जब तक ये अपनी विद्या योग्यता सदाचरण और वृत्तपालन के घमण्ड में बड़े २ धनी और राजाओं तक को फटकारते आये और छूत की बीमारी समान इन का अधिक संपर्क इस लिये और भी बचाते रहे कि वृत्तपालन और श्रुताध्ययन संपत्ति के साथ दरिद्रता का दुःखजीवन अच्छा पर धनवान और सुखी होकर दुर्वृत्त और लम्पट होना अच्छा नहीं—तब तक इन का ब्रह्मवर्चस् मध्याह्न के सूर्य समान प्रकाशमान था और ये प्रजामात्र के शिक्षा गुरु उपदेष्टा राह के देखलाने वाले सब से श्रेष्ठ और पूज्य थे—तब ये जैसा ही श्रेष्ठ थे अब वैसा ही अधिकांश इन्में के गिर भी ऐसा गये कि इन के सदृश हीन दीन कदर्य हिन्दुस्तान की कोई जाति या फिरका न होगा अब यह मसला इन्ही पर सुघटित है बल्कि इन्हीं के लिये गढ़ा गया है "लाओ ऐसा नर—पीर बबर्ची

विहिश्ती ख़र" अब बाकी क्या रहा कि जौनसा नीचा काम इन से न लिया जाता हो और इस सब का कारण केवल दान दक्षिणा और दरिद्रदशा में रह कर धनवानों का सम्पर्क है जिन बड़े लोग धनवानों की रहन सहन चाल ढाल को उदाहरण में रखिये भी वैसा ही करने लगे—कहां तो पहले ये उन के सिखलाने और राह बतलाने वाले रहे कहां अब ये दासानुदास के समान स्वयं उन की आंख से देखने लगे जिस तर्ज़ या रंग ढंग पर उन्हें रहते देखा उसी को अपने लिये इन्हों ने सूत्र या काइदा मान लिया—विद्याभ्यास और यथोचित योग्यता को घूर में मिलाय ब्राह्मणत्व का आभासमात्र जिसे इन धूर्त्तों ने इस हिकमत से रख छोड़ा कि बिलामेहनत माल काटने का यह एक बड़ा अच्छा ज़रिया है अंगरेज़ी तालीम के फैलाव ने उसे भी छार में मिला दिया और इन की चालाकी और धूर्त्तता की सब पोल खुल गई—उन बिन सींग पूछ वालों की तो बात ही निराली है जिन के घुने और गन्दे पुराने दिमाग में किसी तरह तरोताज़गी आही नहीं सक्ती जिन्में कुछ सभ्यता और नई तलीम की झौंक आगई है वे भरपूर इन ब्राह्मणों की धोखेबाज़ी को लखगये और इन की ओर से श्रद्धा बुद्धि को मन से ढीली कर डाला तब ये लाचार हो ऊपर को तो चढ़ न सके क्योंकि किस करतूत के भरोसे यह ऊपर चढ़ने का साहस कर सक्ते हीन से हीन कदर्यवृत्ति गुलामी प्यादगीरी रसोईगरी इखतियार करने लगे—अस्तु इन की हीनदशा को बहुत कुछ पल्लवित कर दिखलाना अपनी ही जांघ उघारना है—इस्से यह मत कोई समझ लेकि हम ब्राह्मणों की जीट उड़ा रहे हैं तो कोई दूसरी जाति वाले इन से नीचे दरज़े के लोग कुछ सम्हल रहे हैं और एक साधारण तरक्की का अङ्कुर पुष्ट पड़ता जाता है कदापि नहीं—इन्में तो फिर भी ब्राह्मणत्व का आभास भी बच रहा है औरों ने तो उस आभास को भी अपने में न रहने दिया और नित्य २ गिरते ही गये—देश में "नेशनालिटी" कौमियत को रहने के लिये कहीं स्थानही न मिला इस विद्यमान शताब्दी में पश्चिम के सूर्य के प्रकाश की रोशनी में यहां जातीयता के पैदा हो जाने की कुछ आशा हो गई थी सो अब शासन कर्त्ताओं की शासन प्रणाली का बदला हुआ क्रम हिकमत अमली के साथ सब ओर कपट ही कपट देख सिवनिरास रहने के आगे बढ़ना या

इस नाक की लाज को तिलांजुली दे दिया उस्की बराबर सुखी दूसरा कोई हो ही नहीं सक्ता—दूसरी बात यह भी है कि संसार में जो कुछ शील संकोच मुलाहिज़ा है वह सब इसी नाक की करतूत है जो सब तरह पर भरे पुरे हैं वही इस नाक की कदर को भी समझेंगे बांड़ा निगोड़ा इसके सुख दुःख को क्या जानेगा—इस नाक के गोरख धन्धे को कहां तक पल्लवित करते जांय क्या छोटे क्या बड़े जो जिस समाई के हैं वे उतना ही इस्की रखवाली में तत्पर और हैरान हैं ढूढ़ने से भी कहीं एक आदमी ऐसा न मिलेगा जो इस नाक के चक्कर में न पड़ता हो—बखील से बखील महाकदर्य सूम को भी इस नाक के भवर जाल में पड़ लाचार हो उदार बनना पड़ता है—इस नाक की अकथ कहानी को कहां तक बढ़ाते जांय इसके गुण दोष से वही बचा हुआ है जिस ने लाज शरम को मन में स्थान नहीं दिया—

"एकां लज्जां परित्यज्य त्रैलोक्यविजयी भवेत्"

रगड़ इसे कहते हैं—

बहुत लोगों ने एक साथ मिल कर जो पानी के टैक्स के लिये प्रयत्न किया कई हज़ार अर्ज़ियां गुज़रीं तो सर्कार में इस्की सुनाई हुई और फिर से इस्की जांच की जाती हैं—पर इस बार जो जांच होती है और जिस अंदाज़े से तशखीस की जाती है वह ठीक और उचित मालूम होती है—यदि यही तशखीस कायम रही और इस्पर अब और कुछ घट बढ़ न की गई तो किसी को न गढ़ाय गा—इसी तरह पर चुंगी में भी जो जांच की जाती और चुंगी उगाहने वाले जैसी अन्धाधुन्ध कर डालते हैं और हद्द से ज़ियादह चुंगी बढ़ा दी गई है वह कम कर दी जाती और बहुत सी छोटी २ चीजें कंडा उपली घास फूल इत्यादि जिनसों पर से चुंगी बिल्कुल हटा दी जाती तो कभी किसी को न अखरता और नं इस्से कोई अप्रसन्न रहता नहीं तो जैसा चुंगी इस समय अत्यन्त बढ़ रही है ऐसा ही सदा कायम रहा तो कितने रोज़गारी उजड़ जांयगे और प्रजा के बीच असन्तोष बराबर बढ़ता ही जायगा—हम को भी बारंबार लाचार हो सबों के असन्तोष का समाचार गवर्नमेंट तक पहुंचाना ही पड़ेगा—म्युनिसिपल मेम्बर तथा कर्मचारी गण यद्यपि चुंगी के चरित्र को

उद्घाटन करने में अशक्त होते हैं लाचारी है जब यह बात है कि रगड़ किये से कुछ नकुछ होता ही है तो हम भी क्यों न इस चुंगी के दोष दिखाने में तत्पर रहें कदाचित् कभी को किसी कृपालु के कान में इसकी भनक पड़ जाय और हम लोगों के दुःख पर उसे रहम आवे रगड़ बड़ी चीज़ है—

परिश्रम ॥

यद्यपि यह एक ऐसा विषय है कि इस्पर पिष्टपेषण की भांत जो कुछ लिखा जायगा पत्र की जगह छेकने के सिवाय रोचक कभी न होगा—अस्तु मेहनत मर्द का ज़ेवर है दांतों पसीने की मेहनत के बाद मेहनती को निज बाहुबल और पुरुषार्थ की कमाई से सूखी नोनरोटी जैसी मिठाती है वैसा छप्पन प्रकार का भोजन नहीं—मेहनत दो तरह की है एक हाथ पांव की दूसरी दिमाग़ की दोनों तरह की मेहनत मुल्क की तरक्की की पहली सीढ़ी है—जिस देश या जाति की तरक्की होना होता है वहां एक से एक बढ़ कर परिश्रमशील पैदा हो जाते हैं—सिकन्दर हनिबाल नेपोलियन प्रभृति प्रसिद्ध जेताओं ने परिश्रम ही के बदौलत आधे के करीब दुनिया को फतह कर अपने आधीन कर रक्खा—नितान्त असभ्य जाति भी निरन्तर परिश्रम के द्वारा सभ्यता के शिखर पर पहुंच गई हैं—परिश्रमी निज परिश्रम को अपने जीवन का सारांश समझते हैं गाढ़ी मेहनत के बल जो कुछ लाभ होता है उसके सिवाय बिना परिश्रम किये किसी से कुछ लेना अपराध और अधर्म मानते हैं—हमारे इस हतभाग्य देश में मेहनत की जैसी बेकदरी है वैसा दुनिया के किसी हिस्सों में नहीं और यह इसी मेहनत की बेकदरी का बाइस है कि यहां दरिद्र डंका पीट रहा है—बिना मेहनत मुफ्तखोरों का बेहद्द शुमार जैसा यहां पाइये गा वैसा और किसी भू भाग में नहीं और यही एक सबूत है कि यहां लोगों में मेहनत की कितनी कम कदर है—मेहनत की तरक्की में संसार की कोई बस्तु कभी निकम्मी हो ही नहीं सक्ती मेहनती लोग कूड़ा करकट चिथरा गुदरा सींग हड्डी इत्यादि निरी बेकाम चीज़ों को भी अपनी मेहनत के ज़ोर से एक बहुत अछे रूप में परिणत कर उसका खातिरखाह मूल्य कायम कर बड़ा धन कमाते हैं—यह मेहनत है जो मिट्टी को सोने के रूप में बदल देती

है और जिस ने मेहनत से मुह मोड़ लिया है उस्का सब सोना भी मिट्टी में मिला जाता है—इंगलेंड़ को मेहनत की बदौलत कूड़ा करकट हड्डी तक सोना उगल रही है आलसी इंडिया का सोना भी मिट्टी में मिला जाता है मेहनत ही से विलाइत का करोड़ों टन लोहा सोना हो होकर यहां से जा रहा है—यह तो निश्चय है कि हाथ पांव की मेहनत पर शुरूही से यहां के लोगों ने बहुत कम ज़ोर दिया है मनु जी कई ठौर शिल्पी और कारु को बहुत हेठा और अप्रतिष्ठित लिख गये हैं—यही कारण है कि यहां हरामखोरी की आदत का बीज आरंभ ही में बोया गया हज़ारों प्रकार के दान कायम किये गये और अन्त में आवारगी को रौनक पहुंचाने वाले दान लेने वालों की सैकड़ो क़िस्म कायम हो गई—महाभट्टी और बेडौल जो कुछ पिछले ज़मानो की कारीगरी दस्तकारी और शिल्प बच रहा था उसे बिलाइती कलों की स्वच्छ सुथरी चमकीली चीज़ों ने सब भांत हर लिया—अब तो देश का कल्याण इसी में मालूम होता है कि हमारे यहां के दानशील श्रद्धालु दान देने के इस उजड्ड क्रम को बिल्कुल बन्द कर दें और अपनी असंगत श्रद्धा बुद्धि के सोते पर डाट लगाय कारीगरी और मेहनत के बड़े २ कारखाने कायम करें और इन मुफ्तखोरे भिखमङ्गे ऐरागी वैरागी अहन्त महन्त आम्हन बाह्मनों को जो दिमाग़ की मेहनत में सर्वथा असमर्थ हैं पकड़ २ उन्हीं कारखानों में भरती कर दें और खातिरखाह उन से मेहनत ले उन्हे दिया जाय तो उन की भीख मांगने की आदत भी कम हो जाय देश में आवारा और उजड्डों का नंबर घटता जाय मेहनत की तरक्की से मुल्क की दौलत बढ़े और दरिद्र के पैर में झाड़ू लगै—पर ऐसा काहे को कभी होने वाला है यह सुबुद्धि तो लोगों में तब आती जब यहां की प्रजा का कुछ कल्याण होने वाला होता जो हों इस लेख को पढ़ लोग हमे निरे अकिल के हेठे समझ चिढ़ अलबत्ता उठैं गे कितने हमारी हसी उड़ावें गे कितने मनीमन मुसकिरांय गे भी—

परिश्रमी मेहनत को अपना कर्तव्य कर्म और इस्से अपने जीवन को सफल समझते हैं पर आलसी और निरुद्यमी के लिये यह एक बड़ा बोझ है ईश्वर के सृजे हुये प्राकृतिक पदार्थों में सबतरह के अनेक उत्तम २ गुण रख दिये गये हैं पर उन के द्वारा अपना उपकार साधन केवल परिश्रम के आधीन है जो जहां तक बुद्धितत्व उस्में पैनी कर सके वह उतना ही अधिक

लाभ उस्के द्वारा उठा सक्ता है—जैसा सोना आदि धातु जब तक खान में रहती हैं अत्यन्त प्राकृतिक पदार्थ हैं परिश्रम के द्वारा जब उस का खूदड़ और मिट्टी साफ की गई तब वह स्वच्छ धातु हो अधिक दाम की विकती हैं—उपरान्त ज्यों २ उस्की चीज़ें बनती जाती हैं त्यों २ उस्का मूल्य अधिक होता जाता है—विलाइत वाले कपास पेटुआ रेशम नील इत्यादि कच्चे बाने यहां से ले जाते हैं निज परिश्रम द्वारा उस्के उमदे २ नफ़ीस कपड़े तथा दूसरे पदार्थ तैयार कर अठगुना दसगुना दाम हम से भर लेते हैं और हम अपनी बेअकली के कारन टूट को ज़रा मन में दखल नहीं देते बड़ी प्रसन्नता के साथ उन पर रीझ उठते हैं—अतएव मेहनत सभ्यता का सार मनुष्य के जीवन की सार्थकता और यावत् सुख की साधन है—असभ्य जंगली जिन्हे मेहनत की तरक्की करने का शऊर और अकिल नहीं है संसार के सब सुखों से सब भांत वंचित रहा करते हैं और अपने जीवन को बड़े क्लेश के साथ पार करते हैं—वर्तमान उन्नीसवीं शताब्दी में दिमाग और हाथ की मेहनत उत्कृष्ट सीमा तक पहुंची है विज्ञान शिल्प हुनर और कारीगरी हद्द से ज़ियादह बढ़ती ही जाती है जिस से मनुष्य कीट तुल्य हो कर भी खुदाई का दावा बांधे हुये हैं—हमारे सामयिक राजा अंगरेज़ जो हम पर हर तरह की कड़ाई और सखती कर रहे हैं उस्के लिये हम अत्यन्त इन से नाराज़ हैं और इन की शासनप्रणाली में भांत २ का दोष निकालते इन्हे सब तरह पर बुरा कह रहे हैं किन्तु इनसाफ को कभी एक बार भी जीमे जगह नहीं देते कि यह इन की मेहनत है जिस्का दाम ये हम से चुकाये लेते हैं—ये आलस्य और काहिली की गाढ़ी नींद में सोते हुये हमे जगाते हैवान से इनसान बनाने की चेष्टा में लगे हुये हैं निश्चय जानिये अपने समान मेहनती चतुर और पटु किये विना कभी श्रान्त और विरत न होंगे—सच मानिये वह ज़माना हिन्दुस्तान का हम से कोसों दूर गया जब आलसी निरुद्यमी कुढंगे चैन करते थे निर्गुणी निर्विद्य भी गुणवानों के साथ सब धान बारह पसेरी के हिसाब पर तुलते थे—याद रहे यह उन्नीसवीं शताब्दी है अकिल और हुनर की तरक्की है योग्यता और लियाकत के चमनिस्तान में उमदा से उमदा रंग बिरंग के गुल खिलते आते हैं जिन की महक से देश सब ओर महर २ कर रहा अब इस समय धन और मान वे ही

बटोर सक्ते हैं जो समाज के बीच गुन में अथाह और दिमाग या हाथ की मेहनत में एकता हैं—हमारा सब कुछ बिगड़ गया और जब तक विदेशी हमे रौंदते रहें गे तब तक हमें अपने बनने की बहुत कम आशा है केवल मेहनत की कदर और उसका जौहर समझने की बुद्धि जो हमे इन्हीं सामयिक विदेशी राज की बदौलत मिली है एक ऐसी बात है जिससे निश्चय होता कि किसी समय हम फिर चमक उठें तो, क्या अचरज—

सातवां नेशनल कानग्रेस ॥

पहले कानग्रेसों की पूरी तवारीख़ जमा की जाय तो नागपूर का यह सातवां कानग्रेस मुकाबिले में किसी से कम न ठहरे गा—मध्यप्रदेश वालों की इस अवसर पर प्रसन्न मुखच्छवि और उत्साह देख तथा उन का विमल दृढ सौहार्द याद कर देशानुरागियों के चित्त में मुल्क की तरक्की का एक अनोखा भाव जग उठता है—इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि यहां वालों का आतिथ्य सत्कार और उत्तम प्रबन्ध होने वाली कानग्रेसों के लिये एक नमूना हो गया—एक हज़ार के लगभग डेलिगेट सिन्ध पंजाब मन्दराज बम्बई पश्चिमोत्तर पूना बेरार मध्यप्रदेश बंगाल आसाम आदि दूर देशों से आ जमा हुये थे और करीब पन्द्रह सौ के विज़िटर एकट्ठे थे उस प्रान्त के दो एक राजा भी इस जातीय महासभा में शरीक हुये थे—यद्यपि इस सातवें कानग्रेस में कोई ऐसी नई बात नहीं हुई जिसपर विशेष लक्ष्य किया जाय उन्हीं पुराने रिज़ोल्यूशन की फिर के उधरनी की गई—प्रिसिडेन्ट सभापति की स्पीच भी लम्बी तो बहुत थी पर रोचक न हुई—कलकत्ते के बाबू सुरेन्द्रनाथ बानर्जी, पं० मदनमोहन मालवीय, फीरोज़शाह मेहता, अंबाले के लाला मुरलीधर की हास्यरस और करुणा में सनी उर्दू की स्पीच तथा कई एक और स्पीच भी बड़ी मनोहर हुईं—यही जी चाहता था कि इन विद्वानों के मुखारविन्द से बराबर अमृत की धारा निकलती रहे और हम अपने कानों की दोनिया में उन पवित्र अक्षरों को रख निरन्तर पीते रहें—इस कानग्रेस में विशेष हर्ष की बात यह हुई कि वहां के न्यायवान् प्रजाहितैषी साम्प्रतिक चीफकमिशनर साहब बहादुर ने भी इसमें सहायता दी—अंग्रेज़ी राज्य सब राज्यों का मुकुट क्यों न

समझा जाय और उत्तरोत्तर इसकी वृद्धि होती रहे जहां ऐसे २ प्रधान कर्मचारी राजपुरुष विद्यमान हैं जिन्हों ने इस कानग्रेस का यथोचित मान और सत्कार किया—सर्कारी व्यांड़ बजने के लिये भेज दिया दो एक उस प्रान्त के नरेशों को भी इसमें शरीक होने के लिये प्रोत्साहित किया और सब से बढ़ के उदारभाव यह प्रगट किया कि सर्कारी नौकरों को भी जो और २ प्रान्तों में गुलामों से भी ज़ियादह परतन्त्रता की डोरी में प्रतिबद्ध हैं खुलाखुली इस जातीय महासभा के जलसे में शरीक होने के लिये अनुमति दे दी—हम अपने पश्चिमोत्तरदेश वासी भाइयों को परामर्श देते हैं कि आप लोग भी कोई ऐसी तपस्या और पुण्य का काम कीजिये कि जिस्के प्रभाव से तुम्हारे यहां भी कोई ऐसा ही उदारभाव पूर्ण उन्नत हृदय हाकिम प्रधानशासक बन के आवे और तुम्हारे जन्मजन्मांतर की मलिन कुत्सित परतंत्रता को न्याय और उदारभाव के विमल जल से धो कर उन्नति और कौमी तरक्की के मैदान में उछलने कूदने की तुम्हे आज्ञा दे दे—जैसा घर का समझदार बड़ा बूढ़ा भावी लाभ समझ बरसात के दिनों में अपने लड़कों को अखाड़ों में खुशी से उछल कूद की आज्ञा दे देता है—मध्यप्रदेश की पृथ्वी में एक विशेष गुण यह भी है कि वहां की पुण्य भूमि पश्चिमोत्तर की पाप भूमि समान मुलना मुन्शी बनौआ राजा नाक कटाय शहीदों में दाखिल हुये दो एक ठाकुर क्षुद्र ज़मीनदारों के खुरन्यास से कलुषित और अपवित्र नहीं है—न वहां के हाकिम ही ऐसे हैं किसन्तति सदृश प्रजा की बढ़ती देख मनीमन पछताया करें—

अस्तु प्रतिवर्ष इस प्रकार कानग्रेस होने से राजनैतिक आन्दोलन टटका होता जाता है दूसरे हम लोगों में राजनीति के गूढ़ मर्म समझने की योग्यता भी आ रही है—सर्वसाधारण जो इसका पूरा २ लाभ न समझ सब रहे हैं कि हम पर तो हर तरह की सख्ती और भांत २ के टैक्स बढ़ते ही जाते हैं कानग्रेस से लाभ क्या सो नहीं—विरादरमन यह मुह का कौर नहीं हैं कि हाथ से उठाने भर की देर रहती है मुह में रक्खा और हप्प कर गये—ये राजनैतिकविषय हैं इसके सुधराव के लिये जुगानजुग चाहिये—और २ देशों में जिन बातों के हासिल करने में रक्त की धारायें बहाई गईं लाखों आदमियों की जान गई उसे हम बातों ही बात में लिया चाहते हैं क्योंकर जल्दी संभव है—यह ब्रिटिश

गवर्नमेंट की उदारता है कि हम बराबर उसके दोषों को उद्घाटन कर रहे हैं कानून बनाने वाली सभा इत्यादि के लिये कर्मचारियों को सब भांत बदनाम करते हैं पर कोई मुजाहिम नहीं होता प्रत्युत दस बात के लिये चिल्लाते हैं तो दो एक बात की सुनाई होती ही है—हे हमारे देशीय बान्धवजन ऊबिये नहीं इस शुभ काम की सालगिरह प्रतिवर्ष करते जाइये—और अपने बहुत से कामों में किफाइत कीजिये पर इसके लिये खर्च करने में न सकुंचाइये इसकी पुष्टि करते रहो गे तो यह कानग्रेस महावृक्ष हरा भरा हो तुम्हारे लिये किसी समय अमृत वृक्ष फलेगा—दूसरे साल आठवां कानग्रेस इलाहाबाद में निश्चय किया गया है —

यहां पर हमारी समझ में एक बात और भी आती है जिसका प्रगट कर देना उचित बोध होता है कि पुछल्ले की भांत सोशलकानफेरेन्स का इसके साथ लगा रहना सर्वथा हानिकारक है जिसके ऊटपटांग "रिजोल्यूशन" विचार कोई भी हमारे लिये हित नहीं हैं—यदि यह सोशलकानफेरेन्स न तोड़ दिया जायगा तो एक न एक दिन कानग्रेस को अवश्यमेव बाधा पहुंचावे गा अब कि बार नागपूर में जो कानफेरेन्स किया गया उसे देख यही मन में भ्यासी कि यह तो निरा लड़कों का खेल है या कोई फार्स है—इसके अगुआओं में बड़ी चखीचखा खैंच और आपस का विरोध है तब यह बेल काहे को कभी मड़ये चढ़ सक्ती है—हम लोग केवल राजनैतिक सुधराव और एका चाहते हैं सामाजिक संशोधन तो हम लोग अपने आप करते जाते हैं ज्यों २ तालीम बढ़ती जायगी जो बातें वास्तव में कोढ़ की बीमारी सी समाज में फैल गई आप से आप साफ होती रहे गी—कानफेरेन्स वाले होते कौन हैं जो बैल के माफिक इन के बांय बांय पर कोई कान दे—प्रतिवर्ष काङ्ग्रेस का होना ही परस्पर का मेल भिन्न २ देश और जाति वालों का परस्पर संघर्ष और पिष्ट पिष्ट के कारण बहुत से सामाजिक बन्धनों को ढीला कर देने के लिये क्या कम है इस लिये कानग्रेस मंडप में इसका होना कानग्रेस के गौरव को घटा रहा है जो हो इसका टूट जाना ही कल्याण है—

यह अभिनन्दनपत्र अहमदनगर के एक विद्वान् पुरुष ने मि०—ह्यूम को दिया है इस की कविता बड़ी उत्तम है इस लिये हम इसे अपने पत्र में अवकाश देते हैं जो संस्कृत नहीं समझते माफ करें गे सं०—हि०—प्र०

निरीक्ष्यास्मान्दूराद्विपदुदधिपूराकुलतनून् ।
धनैर्हीनान्दीनान् चिरमसुखलीनान्जडमतीन् ॥
स्वयं योऽभूत्तूर्णं तरुणकरुणापूर्णहृदयः ।
चिरंजीव्याद्ह्यूमो भरतधरणीमोदजनकः ॥१॥
परित्यक्तस्वार्थोऽनवरतपरार्थोद्यमरुचिः ।
प्रतीच्याब्धेः पाराज्झषमकरघोराकृतिमतः ।
समागत्यात्रार्यानकृत निजकार्य्यैकरसिकान् ।
चिरंजीव्याद्ह्यूमो भरतधरणीमोदजनकः ॥२॥
धियोत्तुङ्गान् वङ्गानमृतरुचिगङ्गातटगतान् ।
तथा मद्रान् भद्रान् झटितिगतनिद्रान् मरहठान् ।
व्यधात्सर्वान्योऽन्यानपिविबुधमान्यामितगुणः ।
चिरंजीव्याद्ह्यूमो भरतधरणीमोदजनकः ॥३॥
यदालोकादेकाद् भवति गतशोकापतिमतिः ।
गुणैर्युक्ता मुक्ताबलिरिव समाह्लादजननी ।
दिवंयाता भार्याऽकुरुत न च यं कार्यविमुखम् ।
चिरंजीव्याद्ह्यूमो भरतधरणीमोदजनकः ॥४॥
अहो साधोर्यस्य श्रुतिसुखमगायोद्धिदृशः ।
मुहुः स्मारं स्मारं विपुलगुणभारं निरुपमम् ।
मनः सांद्रानन्दाद् भवति गुणसंदानितमिव ।
चिरंजीव्याद्ह्यूमो भरतधरणीमोदजनकः ॥५॥
जराधीनोऽपीनो बलविभवहीनोऽपिसततम् ।
रतस्त्यक्ताशंको विनतजनपंकोद्धृतिविधौ ।
निरातंकोऽयंकोऽपि न भवति नालोक्यकृतिनम् ।
चिरंजीव्याद्ह्यूमो भरतधरणीमोदजनकः ॥६॥

सभां राष्ट्रीयाह्वां बहुजनसमाह्वानकुशलाम् ।
विनिर्मायाथास्या अवनमकरोत्सप्तशरदः ।
इदानीं तां कृत्वा परकरगतां यातिविषयम् ।
स्वकीयं सोजीव्याच्चिरमखिलभव्याहृतपदः ॥ ७ ॥
बुधास्वाद्यंहृद्यंरुचिरमनवद्याक्षरयुतम् ।
इदंपद्यंसद्यः स्फुरितिनिरवद्याखिलगुणम् ।
निधायाग्रे ह्यूमं विपदटविधूमांकमकरो
महादेवः कश्चिद् भवतु नितरां तद्बुधमुदे ॥ ८ ॥

सोशलकानफेरेंस ॥

"समाजसंशोधन की महासभा"

जहां तक इस सोशलकानफेरेन्स को थहाते हैं उस्से यही पता लगता है कि यह आन्दोलन कुल हिन्दुस्तान की ओर से नहीं है इस्के मुख्य प्रवर्तक पूना और बम्बई के नई रोशनी वाले थोड़े से मरहठे हैं—ऐसा जान पड़ता है कि कलकत्ते के बाबुओं को आज़ाद होते देख इन महरठों को बड़ा हौसिला हो रहा है कि हम भी किसी न किसी तरह समाज के कड़े बन्धनों से मुखलसी पावें इसी लिये यह ढंग रचा गया है—तस्मात् समाज संशोधन का यह एक बहाना मात्र है ऊपर से इसे कपट की कपरौटी से ऐसा सिढ़ रक्खा है कि हमारे सीधेसादे बहुत से देशी बन्धुओं को यही मालूम होता है कि यह कान्फेरेन्स देश के महाकल्याण का द्वार है और इस्के प्रवर्तक सब परमदेशहितैषी हैं किन्तु वास्तव में वे सब महाकपटी और निरे स्वार्थतत्पर हैं चमचमाते हुये छूरीकाटों से होटलों में भोजन के लिये इन की लार टपक रही है जीभ का पानी रस रहा है—विलाइत जा कर वहां स्वच्छन्द आहार विहार करें अन्त में जब घर को लौटें तो एक मेम अपने साथ लिये आवें—कितने यह भी कहते हैं विना विलाइत गये अङ्गरेज़ी की हमारी लियाकत बढ़ी नहीं सक्ती यह कहना भी उन का अत्यन्त अविश्वास के योग्य है—जब हम देखते हैं कि सुशिक्षा

की सुहावनी बाटिका में ऐसे बहुत से नवोद्गम पहुचे निकले आते हैं विलाइत का कभी मुह भी जिह्वोंने नहीं देखा और यहीं रह कर वह योग्यता प्राप्त कर ली है कि विलाइत गये हुये सात जन्म औतार लेने पर भी उन के सदृश नहीं हो सक्ते—सोशलकांफेरेन्स वालों को कपटी हम इस लिये सिद्ध करते हैं कि सहवासबिल के आन्दोलन में जो निःसन्देह बाल्यविवाह कुरीति का बहुत दूर-तक निवारक है अधिकतर यही बाधक हुये थे—हमारी समझ में रिफार्म और संशोधन वही पुष्ट और पायदार होगा जो सम्पूर्ण समाज को साथ लै के किया जायगा दो चार आदमी मनमानी आंयबांयशांय जो कुछ कर गुज़रैं गे उस्का असर सर्वसाधारण पर कभी हो ही गा नहीं खास कर ऐसे लोग जो उच्चशिक्षा के अभिमानी या विलाइत के लौटे हुये अपना जन्म सत्यानाश कर आये हुए हैं और हम सबों को जानवर मानते हैं—

इन संशोधकों को चाहिये यदि वे शुद्ध मन से हमारा संशोधन चाहते हुये सच्चे संशोधक हों तो पहले बिगड़ी समाज के कारन जो २ तकलीफें हैं उन्हें खुद भी सहते रहें और शुद्ध आचार विचार की कसौटी में कसा हुआ अपने को प्रगट कर दिखावें जिस्में हमारी अशिक्षित समाज को यह विश्वास हो जाय कि ये एक नहीं सात विलाइत तै कर आवें अपने आचार से किसी तरह पर डिगने वाले नहीं है और हम पर इन की पूरी सहानुभूति है—उस दशा में हमे विश्वास है कि इन विलाइत जाने वाले उत्साहियों को कोई कभी न रोके गा अब तक जितने विलाइत से लौट कर आये खुद तो लंगूर कीसी सूरत बने हुये हैं पर उलटा हमी को जानवर कहते मुल्क में पाव रखते हैं तब क्या कर हमे इन पर विश्वास हो कि ये अवश्यमेव हमारा उपकार करे हीं गे—दूसरे संशोधन न होने के कारण जो क्लेश है उस्का अनुभव केवल इन सुशिक्षितों ही को है जो अभी दाल में नमक की भात हैं और सब लोगों को तो अभी तक उसी कीचड़ में लोटना पसन्द आता है—जब सर्वसाधारण में उच्च शिक्षा का इतना अधिक प्रचार हो जाय कि देश में अपढ़ केवल दाल में नमक से रह जांय उस हालत में समाज संशोधन की पूरी आवश्यकता होगी और तब इस्का बाधक भी कोई न रहेगा—अभी तो इस संशोधन के लिये ऐसी मृदु उपाय को हिकमत अमली के साथ काम में लाना चाहिये कि न सांप मरै न

लाठी टूटै—वह यह है कि—पहले हम बाल्यविवाह जटिल कुसंस्कार को उठाने का प्रयत्न करें अपने २ जाति और कौम की कमेटी कर समाज में प्रचलित कुसंस्कारों को पहले दूर करें जैसा कायस्थ महाशय इन दिनों कर रहे हैं—सह भोजन भी पहले एक २ जाति का सह भोजन आरंभ हो जाय जैसा ब्राह्मण सब जो कुलीन हों चाहो जिस जाति के ब्राह्मण हों एक साथ खानपान में कभी न हिचकैं एवम् क्षत्रीमात्र सब एक हो जांय कायस्थ सब बारहो जाति वाले एक साथ खाने लगें इत्यादि—बाल्यविवाह उठा देने से विधवाविवाह की बहुत कम आवश्यकता होगी एक २ जाति वालों के सह भोजन में वर्णविवेक की प्रथा भी न टूटने पावेगी आचार भ्रष्ट न होंगे खान पान की कड़ाई भी बहुत कम हो जायगी—यदि देश की वास्तविक भलाई लोग शुद्ध और सीधे मन से चाहते हों तो उस्की सीधी राह यही जान पड़ती नोचेत् यह कानफेरेन्स विल्कुल नई रोशनी वाले उजड्डों का खेलवाड़ है गंभीराशय दूरदर्शी किसी तरह पर उस ओर रुजू नहीं हो सक्ते—

प्रेरित ॥

विद्यादान ॥

प्रियपाठक मनुष्य तन बड़े २ पुण्य कठिन तपस्या और ईश्वर की पूर्ण कृपा का परिणाम है—इसे सबी एक साथ मुक्तकंठ हो स्वीकार करते हैं कि उद्भिज अंडज स्वेदज जरायुज चार प्रकार की सृष्टि में सर्वोत्तम और प्रधान मनुष्य ही है—और मनुष्य सर्वोत्तम इस लिये माना गया है कि इसके तन में बुद्धितत्व एक ऐसा नानिक पिरोह दिया गया है कि जिस्से ईश्वर की और सब सृष्टि वंचित रह इसके आधीन और वशंवद है आगे बढ़ना और हीन दशा से ऊपर को चढ़ना अत्यन्त क्लेश निवृत्त पूर्वक सर्वथा दुष्प्राप्य ईश्वर को पा जाना यह सब मनुष्य ही के तन से सुसाध्य है—चतुष्पद आदि उत्पत्ति के समय से आमरणान्त उसी एकदशा में रहते हैं जिस्में वे पैदा किये गये बुद्धि तत्व के अभाव के कारण उन के डीलडौल में जो कुछ प्राकृतिक परिवर्त्तन होता है उस्के अतिरिक्त किसी तरह का सुधराव करना जानते ही नहीं—इसी लिये हमारे कवि लोग जिसे मनुष्यता में हेठा पाया और बुद्धितत्व की

कर्त्तव्यता का लवमात्र भी जिस्में न देखा उस्की उपमा मृग और चतुष्पद के साथ दे गये हैं—

"ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति"

तो सिद्ध हुआ कि मनुष्य का चोला मिलना कुछ साधारण बात नहीं है—हमारे उपदेशकगण भी ऐसा ही उपदेश देते रहते हैं मनुष्य का शरीर बार२ नहीं मिलता इसी चोले से जो कुछ करना हो सो कर लो नहीं पीछे पछताना और हाथ मलना होगा—

"लखचौरासी भरम के आया बड़ेभाग मानुषतन पाया।
ता पर ना कछु करी कमाई फिर पाछे पछताते हैं" ॥

इत्यादि—बुद्धिमानों का यह भी निश्चय है कि मनुष्य तनमें आ कर जो जैसाकरते हैं वैसा फल पाते "मेवा दिये मेवा मिलै फलफूल दे फल पातले"—अन्न देने वाले अन्न पाते हैं धन देने वाले धन पाते हैं वस्त्र देने वाले वस्त्र पाते हैं पुराणों से प्रगट होता है कि कभी २ इन दानियों को इस प्रकार के दान का उलटा फल भी मिला है राजा नृग को असङ्ख्य गोदान करने पर भी गिरगिट होना पड़ा किन्तु विद्यादान देने वालों को इस तरह का उलटा फल मिला हो यह कभी नहीं सुना गया अतिदान के कारण भी उलटा फल मिला है "अतिदानाद्बलिर्बद्धः"—केवल एक विद्यादान ही ऐसा दान है कि इस दान में जितनी ही अति होती रहे उतना ही—अधिकस्य अधिकं फलम्—अत्यन्त खेद और पछतावे की बात है कि हमारे देश के दानशील अनेक प्रकार के दान करते हैं और राजा नृग की गति पाने को अयोग्य और कुपात्रों में अपने असंख्य धन का विनियोग कर उलटा पापयोनि भुगतने की तैयारी भले ही कर रहे हैं पर इस विद्यादान की ओर कभी रुजू होते ही नहीं जो ऐसा दान है कि कुपात्र और अयोग्य में भी दिया जाय तो दान पाने वाले को सुपात्र और सुयोग्य बना दे जिस्के अति हो जाने में भी किसी तरह का खट का नहीं—जितना ही अधिक विद्या दान दिया जाय उतना ही अच्छा न इस दान का कुछ ओर छोर है कि कितना अधिक हो जाने से यह अति हो सक्ता है—विद्यादान का एक महा उत्तम परिणाम यह देखा जाता है कि इस्से यह लोक तथा परलोक दोनों सुधरता है देश के कल्याण की

इससे बढ़ कर कोई दूसरी उपाय हई नहीं—कहां तक इस दान की प्रसंसा करैं ईश्वर की प्राप्ति भी. विद्यादान वाले के लिये अति सुगम और सुसाध्य है—मुझे यहां पर विद्यादान का एक बहुत उत्तम उदाहरण मिला है भाग्यवश मैं भी इस शुभ अवसर में आ उपस्थित हुआ और विद्वन्मण्डली का अद्भुत समारोह देख रोम २ से प्रसन्न हुआ—यह शुभ अवसर भारतीभवन का वार्षिकोत्सव समारोह था—म्योर कालेज के संस्कृत प्रोफेसर श्रीयुत पण्डित आदित्यराम भट्टाचार्य सभापति के आसन पर सुशोभित थे और नगर के चुने २ धनी ज्ञानी मानी विद्यमान थे मालूम होता था मानो भारती अपने भवन में सोलहो सिंगार से आभूषित विविध हाव भाव दर्साती हुई इसके स्थापक महोदय के लिये विद्याप्रसून का हार गुथ रही है या रसिकों के मन लुभाने को प्रदर्शनी "एक्तहिविशन" की भांत दर्शकों के मन को अपनी ओर खीच रही है—इसके स्थापक बाबू भवानीप्रसाद तथा बाबू ब्रजमोहनलाल को अनेक २ धन्यवाद जिन्हों ने अपने निज व्यय से इस भवन को स्थापित कर प्रयागवासियों को विद्यावृद्धि के लिये सब भांत का सुबीता कर अपने लिये चिरस्थायिनी विमल कीर्ति का पताका विस्तारा और दूसरों के लिये इस विद्यादान महादान के उदाहरण बने—इसके प्रबन्धकर्त्ताओं को भी धन्यवाद है और विशेष धन्यवाद बाबू लालविहारी को है जिन्हों ने भारतीभवन के स्थापकों के चित्त में इसका बीज बोया है और निज परिश्रम तथा उत्तरोत्तर उत्साहप्रदान के अमृत जल से इसे बराबर सींच रहे हैं—ईश्वर इन सबों को उन के सदनुष्ठान का अभिलषित फल दे—दूसरी प्रार्थना ईश्वर से यह भी है कि देश के दूसरे २ धनिक बान्धवों को कुछ ऐसी बुद्धि दे कि वे भी ऐसे लाभकारी कामों में प्रवृत्त हों और अपने यत्तधन की सफलता प्रगट कर परलोक में पिशाच की गति पाने से बचे रहैं—फिर उन कोरे पण्डितों के मन में भी वह अचिन्त्य शक्ति करुणा वरुणाय ऐसी प्रेरणा करे कि वे भी इसे अपना परम सौभाग्य समझ भारतीभवन से लाभ उठावें और इस शुभ अवसर को वृथा न जाने दें—पण्डित जी आप की रूखी पण्डिताई को सरस करने के लिये भारतीभवन का विशेष लक्ष्य है आप को इसका किंचित् रस भी भीजेगा तो आप के उनबड़े २ चेलों में कहां तक कुछ असर न आवेगा जिन का बड़प्पन सहारा के निकम्मे रेगिस्तान की बड़ाई और विस्तार के साथ तुलना कर रहा है—हमारे देशहितैषीगण जिस दिन ऐसे २ ऊसर पृथ्वी के मैदान को ज़रखेज़ और फलवन्त करने में सफलोद्यम होंगे उसी दिन तत्काल मूर्खता पिशाची का देश से उच्चाटन हो जाना किसी तरह पर कष्ट साध्य प्रयत्न न रहेगा—और मूर्खता के उच्चाटन के साथ ही जन्मजन्म के अनेक दृढ़ कुसंस्कार छिन्नभिन्न हो एक

बार समस्त भारत जहां अब अविद्यातिमिर छाया हुआ है भारती का उजाला भवन हो अमरिका और इङ्गलेंड के समान फिर जगमगाने लगेगा—

सब सज्जनों का सेवक मदनचन्द खन्ना—कानपूर

भारतीभवन का द्वितीय वार्षिकोत्सव ॥

पढ़ने वाले यही समझें गे कि सिड़ी हो गया आज इसे क्या सूझी जो गाई गीत फिर २ गाता है—नहीं २ आप इसे गाई गीत न समझिये यह काम वास्तव में ऐसा ही हुआ है कि हम सौबार भी इस्की प्रशंसा छापैं तौ भी हमारी प्रशंसा पर्याप्त नहीं है—इस्के कई हेतु हैं एक तो यही कि जिस काम का बोझ दस बीस आदमी भी मिल कर नहीं उठा सक्ते उस्का समस्त व्यय एक ही विद्यारसिक ने अपने ऊपर उठा लिया है विना किसी तरह का खास अपने लिये कोई फाइदा न देख केवल धर्मार्थ इतना खर्च करना क्या कुछ हंसी नहीं—इंगलेण्ड अमरिका ऐसे देशों को तो अलग कर रखिये "सर्वं हि महतां महत्" हमारे देश में तो ऐसे सुकृती जन अभी कम उपजे हुये देख पड़ते हैं—संस्कृत जर्मन अंगरेज़ी यूनानी अरबी इन दिनों ज्ञान का भाण्डार समझी जाती है हम लोगों को इन भाषाओं से सहायता ले हिन्दी के भांडार को भरना चाहिये—भारतीभवन में संस्कृत और हिन्दी पर विशेष लक्ष्य है अंगरेज़ी आनुसंगिक और प्रासंगिक समझी गई है—क्या आप को यह सुन आनन्द न होगा कि इस भवन में दो वर्ष के बीच १५०० पुस्तकें इकट्ठी हो गईं चारो वेद, वेदाङ्ग, दर्शन, धर्मशास्त्र, वैद्यक, काव्य, कोश सबी ग्रन्थ यहां प्रस्तुत हैं खोगीर की भरती एक भी नहीं है लग भग चौदहो विद्या के ग्रन्थ मौजूद हैं—इस वार्षिकोत्सव में जो रिपोर्ट पढ़ी गई उस्से मालूम हुआ कि पन्द्रह हज़ार आदमी साल भर में पढ़ने के लिये भारतीभवन में उपस्थित हुये—हम अवश्य अपने भाग्य सराहें गे कि प्रयाग में पढ़े लिखों की संख्या कितनी अधिक है इस्से मालूम होता है कि यहां कितनी उपयोगिता ऐसे एक पुस्तकालय की है—एक क्या इतने बड़े शहर में दो चार पुस्तकालय होने चाहियें यक्षवित्त कुढंगी रुपये वालों की कमती यहां नहीं है पर किसी को इस्का उत्साह नहीं होता बार २ प्रशंसा करने का एक यह भी हेतु है कि कदाचित् किसी दूसरे पर भी यह रंग चढ़ जाय यद्यपि साथ ही इस्के यह भी विश्वास है कि यह वह गुड़ नहीं है जिसे चींटे खांय—भवन में पढ़ने वालों की संख्या कोई दिन इतनी अधिक हो जाती है कि एक ही पुस्तक या अखबार को दो आदमी एक साथ सफहे के एक पृष्ठ को एक आदमी दूसरे पृष्ठ को दूसरे आदमी पढ़ते हैं और विशेष तारीफ लिखते जांय गे तो लोग समझें गे कि अब तो यह निरा भाट हो गया यों ही पत्र की बेकदरी है और बढ़ जायगी इस्से बस—

शोक ! शोक !! शोक !!! महाशोक—

हा ! पश्चिमोत्तर के अद्वितीय महोज्ज्वलरत्न, सदाचार शिक्षा के कुल गुरु, पुरानी हिन्दुआनी के सिखापन की चलकीली चटशाला, कानग्रेस महासभा के आश्रयस्तम्ब, काश्मीरकुल उजागर, इलाहाबाद हाईकोर्ट के एकमात्र गौरव पं० अयोध्यानाथ अब न रहे—आदमीं में बड़प्पन थापने के जितने बडे २ गुण होने चाहिये उक्त पण्डित जी के सम्बन्ध में मानों सब सपने के से खयाल हो गये—निठुरनिर्दयी मौत को भी ऐसों ही की चाह रहती है—बाग़ में जो सब से बड़ा खुशनुमा खुशबूदार गुलाब था उसे चुपचाप खुटक कर चंपत हुई—निपट निर्विवेकी विधाता तेरी गति जानी नहीं जाती तू क्यों हम से इस भांत रुठा हुआ है कि हम जिस डाल को अपने लिये सहारा समझ नवाते हैं तू उसी को बीच से काट डालता है—पण्डित जी कहां तक सर्वमान्य और लोकहितैषी थे यह इसी एक बात से स्पष्ट है कि बहुधा विभव और धन सम्पत्ति में इन से चौगुना अठगुना बढ़े हुये कितने बड़े नामी रईस जियामुआ करते हैं किसी को खबर तक नहीं होती पण्डित जी के शोकसंवाद के फैलते ही हाईकोर्ट बन्द कर दी गई स्कूलों में तातील हो गई बाज़ार बन्द हो गई आज तक यह हाल हो रहा है कि जहां दो आदमी भी इकट्ठे बैठते हैं वहां इन्हीं के गुनों की चरचा मानो अपने फुरसत का वख्त काटने का एक ज़रिया हो रहा है—हां कराल काल तुझ से किसी का वश नहीं है—

अमीर और उन के पार्श्ववर्त्ती ॥

अमीरी के दफतर में नाम लिख जाना साधारण बात नहीं है—पुण्यात्मा जन जिन्हों ने अच्छी कमाई कर रक्खा है उन्हें यह पदवी दी जाती है—संसार की सब सम्पत्ति उन के पांवों तले लोटती है—पाताल की महाखोह में छिपी हुई वस्तु भी उन के लिये दुर्लभ नहीं है कौनसा ऐसा सुख है जो उन की पहुंच के बाहर है—वे चाहें तो हम तुम ऐसे साधारण अकिञ्चनों को एक बार के कटाक्षपात से निहाल कर सक्ते हैं—बड़े से बड़े गुनी ज्ञानी मानी अहर्निश उन का मुह जोहा करते हैं—छोटी २ बातें भी जिन के लिये पास पूंजी न रहने से हम सदा सँकुचाया करते हैं और बहुधा ऐसा अटक जाते हैं कि कोई कला नहीं लहती उन्में अमीरों को ज़रा भी आगा पीछा सोचना नहीं पड़ता और कभी किसी तरह की हिचक नहीं होती बेदरेग लाखों लगा सक्ते हैं—वही मसल है "मेरी बकरी मन करै तो बाघ को फाड़ डाले" पर जो मन करै तबना—औला मौला इन का मन करना कुछ दुर्घट नहीं किन्तु भले काम के महाबाधक सकल दोष की खान पार्श्ववर्त्तियों के कारन जब कुछ करने पावें—एक बार अमीरी की फिहिरिश्त में नाम दर्ज हो जाने भर की देर है पार्श्ववर्त्ती जो इसी टोह में रहते हैं मछेह के छत्ते की भांत झुण्ड आ लिपटते हैं—इन पार्श्ववर्त्तियों की जुदी २ किस्म दरजे और ग्रेड्स हैं—ये बाबू साहब के परोसी लंगोटिया यार हैं दिली दोस्त हैं लड़कपन से अब तक बराबर इन का साथ रहा साथ ही खेले कूदे खाया पिया उठे बैठे धौलधक्कड़ होती रही तो अब यह दावनचोली का साथ क्यों कर छूट सकता है अब अपने पूरे सिन पर पहुंच सब भांत स्वच्छन्द और इखतियार वाले हो किस तरह उन से बेमुलाहिज़े हों आंख की शील क्यों कर टूट सक्ती है—दूसरे वहां पूंजी कुछ न ठहरी बाबू साहब की खमीर "मेंटलकलटिवेशन" भी तो उसी अन्दाज़ का हुआ है जैसा उन के पार्श्ववर्त्तियों का है तब क्यों कर मुमकिन है कि हमारी बात उस ऊषर धरती में जगह पा सके—अस्तु माना बाबू साहब ने पढ़ लिख अच्छी लियाकत हासिल कर ली समझ भी है तो खमीर वैसी नहीं कहां से ऐसी दिलेरी "मारलकरेज" और साहस लावें जो हमारी बात पर अमल करें—दूसरा दरजा बाबू साहब के यगाने और रिश्तेदारों का

है कोई चचा हैं कोई भतीजे हैं कोई ताऊ हैं कोई हम मखतब या हम निवाले हैं जो कुछ इन क़ा मुलाहिज़ा और ज़ोर है वैसा किसी तिसराइत का क्यों कर पहुंच सक्ता है—हम इल्म और लियाक़त की गठरी सिर पर लादे हुये मारल करेज में अपने को एकता समझते हैं मुल्क की तरक्की का माला जपते हुये कोई ऐसी कमेटी क्लब सभा एसोसिएशन नहीं है जिसके मेम्बर मुख्य प्रवर्त्तक या चेयरमेन न हों और इसी ताक में हैं कि किसी तरह बाबू साहब को अपने चंगुल में कर सकैं ये हमारे नगर के सब से ऊंचे दरजे के बड़े रईसों में हैं तो बड़ा ही उपकार हो—हज़ार २ यतन और चेष्टा करते हैं कि किसी तरह हमारी वहां तक रसाई हो किन्तु पार्श्ववर्त्तियों के कारन एक भी नहीं चलती—बाबू साहब की हमारी ओर कुछ रुचि और श्रद्धा भी हो चली तो ये खल स्वार्थपरायण भलाई के दुशमन हमारा ज़िकिर होते ही बोल उठे आप को यह क्या सूझा जो उस नास्तिक बेदीन के फन्दे में पड़ते हैं यकीन रखिये उसकी बात मानिये गा तो आप का यह लोक परलोक एक भी न सुधरे गा संसार में बदनामी उठाओ गे हम लोग तो ऐसे ओछे छिछोरों की सोहबत यहां तक बरकाते हैं कि उधर की हवा भी अपने पास नहीं आने देते—दो एक हमनिवाला यारदोस्त भी मौजूद थे दो चार रमूज़ के बाद बोल उठे क्या साहब लोग बनने का हौसिला हुआ है कोट पतलून खरीद लावें—सूरतलंगूर मगर दुमकी कसर है- वहीं पर एक मीर साहब भी तशरीफ रखते थे "लाहौल विला यह आप को क्या सूझी है खुदा के वास्ते इन कंबख्तों को मुह न लगाइये नहीं पीछे पछताइये गा—ये नई रोशनी वाले बेदीन काफिरों से दूर रहिये"—इतने में एक झुंडका झुंड दोस्तों का नैनीताल के पहाड़ों की शिल्पके माफिक आ टूट पड़ा धौलछक्कड़ होने लगी चार पांच मीरसाहब के चांद में भी ऐसी जमी कि चांद टोने लगे इसी गुलगपाड़े में वह सब बात उड़पुड़ गई खतम हुआ—इन अमीर और उन के पार्श्व वर्तियों की बानगी आप को दिखला दीग ई जिस्से उन के उदार चरित्र और सभ्यता की टटोल अवश्य हुई हो गी—

पुस्तक प्राप्ति ॥

चन्द्रकला उपन्यास पहिला हिस्सा ॥

काशीनिवासी बाबू देवकीनन्दनकृत—इस उपन्यास की भाषा और छाट दोनों सराहना के योग्य है और हिन्दी के साहित्य के

भांडार भरने के लिये अत्यन्त उपयुक्त है हरिप्रकाशयन्त्रालय बनारस में छपी है मूल्य मैडाक महसूल ॥-) है—

रसिकबाटिका ॥

रसिकसमाज कानपूर का पहिला उपहार—रसिकसमाज के सुयोग्य लोगों की कवित्वशक्ति की बानगी इस में दी गई है—जैसा कानपूर की यह रसिकसमाज है वैसा ही प्रत्येक नगर में एक २ समाज इस प्रकार स्थापित होती तो हिन्दी कविता को कितनी पुष्टता पहुंचती—इस समाज के मुख्य प्रवर्त्तक ब्राह्मण के जीवन कविता के प्रान पं० प्रतापनारायण को विशेष धन्यवाद है जो इस लंगड़ी हिन्दी को खड़ी हो कर चलने के लिये अपने प्रयत्न से नहीं चूकते—इस के आरम्भ में मुन्शी कालीचरण का भाषाविषयक व्याख्यान बड़ा मनोरंजक है—मूल्य इस पुस्तक का ।) है कानपूर रसिकयन्त्रालय में मुद्रित हुई है—

आल्हारामायण ॥

जोरीमाडेल स्कूल हजारीबाग के हेड पण्डित चतुर्भुजमिश्र कृत लंकाकाण्ड—सुन्दरकाण्ड में इस की समालोचना हम कर चुके हैं—हमारे रसिकपाठकों को यह पुस्तक अवश्य संग्रह करना चाहिये जिस में उक्त पण्डित जी का उत्साह बढ़ता रहै और नये प्रकार का रामायण सातो काण्ड जल्द पूर्ण हो जाय—

विरजाउपन्यास ॥

श्री राधाचरण गोस्वामी द्वारा बङ्गभाषा से अनुवादित भाषा की उत्तमता और इस उपन्यास में क्या चातुरी दिखलाई गई है

पढ़ने ही से मालूम हो सकता है गोस्वामी जी की बहुतसी लल्लपत्तो करना व्यर्थ है मूल्य॥) है—

भारतीभवन के पुस्तकों का सूचीपत्र ॥

संस्कृत और हिन्दी पुस्तकों की १५०० जिल्द के लगभग पुस्तकों का विवरण इस सूचीपत्र में दिया गया है वेद से आरम्भ कर भाषा की किस्से कहानी तक का संग्रह इस पुस्तकालय में है—जो जिस विषय के रसिक हों वे उस विषय को महीनों तक पढ़ते रहें तो भी ग्रन्थ न चुकैं गे—दो ही बर्ष के बीच इस पुस्तकालय की इतनी उन्नति देख या सुन किस विद्याप्रसूनरसिक का मन प्रफुल्लित न होगा—ईश्वर इसके स्थापकों को चिरजीवी रक्खे और उन के उत्साह की ऐसी ही वृद्धि होती रहे—

प्रिन्स आलवर्टबिक्टर का शोकसम्बाद ॥

हमारी महाराणी के पौत्र का ऐसे कोमल वय नई जवानी केवल २८ वर्ष की उमर में इस असार संसार से विदा हो जाना अवश्यमेव हम सबों के लिये महाशोक का कारण हुआ है—प्रिन्सविक्टर से हम सबों को बड़ी आशा थी जब किसी समय यह अपने पूरे अधिकार में आते तो हिन्दुस्तान के लिये निस्सन्देह बहुत कुछ उपकार करते—मन्दराज वालों को वालंटियर का अधिकार मिलना इन्हीं के विशेष प्रयत्न का फल था—मौत पिशाची क्यों ऐसों को अपनी कराल डाढ़ के अन्तर्गत करते नहीं सकुचाती हा—

संस्कृत कवियों की उक्ति में कुछ अनोखा ही स्वाद है ॥

रसज्ञ हुआ चाहो तो कभी २ कवियों की उक्ति युक्ति का भी कुछ रस चीखा करो कहा है—

काव्यं सुधा रसज्ञानां कामिनां कामिनी सुधा ।
धनं सुधा सलोभानां शान्तिः सन्यासिनां सुधा—

"रसिकों के लिये काव्य सुधा है" पर सच पूछिये तो जो काव्यरस से तृप्त हैं उन के लिये सुधा भी किस गिनती में है—

सत्कविरसनासूर्पी निस्तुषतरशब्दशालिपाकेन ।
तृप्तोदयिताधरमपि नाद्रियते का सुधा दासी—

जो काव्यरस के स्वाद से तृप्त हैं उन के उदार चित्त में किसी का दोष कभी स्थान ही नहीं कर सक्ता—

वंशे घुण इव न विशति दोषो रस भावितें सतां मनसि ।
रसमपितु न प्रतीच्छति बहुदोषः सन्निपातीव—

तो निश्चय हुआ कि जो दोषदर्शी पामरजन हैं वे इस रस के अधिकारी नहीं हैं—उन को दूसरों के दोष देखने ही का अधिकार दिया गया है—

स्वयमपि भूरिश्छिद्रश्चापलमपि सर्वतो मुखन्तन्वन् ।
तितउस्तुषस्य पिशुनो दोषस्य विवेचनेधिकृतः ॥

तस्मात् चित्त को गद्गद और विमल उदारभाव पूर्ण काव्यरस का स्वाद जैसा कर सक्ता है वैसा किसी दूसरे उपायान्तर से असम्भव है—तो जो मन को विमल करने का ऐसा उत्तम द्वार है उसे कौन न चाहेगा—मन ही तो मनुष्य के लिये बन्धन और मोक्ष का हेतु है सो मन कवियों की उक्ति युक्ति के रसास्वाद से बहुत जल्द पिघल कर आर्द्र और कोमलता धारण कर लेता है तब काव्यरस में जो गुण है वह कहीं नहीं मिल सक्ता—अस्तु स्थानाभाव से उस्का स्वाद अभी हम आप को नहीं चिखाय सक्ते किन्तु कविये नहीं तो दूसरे अङ्क में सही—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि०-१५सं०-५ } प्रयाग { जनुअरी-१८९२

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १५ संख्या ५ | जनुअरी सन् १८९२

चरित्रशोधन ॥

मनुष्य के जीवन की शोभा या रौनक चरित्र है आदमी के लिये यह एक ऐसी दौलत है जिसे अपने पास रखने वाला कैसी ही हालत में हो समाज के बीच गौरव और प्रतिष्ठा पाता ही है बरन सबों के समूह में जैसा आदर नेक चलन वाले का होता है वैसा उन का नहीं जो धन और विभव से सब भांत रंजे पुंजे और खुश हाल हैं–ऐसे को कोई ऊंचा सन्मान या बड़ी पदवी पाते देख किसी को कभी डाह या ईर्षा नहीं होती—धनियों के बीच जैसा उतरा चढ़ी और परस्पर की स्पर्द्धा रहा करती है उस्का शिष्टता के सूत्र में सर्वथा प्रतिषेध है–चरित्र पालन सभ्यता का प्रधान अङ्ग है कौम की सच्ची तरक्की तभी कहलावे गी जब एक २ आदमी उस जाति या कौम के चरित्र-संपन्न और भलमनसाहत की कसौटी में कसे हुये अपने को प्रगट कर सक्ते हों–भले लोगों के चले हुये मार्ग या ढंग पर चलने ही का नाम कानून व्यवस्था या मोरालिटी है कहा भी है–

"यद्यदा चरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनाः ।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते" ॥

इलम और लियाकत में हम चाहो उत्कृष्ट विद्वान् न हों अधिक धन भी पास न हो पर चरित्र की कसौटी में यदि कसे हुये हों तो हम चाहो जैसी

दशा में हों हमारी मातबरी सबों से अधिक समझी जायगी—इस्में सन्देह नहीं कि विद्वान् और सुयोग्य की लोकोत्तर बुद्धि पर मोहित हो लोग चाहो उसे देवता समान पूजते हों पर इतबार या विश्वास एक ऐसी बात है जिस्में इल्म और लियाकत से अधिक कोई बात आवश्यक है और वह यही चाल-चलन की कसौटी है—दिमाग विना दिल विद्या और ज्ञान विना आचरण चतुराई विना सुशील निस्सन्देह मनुष्य में एक प्रकार की शक्ति हैं किन्तु वे सब ऐसी शक्तियां हैं जो केवल हानि पहुंचाने वाली अलबत्ता पाई जाती हैं—इस प्रकार की शक्तियां दिल बहलाव के लिये ज़रूर हो सक्ती हैं कभी २ उन से हम कुछ सीख भी सक्ते हैं पर समाज को उन से कुछ फाइदा पहुंचा हो कभी किसी ने देखा या सुना न होगा जैसा किसी गांठ काटने वाले की अकिल और चालांकी पर हमे तअज्जुब और कभी २ एक प्रकार का दिल लगाव भी उस्से है पर उस्की यह चालांकी चतुराई और अकिल संसार के उपकार के लिये है कोई इसे न माने गा—सचाई, खरापन और मन वच कर्म से भलाई की ओर झुकाव दया न्याय और उचित का दृढ़ पक्षपात, मैला काम, मैली वासना से निपट घिन, उदारभाव लेन देन में सफाई, दियानतदारी इत्यादि कई एक और दूसरे २ गुण मनुष्य में चरित्रसंशोधन के मुख्य अङ्ग हैं—

कौल का सच्चा होना और काम में खरापन चरित्रसंशोधन का बड़ाभारी सहारा है जैसा हमारे मन में हो वैसा ही मुख पर भी और जो मुख पर है वह हम अपने कामों से प्रगट कर दिखावें—मन वचन और काम में आपस का मेल होना ही महत्व या चारित्र्य है—

"मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।
मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यद्दुरात्मनाम् ॥"

और यह बात उसी से होगी जिस ने बनावट और नुमाइश को कभी पहिचाना ही नहीं और जो सदा इस बात के लिये चौकस हैं कि ज़ाहिरा भी हमारा उतना और वैसा ही रहे जो कुछ बातिनी हम्मे है—सच मानिये ऐसों को जन समाज में निरादर अप्रतिष्ठा तथा हेठापन जो समझदार के लिये प्राणान्तिक कष्ट है सहने का कभी मौका ही न मिलेगा—

चरित्रशोधन मनुष्यमात्र के जीवन का एक मुख्य उद्देश्य होना चाहिये

ऐसी चलन से रहें जिस्में हमारी भी शरीफ और भलेमानुषों में गिनती हो इस्की एक थोड़ी सी फिकिर भी हमारे में शिराफत पैदा कर देने के लिये काफी है—

"अनुगन्तुं सतां वर्त्म कृत्स्नं यदि न शक्यते।
स्वल्पमप्यनुगन्तव्यं मार्गस्थो नावसीदति ॥"

भले लोगों के चले हुये रास्ते पर जो हम पूरी तरह पर न चल सकें तो जितना हो सके उतना ही अमल में लावें—जो एक सीधे रास्ते पर जा रहा है वह कभी नहीं भटकने का दुःख सहेगा—ऊंची श्रेणी के लोगों में जो कुछ वर्त्ताव है हम उसी को अनुकरण करते रहैं तो कभी सङ्कट में न पड़ैं—अंगरेज़ी के एक विद्वान् का मत है कि वह जो ऊंचे की ओर नहीं ताकता अवश्य नीचे को देखेगा जो ऊंचे पर चढ़ रहा है चाहो पूरी बलन्दी तक न पहुंचे तो उस स्थान से कुछ उंचाई पर अवश्य ही पहुंचे गा जहां से वह चला था—जैसा दिन का उंजाला एक छोटे से छेद से भी पैठ अंधियार को दूर हटाता है वैसा ही भलाई की एक छोटीसी बात भी आदमी की नेक चलनी का पूरा पता दे सक्ती है—वृत्तपालन से परलोक का साधन प्रासङ्गिक फल है यहां संसार में रह कर जो एक बात में भी चलितवृत्त हैं वे अपनी बाकी चालचलन को भी नहीं सुधरी हुई रख सक्ते जो साफ और उजला कपड़ा पहने हैं वही मैली कुचैली जगह में बैठने से सँकुचायंगे मैले कपड़े वाले को मैली जगह में बैठने का क्या संकोच है जो शिष्ट और नेक चलन हैं उन्हीं को अपनी नेकचलनी के हिफाज़त का खयाल होता है बदचलन बेहया की क्या—हमारा नित्य का वर्त्ताव हमारे लिये एक स्कूल है जिस्में दृढ़ रह कर हम अपने आप बिना किसी को गुरु किये ऊंचे दरजे की शिष्टता और भलमनसाहत सहज ही में सीख सक्ते हैं—कचलपटी से बचे रहना लेन देन में सफाई और ईमानदारी बात का धनी होना अपने असरइतों पर दया और मुलाइमीयत सुस्ती या निरुद्यमता का अभाव इत्यादि पांच चार बात ऐसी हैं जो उंजाले की भांत बहुत ही थोड़े में आभिजात्य या भलमनसाहत की परख करा देती हैं—इस लिये जिन्हों ने इन बातों पर अच्छी तरह अमल कर छोड़ा है वे ही ऊंची श्रेणी में गिने जा सक्ते हैं पर इस असिधाराव्रत का निबाहना कोई सहज काम नहीं है बिरले जन इसे निभाने वाले हैं—

उपयुक्त विशेषण ॥

परदेवालीस्त्रियां—असूर्यं पश्या—

अन्धकार—सूचीभेद्य—गाढ़—निबिड़—अंजन की धारा का प्रवाह—अन्धकार मानो अङ्गों को लीपता सा है—"लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुष सेवेवदृष्टिर्विफलतांगता" मृच्छकटिक के इस श्लोक में अंधियारे का वर्णन बिल्कुल नई उपज का है—

आतप या घाम—ललाटन्तप—तीव्र—खरतर—

बुद्धि—कुशाग्र—सूक्ष्म—पैनी—अगाध—गम्भीर—उदार—मोटी—संकीर्ण—भट्टी—हलाग्र—

मन—स्वच्छ—अकुटिल—उदार—

कटाक्ष—कुटिल—चितवन—तिरछी—

घन वा मेघ—स्निग्ध—मसृण—"स्निग्धाः दृढशिरेघनाः"

अङ्ग—नवनीत कोमल—वज्रसार—दृढ़—सुडौल—

अधर—बन्धूक बन्धु—गुञ्जा—विद्रुम—बिम्बा—बन्धुजीवाप्रभ—"अधरोयमधीराक्ष्या बन्धुजीवप्रभाहरः। अन्यजीव प्रभां हन्त हरतीति किमद्भुतम्"

कपोल—मधूककलिकामधुर—गुलाबी—गोल—

हास्य—ज्योत्स्नास्मित—विकचपंकजदन्तदास्य—मृदु—ईषत्—विनिन्दितेन्दु—

द्युति—प्रभा—छवि—हेम—कनकगौर—तडिल्लता—पल्लवरागताम्रा—कलधौत—हरितमणि मयूखहारिणी—मारकती—इन्द्रनीलमणि—हारिद्र—लवली—कांचनगौर—कनकरुचिरा—जाम्बूनदप्रभ—"केयं श्यामोपलविरचितोल्लेखहेमैकरेखालग्नैः रङ्गैः कनककदली कन्दलीगर्भगौरैः। हारिद्राम्बुद्रवसहचरं कान्तिपूरं वहद्भिः कामक्रीडाभवनवलभौ दीपिकेवाविभाति" यह पद्य प्रसन्नराघव में जयदेव कवि का है कान्ति या देहप्रभा का वर्णन इतने सरस विशेषणों के सहित अक्षर मैत्री भी निवाहते किसी कवि को नहीं सूझा—

लोचन
नेत्र
दृक्
दृष्टि

कमलगर्भमोचन-पुण्डरीकरमणीय—उत्पल—नीलनीरजदलोज्वल—मीनतरल—शोणाम्बुज—खञ्जरीट—खंजनमदगंजन—तरलायत—सितकेतकाभ—कमलदल—सरसीरुह—पद्मपत्र—कोकनदच्छवि—एणी—कुरंग—मृग—विकचकमलनवनीलोत्पलदल प्रतिस्पर्द्धी—अरविन्द—बान्धव—तरलसलील प्रतिफुल्लनील नलिनविनिन्दक—राजीव—जीवन—अधीर—कचरघुचू चिपासा-चिपिट—उलूक-विडाल—

शनि—विकराल—क्रूर—अशुभ—पाप—सौम्य—एकटक—इत्यादि—

रूप या वपु—प्रकृतिरम्य—स्वभावसुन्दर—सुडौल—सांचे का ढला—मधुर—समविभक्तांग—शालप्रांसु—सरो कासा—सर्वावयवानवद्य—विकृताङ्ग—

भुजा—दोर्दण्ड—मृड़ाल कमनीय—हस्तिशुण्डानुकारि—आजानुबाहु—

चाल—या—गमन—मराल—मत्तगयन्द—अलस—जनबीसे की—चीटी की—गिनगिन पांव रखना—

वेग—मनोजव—वायुवेग—आशुग—

वृत्त—चरित्र या चरित—उदार—प्रातःस्मरणीय—पुण्यश्रवण—पुण्य-अलौकिक—असामान्य—लोकोत्तर—"अलोकासमान्यमचिन्त्य हेतुकं द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्"—

शब्द—मेघगंभीर—तास्वर—सिंहनाद—कर्णरसायन—कर्णकटु—कोकिलरव—कलरव—कलकल—काकली—स्वनित—सिंजित—रसित—तत—स्तनित—आनद्ध—गद्गद—कोलाहल—मधुर—स्फुट—अव्यक्त—अल्पकण्ठ—लयसमर्थ—सुस्वर—टेंटें—कांवकांव—क्रेंकार—पटपटा—कूजित—गूंज—अर्राहट—घड़घड़—भड़भड़—इत्यादि—

बोल—मधुपाकोपम—तोतरी—अरुन्तुद—मर्मस्पृक्—वज्रवभाखी—मानो फूल झरते हों—मोतियों की लड़ियां पिरोहते हैं—हृदयंगम—"मितं च सारं च वाचो हि वाग्मिता" भारविः—

बालक—क्षीरकण्ठ—स्तनन्धय—मुग्ध—दूधमुहा—गभुआरा—सरलभाव—नट-खट—अप्राप्तवयस्—

आलप—प्रेम—निठुर—विश्वस्त—

भाव—सरल—कुटिल—बालभाव—शान्त—वात्सल्य—सम—विषम—

चित्त वा हृदय—सरल—कुटिल—सरस—नीरस—स्वच्छ—मलिन—कठोर पत्थरसा—शीशेसा—कोमल—आर्द्र—

दन्त—कुन्दकुड्मल—हीरक—मोतियों की लड़ी—विजित—दाड़िम—बीजराजि—

आनन—मुख-चद्र-कमल-प्रसन्न-मलिन-म्लान-उदासीन—
नासिका—शुकतुण्ड-तिलपुष्प—
भौं—कटार-तेग-कमान-वक्र-टेढ़ी-तिरछी-
गरदन—शंख-सुराही-
कन्धा—वृषस्कन्ध-परि-णद्धविपुलांस-मांसल-वक्षस्थल-महोरस्क-कपाट-पीन-

हमारे पढ़ने वाले यदि इसे कुछ ऊट पटांग न समझ अपनी रुचि के अनुकूल माने तो ऐसा ही हम कई नम्बर तक बराबर लिखते रहैं

होम—

होम अंगरेज़ी में अपने घर या वासभूमि को कहते हैं बुद्धिमानों ने निश्चय किया है "अपना घर सकल सुख का केन्द्र है" सच है बाहर जो आराम और सुख मिलता है वह आडम्बर और तकल्लुफ से खाली न होगा—शीराज़ीदावत का किस्सा एक मशहूर बात है मियां सादी अपने घर में साग और रोटी के साधारण भोजन को शीराज़ीदावत कहते थे और इसके मुकाबिले दोस्तों के घर बड़े तकल्लुफ के दस्तरखान को नाम रखते थे—"दिवसस्याष्टमे भागे शाकं पचति स्वेगृहे—अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते"—ऋण और विदेश में दूर २ घूमने का दुख उठाये बिना दिन के आठवें भाग में भी अपने घर में रह केवल एक बार सागमात्र खाय जल पीकर जो सन्तोष कर लेते हैं वे ही सुखी हैं—इससे यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि उद्योग की ओर से हाथ पांव ढीला कर घर में पड़ा २ सोता रहे और निरासन्तोषी बन सिम्पिलटनों की लिस्ट में नाम लिखाय ऊंघता बैठा रहे किन्तु वेतकल्लुफी और सादापन में कहां तक सुख और आराम है उसका अपना घर एक नमूना है—हमारे शास्त्रों में तो घर और इसके अधिष्ठाता गृहस्थ की बहुत कुछ प्रशंसा की गई है और घर वाले का जैसा गौरव समझा गया है वैसा दूसरे का नहीं सामान्य रीति पर भी यही बात देखी जाती है कि रहने के लिये एक स्थान का होना कितना आवश्यक है—मनुष्य क्या वरन जान वर मात्र चरिन्द परिन्द कीड़े मकोड़े तक अपने लिये एक घर चाहते हैं तस्मात् घर का होना ईश्वर की सृष्टि में वैसा ही प्राकृतिक है जैसा प्राणपोषण के लिये अन्न और तन

ढांपने के लिये वस्त्र—ज्यों २ सभ्यता बढ़ती गई त्यों २ इन्में तरक्की होती आई—पर्वत की कन्दरा और पर्णशाला तथा झोपड़ियों से महल दोमहले, पचखण्डे सतखण्डे राजभवन, प्रासाद, केसिल, किला, दुर्ग आदि बन गये पेड़ की छाल और पत्तों से तन ढांपने के बदले कमखाब बाफता मलमल तनज़ेब आबरवां बलबेट इत्यादि नये २ वस्त्र और पहनावे अब तक बढ़ते ही गये-अपने घर का इन्तिज़ाम एक छोटीसी रियासत के इन्तिज़ाम का नमूना है अच्छा गृहस्थ जिसे अपने घर के इन्तिज़ाम का ढंग मालूम है उसके लिये काम पड़ने पर किसीरियासत का अच्छा बन्दोबस्त कर लेना कोई मुश्किल न होगा—जिस घर में स्त्रियां प्रबल हैं श्यालक ता यामातृ जहां मुन्तज़िम हैं उस घर को गया बीता समझो मसल है-"बाट खोवै नाला दिवाल खोवै आला घर खोवै साला"-"यामातरो भागिनेया मातुला दारवान्यवाः । आज्ञातएव गृहिणां भक्षयन्त्याखुवद्गृहम्"-क्षेमेन्द्रकवि का मत है कि दमाद भानजा भासा और स्त्री के कुटुम्बी शाले आदि बिन जाने चूहों की भांत भीतर ही भीतर घर को चलनी कर डालते हैं-सच है घर की पत घरनी ही से है स्त्रियां घर बिगाड़ना चाहें तो मर्द दिनभर बैलसा जुता हुआ हज़ार कमाय कभी पात पुरिया नहीं बंधती-कवियों ने जो इन्हें गृहदेवता मान रक्खा है सो किसी तरह अयुक्तिक नहीं है देवता अनुकूल रहैं तभी कल्याण है-संसार में चाहो रूप का खजाना लुटता हो हूर और परियां चन्द्र तारासी प्रकाश कर रही हों पर जो कुछ सहज अकृत्रिम स्वाभाविक प्रेम अपने घर की स्त्री से होता है वैसा आकर्षण प्रेम का कहीं और ठौर हो ही गा नहीं क्योंकि अपने पत्न का पूरा इतमीनान जो उन्में नहीं है-इतमीनान सादापन निश्छल और निर्व्याज स्वातन्त्र्य का भाव जो घरैलू बातों में है वह किसी दूसरे में होता ही नहीं-अंगरेज़ी में " होमली " घरैलू जिसका विशेषण हो जाता है उसकी बेहद्द प्रतिष्ठा और मर्यादा समझी जाती है " होमलीटाक " घरैलू बातचीत भोड़े लब्ज और भोड़े तरीके में भी वह मज़ा देती है कि शीन काफ वालों की तरौर गुफ्तगू में कभी आव ही गा नहीं-"होमलीस्टाइल" कोमल सीधे सरल शब्दों में जो पत्र आदि लिखे होते हैं उन के आगे दण्डायमान बड़े २ दीर्घ समास वाले शब्दों का लेख निरा फीका और गढन्त मालूम होता है "होम-

लीम्यानर्स" घरैलू तरीके जितने होंगे उन्में बनावट और छल का कहीं लेश भी न रहेगा-घर की पूरी कदर करना कुछ अंगरेज़ों ही को आता है जिन्में "होम" इस शब्द का कितना विस्तृत अर्थ है कि हमारे घर गृह भवन आदि शब्दों में आता ही नहीं-उर्दू के वतन इस शब्द से कुछ अर्थ बोध होता है पर जैसा अकुटिल सरल निश्छल इत्यादि का प्रकाशक "होम" या "होम-ली" है वैसा हमारी भाषा में कोई शब्द नहीं है-ये जो अपने घर के लिये लवलीन हैं यह उसी मातृ भूमि स्नेह का फल है कि हमारे सिरताज हो रहे हैं हम लोग जो अपनापन किसी में रक्खा ही नहीं सर्वस्व दूसरे को समर्पण कर किसी काम ही के न रहे यह उसी अपना घर अपनी भूमि अपनी रीति नीति इत्यादि के छोड़ देने का कारण है किं बहु-

होली—राग काफी ॥

भारत में ऐसो फाग मचो री—
केसर रंग गुलाल जुरै नहिं-नील रंग तन बोरैं—
कांदो कीच राख अरु गोबर-भर मटुकी सिर फोरैं—
प्रीति की रीति हरैं-भारत में—
मा अरु बहिन सुता नहि चीह्नै-लाज न नेक धरैं—
बोलो कछू तो मारन धावैं-झपट घींच पकरैं—
जूत माथे पै धरैं—भारत में—
राग वसन्त धमारन गावैं कुफ्र कबीर बकैं—
गर्दभस्वांग भरैं हर्षित ह्वै-कोइला मुखहि मलैं—
चंवर झाड़ू के करैं-भारत में—
धर्म सनातन भूलि गये सब-नीच समाज जुरैं—
तेली तमोली भाट भड़रिया—विधिवत होम करैं—
हास्य विप्रन को करैं-भारत में—
पढ़े न विद्या अच्छर एकौ-शर्मा नाम धरैं—
कांध जनेऊ माथ पै चन्दन-पदवी उच्च लहैं—
मंत्र वेदन को पढ़ैं-भारत में—
म्यूनीसिपेल कमिशनर ह्वै के-नीति न चित्त धरैं—

निज उन्नति हित करैं खुशामद—हुकुम हुज़ूर कहैं—
बात मतलब की अनुसरैं—भारत में—
लार्डरिपन के कहे बमूजिब—कहूं न इलेक्ट करैं—
मनमानी सो करैं अधिकारी—हम कहं नाम धरैं—
टिकस पानी पै लगैं—
पृथिवी बीज बोये नहिं उपजै—मेघ न वृष्टि करैं—
अन्न बिना सब मरैं रियाया—चहुं दिस काल परैं—
नित नव व्याधि बढ़ैं—भारत में—
भार्या भर्तृ विरोध बढ़ावैं—निस दिन निपट लरैं—
परतिय संग कुलकान गवावैं—पितरन नर्क धरैं—
बरनसंकर के जनैं—भारत में—
वरनाश्रम के धर्म रहे नहिं—अत्याचार करैं—
विप्र करैं सेवक की करनी—सूद पुरान पढ़ैं—
वक्ता आप बनैं—भारत में—
बूट पहिन होटल में बैठैं—सिर पै हैट धरैं—
भक्ष्य अभक्ष्य वस्तु नहि चीह्नै—धर्म हि लुप्त करैं—
पात्र मदिरा के भरैं—भारत में—
गुरु गुसाईं पूज्य पुरोहित—निपट अनीति करैं—
सेवकन कहं कुछ और बतावैं—आपुहि और करैं—
तन धन उन के हरैं—भारत में—
कहत खरी खोटी जो लागै—फागुन जानि छिमैं—
सोध समाज काज यह होरी, सरिता प्रेम बहैं—दुःख भारत के हरैं, भारत में—

प्रधान पुरुषों में प्रधानता का निबाह सहज नहीं है—

चाहो, जिस "डिपार्टमेण्ट" प्रकरण में हो प्रधान पुरुष हो अपनी प्रधानता को पूरी तरह निबाहना कठिन काम है—बड़े अधिकार पर नियत होने से अथवा बहुत बड़ा वेतन पाने से या बड़ी डाढ़ी बढ़ाने से सच्ची प्रधानता नहीं आ सक्ती—यह कुछ बात ही और है जो यथार्थ रूप से अपने प्राप्त अधिकार को काम में लाने और नीति पर दृढ़ता के साथ आरूढ़ रहने ही से निभती है—हम इस समय और २ बातों को छोड़ के केवल राजनीतिविषय

पर अपना मन्तव्य प्रकाश किया चाहते हैं—हमारे देश के राजपुरुषों के अधिकार में केवल दो ही अधिकार ऐसे हैं जिन पर नीतिमान् व्यक्ति विशेषों के विराजमान होने ही से और न्यायानुकूल कार्य करने से प्रधानपुरुष की यह पदवी चरितार्थ हो सक्ती है—पहला अधिकार गवर्नर या लफ्टिनेण्ट गवर्नर का है दूसरा चीफ जसटिस का—जिस देश या प्रान्त के लफ्टिनेंट गवर्नर या चीफकमिश्नर अथवा चीफजसटिस नीतिनिधान और विवेकी पुरुष हुये तो जानना चाहिये कि उस देश की राज्य लक्ष्मी और न्यायसम्पत्ति प्रधानपुरुष के पीयूष कर से रक्षित और पोषित हो रही है और जहां इसके विपरीत हो वहां राज लक्ष्मी और न्यायसम्पत्ति की दुर्दशा और लघुता तथा दुर्बलता की उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहेगी—प्रधानपुरुष के विवरण में एक कवि की यह उक्तियहां बहुत यथार्थ मालूम होती है—"सङ्ग कुसङ्गति पाय के जाको अटल विवेक—नर प्रधान ताको कहत जाहि राज की टेक"—इस पश्चिमोत्तर देश के भूतपूर्व लफ्टिनेंट गवर्नरों की श्रेणी में सूक्ष्म दृष्टि से देखो तो दो ही महात्मा ऐसे हुये हैं जिन को प्रधानपुरुष कहना यथार्थ जान पड़ता है प्रथम श्रीयुत थामसन साहब वैकुण्ठवासी दूसरे सरविलियम म्यूर—ये दोनों बहुत प्रकार के सद्गुणों के अतिरिक्त ऐसा सरल विवेक पूर्ण थे कि यह इन्हीं का कमलपत्र समान निर्लेप मानस था कि कुसङ्ग दोषरूप कीचड़ से लिप्त नहीं हुआ था—प्रजावर्ग के प्रत्येक समुदाय पर एकसी कृपादृष्टि और जाति वात्सल्यभाव रखते थे—देशी विद्या और भाषा के प्रचार में भी इन की न्यायतुला में विषमभाव की आंधी और पंक्ति भेद का झोंका नहीं व्यापा—दोनों महात्माओं ने अरबी और संस्कृत को समानभाव से रक्षित रक्खा हिन्दी और उर्दू के प्रकाश को उन २ भाषाओं के ग्रन्थ रचने वालों को प्रोत्साहन दे ऐसा बढ़ाया जैसा सद्वैद्य अच्छे रसाञ्जन के द्वारा बायें और दाहिने आंख की ज्योति बढ़ाता है—सब प्रकार के लोगों से मिलते और उन के अभिप्राय सुन लेते थे पर न्याय के अनुकूल काम अपने ही विचार से करते थे—यहां की हाईकोर्ट में भी श्रीयुत मार्गन साहब तथा श्रीयुत पेटरसन कोमरसाहब चीफजसटिस भी ऐसे ही गुण गणों से भूषित थे—सरविलिएम म्यूर साहब बहादुर ने कलक्टरी और फौजदारी के सम्मन और इत्तिलानामों के फारम के लिये यह नियम प्रचलित किया था कि

उर्दू फारम के नीचे हिन्दी फारम भी छपा रहा करे जिस तरह उर्दू में मुद्दई मुद्दअलेह का नाम लिखा जाय वैसा ही हिन्दी फारम में भी हिन्दी अक्षरों के द्वारा लिखा जाय जिस्से गांव के लोग पढ़के सहज में अदालत के आवाहनपत्र "समन" का भाव समझलें—सो फार्म बहुत दिनों तक ऐसा ही जारी रहा पर जब ऊपर के बड़े२ शासकों की रुचि ऐसी बातों में न पाई गई तो कचहरी के अमलों ने हिन्दी फारमों का भरना छोड़ दिया यद्यपि वे फारम अब भी वैसे ही छपे रहते हैं किन्तु उन की वही दशा है जैसा अन्यायी ज़मींदार के गांव में विना मनुष्यों के खँड़हर पड़े रहते हैं—अब हाईकोर्ट का हाल सुनिये जो यहां की ऊंची अदालत या प्रधान न्यायसभा समझी जाती है—कुछ दिन से जब से अंगरेज़ी शिक्षा का प्रकाश बढ़ा यह नियम किया गया कि अच्छे अंगरेज़ी जानने वाले मनुष्य ऐडवोकेट और वकील हुआ करें जब अंगरेज़ी के परीक्षोत्तीर्ण पूर्ण विद्वान् वकील ऐडवोकेट अटरनी होने लगे तो धूर्त्त दुराचारी दुर्जनों के मन में यह खटक हुई कि कोई ऐसी युक्ति हो कि जिस्में ये परीक्षोत्तीर्ण विद्वान् अदालतों में न घुसने पावें इस लिये उन्में यह दोष लगाया गया कि ये लोग हिन्दुस्तानी भाषा तो समझते ही नहीं तब हिन्दुस्तानी के समझने का नियम भी उन के साथ सांकड़ के समान जकड़ दिया गया और १८८९ इसवी सरक्यूलर नंबर ९ के अनुसार यह आज्ञा प्रचलित हुई कि नाम किसी उम्मेदवार का वकील या अटरनियों की फिहिरिश्त में दाखिल न किया जाय जब तक वह चीफजसटिस या हाकिमों की समाधानी न करा दे कि वह उर्दू से वखूबी जानकार है और उसे पढ़ या बोल सक्ता है—जब उम्मेदवार इस्पर भी कृतकार्य सफलोद्यम होने लगे और क्यों न हों प्रत्येक उम्मेदवार स्कूल या कालेजों में अंगरेज़ी के साथ दूसरी भाषा उर्दू या हिन्दी पढ़ता ही है तब पिशुनवृत्ति इन धूर्त्तों ने जिन की आंख में कांटे की भांत यह बात चुभने लगी सोचा कि ये लोग तो उर्दू बोलने या समझने का अड़ङ्गा लगाने से भी न रुके तब इन धूर्त्त दुर्जनों ने धूर्त्तचौकड़ी जादू का एक दूसरा अनुष्ठान किया और सरक्यूलर नम्बर १५ सन् १८९१ ईस्वी में यह हुक्म जारी कराया कि उम्मेदवार पढ़ने और समझने के अलावे उर्दू को अच्छी तरह लिख भी सक्ता हो और सुगमता पूर्वक बोल सक्ता हो—अस्तु

इस समय हाईकोर्ट के अध्यक्षों में यदि प्रधानपुरुषत्व के पूर्ण गुण होते तो वे तत्क्षण धूर्त्तविद्याविसारद सूत्रकों की बात का अभिप्राय समझ जाते कि यह कर्त्तव संस्कृत तथा हिन्दी के विद्वेष बुद्धि से लाया गया है कि जो विद्यार्थी स्कूलों में अंगरेज़ी के साथ हिन्दी या संस्कृत पढ़ते हैं वे वकालत की परीक्षा से रहित रहें और हिन्दी तथा संस्कृत का प्रचार घटै—यदि न्यायमार्त्तण्ड अन्याय की बदरी में न ढ़पा होता और हाईकोर्ट के जज्जों की बुद्धि में किसी को भी प्रधान पुरुषत्व का अटल विवेक रहता तो यह बात अवश्य सूझती कि इस देश की साधारण भाषा हिन्दी है जिसे संख्या में अधिकांश समझते और बोलते हैं—यदि भुलनाओं की सनहकी धोने वाले अदालत के उर्दू नवीसों के साथ यह नियम किया जाता कि निरी उर्दू जानने वाले अमले हिन्दी अच्छी तरह पढ़े लिखे हों तभी अदालत या वकालत में भरती हों तो उचित था क्योंकि सर्वसाधारण के बोल चाल की भाषा इस देश की हिन्दी है बल्कि बड़ा भारी उपकार इससे यह होता कि उर्दू के अत्यन्त कठिन २ शब्द जिसे सर्वसाधारण नहीं समझते उन्हें सबों को हृदयङ्गम करा देने में वकील तथा अमलों को सहज ठेठ हिन्दी शब्दों के द्वारा बहुत सुगम हो जाता—वास्तव में पश्चिमोत्तर के समान भाग्यहीन देश दूसरा नहीं है जहां सदैव इस प्रकार का अनीति अन्धकार छाया रहता है बड़े २ न्यायकारक महाशय भी धूर्त्तों के धोखे में आ जाते हैं लम्बी डाढ़ी की प्रतीति से बाबा वाक्यं प्रमाणं मान लेते हैं—यदि दैवात् पिशुनवृत्तियों के विपक्षी लोग उर्दू के लिखने में भी पास हो गये तो अचरज नहीं कि भावी एक दूसरे सरक्युलर में कुरान और हदीस की जानकारी की शर्त लगा दी जाय—संग दुस्संग का असर न पहुंचे और अटल विवेक बना रहे यह कोई सहज बात नहीं है केवल अपनी टेक रहे कहां का न्याय कहां का प्रजापालन सारी राजनीति फारसी अक्षरों में पिरोई हुई है—हिन्दू प्रजा तो रसातल में डूब जाने के लिये सूझी ही गई हैं तब उन की भाषा उन के अक्षर उन का मत उन की रीति नीति की तरक्की की फिकिर राजा की ओर से क्यों की जाय अपितु इन की हर एक बातों में जितनी ही कमज़ोरी आती रहे उतना ही जल्द इन के निर्मूल होने की संभावना है—

डाक्टर लिटनर के लेख का खुलासा—

एशियाटिक क्वारटरली रिव्यू से—

डाक्टर लिटनर लिखते हैं बसबब बेपरवाही नासमझी और सब के ऊपर अपनी तरक्की के लिये उलटी पुलटी कारगुज़ारी के कारन उत्तरी हिन्दस्तान हाथ से निकल जा सक्ता है और ब्रीटिशजाति का गौरव यूरोप और एशिया में कम हो सक्ता है—लिटनर साहब यह बात सिद्ध कर दिखाते हैं कि यह हमारे ही लोगों की "स्टेटमेनशिप" राजकाज में प्रवीणता का घमण्ड है जो रूसियों के हमले के खतरे को बुला रहा है नहीं तो हिमालय की दुर्गम दुर्लंघ्य घाटियां ऐसी न थीं कि उन्हें लांघ कर रूसी हिमालय के इस पार आने का साहस बांधते—हम नहीं समझते अंगरेज़ कर्मचारी हमज़ा नागर इत्यादि हिमालय के उस पार के स्थानों के छोटे २ सरदारों का मुल्क छीन कर क्या फाइदा समझते हैं जो व्यर्थ की छेड़ छाड़ कर रहे हैं—बेहतर होता कि हिन्दूकुशपर्वत के उस पार न जा इधर ही अपनी सब तरह की मज़बूती रखते और प्रजा को सब भांत सुख दे उन का जी अपनी मूठी में करने के प्रयत्न में तत्पर रहते—इस रोकने की कोशिश ही का यह परिणाम है कि रूसी अब तक बढ़ते ही आये और सम्पूर्ण सरकेशिया को अपने आधीन कर लिया और उसके आधीन करने में जो रूसियों को मदत मिली वह केवल हमारे रोकने ही का नतीजा था और धीरे २ रूसने समस्त सरकेशिया और ख़ैवकसी पर अपना पूरा अधिकार जमा लिया—वही बात पञ्जदेह में की गई और अब पामिर में भी जहां ये आज कल झगड़ रहे हैं हो सक्ती है—इस्में कुछ फाइदा है तो वही अंगरेज़ी अफसरों का जो कौड़ी के लिये मसजिद ढ़हा रहे हैं—अभी तक यह खयाल था कि हिरात और सर्वही हिन्दुस्तान की कुंजी है पर अब वह बात न रही पामिर एक स्थान नया उठ खड़ा हुआ—अपनी ऐसी २ बेहूदा करतूतों से रूस की आंख में हम ज्यों २ तुच्छ होते जाते हैं त्यों २ हमारे अफसरों को बड़े २ खिताब मिलते जाते हैं—शायद यह खिताब उन अफसरों की राजनैतिक विषयों में निपट अज्ञता का इनाम या पारितोषिक हो—पहाड़ों पर पहाड़ अगम्य घाटियों पर घाटियां जो हिमालय की इस ओर की आबादी को मध्य एशिया की आबादी से जुदा

करती हैं और दोनो ओर की बड़ी बीर बांकुरी जरार लड़ने वाली कौमों को आपस की मुट भेड़ से अलग किये थी वही अब रूसियों को हिन्दुस्तान की राह जानने के लियेमानो साइनबोर्ड हो गई हैं—वही पामिर आदि स्थना अब एक सीधे सरल मार्ग होते जाते हैं—काश्मीर और काबुल आदि राज्यों को जो हिमालय के दोनो ओर हैं यदि हम कायम रक्खें तो कोई भय और शंका की बात नहीं है—यदि वे रियासतें और राज्य जो अंगरेज़ी राज्य की ज़ेर साया में हैं उन्हे हम अपनी ओर राज्य भक्ति में दृढ़ रक्खें तो हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी राज्य को पुष्टता पहुंचाने के लिये यही क्या कम है बल्कि इस अवसर पर जो अभी हाल में महाराजा काश्मीर की थोड़ी सी खातिर की गई वह बहुत उचित और मौके से की गई और जहां कहीं किसी का कुछ हक़ देना हो वह भी दे दिया जाय—हिमालय के उस पार जाने की चेष्टा न कर बीच के छोटे २ राज्यों को बिना किसी प्रकार की छेड़ छाड़ के पड़े रहने दें तो हिन्दूकुश और हिमालय ऐसा नहीं है कि इसे लांघ कर कोई आ सके और पामिर जहां इस समय मुर्चा कायम है उसे तो सर्वथा छोड़ ही देना चाहिये नहीं तो निश्चय यह दूसरा पंजदेह हो जाय तो कोई अचरज नहीं—हिमालय के इस ओर अपनी हर तरह पर मज़बूती रखना आने वाले फ़कीर से बचने के लिये काफी है और काश्मीर वालों को अप्रसन्न रखना मानो बाहर वालों को यहां आने के लिये निमंत्रण देना है—जिस हमज़ा और नागर को भूतपूर्व काश्मीर के महाराज केवल दो सौ सिपाहियों से रोके थे और सब तरह उन्हे वहीं पर मानो बन्द किये थे वहां अब अङ्गरेज़ी शाही पलटने कुछ नहीं कर सक्तीं तब काश्मीर का कायम रहना हमारे लिये कितना उपकारी है इसे कौन न मानेगा—

हमारी ललनाओं की हीनदशा—

न जानिये क्या कुआ में भांग पड़ी है कि हमारे लोग देश में ललनाओं की शोचनीय हीन दशा पर कभी खयाल ही नहीं करते उन्हें निपट मूर्ख और सब भांत पराधीन रखना अपना बड़ा सौभाग्य और धर्म मानते हैं—कितने शोक की बात है कि इसी मूर्खता की अन्धपरम्परा में पड़े इन्हीं ने देश की कुल आबादी के आधे हिस्से को निरा निकम्मा कर छोड़ा है जिस्से स्त्रियां

सिवाय सेवकाई वृत्ति अथवा कलह और विरोध के जो मूर्खों का सहज स्वभाव है और किसी काम की रही न गई—गवर्नमेण्ट के राजपुरुषों को हम व्यर्थ दोष देते हैं कि वे हमे आगे बढ़ने से सब भांत रोक रहे हैं—हम भी तो अपनी स्त्रियों को यही कहते हैं कि उन को बहुत पढ़ने लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं है घर गृहस्थी का सब काम काज करना यही उन के लिये बहुत है उन के पालनपोषण का सम्पूर्ण भार हमने अपने ऊपर तो ले ही लिया है उन की रखवाली के लिये हम तो बने ही हैं तब उन को पढ़ा लिखा कर अबला से सबला करने का क्या प्रयोजन है—वरन उन को पढ़ाने लिखाने में डर है कि वे बिगड़ जायंगी और हमारे कब्ज़े के बाहर ही जायंगी बराबरी करने लगें गी और कुमार्गों में फंस अपने को और हमे भी नरकगामी करेंगी और बहुत तरह की हानि पहुंचावें गी—बस जब यही आप का विचार है तो अंगरेज़ों के इस बात के कहने पर क्यों अचरज होता है कि तुम्हें उच्च-शिक्षा की कुछ आवश्यकता नहीं है बालबिटयर हो हथियार बांध युद्ध शिक्षाद्वारा कवाइद आदि सीख के क्या करोगे हम तो तुम्हारी रक्षा में अपना रुधिर बहाने को मुस्तैद ही है तुम आराम और सुख से दिन काटते रहो किसी तरह का भय और शङ्का मन में न लाओ—फिर यदि ये सब बातें तुम्हें दे दी जांय और युद्धविद्या में प्रवीण कर दिये जाव तो अवश्य हमारी बराबरी करने लगो गे स्वतन्त्रता का झगड़ा उठाया तो हमें राज करना कठिन पड़ जायगा और उस्में न केवल हमारी ही हानि है किन्तु तुम्हारी भी—इस भांत जैसा आप लोग अंग भेद से स्त्रियों को अपने से हीन और अयोग्य समझते हो वसे ही यदि अंगरेज़ भी वर्णभेद और स्वभाव भेद से आप को अयोग्य समझें तो क्यों विलग मानते हो और इसे अन्याय कहते हो—बस तनिक न्याय करो बेचारी अबोध अबलाओं को जो सर्वथा हीन दीन कर रक्खा है इस अधर्म से डरो अन्त में तुम को इस्का बहुत बुरा फल भुगतना पड़ेगा और भोग भी रहे हो—लक्ष्मीरूपा इन ललनाओं ही की अवज्ञा और निरादर का यह फल है जो सब भांत की विपत संकट आधि व्याधि मरी अकाल आदि का दुःख सहते २ नित्य २ कमज़ोर दुर्बल पराधीन और दरिद्र होते ही जाते हो—यदि इन स्त्रियों को तुम सुशिक्षिता कर दो तो उन का प्रेम तुम पर बढ़ता ही जाय वे सब कामों में तुम्हारी सहायक होंगी और

जहां सब कामों का बोझ केवल पुरुष ही पुरुष अपने ऊपर लिये हैं वहां स्त्रियां भी तुम्हारा बोझ उठावेंगी तो इतने प्राणियों के बढ़ जाने से बोझ कितना हलका हो जायगा—

तुम को जो उन के स्वतन्त्र हो जाने का भय है यह भी निपट नासमझी है उचित स्वतन्त्रता तो मनुष्यमात्र को मिलना योग्य ही है और जो अनुचित स्वतन्त्रता है उसके लिये समाज तथा राजा दण्ड देने को हई है तब उन्हें यथाशक्ति स्वतन्त्र करने से क्यों आगा पीछा कर रहे हो—यदि यह कहा जाय कि स्वतन्त्र कर देने से वे हम से दबैंगी नहीं बालाकी छल छिद्र दगा फरेब सीख लेने का उन्हें अधिक अवसर मिलेगा सो यह भी तुम्हारी भूल है—चालाकी दगा फरेब यह सब दास्यता के लक्षण और स्वभाव हैं जो लोग दबे होते हैं वे ही दगा फरेब और दांव पेच से काम निकाला करते हैं ऐसा काम कर गुज़रते हैं कि आप को सुध भी न हो—इन स्त्रियों को अत्यन्त दाब में रखने के कारण सैकड़ों सालिले साल में ऐसे होते हैं जिस्से आप के परदे नशीनी की सब कलई खुलती जाती है तौ भी आप को नहीं चेत होती और अबलाओं को हर तरह पर हीन ही करते जाते हो—यदि उन्हें भरपूर शिक्षा दी जाय अपने बराबर का उन्हें समझ थोड़ी स्वतन्त्रता भी दे दी जाय तब विद्या के प्रभाव से जो कुछ वे करेंगी अधिकतर सम्भावना यही है कि धर्म और न्याय के अनुसार करेंगी—यदि उच्चशिक्षा और उत्कृष्ट विद्या का यही परिणाम है कि मनुष्य और अधिक दुराचारी और निकृष्ट आचरण वाला हो जाय जैसा इन दिनों के बहुत से नवशिक्षित उच्चशिक्षा पा कर भी अपने चाल-चलन में दिखा रहे हैं तो लाचारी है—हम तो यही कहें गे कि ऐसे लोगों की यथोचित शिक्षा हुई नहीं और यदि वे सुशिक्षित मान लिये भी जांय तो यह कौनसा न्याय है कि हम पुरुष व्यक्ति हैं इस लिये जो चाहें सो कर डालें पर अपनी स्त्रियों को सुयंत्रित ही रक्खें गे—सच मानिये जहां कहीं जिस घराने में स्त्रियों के बीच कुचरित्र और कुसंस्कार आगया है वह केवल पुरुषों ही के कारन जहां पुरुष अपने चरित्रशोधन में सावधान है और अपने चाल-चलन रीति नीति में उत्तम उदाहरण दिखला रहे हैं वहां स्त्रियां कभी कुचरित्र न पाई जांयगी—केवल परदे ही में रखने से कुछ नहीं हो सक्ता यदि हम अपने सुचरित्रों के नमूने से उन अज्ञ अबलाओं की मनोवृत्ति सुधारने का

प्रयत्न न करें—उन का प्रेम तुम्हारे में जो कुछ अब है वह केवल दबाव और लोकलाज के कारण है अतएव कपट और छल छिद्र से खाली नहीं है स्वच्छ और निष्कपट प्रेम उन का तभी होगा जब वे सुशिक्षित और स्वतन्त्र होंगी—इस लिये यदि संसार में जीवन का सुख चाहते हो तो इन ललना जनों को शिक्षा और स्वतंत्रता दो उन का विश्वास कीजिये इस्में सिवाय लाभ के हानि कुछ नहीं है और मुल्क की तरक्की का प्रधान अंग है विना इन ललनाओं की दशा के परिवर्तन के देश का कल्याण और समाज की उन्नति सब भांत असंभव है—जिस ढंग से हम अपने देश और जाति की तरक्की किया चाहते हैं उस्में स्त्री स्वतंत्रता और शिक्षा पहली बात है जब तक यह नहीं किया जायगा किसी तरह आप आगे को कदम बढ़ा ही नहीं सक्ते—हमारे इस लेख पर बहुत लोग हसैं गे और जीट उड़ावें गे-कार हमे उन के हसने और जीट उड़ाने का कुछ भी खयाल नहीं है यदि एक दो भी हमारे पढ़ने वालों में ऐसे निकलैं जिन पर इस लेख का किंचित् असर व्यापै—विशेष फिर कभी—

प्रेरित ॥

मुक्तिफौज के जेनरल बूथ गवर्नमेण्ट को सलाह देते हैं कि हिन्दुस्तानी लोग हिन्दुस्तान से बाहर निकाल और २ टापुओं में बसा दिये जांय तो यहां की आबादी कम हो जाने से अन्न का कष्ट मिट जाय और वबा, चेचक, विसूचिका इत्यादि रोग भी जो बहुधा ज़ोर पकड़ने से लाखों आदमियों को समेट ले जाते हैं न हुआ करें—अस्तु बूथ साहब मुक्तिसेना के जेनरल हैं तब छल, बल, कल सब उपायों से जैसे हो सकेगा इस देश को उन से जो क़स्तान नहीं हैं खाली कराय उन की जगह पर इसाईधर्मावलम्बियों को बसाना अवश्य पसन्द करेंगे परन्तु हिन्दुस्तान के सम्पादक को क्या सूझा जो बूथसाहब की हां में हां मिलाय नाककटा शहीदों में दाखिल होतेहैं—हम नहीं समझते सम्पादक हिन्दुस्तान जी हम से हमारा देश छुड़ा कर क्या लाभ उठाना चाहते हैं—आप कहेंगे यह बड़ा ही बेसमझ है हित को भी अनहित मानता है यहां की लाखों प्रजा जो अन्न के कष्ट से भूखों मर रही हैं जिन्हे भरपूर पेट भर खाने को नहीं मिलता उन की जान बचाने और सुख चैन से रहने की यदि कोई बात सुझाई जाती है तो यह उसे दूखता है न जानिये इस्की कैसी

उलटी समझ है हम कहते हैं उन्हें ऐसी जगहों में भेज दो जहां लाखों बिगहा पृथ्वी बिन जोती बोई पड़ी है वे मनमाना कमाय और खांय तो इस्में कौनसी बुराई है—अस्तु हमारी उलटी ही समझ सही परन्तु आप से यह पूछते हैं कि हिन्दुस्तान में अन्नकष्ट का कारण क्या है क्या हम लोगों के खाने को अन्न यहां नहीं होता या यहां भूमि की कमी है कि अधिक अन्न हम नहीं पैदा कर सक्ते—यहां तो इतना अन्न पैदा होता है कि हिन्दुस्तान ऐसे दो देश यहां की उपज से पल सक्ते हैं तब बेचारे हिन्दुस्तानी ही क्यों भारी हो गये—तत्त्व बात तो यह है कि इन पर हाथ धरने वाला कोई नहीं है इन का उत्साह सब तरह पर भङ्ग किया जाता है पर इन्हें प्रोत्साहित करने की एक बात भी नहीं होती—जितने इन के रोज़गार थे सब छीन लिये गये विदेशी चीज़ों पर मोहित हो ये अपने आप अपना सब कुछ दिये डालते हैं खाने का अन्न तक हम से छीन कर करोड़ों मन हरसाल विलाइत हो जाता है थोड़ा बहुत नोच खसोट जो घर वाले किसी तरह पाते हैं वह भी आप की आखों में खटक रहा है यही चाहते हो कि इन को यहां से निकाल ही दें हिन्दुस्तान ऐसे हमारे स्वजन भी यही राय देते हैं—क्या यह न्याय है कि परदेशी अंगरेज़ तो हाज़रों प्रतिवर्ष यहां घुसते आवें करोड़ों मन अन्न बाहर भेज दिया जाय और ज़मीन का लगान बढ़ाय २ अन्न इतना मँहगा कर दिया जाय कि थोड़े धन वाले बेचारे पेटभर खाने को तरसैं और जो धन हम से इतनी कड़ाई के साथ बटोरा जाय वह रूसी आदि के हमलों से बचने और उन्हीं विदेशियों की विपत्ति और संकट दूर करने में झोक दिया जाय उन की पेनशन और लम्बी २ तनखाहें रोज़ बढ़ती जांय और हिन्दुस्तानी जिन का वेतन अन्न की पहली दर के हिसाब से अब कम से कम द्विगुण होना चाहिये उन को यहां से निकाल ही देने की फिकिर हो तो सब भांत मरण हमी लोगों का है—हम तो पराधीन हैं जो कहो गे जैसा नाच नचाओ गे वह सब करना ही पड़ेगा जब अपने स्वदेशी ही अपने हाथ से पैरों में कुल्हाड़ी मारते हैं तो दूसरों की कौन कहे—विदेशी वस्तु हमारा प्राण हो रही है जिस्के बिना हमारा एक दिन भी नहीं चल सक्ता विशेष कर उन्में जो पढ़े लिखे सभ्यता की दुम थांबे हुये हैं गाढ़े के कपड़े और रुईदार अमौआ का कोट पहन हाकिमों के सामने जायंगे तो हाकिम लोग उन से बोलैं गे नहीं

अपने पास न बैठने देंगे यदि विलाइती लैम्प और भांत २ के शीशे आलस घर में न होंगे तो मोहफिल क्यों कर आरास्ता करेंगे विलाइती कुरसी न होगी तो दोस्तों को बैठावेंगे किस पर चाहो जो खर्च हो लाखों हाथ के कारीगर दरिद्र हो भूखों मरैं बला से हम अपने आराम और सुख में क्यों खलल डालें हम मेहनत कर कमाते हैं अपनी सुख और चैन में काटते हैं दूसरों की फिकिर से हमें क्या काम—अच्छा भाई तुम सुखी रहो जिसपर बीतेगी वह भुगत लेगा पर इतना समझे रहिये इस वर्त्तमान सुख पर भूलो नहीं यह सब केवल चार दिन की चांदनी है हौले हौले थोड़े दिनों में तुम भी लूले हो जाओगे—हो तो तुम भी हिन्दुस्तानी आज तुम्हारे भाई निकाले जाते हैं कल तुम्हारी बारी आवेगी तब केवल हाथ मलना और पछताना ही शेष रहेगा इससे यदि थोड़ी भी अकिल रखते हो तो अभी ही से सम्हलो जितना अपने आराम और सुख में खर्च करते हो उसका शतांश भी तो अकालनिवृत्तिहेतु दिया करो उन रुपयों का अब लेकर रख दिया जाय और उन्हीं रुपयों से हर तरह के कारखाने खोले जांय तो लाखों गरीबों का प्रतिपालन हो अच्छी से अच्छी और विदेश की बनी चीज़ों की अपेक्षा सस्ती चीज़ें भी तुम्हें मिलैं और न तब जेनरल बूथ को ऐसी ऊटपटांग बात कहने का साहस हो—हमें जो कुछ तुम्हारे कल्याण की बात सूझी कह दिया अब आगे मानना न मानना तुम्हारे आधीन है—हरदेवप्रसाद

मांगा रोटी मिला पत्थल ॥

इन्डिया कौंसिल बिल के घनघोर आन्दोलनद्वारा हमने मांगा था एलेक्शन कि छोटे लाट तथा बड़े लाट की कौंसिल में प्रजा की ओर से चुन कर अच्छे लोग भरती किये जांय मिला यह कि दस की जगह पन्द्रह मेंबर हुआ करें और वे सब गवर्नमेंट के नियत किये हों प्रजा की ओर से एक भी न रहें—गवर्नमेंट अपने खुशामदी कृपापात्रों को छोड़ सच्चे दियानतदार प्रजा के हित चाहने वालों को काहे को चुनेगी—तो निश्चय हुआ कि जहां १० हमारे शत्रु और बुराई चाहने वाले पहले थे वहां अब १५ हुये और इन ५ आदमियों के अधिक होने से हरसाल उन की मेंवरी का जो खर्च बढ़ा सो मानो

नफा मिला—हौस आफलार्ड से तो यह बात मंजूर ही हो गई हौसआफ का मन्सकी मंजूरी बाकी है सो भी इसी प्रकार यद्वा तद्वा होही गी इतने दिनों का परिश्रम और कांव कांव सब व्यर्थ हुई सच है ॥

"मेरे मन कुछ और है कर्ता के कुछ और—

ऐसा भी सुना गया है कि हौसआफलार्ड में जिस समय इन्डिया बिल पेश थी कुछ मेम्बरों की यह राय थी कि यदि म्युनिसिपल कमिश्नर लेजिसल लेटिव कौंसिल के मेम्बर चुने जांय तो भी हिन्दुस्तान के लिये बहुत फाइदा है पर लार्डसालिसबरी इस्में सहमत न हुये जिन के मत में इलेक्शन किसी प्रकार होना ही न चाहिये और अब हौसआफकामन्स में यह आन्दोलन फिर किया जायगा कदाचित् ये लोग म्युनिसिपल कमिशनरों के एलेक्शन में सहमत हुये तो इस इलेक्शन से हमे कोई लाभ नहीं है कलट्टर और कमिशनरों के गुलाम इन म्युनिसिपल मेंवरों के हाथ से हम जैसा दुख उठा रहे उसे याद कर जी अकुलाता है तब कौन ऐसा मूर्ख होगा जो इन का चुना जाना पसन्द करेगा इस लिये यदि इलेक्शन हो तो प्रजा के भरपूर मन माफिक हो तभी हमारा हित है—पहले तो इन म्युनिसिपल कमिश्नरों में ऊंची योग्यता के बड़े विद्वान् बहुत कम हैं क्योंकि इन के इलेक्शन के समय बड़े रईस महाजन धनियों का ऐसा दबाव लोगों पर छोड़ा जाता है कि लोग बहुधा लाचार हो अपनी तबियत के खिलाफ भी दबाव में पड़ उन्हीं को चुनते हैं—दूसरे यह कि दो एक कहीं कोई २ उदारभाव वाले इनसाफ पसन्द प्रजाहितैषी हैं भी तो उन की चलती नहीं बल्कि अपनी तबियत और रुचि को सब भांत रोक उन्हीं बड़े लाला या बड़े बाबू साहब के ढंग पर ढुलक जाते हैं और बड़े बाबू साहब को खिताब और पदवी पाने की लौ लगी है हाकिमों के विरोधी हो ही नहीं सक्ते हाकिम सब गवर्नमेण्ट के प्रधान अङ्ग हैं इस लिये म्युनिसिपल मेम्बरों में से जो इलेक्शन हुआ तो वह भी एक प्रकार का " नामिनेशन " ही कहलावे गा—हेर फेर के वही हुआ जो गवर्नमेण्ट चाहती है प्रजा का प्रतिनिधि कोई न ठहरा और जब तक प्रजा के प्रतिनिधि कौंसिल में न हों तब तक हम जो चाहते हैं उस्का होना "लेजिसलेटिवकौंसिल" कानून बनाने वाली सभा के द्वारा अनहोना है—

शब्दपरिचय—

हमारी बोल चाल में बहुत से ऐसे शब्द चलपड़े हैं जिन का प्रयोग या इस्त्यामल तो हम करते हैं पर उन के माने या वास्तविक अर्थ से बिलकुल परिचित्त नहीं हैं आज हम उपपत्ति सहित उनका पूरा परिचय आप को देते हैं—

साहब लोग—दोगले केरानी-यूरेशियन—

लामज़हबी—तालीम के ज़ोर पकड़ने का नतीजा—

मूर्खता—स्वार्थहानि-"स्वर्थभ्रंशो हि मूर्खता"—

मिस्टर—कोट पतलून कसे चाहो जो हों—

मज़हबीजोश—हिन्दुस्तान को जल्द रसातल भेजने का महा अनुष्ठान—

विरक्त—टट्टी के आड़ में शिकार करने वाले—दीन के परदे में दुनिया कमाने वाले—

म्युनिसिपलकमिशनरी—हाकिमों की गुलामी—प्रजापीड़कों का एक नया दल—

हांमेहां—खिताब पाने का एक सहज लटका—

लल्लोपत्तो—जो हम कहैं सो—

हुनर—कमारवाज़ी-गांठ कटी—

अफ़ीम, भङ्ग } बेफिकिरी की दवा-लियाकत हासिल करने की जनम घूंटी—

अमीर—बिना सींग पूछ वाले जानवर—

पाण्डित्य—कज़ेदराज़ी-"पाण्डित्ये चापलं वचः„—

सुखदुख—समझ का फेर-मान लेने की बात—

भलमनसाहत—इस्का तो बीज ही मारा गया-कहींर कोई बिरले "सरला बिरलायन्ते घनायन्ते कलिद्रुमाः। न शमी न च पुंनागो ह्यस्मिन्संसार कानने—

बेकदर—हिन्दी अखबार के एडिटर—

उदार—हमारे बेइमान नादेहन हरामी पिल्ले—

बेश्या—अमीरों के खेलने की गुड़िया—

मद्य—सभ्यता का एक प्रधान अंग—

दोस्ती—मतलब गांठने का उपाय—

धरम या मज़हब—पुराना चरखा चलाते रहो जब तक चल सके—

कौमीतरक्की—बुरी बला इसका नाम न लो—

लियाकत की गठरी—तीर्थ के पंडे-कुलपूज्य पुरोहित—

जेहालत—पुराने खयाल वाले हिन्दुस्तानी बुद्धों का—ज़ेवर-असाध्य रोग जिसके दूर करने की कोई दवा हई नहीं—

चुंगी—व्यौपार में नफा चूस लेने वाली डाइन—

नेटिव—तुच्छ हकीर हिन्दुस्तानी—

पायोनियर—गवर्नमेण्ट के मित्र मुखशत्रु-पक्षपात और इमानदारी के नमूने या बानगी—

हिन्दुस्तानी अखबार—डिसलायल-नासमझ—

रूस—रामभजन से चौकस रहना एक दिन चोर आवेगा—

खुशामद—खुदावन्द खाकसार हुज़ूर की जूतियों का सदका है जहां पनाह इस हकीर के बाप हैं—कौन कहता है यह दो पहर का कनटाइन घाम उगा है यह तो घोर अन्धकार छाया हुआ है—

देशानुराग—महापाप हिन्दुस्तान की पुण्यभूमि में इसे मत खोजो—

अमले—अदालत के कङ्गले—

पुलिस—बड़े इमानदार सरकारी मुलाज़िम—

कलक्टर—ज़िले भर के परमस्वतंत्र प्रभु—

ज़मींदार—सेत के बकरे—"मुख सों आह न भाखि हैं निज सुख करो हलाल„—

टैक्स—ज़बरदस्त का ठेंगा सिर पर—"बिना दिये नहि बचि है प्रान„—

बाल्यविवाह—महाकोढ़—सहवास बिल की जन्म देने वाली कुरीति—

पानी की कल—विलाइत का लोहा दै हिन्दुस्तान का सोना बटोरने की हिकमत—कौड़ी के लिये मसजिद ढहना यही है—

सभ्यता की नाक—दलाल—तीर्थ के पण्डे—

बडे सस्ते कौड़ी के तीन—पढ़े लिखे—

निकम्मे—हम या हमारे साथी कोई दूसरे जिन के ऐसा ही नसूर हो गया हो—

बेहया—हमारे रसिक पाठकगण—

भकुआ—घर का अगुआ—"सिद्धे कार्ये समस्फलं । यदि कार्ये विपत्तिः स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते"—

बिन घाटे का रोज़गार—दिवाला

ईमानदार—दिवाला काढ़े हुए महाजन—

भद्दापन—हिन्दुस्तानी बजा—

अभागे—हिन्दू—

भाग्यवान्—मुसलमान अंगरेज़ या कोई दूसरे जो हिन्दुआनी मा के पेट से हिन्दू के घर में न पैदा हुये हों—

कुलीन—रुपये वाला—"यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः"—

रसिकशिरोमणि—हमारे कुन्देनातराश निरे उल्लू के पट्ठे श्रील श्री अमुक—

अमुक—अमुक—इसे मेहनत कर रट डालिये आज के लिये इतना ही विशेष फिर कभी—

लेडी डफ़रिन आसपिटल ॥

हमें यह देख बड़ी प्रसन्नता होती है कि यह असपताल जो निज कर औरतों ही के लिये स्थापित किया गया है बड़ी तरक्की पर है और इस्के स्थापित होने से इलाहाबाद के रहने वालों का बड़ा उपकार हो रहा है—बहुधा स्त्रियों की बहुतसी बीमारियां ऐसी होती थीं कि उन की चिकित्सा वैद्य और डाक्तरों के द्वारा कराने में लोग हिचिकते थे और नासमझ दाइयों के देखाने से और भी बीमारी बिगड़ती थी सो सब बातें दूर हुईं—इस असपताल की यहां इतनी जल्द तरक्की रायबहादुर बाबू महेन्द्रनाथ ओहदेदार के निरन्तर प्रयत्न और योग्यता का फल है इस लिये इस अवसर पर उक्त बाबू साहब को जो रायबहादुर का खिताब दिया गया यह बहुत ही योग्य हुआ—

जेनरल डिपार्टमेंट

नम्बर ३९०
३-३९१ख

स्थान-इलाहाबाद ६ फर्वरी सन् १८९२ ई०

संपादक महाशय हिन्दीप्रदीप

मुझ को आज्ञा हुई है कि आप के पास श्रीमती महारानी राजराजेश्वरी के उस पत्र का हिंदी अनुवाद इस लेख के साथ समाचारपत्र में मुद्रित और प्रकाशित होने के प्रयोजन से भेजूं जो श्रीमती महाराणी की ओर से उस सहानुभूति के बदले जो श्रीमान् ड्यूक आफ क्लिरेन्डिल की मृत्यु के सम्बन्ध में प्रकाश की गई है. श्रीमतीमहारानी की यह इच्छा है कि पत्र जहां तक हो सके शीघ्र प्रकाशित किया जाय ॥

ई-एफ-एल-विन्टर अंडर सेक्रटरी गवर्नमेंट पश्चिमोत्तर और अवध

स्थान-आसबर्न०—तारीख २६ जनवरी सन् १८९२ ई० ॥

एक ऐसे भयंकर समय में जिस से अधिक शोचनीय दुर्घटना और विपत्ति मेरे और मेरे कुटुम्ब और जाति के ऊपर सिवाय एक बार के कभी नहीं पड़ी थी, मेरे राज्य के प्रत्येक भाग की प्रजा ने जो शुभचिंतकता और प्रेमयुक्त सहानुभूति प्रगट की है मैं आवश्यक समझती हूं कि मैं फिर इस बात को वर्णन करूं कि वह शुभचिंतकता और सहानुभूति मेरे हृदय में किस अंश तक पैठी है-मेरा अत्यंत प्रिय पौत्र जो ऐसा होनहार, लोकप्रिय और मृदु स्वभाव था उस की अकस्मात् मृत्यु ने उस के दुःखित माता पिता और उस की प्रिय युवा भावी पत्नी और उस की दादी को अत्यंत शोक में डाल दिया है, यद्यपि वे परमात्मा की अलङ्घ्य आज्ञाओं को स्वीकार करते हैं-करोड़ों मनुष्यों ने जो सहानुभूति ऐसी हृदयग्राही रीति से प्रगट की है वह मेरे लिये एक अत्यंत समाधान का विषय है और मैं उस सहानुभूति का जो मेरे और परिवार के साथ प्रगट की गई है शुद्धान्तःकरण से अपनी कृतज्ञता प्रकाश करती हूं. और मेरे पौत्र के गुणों की जो प्रशंसा की गई है जो मेरे साथ मेरे पुत्रों के समान स्नेह रखता था वह प्रशंसा मेरे और मेरे परिवार के लिये शांति और संतोष दायक है पिछले तीस वर्षों में मेरे प्यारों के बिछोह के कारण वस्तुतः अत्यत दुख मुझ पर पड़े हैं, किंतु यद्यपि मुझ को परिश्रम और चिंता और जिम्मेदारियां बहुत बड़ी रहा की हैं, तौ भी ईश्वर से मेरी अन्तःकरण से यही प्रार्थना है कि वह मुझे ऐसी शक्ति और सहायता प्रदान करता रहे कि मैं अपने जन्मपर्यंत अपनी प्रिय भूमि और राज्य और प्रजा के सुख और भलाई के लिये उद्योग करती रहूं ॥

पीयूषप्रवाह

अनोखी उक्तियुक्ति का एक मासिकपत्र सरल और सरस साधुभाषा में सबों के सुबीते का ऐसा सस्ता मासिकपत्र दूसरा नहीं है वार्षिक मूल्य केवल ॥) है साहित्याचार्य पं० अंबिकादत्त व्यास इसके संपादक हैं भागलपूर से छप कर निकलता है हाथकंगन को आरसी क्या दो एक अंक मंगाकर पढ़िये—

कृपाकर इसे अवश्य पढ़िये ॥

हम आप को अधिक क्लेश नहीं दिया चाहते केवल इतना ही चाहते हैं कि इसे एकाग्रचित्त हो पढ़ लीजिये—अपने मुख अपनी प्रशंसा तो सभ्यता के क्रम के विरुद्ध है तौ भी यथार्थ कहने में कोई हानि भी नहीं दीखती—धर्मशास्त्र की आज्ञा है "मौनात्सत्यं विशिष्यते" और सत्य यह है कि देशहितैषिता और हृदयग्राही लेख का दम भरने वाले जो समाचार पत्र तथा उनके लेखक अब तक देखे या सुने गये वे तभी तक आप को रोचक मालूम होते हैं जब तक इस पत्र के अवलोकन का अवसर नहीं प्राप्त हुआ—यह पत्र १५ वर्ष से प्रयागनगर में प्रतिमास निकलता है इसे हिन्दीप्रदीप क्या वरन हिन्दी के लिये चन्द्रमा या सूर्य कहैं तो किसी तरह अत्युक्ति नहीं है—जिन्हें इस पत्र के अवलोकन का अवसर न मिला हो उन से निवेदन है इसके पिछले या वर्त्तमान समय के दो एक अंक मंगा कर देखें सच झूठ का आप ही निश्चय हो जायगा—मूल्य सर्वसाधारण के लिये अग्रिम १॥≡) नमूने की कापी का =) है—

बालकृष्ण सम्पादक—हिं०—प्र०—


GULZARBAGH
2ND
DELHI
92

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि०-१५सं०-६-७ } प्रयाग { फरवरी-मार्च १८९२

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १५ संख्या ६-७ | फेब्रुअरी, मार्च सन् १८९२ ई०

संसार कभी एकसा न रहा ॥

सूर्य चन्द्रमा पृथ्वी तथा दूसरे २ ग्रह और उन के उपग्रह आदि यावत् भगण सब अपनी २ कक्षा में चलते हुये कभी एक क्षण के लिये भी स्थिर नहीं रहते तब इस दृश्य जगत् को संसार "चलने वाला" कहना उचित ही है-स्थिर पदार्थ चाहो चिरकाल तक एक रूप में रहे भी पर जो चलने वाले हैं वे एक ही प्रकार के और एक ही रूप में सदा क्योंकर रह सक्ते हैं-जो कल था सो आज नहीं है जो आज है सो कल न रहेगा छिन छिन में नये गुल खिलते हैं—लड़के से जवान हो गये जवान बूढ़े हो जाते हैं—वह प्यारी २ मुग्धमुख च्छवि जिसे देखते ही आंख लुभा उठती है जो जुड़ाता है जिस्के धूलि धूसरित स्वभाव सुन्दर सुहावने कोमल अंग प्रत्यंग के दरस परस को भाग्यहीन जन तरसते हैं "चिरात्सुतस्पर्श रसज्ञतां ययौ" उस्का सब रंग ढंग जवानी के आते ही अथवा यों कहिये पौगंड बीत जाने पर किशोर अवस्था के पहुंचते ही कुछ और का और हो गया—बाल्य अवस्था की मुग्धमाधुरी अकृत्रिम सरलता और सिधाई में सयानपन और कुटिलाई जगह करने लगी स्वाभाविक सौन्दर्य में बनावटी सलोनापन आ समाया नई २ सजावट की ओर जी झुकपड़ा—एक पैसे की शीरीनी और छदाम के मिट्टी के खेलौने में जहां ब्रह्मानन्द का सुख मिलता था वहां अब दो चार आनों की गिनती ही क्या है रूपयों की बात चीत आ लगी—लड़कांई का उदार समभाव और सन्तोष कहीं एक बात में भी न रह सका—तृष्णा लालच हिर्स दोस्ती या दुश्मनी

की बाज़ार गरम हुई आशिकी और माशूकी का चस्का डूबा विषमभाव और मन की कुटिलाई ज्ञान शक्ति बढ़ने के साथ ही साथ नित २ अधिक होती गई हीले २ पूरी तरुनाई तक पहुंच नीचे को खिसकने लगे, गदहपचीसी को नांघ चेहलसाली को भी डांक अधेड़ की गिनती में आगये—बस अब खिस के सो खिसके बाल चांदी होने लगे सौ २ तरह पर खिजाब कर पुराने ठिकरे पर नई कलई की भांत पहलेकासा कुदरती रंग फिर लाया चाहते हैं किच-किचाते हैं बार २ सोचते हैं कि नई जवानी और चढ़ती उमर का जोश तरोताज़ा हो जाता—बालों ही के सुफैद हो जाने के गम में डूबे बैठे थे कि दांत जो हीरे की दमक को भी दबाते हुये मोतियों की लड़ियों की तरह सोह रहे थे कगारे पर के रूख की भांत एक २ कर गिरने लगे मुख के भीतर थोड़ी २ दूर पर मानो विन्ध्य पर्वत का एक २ खड्डसा खड़ा कर दिया गया —उधर नेत्र ने भी जबाब दिया चश्मे की हाजत हुई—दिमाग कमज़ोर पड़ गया हाफिज़ा दुरुस्त न रहा जो बात पहले एक बार के कहने या सुनने से अकिल की सराय में मानो सदा के लिये टिकसी गई थी उसे रूठे पाहुने की भांत बार २ बुलाते हैं घोखते रहते हैं पर सिवाय उचट जाने के बुद्धि में किसी तरह पर ठहरती ही नहीं—"प्राप्ते सन्निहिते ते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे"—इतने में कान भी बान लाये मुह पर सिकुडन आने लगी हाड़ों को छोड़ २ मांस और चिमड़ी ठौर २ इकट्ठी हो हो शरीर समथर मैदान में जगह २ टीले से खड़े हो गये—"श्रुतिर्नष्टा स्मृतिर्दूरे पदात्प्रचलिता द्विजाः। वार्द्धक्यं किमनुप्राप्तं ?"—अस्तु यों ही होते २ साठ सत्तर अस्सी पहुंचे दिन करीब आगये मुहबाय रह गये—"रामराम सत्य हैं दो चार नित्य हैं"—"भूतानि कालः पचतीति वार्त्ता"—"अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यम-मन्दिरं। शेषा जीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम्—" संसार कभी एकसा न रहा हमारा यह सिद्धान्त अब आया मन में—खैर अब आगे बढ़िये—पञ्च-भूतात्मक पञ्चप्राण वाले जीव जो इस चल और असार संसार में एक से न रहे तो कौन अचरज है जब अटल और सदा के लिये स्थिर बड़े २ पहाड़ सैकड़ों कोस के मैदान और जंगल भी काल पाय और के और हो जाते हैं—"पुरा यत्रस्रोतः पुलिनमभवत्तत्र सरितां विपर्यासं जातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम्" उत्तरचरित्र में भवभूति कवि लिखते हैं कि दण्डक बन में जो पहिले सोते रहे

वे नदियों के प्रवाह के कारन अब पुलिन बन गये घने और विरले जंगलों में उलट पुलट हो गई जहां घना जंगल था वहां अब कहीं २ दो एक पेड़ रह गये और जो बिल्कुल पट पर मैदान था वह घने जंगल में बदल गया इत्यादि—तो निश्चय हुआ कि परिवर्त्तन जिस्के हमारे पुराने बुड्ढे अत्यन्त विरुद्ध हैं इस अस्थिर जगत् का एक मुख्य धर्म या गुण है यही नये लोग इस परिवर्त्तन पर अनमन न हो कर चिढ़ते नहीं वरन इसे तरक्की की एक सीढी मानते हैं—हमारे अभाग से भारत में परिवर्त्तन को यहां तक लोग बुरा समझते हैं कि दिन २ अत्यन्त गिरी दशा में आकर भी परिवर्त्तन की ओर नहीं मन दिया चाहते—यह हमारी परिवर्त्तन विमुखता ही का कारण है कि हज़ार वर्ष से विदेशियों का पदाघात सह कर भी कभी एकक्षण भर के लिये जीवनी नाड़ी में रक्त सञ्चालन न हुआ—जैसी इस्म की तरक़्क़ी इस उन्नीसवीं शताब्दी में हमारे देश में हुई है वैसा किसी दूसरे देश में होती तो वह देश भूमण्डल का शिरोमणि हो जाता परिवर्त्तन विमुखता के कारण इस समय की विद्यावृद्धि दाल में नमक की भांत मालूम होती है और जो धीमा-क्रम यहां के लोगों में देखा जाता है उस्से यही निष्कर्ष निकलता है कि इस जीर्णभारत के भाग्योदय के लिये अभी कई शताब्दी चाहिये—अस्तु चाहो जो हो जो हम अब हैं दस वर्ष पहले ऐसे नये थोड़े दिन के उपरान्त कुछ और हो जांयगे क्योंकि यह संसार कभी एकसा न रहा—

उपयुक्त विशेषण ॥

वृत्ति—अजगरी—आकाशी—शिलोञ्छ—भिक्षुकी—कापोती—"है इतलाल कपोतवृत्त कठिन नेह की चाल। सुखसों आह न भाखि हैं निज सुख करो हलाल"—ब्रह्मवृत्ति—वणिक्वृत्ति—सेवावृत्ति, दासवृत्ति, श्ववृत्ति, "श्ववृत्तिर्नीच सेवनम्"—अयाचकवृत्ति—पुरोहितीवृत्ति—शान्तवृत्ति—वकवृत्ति—इत्यादि—

भाव—सेव्यसेवक—भक्ति—पृथक्—मित्र—शत्रु—सरल—कुटिल—स्वामि—दास—अभाव इत्यादि ॥

संकल्प या अध्यवसाय—स्थिर—दृढ़—

सौहार्द मैत्री या दोस्ती—दृढ़—दिली—दांतकाटी—एकमन दो तन—

निष्कपट—मतलबकी—निष्कारण—स्वाभाविक—बनावटी—सरल—कपट—

वैर या दुश्मनी—दारुण—निष्कारण—सहज—काकोलूकीय—अहिनकुलक-डुई—जानी—खून की प्यासी, दुश्मनी—हड़पड़ी—इत्यादि—

विद्या—अनवद्या—हृद्या—अर्थकरी—यशस्करी—

पाण्डित्य—पक्षग्राहि—

पुत्र—वश्य—आज्ञाकारी—सरधन—गया हाड़ ले जाने वाला—वंश की पताका—कुलदीपक—कुलउजागर—कुलाङ्गार—कुलकुठार—

भार्या—पतिप्राणा—मधुरभाषिणी—मनोज्ञा—सती—पतिव्रता—घरकीलक्ष्मी—प्रियभाषिणी—सुभगा—दुर्भगा—कुटला—वन्धकी—कुकाला—कर्कशा—चण्डी—कलहप्रिया—केकयी—

माता—सुतवत्सला—पुत्रादिनी—वीरसू—

बुढ़िया—जरती—पलितकेशा—जप्यल—खोढ़ही—

अधेड़—अर्द्धजरती—गतयौवना—प्रौढ़ा—

युवती—तरुणी—नवयौवना—उन्मदा—कामिनी—रूपगर्विता—ज्ञातयौवना—किशोरी—विदग्धा—अमुग्धा—श्यामा—"प्राप्ते तु षोडशेवर्षे गर्द्धवीप्यप्सरायते"

बाला—अप्राप्तवयसा—अजातरजसा—अज्ञातयौवना—मुग्धा—बालरी—बारीगभुआरी—

राजा—मण्डलेश्वर—चक्रवर्ती—सम्राट्—प्रभुशक्तिसंपन्न—नीतिनिधान—विजयी—भुजबलोपार्जितभूमण्डल—फलितशक्तित्रय—नीतिवल्लीवनाम्भोद—नीतिशास्त्राखिन्नबुद्धि—आदिल—चारचक्षु—पाकशासन—प्रजावत्सल—

मंत्री—प्रज्ञावज्ञातवाक्पति—अविषमधी—सान्धिविग्रहिक—

पण्डित—छात्रसंसदिलब्धकीर्ति—लब्धवर्ण—विदग्धमण्डलीमण्डन—ज्ञातसार—मतिमान्—मनीषी—प्राज्ञ—विचक्षण—पटुबुद्धि—बहुदर्शी—बहुश्रुत—बहुज्ञ—प्रवीण—कृतधी—कृतविद्य—विपश्चित्—फाजिल—आलिम—कुशाग्रबुद्धि—सूक्ष्मदर्शी—इत्यादि—

मूर्ख—बालिश—हलाग्रमति—वैधेय—अपटु—अप्रवीण—देवानांप्रिय—गावदी—बोकामानुस—कुन्देनातराश—जाहिल—

वचन या वाक्य—युक्तियुक्त—"युक्तियुक्तमुपादेयंबचनं बालकादपि„—युक्तिसंगत—अयुक्त—असंगत—अनर्गल—सारगर्भित—अप्रासंगिक—अप्रस्तुत—भोंडा, अश्लील, बेमौका, मित, सार, न्यायनिर्णीत, अवसरप्राप्त, अश्रद्धेय, मधुर, पटु, प्रिय, अविज्ञातप्रबन्ध, "अविज्ञातप्रबन्धस्य वचो वास्पते रपि। व्रजत्यफलतामेव नयद्रुहइवेहितम्" भारविः प्रश्रयगम्भीर, प्रसादरम्य, ओजस्वि ॥

मुनि—तपोधन, तपोनिधि, जितेन्द्रिय, शान्त, आत्माराम, आत्मदर्शी, ब्रह्मनिष्ठ ॥

ब्राह्मण—अग्रजन्मा, द्विजन्मा, द्विज, अनूचान, श्रोत्रिय, पङ्क्तिपावन, विद्यानिधि, आर्यमिश्र, कुलपति, षडङ्गवित, वेदवेदाङ्गपारंगत, षट्कर्मा, गुरुगुरु ॥

क्षत्रिय—बाहुज, मूर्द्धाभिषिक्त, रणदुर्मद, अजेयपराक्रम, रणकर्कश, दुर्दान्त, युद्धोत्साही, त्रिकर्मा ॥

वैश्य—ऊरूज, व्यवसायी, श्रेष्ठिन्, साहूकार, व्यापार कुशल ॥

शूद्र—अन्त्यजात, सेवक, दास ॥

वेश्या—वारविलासिनी, वारस्त्री, वारवधू, रूपाजीवा, परायोषिता, कामधुरा, समयमात्रिका, कुट्टिनी, रूपाढ्या, अनङ्गसेना, अभिसारिका ॥

विट—भुजंग, चेट, मीरशिकार, घटक, भगतिया, खुशमसखरा ॥

उपयुक्त उपमा ॥

नम्रता—फले हुये पेड़ की—भूमि विलम्बी मेघ की—दूब की—"नाह्निक नन्हा ह्वै रहै, जैसी नन्हीं दूब। सबै घास जल जांयगी, दूब खूब की खूब"—

गाम्भीर्य—अतलस्पर्शी अगाधजलधि की—नीतिवेत्ता के हृदगतभाव की—

निर्मलता—शरत् के पूर्णचन्द्र की चान्दनी की—सज्जन के चित्त की—स्वच्छजल की—स्फटिक की—स्फुटतारक आकाश की—

क्षमा—पृथ्वी की, शान्तिशील—मुनि की—

सिधाई—गऊ की—कुलवती की—

निठुराई—सिंह की—शिकारी जानवर की—व्याध की, चंगेज़तैमूरनादिर से ज़ालिमों की

स्थिरता—निवातस्तिमितदीपशिखा की, पर्वत की, सज्जन के मैत्री की ॥

मितभाषिता—मुनियों की, आप्तऋषियों की, सूत्रकारों की ॥

चञ्चलता—नलिनी दलगत जल विन्दु की, पारे की, मनकी, बिजली की, कामिनी के संग की "संगतानि मृगाक्षीणां तडिद्विलसितानि च । क्षणद्वयं न तिष्ठन्ति घनारब्धां न्यपिस्वयम्„ खल की, मैत्री की, सांझ की ललाई की ।

चेहरे की उदासी—मुंदे हुये कमल की, हिम से ढंपे चन्द्रमा की—

बेकरारी—दिल की " हालत है इस्की पारे की व बर्क़ी शरार की । क्या तड़प सुनाओं दिले बेकरार की„ ॥

नेत्र—फूले हुये नरगिस की, मृग की, मीन की, खंजन की, कमल पत्र की ॥

आर्ति या तड़प—जलविन मीन की, मुर्ग बिसमिल की, विरहिणी बास कसज्जानायिका की इत्यादि ॥

उपयुक्त क्रिया—

छिटकना—चान्दनी का ॥

बिखरना—बालों का ॥

जोहना—मुख का, बाट का ॥

परखना—राह का, आसरा का ॥

खाना—गम का, धोखे का, मनमोदक का ॥

घूटना—लहू का ॥

लगना—लगन का, मन का, लौ का, आंख का " न लगी आंख जब से आखलगी„ ॥

दरकना—छाती का ॥

डिगना—नीयत का ॥

छुटना—ईमान का, धरम का, हिम्मत का, पिंड का, देश या परिवार का ॥

मारना—मन का, काम क्रोध आदि ६ शत्रुओं का ॥

बुझना—जी का, घर के चिराग का, ज़ालिम का, आशा का ॥

चलना—नाम का, बात का, पेट का, राडों के चरखे का, साख का ॥

हारना—हिम्मत का, बात का ॥

टूटना—जी का, कुटुम, बात की लर का, उम्मैद का, तारों का, दालभात में मूसल का ॥

उलझना—मन का, आंख का ॥

पड़ना—गांठ का, पाले का, गाज का ॥

जुड़ना—सभा का, पंचाइत का, प्रीति का "दृग उरझत टूटत कुटुम जुरत चतुरसों प्रीति। पड़त गांठदुरजन हिये, दईनई यह रीति„ ॥

गिरना—गाज का, ढाह का, कगारे का, दांत का ॥

देना—दिल का "दिल दैके हमने यार को दिलबर बनादिया„ कौल का ॥

लाना—विश्वास का, ईमान का ॥

खेना—उमर की कश्ती का "उमर की कश्ती हमारी देखिये किस घाट लगती है। रहैगी डूब के दरिया में या उसपार लगती है„ ॥

काटना—काल का, संसार के बन्धन का, पाप का, विपत का ॥

फूलना—शफक का, कुप्पे का ॥

खिलना—गुल का ॥

चमकना—भाग का, सितारे का ॥

दमकना—दामिनी का, द्युति का ॥

गाठना—सलाह का, बन्दिश का ॥

चढ़ना या उतरना—जोश का, नशे का "व्रजत्यधोधो जात्युच्चैर्नरः स्वैरे-वकर्मभिः। खनितेव हि कूपस्य प्रसादस्येव--कारकः „ ॥

ढलना—दिन का, उमर का, यौवन का ॥

पीना या चखना—काव्यामृत या भक्ति रस का, अधरामृत का ॥

जुड़ाना—आंख का, जी का ॥

सहना—सितं का, ज़ुल्म का ॥

सुविज्ञ पाठकों के लिये यह एक दिग्दर्शन मात्र है जितना सोचते जाइये टटके से टटके मुहाविरे निकलते आवेंगे जो सुलेखक हुआ चाहें वे इससे अवश्य कुछ लाभ उठा सक्ते हैं।

भूमिसंबंधीऋण ॥

हमारे इस देश में जो कुछ दुर्दशा आज दिन खेतिहर लोगों की हो रही है वह कौन नहीं जानता, वर्षभर बेचारे परिश्रम करते हैं अंत में वही ढाक के तीन पात पेटभर खाने को मिलगया तो तनपर कपड़ा नहीं सो खाने की भी यह दशा है कि जो घर में ४ मनुष्य हैं तो २ खेती करते हैं २ नगरों में जा कर नौकरी करते हैं उस नौकरी के रुपये से बेचारे लगान देन का रुपया देते हैं तब जो कुछ अन्न घर में हुआ वह खाने भर को बच रहा और जो घर में कोई नौकरी करने वाला न हुआ तो करके देने के लिये सब नाज तुरंत ही बेच डालना पड़ता है वा ब्यौहरे की शरण लेनी पड़ती है, यह कुछ छोटे २ खेतिहरों की ही दशा नहीं है जितने बड़े २ राजे महाराजे ज़मीदार तअल्लुकेदार हैं कौनसा ऐसा है जो ऋण से बचा हो और ऋण भी कैसा कि जितना इस से छुट्टी पाने का यत्न और उपाय करते हैं उतने ही अधिक फसते जाते हैं, इस दशा को देख कर पंजाब देश में राज्यकर्म्मचारियों को बड़ा सोच पैदा हुआ, दक्षिण देश में इस के सुधार के निमित्त हमारी सरकार को एक नियम अलग बनाना ही पड़ा, बंगाल और पश्चिमोत्तर देश में तो कोई सिर धरा और सोच करने वाला है नहीं, नहर की बदौलत मैनपुरी फर्रुखाबाद की तरफ गांव के गाव उजड़ गये अवध में बहुत से इलाके भूस्वामियों के हाथ से निकल २ महाजनों और वकीलों के हाथों में पड़ गये, कोर्ट आफवार्ड का मुहकमा धड़ाधड़ अपना काम करता ही है ॥

अब दक्षिण के लिये जो नियम बना था उसी के विचार के निमित्त हाल में एक कमीशन नियत हुआ था जिस ने अपना काम पूरा करलिया है और थोड़े ही दिन में अपना विचार गवर्नमेंट को प्रकाशित करैगा कमीशन का जो कुछ विचार होगा वह तो सब पर प्रगट किया ही जायगा परन्तु आज हम अपना विचार इस विषय में गवर्नमेंट से निवेदन करते हैं ॥

बहुत से लोग साहूकारों को दोष देते हैं कि यह लोग इतना अधिक व्याज लेते हैं और ऐसी कड़ाई का व्यवहार करते हैं कि किसान लोग तबाह हो जाते हैं, यह कथन केवल उन लोगों का हो सकता है जिन के मस्तिष्क में विचारशक्ति रह नहीं गई—हम इन लोगों से यह पूछते हैं कि भला इन

साहूकारों के होते आवश्यकता होने पर ऋण मिल तो जाता है और जो यह लोग न हों तो बिचारे किसानों को बीज भी न मिले अब व्याज जो अधिक लिया जाता है उस के दो कारण हैं, एक तो देश में रुपया ही नहीं रह गया दिन पर दिन प्रजा धनहीन होती जाती है, जो बिचारे अपने ऊपर नानाप्रकार के कष्ट उठा कर, सब लोगों को हरतरह के भोगविलास करते हुए देख कर भी अपने को इन सब सुखों से वंचित रख कर कुछ थोड़ा बहुत बचाते हैं वह प्रत्यक्ष है कि उन को कितना प्रिय होगा उस का नुकसान उन को कितना कठिन जान पड़ेगा, भूमि की जो दशा है वह किसी को अविदित नहीं, कर दिन पर दिन बढ़ता जाता है किसानों को खाने भर को पैदा होता नहीं इस लिये दिये हुए रुपये का फिर पाना अधिक २ कठिन होता जाता है मांग रुपये की दिन प्रतिदिन अधिक होती जाती है मिलने की सूरत बंद होती जाती है जो लोग लेकर भाग जाते हैं उस का नुकसान न्यायालय का खर्च अपना और अपने घर वालों का खर्च सब इस में ही से निकलना चाहैं, तब इन सब के देखते हुए जो व्याज वह लगाते हैं वह कुछ भी नहीं है, गवर्नमेंट ने भी तो किसानों को रुपया देना आरम्भ किया है सब कुछ अख्तियार होते हुए गवर्नमेंट को बहुतसा रुपया नुकसानी में डालना पड़ता है, यद्यपि गवर्नमेंट का कुछ विशेष खर्च नहीं पड़ता वही तहसीलदार जो और बहुत से काम करते हैं इस को भी कर लेते हैं, दूसरी बंको की हिम्मत नहीं पड़ती कि ऐसी अवस्था में अपना रुपया लगावैं, इन कारणों से व्यवहारी लोग यदि थोड़ा अधिक व्याज लेते हैं तो क्या बुरा करते हैं, अब दूसरा कारण अधिक व्याज का यह है कि दूसरे कामों में रुपया लगाने से अधिक व्याज मिलता है जहां सब प्रकार से रुपये फेर पाने का अधिक भरोसा है, फिर इस काम में वह अपना रुपया कम व्याज पर क्यों लगावैं, जिस भूमि पर वह रुपया देते हैं वह उन के सिर पड़ी तो उस में ३) वा ४) सैकड़े की निकासी भी कठिनाई से होती है क्योंकि जो ऐसा होता तो लोग प्रामेसरी नोट में ४) सैकड़े पर न लगाते और १००) के १०७) न देते, और जो अब नियम बनते जाते हैं कि दिये हुए रुपये के बदले में साहूकार भूमि भी न पा सकेंगे तो ऐसी दशा में अधिक व्याज पर रुपया मिलना कैसा

हम जानते हैं कि किसी प्रकार रुपया मिल ही न सकेगा, ऐसे ही ऐसे उपदेशकों ने घर उजाड़े हैं—इसी कमीशन के सामने एक जज ने साक्षी दी है कि जब से दक्षिण का भूमिऋणसम्बन्धी नियम बना है तब से लेन देन अधिक हो गया है और इस का प्रमाण यह देते हैं कि जब से यह कानून बना है तब से इस विषय के मुकद्दमों की संख्या अधिक बढ़ गई है परन्तु इस साक्षी में यह नहीं कहा गया कि नया ऋण कितना दिया गया और जो मुकद्दमें अधिक हुये हैं वे नये ऋण के अधिक होने के कारण हुये हैं वा इस्से हुये हैं कि इस नये कानून से डर कर साहूकारों ने अपना रुपया शीघ्र निकाल लेने के लिये बहुत से मुकद्दमें एक संग दाखिल कर दिये—जो कुछ हो, किसानों की दशा इन ऋणसम्बन्धी नियमों के सुधारने से कभी अच्छी नहीं हो सकती, दिन पर दिन बिगड़ती ही जायगी—यदि उन की दशा को सुधारना है तो जिन कारणों से किसानों को ऋण लेने की आवश्यकता होती है उन को सुधारना चाहिये, किसान लोग जो ऋण लेते हैं उस के दो ही कारण समझ में आ सकते हैं एक तो भूमि कर के अधिक हो जाने से बीज के मँहगे होने से (पशुओं के मारे जाने से वह भी मंहगे होते जाते हैं) उन का खर्च अधिक बैठ जाता है इस लिये आमदनी बहुत कम होती है और दूसरे उन के घर का खर्च दिन २ बढ़ता जाता है, जितनी वस्तु हैं सब मंहगी, फिर कैसे काम चले ऋण करना ही पड़ता है, अंगरेज़ों की दावत न करें, डफरिनफण्ड में न दें अथवा और जो कोई चन्दा कमिश्नर वा कलक्टर खड़ा करें उस में कुछ न दें कौनसा काम रुक सकता है, अदालत का खर्चा तो एक ज़रूरी रकम हुई है इस से बच नहीं सकते हैं, हां व्याह शादी की एक फज़ूल रकम है, भांड़ भगतियों में व्यर्थ रुपया फूकना होता है परन्तु इस में बाप दादों की कटती है तौ भी उस के कम करने का प्रबन्ध लोग कर रहे हैं, जो और दान पुण्य के फज़ूल काम थे वह भी बन्द कर दिये परन्तु यह ज़रूरी रकम जो बहुतसी निकलती चली आती है उन को क्या किया जाय, जो खेतिहरों की दशा सुधारना है तौ उन कारणों को रोकना चाहिये जिन से ऋण लेने की आवश्यकता होती है न यह कि ऋण का मिलना ही बन्द कर दो—परन्तु भूमि कर गवर्नमेंट घटा नहीं सकती—घटावे तो खर्च कैसे पूरा पड़े और ज़मीदार

अपना भी खर्च नहीं घटा सकते क्योंकि तब ज़िले के हाकिम नाराज़ हों—पहलेकीसी लड़ाई तो अब रह न गई जो अदालत की लड़ाई भी न लड़ें तो अन्न ही न पचे—विदेशी वस्तुओं से भी मन को रोक नहीं सकते—जिन के बाप दादे गाढ़े की मिरजई और बैलों के रहड़ू के सिवाय कुछ जानते ही नहीं थे उन को अब सब प्रकार के साज सामान चाहिये फिर खर्च कैसे घटे—बस सुधार हो चुका न गवर्नमेंट ही अपना खर्च घटावे गी न ज़मीदार ही कम करेंगे—चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली—ह—प्र

इण्डिया पार्लियामेण्ट में ॥

अब की बार १२ फरवरी को जो पार्लियामेण्ट महासभा का नया अधिवेशन हुआ उस्में स्विफ्ट मेकनील जिन्हें हम सबों को बड़ा धन्यवाद देना चाहिये कि व्राइटफासेट ब्रेडला के उपरान्त हिन्दुस्तान के लिये यही एक भाई के लाल उठ खड़े हुये और यह कहा कि बड़े अफसोस की बात है कि पार्लियामेण्ट के खुलने के समय पहली स्पीच जो महाराणी की हुई उस्में हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में वह वादे जो समय २ गवर्नमेण्ट की ओर से किये गये कि अहलविलाइती और हिन्दुस्तानी सर्कारी मुलाज़िमत में बराबर समझे जांय दोनों को एकसा मौका अपनी २ लियाकत दिखलाने का दिया जाय इस्का कुछ भी ज़िकिर न रहा और इस बात के पोषण में मेकनील साहब ने लार्डनाथब्रुकलार्डलिटन और दूसरे २ वाइसराय की स्पीच और मन्तव्य का हवाला अपनी वक्तृता में दिया और अंगरेज़ी गवर्नमेण्ट को बहुत फटकारा कि हिन्दुस्तानी हर तरह पर दूध की मक्खी के समान अलग कर दिये जाते हैं केवल लड़कों के समान फुसलाय २ रक्खे जाते हैं, जिस्का नतीजा यह है कि भूमण्डल पर सब से अधिक प्रजा सब से अधिक खर्चा गवर्नमेण्ट के पल्ले पड़ी है गवर्नमेण्ट इतना अधिक रुपया एक जगह की चार अलग्गे तलग्गे में उठाती है कि जिस्से प्रजा हिन्दुस्तान की अब अत्यन्त ही निर्द्धन हो गई है, इस्पर हमारे नये अण्डरसेक्रेटरी मिस्टर करज़न जिन को हिन्दुस्तान के बारे में पार्लियामेण्ट के बीच कुछ कहने का यह पहला मौका मिला था कि अपनी बनावटी स्पीच में हिन्दुस्तान के हितैषियों को जो घुणाक्षरन्याय से हिन्दुस्तान के फाइदे के लिये कभी कुछ कह बैठते हैं इस तरह पर

खण्डन करैं और उन्हें ऐसा बनावें कि जिस्में फिर कोई ऐसी बेवकूफी करने की हिम्मत न बांध सकै कहीं तो बैठे कि जो वादे हिन्दुस्तानियों को अंग-रेज़ों के बराबर के ओहदे देने के किये गये थे सो अब तक बराबर बर्ताव में लाये गये बल्कि इण्डिया गवर्नमेण्ट के प्रधान २ कर्मचारी हिन्दुस्तान में हमेशा लगातार कोशिशें करते रहे, सन् १८८९ में लार्डलिटन ने स्टेच्युअरी सिविल सरविस कायम किया फिर उपरान्त पब्लिक सरविस कमिशन इसी के फाइदे के लिये बैठा इत्यादि २

अस्तु यह जो कुछ हुआ केवल बड़ी २ रिपोर्टों में दीमकों के चाटने के लिये रख दिया गया और लाखों रुपये कमिशन के द्वारा अंगरेज़ों को मिल गये आशा ही आशा में हमारे आंसू पोंछ दिये गये पर वास्तव में जो कुछ हुआ वह हमारे पाठकों को प्रगट है ॥

खैर अपनी स्पीच में अंडरसेक्रेटरी साहब ने जोश में आय यह भी कह डाला कि एक तिहाई शेशन जजी और कुल का छठवां हिस्सा कलकृरी तथा दूसरे २ बड़े २ ओहदे केवल हिन्दुस्तानियों ही को दिये जांयगे, यह बात अंडरसेक्रेटरी साहब ने मिस्टर मेकनील को नीचा दिखलाने के लिये कहा था या इस्का कुछ वास्तव में बर्ताव भी होगा नहीं समझ में आता परन्तु इतना भी ऐसे बड़े ओहदेवाले का और पार्लियामेण्ट ऐसी महासभा में महारानी की स्पीच के जबाब दरजबाब में कुछ कहना क्या कम है, हम लोगों का कलेजा इतने ही में उछल २ यही कह रहा है कि अब लिया अब नहीं छोड़-ते, अस्तु अंडरसेक्रेटरी मिस्टर करज़िन को इस्का बहुत २ धन्यवाद है, दूसरी बात जो उन्हों ने अपनी स्पीच में यह कहा कि हिन्दुस्तान और इंगलैंड में सिविलसरविस की परीक्षा एकसी होगी इस्का जो कुछ उन्हों ने खण्डन किया इस्का विशेष खण्डन मण्डन इस समय हम नहीं किया चाहते, तीसरी बात उन्हों ने कौंसिल में हिन्दुस्तानी मेम्बर और हर एक हाईकोर्ट में एक २ हिन्दु-स्तानी जज होने का बड़ाही एहसान जो हम पर प्रगट किया सो तो कोई ऐसी बात नहीं है जिस्के लिये हम इतना प्रसन्न हों समुद्र में एक बिन्दु के समान २४ करोड़ आदमियों के बीच इतना ही हुआ तो क्या हुआ जिसे सेर भर की भूख है उसे छटाक अन्न मिलने से कब तृप्ति हो सक्ती है किन्तु पायो-नियर को इतना भी न सुहाना जी में खलबली पैठगई १० मार्च के पत्र में

अंडरसेक्रेटरी और मेकनील की स्पीचें छपीं और १३ मार्च के पायोनियर में एक बड़ा भारी लीडर छपा मानो तोप का गोला लगा दिया गया ऐसा जानपडता है कि पायोनियर साहब गिन २ एक २ हिन्दुस्तानियों को उड़ा देंगे—सच तो यह है कि हमसा कम नसीब और कमबख्त दूसरा कौन है यदि पार्लियामेण्ट के लोग चेतें भी तो यह हमारे जन्म के छिद्र दर्शी पायोनियर उसे कब सह सक्ते हैं—पायोनियर हिन्दुस्तान में ब्रिटिशशासन को यूरोप के विद्यमान राज्यों से भी बढ़ कर कहते हैं—सच है यूरोप की प्रजा भी ऐसा ही अन्न वस्त्र के लिये तरस रही हैं जैसा हम—करोड़ों मनुष्य दान्तों पसीने की मेहनत के उपरान्त आधे पेट खाकर ऐसा ही दिन काटते होंगे यूरोप के लोग भी हमारे समान पर कटे पक्षी की भांत सब तरह पर हीन दीन कर दिये गये हैं—यूरोप के लोगों में भी असन्तोष की सीमा ऐसी ही बढ़ती ही जाती है जैसा इण्डिया में—पायोनियर सन्देह करते हैं हिन्दुस्तानियों को जजी कलकूरी आदि बड़े २ ओहदे देने से अंगरेजी हुकूमत में धब्बा लगने का डर है—रमेशचन्द्र मित्र जसटिसतैलङ्ग प्रभृति बड़े २ लोग जो ऊंचे ओहदों पर किये गये उन से अंगरेजी शासन और न्याय में क्या धब्बा लगा? हमारी इलाहाबाद हाईकोर्ट में जसटिस महमूद अंगरेज जजों की योग्यता की अपेक्षा कब किसी बात में कम हुये हैं बल्कि कानून के मर्म को जैसा सैयदमहमूद समझते हैं वैसा दूसरे जज नहीं—हाल में नजीबाबाद के रामलीला और मुहर्रम के झगड़े में कुंअर भारतसिंह की दिलेरी और उन की निर्भय कारकुज़ारी की प्रशंसा गवर्नमेण्ट ने भी पसन्द किया था पायोनियर इन सब बातों पर काहे को कभी ध्यान देते होंगे—हमारे उत्तम कुल के लोग जो चुन २ कर दो एक ऐसे २ ऊंचे ओहदों पर किये गये हैं वे विलाइत के नीचकुल वाले सिविलियन बढ़ई लुहार माली खानसामा से भी गये बीते हो गये इढ़ी और छिद्रदर्शी गुण को भी दोष में आरोपित कर लेते हैं—पायोनियर बड़ी शेखी के साथ लिखते हैं अंगरेज़ों के सम्पर्क से हिन्दुस्तानियों का भी "मारलक्वालिफिकेशन" सुधरता गया है यदि निरे हिन्दुस्तानी इन ओहदों पर भर दिये जांयगे तो हिन्दुस्तान जैसा एक शताब्दी पहले था फिर वैसा का वैसा हो जायगा लोगों के विचार और समझ में जो कुछ अन्तर हुआ है वह कुछ न रहेगा—क्या कहना हमारे "मारलक्वालिफिकेशन" के

सुधराव का ठीका पायोनियर ही साहब ले उतरे हैं जौनपुर के हीलर का मुकद्दमा अभी चल रहा है तो भी हम से अंगरेज़ों के "मारल्स" को अच्छा कहते शरम नहीं आती—हम अपने लोगों में शराब खोरी होटलों का भोजन इत्यादि कई एक बुराइयों का प्रचार अलबत्ता विलाइत के लोगों के साथ अधिक घिष्ट पिष्ट का फल देखते हैं यही यदि सुधराव और लोगों के विचार तथा समझ में अन्तर का होना मान लिया जाय तो लाचारी है—जब तक में सेक्रेटरी फार इंडिया का कोई डिसप्याच यहां इस्के सम्बन्ध में आवे तब तक में पायोनियर देखिये क्या उधम जोतते हैं हमे खटका है देखिये यह बेल मड़ये चढ़ने पाती है या नही इस्का विशेष हाल डिसप्याच के आने पर हम फिर लिखेंगे—

एकान्तज्ञान ॥

एकान्तज्ञान वह ज्ञान कहलाता है जिस्के द्वारा मनुष्य किसी एकान्त स्थल में अपनी ठीक दशा को सोच विचार के अपने गुन ऐगुन का आप ही आप वर्णन कर प्रसन्न होता है या दुःख करता है—एक दिन पञ्च महाराज देश विदेश बहुत दूर २ घूमते यमुना के तट पर जा पहुंचे वहां देखा तो एक ज्ञानी पण्डित जी पलथी मारे बैठे हैं जिन के आकार और वेश भूषा से नख से सिख तक भव्यता बरस रही थी एक कागज़ हाथ में लिये थे जिस्में कुछ भजनसा लिखा था पण्डित जी उस कागज़ को पढ़ और अपनी दशा के साथ उस्के भावार्थ को मिलाय २ प्रसन्न और विस्मित से होते थे—एक अद्भुत अनुराग से पूर्ण हो पण्डित जी कहने लगे बाबा तुलसीदास जी के पदों में कुछ अनोखा ही रस है यह भजन तुलसीदास जी के विनय का है इस्में तो मेरा समस्त जीवनचरित्र और कुल लक्षण कुलक्षण भरा है मानो मेरा जन्मपत्रसा लिखा डाला हो मैं ने बड़ी २ पोथियां पढ़ीं पर अपने शालहोत्रिक चिह्न ऐसे कहीं न पाये—अच्छा एकबार प्रेम से इसे पढ़ तो डालूं दुःख सुख तो लगाही रहता है यहां तो सन्नाहटा है कोई सुनैगा भी नहीं न मेरे छिपे हुये कुलक्षणों का सब भेद खुल जाने का डर है—

आ—आ—आ—(मुंह बाय के)

दीनबन्धु सुखसिन्धु कृपा कर कारुणीक रघुराई—कबहुं योग रत भोग निरत शठ हठ वियोग वश होई—कबहुं मोह वश द्रोह करत बहु कबहुं दया

अति सोई—कबहुं दीन मति हीन रङ्कुरत कबहुं भूप अभिमानी—कबहुं मूढ़ पण्डित विडम्बरत कबहुं धर्मरत ज्ञानी—कबहुं देखि जग धनमय रिपुमय कबहुं नारिमय भासे—संसृति सन्निपात दारुणदुख विनु हरि कृपा न नासे—संयम जप तप नेम धर्म व्रत बहु भेषज समुदाई—तुलसिदास भव रोग राम-पद प्रेमहीन नहि जाई—

श्रीगोविन्दायनमो नमः—शुणो भाई—तुलसीदास जी अपने इष्टदेवता रघुणाथ जी से विनय करते हैं—अरे विनय क्या मेरी शिफारिश करते हैं कि यह बेचारा गरीब पण्डित रामपद प्रेम से हीन है इस्का भवरोग नहीं जाता—ठीक है जब मुझे अपने घर गृहस्थी की सुध आती है आगा पीछा सोंचता हूं तो होश हवास उड़ जाते हैं कि आगे को सिवाय मेरे कोई सँभालने वाले नहीं छोटे २ लड़के कच्ची गृहस्थी दिन भर डांय २ घूमते हैं तब किसी तरह पेट पलता है—आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक त्रिविधताप से दिन रात फुलस रहे हैं कभी एक छिन भर के लिये भी शरीर को स्वास्थ्य और मन को विश्राम नहीं मिलता—दो पहर की ऐसी धूप में इन जेठ वैशाख के महीनों में दो घण्टे आदमी की कौन कहे प्रखेरू भी एक स्थान में पेड़ की ठण्ढी छाया पाय विश्राम करते हैं पर हम निरे वैशाखनन्दन बन इस जले पेट के कारन चक्र के समान घूमते ही रहते हैं—बिना दस जगह जाये जी नहीं मानता यह भी एक दैवी कृपणता है कि उस ने हमे पङ्ख न दिया मृग और श्वान के समान शीघ्रगमन की शक्ति हमे न मिली न गीध कीसी दृष्टि हमे दी कि जहां कहीं स्वार्थसाधन की कोई बात देखते चट जा टूटते—बल पौरुष नित्य २ घटता जाता है एक चपल तृष्णा नित्य २ टटकी और तरुनाई को न पहुंचती जाती तो मेरा कहीं ठिकाना न लगता तिस्पर भी जब कभी मौत की सुध आती है तब मैं बौराय उठता हूं और चाहता हूं कि कोई ऐसा फकीरी लटका हाथ लग जाय कि सदा जवान बना रहूं—पर दान कु-दान लेने में या किसी सुन्दरी रमणी को देख मौत को भी भूल जाता हूं और इस रमणी गाथा की सुध आती है—"यमस्यनित्यं यदि शक्तिरस्तुते दिने दिने गच्छति नाथ यौवनम्" इत्यादि २ पशुक्रिया में तो मैं कूकर शूकर को भी मात करता हूं यद्यपि व्यास जी ने लिखा है—"ब्राह्मणस्य शरीरोयं क्षुद्रकामाय

नेष्यते कृच्छ्राय तपसे चैव प्रेत्यानन्त सुखाय च"—सो यह बात दिहाती सिहाती किसी गवांर ब्राह्मण के लिये गढ़ दी गई है जिन्हें जात पांत का विचार है यहां गुरुओं का शठ मन तो जब चलाय मान होता है तब किसी तरह का विचार नहीं रहता और न किसी तरह पर धरे थांबे रुक सक्ता है—वियोग की दशा जब सताती है अथवा स्त्री पुत्र आदि रुचि के अनुकूल स्वार्थसाधन में पक्के न मिले तो यही जी चाहता है कि "सर्वं त्यक्त्वा हरिं भजेत्"—फिर जब कमाने की कोई युक्ति देख पड़ती है तो यह शठ मन परमहंसीवृत्ति धारण कर लड़कपन की पढ़ी हुई बालबोधनाम पुस्तक की सुध दिलाता है और लड़कपन में जो क ख ग घ इत्यादि घोख रक्खा है उसका पूरा वर्त्ताव किया चाहता हूं यथा (क) जैसे हो तैसे रुपया कामना दान कुदान खज्ज अखज्ज का खयाल निरागवांर पन है—(ख) दूसरे का खज़ाना लूट लेना—(ग) गुरुआई छाटना—(घ) घर फोड़ना—(च) चालाकी से न चूकना—(छ) छलदिद्र में एकता होना—(ज) जालसाज़ी में गुरू घण्टाल बनना—(झ) झूठ सच बात जोड़ने में उस्तादी हासिल करना—(ट) दूसरे का टण्टा जान बूझ बेसहना—(ठ) दूसरों को ठगना—(ड) दूसरे की थाथी डकार जाना—(ढ) धरम की ढाल आगे रख मतलब गांठना—(त) तस्करता—(थ) थाथी निगल जाना—(द) दुराचार या दम्भ—(ध) धर्मध्वजी—(न) नटखटी में पूरे होना इत्यादि—जब कभी सतोगुन का उदय होता है तब अपने इन भीतरी पापों को सोचता हूं और अपने आत्मा की होनहार कुगति पर दया आती है कि हाय यह सब तो मेरा खयाली पोलाव था केवल भाव दुष्ट होने के कलङ्क से कलङ्कित अलवत्ता हुआ और नफा कुछ न उठाया पर इसके कारन परलोक में यमदूतों के लोहदण्ड अवश्य भुगतना होगा—जब कभी मेरे कुलच्छन सब खुल गये और हरमज़दगी के कारन कहीं से निकाले गये तो मूढ़ नासमझ बन गये और अधिक चपकुलिश में आये तो गिड़गिड़ाय ब्राह्मण बन माफी पाने का मुश्तहक अपने को साबित कर दिखाया—जब देखा कि सीधी अंगुली घी नहीं निकलता और स्वार्थसाधन नहीं बन पड़ता तब विडंबना फैलाते हैं—तुम्हारे पुत्र का व्याह अमुक कुलीन धनवान की लड़की से करादेंगे हमारा तुम्हारा बादरायण सम्बन्ध है हम अमुक प्रसङ्ग में आप के साथी और सहायक हुये थे—

तुलसीदास जी के विनय में "कबहुं धर्मरत ज्ञानी" हमारे बड़े ही काम का है—हम तो एक धर्म ही को आड़ किये हैं यह धर्म ही सब के साथ जायगा इसी से हम तन मन धन सब धर्म ही में लगाये रखते हैं—इस्से दो प्रकार के लाभ हैं एक तो स्वर्गभोग की कामना शायद परलोक में कुछ होता हो तो सहायता मिलैगी दूसरा लाभ यह है कि संसार के सब लोग धर्माचरण में प्रवृत्त देख के अच्छा समझते हैं और विशेष दान मान मिलता है—जब कभी वेदान्ती यजमानों से काम पड़ता है तो "चिदानन्दरूपः शिवोहम्"—ब्रह्मास्मि २ की रट लगा देते हैं——बहुधा जब देखता हूं कि संसार धन से भरा हुआ है तब अपने मित्र लोग से क्या २ सलाह नहीं लेता—जब मेरा कहा कोई नहीं मानते तो वे मुझे शत्रुरूप देख पड़ते हैं–बाबा तुलसीदास का यह कहना भी कि "कबहुं नारिमय भासे" बहुत ठीक है जब दूध मलाई और यजमानों के घर से घी के तले बढ़िया २ पकवान हलुआ पूरी खूब छकने को मिला और इन्द्रियां प्रबल पड़ीं तो संसार में सुख की मूल केवल स्त्रियां ही देख पड़ती हैं——फिर उस विनय में यह पद "संसृति सन्निपातदारुणदुःख बिनु हरिकृपा न नासै"–सोचने की बात है यह संसार सन्निपातिक महाज्वर के दारुणदुःख का एक नमूना है—जिस विषय का लोलुप बनता हूं उसी में छटपटाते हुये कचोटा करता हूं–भला यह दुख बिना हरि की पीयूष प्रवाहिनी कृपा के क्योंकर मिट सक्ता है जब तक मन मानता धन न मिलै या हंसगामिनी मत्तमदालसा वामलोचना न हों——जनेऊ की दोहाई अनेक जप तप संयम नियम करते २ थक पड़े भांत २ के इलाज किये खातिरखाह मतलब न निकला तुलसीदास बाबा सच कहते हैं रामपद प्रेमहीन इस ब्राह्मण बेचारे का दरिद्र न मिटा न मिटा—

इसके अनन्तर पद्मनाभराज पहुंचे और कहा पण्डित जी नमस्कार—बस नमस्कार नमस्कार कह पण्डित जी भी उठ खड़े हुये और सारा मानसिक-तरङ्ग यमुना की मन्द २ तरङ्गों में जा मिला और मन में लजागये कि इस दुष्ट ने कहीं मेरा गुप्त भेद सब सुन तो नहीं लिया—पाठकजन समझे एकान्तज्ञान क्या वस्तु है हमारे पण्डित जी एक दृष्टान्तमात्र हैं संसार के मनुष्यमात्र पर यह सुघटित हो सक्ता है किम्बहु—

पेट्रियाटिज़्म या देशानुराग—

जब से अंगरेज़ी शिक्षा का प्रकार इस देश में हुआ तब से हमारे शिक्षित सज्जनों को देशानुराग "पेट्रियाटिज़्म" की उमङ्ग ऐसा छाई हुई है कि जहां देखो वहां हमारे नवयुवकों में इसी की चर्चा हुआ करती है—लड़के मदरसों में जब से ग्रीस और रोम तथा इङ्गलेण्ड का इतिहास पढ़ना आरम्भ करते हैं तभी से देशानुराग का भूत उन पर सवार हो जाता है इसी के पीछे बहुधा लोगों में बुरे भी बनते हैं अंगुश्तनुमा होते हैं बहुधा गवर्नमेण्ट की आंखों में भी चढ़ जाते हैं और बहुत तरह का कष्ट उठाते हैं परन्तु यावज्जीव इसका पीछा नहीं छोड़ते—वास्तव में मनुष्य जन्म की सफलता इसी में है जिसके चित्त में देशानुराग की वासना है वह इसी को मुख्य धर्म कर्म मानता है इससे बढ़ कर दूसरा कोई यज्ञ हुई नहीं—सच पूछो तो वही सब से उत्तम और श्रेष्ठधर्म है जिसके अनुष्ठान में देशानुराग की महक हो—हमारे ऋषि और आप्त मुनियों के चलाये हुये कोई भी ऐसे धर्म और सदनुष्ठान नहीं हैं जिसमें देशानुराग की ज्योति न झलकती हो और जो इसको मूल में रख न चलाये गये हों—हमे अफसोस होता है जब हम अपने यहां के इस समय के बहुत प्रचलित धर्म और बिगड़ी हुई रीतियों को इस ढंग पर चल पड़ी हुई देखते हैं कि जिसमें केवल अन्धपरम्परा का निबाहमात्र है और भलाई के पलटे देश का सत्यानाश अलबत्ता उन से हो रहा है—अस्तु जो लोग इस देशानुराग के "केण्डिडेट" हुआ चाहें उन से हमारा कथन इतना ही है कि कोरी इस्कीहविस से कुछ काम न चलेगा जब तक अपना सब सुख और आराम को चिता में होम न कर दोगे—निस्सन्देह यह हमारे आलस्य और उपेक्षा का फल है और सब के ऊपर सहिष्णुता और शान्तिभाव का परिणाम है कि बड़े २ अपकार सह कर भी तुम्हे आगे बढ़ने का साहस होता ही नहीं—कानग्रेस इत्यादि के द्वारा केवल गवर्नमेण्ट से अपने दुःखों के दूर करने की प्रार्थना जो पेट्रियाटिज़्म का सार समझे हुये हो यह तुम्हारी निपट भूल है तुम्हारी बहुतसी आभ्यन्तरिक आधि और भीतरी पीड़ा को गवर्नमेण्ट समझी नहीं सक्ती समझै भी तो विदेशी गवर्नमेण्ट को क्या पड़ी है कि केवल तुम्हारे फाइदे के लिये अपनी बड़ी हानि बरदाश्त करे गवर्नमेण्ट तुम्हें उतना ही लाभ पहुंचा सक्ती

है कि जितना गेहूं के सङ्ग सिचने से बथुआ को पहुंच सक्ता है–अपना काम महाकाम होता है इस लिये गवर्नमेण्ट की आशा छोड़ जब तक अपने आप तुम सब कुछ करने पर सन्नद्ध न होगे तब तक इस छूछे देशानुराग से कुछ नहीं होना है–

न्यायसङ्ग्रह ॥

अन्धचटकन्याय—अन्धे के हाथ बटेर—

पङ्कप्रक्षालनन्याय—कींच में पांव डुबोय फिर पांव धोना—"प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनंवरम्"—

पिष्टपेषणन्याय—पीसे हुये को फिर पीसना—इसी के जोड़ का दूसरा न्याय—"चर्वित चर्वण" है—

लोहचुम्बकन्याय—घनिष्टसम्बन्ध जैसा लोहे का चुम्बक से है इसी सम्बन्ध के कारण चुम्बक लोहे को खीच लेता है—

वह्निधूमन्याय–आग और धुंये का भी ऐसा ही घनिष्टसम्बन्ध है कि जहां धुआं होगा वहां अग्नि का होना आवश्यक है यह न्याय अनुमान में लगाया जाता है जहां २ धुआं होगा वहां २ अग्नि अवश्य अनुमान की जायगी—

विषवृक्षन्याय—विष के पेड़ को भी अपने हाथ से लगाय काटना अनुचित है—"विषवृक्षोपि संवर्ध्यस्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्"—

बीजाङ्कुरन्याय—बीज और अङ्कुर में यह निश्चय करना कठिन है कि बीज से अङ्कुर कि अङ्कुर से बीज–कार्य और कारण के बीच यह बीजाङ्कुरन्याय लगाया जाता है कार्य और कारण में भी यह निश्चय करना दुर्घट है कि पहले कार्य या पहले कारण—

मृगतृष्णिकान्याय–बालू के रेगिस्तान में दूर से चमकता हुआ बालू प्यासे मृग को जल की भ्रान्ति पैदा करता है ज्यों २ मृग दौड़ता जाता है बालू की चमक दूर हटती जाती है अन्त को मृग वहीं मर कर रह जाता है—

शाखाचन्द्रन्याय—वृक्ष की शाखा के आड़ में चन्द्रमा ऐसा मालूम होता है मानो चन्द्रमा डाली के ऊपर है जो केवल भ्रान्ति मात्र है—

सिंहावलोकन—सिंह चलते २ पीछे देखता है कविता में जिन अक्षरों से पाद पूरण हो दूसरा पाद फिर उन्ही अक्षरों से प्रारम्भ किया जाय यह सिंहावलोकन है—

कुमारीकंकणन्याय—कुमारी के हाथ में चूरी या कंकण जब तक कई एक रहे बराबर खनखनाया किये जब उस ने सब को उतार कर फेक दिया केवल एक ही चूरी हाथ में बच रही तो खनखनाना मिट गया और कुमारी को धान कूटने के समय खनखन शब्द न होने से आराम मिला—परमहंस विरक्त ऐसा ही अकेला और एकान्त में रहे जैसा कुमारी का कंकण—

बीचितरङ्गन्याय—एक लहर दूसरी को बराबर ढकेलती रहती है जब तक किनारे तक पहुंच वे आप से आप नहीं शान्त होतीं—इसी न्याय के द्वारा कानों में शब्दों का बराबर पहुंचना सिद्ध किया जाता है शब्द लहर की [illegible] कानों में पहुंचा करते हैं—

पृथ्वी का चलना हमारे शास्त्रों में भी प्रतिपादित है—

थोड़ासा व्याकरण दो एक ग्रन्थ काव्यों के ग्रहलाघव मुहूर्तचिन्तामणि इत्यादि दो एक ज्योतिष के क्षुद्रग्रन्थों को पढ़ कर ऐसे महान् बन जाना मानो जगत् स्रष्टा के भी उपदेशक आप ही हैं एक बात है और शास्त्रों का अच्छी तरह अभ्यास कर उन के तत्वों को समझना दूसरी बात है—परन्तु जब कोई सूक्ष्म विचार का समय आ उपस्थित होता है और इन अल्पज्ञों की क्षुद्रबुद्धि और अर्थ को अनर्थ समझने से चित्त को अतिखेद पहुंचता है बरदाश्त नहीं होती तब प्राचीन आचार्यों का मत लाचारी दर्जा कहना ही पड़ता है—तब ये दागे सांड के समान फन फनाते हुये लाल लाल आंख निकाल सींघ सरीखे दांत काढ़ ऐसे कुपित होते हैं मानों प्रतिवादी को पीस कर पीलेंगे और चट बेतहासे कह बैठते हैं यह बचन तो नास्तिकों की गढन्त है इन अल्पज्ञ कुबुद्धियों को सोचना चाहिये कि उन पूर्वाचार्यों का कोई भी ग्रन्थ हमारा पढ़ा है या नहीं—यदि पढ़ा है तो हम को शंकासमाधान का यथोचित उत्तर आता है या नहीं यदि आता है तो जिस विषय में अपने को अच्छी तरह निपुणता प्राप्त है उस विषय का कोई प्रश्न करै तो प्रसन्नता पूर्वक धैर्य के साथ उसका उत्तर देना और प्रश्नकर्ता के प्रश्न का यथोचित उत्तर उसके मन में बैठाय देना तो शिष्ट सम्मत सभ्यता का क्रम है किन्तु अड़ियल बैल की भांत गप्पैं हांकना और अवाच्य कुवाच्य कहने को शिष्टता और भद्रता का क्रम कोई न कहेगा सो यह बात तो तब होती जब गम्भीर

बुद्धि और पूर्ण विद्या का बल होता केवल बहुतसी पुस्तक संग्रह कर लेने से पण्डितमानी बन बैठना और शास्त्रों के सूक्ष्म विचार में भी टांग अड़ाना पूर्ण विद्वानों का काम नहीं है यदि बहुतसी पुस्तक पास रखने से कोई पण्डित हो जाता हो तो पुस्तक बेचने वाले दिन रात पुस्तकों को उठाया धरा करते हैं क्यों नहीं पण्डित हो जाते—यदि किसी पुस्तकालय में चिरकाल तक कोई गदहा बंधा रहे तो निश्चय है कि वह विशेष पण्डित हो जायगा—अस्तु बाराह मिहर की बृहत्संहिता और सिद्धान्तशिरोमणि आदि ग्रन्थों का विशेष विचार करने से निश्चय हुआ कि पृथ्वी भ्रमण करती है और पृथ्वी ही के भ्रमण से दिन रात होता है और उसी घूमती हुई पृथ्वी की छाया सूर्य और चन्द्र का ग्रहण है शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष ऋतुओं का अदल बदल इत्यादि सब पृथ्वी के घूमने ही का बाइस है इसका प्रमाण सिद्धान्तशिरोमणि की कालमानाध्याय में इस तरह पर दिया गया है—

इनोदय द्वयान्तरं तदर्कसावनं दिनम् ।
तदेवमेदिनी दिनं भवासरस्तुभभ्रमः ॥

इसी तरह पर सूर्यसिद्धान्त में भी

"उदयादुदयं भानोर्भूमिसावन वासराः"

यदि पृथ्वी भ्रमण नहीं करती तो "तदेवमेदिनीदिनम्" वा "भूमिवासराः" ऐसा पूर्वोक्त श्लोकों में क्यों कहा—

सूर्य द्वादशराशि का भ्रमण अयनक्रम से करता है मकर से उत्तर मीन पर्यन्त पुनः विलोमगति मेष से मिथुन पर्यन्त ६ राशि उत्तरायण भ्रमता है और इसी प्रकार दक्षिणायन ६ राशि ३ राशि सव्य और ३ राशि अपसव्य-जो सूर्य अपनी गति के व्यतिरिक्त न घूमता और न पृथ्वी भ्रमण करती होती तो पृथ्वी के उत्तर दक्षिण चतुर्थांश ही में सूर्य का प्रकाश रहता—दूसरे पृथ्वी का भ्रमण न मानोगे तो पृथ्वी के नीचे का गोलार्द्ध सदैव अन्धकारयुत रहेगा इसी लिये सिद्धान्त वालों ने लिखा है—

लङ्कापुरोर्कस्य यदोदयः स्यात्तदादिनार्द्धं यमकोटि पुर्याम् ।
अधस्तदासिद्ध पुरेऽस्तकालः स्याद्रोमके रात्रिदलं तदैव ॥

सूर्यसिद्धान्त के ग्रहणाध्याय में भी

"भूश्छाया प्राङ्मुखश्चन्द्रौ"

बृहत्संहिता में भी—

वृक्षस्य स्वच्छाया यथैक पार्श्वेभवति दीर्घा च ।
निशिनिशितद्रुमेरावरणवशाद्दिनेशस्य ॥

जैसा सूर्य को आवरण करने से वृक्ष की छाया एक ओर और लम्बी होती है इसी भांत प्रत्येक रात्रि में भूमि सूर्य का आवरण करती है इस कारण भूमि की छाया ग्रहण में बहुत लम्बी और सूची के अग्रभाग सी होती है इसी से उसी ग्रन्थ के साम्वत्सर सूत्र में लिखा है "भूभगण भ्रमण संस्थानम्" अर्थात् भूमि और नक्षत्रों के भ्रमण और संस्थान अर्थात् स्थिति को जानता हो वही पूरा दैवज्ञ कहा जा सक्ता है—तो निश्चय हुआ कि हमारे पूर्वाचार्य पृथ्वी के भ्रमण का सब तत्त्व जाने हुये थे—यदि भूमि स्थिर होती तो जब भूकम्प होता है तो पृथ्वी सर्वत्र कम्पायमान हो उठती न कि कोई एक दिग्-देश में भूकम्प होता क्योंकि स्थिर वस्तु जब किसी कारण हिलैगी तो उसका सम्पूर्ण अंग हिल जायगा जैसा काठ की भिंगी ज़ोर से घुमाई जाय और ज़रा भी वहां की पृथ्वी ऊंची नीची हो तो भृङ्गी एक ओर थोड़ासा कांप जाती है परन्तु फिर भी घूमती ही रहती है इसी प्रकार पृथ्वी भी भूडोल होने से एक स्थान में थोड़ा कांप उठती है—इन सब ऊपर कही उपपत्तियों से पृथ्वी का चलना स्पष्ट और सिद्ध है—रामनारायण ज्योतिर्विद्—

हमारीभूल ॥

हम अपनी भूल कई बार कई तरह पर पहले गिना चुके हैं आज चर्वित चर्वनके ढंग पर फिर एक बार उसी राम रसरा रेढ़ जाने का मन होता है—अस्तु विदेशीराज्य के शासन में खातिरखाह अपनी तरक्की केवल गवर्नमेण्ट के द्वारा चाहना हमारी भूल है—पुलिस को यमराज का एजेण्ट न मान इसे जानमाल की हिफाज़त का महकमा समझना हमारी भूल है—विद्यमान मूर्खताक्रान्त हिन्दूसमाज और हिन्दूधर्म की बेहूदगी में विना कुछ अदल बदल और उलट फेर किये इस जर्जर जीर्णारण्य समान बुड्ढेभारत में हिन्दू जाति की उन्नति चाहना हमारी भूल है—विलाइत से लौटे हुये नई रोशनी

वालों की जैसी बानगी देखने में आई उस्से यह निष्कर्ष निकालना कि ये हमारी भावी भलाई के ब्राइस हैं भूल है—इस अंगरेज़ी राज्य में यह आशा करना कि कभी को अकाल की लहुरी बहन मँहगी से हमारा गला छुट जा यगा और हम फिर पहले की भांत अन्नपूर्णा के कृपापात्र होंगे हमारी भूल है—बाल्यविवाह की प्रचलित कुरीति के रहते हम को अपने बल वीर्य सत्व स्वाधीनता तेज पौरुष और श्री के वृद्धि की इच्छा करना भूल है—मुसल्मानों के मुकाबिले हमारी तथा उर्दू के मुकाबिले हिन्दी की गवर्नमेण्ट विशेष चाह करेगी समझना हमारी निपट भूल है—दक्षिणा की आशा को विना लात मारे हमारे ब्राह्मण कुल इस कदर्य हीनदशा से उठ किसी गिनती में आवेंगे मानना निरी भूल हैं—कर्मचारियों की हां में हां मिलाने वाले म्युनिसिपल कमिश्नरों को अपना हित चाहने वाला समझना भूल है—विलाइत की सस्ती स्वच्छ और चटकीली चीज़ों के रहते देश की निपट मँहगी भद्दी गँवारू चीज़ों की कदर की आशा भूल है इसी तरह चुंगी के रहते व्यौपार में सरसब्ज़ी और मुनाफा भूल है इत्यादि-भूल गिनाते २ डर लगती है कहीं भूलनी आदत न पड़ जाय तो एडिटरी किस माथे करेंगे इस्से बस—

साहित्यजन समाज के चित्त का चित्र पट है ॥

किसी देश का इतिहास पढ़ने से केवल बाहरी हालमात्र हम उस देश के रहने वालों का जान सक्ते हैं किन्तु लोगों के आभ्यन्तरिकभाव हमे साहित्य ही के द्वारा परिस्फुट हो सक्ते हैं—हमारे पुराने आर्यों का साहित्य वेद है—उस समय आर्यों की शैशवावस्था थी बालकों के समान जिन के चित्त का निष्कपट व्यवहार भोलापन उदारभाव हमारे वेद के साहित्य को एक अद्भुत पवित्र मिठास "माधुर्य" प्रदान करता है—वेद जिन महापुरुषों के हृदय का विकाश था वे लोग मनु पराशर की भांत समाज के आभ्यन्तरिक झगड़े वर्णविवेक आदि में न फस समाज की उन्नति या अवनति की तरह २ की चिन्ता में नहीं पड़े थे—न कणाद कपिल के समान अपने २ शास्त्र के मूल भूत बीजसूत्रों को आगे कर प्राकृतिकपदार्थों के तत्व की छान में दिन रात डूबे रहते थे—न कालिदास भवभूति श्रीहर्ष आदि कवियों के सम्प्रदाय अनुसार वे लोग कामिनी के विभ्रमविलास और लावण्य लीलालहरी में गोते मार २ प्रमत्त

हुये थे—प्रातःकाल उदितोन्मुख सूर्य देव की प्रतिमा देख उन के सीधे सादे चित्त ने बिना कुछ विशेष छान बीन किये इसे अज्ञात और अजेयशक्ति समझ और इसके द्वारा अनेक प्रकार का उपकार देख कोकिलरव से प्रकृति के प्रभात वन्दना का साम गाने लगे—जल भार नत श्यामला मेघमाला का नवीन सौन्दर्य का उदय देख पुलकित तनु हो कृतज्ञता सूचक उपहार की भांत विद्युत् और मेघ के यशोगान स्वरूप स्तोत्र का पाठ करने लगे—वायु जब प्रबल बेग से बहने लगा तो उसे भी एक ईश्वरीयशक्ति समझ उसके शान्त करने को वायु की स्तुति करने लगे—इसी तरह अग्नि की देदीप्यमान ज्वाला जल में प्रसाद और शैत्यगुण की उत्कर्षता देख अग्नि और वरुण के यश गाने लगे कभी को बन की दूर्वाआदि औषधियां सोमलताआदि गुल्म और वल्लीय को सकल रसायनिक गुणों से भरी पुरी देख उन्ही की प्रशंसा का सूक्तपाठ करने लगे इत्यादि वेही अब ऋक और साम की पावन ऋचाये हो गईं —उस समय अब के समान राजकीय अत्याचार कुछ न था इसी से वेद का साहित्य राजनीति की कुटिल उक्ति युक्तियों से मलिन नहीं हुआ—हाल के आये आर्यों की नूतन ग्रथितसमाज संस्थापन में सब तरह की अपूर्णता थी सही पर सब का निर्वाह मन मानता भरपूर होता जाता था हमारे माफिक वे नहीं मुह खाते पेट ललाते थे न तब विलाइत का कहीं नाम निशान था कि फसल कटने के पहले ही गेहूं के भाव की निर्ख कायम हो जाती थी—थोंड़े परिश्रय में इच्छित से बहुत अधिक पदार्थ भारत की अनुपम उर्वरा पृथ्वी से सहज ही में मिलजाता था तपोवन की शीतलच्छाया और शान्त निर्वैर आश्रमों में सुखासीन हो अतीन्द्रिय और मनुष्य शक्ति वाह्य पदार्थों के विचार में तत्पर रहे और संसार के चलाने वाले ऐसे २ नियमों का सूत्रपात कर गये कि जिन्हे सोच समझ इस समय के नवाभ्युत्थान वाले सभ्यों की अकिल हैरान होती है—सकल सायेंस विज्ञान और दर्शन चातुरी का निजोड़ उनकी वैदिक ऋचाओं को एक २ खण्ड में भरा हुआ है—आपस में एक का दूसरे के साथ अब का सा कुटिल बनावटी बर्त्ताव न था इस लिये उन के साहित्य में भी कृत्रिम भक्ति प्रेम कपटवृत्ति और बनावट या चुनाचुनी ने नहीं स्थान पाया—उन आर्यों का धर्म तथा उन के धर्म के उत्तम सिद्धान्त अब के समान गला घोटने वाले न थे सब के साथ सब का खान पान द्वारा

परस्पर दृढ सहानुभूति थी कुढंगियों की चलाई सखरी निखरी की कुचाल का तब कहीं ज़िकिर भी न था चौका और आठ कनौजिये नौ चूल्हों का नाम भी तब कोई नहीं जानता था न उन के बीच दंभ के रूप अबकेसे धर्मध्वजी उपज खड़े थे—सिधाई भोलापन उदारभाव तो उन के साहित्य के एक २ अक्षर से टपक रहा है—एक वार महात्मा ईसा एक छोटे बालक को गोद में बैठाय अपने शिष्यों की ओर इशारा कर बोले जो इन छोटे बालकों के समान सुकुमार मति भोला न बनै उसका स्वर्ग के राज्य में कुछ अधिकार नहीं है—हम भी कहते हैं जो सरल चित्त वेदभाषी इन आर्यों कि नाईं पद २ में ईश्वर की भय रख प्राकृतिक पदार्थों के सौन्दर्य पर मोहित हो बालकों के समान अकुटिल न हो उसका स्वर्ग के राज्य में प्रवेश अति दुष्कर है—उन्हीं प्राकृतिक पदार्थों का अनुशीलन करते २ इन आर्यों को ईश्वर के सम्बन्ध में जो २ भाव उदय हुये वे ही सब एक नये प्रकार का साहित्य उपनिषद् के नाम से कह लाये—जब इन आर्यों की समाज अधिक बढ़ी और लोगों की रीति नीति और वर्त्ताव में विभिन्नता होती गई तब सबों को ऐक्यता के सूत्र में बद्ध रखने को जिस्में लोग अपने २ गुणकर्म से चल विचल हो सामाजिक नियमों को किसी प्रकार की हानि न पहुंचावें इस लिये स्मृतियों के साहित्य का जन्म हुआ—मनु अत्रि हारीत विष्णु याज्ञवल्क्य आदि १८ टकसाली स्मृतिकार हुये उपरान्त और स्मृतिकार भी शामिल किये गये अब इस समय २८ या ३० मुख्य स्मृतिकार समझे जाते हैं उन्में पराशर सब से अन्तिम हैं—ये स्मृतिकार अपने २ नाम की संहिता बनाय विविध प्रकार के राजनैतिक सामाजिक और धर्मसम्बन्धी नियमों के सूत्रपात कर गये इन्हीं के समकालीन अक्षपाद कणाद गौतम कपिल पतञ्जलि जैमिनि और व्यास ६ और हुये जिन्हों ने अपने सोचने का परिणाम दर्शनशास्त्रों की बुनियाद डाला—सिवा इन के बहुत से और भी सूत्रकार वार्त्तिककार वृत्तिकार पाणिनि व्याडि शाकटायन शाकल्य भरत आदि हुये जिन की प्रतिष्ठा उन स्मृतिकारों के बराबर की दी जाती है—यहां तक जो साहित्य हुये यद्यपि वेद की भाषा का अनुकरण बराबर उन्में होता गया परन्तु नित्य २ उन की भाषा अधिक २ सरल कोमल और परिस्कृत होती गई तथापि इन की गणना वैदिकभाषा ही में की जाती

है इन स्मृति और आर्षग्रन्थों की भाषाओं को हम वैदिक भाषा और आधुनिक संस्कृत के बीच की भाषा कह सक्ते हैं—यह बात कात्यायन आश्वलायन सांख्यायन लाट्यायन गोभिल इत्यादि गृह्यकारों की भाषा से साफ २ प्रगट है—यद्यपि इन गृह्यकारों ने अपने २ गृह्यसूत्र ठीक उसी ढंग पर रचे हैं कि वे सूत्र वैदिकमन्त्रों के एक २ टुकड़े मालूम हों और वैदिक इबारत के साथ उन्हें मिला देने का बहुत प्रयत्न और चेष्टा की गई है पर इन के अक्षरों में वह ओजस्विता और गाम्भीर्य नहीं है जैसा वैदिकमन्त्रों के अक्षरों में है इससे जल्द उघर उठते हैं—जो हो पर आधुनिक पण्डितों के बनाये ग्रन्थों के समान काठिन्य दीर्घसमास बनावट और स्वार्थपरता उन के अक्षरों में कहीं से नहीं झलकती—यही बात मन्त्र और ब्राह्मणभाग में भी देखी जाती है ब्राह्मण की इबारत संहिता की इबारत से बहुत सहज में उघर उठती है—और यह सब स्मृतियां सूत्र और गृह्यसूत्र तथा उपनिषद् एक ही समय में बने हों सो नहीं—उपनिषदों में तापिनी जैसा गोपालतापिनी, रामतापिनी, नृसिंहतापिनी और १० टकसाली उपनिषदों के अलावे बाकी उपनिषद्, कई एक स्मृतियां जैसा मेधातिथि पराशर, सूत्रों में शाण्डिल्य भक्तिसूत्र और जैमिनिहोरासूत्र तो बहुत ही हाल की तसनीफ हैं अल्लहोपनिषद् प्रतिमोपनिषद् गोपीचन्दनोपनिषद् अब तक बनते ही जाते हैं—

अब से संस्कृत के दो खण्ड होते चले—वेद और लोक पाणिनि जिन के सूत्र संस्कृत पाठियों को कामधेनु का काम दे रहे हैं और जिन से वैदिक और लौकिक सब प्रयोग सिद्ध होते हैं उन में वेद और लोक की निर्ख अच्छी तरह की गई है—"सर्वत्र विभाषागोः" इस सूत्र की वृत्ति में दीक्षित ने "सर्वत्र" का अर्थ स्पस्ट कर दिया है "लोके वेदे चेङ्गतस्गोरतिषाप्रकृतिभावः" इससे स्पस्ट है कि लोक की भाषा वेद से अलग कर दी गई—बहुत से वैदिक शब्द ऐसे हैं जिन का प्रयोग अब सर्वथा उठा दिया गया कितने शब्द ऐसे हैं जिन का अर्थ वेद में और कुछ है और लोक में और कुछ—इसमे सन्देह नहीं वेद के समय से अब डेढ़ुड़े के लगभग नये शब्द संस्कृत में प्रचलित किये गये और ऐसे २ कोश और अभिधान तथा नये २ व्याकरण छन्द और अलङ्कार प्रचलित किये गये जिस्का वेद की रूखी और अपुष्ट भाषा के समय किसी को खयाल

न था—पर साथ ही साथ मित और आप्त होना भाषा के इन दो गुणों में अन्तर पड़ता गया इन सब बातों से स्पष्ट होता है कि संस्कृत किसी समय प्रचलित भाषा थी जो लोगों के बोलचाल के वर्त्ताव में लाई गई थी—वेद के उपरान्त रामायण और महाभारत साहित्य के बड़े अंग समझे गये—रामायण के समय भारत की सभ्यता का प्रेमोच्छास परिप्लावित नूतन यौवन था किन्तु महाभारत के समय भारतीय सभ्यता क्षतिग्रस्त हो वार्द्धक्यभाव को पहुंच गई थी—रामायण के प्रधानपुरुष रघुकुलावतंस मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र थे और भारत के प्रधानपुरुष बुद्धि की तीक्ष्णता के खरधार कूट युद्ध विशारद भगवान् वासुदेव श्रीकृष्ण या उन के हाथ की काठ की पुतली युधिष्ठिर अर्जुन भीम इत्यादि थे—रामायण के समय से भारत के समय में लोगों के हृद्गतभाव में कितना अन्तर हो गया था कि रामायण में दो प्रतिद्वन्दी भाई इस बात के लिये विवाद कर रहे थे कि यह समस्त राज्य और राज्य सिंहासन हमारा नहीं है यह सब तुम्हरे ही हाथ में रहे—अन्त को रामचन्द्र ने भरत को विवाद में पराभूत कर समस्त साम्राज्य उन के हस्तगत कर आप आनन्द निर्भर चित्त हो सस्त्रीक वनवासी हुये—वही भारत में दो दायाद भाई इस बात के लिये कलह करने पर सन्नद्ध हुये कि जितने में सुई का अग्रभाग ढँक जाय उतनी पृथ्वी भी विना युद्ध के न देंगे—"सूच्यग्रेण दास्यामि विना युद्धे न केशव"—परिणाम में एक दायद दूसरे पर जय लाभ कर भाई की जंघा में गदाघात और मस्तक पर पदाघात से वध कर भाई के राज्य सिंहासन पर आरूढ़ हो सुख में फूल अनेक प्रकारके यज्ञ और दान में प्रवृत्त हुये—रामायण और भारत के आचार्य कविकुल गुरु वाल्मीकि और व्यास थे पृथ्वी के और २ देशोंमें इन के समान या इन से बढ़ कर कवि न हुये हों सो नहीं है—यूनान देश में होमर रूम देश में वरजिल इटली में डेंटी इंगलेण्ड में चासर और मिलटन अपनी २ असाधारण प्रतिभा से मनुष्य जाति का गौरव बढ़ाने में कुछ कम न थे परन्तु विचित्र कल्पना और प्रकृति के यथार्थ अनुकरण में चिरन्तन वृद्ध वाल्मीकि के समान होमर तथा मिलटन किसी अंश में नहीं बढ़ने पाये जिन्हों ने अपनी कविता के प्रधाननायक रामचन्द्र में वह गुण दिखलाये जो किसी कवि को कभी सूझा ही नहीं और जगत् भर को उत्तमोत्तम शिक्षा प्राप्त करने की कसौटी है—यह वाल्मीकि ही के काव्य का असर है कि उतने

बैठते गिरते पड़ते सोते जागते रामचन्द्र हिन्दूमात्र की जिह्वा का एक सहारा होगये हैं—जो राम आर्य जाति के प्राण, दया के अमृतसागर, गाम्भीर्य और पौरुषदर्प की मानो सजीव प्रतिमा हैं प्रीति और समभाव के कारण हैं महानीच जाति को भी गले से लगाते थे और लङ्केश्वर से प्रबल प्रतिद्वन्दी शत्रु को भी जिन्हों ने कभी तृण नहीं समझा—स्वर्णमण्डित सिंहासन और तपोवन की पर्णकुटी जिन्हें एकसी सुखद थी—जिन का स्मितपूर्वाभाषित्व जिन के मुखाम्बुज की मुग्धमाधुरी और मीठी बोल पर मोहित हो दण्डकारण्य की असभ्य जाति वाले भी जिन्हें वाल्मीकि ने रीछ और बानर स्थापित किया है उन का दास अपने को माना—धन्य वाल्मीकि के मन मानस की अद्भुत कल्पना शक्ति जिस्में ऐसे २ स्वर्णकमल प्रस्फुटित हुये—अलौकिक भ्रातृ स्नेह पिता की आज्ञा का प्रतिपालन जानकी का पातिव्रत्य इत्यादि अनेक गुण रामायण ही की प्रबन्धकल्पना का विकाश है—

अब व्यास की अमृत सदृश कविता के अनुपम गुण और सौन्दर्य की समालोचना में यह अवश्य कहने के योग्य है कि द्यूत ऐश्वर्य मद आदि दुर्गुण जिन्मे मनुष्य का फस जाना बहुत सहज है उन की बुराइयों को किस ढंग से बांधा यह उन्हीं की प्रतिभा से हो सका—जो हो व्यास और वाल्मीकि के साहित्य की उपमा किसी दूसरे कवि के साहित्य के साथ निस्सन्देह छोटे मुह बड़ी बात है—शत्रु संहार और निज कार्यसाधन निमित्त व्यास ने भारत में जो २ उपदेश दिये हैं और राजनीति की काट व्यौंत जैसी २ दिखाई है उसे सुन बिस्मार्क सरीखे इस समय राजनीति के मर्म कुशल राजपुरुषों की अकिल चरने चली जाती है—इस्से निश्चय होता है कि प्रभुत्व सम्पादन स्वार्थ साधन और प्रवञ्चना परवश भारत उस समय कहां तक उदारभाव सहवेदना आदि उत्तम गुणों से विमुख हो गया था—युधिष्ठिर धर्म के अवतार और सत्यवादी प्रसिद्ध हैं पर उन का सच्चबोलना निज कार्यसाधन समय सब खुल गया "अश्वत्थामो हतः नरो वा कुंजरो वा,,—महाभारत के युद्ध के उपरान्त भारत और का और हो गया इस्की दशा के परिवर्त्तन के साथ ही साथ यहां के साहित्य में भी बड़ी अदल बदल हो गई—इसी समय बौद्धों का आधिपत्य यहां बढ़ा ये सब वेद और ब्राह्मणों के बड़े विरोधी थे यहां तक वेद का अनिष्ट इन्हों ने किया कि वेद की भाषा संस्कृत थी इस लिये संस्कृत को बिगाड़

प्राकृती भाषा इन लोगों ने जारी किया तब से संस्कृत सर्वसाधारण के बोल चाल की भाषा न रही.—फिर भी संस्कृत भाषी उस समय बहुत अधिक थे जिन्हों ने इस नई चली हुई भाषा को प्राकृती नाम दिया अर्थात् सर्वसाधारण पामर या नीचों की भाषा—इसी से नाटकों में नीचपात्र या स्त्रियों की बोली प्राकृत में होती है उत्तम पात्रों की बोल चाल सब संस्कृत में—ऐसा मालूम होता है कि इस प्राकृती की भी उस समय बड़ी उन्नति की गई बहुत से काव्य और दूसरे २ ग्रन्थ इस्में रचे गये वररुचि ने इस्का व्याकरण बनाय इसे एक बड़े कांइदे की भाषा कर डाला मागधी अर्द्धमागधी शौरसेनी महाराष्ट्री पैशाची इत्यादि १८ भेद इस्के साहित्यदर्पणकार ने लिखा है—जैन और बौद्ध तो यहां तक हिमाकत करते हैं कि वेद के बराबर की भाषा इसे सिद्ध करते हैं—अपनी पवित्र भाषा इसी को मानते हैं उन के उपास्यदेव तीर्थंकरों की स्तुति और जीवनचरित्र आदि सब इसी में हैं—गुणाढ्य कवि का आर्या-वद्ध लाख श्लोक का वृहत् कथा सरित्सागर नाम का ग्रन्थ इसी प्राकृति ही में है—शालिवाहन सप्तसती आदि कई एक उत्तम उक्ति युक्ति के ग्रन्थ और भी प्राकृती में मिलते हैं—नन्द और चन्द्रगुप्त के समय इस भाषा की बड़ी उन्नति की गई—जो हो जैसा उर्दू इस समय हिन्दी पर कुल्हाड़ा चला रही है और उसे उभड़ने नहीं देती ऐसा ही प्राकृती ने संस्कृत का सत्या-नाश उस समय किया—संस्कृत यद्यपि बोल चाल की भाषा इस समय न रह गई थी पर हर एक विषय के ग्रन्थ इस्में एक से एक चढ़ बढ़ कर बनते गये और साहित्य की तो यहां तक तरक्की की गई कि कालिदास आदि कवियों की उक्ति युक्ति के मुकाबिले वेद का भट्टा और रूखा साहित्य अत्यन्त फीका मालूम होता है—कालिदास की एक उपमा पर और भवभूति भारवि श्रीहर्ष बाण की एक छटा पर वेद के उमदा से उमदा सूक्त जिन में हमारे पुराने आर्यों ने सरपच साहित्य की बड़ी भारी कारीगरी दिखलाया है न्यौछावर हैं—संस्कृत के साहित्य के लिये विक्रमादित्य का समय "अगस्टनपीरियड,, कहलाता है अर्थात् उस समय संस्कृत को जहां तक परिस्कृत होना सम्भव था अपनी पूर्ण सीमा तक पहुंच गई थी—यद्यपि भारवि माघ मयूर प्रभृति कई एक उत्तम कवि धाराधिपति भोजराज और उन के उपरान्त भी जगन्नाथ पण्डितराज तक बराबर होते ही गये किन्तु संस्कृत के परिस्कृत होने

की सामग्री उस समय तक पूरी हो चुकी थी और २ कवि और सुप्रसिद्ध ग्रन्थकारों ने इसके भंडार को अलबत्ता पुष्ट किया—भोज का समय तो यहां तक कविता की उन्नति का था कि एक २ श्लोकों का असंख्य इनाम राजाभोज देते थे और वेद का साहित्य इस समय यहां तक दब गया था कि छान्दस मूर्ख की एक पदवी रक्खी गई थी केवल पाठमात्र वेद जानने वाले छान्दस कहलाते थे और वे निरे मूर्ख होते आये—बौद्धों के उच्छेद के उपरान्त एक ज़माना पुराण के साहित्य का भी हिन्दुस्तान में हुआ जिस समय बहुत से पुराण उपराण और संहितायें दो ही चार सौ वर्ष के हेर फेर में रचे गये और अब हम लोगों में जो धर्मशिक्षा समाजशिक्षा और रीति नीति प्रचलित है वह सब शुद्ध वैदिक एक भी नहीं है थोड़े से ऐसे लोग हैं जो अपने को स्मार्त मानते हैं उन्में तो अलबत्ता अधिकांश वेदोक्त कर्म का यत्किञ्चित् प्रचार पाया जाता है सो भी केवल नाममात्र को पुराण उस्में भी बीच २ आ घुसा है—हमारी विद्यमान छिन्नभिन्नदशा जिस्के कारण हज़ार २ चेष्टा करने पर भी जातीयता हमारे में आती ही नहीं यह सब पुराण ही की कृपा है जब तक शुद्ध वैदिक साहित्य हम लोगों में प्रचलित था तब तक जातीयता के दृढ़ नियमों में ज़रा भी अन्तर नहीं होने पाया था—पुराणों के साहित्य के प्रचार से एक बड़ा लाभ भी यह हुआ कि वेद के समय की बहुत सी घिनौनी रीति और रसमें जिन के नाम लेने से भी हम घिना उठते हैं और वही सब घिनौनी रीतें और महाघोर हिंसायें जिस्से बौद्धों के लिये अपना अहिंसा धर्म प्रचार करने को सुविधा हुआ था पुराणकर्त्ताओं ने उसे उठाय शुद्ध सात्विकी धर्म को विशेष स्थापित किया अनेक मतमतान्तर का प्रचार भी पुराणों ही की करतूत है—पुराण वाले तो पंचायतन पूजन ही तक से सन्तोष कर रह गये तन्त्रों ने बड़ा संहार किया और अनेक क्षुद्र देवता भैरों काली डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत तक की पूजन फैलाया—मद्य मांस का प्रचार जिसे बौद्धों ने तमोगुणी और मलिन समझ उठा दिया था उसे इन तांत्रिकों ने फिर बहाल किया पर बल वीर्य की पुष्टता जो मांसाहार का प्रधानलाभ था उससे फ़िर भी वञ्चित ही रहे—निःसन्देह तांत्रिकों की कृपा न होती तो हिन्दुस्तान ऐसा जल्द न डूबता—वेद के अधिकारी शुद्ध ब्राह्मण के लिये तांत्रिक दीक्षा या तन्त्र मन्त्र अतिनिषिद्ध हैं और ब्राह्मण तन्त्र के पठन पाठन से

बहुत जल्द पतित हो सक्ता है यह जो किसी स्मृतिकार का मत है हमें भी कुछ २ सयुक्तिक मालूम होता है—बहुत से पुराण तन्त्रों के बाद बने उन्में भी तांत्रिकों का सिद्धान्त पुष्ट किया गया—

हम ऊपर लिख आये हैं हिन्दू जाति में कौमीयत के छिन्न भिन्न होने का सूत्रपात्र पुराणों के द्वारा हुआ और तन्त्रों ने उसे बहुत ही बहुत पुष्ट किया—शैव शाक्त वैष्णव जैन बौद्ध इत्यादि अनेक जुदे २ फिर के हो गये जिन्में इतना दृढ़ विरोध कायम हुआ कि एक दूसरे के मुह देखने के रवादार न हुये तब परस्पर का एका और सहानुभूति कहां रही जब समस्त हिन्दू जाति भर की एक वैदिकसम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी" हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते २ यहां तक खण्ड हुये कि अब तक नये २ धर्म और मत प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं—यह टुकड़े जितना वैष्णवों में अधिक हैं उतना शैव शाक्तों में नहीं और आपस में एक का दूसरे के साथ मेल और खान पान जितना कम इन्में है उतना औरों में नहीं राम के उपासक कृष्ण के उपासक से लड़ते हैं कृष्ण के उपासक रामोपासकों से इत्तिफाक नहीं रखते—कृष्णोपासकों में भी सत्यानासिन अनन्यता ऐसी आड़े आई है कि इन्में आपस ही में बड़ा खट पट लगाये रहती है—प्राकृती के उपरान्त हमारे देश के साहित्य के दो नमूने और मिलते हैं पद्मावत और पृथ्वीराज राहिसा पद्मावत की कविता में तो किसी कदर कुछ थोड़ासा रस है भी पर पृथ्वीराज राहिसा में किस बात की तारीफ है हमारी समझ में कुछ नहीं आता—प्राकृती से उतरते २ हमारी विद्यामान हिन्दी इस शकल में कैसे आई इस बात का पता अलबत्ता राहिसे से लगता है—मतमतान्तर के साथ ही साथ हमारी भाषा भी गुजराती महराठी वंगाली इत्यादि के भेद से प्रत्येक प्रान्त की जुदी २ भाषा हो गयी इन एक देशी भाषाओं में वंगाली सब से अधिक कोमल मधुर और सरस है—महराठी महाकठोर और कर्णकटु—पंजाबी निहायत भद्दी कठोर और रुखाई में उर्दू की छोटी बहन है—अब हम अपनी हिन्दी की समालोचना करते हैं इस्में सन्देह नहीं विस्तार में हिन्दी अपनी बहिनों में सब से बढ़ी है ब्रजभाषा बुन्देलखण्डी बैसवारे की भोजपुरी इत्यादि इसके कई एक अवान्तर भेद हैं—ब्रजभाषा में यद्यपि कुछ मिठास है पर यह इतनी

ज़नानी बोली है कि इस्में सिवाय शृङ्गार के दूसरा रस आ ही नहीं सक्ता—जिस बोली को कवियों ने अपने लिये चुन रक्खा है वह बुन्देलखण्ड की बोली है इस्में सब प्रकार के काव्य और सब रस समा सक्ते हैं—अपनी २ पसन्द निराली होती है "भिन्नरुचिर्हि लोकः" हमे वैसवारे की मर्दानी बोली सब से अधिक भली मालूम होती है और २ भाषा महराठी गुजराती बंगला की अपेक्षा कविता के अंश में हिन्दी का साहित्य बहुत चढ़ा हुआ है संस्कृत से कुछ ही न्यून है किन्तु गद्य रचना "प्रोज़" हिन्दी का बहुत ही कस और पोच है सिवाय एक प्रेमसागरसी दरिद्र रचना के और कुछ हुई नहीं जिसे हम इसके साहित्य के भाण्डार में शामिल करते—दूसरे उर्दू डाइन इसकी ऐसी रेढ़ मारे हुये है और ऐसा इसे गन्दी और भ्रष्ट कर रक्खा है कि शुद्ध हिन्दी तुलसी सूर इत्यादि कवियों की पद्य रचना के अतिरिक्त कहीं मिलती ही नहीं—प्रसङ्ग प्राप्त अब हमें यहां उर्दू के साहित्य की समालोचना का भी अवसर प्राप्त हुआ है किन्तु यह विषय अत्यन्त ऊब पैदा करने वाला हो गया इससे इसे यहीं समाप्त करते हैं उर्दू की समालोचना फिर कभी करेंगे—

चकास्ति योग्येन योगसङ्गमः ॥

हमे यह बात प्रकाश करते बड़ी प्रसन्नता होती है कि महाराज श्रीमान् रीवानरेश का डुमरांव की भाग्यवती राजकुमारी से पाणिग्रहण किया गया—योग्य के साथ योग्य का उपयुक्त संयोग किस अभागे के मन को सुख न उपजावेगा—ईश्वर इस युगल जोड़ी को सब भांत प्रसन्न रक्खे और राजकुमारी के सौभाग्य की वृद्धि हो—हमे यह सुन और अधिक हर्ष होता है कि हमारे रीवांपुर पुरन्दर इस समय के कुचाली नरेशों में नहीं है—इन की शिक्षा बहुत उत्तम ढंग से की गई है—पण्डित पूरनमल ऐसे श्रीमान् के सुयोग्य अध्यापक से हमे जो कुछ आशा थी वह सब भांत पूरी उतरी—अन्यान्य राज्यकुल की अपेक्षा यह घराना महाकुलीन और वंश परंपरागत शुद्ध क्षत्रिय कुल का है इस लिये महामाननीय इस उच्च कुल की श्रीवृद्धि और गौरव बढ़ता देख किस देशानुरागव्यसनी को हर्ष न होगा—रीवां के नवयुवक महाराज की शिक्षा अब तक बहुत उत्तम ढंग से की गई हम आशा करते हैं उन की शिक्षा जिस ढंग से आरम्भ की गई है उसी ढंग पर समाप्त भी की जायगी ईश्वर

सानुकूल है तो एक वह दिन भी आवेगा कि हम श्री महाराजा साहब को पूर्णविद्वान् और अत्युच्चवंश केएक मात्र अवशिष्ट नये पौधे को सब भांत हरा भरा और प्रफुल्लित देख अपने प्यासे नेत्रों को जुड़ावेंगे—आशा है कि महाराज के नवाभ्युत्थान पर प्रजागण भी वैसी ही हर्ष निर्भर होंगी जैसा रघु महाराज की प्रजा हुई थीं, " नवाभ्युत्थानदर्शिन्यो ननन्दुः सप्रजाः प्रजाः " अस्तु इस पूर्णचन्द्र की पूर्णता की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर उठाये हुये वहां के प्रधानपुरुषों से हमारा यही निवेदन है कि वे इस समय विशेष सावधान रहें जिस्में इस पूर्णचन्द्र के विकाश में किसी तरह की बाधा न पहुंचे—महाराज का अब वह समय है जिसे वयःसन्धि कहते हैं "बाल्यात्परं सोऽथवयः प्रपेदे" मनुष्य के लिये यह समय बड़ा नाज़ुक होता है इस लिये उन के पार्श्ववर्ती उन्हें ऐसे ढर्रे पर चलावें जिस्से श्रीमहाराज की देहप्रभा के साथ ही उन की कीर्त्ति साहस वीरता भी दिन २ सौगुनी अधिक बढ़ती रहे—"श्रीदीप्ती ह्री कीर्त्ती धीनीती गीः प्रीती । एषेतेद्वेद्वेतयेनमेदेवेशे—

हमारे धर्मसम्बन्धी मेलों पर गवर्नमेंट की उपेक्षा—

समय २ और स्थान २ में कुंभ आदि धर्मसम्बन्धी मेले हम लोगों के बड़े उपकार के हैं—हज़ारों आदमियों की रोटी केवल इन्हीं मेलों से चलती है—देशी चीज़ों की बिक्री जैसी इन मेलों में होती है वैसी किसी दूसरे मौकों पर नहीं—यावत् पेशे वाले इन मेलों पर अवश्य कुछ न कुछ लाभ उठाते ही हैं—तब जो बात प्रजा के हित और लाभ की है उसका मूल सेचन तो गवर्नमेंट का कर्त्तव्य कर्म है न कि बीमारी फैलने का डर दिखलाय इन मेलों को तहस नहस कर डालती है—क्यों न गवर्नमेंट मेलों में सफाई आदि का ऐसा उत्तम प्रबन्ध करे जिस्में हैज़ा इत्यादि रोगों का उपद्रव न फैलने पावे—सर्कार के पक्ष में यह बहुत ही अनुचित और एतराज़ के लायक है कि जो सब तरह की तकलीफ उठाय रेल का भारा आदि बहुतसा खर्च कर मेले के लिये आये जब दस या बारह कोस रह गया तब रोक दिये गये मिट्टी खराब न इधर के हुये न उधर के—हाल में महावारुणी के मेले पर हरिद्वार काशी तथा और २ कई तीर्थों पर ऐसा ही किया गया हमारी समझ में यह अनुचित है मेलों में किसी तरह की अड़चन सर्कार की ओर से न होना चाहियें

किन्तु मेलों का प्रबन्ध ऐसे ढंग से हुआ करे कि किसी को तकलीफ भी न पहुंचे और बीमारी भी न फैले—

सौ अजान एक सुजान

उपन्यास

१० प्रस्ताव

"योऽर्थे शुचिः स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः" यह हम अपने पाठकों को प्रगट कर चुके हैं कि हमारे इस उपन्यास के मुख्य नायक दोनो बाबू बहुत सा फिज़ूल खर्च करते २ अब संकीर्णता में आने लगे कहा है "भक्ष्यमाणो निराधानः क्षीयते हिमवानपि" संचय न किया जाय और रोज़ उस्में से ले ले कर खर्च हो तो कुबेर का खज़ाना भी नहीं ठहर सक्ता है तब बड़े सेठ हीराचन्द की संपत् कितनी और के दिन चलती—जिस तालाब में पानी का निकास सब ओर से है आता एक ओर से भी नहीं तो उसका क्या ठिकाना—बाबुओं को अब खर्च का तरद्दुद हरजून रहा करता था, और इसी चिन्ता में रहते थे कि किसी तरह कहीं से कुछ रकम हाथ लगे अस्तु—

अनन्तपुर में नन्दू के मकान से सटा हुआ आधा कच्चा आधा पक्का एक दूसरा घर था चूना पोती कबर के माफिक यह घर बाहर से तो बहुत ही रंगा चुंगा और साफ था पर भीतर से निपट मैला गन्दा और सब ओर से गिरहर था—अब थोड़ा इस घर के रहने वाले का भी परिचय बिना दिये हमारे प्रबन्ध की शृङ्खला टूटती है—यह घर बाहर से जो ऐसा रंगाचुंगा और भीतर प्रमसान सा शून्यागार था इसका कुल और ही मतलब था और वह मतलब आप को तभी हल होगा जब आप मालिक मकान से पूरे परिचित हो जांयगे मालिक मकान महाशय को आप कोई साधारण जन न समझ रखिये—कितना अंगेज़ी और उस्तादी में यह बड़े २ गुरुओं का भी गुरू था अनन्तपुर के सब लोग इसे उस्ताद जी कहा करते थे—हमारे पढ़ने वाले नन्दू का चाल-चलन और शीलस्वभाव से भरपूर परिचित हो चुके हैं पर वह चालाकी में इसके पसंगे में भी न था—नन्दू इसे चचा कहा भी करता था सकलगुणवरिष्ठ हकीकत में यह चचा कहलाने लायक था—नाम इसका बुद्धदास था और जैन-धर्मपालन में अपने को बड़े २ श्रावकों का भी आचार्य समझता था—खास

लेने और छोड़ने में ज़ीवहिंसा न हो इस लिये रातो दिन मुह पर ढांटा बांधे रहता था पर चित्त में कहीं दया का लेश भी न था—पानी चार वार छान कर पीता था पर दूसरे की थाती समूची की समूची निगल जाता था डकार तक न आती थी—दिन में चार वार मन्दर में जाता था पर मन से यही बिसूरा करता था किस भांत कहीं से बिना मेहनत बेतरद्दुद डल का डल रूपया हाथ लग जाय—साथही यह भी याद रखने लायक है कि आप निवँसी थे आगे पीछे आप के कोई न था रुपया इतने थे कि चार रूपये महीने में गुज़र करते थे—ज़ाहिरा में दस पाच रूपया पास रख घड़ी दो घड़ी के लिये टाट बिछाय बाज़ार में जा बैठते थे और पैसों की शराफी अपना पेशा प्रगट किये थे पर छिपी आमदनी इस्की कई तरह की ऐसी थी कि उस्का हाल कोई २ बिरले ही जानते थे अनन्तपुर में तो नन्दू ऐसे दो ही एक इस्के चेले थे बरन लखनऊ के चालाक और उस्तादों में इस्की धूम थी—भेख छिपाये दो एक परदेसी इस्के फन के मुश्ताक टिके ही रहते थे—यह अपने को कीमियांगर प्रसिद्ध किये था पढ़ा लिखा एक अक्षर न था पर खुशनवीसी में ईश्वर की देन उस्पर थी मानो इस फन को यह माके पेट से ले उतरा था—किसी भाषा का कैसा ही बदखत या खुशखत लेख हो यह जैसे का तैसा उतार देता था दस रुपये सैकड़ा इस्की उजरत मुकर्रर थी अर्थात् दस्तावेज़ वगैरह सौ रुपये का हो तो उस्की बनवाई यह दस रुपया लेता था दो सौ का हो तो बीस योंही सौ सौ पर दस बढ़ता जाता था—और बहुत से फन इसे याद थे पर उन सबों के ज़िकिर से हमे यहां कोई प्रयोजन नहीं है—बुढ्ढदास शौकीन और तरहदारों में भी अपना औवल दरजा मानता था उमर इस्की ४० के उपर आगई थी दांत मुह पर एक भी बाकी न बचे थे तौभी पोपले और खोड़हे मुह में पान की बीड़ियां जमाय सुरमें की धज्जियों से आंख रंग केसरिया चन्दन का एक छोटा सा बिन्दा माथे पर लगाय चुननदार बालावर अंगा लखनऊ के बारीक काम की टोपी या कभी २ लट्टूदार पगड़ी बांध जब बाहर निकलता था तो मानो व्रज का कंधैया ही अपने को समझता था--होठ बड़े मोटे रंग ऐसा काला मानों हबश देश की पैदाइश का कोई आदमी हो—आंख घुच्चू सी गाल चुचका डील ठेंगना बाल खिचड़ी उस्पर जुल्फ—गरदन कोतह मुह घोड़े का सा लम्बा—शैतानी और फसाद तथा काइयांपन इस्के एक २ अंग से बरसंता

था यह विष की गांठ अनन्तपुर का रहने वाला न था थोड़े दिनों से यहां आकर बसा था—कहा है—"समानशीलव्यसनेषु सख्यम्" नन्दू और यह दोनों एक से शीलसुभाव के थे और नन्दू की इससे पटती भी खूब थी इस लिये अचरज क्या कि उसी ने इसे कहीं बाहर से बुलाकर अपने घर के पास ही टिका लिया था—इसे नन्दू चचा कहता था इससे मालूम होता है कदाचित कोई दूर का रिश्ता भी इससे रहा हो—नन्दू भी तो चालांकी में एकता इस बात से इसे और टिकाये था कि इसके दूसरा कोई और था ही नहीं अन्त को इस वज्र कृपण का धन सिवा मेरे कौन पासक्ता है—जो हो एक रात को नन्दू ने आ कर इसका किवाड़ खटखटाया इस ने चुप के से आय किवाड़ खोल दिया और दोनों भीतर चले गये और किवाड़ बन्दकर लिया—नन्दू बोला—चचा बड़े बाबू ने आज आप को उसी मामिले के लिये याद किया है—आप की उजरत कौड़ी ऊपर दिलवाऊंगा—यह बोला उजरत की कौनसी बात है मुझे तुम से या बाबू से किसी तरह पर इनकार नहीं है—

हम इन छत्री हैं और सेठ जी के नमक से यह देह पली है अब तक किसी दूसरे का द्वार नहीं देखा और अब ५० वर्ष के हुये थोड़े दिन की दस पांच वर्ष की ज़िन्दगी और है क्यों नमक हलाली करें और कहां दर२ मारे फिरें इससे सब अन्याय देखते हैं पर ज़बान पर एक बात नहीं लाते—न जानिये कहां२ के चौपटहे आय२ हमारे बाबुओं को मिले हैं कि इन के मत में पड़ दोनों बाबू खराबखस्ता हो रहे हैं—वह पण्डित बेचारा चन्दू जो कैसा भला मानुस है उसकी एक भी नहीं चलने पाती बड़े सेठ के सामने जिन का कहीं नाम निशान भी न था सो अब इस दरबार में प्रधान हो बैठे हैं—तबै काहे न सब चौपट हो बड़े सेठ के सामने की अब एकौ बात देखने में नहीं आती है—दान पुन तो सेठ के घर से उड़ी गया जहां दिन रात सौंध बैरागी दूर २ के पण्डितन और बाह्मन घेरे रहते थे वहां या तो नन्दू अस चौपटहा को सब बात में अगुआ देखते हैं या दिन रात भांड़ अगतिये अरथक कत्थक रण्डी मुण्डी नचनिये गवइये घेरे रहते हैं—जो हो हमें क्या जैसा मालिक कहै सो करना हमें बाबू ने कहा है नन्दू को बुला लाओ बहुत अच्छा पर हमें इसकी सूरत नहीं सोहाती क्या करें नौकर ठहरे करना ही पड़ता है लाचारी उस दिन आधी रात को लौट के घर आये घोड़े पर चढ़े२ जाहीं रह गई आज फिर वही सब कागज निकले हैं—ईश्वर कुशल करे—शेषमग्रे—

हित की बातों का निचोड़—

चित्तविशुद्धिर्भक्त्या भवति—
चित्त की शुद्धि भक्ति से होती है—
ईश्वरभजनं हितमखिलानाम्—
ईश्वर का भजन सब के लिये हित है—
निद्राहारौ नियमात् सुखदौ—
निद्रा और आहार नियम के साथ सुखदायी है—
दीनजनेषु दयाऽतिशुभदा—
दीन मनुष्य पर दया कल्याण करने वाली है—
कलयति ऋद्धिं यदैकमत्यम्—
सम्पत्ति तभी होती है जब एक मत है—
अपण्डितसङ्गोऽभ्युदयं विभङ्गः—
मूर्ख का साथ तरक्की का विरोधी है—
कोमलवचनं हरतिप्रकोपम्—
कोमलवचन क्रोध को दूर करता है—
अवगत विद्यमपि त्यजदुष्टम्—
विद्या पढ़ा भी दुष्ट हो तो उसे त्याग दो—
क्रूरात् क्रूरा गुण निन्दास्यात्—
गुण की निन्दा महाक्रूर कर्म है—
सङ्कटरोगौषधमिह सहनम्—
सङ्कट महारोग की औषधी सहन करना है—
यादृक् सङ्गस्तादृक् च्छीलम्—
जैसी संगत वैसी बुद्धि—
नम्रत्वेनोन्नतिमधिगच्छ—
नम्रता से अपनी उन्नति चाहो—
यत्प्रारब्धं तत्कुरु पूर्त्तिम्—
जिसे प्रारम्भ किया उसे पूरा करो—
प्राप्ते शोके पश्य सुतास्यम्—
शोक प्राप्त होने पर पुत्र का मुख देख उसे दूर करो—
धीरो भूत्वा द्रावय शत्रुम्—
धीरता के साथ शत्रु का नाश करो—

अवतामाथ जनानादरतः—
अनाथों का पालन आदर के साथ करो—
अतिपरिचयादवज्ञा भवति—
अत्यन्त परिचय से अवज्ञा होती है—
पतिशुश्रूषा भार्याभूषा—
पति की सेवा स्त्री के लिये ज़ेवर है—
मितभाषित्वं क्षपयति दोषम्—
कम बोलनी दोष को कम करती है—
विनतिर्विद्वज्जनता प्रकृतिः—
नम्र होना विद्वानों का स्वभाव है—
सम्पति दर्पाभावः श्लाघ्यः—
सम्पत् के समय अभिमान का न होना प्रशंसनीय है—
मौनं गूहति मौढ्यं सदसि—
सभा में चुप रहना मूर्खता को छिपाये रहता है—
निन्दति लोको नितरां लुब्धम्—
लोभी की लोग बहुत निन्दा करते हैं—
मा कुरु यत्ने मान्द्यं किमपि—
यत्न करने में ढिलाई मत करो—
सत्याद्विजयोऽसत्यान्नाशः—
सत्य से विजय झूठ से नाश होता है—
अल्पा विद्याऽहंकृति जननी—
थोड़ी विद्या अभिमान पैदा करती है—
स्मृत्वा निधनं साधयकीर्तिम्—
एक दिन मर जायंगे यह याद कर यश कमाओ—
अफलं वित्तमदत्तमभुक्तम्—
जो धन न दिया गया न खाया गया वह निष्फल है—
कर्म समस्त कुरु सोत्साहम्—
अपने सब काम उत्साह के साथ करो—
ज्यायान् भ्राता जनक समानः
जेठा भाई पिता तुल्य है—
व्यथ्योलापि वचो त्यसमंजसम्—

व्यर्थ बकने वाले का बचन बेठौर ठेकाने का होता है–
विदुषां सर्वे मित्राणिस्युः–
पढ़े लिखे के सबी मित्र होते हैं–
विश्वास्ताय विधेहि हितानि–
जो अपने विश्वास पर है उस का हित ही करो–
पार्श्वस्थाग्नि समाः प्रतिपक्षाः—
अपने बगल का शत्रु अग्नि के समान है–
गोप्यं बचनं गोप्यं मनसि–
जो बात छिपाने योग्य है उसे अपने मन में रक्खो–
अक्षरशून्योऽन्धो भवति–
निरक्षर अन्धा है–"सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः"
त्यजसहवासं दुर्जन संघैः–
दुर्जन के समूह में रहना बरकाओ—
तृष्णाधिक्याद्दोषा विविधाः
अधिकतृष्णा से बहुत तरह के दोष पैदा होते हैं–
कुसुमसुगन्धेः ख्यातिः सुरभिः–
फूल की महक से यश की सुगन्धि श्रेष्ठ है–
मरणं स्याच्चेद्गङ्गातीरे–
मरन हो तो गङ्गा के तट पर–
पुत्रोत्कर्षः पित्रोर्महिमा–
पुत्र में उत्कर्ष पिता की महिमा है–
धनयोगश्चेत्यागः कार्यः
धन पास हो तो दान करै–
जनस्तुति योग्यो जगति मनस्वी–
मनस्वी जगत् में प्रशंसा के योग्य है–
बहुभाषाविद् बहुजनमान्यः
बहुत भाषा जानने वाला बहुत लोगों से सन्मान पाता है–
चतुरः कर्मसु जयमेत्याशु–
जो काम करनेमें चतुर हैं वो जय पाते हैं–
वाग्दौश्शील्याद्व्रजति निकर्षम्–
कठोर वचन बोलने वाले की अवज्ञा होती है–

त्यज काठिन्यं भज कारुण्यम्—
कड़ाई छोड़ो नरमी गहो—
मतिरेवस्यान्निधेर्विशिष्टा—
बुद्धि असंख्य धन से भी बढ़ कर है—
वित्ताद्भवति विशिष्टाविद्या—
विद्या धन से बढ़ कर है—
शक्तो योसौ आन्तो न स्यत्—
जो समर्थ है वह थकता नहीं—
अधमर्णत्वमपोहति गुरुताम्—
कर्जदारी प्रतिष्ठा घटाती है—

यह यद्यपि पत्र की जगह छेकने मात्र के लिये चाहो समझा जाय पर छोटे बालकों को बड़ा उपकारी है।

वाटरपइप रहते भी जल का दुर्भिक्ष ॥

इस साल यहां पानी का पइप जारी होने से धर्मशीलों ने पानी की इकरा त समझ पौसला देना बन्द कर दिया है इसलिये दो पहर को जिस समय सूर्य अपनी महाखरतर किरणों से तपना आरंभ करते हैं शहर भर मे पानी का अभाव छा जाता है क्योंकि पइप केवल दस बजे तक पानी देता है और शाम को चार बजे के उपरान्त—इस लिये जितने ज़ोर में नियत समय पर चलता है उसका आठवा हिस्सा भी दस से चार बजे तक पइप का जो रकायम रहे तो दोपहर के समय पानी का इस प्रकार दुर्भिक्ष न हो—दूसरी बात यह है कि पइप में पानी सात बजे के करीब आना शुरू होता है और दस के लग भग बन्द हो जाता है गरमी के दिनों में लोगों के सब काम नहाना धोना इत्यादि ९ बजे के भीतर होजाते हैं इस लिये उचित है कि गरमी के दिनों में ५ बजे तड़के से पाइप में पानी आ जाया करे—और शाम को एक तो बहुत ही थोड़ी देर के लिये पइप चलता है उसमें भी उसी समय नालियों का धोना शुरू होता है बड़े मुह का पाइप ठौर २ लगा दिया जाता है और सब पानी उसी में खिच जाता है आध घंटे तक लोग बैठे २ झुराया करते हैं यह भी बड़े तकलीफ का बाइस है इसकी भी कोई ऐसी उपाय हो जिसमें लोगों के घर में जो पइप लिये गये हैं उनमें कुछ थोड़ा पानी तब भी आता रहे तो किसी के आराम में बाधा न पहुंचे ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलकारणम्—

स्वास्थ्यरक्षा

यों तो मिथ्याप्रशंसकों के न जानिये कितने विज्ञापन छपा-करते हैं और उन से धोखा खाकर लोग सच्च कहने वाले का भी विश्वास मन से ढीला कर देते हैं—किन्तु मैं उन धोखे-बाजों में नहीं हूं—ऊपर लिखी हुई यह छोटी सी पुस्तक अवश्य नाम के अनुसार गुण रखती है—यदि आप स्वास्थ्यरक्षा और रोग से बचना चाहते हों तो अवश्य इस पुस्तक का संग्रह करें—यह पुस्तक मिस्टर फिशर साहब बहादुर कमिशनर गढ़वाल की आज्ञा-नुसार तथा मिस्टर मेकडालन सुपररिन्टेंडेंट ज़िलह तराई की पूरी सहायता से डाक्टर बाबू भोलानाथ असिस्टेंट सिविलसर-जन काशीपुर ने सरल भाषा में सर्वसाधारण के उपकारार्थ रची—विद्यार्थियों को यह पुस्तक बडी उपयोगी है मूल्य मै डाकमह-सूल ॥-) है—

पं०—मुकुन्दराम शर्मा

काशीपुर—तराई

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० १५ सं०-८-९-१० } प्रयाग { एप्रिल-मे-जून १८९२

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १५ संख्या ८–९–१० | एप्रिल–मे–जून सन् १८९२ ई०

इण्डिया कौन्सिलबिल और मिस्टर ग्लाडस्टोन ॥

कितने दिनों से यह इण्डिया कौंसिलबिल पेश है जो कुछ उम्मेद हम लोग करते चले आये उसका मिलना पार्लियामेण्ट के विद्यमान् मेम्बरों से किसी तरह पर सम्भव नहीं मालूम होता इससे तो बेहतर यही था कि हम लोग सब भांत इस झूठी उम्मेद से महरूम रहते तो अपने को अधिक प्रसन्न समझते इससे क्या लाभ हुआ कि रोटी मांगने के लिये गये और मिला पत्थर उस्पर भी हम से कहा जाता है कि तुम तन मन से निहाल हो महाराणी का शुकरिया अदा करो—यह किसी से छिपा नहीं है कि हम लोगों ने दो बात मांगी थी एक एलक्शन अर्थात् प्रजा की ओर से चुन कर लाटसाहब की कानून बनाने वाली कौंसिल के मेम्बर किये जांय दूसरे कौंसिल के मेम्बर बढ़ाये जांय—बड़े २ राजनीति कुशल स्टेट्समेन ऐसे २ वाइसराय जैसे लार्ड-डफरिन इत्यादि लोगों ने पांच छः वर्ष सोचने के उपरान्त यह तै किया कि १० से १६ तक कौंसिल के मेम्बर बढ़ाये जांय—हमारी समझ से तो जैसे १०

वैसे १६ वैसे १०० और १००० क्या अब वे १६ किसी दूसरी तरह से आवेंगे प्रजा को इस्से क्या लाभ हुआ—वही चुनने वाले जो पहिले १० स्वार्थी मूर्ख अमीर गदहों मेंसे चुन लेते थे अब वैसे ही १० की जगह १६ बैठा दिये जांयगे जो राजनीति के भारी से भारी प्रश्नों पर सूक्ष्म विचार की बारीकियां और वाद-विवाद सुनते ही सहम उठेंगे कान पूछ फटकारना भी बिल्कुल भूल बैठे २ पागुर करते रहेंगे—सोचने की बात है ऐसों का एक वृन्द का वृन्द कौंसिल की मेम्बरी में भरती हुआ भी तो क्या लाभ—इस्में सन्देह नहीं गवर्नमेंटके राजपुरुषों को नीति की कुटिल कारीगरी में जैसा लोगों ने प्रसिद्ध कर रक्खा है वह बहुत ही ठीक है—हिन्दुस्तान की सहनशील सीधी और शान्त प्रजा के साथ भी वही अपनी कुटिलनीति "डिप्लोमेसी" काम में लाते हैं और यहां की अन्धी प्रजा उन के कुटिल भावार्थ के कुछ मर्म न जान उसे सीधे तौर से ग्रहण कर लेती है—अण्डर सेक्रेटरी मिस्टर करज़न कहते हैं गवर्नमेण्ट चुन कर मेम्बर होने की बुनियाद "इलेक्टिवप्रिंसिपल" तो कायम करती है किन्तु इस्के लिये कोई काइदा नहीं बनाती—न जानिये मिस्टर ग्लाडस्टोन ने इस बात को क्या समझा जो इस्के खण्डन के बदले कन्सर्वेटिव दल वालों से मिल बजे तो अब निश्चय हुआ "ऊधो काले सब ही बुरे" लिबरल या कन्सर्वेटिव हमारे लिये दोनों एक से हैं—हम लोग बड़ी उम्मेद कर रहे थे कि लिबरल दल वाले जब फिर अपनी पूरी ताकत में आवेंगे तब अवश्यमेव हमारा बड़ा ही उपकार होगा सो वह सब आशा कोसों दूर हट गई लिबरलदल के बहाल होने के पूर्व ही मिस्टर ग्लाडस्टोन ने ज़हर उगल दिया—

मिस्टर ग्लाडस्टोन ने पार्लियामेण्ट की इस राय को पुष्ट किया कि इन किताब गवर्नरजेनरल और दूसरे २ अफसरान हिन्द की लियाकत इनसाफ और समझ पर छोड़ दिया जाय तो इस्से हमारा क्या फाइदा हुआ गवर्नर-जेनरल के मन में जो आता है सो करते हैं और करेंगे तब हम लोगों ने जो हौसआफकामन्स में अपने उजर पेश किये सो किस लिये—जब गवर्नरजेनरल तथा दूसरे २ अफसरों की कारवाई से अपने प्रयोजन की सिद्धि न देखा तब हौसआफकामन्स में गये—मिस्टर ग्लाडस्टन से बुद्धिमान् का यह कहना किसी तरह अच्छा नहीं मालूम होता जब कि उन की इस राय पर सहानुभूति है

कि २८ करोड़ मनुष्यों का बनना विगड़ना केवल एक आदमी के हाथ में रख दिया जाय—इस्से निश्चय होता है कि हौसआफकामन्स अपना काम जैसा वह अंगरेज़ों के साथ कर रहा है हिन्दुस्तानियों के साथ कुछ भी न करेगा—जब कि ग्लाडस्टन ऐसे बड़े लोग इस तरह की बातें कहते हैं कि हिंदुस्तान के बारे में लिबरल और कंसर्वेटिव दोनों फरीक मिल कर राय ज़ाहिर करें—जब कि विलाइत के छोटे २ मामिलों में दोनों फरीक वाले अलग २ अपनी राय ज़ाहिर करते हैं और बड़ी २ बहश और वादविवाद के द्वारा एक २ बात के पुरज़े २ उड़ादेते हैं पर हिन्दुस्तान के भारी से भारी मामिलों में बेपरवाही के साथ जो कुछ मन में आवे ते करदे—हम लोग तो सब सहे लेते हैं और इसी सहने ही के लिये सृजे गये हैं किन्तु ईश्वर की महापार्लियामेण्ट में वे अवश्य इस्के जबाब दिह होंगे—

पबलिक सरविसकमिशन और स्टेअचुरी सिविलसरविस की बरबादी

विदित हो कि हम अपने पहिले एक आर्टिकल में पबलिक सरविस कमिशन के बारे में लिख चुके हैं कि सेक्रेटरी आफस्टेट का डिसपेच आने पर हम फिर अपना मन्तव्य प्रकाश करेंगे सो अब वह डिसपेच आया और उस्में केवल पश्चिमोत्तर और अवधि के लिये २१ ओहदे जो पहिले विलाइत के पास किये सिविलियनों के हाथ में थे अब प्रोविंशयल सिविलसरविस वाले याने डिपुटीकलट्टरों के दिये जायंगे—इसी तरह पर बंगाल मन्द्राज बम्बई आदि में भी दिया गया है—इस २१ में रमेजिस्ट्रेटी ४ सेशन्सजज्जी ९ ज्वाइण्ट मेजिस्ट्रेटी और ६ दूसरे २ ओहदे हिन्दुस्तानियों को मिलैं गे—अस्तु जो कुछमिला अच्छा है किन्तु विना यह कहे हम से न रहा जायगा कि अभी करज़न साहब ने किस मुख से कहा था कि छठवा हिस्सा कलट्टरी का और कुल का तीसरा हिस्सा सेशनजज्जी का केवल हिन्दुस्तानियों ही को मिलेगा—खयाल करने की बात है कि पश्चिमोत्तर और अवध के सब मिला कर कुल ४९ ज़िले होते हैं जिस्में कम से कम ३६ जज्ज तो अवश्यही होंगे उस्में केवल ४ जज्जी हिन्दुस्तानीको मिली तब बजाय एक तिहाई के नवां हिस्सा मिला तो यह समझा जा सक्ता है कि करज़न साहब पार्लियामेण्ट में कहते हैं कि एक तिहाई दी जायगी और देते हैं नवां हिस्सा या तो करज़न साहब ने भूल किया या पार्लि-

यामेण्ट के मेम्बरों को समझाने के लिये कहते कुछ और हैं और हमारे सीधे सादे हिन्दुस्तानियों को देते कुछ और हैं—

हमारे भाई स्टेचुअरी सिविलसरविस वाले जिन पर अब ग्रहण लगा चाहता है रहम के लायक हैं—ये सब पहले पहल १८७० में पार्लियामेण्ट के हुकुम के अनुसार १८७९ में लार्डलिटन के समय ९ वर्ष के उपरान्त स्टेचुअरी सिविलसरवेंट किये गये और इन से कहा गया कि तुम्हारी बराबरी कम्पिटीशन वाले विलाइत के पास किये सिविलियनों के साथ होगी—इस हुकुम के अनुसार बड़े २ उच्च कुल वाले राजपुत्रों ने जैसा कुंवर भारतसिंह प्रभृति इस्में नाम लिखाया और अब तक सब मिलाय १५ आदमी इन प्रान्तों में स्टेचुअरी ओहदे के हैं और इन में से कई एक जैसा कुंवर भारतसिंह बलिया और बिजनौर के कायम मुकाम डिसट्रिक्ट मेजिस्ट्रेट भी कई महीने तक रह चुके हैं—अस्तु १० वर्ष तक ये बेचारे ज्वाइण्ट मेजिस्ट्रेट और असिसटेण्ट कलट्टरी का सब काम अच्छी तरह करते आये—अब परिणाम को न सोचने वाली हमारी गवर्नमेण्ट ने चट उन से यह कह दिया कि तुम लोग अब प्रोविन्शियल सरविस अर्थात् डिपुटी कलट्टरी पर फिर लौट जाओ—एक बार इन बेचारों ने प्रोविन्शियलसरविस पर लौट आने से इनकार भी किया तौ भी गवर्नमेण्ट उन से कह रही है कि तुम इसे अवश्य स्वीकार करो—हम नहीं समझते इन बेचारों का क्या अपराध है कि १० वर्ष के उपरान्त बिना कोई कुसूर अब फिर डिपुटी कलट्टरी पर उतार दिये जांय—नजीबाबाद के बलवे में जिन की योग्यता की भरपूर कसौटी हो चुकी है उन से यह पद की हीनता क्योंकर सही जायगी—हमें तो गवर्नमेण्ट के इस नाटक का यह मतलब मालूम होता है कि इन पन्द्रहों को सिविलसरविस से ढ़केल डिपुटी कलट्टर करदें और इसी २१ ओहदों को जो सेक्रेटरी आफस्टेट से मिले हैं उन्में फिर इन्हीं १५ को बैठा दें तो वास्तव में मानो छ ही नये ओहदे सिविलसरविस के हिन्दुस्तानियों को मिले—इस सब चालाकी से गवर्नमेंट कुछ फाइदा न उठावे गी वरन प्रजा के बीच जो पढ़े लिखे हैं उन के मन में सर्कार की ओर से बहुत बुरे २ खयाल जमेंगे—लोगों के दिल टूट जायंगे तो अपने २ उहदे की कारगुज़ारी इमानदारी और दृढ़ राजभक्ति के साथ काहेको कोई करेगा—दूसरे गवर्नमेंट

के इन्साफ और खराई में सदा के लिये एक बड़ा भारी धब्बा लग जायगा गवर्नमेण्ट को निरी झूठी और स्वार्थपरायण समझ अब काहे को कोई उस्का विश्वास करेगा जो हिन्दुस्तान में ब्रिटिशराज्य के लिये बड़ा ही हानिकारक है—मेरी अल्पबुद्धि में तो यही आता है कि ये १५ स्टेचुअरी ओहदे जैसे के तैसे बने रहैं २१ नये और डिपुटी कलट्टरों में से सिविलसरवेण्ट कर दिये जांय—और वे सब देश के बड़े २ बुद्धिमान् विद्वान् पुरुष जो डिपुटी कलट्टरी में कलट्टरों की खुशामद और नाज़बरदारी से चिन करते हैं इस लिये ऐसे २ सर्कारी ओहदों पर होना पसन्द नहीं करते वे लोग भी सिविलसरविस में नाम लिखाय इस महकमें को चौगुना चमका दें और प्रजा और गवर्नमेण्ट दोनों को वास्तविक लाभ पहुंचावें—

पुलिस कमिशन का परिणाम ॥

यह पुलिस कमिशन जिस्की धूम पारसाल से मची है जिस्के प्रिसिडेण्ट मिस्टर केन और सेक्रेटरी मिस्टर पोर्टर थे गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया से तै हो कर अब सेक्रेटरी आफ स्टेट के पास भेजा गया है—उम्मेद है ६ महीने के भीतर सब तै हो कर नया ढंग पुलीस का ज़हूर में आवेगा—यद्यपि इस्की रिपोर्ट अभी हमारी नज़रों से नहीं गुज़री पर पायोनियर में इस्का कुछ हाल लिखा गया है—सब के पहले कमिशन को हम धन्यावाद देते हैं कि कमिशन वालों ने बड़े यत्न से अन्धेरे में जाय उन बातों को टटोल कर निकाला जो गवर्नमेण्ट को कभी न मालूम होती अगर कमिशन इस कदर मेहनत न करती—ज़िलों २ में जाकर एक २ आदमियों से जिसने जो कुछ कहा सब की सुना और जिन लोगों ने अपना नाम बतलाने से छिपाया उन का नाम भी नहीं प्रगट किया—हाल में जो रिपोर्ट पुलिस कमिशन की पायोनियर में प्रगट हुई है उस्में पुलिस के अत्याचार को बड़े धूमधाम के साथ ज़ाहिर किया है जो बातें नाटकों में करके दिखाने लायक हैं और रागरागिनियों में गाई जाती हैं उन सब अत्याचारों को छन्दोबद्ध "व्यालैड" कर डाला है—

यह बात भी कमिशन वालों को मालूम हुई है कि पुलिस महाभयंकर प्रेतों से भी अधिक भयावह प्रजा के बीच समझी जाती है—बहुत से लोग जो कमिशन में पुलिस के अत्याचार की गवाही देने को आये कहा भी कि

हम लोग इस बात से डरते हैं कि हम पर कोई बुराई न आवे इस्से प्रगट है कि पुलिश वाले जब चाहें तब किसी भले मानुस की इज़्ज़त ले डालें—इन बातों से कमिशन के मेम्बरों के दिल पर इस्का भरपूर असर करा दिया गया है कि पुलिस के महकमे में कभी तरक्की न होगी जब तक इस्के बढ़े हुये इखतियारात बजाय बढ़ाने के घटाये न जांय बल्कि बिल्कुल खीच लिये जांय—इन बातों से गवर्नमेंट को पूरी तरह पर साबित हो गया है कि पुलिस हम लोगों पर किस तरह अत्याचार कर रही है—हम लोग भी शंकित से हैं कि इस लिखने से कहीं हम पर भी कोई आपत्ति न आ जाय—

कमिशन ने पुलिस की कारर्वाई में निम्न लिखित संशोधन और अदल बदल सोचा है—रोज़नामचा खास बन्द कर दिया जाय ज़ाबिता फौज़दारी का दफा १६० में रद्दबदल की जाय जिस्के बमूजिब पुलिस को इखतियार है कि हर एक आदमी को बिना किसी लिहाज़ के किसी मामिले में जिस्को कि वह तहकीकात कर रही है तलब कर सक्ती है—पुलिस के रूबरू अगर झूठी गवाही दी जाय तो उस्पर मुकद्दमा न कायम हो—चोरी गिरिफ्तार होने पर चोरी के माल की फिहिरिश्त तत्काल मेजिस्टरेट के पास रवाना हो जाया करे—चोरी के मुकद्दमों में तहकीकात का ढंग बदल जाना चाहिये—छोटी २ चोरी में मुजरिम की ज़मानत का होना—गाय बैल आदि चौपायों के बिकने पर रजिस्टरी का होना इत्यादि—

हमने अभी पुलिस कमिशन की रिपोर्ट नहीं पढ़ा इस लिये उन के रद्द बदल के नये कायदों पर अपनी खास राय नहीं दे सक्ते पर जो कुछ पायोनियर में संक्षेप में लिखा गया उस्से प्रगट है कि पुलिस के इस संशोधन से प्रजा को बहुत कुछ लाभ होगा—जैसा कि चोरी के छोटे २ मुकद्दमे जिस्में मालिक जिस्का माल चोरी हुआ है मुकद्दमे को नहीं चलाया चाहता पर पुलिस ज़बरदस्ती उस्को कचहरी में लाय तंग करती है—छोटे २ चोरी के मुकद्दमों में ज़मानत का होना इस्से यह लाभ है कि कोई बेकुसूर आदमी को पुलिस झूठ सच कहवाय फांस लेती थी और हवालात में रखती थी जिस्से उस बेकुसूर को मौका अपना इज़हार बदलने का नहीं मिलता था यदि अब ज़मानत पर छूट जायगा तो मेजिस्टरेट के सामने सच २ इज़हार देगा और

बहुत से बेकुसूर जो जेल का कष्ट भुगत रहे हैं अब न भुगतैंगे और न अब पुलिस को झूठे मुकद्दमे बनाने को मिलैंगे इत्यादि अनेक लाभ हैं—जैसा पायोनियर की राय है कि सिविलियनों की तरह पुलीस के महकमे के बड़े २ ओहदे वाले टटके बिलाइत से भरती हो आया करें इससे कुछ लाभ न होगा वरन सिविलसरविस की तरह पुलिसभी एक तो यों ही बदनाम है और भी अधिक बदनाम होगी—देश की चाल चलन और रंग ढंग से बिलकुल नावाकिफ नये २ छोकड़े भरती हो कर आवेंगे तो उन से क्या आशा की जा सक्ती है कि वे हम लोगों को सुख पहुंचावें—यदि कमिशन के कहने के अनुसार कियागया तो पुलिस में संशोधन क्या वरन चौगुनी विपत् बढ़ी—उमदा तरीका इसका यही होगा कि सुयोग्य ग्रेज्युएट पुलिस के ऊंचे ओहदों पर नियत किये जांय और इलाहाबाद में इसका एक कालेज स्थापित हो इस कालेज में ज़ाबिता, फौज़दारी, ताज़ीरातहिन्द, कानूनशहादत, पुलिस की कारगुज़ारी कवायद इत्यादि सिखाई जावें हिन्दी अवश्य इन के इमतिहान में रहनी चाहिये उर्दू पुलिस के मुहकमे से उठा दी जाय जिस्में जाल बनाने का मौका पुलिस वालों को न मिले इत्यादि पुलिससंशोधन के बारे में हम अपनी विशेष अनुमति फिर प्रकाश करेंगे—

हमारी देश की कृषि और गवर्नमेंट की बेपरवाही—

कुछ दिन हुये डाक्टर वाल्कर सेक्रेटरी आफ स्टेट की ओर से हिन्दुस्तान की कृषि के देखने को आये थे उन की अब रिपोर्ट सेक्रेटरी आफ स्टेट के पास पहुंच गई जिस्का कुछ संक्षेप वृत्तान्त ६ मई के पायोनियर में छपा है—हम यह नहीं कह सक्ते कि डाक्टर वाल्कर "किमिस्ट" रसायनविद्या में निपुण होने के कारण कृषि के विषय को नहीं समझ सके या सेक्रेटरी आफ स्टेट के इशारे से जिन्हें यही मंजूर है कि जैसा चला जाता है सो चला जाय "न सांप मरै न लाठी टूटै" क्यों हम अपना खर्च बढ़ावैं हमें भूमि का कर मिलने से प्रयोजन सो मिले ही गा चाहो प्रजा कितना ही भूखों मरै तहसीली के चपरासी गाय बैल नीलाम कराय कौड़ी २ चुकता करी लें गे—जब कोई

किसी तरह की शिकायत करेगा तो दिखा देंगे कि खिराज मिलता जाता है हिन्दुस्तान की प्रजा सब तरह पर खुश खुर्रम है—लार्डम्यो जो खुद किसान थे बहुत कुछ लिखापढ़ी करने के बाद खेती का एक नया महकमा यहां खुलवाया पर स्टेट सेक्रेटरी ने कृषि और वाणिज्य का एक महकमा बड़े २ सिविलियनों के मातहत रक्खा जिन्हों ने कानूनगो और पटवारियों से हिसाब किताब ठीक रखना और मुकर्रर तारीख पर भूमि का कर वसूल करना अपना काम समझा जिस्का नतीजा यह हुआ कि यहां की खेती में आज १५ वर्ष बाद भी कुछ तरक्की न हुई—यदि बजाय इन सिविलियनों के वे लोग जो इस्में निपुण हों रक्खे जाते तो इस महकमे की कारगुज़ारी मेंनिस्सन्देह अच्छा फल लगता—मन्दराज में इस्का एक ही कालेज स्थापित किया गया जिस्के लाभ वहां के मनुष्यों को मालूम हो रहे हैं—डाक्टर बाल्कर ने यह सब देखने भालने के उपरान्त भी कुछ ऐसा ही बरायनामाअपना मन्तव्य प्रकाश किया—

यदि खेती सम्बन्धी बातें अलग २ लिखी जांय और कुल हिन्दुस्तान की खेती की एक सारांश समालोचना की जाय तो यही प्रगट होगा कि यहां के बाशिन्दों में १०० में ९५ अपनी जीविका केवल खेती को समझते हैं और जहां की पैदाबरी से आज दिन विलायत तथा दूसरे २ मुल्क अपना भोजना च्छादन तथा जीविका कर रहे हैं उस्की ओर से गवर्नमेण्ट का इतना निरपेक्ष होना कितने हानि की बात है—

इस समय इस विषय को हम ४ भाग में विभक्त करते हैं—खेतों की जुताई और हल—बैलों की रक्षा—खेती के औज़ार—किसान और मज़दूर—जुताई के बारे में डाक्टर बाल्कर ने कुछ नहीं लिखा पर डाक्टर राबर्टसन जो सुपरिन्टेण्डेंट सर्कारी भूमि मन्दराज के हैं इस्पर बहुत कुछ अपना मत प्रगट कर चुके हैं—उन की राय है कि जब तक बहुत अच्छी तरह हल चलाय के बीज न बोया जायगा तब तक पेड़ कृषिविनाशक उपद्रवों से नहीं बच सक्ता कम पानी बरसा तो सूख जायगा अधिक वृष्टि हुई तो बह जायगा हवा चली तो पेड़ गिर जायगा—खाद के बारे में डाक्टर बाल्कर ने अच्छा लिखा है उन की राय है कि गाय और बैल का गोबर जो जलाने के काम में आता है न जलाया जाय बल्कि सब का सब खेतों में छोड़ा जाय तो खेतों के लिये उमदा

खाद हो—गवर्नमेंट रोज़बरोज़ "फारेस्टडिपार्टमेंट,, जंगल के महकमे में कड़ाई करती जाती है लकड़ी मंहगी होती जाती है गरीब किसानों को लकड़ी जलाने को नहीं मिलती तो लाचार हो जिसे वे अपने खाद के काम में लाते उन गोबर इत्यादि को जलाते हैं—हड्डी जो खाद के लिये बड़ी उमदा है सो भी बराबर बिलाइत ढोई चली जाती है—बैलों के लिये उफतादा ज़मीन हर एक मौज़ों में छुटी रहना चाहिये और जो ऐसी ज़मीन पड़ी हों गवर्नमेंट उसका महसूल घटा दे—सर्कार एक २ इंच ज़मीन का भरपूर कस के महसूल चुकता करा लेती है तो किसान बेचारे बैलों के लिये उफाता ज़मीन कहां से लावें—इस समय जो पृथ्वी कभी नहीं जोती बोई जाती थी सो भी खेत कर ली गई तौभी सर्कारी देन मुशकिल से पटता है गवर्नमेंट की ओर से बैलों की तरक्की करना कैसा बल्कि कमसरियट की कृपा से सर्कारी फौज के पोषण निमित्त देश में उन की संख्या प्रतिवर्ष घटती ही जाती है—जो बच रहे हैं उन्हे कृश क्षीण और दुर्बल देख यही कहने का मन होता है कि शरम और धिक्कार है ऐसे प्रबन्ध और समय को—अब किसान और मज़दूरों की दशा देखते हैं तो गवर्नमेंट ने उन्हे यहां तक मुहताज़ कर रक्खा है कि बेचारे आप क्या खांय बैलों को क्या खिलावैं जब खाने को भरपूर पेट भर नहीं मिलता तो नये किस्म का हल कहां से खरीद सक्ते हैं—अस्तु सदा के लिये चिरस्थायी दुर्भिक्ष के ऐसे समय जब यहां गल्ले की गिरानी प्रतिवर्ष बढ़ती ही जाती है गवर्नमेंट को चाहिये कि सब तरह की निठुराई और स्वार्थपरतात्याग दया की मूर्त्ति बन उदारभाव ग्रहण करे—जिन २ बातों से किसानों को पीड़ा पहुंचती है उन्हे त्याग करै और सब के ऊपर तो यही कहा जायगा कि भूमिसम्बन्धी कर घटावे—तभी इस देश की अकिंचन प्रजा का निर्वाह है नहीं तो गेहूं प्रतिवर्ष जैसा घटता ही आता है उससे यह निश्चय है कि ५ वर्ष में गेहूं रुपये का ८ सेर या ६ सेर अवश्य बिके गा—पारसाल गेहूं फसल पर १६ सेर का बिका था इस साल १४ के आगे नहीं बढ़ा या तो बिलाइत गेहूं का लदना बन्द किया जाय नहीं तो कर घटाया जाय तभी भलाई है—यह तो कुशल है फिर भी हम ईश्वर की अनुग्रह कहें गे कि इधर तीन चार वर्षों से जब से अमरिका ने इंगलेंड को गेहूं देना बिल्कुल बन्द कर दिया तब से बर्षा एक तरह पर होती ही जाती है अनावृष्टि हुई भी तो किसी एक प्रान्त में वहां रेल की

कृपा से जल्द अन्न ढो जाता है महादुर्भिक्ष का क्लेश प्रजा को नहीं सहना पड़ता—ईश्वर न करे कि कोई ऐसा विकराल समय आ पड़े कि एक साल दो साल वृष्टि न हो जैसा अभी बत्तीस के साल हो चुका है तब नहीं जानते कि हमारे देश के कई करोड़ आदमी क्या खा कर जियें गे—क्योंकि प्रतिवर्ष जो कुछ पैदा होता है विलायत खिंच जाता है अन्न की तरी रहने नहीं पाती—अभी बत्तीस के साल के दुर्भिक्ष में जब मंदराज में ५ सेर का चना विकता था पंजाब में अन्न की इतनी तरी रही कि अमृतसर में ५६ सेर और ६० सेर का चना विका अब यदि कहीं ऐसा हुआ तो हम लोगों का क्या हाल होगा यह कौन जान सक्ता है—इस्से बढ़ कर निठुराई और क्या होगी कि अपने फायदे के खयाल से करोड़ों मनुष्यों के प्राण हरण में ज़रा भी शंका या आगा पीछा मन में न लाना धिक् स्वार्थ—यदि गवर्नमेंट को सच २ मंजूर हो कि हिन्दुस्तान की प्रजा कंठगत प्राण होने पर भी हर तरह का क्लेश भुगतकर किसी तरह जीती रहे तो अवश्य भूमिसंबन्धी कर घटावे और गेहूं का भेजना विलाइत बन्द करावे नहीं तो किसी तरह पर हमारी रक्षा की कोई आशा नहीं है—गेहूं के साथ ही साथ हमारा प्राण भी खिचा जाता है इस्में कुछ भी झूठ नहीं है—

फलित ज्योतिष कितना और कहां तक माननीय है ॥

यदि यह मान भी लिया जाय कि पहले समय से अब संस्कृतविद्या का प्रचार विशेष है तो साथ ही इस्के यह अवश्य कहा जायगा कि जो कुछ प्रचार इस समय है वह सर्वथा हानिकारक और निस्सार है—मूल ग्रन्थों का पढ़ना पढ़ाना कहीं नाम को भी नहीं देखा जाता खुराफात अलबत्ता बहुत कुछ बढ़ रहा है—ऐसे निस्सार विद्या वालों से विद्याहीन अच्छे, क्योंकि जहां चार पांच वाक्य विलोम और उलटे एक ही विषय के मिलें तहां उन की बुद्धि कुछ ऐसे चक्कर में पड़ जाती है कि उन्हें यही बोध होने लगता है कि या तो यह ग्रन्थ ही ठीक नहीं है या यह विद्या ही झूठ है—देखने में विरुद्ध उन वाक्यों की एक वाक्यता करने का शऊर तो रहा नहीं मूलग्रन्थ तक पहुंच न ठहरी तब उन के बुद्धि का भ्रम क्योंकर दूर हो—

पहले ज्योतिष विद्या के तीनों स्कन्ध अच्छी तरह पढ़े पढ़ाये जाते थे अब न पहले के बहुत से ग्रन्थ मिलते हैं और न कोई फलित ज्योतिष अच्छी तरह जानता है—जो लोग इस्के तत्त्व को जानते थे वे स्वार्थपरायण स्पर्द्धा बुद्धि या आपस के विरोध के कारण अपने साथ ही लिये चले गये पर किसी को वह तत्त्व बताया नहीं—अब जो ग्रन्थ मिलते हैं वे अधिक से अधिक ६०० या ७०० वर्ष के ऊपर के कोई भी नहीं हैं और इधर पांच सात सौ वर्ष भारत की जैसी मूर्खता अविचार नासमझी और भ्रष्टता का हुआ वैसा पहले कभी न था—इसी अन्धेज़माने में धूर्त लोगों ने पुराण तंत्र और ज्योतिष तथा धर्मशास्त्र के नाम से मनमाना ऊटपटांग गढ़ गये गुमराह मूर्ख और नासमझ लोगों की रुचि और झुकावट के अनुसार जिस्में अपना फाइदा देखा वैसा ही गढ़ दिया—लोगों को सत्य बात का तत्त्व बतलाने की चेष्टा एक ने भी न किया बल्कि सत्य को उन से छिपाया और गुमराही में छोड़ते ही गये—उन के बनाये हुये इस समय के प्रचलित ग्रन्थों को देख कुछ तो हंसी आती है कुछ क्रोध लगता है—हंसी तो इस लिये आती है कि इन ग्रन्थों का बनाने वाला अवश्य कोई पागल या विक्षिप्त था क्रोध इस लिये आता है कि उस ने अवश्य यह समझ रक्खा था कि संसार में सिवाय मूर्ख के पण्डित कोई न है न होंगे इस लिये हम जो लिखे जाते हैं वह सदा के लिये बाबा वाक्यं प्रमाणं होगा फिर भी कहीं २ थोड़े से फलित ज्योतिष तथा धर्मशास्त्र आदि दूसरे २ विषय के उत्तम सच्चे और आप्त ग्रन्थ बचे रह गये जो अब तक बराबर चले आये—इस कारण बुद्धिमान् लोग कहते हैं ज्योतिष में कुछ अन्तर आ गया है परन्तु बुद्धिहीन गणित को सच्चा और फलित को सर्वथा झूठ कहते हैं ज्योतिष के दो भाग गणित और फलित इन दोनों की उपपत्ति बिना जाने हाल की नई २ तरक्की के नये २ तरीके रेल तार गेस बिजली आदि जो पहले नहीं प्रगट किये गये थे और अब अनेक आश्चर्य्य के पदार्थ उन के द्वारा देखने में आते हैं क्योंकर इन के सम्बन्ध में ज्योतिषी कुछ कह सकता है क्योंकि गेस बिजली आदि का तो कहीं फलित के ग्रन्थों में ज़िकर भी नहीं है—इस लिये उपपत्तिसहित फलित बिना जाने आधुनिक ग्रन्थों के पढ़ने पढ़ाने वाले सभ्य समाज में सिवाय निरे मूर्ख बनने के कब प्रतिष्ठा पा सक्ते हैं—

अब गणित और फलित ज्योतिष के इन दो तन्त्रों में गणित के सम्बन्ध में तो किसी को कोई तरह का शक्क हो ही नहीं सक्ता क्योंकि दो और दो चार होते हैं इस स्वयंसिद्ध सत्य से कौन इनकार कर सक्ता है—अब रहा फलित सो यह निरा परोक्षवाद होने के कारण लोगों के मन में बहुत मुशकिलों से जगह पा सक्ता है—पूर्वजन्म का कर्म जैसा उत्तम मध्यम निकृष्ट होता है उसका फल वर्त्तमान जन्म में ग्रहों के द्वारा जाना जाता है—केवल ग्रहों ही के द्वारा मनुष्य के वर्त्तमान जन्म का भूत भविष्य सब हाल जाना जाता हो नहीं ज्योतिष के ६४ अंग हैं जिस्में सामुद्रिक अहिबल स्वरोदय केरल रमल पक्षिरुतज्ञान आदि अनेक प्रकार से मनुष्य के जन्म का शुभ अशुभ फल चेष्टित इंगित आदि के द्वारा मालूम हो सक्ता है पर वे सब ग्रन्थ प्रायः अब लुप्तप्राय हो गये हैं केवल ग्रहों के द्वारा उक्त विद्या का थोड़ासा क्रम रह गया है—इस लिये इस समय हम ग्रहों ही के फल के सम्बन्ध में कुछ लिखते हैं अब यहां पर यह भी विचारने की बात है कि फलित ग्रन्थ कौन २ से प्रामाणिक हैं जिस्से ग्रहों का फल ठीक २ मिलता है—

सूर्योब्रह्मा वसिष्ठोऽत्रिर्मनुः पौलस्त्यलोमशौ ।
मरीचिरङ्गिराव्यासो नारदः शौनको भृगुः ॥
च्यवनो यवगर्गौ च कश्यपश्च पराशरः ।
आद्या अष्टादशैते स्युर्ज्योतिःशास्त्रप्रवर्त्तकाः ॥

इन उक्त १८ आचार्यों के बनाये हुये ग्रन्थ प्रामाणिक अतिसरल और विस्तारपूर्वक हैं जिस्से ग्रहों का फल भी ठीक २ मिलता है—पर अब इन आचार्यों के बनाये ग्रन्थ मिलते ही नहीं जो मिलते भी हैं सो सरल और विस्तारपूर्वक नहीं हैं—जैसा लघुपाराशरी जिस्में केवल इशारामात्र है और बृहत्पारत इस्की निहायत चुस्त और पेचीदा है—अच्छे सुबोध जानकार के बिना बतलाये कुछ भी समझ में नहीं आता—जो कुछ उमदगी उस्में है भी उसे मूर्ख ज्योतिषियों ने अबोध होने के कारण और भी नष्ट कर डाला—उन के अबोध और नासमझी की कितनी बातें हैं एक २ को यदि विस्तारपूर्वक लिखें तो यह लेख न जानिये कितना बढ़ जाय और पढ़ने वालों को अरोचक भी हो जायगी के लिये केवल दो एक बात यहां लिखी जाती है जिस्से उन की अल्पज्ञता की सब कलई खुल सक्ती है—

शुक्रो यस्य बुधो यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमोङ्गारकश्चैव स जातः कुलदीपकः ॥

केन्द्र में अर्थात् लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम भवन में जिस्के शुक्र बुध या बृहस्पति हों या दशमस्थान में मंगल हो तो वह अपने कुल को दीपक समान उजागर करने वाला होता है—हमने बहुतसी कुण्डली ऐसी पाया है कि बृहस्पति इत्यादि ग्रह महाउच्च हो कर केन्द्र में बैठे हैं किन्तु उस्के समान नराधम पामर और दरिद्र दूसरा न देखा गया हमारे ज्योतिषी जिन्हे उन २ ग्रहों का विशेष तारतम्य और बलाबल समझने का कुछ भी परिज्ञान नहीं है केवल दशमस्थान में मङ्गल बैठा हुआ देख कुलदीपक योग निश्चय कर लेते हैं—हम यह कहते हैं केन्द्र में स्थित उच्च बुध शुक्र बृहस्पति हैं पर और ग्रहों के सम्बन्ध से उच्च होने के बदले महालुच्च हो रहे हैं—ऊपर लिखे योग का ठीक २ तात्पर्य यह है—लग्न कन्या हो उस्में शुक्र बैठा हो जो धन स्थान वृष और भाग्य स्थान नवम का स्वामी है तो अकेला शुक्र पूर्ण कुलदीपक योग करेगा—ऐसा ही तुला लग्न हो उस्में बुध बैठा हो तो वह भी योगकारक होगा एवम् कर्क लग्न हो उस्में बृहस्पति हो तो वह योगकारक होगा—दशम भवन मेष का मङ्गल पञ्चमेश होकर बैठा हो तो पूर्ण कुलदीपक योग होगा—अतएव पराशर का मत है "कुजस्य कर्मनेतृत्वे प्रयुक्ताशुभकारिता । त्रिकोणस्यापि नेतृत्वे न कर्मेशत्वमात्रतः" यह एक उपलक्षण मात्र है इसी ढंग पर और २ ग्रहों को भी समझना चाहिये जैसा मकर लग्न की कुण्डली का शुक्र पञ्चम और दशम भाव का स्वामी होकर दशमें बैठा हो तो पूर्ण राजयोग करेगा । और वृष लग्न की कुण्डली का शनैश्चर नवम दशमभाव का स्वामी होकर दशमें बैठा हो तो राजयोगकारक होगा—इत्यादि

गणित का फलित से कुछ भी सरोकार नहीं है यहां तक कि जो १०० तक गिनती भी पूरी २ न जानता हो वह भी फलित में यदि समझ रखता हो तो अच्छी तरह निपुण हो सक्ता है—जैसा प्रश्नकर्त्ता से प्रश्न के समय किसी एक अङ्क का नाम लिवाय उसी अङ्क को लग्न में कायम कर बारहो घर में क्रम से एक २ घर में हाथ रखाता जाय और उस्में सूर्य आदि ९ ग्रह क्रम से रखता जाय फल जो कहा जायगा अवश्य मिलेगा इस्में पञ्चाङ्ग की भी कुछ जरूरत नहीं है और यह क्रम प्राचीन आर्षग्रन्थ का है—

एक मुहूर्त्त को छोड़ फलित के जितने खण्ड हैं सब बड़े उत्तम और एक ऐसे प्रकार की विद्या साएन्स हैं जिस्का जन्म इस हिन्दुस्तान में हुआ है और किसी समय बेहद्द तरक्की को पहुंची—इस्में मुहूर्त्त अलबत्ता धूर्त्तों की कल्पना और दूकानदारी है और देश को सत्यानाश में मिलाने का द्वार हुआ—मुहूर्त्त ग्रन्थ कोई भी प्राचीन नहीं पाये जाते मुहूर्त्तचिन्तामणि हायनरत्न शीघ्रबोध इत्यादि कई ग्रन्थ पांच ही सौ वर्ष के बीच के बने हैं—इन ग्रन्थों में सब से प्रतिष्ठित मुहूर्त्तचिन्तामणि समझा जाता है जिस्का कोई भी प्रकरण युक्ति संगत और और आर्षग्रन्थों से प्रमाणित नहीं है—यात्रा अथवा विवाह आदि के मुहूर्त्त नाड़ी वर्ग का विचार ये सब कोई भी ऐसी बात नहीं हैं जिस्में हमारे ऋषियों की सम्मति का कोई भी अच्छा पुष्ट प्रमाण मिलता हो अतएव इसे हम धूर्त्तचक्रवर्त्तियों की कल्पना के सिवाय और क्या कहें—हमे शोक इस बात पर है कि इन धूर्त्तों के प्रलाप पर हमारी समाज इतना ज़ोर देती है कि जो कुछ इन मुहूर्त्तों के विचार में तत्व है उस्पर सौ मन खाक पड़ गई है—जैसा नाड़ीवर्ग के ३६ गुण बनते हों तो कुण्डली के ग्रहों का कभी खयाल नहीं किया जाता चाहो कैसा ही प्रबल वालवैधव्य योग क्यों न हो ३६ गुण बन गये तो अवश्य ही व्याह देंगे—मुहूर्त्त और लग्न इत्यादि के विचारने में पुरोहित जी की अकिल केवल स्थूल बात पञ्चाङ्ग शुद्धि के और आगे बढ़ती ही नहीं कि उस समय के ग्रहों के बलाबल का सूक्ष्मविचार करें—इसी तरह हमारे पण्डित लोग शुक्रास्त पर बेहद्द ज़ोर देते हैं कभी सम्भव नहीं है कि ३ महीने जब तक शुक्रास्त है कोई उत्तम से उत्तम ऐसा शुभ मुहूर्त्त न आजाय जो कदाचित् शुक्रोदय के समय भी मिलना दुष्कर हो पर शुक्रास्त है या खर मास है इस लिये कैसा ही शुभ मुहूर्त्त भी क्यों न हो बिल्कुल नहूसत का मानो एक चश्मा है—मङ्गल के विचार में किसी महामूर्ख की गढन्त "लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्त्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशकः" काफी है—महाकारक मङ्गल जो कुण्डली भर में जान है पर लग्न में बैठा है इस लिये कुण्डली मङ्गली होगई विवाह न होगा—इत्यादि अनेक ऐसी २ मूर्खता और हठधर्मी की बातें समाज में चल पड़ी हैं जिस्के कारन महोज्ज्वलरत्न सदृश फलितज्योतिष सुशिक्षित समाज में निपट बदनाम हो गया

है–रत्न की वह उज्ज्वलता यदि हमारे पढ़े लिखे बुद्धिमानों के मन में प्रमाण और युक्तिपूर्वक बैठाई जाय तो अवश्य फलित ज्योतिष का कलङ्क धो जाय और यह महोपकारी विद्या सर्वग्राह्य और सर्वमान्य हो जाय—

रामनारायण ज्योतिर्विद—

वर्त्तमान हिन्दूमत पर सर अलफ्रेडलायल की सहानुभूति—

हमारे पाठकों को मालूम होगा कि सर आलफ्रेड लायल भूतपूर्व यहां के लफ्टिनेण्ट गवर्नर कोई साधारण पुरुषों में नहीं गिने जा सक्ते बरन बड़े विद्वान् और बुद्धिमान हैं–जैसी कुछ रुचि उन की यहां की प्रजा को विद्वान् करने की थी वह एक इसी बात से प्रगट है कि इलाहाबाद में नई युनिवर सिटी चलते चलाते स्थापित कर गये–जिन की स्पीचें खासकर वह स्पीच जो उन्हों ने युनिवरसिटी के स्थापन होने के समय दिया और दूसरी स्पीच वह जब लार्डडफरिन कालेज का नया मकान म्योरकालेज खोलने को आये थे–ये दोनों स्पीचें ऐसी हैं कि अंगरेज़ी का एक छात्र बारंबार उसे पढ़े तौ भी न अघाय, जिन स्पीचों से यह साफ २ प्रगट है कि यदि वे इस समय यहां होते तो पश्चिमोत्तर में विद्यावृद्धि पर अब जो २ रुकावट की कोशिशें हो रहीं हैं इलाहाबाद के स्कूल और कालेज में जैसी फीस आदि की कड़ाई होती जाती है उसे देख अवश्य तर्स खाते–बड़े हर्ष की बात है कि और २ ऊंचे कर्मचारियों की भांत यहां के सीधे सादे हिन्दू और उन के भोले और भद्दे मज़हबी ख-याल चित्त में अब तक टटके और तरोताज़ा बने हैं—जिन्हों ने अभी हाल में लण्डन की प्रसिद्ध टइनबी हाल में ऐसे श्रोताओं के बीच जो किसी खास मत के विशेष पक्षपाती नहीं हैं एक बड़ी विद्वत्ता का लेक्चर हिन्दू मत पर दिया जिस लेक्चर का अनुवाद सुन केवल हमारे यहां के दार्शनिक और वेदान्ती ही प्रसन्न न होंगे बल्कि वे लोग भी जो बालेमियां भूतप्रेत इत्यादितक को पूजते हैं—सब के पहिले लायल साहब ने यह कहा कि "हमारे भाई अंगरेज़ चाहो कितने ही दिनों तक हिन्दुस्तान में रहें पर हिन्दूमत के शुद्ध भावार्थ को अणुमात्र भी नहीं समझते"—सच है यह सर अलफ्रेडलायल ही के परिश्रम और सच्चे जी से हिन्दूमत के अनुसन्धान का परिणाम है कि आज उन्हों ने हमारे हिन्दूमत को विलाइत के विद्वानों के बीच सुगमरीति पर

समझने के लायक और मन रमाने वाला सिद्ध कर दिखाया—पहले इसके कि उक्त साहब हिन्दुओं के गूढ़ सिद्धान्तों की समालोचना करें उन्हों ने कहा कि यह एक विलक्षण गुण हिन्दूमत में देखा गया कि दुनिया भर में सब मतों से यह एक निराले ही ढंग का है जिसमें कहीं पर से नहीं प्रगट होता कि यह किसी खास आदमी का चलाया मज़हब है और इसका एक ही सिद्धान्त है—यह बात इसमें नहीं है जैसा जब हम ईसाई मुसल्मान या बौद्ध मत का नाम लेते हैं तो हम उस मत को कहते हैं जिसके कर्त्ता धर्त्ता और प्रवर्त्तक ईसा महम्मद और बुद्ध थे पर हिन्दू इस शब्द से यह कहीं पर से नहीं निकलता कि किसी विशेष व्यक्ति पीर पैगम्बर औलिया अंबिया का चलाया हुआ मत के मानने वाले—इसके मुख्य प्रवर्त्तक जाति विवेक की प्रथा और ब्राह्मणों की सर्वतो मुखी प्रभुता है अर्थात् जिस रीति नीति आराधना का क्रम धर्मसम्बन्धी विश्वास परम्परा और देवी देवताओं को ब्राह्मणों ने बतलाया है उसके मानने वाले—अब यहां पर शङ्का होती है तो क्या कारण है कि जैसा एक घना जङ्गल दीन बातिली का हिन्दुओं में है वैसा किसी दूसरे मज़हब में नहीं है—क्षुद्रदेवता दैत्य राक्षस भूत प्रेत जितना हिन्दुओं के बीच माने पूजे जाते हैं वैसा किसी दूसरे मत के मानने वालों में नहीं—इसका उत्तर लायलसाहब यों देते हैं कि जितनी इस तरह की मान मनौती और पूजायें की जाती हैं उनमतों का मनलब है यदि कोई जिज्ञासू होकर उनका अच्छी तरह पर अनुसन्धान करे—हमारी समझ में उक्त साहब का यह कहना बहुत ही सार गर्भित है—यह हमारे ही यहां के दर्शनों के सूक्ष्मविचार का परिणाम है कि उन्हों ने प्रकृति को कहां तक बड़े परिश्रम से मनन किया था और सोच कर त्रिगुण विभाग एक ऐसी सूक्ष्म बात निकाला कि यावत् स्थावर जङ्गम सृष्टिमात्र उसके बाहर कभी हो ही नहीं सक्ती—उसी त्रिगुण में जो तामसी सृष्टि वाले पामर नीच जघन्य जन अथवा दस्युगण हैं वे अपनी तामसी रुचि के अनुसार उन्हीं भूत प्रेतों ही को अपना प्रधान देवता और कर्त्ताधर्त्ता समझ आस्तिकभाव और श्रद्धा बुद्धि को पुष्ट करते हुये पूजते हैं—"प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः"—यह हिन्दूमत की इसी दृढ़ शिक्षा का फल है कि "यहां विलाइत की तरह नास्तिक्यभाव नहीं कदम जमाने पाता—यूरोप में जहां सिवाय ईसाई मत के दूसरा कोई और सहारा हई नहीं वहां

अगर ज़रा भी ईसा की सिखाई हुई बातों से मन हटा चट नास्तिक हो गये हिन्दुस्तान जो अब तक नास्तिकता और निरीश्वरवाद के अन्धड़ से बचा रहा उसका यही कारण है कि यहां अनेक तरह के देवी देवता और मत हैं अपनी बुद्धि और श्रद्धा के अनुसार जो जैसा चाहे वैसा सस्ता या दामी सौदा इस हिन्दू मत की बाज़ार से खरीद ले नास्तिक किसी तरह पर नहीं होसक्ता—सब के सिरे पर त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु महेश और उन की तीन शक्तियों का कायम करना हिन्दू मत प्रचार करने वाले ब्राह्मणों की युक्ति को उक्त साहब बहुत ही सराहते हैं—एक २ को सरजन पालन और संहार का अलग २ काम बांट देना और उसी के अनुसार सतोगुण रजोगुण तमोगुण का अलग २ गुण उन के सुपुर्द करना विश्वम्भर के महासाम्राज्य पर उस बड़े मालिक विश्वम्भर की पूर्णप्रभुता प्रगट करता है—दूसरे यह कि बार २ उन का अवतार लेकर मनुष्यों के बीच आना और अपना बड़प्पन और प्रेम मनुष्य नाट्य के द्वारा प्रगट कर देखाना ही ब्राह्मणों के बतलाए हुये इस मत के का नतीजा है कि सर्व सम्मत होने का बड़ा कारण हुआ—सत्य है यह इन्ही ब्राह्मणों की तालीम धर्म की ओर हमारे देश वालों की श्रद्धा पत्थल के समान मज़बूत हो रही है और इस नई रोशनी के ज़माने में भी हटाये नहीं हटती यह उन के चित्त को भर पूर सन्तोष देती है और सीधे अपढ़ लोगों की हरतरह की कामना को उन के विश्वास के अनुसार पूरा करता हुआ उस अप्रमेय अचिन्त्यश क्ति परात्पर विश्वव्यापी की महिमा को प्रगट करता है—

विधिनियोगकृत मरण जीवन आदि मनुष्यों की शुभ अशुभ आकृतिक घटनायें जिस्से साफ झलकता है कि कोई ऐसी शक्ति जो सब तरह हमारी पहुंच के बाहर है हम सबों को काठ की पुतली सा बनाय जैसा चाहता है वैसा नाटक किया करता है—अनेक भयङ्कर उपप्लव और प्रजा के संक्षयकारी उत्पात जिन्हें इस समय के यूरोप के अनीश्वरवादी वैज्ञानिक लोग विज्ञान-सम्बन्धी आश्चर्य घटनायें "फिनामिना" कह उन के कारण के अनुसन्धान में पागल हो रहे हैं उन्हें अपढ़ सीधा सादा हिन्दू उसी विश्वव्यापी की महिमा समझ उसकी क्रोधाग्नि शान्त करने को किसी न किसी नामरूप से उसकी आराधना और मानमनौती कर वैसी दुर्घटना आ पड़ने पर भी अपने चित्त को सन्तुष्ट कर लेता है—पर यह सब गड़बड़ी और भट्टापन जिस्से हिन्दूमत

निरा ऊटपटांग बोध होता है केवल ऊपर ही ऊपर देखा जाता है तले तक डूब कर देखिये तो आप को वह पवित्र सिद्धान्त और मज़हब के पाकीज़ा वसूल मिलेंगे जिस ने मानो विद्वान् और मूढों को एक डोरी में कस दिया हो जिस्से मननशील सुशिक्षित जन एक उत्तम निष्कर्ष निकाल सक्ते हैं—"जले-विष्णुस्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके। ज्वालमाला कुले विष्णुः सर्वं विष्णु मयं जगत्"—सम्पूर्ण चराचर विश्व उसी व्यापक परमात्मा विष्णुमय है ऊंची से ऊंची फिलासोफी और दर्शनों का निचोड़ यह सिद्धान्त हिन्दुओं ही को सूझा जिस्का परिणाम यह हुआ कि बेहूदा से बेहूदा काठ पत्थल इत्यादि और भयानक से भयानक भूतप्रेत इत्यादि की पूजा अर्चा इन्हें बेहूदा और भयावनी नहीं मालूम होती जब सब ठौर और सब में वही है तब जिसे पूजैंगे वह हमारी पूजन उसी परमात्मा को पहुंचे गी "आकाशात्पतितं तोयं यथा-गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारं केशवं प्रतिगच्छति„ जैसा आकाश से गिरा वर्षा का जल हेर फेर अन्त को समुद्र ही में जा पहुंचता है उसी तरह किसी को नमस्कार पूजा वन्दना करो अन्त को उसी घट २ व्यापी अन्तर्यामी को पहुंचती है—

क्रिश्चन मिशनरी जो तन मन से हिन्दूमत के उखाड़ने की कोशिशें कर रहे हैं यह उन की बड़ी भूल और नासमझी है—हिन्दुओं के पूर्वपुरुष इस बात को खूब अच्छी तरह समझे हुये थे कि काठ पत्थल इत्यादि उस्की प्रतिमा नहीं है इस लिये अगाध बुद्धि वालों के लिये उस्की पूजन का यह उपयुक्त क्रम नहीं है—पर इसी काष्ठ पत्थल के द्वारा यदि अज्ञ नासमझों को ईश्वर भावना और विश्वास दृढ़ हो और उन के चित्त विमल और शुद्ध रखने का एक द्वार हो सके तो यह पाप क्यों हुआ ?—

लायलसाहब का मत है कि अंगरेज़ी शिक्षा के प्रभाव से भावी परिणाम हिन्दूधर्म का अब बहुत अच्छा नहीं दिखाता—शिक्षित सीमा की तो इस ओर बिल्कुल रुचि न रहेगी अपढ़ पामरों ही में इस्का प्रचार रह जायगा जिस्से इस धर्म में बहुमूल्य उज्ज्वल रत्न सदृश उत्तम सिद्धान्त और ऊंचे दरजे की जो फिलासोफी है सो तो कोई उन का गांहक न होने से छिप जायगी पामर अपढ़ लोगों में जैसा इस्का भद्दा और बिगड़ा तरीका है और भी अधिक २ बिगड़ता ही जायगा—हम कहते हैं ऐसा कभी हो ही नहीं सक्ता है जो सत्य

है वह त्रिकाल में कभी झूठ नहीं होगा हिन्दूधर्म के अटल सिद्धान्तों का प्रकाश ऐसा नहीं है कि यूरोप के विज्ञान और अंगरेजी तालीम उसे मटियामेट कर सकेगी औरयही सबूत है कि यह ईश्वर की ओर से है—

हमारी घड़ी ॥

उपन्यास

"सहवासी विजानाति चरितं सहवासिनाम्"

सहवासी अर्थात् साथ रहने वाले ही अपने सहवासी का सब हाल जानते हैं—इस उपन्यास में एक घड़ी का वृत्तान्त है घड़ी से बढ़ कर दिन रात का साथी दूसरा और कौन हो सक्ता है—नई सभ्यता के सूत्रानुसार जिस्का एकदम का साथ भी हम से नहीं छूट सक्ता इस लिये घड़ी जैसा अपने साथी का सब हाल जान सक्ती है वैसा कोई दूसरा नहीं—यह उपन्यास इस ढंग पर लिखा गया है मानो घड़ी ही इस किस्से की मुख्य नायिका है जो अपना सब हाल अपने आप कह रही है—घड़ी का अपना हाल कहना कुछ अप्राकृतिकसा तो अलबत्ता मालूम होगा पर पढ़ने वाले यदि धीरज के साथ इसे पढ़ें गे तो आगे बढ़ कर इस उपन्यास को बहुत मनोरञ्जक पावेंगे—

यद्यपि मैं कई देशों में घूम आई परन्तु इस देश में विशेष रही इस लिये अपना वृत्तान्त इसी देश की भाषा में कहा चाहती हूं—पाठकजन जहां तक मुझ को अपना पिछला वृत्तान्त स्मरण है प्रथम मैं एक बड़ीसी इलमारी में बहुतसी घड़ियों के साथ रक्खी हुई थी—उस दूकान में और भी बहुतसी चीज़े कई प्रकार के बाज़े आदि थे पर घड़ियां विशेष थीं—कई एक मेरे बराबर की कई एक मुझ से बड़ी न सिर्फ कद में बल्कि दामों में भी मुझ से बहुत चढ़ बढ़ के थीं उन्में हमारी जाति वाली घड़ियों को जैसा मैंने पीछे से जाना "वाच" जेब घड़ी कहते हैं उसी इलमारी में रक्खी हुई टिक् टिक् कर रही थीं कि इतने में एक आदमी जिस्की अवस्था ४५ वर्ष की होगी हृष्ट पुष्ट लम्बे कद का वहां आया उस्के आते ही वह मनुष्य जिस्को मैं सदा उस दूकान में बैठा देखती थी उस्के पास जाय बड़े आदर से हाथ मिलाय मुख से कोई ऐसा शब्द उच्चारण किया जिस्के माने यही हुये कि मैं आप को प्रणाम करता हूं—आइये आप ने बड़ी कृपा की कहिये आप को क्या चाहिये—उस ने कहा मैं एक

घड़ी चाहता हूं परन्तु बहुत भारी दाम की न हो—दूकान का मालिक बड़े आवभगत आदर और नम्रता के साथ उसे उसी इल्मारी के पास ले आया जहां मैं रक्खी हुई थी उस्के पास आते ही हम सबों का कलेज़ा धड़ २ करने लगा कि देखना चाहिये हम में से आज किस्की बारी यहां से जुदा होने की आती है—सच पूछिये तो मैं अपनी सहेलियों में सब से छोटी थी अर्थात् बिल्कुल नई थी—मेरी सजावट और सुन्दरापे पर स्पर्द्धा से सहेलियों में से कोई बोल भी उठी—मालूम होता है अब की वार यही बाज़ी मार ले जायगी और ऐसा ही हुआ भी कि वह सौदागर इल्मारी में ढूंढ़ता हुआ जिस खाने में मैं रक्खी थी अपना हाथ फैलाया और हमी को सब घड़ियों के बीच से उठा कर लेचला और उस मनुष्य को जो घड़ी मोल लेने आया था हम को दिखला कर कहा कि यह घड़ी जैसा आप चाहते हैं वैसी ही है और बहुत ही बढ़िया और टटका माल है—उस ने कहा तो आप इस्का पूरा ज़िम्मा लेते हैं कि यह अच्छी तरह चले गी और इस्के सब पुर्ज़े जल्दी बिगड़ैं गे नहीं—जी हां—आप को इस्से अच्छी और दाम में भी कम दूसरी ऐसी घड़ी न मिले गी—उस आदमी ने फिर कहा मैं इसे एक लड़के के वास्ते लेता हूं यदि यह थोड़े कम एहतियात के साथ रक्खी जाय तो बिगड़ैगी तो नहीं क्योंकि लड़के और बन्दरों का एकसा स्वभाव होता है बस इतने ही से आप समझ सक्ते हैं कहां तक इस्की हिफाज़त हो सकेगी—

सौदागर—मुझे पूरा विश्वास है कि यह कितनी ही बे एहातिहाती से रहेगी तौ भी न टूटेगी—ऐसी मज़बूत घड़ी आप ने कम देखी होगी—

उस मनुष्य ने कहा यदि ऐसा है तो मैं इस घड़ी को मोल लेता हूं—

अब मैं एक मालिक के स्वत्व से छुटकारा पाय दूसरे की हुई—सच पूछिये तो मेरा जीवनवृत्तान्त भी यहीं से आरम्भ होता है—यद्यपि बहुत दिनों तक काम में लाने से अब मैं बिल्कुल पुरानी हो गई हूं तब भी आप लोग देखेंगे कि जिस तारीफ के साथ सौदागर ने मुझे बेंचा था उस बड़ाई के योग्य मैं वास्तव में थी—अब मैं अपनी तालीम का कुल हाल आप को सुनाया चाहती हूं सच पूछिये तो मेरी शिक्षा बहुत ही बुरे तरह पर की गई हफ्ते में एक दिन एक पुरुष आता था और हम को हाथ में ले पहिले कान के पास लगाता था जैसा कुछ हमारा जबाब होता था वैसी हमारी प्रशंसा

या निन्दा करता था कभी कहता था " तुम बड़ी तेज़ हो " कभी कह देता था "तुम बड़ी सुस्त हो" और तब हम को दुरुस्त कर देता था कोट जो मैं पहने रहती थी उसे उतार मुझे ख़ातिर ख़ाह पीटता था और यह सज़ा वह मुझे एक औज़ार से देता था—अस्तु इस प्रकार अपने शिक्षा के दिन ज्यों त्यों मैं ने पूरे किये पर अन्त को इसका लाभ भी मैं ने भरपूर उठाया क्योंकि एक दिन गुरु महाशय घड़ीसाज़ ने मेरा इमतिहान लेने के बाद कहा हां इतने दिनों की कोशिश पर अब आखिर तुम दुरुस्त हो गई हो और ठीक २ चल रही हो उस दिन से आगे को हर हफ्ते में सज़ा पाने से आज़ाद कर दी गई और समय ठीक २ और शुद्ध देने लगी—हां एक बात कहने को भूल गई वह यह कि जब मेरी तालीम पूरी हो गई तो बड़ी हिफाज़त के साथ शीशे की इलमारी में एक मखमली मुलाइम गद्दे पर रख दी गई और एक टुकड़ा कागज़ जिस्पर लिखा था निहायत सस्ती "कुल ३६ रुपये की" मेरे साथ लगा दिया गया जो कोई उस सौदागर की दूकान पर आता था मुझे देख बड़ा प्रसन्न होता था और कहता था क्या उमदा घड़ी है इस लायक है कि पास रक्खे—

हमारे पास ही एक सोने की घड़ी थी जो इसी आशा में थी कि अब कि बार हमी बेचने के लिये निकाली जायगी जब उस सौदागर का हाथ घड़ियों को खोजता उस खाने की ओर बढ़ा जिस्में हम रक्खी थीं तब हमारे साथ की सब घड़ियों ने यही समझा कि अवश्य यह उसी सोने की घड़ी को ढूंढ रहा है—किन्तु जब उसकी जगह उस ने हम को उठाया और बाहर निकाला तो मारे आनन्द और उत्कण्ठा के हमारा कलेजा उछलने लगा और अपने को अत्यन्त धन्य समझा कि सब सहेलियों में हमारी इतनी प्रतिष्ठा की गई और इलमारी में बन्द अब पैदा करने वाली इस ज़िन्दगी से रिहाई पाया अब संसार को देखे भालेंगी—परन्तु सौदागर ने जब हमारी प्रशंसा करना आरम्भ किया तब हम को बड़ी लाज आई—उस ने कहा "यद्यपि यह घड़ी मैं आप को केवल ३६ रुपये में देता हूं पर सच पूछिये तो यह इसका आधा मूल्य भी नहीं है इन दिनों मेरा कारबार सुस्त है नहीं तो इसे मैं दूने दाम में बेचता„—यह मनुष्य जिसकी अब मैं दासी हुई इसका नाम न्यूकम् था

न्यूकम् ने सौदागर से कहा एक जंज़ीर भी लेते आइये जिस लड़के के लिये मैं यह घड़ी लेता हूं वह घड़ी से ज़ियादह जंज़ीर ही को पसन्द करता है—सौदागर एक कश्ती सोने और चांदी की जंज़ीरों से भरी उठा लाया इस ने उस्में से एक मज़बूत सिक्कड़ "क्योंकि निस्सन्देह हमारे लिये जंज़ीर एक प्रकार का सिक्कड़ ही है" हमारे गले बांध दिया—क्या बुरा दस्तूर है कि हम निरपराध विना कोई कुसूर सिक्कड़ से जकड़ दी जाती हैं—कुत्ते तोते या बन्धु वे इस तरह पर जंज़ीरों से कसकर बांधे जाते हैं न कि बेकुसूर हम लोग जो न किसी के लेने में न देने में—हम को बड़ा ही शोक और क्रोध हुआ जब हमे यह मालूम हुआ कि अब से हम दूसरे की दासी हुईं और अब से हम सिक्कड़ से जकड़ी रहा करेंगी—पर हमारे विगड़ने से क्या और प्रसन्न होने से क्या—लाचार हम को अपना क्रोध आपही आप शान्त कर देना पड़ा और यह समझ जी में ढाढस करलिया कि केवल हमारे ही भाग्य में बंधुआ और दास होना नही लिख दिया गया वरन घड़ी मात्र को यही दुर्दशा भोगनी पड़ती है कहा भी है "न दुःखं पञ्चभिः सह" सोने और जवाहिरात की घड़ियों को भी यही दुर्दशा भोगनी पड़ती है तब हम किस गिनती में हैं—इस के उपरान्त हमारे नये मालिक मिस्टर न्यूकम् ने घड़ी और जंज़ीर दोनों का दाम ५० रुपये की एक नोट दै बिदा हुये चलती बार फिर कोई ऐसा शब्द दोनों के बीच कहा गया जिस के माने यही हुये कि प्रणाम अब मैं बिदा होता हूं—अब मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मानों किसी ने एक अंधेरे गड्ढे में मुझे ढकेल दिया हो और इतना भी समय नहीं मिला कि मैं अपने पहले मालिक से मिल लेती और साथ की सहेलियों से चलती बार बिदा हो लेती—पाठकजन! संसार में प्रवेश करने का यह मेरा पहला क़दम था—उपरान्त कई घंटे तक हम पड़ी रहीं और किसी ने हमारी सुध भी न ली थोड़ी देर बाद नींद ने हमें आघेरा हमारी नसें सुस्त पड़चलीं हाथ पैर टूटने लगे और चित्त अकुलाया—जिस समय कि हमारी ताली दी जानी चाहिये थी उस को बीते बिलम्ब हो गया था हमें यह चिन्ता हुई कि कहीं ये लोग हम को ऐसा ही न छोड़ दें और तब हम सुस्त पड़ सोजांय—यह चिन्ता होते ही हमने धीरे से अपनी जंज़ीर को खींचा और उस्से कहा—हम को आज चाबी नहीं दीगई "जंज़ीर ने जवाब दिया तो फिर क्या करें हम तो यह काम नहीं कर सक्तीं"

हमारी तबियत पहले ही से सुस्त हो चली थी इतना बोलने और बात चीत करने पर और भी सुस्ती ने आ घेरा—अत्यन्त धीमेस्वर से फिर पूछा "क्या कोई ऐसी तदबीर हो सक्ती है कि हम इन को इस बात की इत्तिला देदें„—जंज़ीर ने कहा—"हम कैसे उन को खबर दें वह इस समय और काम में फसे हैं इधर देखते भी नहीं अपनी पुस्तकें बांधने में लगे हैं पर हां अपने भरसक उन को सावधान करने की फिकिर करती हूं„—थोड़ी ही देर बाद हमारे गर्दन की जंज़ीर पकड़ कर किसी ने बड़ी ज़ोर से झटका और हम सहसी गईं—यह झटका उसी किस्म का था जैसा किसी चीज़ के अटक जाने पर दिया जाता है—जान पड़ता है हमारा मालिक वहां से उठ ज्यों ही पास होकर गुज़रा था कि चेन उस्की अंगुलियों में अटक गई उसी का यह झटका था—हमारे मालिक ने कहा भी—"बड़ा नुकसान हो गया था कहीं चेन टूट जाती तो चार्ली खाली घड़ी पाकर कभी खुश न होता अब इस को हिफाज़त से रख दें जिस्में कल भोर को उस्के जाने के समय तक अब कोई अड़ंगा न आलगे कि घड़ी और चेन दोनों टूट जांय—एक बार देखलें घड़ी में ताली दुरुस्त है कि बन्द हुआ चाहती है„—इतना कह ताली दे एक दराज़ में हम दोनों को रख दराज़ बन्द कर दिया—ताली देते ही हम को ऐसा मालूम हुआ मानों हमारे शरीर में फिर से जान पिरोय दी गई हमारी नसें जो सुस्त और ढीली पड़ गई थीं फिर दृढ़ हो गईं और अपना काम करने लगीं—हमारे मालिक को यह क्या मालूम कि उस्के ज़रा से परिश्रम में हमारा कितना सुधार हो गया और कितना सुख मिला—जंज़ीर ने हम से पूछा अब तो तुम प्रसन्न हो—हमने उत्तर दिया हां अब हमें सब भांति स्वास्थ्य है और किसी तरह की शिकायत नहीं है—हमने फिर पूछा भला तुमको मालूम है कल हम लोग क्या किये जांयगे ? जंज़ीर ने कहा हम लोग मालिक के लड़के चार्ली को दिये जायंगे और वह यहां से बाहर किसी स्कूल में पढ़ने के लिये भेजा जायगा—उपरान्त हम उसी दराज़ में पड़ी २ सोती रहीं पर हर एक पल को गिनती जाती थीं और सोच रहीं थीं कि देखिये कल क्या होता है—एक घंटे बाद हम ने सुना दो मनुष्य आपस में कुछ बात चीत कर रहे हैं—हम कान लगा कर सुनने लगी और आवाज़ से यह भी मालूम किया कि यह तो हमारा वही मालिक है कहा "सब चीज़ें तो बंध कर अब तैयार हो गईं„ दूसरी जिस्के स्वर से मालूम हुआ

कि यह कोई स्त्री है और कुछ रो रही है बोली "चार्ली की जुदाई हम कैसे सह सकेंगी„ वह बोला "छिः तुम इतना शोक क्यों करती हो तुम क्या करो स्त्रियों का स्वभाव ही है कि ज़रा २ सी बात में आंसू ढालने लगती हैं घबराओ मत वह जल्द आवेगा„—यह इतना पूरी तरह पर न कह सका था कि स्वयं रोने लगा बहुत देर तक वे दोनों अपने लड़के ही की चर्चा करते रहे—उन की बातों से मालूम हुआ कि उन के यही एक लड़का था इसलिये दोनों उसका बहुत ही दुलार करते थे अभी तक एक छिन के लिये भी यह उन की आखों के ओट न हुआ था तब वर्षों के लिये उसे घर से बाहर भेजते वे क्यों न आठ २ आसू रोयें—कैसा ही पत्थल से कलेजे का क्यों न हो पुत्र स्नेह एक ऐसी बात है कि उसे मोम करही देता है—उसका वहां अपने घर से इतनी दूर अकेले रहने का सोच तो अलबत्ता उन दोनों को था किन्तु किसी प्रकार की नटखटी उसमें न देख उन को भरोसा था कि वह जहां रहेगा वहीं उसे सब लोग प्यार करेंगे और उसे किसी तरह क्लेश न होगा—वे दोनों कितना ही चाहते थे कि अपने दिल को सँभालें पर उसके लड़कपने के चोंचले याद कर २ आंसू उन के आंखों से उमड ही आता था—थोड़ा ठहर हमारे मालिक ने अपनी स्त्री से कहा चार्ली के लिये एक घड़ी लाये हैं सो तो तुम्हें दिखाया नहीं यह कह दराज़ से घड़ी निकाल लाया—स्त्री ने घडी हाथ में ले कहा इसे देख चार्ली बड़ा ही प्रसन्न होगा और अपने दुलारे लड़के की इसे समझ बड़ी देर तक वह मुझे देखती रही—उपरान्त उन दोनों ने रोज़ के दस्तूर के माफिक पास ही के एक कमरे में रोज़ के दस्तूर के माफिक ईश्वर की प्रार्थना की और अपने पुत्र की सब भांति की कुशल की प्रार्थना कर विश्राम के लिये चले गये—इस तरह पर मेरे प्रथम दिन का वृत्तान्त समाप्त हुआ—यह एक नये प्रकार का लेख है यदि हमारे पढ़ने वाले इसे पसन्द करें तो हम छापते रहें—

हमारे देश में अंगरेजी शिक्षा की अपूर्णता ॥

लार्डविलियम बेंटिक के समय सन् १८४५ में यह रिज़ोल्यूशन बाद बहुत से वादानुवाद के तय पाया कि हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी शिक्षा और यूरप की विद्यायें पढ़ाई जायं जिसे अब ५५ वर्ष गुज़रे जब कि प्रधान २ नगरों में दोचार पाठशालालायें गवर्नमेन्ट की ओर से स्थापित हुईं उस समय की

सरिश्ते तालीम की रिपोर्ट पढ़ो तो यही उस से मालूम होता है कि प्रजा ऐसी अंगरेज़ी पढ़ाने की ओर से विमुख थी कि धर्म भ्रष्ट होने की डर से लड़कों को स्कूल भेजती ही न थी—यदि बड़ी कठिनाई से कहीं दस पांच लड़के इकट्ठे भी होगये तो वे अंगरेज़ी की पहली दूसरी और तीसरी किताब दो चार छोटे २ हिसाब नाम मात्र को थोड़ासा भूगोल के अतिरिक्त और कुछ जानते ही न थे शुद्ध अंगरेज़ी बोलना और लिखना तो उस समय अतीव दुर्घट था—सिवाय थोड़े से दूरदर्शी बुद्धिमान अंगरेज़ कर्मचारी मेकाले इत्यादि को छोड़ और किसी के खयाल में यह आता ही न था कि तालीम अंगरेज़ी यहां इतना ज़ोर पकड़े गी—शनैः २ वही अंगरेज़ी शिक्षा अब यहां तक बढ़ी कि इन्ट्रेन्स पास किया हुआ साधारण रीति पर थोड़ा २ सब विषय को जानने लगता है विज्ञान और साहित्य तथा फिलासोफी कानून गणित इत्यादि विद्या के विभाग में लोग अब थोड़ा २ प्रवीण होते चले हैं कमोरिन से हिमालय तक कोई ऐसा स्टेशन न मिलेगा जहां अंगरेज़ी पढ़े हिन्दुस्तानी गिट पिट करते हुये न देख पड़ें—जङ्गल पहाड़ मैदान तथा सूनी सी सूनी जगहों से भी गुज़रिये तो वहां भी कोट पतलून कसे सिगार मुह में दबाए अंगरेज़ी बाबू आप को मिले हीं गे जहां देखो तहां अंगरेज़ी में साइन बोर्ड टंगे हैं एसोसिएशन क्लब सभा समाजों की भरमार है—कैसे हर्ष की बात है कि जब हम किसी स्कूल या पाठशाला में जाते हैं तो वहां कोमलवय सुकुमार मति वाले छोटे बालकों को भी भांत २ की स्पीच और लेकचर कहते या सुनते पाते हैं—कोई टेम्परेन्स पर वक्तृता कर रहा है कोई जाति विवेक पर झगड़ता है कोई फ्रीट्रेड के लिये झंख रहा है कोई स्त्रीशिक्षा के वास्ते कोई औरतों की आज़ादी के लिये सिर पचाये डालता है इत्यादि इत्यादि—उस समय के वृटिशशासन को धन्यवाद देने को बहुत जी ललकता है—इस्से यह न समझना चाहिये कि अंगरेज़ी की शिक्षा यहां अपनी पूर्णता को पहुंच गई क्योंकि आबादी के हिसाब से अभी सैकड़ा पीछे केवल एक अंगरेज़ी पढ़े निकलते हैं उस्में अच्छे योग्य तो अभी बहुत ही थोड़े से हैं २५ करोड़ में ५०००० भी ऐसे न निकलें गे जिन्हें हम सुशिक्षित कह सकें—इन पढ़े लिखे लोगों को हम तीन हिस्से में बांटते हैं—एक तो वे जो थोड़ा सा पढ़ किसी गुरू के इमृतिहान में नाकामयाब हो न दीन के न दुनियां के खराबखस्ता बगल मे अर्ज़ी दबाये

दफ्तर २ नौकरी की तलाश में मारे २ फिरते हैं कहीं अर्दली के चपरासियों की खुशामद कर रहे हैं उन्हें मुहभरी देने और उन का मुह मीठा करने को भी सब तरह मुस्तैद हैं पर चपरासी साहब तो भी उन की ओर मुखातिब नहीं होते यदि किसी तरह अर्दली साहब मुखातिब भी हुये तो बिगड़े दिल साहब बहादुर या मेमसाहबा ने हुकुम दिया कि इस डैमनिगर को हाथे के बाहर पकड़ाओ—यदि भाग्यबशात् साहब बहादुर नेक मिज़ाज हुये तो कहा बाबू तुम कुछ पास नहीं हो तुम्हें सर्कारी नौकरी नहीं मिल सकती—ज़रासी अंगरेज़ी की छौंक आ जाने से मिज़ाज में बाबूपन अलबत्ता समा-गया घर का पुश्तैनी पेशा या रोज़गार के काम के न रहे न उधर नौकरी ही पाते हैं—धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का—ऐसे लोग हमारी दोहरी हानि कर रहे हैं अंगरेज़ों के नज़रों में हिन्दुस्तानियों की ओर से बुरा खयाल जमता है और किसी नाखांदे की बेक़दरी करने से उन का जहबा खुल जाता है कि हिन्दुस्तानी ऐसे ही तुच्छ लोग हैं इन की जितनी चाहो हिकारत करो कुछ परवाह नहीं—इधर हमारी समाज में नौकरी न पाने से अपढ लोगों के चित्त पर एक ऐसा बुरा असर पैदा होता है जिस्से पुराने ढंग वाले अपने लड़कों को स्कूल भेजने में हतोत्साह हो बैठते हैं जिस्से आगे के लिये विद्या वृद्धि की जड़ कटती है—दूसरे वे हैं जो दांतों पसीने की मेहनत के बाद इमतिहान पास करी तो डाला—किसी तरह कहीं छोटी मोटी नौकरी किसी केरानी खाने में हो गई तो मानो जन्म सफल भया दस से चार तक पीसते २ चूर ढीला होता रहा तौ भी दफ्तर का काम न निपटा घर में आकर भी वही पिसौनी करते रहे—फुरसत मिली भी तो घर गृहस्थी के बहुत से ऐसे झगड़े दावनगीर रहते हैं कि इतना समय उन्हें कहां कि आगे के लिये अपनी कुछ तरक्की कर सकैं—इस लिये इन्हें भी हम अंगरेज़ी शिक्षा का फल देश को किसी तरह का लाभ पहुंचाने वालों में नहीं शामिल कर सक्ते—न सर्कारी नौकरी का पचड़ लगाये हुये इन्हें किसी प्रकार की स्वच्छन्दता है कि मुल्क की बेहबूदी करने वाली बातों में ये अगुआ हो सकैं—तीसरे वे हैं जो बाद बड़े से बड़ा इमतिहान पास करने के भी बरसों तक पुस्तकालयों में घण्टों तक बल्कि दिन २ भर एकासन डट कर कुतुबबीनी का पिण्ड न छोड़ा किसी ने गणित में किसी ने "फिज़िक्स" बाह्य वस्तु के अनुसन्धान वाली विद्या को

किसी ने अंगरेज़ी के चढ़े बढ़े साहित्य को किसी ने आधुनिक विज्ञान और दर्शनों को उछल डाला,—तात्पर्य यह कि अंगरेज़ी के द्वारा जितना बुद्धि वैभव बढ़ने की सम्भावना इस समय तक हो सकी उसमें त्रुटि न किया और पूर्णविद्वान् हो गये—पर ऐसे लोग कितने हैं यदि खयाल दौड़ाइये तो अति कठिनाई से मुल्क में सौ पचास ऐसे निकलेंगे—निदान इससे यह तात्पर्य निकला कि लार्डविलियम बेनटिक ने अपने उस रिज़ोल्यूशन से जो कुछ समझे थे उसमें अभी कोठी में मूठी भी नहीं है—पर हमारी गवर्नमेण्ट खास कर इन प्रान्तों की इतने ही से अकुला उठी कि देश में विद्यावृद्धि बहुत अधिक हो गई और अब सर्कार को हिन्दुस्तानियों की तालीम में मदत देने की ज़रूरत नहीं है ये अब अपने आप अपनी तालीम कर लें—यद्यपि यह बात अभी हवा में उड़ रही है कोई बात खुला खुली प्रगट में नहीं आई किन्तु हमारी पश्चिमोत्तर की गवर्नमेण्ट जहां और २ प्रान्तों की आपेक्षा विद्या अभी बहुत कम है बरेली आगरा ऐसे कालेजों की ओर से बिल्कुल सहायता देने में विमुख होगई—यदि वहां के रईस उन कालेजों की सहायता न करते तो वहां की प्रजा उत्तम शिक्षा से वञ्चित ही रहती—बड़े पश्चात्ताप की बात है कि कुल पश्चिमोत्तर और अवध में केवल ६ कालेज हैं जिसमें केवल दो कालेज़ बनारस और इलाहाबाद जिन में गवर्नमेण्ट सहायक है उसमें भी बनारस में केवल नाममात्र को—इस समय सब कालिजों में उत्कृष्ट इलाहाबाद समझा जाता है सो वहां फीस इतनी अधिक बढ़ गई और बढ़ती जाती है कि मध्यमश्रेणी वाले इतना खर्च नहीं उठा सक्ते खास कर ऐसे दुर्भिक्ष के समय जब कि किसी तरह पेट भर अन्न मिलना महादुष्कर हो रहा है—गवर्नमेण्ट यदि यह समझती हो कि "प्राइमरी" प्राथमिक शिक्षा अधिक लाभकारी है उत्तम शिक्षा देने की आपेक्षा तो सौ मूर्खों को सिर्फ अक्षराभ्यासमात्र करा देने से पांच को पूर्ण विद्वान् कर देना विशेष लाभकारी है केवल अक्षराभ्यासियों की एक पलटन भी मूर्ख ही समझी जायगी पांच सुबोध पूर्णविद्वान् राजा और प्रजा दोनों के लिये बड़े उपकारी होंगे—ऐसे समय जब सभी यह चाहते हैं कि हम अपने सन्तान को पूर्ण विद्वान् करें गवर्नमेण्ट का इस ओर से उदासीन होना अत्यन्त निठुराई है—हमारी समझ में रेल तार और डाकखाने की तरक्की से शिक्षा की उन्नति विशेष फलदायक है इस लिये उन २ महकमों से

तालीम के महकमे में सर्कार का खर्च करना अधिक प्रशंसनीय है—शिक्षा ही एक ऐसी इस अंगरेज़ी राज्य में बड़ी भारी बरकत है, जिसे हम सदा के लिये याद रक्खेंगे और शुद्ध प्रजा के हित की बात है जिस्की नेव पाताल तक गड़ती जाती है और कभी हिलाये न हिलैगी—हमारा सब तरह पर ह्रास और सब ओर से क्षीणता विद्यावृद्धि में तरक्की देख कुछ भी नहीं मालूम होती—इस लिये जैसा अब तब सस्ती तालीम हम लोगों को मिलती रही वैसी एक ५० वर्ष और भी सर्कार की ओर से मिलती जाय तौ भी हमारा आंसू पुंछता रहे और सब ओर से जो कड़ाई हो रही है उस्का असर हमारे दिलों से कम होता रहे—दूसरे यह कि पढ़े लिखे लोगों का दिल अपनी मूठी में करने की सहज उपाय इस्से बढ़ कर गवर्नमेंट के लिये दूसरी हो नहीं सक्ती और लोगों को प्रसन्न रखना ही विदेशी राज्य के चिरस्थायी होने का प्रधान कारण और उदारशासन की पहली बात है—बुद्धिमानी का क्रम तो यही देखा जाता है कि थोड़े में बहुत लाभ होते देखे तो उस ओर से न चूकै—हम लोगों की शिक्षा में सर्कार का बहुत ही थोड़ा गांठ का जाता है और लाभ इस्से इतना अधिक है जिसे सब का सब गिनाने बैठैं तो न जानिये कै पेज रंग जाय—हम लोग तो यह भी नहीं चाहते कि गवर्नमेण्ट सब अपने हीगांठ का खर्च करे किन्तु शिक्षा की ओर इस क़दर कड़ाई जो दिन २ बढ़ती जाती है कम कर दे बस इतने ही से हमारा कल्याण है और हम लोग सन्तुष्ट हो जांयगे—

सौ अजान एक सुजान ॥

उपन्यास ॥

पहले के आगे से ॥

पाठक जन आप लोगों को याद होगा हमारे इस किस्से के पहले प्रस्ताव का पहिला दृश्य एक घुड़ सवार था जो आधीरात के समय कागज़ का एक पुलिन्दा लिये आया था और दरवाज़े का फाटक खुलवाय पुलिन्दा दै चला गया था—हमारे पढ़ने वालों को अवश्य इस बात के जानने की रुचि हुई होगी कि यह कागज़ का पुलिन्दा क्या था और क्यों ऐसी ताबड़ तोड़ मँगवा गया—

हम ऊपर कह आये हैं सेठ हीराचन्द का अनन्तपुर में एक बहुत पुराना घराना था हीराचन्द से पांच पुश्त पहले इस्के पुरखों में से एक कोई मानिकचन्द नाम अपने घर से पांच कोस पर अपने ही नाम का एक गांव बसाया था और बाग़ बागीचा कुआं तालाब रमने इत्यादि कई एक रमणीक सजावटों से इस स्थान को अत्यन्त मन रमाने वाला कर आप वहीं जाय रहने भी लगा—उपरान्त इस्के कई एक लड़के लड़कियां पोते परपोते हुये और यह सब भांत रंजा पुजा हो कर संसार में भाग्यवानी की सीमा को पहुंच गया था—बल्कि बीच में हीराचन्द के घराने की बड़ी अबतरी आ गई थी यह तो हीराचन्द ही ऐसा भाग्यवान् पुरुष हुआ कि पहले से भी अधिक इस घराने को चमका दिया और मानिकपुर वाले सेठों का तो कोई नाम भी न जानता था पर हीराचन्द का विमलयश चहूं ओर छाया था—जिस समय का हाल मैं लिखता हूं उस समय मानिकचन्द के घराने में बची बचाई पुरानी दौलत तो थोड़ी बहुत रह गई थी पर उस का सुख बिलसने वाला कोई न रहा ७० वर्ष का एक बुड्ढा बच रहा जैसा कोई हरा भरा बाग हो उजड़ जाने पर कटीले पेड़ का एक ठूठ बच रहे—मानिकपुर भी उजड़ कर कस्बे से एक छोटा सा पचास घर का पुरवा रह गया सिवाय इस बुड्ढे के मानिकचन्द की लड़कियों के सन्तान में भी एक आदमी बच रहा था नाम इस का सिट्ठू मल मानो नहूसत और दरिद्रता का एक पुतला था इस बुड्ढे के घर से अलग एक दूसरे कच्चे मकान में रहा करता था शकल से महादिहाती ग्रामीण मालूम होता था न केवल सूरत ही शकल से यह दिहाती था बरन शऊर और ढंग भी इस के सब दिहातियों केसे थे दस पांच बिगहे की खेती करता था और वही इस की आजीविका थी कभी २ अर्धपिशाच वह बुड्ढा भी इस की कुछ सहायता कर देताथा—रिश्ते में यह उस का भानजा लगता था नाम इस यक्षवित्त कृपण बुड्ढे का धनदास था धनदास कुछ तो बुढ़ापे के कारण जब कि और सब इन्द्रियां शिथिल हो केवल तृष्णा और लोभ ही को बिशेष बढ़ा देती हैं और कुछ इस कारण से भी कि इस की बारी फुलवारी बिलकुल उजड़ गई थी ठूंठ सा अकेला आप ही बच रहा था लड़के पोते नाती अपनी स्त्री तक को इस ने फूंक तापा था इस लिये इस्का जी सब

भांति बुझ गया था और कभी किसी बात के लिये इस का हौसिला ही नहीं उभड़ता था सांप सा खाट बिछाये उसी सन्दूक के पास पड़ा रहता था जिस्में इस्के सब कागज़ पत्र रुपया पैसा नोट इत्यादि रक्खे हुये थे—सिवाय थोड़ीसी पुराने फेशन की फारसी के और कुछ पढ़ा लिखा न था न इसे कभी किसी सभ्य समाज में शरीक होने या अच्छे सभ्य लोगों से मिलने का मौका मिला था—बेईमानी या इमानदारी से जैसे बन पड़े केवल रुपया जमा होता चला जाय इसी को यह बड़ी पण्डिताई बड़ी चतुराई बड़ा धर्म समझे हुये था इस दशा में मनुष्य को उदारभाव कहां से आ सकता है—न जानिये कितनों की तो इस ने थाती पचै डाला था इन्ही कारणों से इस्के लिये अर्ध पिशाच की पदवी बहुत सुघटित बोध होती है—७० वर्ष का हो ही गया था एक २ अंग पलित और जीर्ण हो चले थे रोगग्रसित रहा करता था अचानक एक साथ ऐसा बीमार हो गया कि बिल्कुल खटियों से लग गया और ऐसा मालूम होता था कि दो ही एक दिन में इस्का बारा न्यारा हुआ चाहता है—इस की बीमारी की खबर बाबुओं को पहुंची खबर पाते ही इन दोनों के जी में खलबली पड़ी इस लिये नहीं कि बुड्ढा बीमार है चल कर उस्की कुछ सेवा टहल करें या दवादारू की कुछ फिकिर करें बल्कि इस लिये कि जल्द चल कर जो उस्के पास माल मताल है उसे जैसे हो अपने कब्ज़े में लावैं—चलती बार नन्दू भी इन के साथ हो लिया चोली दामन का साथ भला यह क्यों कर बाबुओं को छोड़ अपनी चालाकी से चूकता और बाबू को भी इस्के बिना कहां कल पड़ सक्ती थी—दो एक दिन तो धनदास बहुत ही बुरी हालत में रहा लोग अङ्गुलियों घड़ी और लहमागिन रहे थे कि इस्की हालत कुछ सुधरने लगी दो तीन दिन तो पड़ा रहा उपरान्त बोला भी और कुछ खाने के लिये इच्छा प्रगट किया—बाबू इसे चंगा होते देख मन से बड़े उदास हुये सब उम्मेद जाती रही और जो २ बात सोच रक्खा था एक भी न हो सकी पर ऊपर से ऐसी लल्लो पत्तो और चुनाचुनी करते जाते थे कि धनदास को किसी तरह पर यह विश्वास न हुआ कि यह मेरा अनिष्ट सोच रहा है और मेरे साथ कुछ खेल खेला चाहता है—इस्के बाद भी अपनी दुरभिसन्धि छिपाने को बाबू दो एक दिन वहां रह कर धनदास से विदा हुये और नन्दू को वहां ही छोड़ गये—भीतर २ इशारा तो कुछ और ही था पर ऊपर से धनदास के सामने नन्दू से कहा "नन्दू बाबू मैं तो

अब जाऊंगा पर तुम चाचा साहब की अच्छी तरह फिकिर रखना देखो इन्हें किसी तरह की तकलीफ न हो इन के पथ्य और इलाज इत्यादि की तदबीर रखना"—धनदास से—"चाचा साहब क्या करूं मैं बड़ा लाचार हूं मेरे न रहने से कोठी तथा इलाकों का सब कारबार बन्द होगा मैं नन्दू बाबू को छोड़े जाता हूं यह मेरे बड़े रफीक हैं आप के सेवा टहल की सब फिकिर रक्खें गे और किसी तरह की तकलीफ आप को न होने पावेगी मै घुड़सवार एक हलकारे को छोड़े जाता हूं जब आप को किसी बात की ज़रूरत आ पड़े तुरन्त इसे उलांकी भेज मुझे इत्तिला देना„ बुड्ढे को सलाम कर यह वहां से बिदा हुआ—

नन्दू जो चालाकी में पूरा उस्ताद था और अपने को एकता समझता था ऐसे ढंग से रहा और ऐसी सेवा टहल की कि धनदास का यह बड़ा विश्वसित हो गया—इस ने अपनी ताली कुञ्जी सब इस्के सिपुर्द कर रक्खा अपने पुराने नौकरों को भी निदर जो यह कहता वैसा ही धनदास करने लगा—एक तो बूढ़ा था दूसरे बीमारी के कारण चिरचिरा हो गया था नन्दू को यह एक बड़ी हिकमत हाथ लगी कि जब इसे किसी पर झुंझलाते और चिरचिराते देखता तो इशतियालक देने की भांत दो एक कोई ऐसी बात कह देता कि इस्की चिरचिराहट चौगुनी बढ़ जाती थी जिस्पर यह झुंझला उठता था उस्की मानो शामत आई और इस झुझलाहट में वह चिल्लाता था रोने लगता था मूड़ भी पीट डालता था और नन्दू को अपनी खैरख़ाही ज़ाहिर करने का मौका मिलता था—निदान यह बुड्ढा बिल्कुल सठियाय गया होशहवास भी दुरुस्त न रहते थे मृत्यु के दिन समीप होने के जितने लक्षण होने चाहिये सब इस्में आगये—इस प्रकार के कृपण कदर्य जीवन वालों का यही तो परिणाम होता है जो मानो आदमी के भले बुरे होने की बड़ी भारी परख है—मनुष्य की मरण अवस्था इस्के सुकृती या दुष्कृती होने की कसौटी है जो सुकृती हैं उन की मरण अवस्था ऐसी सुख की होती है कि किसी को मालूम नहीं होता कि कब उस्के चोला से जान निकल गई आनन फानन पलक भँजते शरीर से उन के प्राण की यात्रा होती है—वही दुष्कृती जैसा यह बुड्ढा था महीनों तक पड़े २ अनेक यातना और यंत्रणा भोगते हैं पर प्राण-वियोग शरीर से नहीं होता—

एक दिन रात को यह कहरता २ सो गया और इस्के सब पुराने नौकर भी नींद के वस हो गये कि नन्दू ने ताली का गुच्छा जो इस्की तकिया के नीचे रक्खा रहता था धीरे से खींच वह सन्दूक जिसे धनदास अपना प्राण समझता था आहिस्ते से खोल कागज़ का पुलिन्दा उस्में से निकाल लिया और सन्दूक फिर बन्द कर ताली वैसे भी तकिया के नीचे रख दिया—इस ने पुलिन्दा उसी अहल्कारे को दिया और कहा तुम अभी जा कर इस पुलिन्दे को बाबू साहब को दे आओ पर खबरदार होशयार रहना यह बड़े काम का कागज़ है इस्में से कोई भी गिर जायगा तो बड़ी हर्ज़ होगी—अहल्कारा स-लाम कर पुलिन्दे को अपनी कमर से कस रवाना हुआ—नन्दू भी जाकर चुप के सो रहा पर अपनी इस अभिसन्धि में कृतकार्य होने की खुशी में देर तक इसे नींद न आई—सोचता था लाखों की ज़ायदात मालमताब अब मेरे बाबुओं को बेखरखसे हाथ लग जायगी बाबू से चहारुम मेरा ठहर गया ही है तब क्या हमीहम कुछ दिनों में देख पड़ैंगे—चहारुम क्या यह बिल्कुल माल मैं अपना ही समझता हूं क्योंकि बाबुओं को तो मैं ने अपने जाल में फसा ही रक्खा है बाबू के पास जो कुछ है उस्के सब के कर्त्ता धर्त्ता सिवाय मेरे दूसरा है कौन—हा! हा! हा!! मैं भी अपने फन में क्या ही उस्ताद हूं कैसा अपना संखठा जमा रक्खा है कि अब बाबू के दरवार में मही मैं हूं—उस उजड्ड पण्डत चन्दू ने हरचन्द चाहा कितना ही फटफटाया पर उस्की एक भी दाल न गली सब तरह पर बाबुओं को अपनी मूठी में करी लिया—(हँसकर) छिः यह पण्डित भी अहमकों के जमात का एक नमूना देख पड़ा—बदतमीज़ी की बानगी मानो शऊर और समझ के चश्मे पर बड़ा भारी पत्थल का ढोंका रख दिया गया हो—खूबी यह कि कौड़ी २ मात हो रहा है फिर भी अब तक अपनी शरारत से बाज़ नहीं आता—मैं भी मौका तजवीज़ रहा हूं बचा को ऐसा फसाऊंगा कि अब कि बार जड़ पेड़ से उखाड़ डालूंगा और अनन्तपुर में कहीं इस्का निशान भी न रह जायगा—मैं ने एक बार पहले भी सन्दूक को खोला था ताकि देखूं इस्में क्या है सिवाय और चीज़ों के उस पुलिन्दे को पाया जिस्में पचास हज़ार के कई किता नोट सिर्फ उस्में थे दश हज़ार का एक किता तो मैं ने अपने लिये अलग उड़ा रक्खा और भी कई एक दस्तावेज़ उस्में हैं यहां से चल कर मैं सबों को ठीक करूंगा इसी लिये तो

मैं ने बुद्धदास को अपने घर के पास ही टिका रक्खा है और सब तरह की नाज़बरदारी उस्की उठा रहा हूं खास कर उस वसीयत को दुरुस्त करना है जिस्में बुड्ढे ने मिट्ठूमल के लिये कुछ इशारा कर दिया है—मिट्ठू ऐसे खूसट देहकानी को इतनी कसीर रकम मिल कर क्या होगी इसे तो हम लोगों के हाथ में आना चाहिये—बाबुओं का रंग ढंग देख घर की सब रकम बड़ी सिठानी ने दाब रक्खा बाबू मा के मरने के बादे पर कर्ज़ ले लेकर इन दिनों अपना काम चला रहे हैं अब इतनी कसीर रकम एक साथ मिल जाने से कुछ दिनो के लिये सुबीता हो गया खैर देखा जाय गा इस्में शक नहीं आज मैं महीनों की कोशिश और ततवीर के बाद आखिर कामयाब हुआ इतने में नींद आई सो गया—शेष—

हाकिम और उन की हिकमत ॥

जैसा प्रकृति के अधिष्ठान बिना सांख्यदर्शन वालों का पुरुष जड़ निश्चेष्ट और बेकाम है वैसा ही सर्वशक्तिमन् हे हाकिम! तुम अपनी हिकमत अमली के अधिष्ठान के बिना सामर्थि शून्य हो—तुम हमारी महाराणी के प्रतिनिधि स्वरूप हो २८ करोड़ मनुष्यों का बनना बिगड़ना आप ही के हाथ में रख दिया गया है—तुम विचारपति हो कचहरियों में ऊंचे आसन पर सुशोभित हो हंस के समान इन्साफ करने में दूध का दूध पानी का पानी करदेने में समर्थ हो कर भी जो अपने प्रकृति के गुण हिकमत के परवश हो अपनी जाति वालों का तथा शासनप्रणाली में अपने देश का विशेष पक्षपात करते हो सो केवल कवि की इस उक्ति की सार्थकता के लिये "भवन्ति साम्येपि निविष्टचेतसां वपुर्विशेषेष्वति गौरवाः क्रियाः,,—हे महाप्रभो! आप हमारे देश के शत रज्जु वाले राजाओं में नहीं हो किन्तु सबों को आक्रमण किये मेरु और हिमालय से भी अधिक उच्चतर हो—"स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरूरिवास्थितः"—हे शुभंयो आप राजराजेश्वरी के महापार्षद हो खां बहादुर रायबहादुर आदि उपाधि आप की सेवा परिचर्या का सद्यः फल और आप की हिकमत अमली का परिणाम है—हे सकल सामन्त चक्रवर्त्तिन्! अनेक दोष दूषित भी आप की कारगुज़ारी को क्या ताकत कोई दूष सके आप के प्रबन्ध को बुरा कहना गवर्नमेण्ट का विरोधी हो जाना है—हे सर्वव्यापिन्! आप का महा-

विराट वैभव पायोनियर हज़ार मुख से हमे चाहे सो कहडालें हमारे दोषों को सहस्र नेत्र से निरखा करें कोई हर्ज़ की बात नहीं क्योंकि वे सभ्यसमाज के अग्रणी और सभ्यताप्रचारक परमाचार्य हैं—किन्तु हम लोगों के मुख से यदि कुछ निकल जाय चाहो वह वास्तव में सच भी हो "सेडिशन„ और प्रजा के मन में विद्रोह उभाड़ने वाला है—हे महाभाग! तुम प्रत्यक्ष देवता हो देवगण जैसा देवाङ्गनाओं को साथ लिये स्वच्छन्द क्रीड़ाविहार किया करते हैं वैसा ही तुम भी प्रजा का धन और प्राण अपनी मूठी में कर विमान सदृश स्वच्छ फिटिन पर लेडियों को अपने पास बैठाये विमल गगनपथ समान ठंढी सड़कों में स्वच्छ समीर का सेवन करते हुये विचरते हो—देवगण अजर होने के कारण बाल्य यौवन और प्रौढ इन्हीं तीन पन में सदा रहते हैं अर्थात् बुढ़ापा उन पर कभी व्यापता ही नहीं वैसा ही तुम भी कभी बूढ़े नहीं होते क्योंकि ५५ साल के ऊपर सर्कारी नौकरी से बरतरफ कर देने वाला कानून बहुधा तुम्हारे लिये नहीं देखते—यद्यपि आप हम लोगों के समान जो मनुष्य कोटि में हैं अल्पज्ञ मूढ मन्दमति होकर सर्कारी नौकरी का काम नहीं आरम्भ कर देते किन्तु लियाकत और सब तरह की योग्यता के पुतले बन कर बिलाइत से आते हो तौ भी बीच २ अपने अधिकृत कामों में ऐसी अनभिज्ञता और बाल्यभाव जो प्रगट कर उठते हो कि ५ वर्ष का बालक भी ऐसा न करेगा सो यह सब आप की क्रीड़ा और लीलाविलास है–जिस लीला विलास की पुण्य कथा और पवित्रचरित्र का सब हाल हम लोग समाचारपत्रों में पढ़ अपने भाग्य सराहते हैं और अपने को धन्य और कृतकृत्य मानते हैं—जिस्के द्वारा पुण्य श्लोक सङ्कीर्त्तन समान हमारे जन्म २ के अघ ओघ सब बलाय जाते हैं–हे पेनटलूनाम्बर! तुम्हारी उम्मेदगारी अवस्था को बाल्य कार्य करने के समय को यौवन और पेन्शनर बन जाने के समय को प्रौढदशा समझ तुम्हें त्रिदश अर्थात् तीन दशा वाला यह नाम देना बहुत ही ठीक है—"अमरानिर्जरा देवा त्रिदशा विबुधास्सुराः" हे प्राड़ विवाक् साहब नामधारी साधारण हाकिमों में तुम त्रिदशेश अर्थात् देवराज इन्द्र हो—कचहरी तुम्हारा स्वर्गराज्य है चेयर तुम्हारा स्वर्गसिंहासन है और पेशकार तुम्हारी शचीदेवी इन्द्राणी हैं–जैसा एक इन्द्र के बदल जाने से शचीदेवी और स्वर्गसिंहासन की बदली

नहीं होती वैसे ही तुम्हारे साथ तुम्हारे परमभक्त पेशकार का परिवर्तन नहीं होता—तुम सोलहो कला पूर्ण साक्षात् चन्द्रमा हो अमलावर्ग जिन के मध्य में तुम विराजमान हो वे सब तुम्हारी महिषी स्वरूप तारागण हैं—चन्द्रमा जैसा असंख्य तारा पति होने पर भी रोहिणी के विशेष वशीभूत रहता है वैसा ही तुम भी अनेक अमलों के रहते भी शरिस्तेदार के विशेष वशीभूत रहते हो और शरिस्तेदार जो कहीं मुसल्मान हुये तो मानो पूरा जोड़ बैठ गया—चन्द्रमा को कभी २ मेघ आकर ढांप लेते हैं तुम्हारे लिये वह मेघ कोई तेज़ वकील या बैरिस्टर है—हे महामहिम ! हाथी के दिखाने वाले दान्त की भांत फ्रीट्रेड आप की गूढ पालिसी के मर्म को कौन थहा सक्ता है—आप के हुकुम एहकाम आईन कानून जिन्में आप की हिकमत भरी हुई है इङ्गलेण्ड ऐसे सभ्य देश के लिये सब तरह पर उपयुक्त है इण्डिया के सीधे सादे सरल मनुष्यों के लिये असह होती जाती है—तस्मात् हे सौम्यदर्शन ! यदि आप हम लोगों के साथ माता के समान वत्सलता का भाव धारण कर हम लोगों का शासन करते तो हम सब भांत सुखी रहते—हे सर्वोत्कृष्ट ? ब्रिटिशशासन संसार के जितने राज्य हैं सबों में उदार और संसार में जितने जाति के लोग हैं उन्में तुम्हारी कौम सबों में उदार प्रसिद्ध है वह उदारभाव हम लोगों के प्रति जो आप जी खोल कर नहीं प्रगट करते यह केवल आप की हिकमत का दोष है—हे अणोरणीयान् महतो महीयान् ! आप अपनी शोषकताशक्ति कुछ कम कर मृदुता धारण करते तो हम सर्वोच्छेदन से बचे रहते और फल सम्पत्ति से बदले में आप ही को और भी बढ़ाते "अभिवर्षति योनुपालयन् ! विधिवीजानि विवेकनारिणा । स सदाफलशालिनीं क्रियां शरदं लोक इवाधितिष्ठति„ जो मनुष्य प्रभुशक्ति सम्पन्न हो विवेक के जल से सींच अपने प्रबन्धरूप बीज को बढ़ाता रहता है वह नीतिनिधान शरत्काल के समान समय से उस्का पूरा फल पाने का अधिकारी होता है—नितान्त अबोध हम आप की निसर्ग दुर्बोध हिकमत अमली को क्या समझ सक्ते यह आप ही की कृपा है जो आप के द्वारा वितरित शिक्षा से नेत्रोन्मीलन पाकर कुछ २ अब आप की पालिसी के ढंग को समझने लगे हैं—"निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः । यवानुभावोयमवेदियन्मया निगूढतत्त्वंनयवर्त्मभूभृताम्„—हे सर्वशक्तिमन् ! हम लोग सर्वतोभावेन आप ही के आश्रित हैं

अनन्यशरण हैं हमें बढ़ाओ गे तो इस्में आप ही की बड़ाई है नहीं जैसा आप की इच्छा और रुचि—हम लोगों का कपोतवृत्त है "मुखसों आह न भाखि हैं निजसुख करो हलाल„—हे अमेय अगम्य आप के नामरूप गुण कर्म को आदि से अन्त तक कहने को कौन समर्थ है आप की स्तुति के समान जो यहां कहा गया उस्में जो कुछ अनर्गल हो गया हो तत् क्षम्यतां क्षम्यतां क्षम्यताम्—

हमारे मन की मधुपवृत्ति है ॥

आदमी का मन भी एक क्या ही गोरख धन्धा हैं जिसे नई २ बात सुनने नये २ दृश्य देखते नई २ बात सीखने की सदा अभिलाषा रहती है और इन बातों की ओर उस्के मन की झुकावट और उन को खोजने की लालसा इसे परिपक्व बुद्धि होने पर उपजती हो सो नहीं बरन लड़कपन से ही जब यह अत्यन्त सुकुमारमति रहता है तभी से इस्का अङ्कुर चित्त में जमता है—कोई बालक कैसा ही खिलवाड़ी हो उसे भी खेल के नये रास्ते की खोज़ हो गी और यह तो बहुधा देखने में आया है कि जो लोग दिनभर कोई फाइदे का लाभ दायक काम नहीं करते बरन खेल कूद में दिन गवांते हैं उन को भी जिस दिन कोई नया तरीका खेलने या दिल बहलाने का मिल जाता है उस दिन उन के चित्त की प्रसन्नता का ओर छोर नहीं रहता—परन्तु सच पूछिये तो निरे खेल कूद में दिन काटना मनुष्यत्व या मनुष्य शब्द के अर्थ पर आक्षेप करना है—हमारे यहां के मननशील पूर्वकाल के दार्शनिकों ने आदमी का पर्याय जो मनुष्य रक्खा है सो यही देख कर कि यह अपनी भली या बुरी दशा को सोच सक्ता है उस्के चारो ओर जो संसार के अनेक प्राकृतिक कार्य हो रहे हैं उन का भेद ले रहा है उन की असलीयत जाना चाहता है और नित्य नई विद्या और विज्ञान की वृद्धि करता जाता है—ज़िन्दगी को मज़ेदार करने की ज़रूरियात पैदा करता जाता है और उन आवश्यकताओं को पूरा कर अपने जीवन को सुख और आराम से काटने का नया २ ढंग बढ़ाता जाता है—यही कारण है कि आज दिन जो सैकड़ों तरीके आराम और आशा इस के निकल पड़े हैं हमारे पहले के लोगों को कभी स्वप्न में भी उन पर ध्यान नहीं गया था—कुछ ऐसा मालूम होता है कि आदमी का दिमाग़ कबूतर के दरबोंसा है जिस्में एक समय केवल थोड़े से कबूतर और उन के

अण्डे बच्चे थे ज्यों २ कबूतरों की सृष्टि बढ़ती गई त्यों २ दरबे के खाने भी बढ़ते गये—कदाचित् यही दशा आदमी के दिमाग और उस्में भरे हुये विविध विषयों की भी है—हमारा केवल विज्ञानसम्बन्धी विद्यायों से प्रयोजन नहीं है किन्तु वे सब शास्त्र और विद्यायें जो मनुष्य के घर गृहस्थी के कामों में उठते बैठते चलते फिरते प्रतिक्षण हमारे उपयोग में आ सक्ती हैं हम समझते हैं इस बात के स्वीकार करने में आप को कुछ आगा पीछा न होगा कि इन्ही सब नई ईजादों का यह फल हुआ कि आदमी की अक्ल और चालाकी पर मानो सानसी रख दी गई है हज़ारों नये २ धन्धे लोगों को बझा रखने के ऐसे निकले कि हमारे यहां की पूर्व काल की समाज की गढ़न जैसा उस समय थी उस के लिये इस की कोई उपयोगिता ही न थी ज्यों २ समाज पुष्ट पड़ती गई और सभ्यता का प्रादुर्भाव होने लगा त्यों २ नई ईजाद होती गई और अब इस नई सभ्यता के ज़माने में तो एक से एक अचम्भे की नई २ बातें सुनने और देखने में बराबर आ रही हैं—इस लिये यह कहना कि विज्ञान या मनुष्य के सोचने का परिणाम कोई दूसरी विद्या अपने हद्द और छोर को पहुंच गई बड़ी भूल होगी हम तो कुछ ऐसा सोचते हैं कि मनुष्य का जन्म ही नई २ वस्तुओं के खोजने के लिये हुआ है इसी से यह सिद्धान्त बड़ा पक्का मालूम होता है कि दुनिया रोज़ २ तरक्की पाती जाती है और जो बातें पहले के लोगों के कभी मन में भी न आई थीं उन्हे अब हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं और हमारा मन मधुप कीसी वृत्ति धारण किये है जैसा भंवरा टटके से टटके सुगन्धित फूलों को ढूंढता फिरता है वैसा ही हम प्रकृति माली की सींची हुई इस अनोखी वाटिका संसार में जिस का ओर छोर नहीं है नई २ वस्तु ढूंढते फिरते हैं—हमारे दार्शनिकों ने मन में चंचलता का महादोष आरोपित करते हैं हम कहते हैं निस्तब्ध निश्चेष्ट हमारा वह बुझा मन किस काम का जिस्में उत्साह और ज़िन्दा दिली को ठहरने के लिये स्थान ही नहीं मिलता—मन वही जिसे क्षण २ में अनोखी टटकी बातों के जानने और सोचने का उत्साह रहता है—उन्नीसवीं शताब्दी की पश्चिमी सभ्यता के नये जीवन में जब बड़े २ लोग दिन रात सोते जागते उमदा से उमदा नई २ बात खोज रहे हैं तो हम जो उन बड़ों के पांव की धूलि भी नहीं हैं आप के लिये फाइदे की कौनसी ऐसी बात सोच सक्ते हैं

जिस्में आप का दिल बहलाव हो सिवाय इस्के कि कोई टटके से टटका नया लेख लिख आप को नज़र करें—

रसातलयात्रा-उपन्यास ॥

आमुखम् ॥

इन दिनों बहुत लोगों का यह मत है कि हमारे संस्कृत ग्रन्थों में जो रसातल या पाताल लिखा है वह अमरिका है—हमारे इस उपन्यास में इस्से कुछ सरोकार नहीं कि इस झगड़े को ते करें पर इतना कह देना आवश्यक है कि पाताल से हमारा प्रयोजन भूतल के नीचे है—पहले इस्के कि इस लेख को आरम्भ करें इतना कह देना और भी उचित है कि इस्का मुख्य नायक एकसिल नामक एक पुरुष है जो अपना वृत्तान्त अपने आप कह रहा है—

प्रथम प्रस्ताव ॥

सन् १८६३ रविवार २८ मई को हमारे चचा प्रोफेसर लिडिनब्रूक सहसा दौड़ते हुये घर में आते देख पड़े—उन का यह नित्य का क्रम था कि तड़के की जून कुछ प्रातराशा "नाश्ता" कर अपने काम पर जिस्का हाल हम आगे लिखें गे चले जाते थे और तीन चार बजे सन्ध्या को वहां से लौटते थे फिर थोड़े समय तक ठहर अपना प्रतिदिन का भोजन करते थे हमारे यहां पाचिका रसोई बनाने वाली एक बूढ़ी स्त्री मारथा नाम की थी इस बेचारी के कोई था नहीं इस लिये हमारे ही यहां पड़ी रहती थी—यह सबी जानते हैं कि दिन भर काम करने के उपरान्त आदमी थक जाता है और भूख के झांझ में ठीक समय पर खाने को न मिलै तो कैसा क्रोध मालूम होता है—कैसा ही सीधे सरल स्वभाव का क्यों न हो अवश्य ही चिरचिराय उठेगा तब क्रोधी मनुष्य के क्रोध का तो कुछ कहना ही नहीं—मरथा बेचारी यह बात समझ बड़ी व्यग्र थी कि अभी अदहन तक नहीं दिया गया था तब रसोई तैयार होने की कौन कहे और यह समझ कि उस्की सुस्ती के कारन प्रोफेसर साहब को ठीक समय पर भोजन तैयार न मिल सकेगा बहुत डरी और घबराई क्योंकि वह जानती थी कि उस्के मालिक प्रोफेसर साहब का मिज़ाज़ बड़ा क्रोधी और चिरचिरा है—जब उस ने देखा कि उक्त साहब चले आ रहे हैं मार्था

एक साथ हमारे पास दौड़ आई और कहने लगी साहब तो आगये अब क्या होगा—हम पहले ही से सोच रहे थे कि आज बड़ा हीरा मचेगा क्योंकि चचा बड़े क्रोधी हैं भूख की झांझ में वह जो न कर डालें—मार्था से कहा "हां चचा तो आज जल्दी लौट आये खाना तो अभी किसी तरह पर तैयार हो ही नहीं सक्ता क्योंकि ठीक समय उन के भोजन का ५ बजे है हम ने अभी अभी एक का घण्टा सुना है क्या कारण जो प्रोफेसर साहब ऐसा जल्द आज लौट आये"—

मार्था—हो आही तो गये हम तो यहां से खिस्की जाती हैं दया कर कुछ ऐसा बन्दोवस्त कीजिये कि शान्त रहें मिज़ाज न बिगड़ने पावे—

यह कह वह तो बच के चली गई और रसोई घर में जा छिप रही—अब हमी अकेले रह गये दिल धड़कने लगा क्योंकि हमारे में इतनी चालाकी और शऊर न था कि ऐसे टेढे मिज़ाज के मनुष्य को ठंढा कर सकें—हम यह सोच ही रहे थे कि बाहर का दर्वाज़ा ज़ोर से ढकेल सीढ़ी पर जल्दी २ कदम रखते हाफते हुये हमारे चचा आ पहुंचे अपनी टोपी और सोंटा कमरे की छत पर पटक हम को आवाज़ दी एकसिल एकसिल यहां आओ एक दूसरा कमरा बड़ी ज़ोर से खोल अपने खास पढ़ने के कमरे में घुस गये—जब तक हम उन के पास पहुंचें २ तब तक फिर उन्हों ने हमें ज़ोर से पुकारा और बड़ी बेसबरी से कहा क्या कर रहा है अभी तक आया नहीं—हम तत्क्षण दौड़ कर क्रोधी चचा के सामने आ मौजूद हुये—अब यहां पर पहिले इस्के कि हम आगे बढ़ें अपने चचा का कुछ परिचय देना अति आवश्यक है ॥

नाम इन का लेडिनब्रूक था जैसा इन के बारे में हम ने अब तक कहा उस्से हमारे पाठक यही समझेंगे कि यह हमारे चचा बड़े क्रोधी और बद-मिज़ाज खराब आदमी थे पर वास्तव में यह ऐसे न थे—जर्मन देश के प्रोफेसर प्रायः ऐसे ही होते हैं इन लोगों की लियाकत में कोई शक नहीं पर मिज़ाज इन लोगों का कुछ अद्भुत ही होता है हमारे चचा भी इन्हीं लोगों में एक थे जो हिन्नियम् नाम के विद्यालय में साएन्स पदार्थविद्या के "प्रोफेसर" प्रधा-नाध्यापक थे और धातुओं के स्वभाव और गुण इत्यादि पर लेक्चर दिया करते थे—चाहो उन के शिष्य लोग उस्से कुछ लाभ उठावें या नहीं उन के लेक्चर को वे लोग चाहो सुनें या नहीं उनको इस्की कुछ परवाह न थी जैसा कुंआ

में गड़ारियों की चेंचें एक ज़रूरी बात है जिस्के विना कुंआ से पानी का निकलना असम्भव होता है इसी तरह उन्को विद्या बहुत पूर्ण थी किन्तु मन लगा कर किसी को कुछ जल्दी बताते न थे—विद्या वितरण में वे एक प्रकार के कंजूस थे न केवल अकेले यही किन्तु जर्मनी के सबी प्रोफेसर बहुधा इसी ढंग के होते हैं—हमारे चचा में एक दोष भी था कि वे कठिन और एड़े बेड़े वैज्ञानिक शब्दों को उच्चारण न कर सक्ते थे-जब कभी उन्को बहुत लोगों के सामने बोलना पड़ता था तो लोग उन पर हंसते थे और उन्हें इस कारण बहुत लज्जित होना पड़ता था—लेक्चर देते २ अकसर इक बारगी आपे के बाहर हो जाते थे क्योंकि कोई २ ऐसे कड़े शब्द आ पड़ते थे कि प्रोफेसर बेचारे यद्यपि बड़ा परिश्रम और उद्यम उन के उच्चारण का करते थे तौ भी वे शब्द गले तक आकर भी ज़बान से निकलते ही न थे—कभी २ तो इस कारण उन्हें ऐसा क्रोध आता था कि हाथ पटकने लगते थे और मारे क्रोध के लाल हो जाते थे—इतना तो हम भी कहेंगे कि पदार्थविद्या के से कड़े और कठोर शब्द कहीं न मिलेंगे-उदाहरण की रीति पर दो एक शब्द यहां हम लिखते हैं आप उन को बोलिये कितने कड़े मालूम होते हैं—जैसा "टिङ्गस्टेट्स आफ मैङ्गनीज़" "टिटेनेट्सअफज़िर्कन" "राम्बाइडल क्रिस्टैलेजेशन" इत्यादि—ललितपद विन्यासरसिक जिन की कोमल वाक्य पदावली पर हारमोनियम और वीणा की मधुर ध्वनि भी हार मान लेती है उन कोकिल कण्ठ कवियों को यदि ऐसे २ कर्ण कटु शब्द बोलना या सुनना पड़े तो मैं जानता हूं उन की रसीली तबियत को न जानिये कितना दुःख हो-जो ज़बान कतरनीसी बड़ी फुर्ती के साथ चलती हो उसे इन शब्दों का उच्चारण करना पड़े और अटक जाय तो ज़रूर माफ कर देने के लायक होगी—शहर के सब लोग शब्दों के उच्चारण की उन्में अप्रवीणता के इस दोष से वाकिफ थे उन लोगों की सदा यही चाह रहती थी कि कोई कठोर से कठोर शब्द मिल जांय जिसे प्रोफेसर साहब अपनी ज़बान से न कह सकें जिस्के बोलने में उन्को अत्यन्त ही किचकिचाना पड़े तो हम लोगों को हंसने का एक मौका हाथ लगे—इसी तमाशे के खयाल से उन का लेक्चर सुनने को आते बहुत लोग थे किन्तु उस्से किसी तरह का फाइदा कोई विरले ही उठाते थे-कभी २ ऐसा भी होता था कि प्रोफेसर साहब अपने साएण्टिफिक

औजारों को इस गुस्से में तोड़ डालते थे क्योंकि उन का यह स्वभाव था कि जब बहुत बिगड़ते थे तो टेबिल पर हाथ इधर उधर पटकने लगते थे और इस तरह के हाथ पटकने में बहुधा कीमती चीज़ों का भी नुकसान हो जाता था—इन दोषों के रहते भी हमारे चचा अपने समय में पदार्थविद्या के बड़े विद्वान् थे "मिनरालोजी" धातुवाद में तो एकता थे बड़े २ विद्वान् उन का आदर करते और पदार्थविद्या के प्रत्येक विभाग में उन की राय को बहुत पुष्ट मानते थे—

अस्तु अब प्रस्तुत का अनुसरण करते हैं—उन्हों ने हम को बड़ी ज़ोर से आवाज़ दी और हम तत्काल उन के पास पहुंचे—हां तो अब उन की सूरत शकल का भी कुछ बयान करना यहां पर मुनासिब मालूम होता है—बस यह समझ लीजिये मानो सूखी लकड़ी हो दुबला पतला गोरे चमड़े का शहतीर सा लम्बा बड़ी मज़बूत काठी का एक आदमी आप की आंख के सामने खड़ा है—उन की आखें बड़ी २ और सदा घूमा करती थीं नाक लम्बी थी और चश्मा सदा लगाये रहते थे—लोग कहा करते थे उन की नुकीली नाक में चुम्बक की खासीयत है जो लोहे को खीचता है क्योंकि अदनक जो लोहे की थी उस्में चिपकी रहती थी पर यह तो उन्हें व्यर्थ बदनाम करना था उन की नाम सिवाय सुंघनी के और कुछ नहीं खीचती थी जो एक बार में ६ माशे से कम सुंघनी नहीं सुड़क जाती थी—उन की चांद में बाल एक भी न था जब सिर से टोपी उतार ये कुरसी पर बैठते थे उस समय उन की नङ्गी चांद देख यही भ्रम होता कि गोलचपाती पर किसी ने चांदी का वरक चिपका दिया हो—हमारे प्रोफेसर साहब का चाल में एक कदम हम लोगों के ३ कदम के बराबर था मुट्ठियां उन की हमेशा जकड़ी रहा करती थीं—मकान हम लोगों का छोटासा और आधा कच्चा आधा पक्का था जिस्के इधर उधर बहुत से साखू और नीम के पेड़ लगे थे और यह मकान किराये का नहीं बरन हमारे चचा का अपने निज का था—एक मैं दूसरी एक लड़की जिसे उन्हों ने पालक के माफिक कर रक्खा था बस सिवाय इन दो के और कोई नातेरिश्ते में भी दूसरा उन के न था—और दोनों को वे जी से प्यार करते थे पर उन के क्रोधी स्वभाव के कारण कोई बाहरी आदमी देख कर यही कहता था कि

चचा हमारे हम से सदा बिगड़े रहते हैं—अस्तु उन के पुकारने पर हम डरते कांपते उन के कमरे में जा पहुंचे—

द्वितीयप्रस्ताव ॥

उन के पढ़ने का कमरा क्या एक छोटासा अजायब घर था जिस्में यावत् प्रकार की धातु " मिनरल्स " या खान से निकरने वाले जो द्रव्य हैं उन के नमूने अलग २ बड़ी एहतियात से रक्खे हुये थे और हम दिन रात उसी कमरे में पड़े रहते थे इस लिये हम को भी इन बातों में बड़ा आनन्द मिलता था—इतने प्रकार के कंकर पत्थर उस कमरे मे जमा थे कि उन से एक नया मकान हमारे मकान से अच्छा तैयार हो सक्ता था—वे अपनी आराम कुर्सी पर बैठे हुये बड़ी चाह और ध्यान से एक पुस्तक देख रहे थे और हम को आया देख बोले " यह एक क्या ही उत्तम पुस्तक है " उन की यह बात सुन हम को याद पड़ गया कि हमारे चचा को अपने अवकाश के समय पुस्तक पढ़ने की भी बड़ी रुचि है परन्तु वे ऐसी ही पुस्तकों को बड़े चाव से पढ़ते थे जो बड़ी पुरानी हो और जो दूसरी जगह और किसी दूसरे के पास न निकले—उन्हों ने फिर हमारी ओर देख के कहा "यह पुस्तक नहीं बरन एक अमूल्य रत्न है" आज हम एक रद्दी बेचने वाले की दूकान की चीज़ों को देख रहे थे कि यह पुस्तक हम को मिल गई—यद्यपि हम को यह कुछ न मालूम था कि यह कौन पुस्तक है और इस्में बढ़ियापन क्या है तौ भी हम उन को प्रसन्न रखने के लिये कह दिया—"जी हां बहुत अच्छी पुस्तक है„ सच पूछिये तो हमारी समझ में कुछ न आताथा कि ऐसी रद्दी फटी फटी पुस्तक में कौनसा बढ़ियापन हो सक्ता है हमारे चचा को इस्में कौनसी बात पसन्द आई जिस्से वे इस्पर इस कदर लट्टू हो गये—यह पुस्तक अत्यन्त पुरानी चिथड़े २ जिस्के पत्रों का रंग भी पुराने पन से पीला पड़ गया था परन्तु हमारे चचा साहब को इस्की प्रशंसा के विशेषण चुकते ही न थे—फिर बक चले—"अहा हा !! क्या सुन्दर पुस्तक है इस्की जिल्द क्या ही पोढी बांधी गई है कि आज ७०० वर्ष के उपरान्त भी वैसी की वैसी बनी है चाहो जिस वरक को खोलो क्या मजाल जो ज़रा भी जिल्द पर झटका पड़े इन दिनों के जिल्दगर सौ वर्ष तक शागिर्दी करैं तौ भी ऐसी जिल्द न बांध सकैं„—प्रोफेसर साहब यह कहते जाते थे

और उस पुस्तक को खोलते और बन्द करते जाते थे—यद्यपि मन तो न चाहता था पर उन की खातिर करने को हमने पूछा "इस्में क्या विषय है—हमारी यह बात सुन वे और भी जोश में आय„ बोले—"यह पुस्तक अइस लैंड देश में बारहवीं शताब्दी की बनी है और इस्में उस देश के राजाओं का वृत्तान्त है"—अइसलैंड उस समय सभ्यता की सीमा को पहूंचा हुआ था और वहां सब प्रकार विद्या विज्ञान और दर्शनों की वैसी ही उन्नति थी जैसी इन दिनों समस्त यूरोप में हैं पर तौ भी उस्के देखने की मुझे कुछ चाह न हुई—परन्तु करैं क्या डर तो यह था कि कहीं चण्डेशचूड़ामणि हमारे क्रोधी चचा नाराज़ न हो जांय धीमे स्वर से बोल उठा "क्या अइसलैंड के राजाओं का इतिहास इस्में है निस्सन्देह यह एक अलभ्य वस्तु है पर मैं समझता हूं इस्का अनुवाद तो जर्मन भाषा में भी हो चुका है„—मेरे मुख से यह बात अच्छी तरह निकलने भी न पाई थी कि अग्नि के पुञ्ज चचा साहब चिर-चिरा उठे "क्या बक बक नाधे है अनुवाद होगया है अनुवाद में भला कभी वह रस आ सक्ता है जैसा किसी भाषा के मुख्य ग्रन्थ में रहता है फिर अनुवाद तो वह पढ़े जिसे उस ग्रन्थ की मुख्य भाषा से परिचय न हो—यह वह भाषा है जिस्की मिठास कोमलता और प्रसाद गुण दूसरी भाषा में कम पाया जाता है—इस भाषा का सा सुगम व्याकरण भी कदाचित दूसरी भाषा में न मिले गा चाहो जिस देश की भाषा के शब्द इस्में जैसे का तैसा लिख पढ़ लो„—हम को इस समय एक बात सूझ गई जिसे सुन हमारे चाचा कुछ प्रसन्न भी हो गये—हम ने कहा "क्या हमारी भाषा जर्मन ऐसी नहीं है"—मुह बनाय बड़ी हिकारत के साथ उन्हों ने उत्तर दिया "हां, है—पर इतना अन्तर है कि अइसलैण्ड की भाषा में यूनानी भाषा के समान तीन वचन होते हैं और वह प्रातिपदिक जो किसी विशेष व्यक्ति का बोधक है लातिनी भाषा के समान लिखा जाता है—संस्कृत से यह भाषा बहुत मिलती सी है—हम ने कहा इस्का छापा कैसा है मालूम होता है उस समय के लोग अच्छी तरह छापना नहीं जानते थे—

प्रोफेसर लिडनब्रूक कुछ हंस कर बोले एकसिल हम तुम को इतना अहमक नहीं जानते थे क्या तुम समझते हो यह छपी है—अरे यह पुस्तक के आकार अलग २ पत्रों में हाथ की लिखी है—जिन अक्षरों में लिखी है वे रिउ-

निक कहलाते हैं कदाचित् रिउनिक अक्षरों के अर्थ तुम नहीं जानते इस लिये यह अवश्य हुआ कि हम तुम को समझावें—यह कह प्रोफेसर साहब अपनी लियाकत छाटते हुये ऐसा एक दास्तान शुरू किया जिस्के सुनने से हमे ऊब होती थी किन्तु क्या करें दबी बिल्ली से चुप रह सुनने लगे और उन्हो ने चरखा ओटने की भांत आरंभ किया मन तो, चाहता था कि चरखा ओटने में स्वर भरने की भांत बीच २ जो पिन्न २ की आवाज़ निकलती थी उसे हम अपने मुह से कहते जाय किन्तु बड़ी ही गुस्ताखी थी और साक्षात् जमदग्नि स्वरूप चचा का क्रोध तो तब प्रलयाग्नि के समान एक बारगी धधक हमे भस्म ही कर डालता इस लिये चुपके हो रहे और चिराइते के काढ़े की भांत कान की दोनियों में रख् बेमन भी चुपचाप पीते गये—

"एकसिल ऐसा लोग कहते हैं और वहां के इतिहासों में लिखा भी है कि ओडिन नाम के देवता ने इन अक्षरों को प्रगट किया है आइसलैंड की पुरानी पुस्तकैं सब इन्ही अक्षरोंमें लिखी हैं इस लिये इन देवाक्षरों का अपमान कभी न करना तुम अभी लड़के और अल्पमति हो इस्से तुम्हें सांवधान किये देते हैं„ प्रोफेसर साहब इस तरह पर बात की धुन बांधे हुये कान की चैलियां उड़ा रहे थे और जिल्द के पन्नों को इधर उधर लौटा रहे थे कि अचानक उस्में से एक मैला कागज़ नीचे गिर पड़ा—यह एक टुकड़ा पुराने और सड़े कागज़ का था जैसा एक प्रकार का चमड़ा या कपड़ा होता है जिस्पर तेल या किसी तरह का मसाला पोत उसे मुलाइम कर लेते हैं—यह कागज़ ऐसा बना हुआ था कि अक्षर उस्पर साफ २ उभड़ सकैं—परन्तु अधिक समय बीत जाने के कारन पुराना पड़ने से उस्पर गर्द छागई थी—उस कागज़ के पृथ्वी पर गिरते ही हमारे चचा उस्पर ऐसा टूटे जैसा बिल्ली चूहे पर झपटती है और उसे उठाय बड़े चाव से पढ़ने लगे—उस्के पढ़ने की उत्कण्ठा तो हम को भी हुई पर अपने चचा का उस्के लिये झपटना देख ऐसी हँसी आई कि हम बड़े मुश्किल से उसे रोक सके—

हम पहले सूचित कर चुके हैं कि चचा साहब को पुराने लेखों का बड़ा शौक था बड़े आदर के साथ उन्हों ने इसे उठा कर मेज़ पर फैला दिया—यह कागज़ लग भग ५ इञ्च चौड़ा और २ इञ्च लम्बा था और कुछ अद्भुत प्रकार के अक्षरों से लिखा था और यह कागज़ ही मुख्य कारण था जिस्के द्वारा

प्रोफेसर लिडनब्रूक और मैं उन का भतीजा दोनों रसातल की यात्रा में कृत कार्य हुये जिस्का खयाल भी इस उन्नीसवी शताब्दी में किसी को न आया होगा—बड़ी देर तक यह उन अक्षरों को आंख फाड़ २ देखते रहे और तब बोले यह उन्हीं रिवनिक अक्षरों में से है किन्तु कुछ समझ में नहीं आता कि जो इबारत इस्में लिखी है उस्के मानी क्या हैं ? मेरे मन में तो कुछ ऐसी भ्यासी कि जो बड़े लायक और पढ़े लिखे लोग हैं उन का यह एक काइदा है कि जिस्को वे नहीं समझ सक्ते और न चाहते हैं कि कोई दूसरा उसे समझ सके चट उसे कुछ ऐसा एडा बेंड़ा अक्षर या इबारत कह देते हैं कि जिस्में उन्की लियाकत का परदा फाश न हो ज्यों २ उस्के पढ़ने और समझने के लिये दिमाग लड़ाते थे त्यों २ हमें बड़ा आनन्द होता था कि अच्छा हुआ जो ये इन कपाली अक्षरों को न पढ़ सके—उन के चेहरे और चेष्टा से बोध होता था कि ये उन के समझ जाने के लिये बड़े प्रयत्न में लगे हुये थे—थोड़ी देर बाद बोले "हैं तो यह आइसलेण्ड ही की भाषा„—मैं समझता हूं इतना भी जो उन्हों ने समझ लिया तो बड़ा काम किया क्योंकि ये जर्मनी के बड़े २ विद्वानों में प्रसिद्ध भाषाविद् नहीं समझे जाते थे फिर भी उन को कई एक भाषाओं से परिचय था और वे ऐसा इन अक्षरों को साफ करने में व्यग्र थे कि मुझे यही डर लगी थी कि बस अब इन को क्रोध आया ही चाहता है कि इतने में मार्था दरवाज़ा खोल डरते २ बोल उठी " शोर्बा तैयार है और मेज़ पर रक्खा है—मार्था का इतना कहना था कि जैसा कोई बर्र के छत्ते को छेड़ दे और वह क्रोध जो धीरे २ सुलग रहा था एक बारगी भड़क उठा बड़े ज़ोर से चिल्ला कर बोले—"शोर्बा गया जहन्नुम को और उस्के बनाने वाले भी—शैतान की बच्ची कहीं की—घड़ियों की मेहनत बरबाद कर डाला„—मार्था यह सुन सन्न हो गई और चुप चाप कमरे से बाहर निकल भगी मौका पाय उसी के साथ हम भी वहां से खिस्के और खाने के कमरे में जा बैठे—शेष—

भिन्न२ देशों में दण्ड देने का भिन्न२ क्रम ॥

जब से सृष्टि रची गई तभी से यह होता चला आया है कि एक मनुष्य दूसरे अपने हमजिन्स को स्वार्थ और डाह के पर वश हो नुकसान पहुंचाता

चला आया है—समाज में यदि ऐसे मनुष्य को जो दूसरों को दुःखदायी और हानि पहुंचाने वाला है दण्ड न दिया जाय तो समाज़ का क्रम बिल्कुल अस्त व्यस्त हो जाय और समाजग्रथन किसी तरह निभी न सके क्योंकि ऐसे दुष्ट को बिना कुछ दण्ड दिये छोड़ देना मानो बुराई के लिये उसका हौंसिला बढ़ाना संसार में बुराई को तरक्की देना और शान्ति रक्षा के मूल पर कुल्हाड़ा चलाना है—इस कारण दण्डविधान राजनीति का एक प्रधान अङ्ग समझा गया है—मनु महाराज ने अपनी संहिता में दण्डकी प्रशंसा और उसके लाभ इस प्रकार लिखे हैं—

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति ।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डंधर्मं विदु र्बुधाः ॥

दण्ड ही प्रजा का शासन करता है दण्ड ही से सब की रक्षा होती है सोते हुओं के बीच दण्ड ही जागता रहता है बुद्धिमान् लोग दण्ड को धर्म कहते हैं—

समीक्ष्य स धृतः सम्यक् सर्वा रञ्जयति प्रजाः ।
असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः ॥

वह दण्ड यदि विचारपूर्वक अर्थात् जो दण्ड के योग्य हैं उन्हीं को दिया जाय तो जितनी प्रजा सब प्रसन्न रहती हैं और यदि बिना विचारे अर्थात् जो दण्ड के योग्य नहीं हैं उन को दिया जाय तो सब ओर से सत्यानाश करता है—

अद्यात्काकः पुरोडाशं श्वा च लिह्याद्धविस्तथा ।
स्वाम्यं च नस्यात्कस्मिंश्चित्प्रवर्त्तेताधरोत्तरम् ॥

दण्ड की भय न होती तो कौआ जो केवल अमेध्य वस्तु का अधिकारी है देवताओं के योग्य पुरोडाश अर्थात् हवि जिसकी आहुति दी जाती है मन मानता जूठार डालता और इसी तरह कुत्ता भी हवि को चाट कर जूठी कर देता—किसी वस्तु पर किसी का स्वामित्व रहता ही नहीं नीच जन ऊंचों को दबा लेते—

सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिर्नरः ।
दण्डस्य हि भयात्सर्वं जगद्भोगाय कल्पते ॥

स्वतः पवित्र मनुष्य संसार में दुर्लभ है केवल दण्ड के भय से सब लोग एक मर्यादा के भीतर रह कर शुद्ध आचरण निवाहते हैं—

दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च भिद्येरन्सर्वसेतवः ।
सर्वलोकप्रकोपश्च भवेद्दण्डस्य विभ्रमात् ॥

दण्ड का भय उठा दिया जाय तो जितने वर्ण सब दूषित हो जांय और सेतु अर्थात् एक बन्धा हुआ क्रम या परिपाटी टूट फूट तहस नहस हो जाय जितने लोग हैं सब आपस में एक दूसरे को पकड़ कर भींज डालैं—सबल दुर्बल को न रहने दें—

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा ।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधु पश्यति ॥

श्याम वर्ण विकृत लाल नेत्र युक्त पाप का दूर करने वाला दण्ड जहां विचरता है—वहां प्रजा मोह के परवश हो अकार्य नहीं करतीं यदि दण्डधारी राजा विवाद के निर्णय को अच्छी तरह देखने वाला हो—

सच है यह दराड ही की भय है जो समाज में अन्न व अमान को कायम किये है—यह दराड कई प्रकार के होते हैं ऐसा निश्चय किया गया है कि हल्का अपराध करने वलों को हल्का शारीरिक दराड दिया जाय जिस्से उन्हे कुछ कष्ट उठाना पड़े या उन के माल अथवा जायदाद को किसी प्रकार से कुछ नुकसान पहुंचे ज्यों २ सभ्यता वढती गई यह दण्डविधि मुलाइम और हल्की होती गई—दण्ड विधि में इन मुलाइमीयत या दया का परिणाम कुछ अच्छा भी हुआ कुछ बुरा—बहुत से लोग ऐसे होते हैं कि यदि उन से कुछ अपराध बन पड़ा और उस्के लिये उन्हे थोड़ा घना दण्ड दिया गया तो वे अत्यन्त लज्जित हो और कैद आदि के उस कष्ट को याद कर दूसरे बार फिर वैसा अपराध करने से कोसों दूर भागते हैं और सज़ा पाने के बाद बहुधा ऐसे अच्छे मनुष्य बन जाते हैं कि उत्तम कोटि के शिष्टों में उन की गणना की जासक्ती है पर ऐसे लोग कोई दस में दोही तीन होंगे—अधिक तर तो ऐसे ही निकलते हैं कि सज़ा पाने के बाद उन के आंख का पानी ढरक जाता है महा निर्लज्ज पक्के बदमाश हो निकलते हैं मोछों पर ताव देते

अकड़ते हुये जेल के बाहर आते हैं–सज़ा क्या काट आये अपनी जान मानो उन्हो ने बड़ा ही काम किया ऐसे लोगों का पहले से भी अधिक बड़ा अपराध करना कोई अचरज की बात नहीं है तो ऐसों के लिये दण्ड का मुलाइम करना बुरे ही परिणाम के लिये है—ऐसों को तो वधदण्ड ही अच्छा था क्योंकि बदमाश जितने ही जल्द समाज से उन्मूलित कर दिये जांय उतना ही प्रजा के लिये कल्याण है–इस लिये जहां सभ्यता के बढ़ जाने से दण्डविधि में मुलाइमीयत के कारन कुछ भलाई हुई उससे अधिक नहीं तो बराबर तो अवश्य ही बुरा भी हुआ–एक बड़े लायक मनुष्य की राय है कि फांसी तो देना ही न चाहिये क्योंकि एक मनुष्य ने बेवकूफी और भूल से इतना भारी अपराध किया कि उस ने दूसरे की जान लेलिया उसके भाई बन्धुओं को शोक के समुद्र में डुबोया तो क्या ज़रुरत है कि समाज प्राण के बदले प्राणले उस भले चंगे हट्टे कट्टे मनुष्य की जान के बदले जानले संसार के सब सुखों से उसे वंचित कर दे–इससे तो यह बहुत अच्छा है कि ऐसों को जन्म मियादी कर यावज्जीव के लिये कैद में रक्खे–अस्तु इससे हमें कुछ प्रयोजन नहीं न इसी से कुछ प्रयोजन है कि पुराने समय दण्ड देने के क्या तरीके थे—आज कलभिन्न २ देशों में दण्ड देने के भिन्न २ क्रम जैसे प्रचलित हैं उन्हें यहां पर हम लिखते हैं—

रूस की महाराणी इलिज़ेबथ को इस बात का बड़ा घमण्ड था कि उस ने अपने समस्त राज्य से बधदण्ड की सज़ा उठा दिया था किन्तु रूस में अपराधी को एक प्रकार के कोड़े की सज़ा दी जाती है जो बध से भी अधिक भयानक है–अपराधी को नंगा कर दोनों हाथ उसका एक मज़बूत खम्भे में लटका दिया जाता है उसकी कमर में केवल एक प्रकार का वस्त्र पैजामे की भांत लपेटा रहता है दोनों हाथों में लोहे के सिक्कड़ पड़े रहते हैं जिन के बल वह उस खम्भे से लटका रहता है और पीठ उसकी जल्लादों की ओर रहती है यह कोड़ा जिसका नाम नौट है एक प्रकार के तात का बना होता है और सूरत इसकी ठीक कोड़े कीसी होती है वैसे ही जैसी चाबुक सवार लोग रखते हैं—चोट इसकी ऐसी तीक्ष्ण होती है कि अपराधी की पीठ ही जानती होगी—जहां कोड़ा पड़ता है वहां का मास खिच आता है और रुधिर उस स्थान से बड़े वेग के साथ वह चलता है–वास्तव में तो जान मारने की सज़ा यह नहीं मालूम होती पर इसकी चोट इतनी कड़ी होती है कि कड़े से कड़े

आदमी की जान भी १५ या २० कोड़े में निकल जा सक्ती है–किसी को आठ ही कोड़े की सज़ा हुई और उस्के दुश्मनों की इच्छा है कि वह जान से मारा जाय तो कोड़े मारने वाले को रिशवत दे देते हैं और वह उन का इशारा पाय ऐसे ज़ोर से कोड़ा मारता है कि सात ही आठ कोड़ों में उस्की जान निकल जाती है–रूस एक देश है जहां सदा कुछ न कुछ उपद्रव या विद्रोह मचा ही रहता है चोरी और डाका तो मानो एक मामूली बात है–अगर अपराधी के दोस्तों ने किसी तरह जल्लाद और हाकिमों को कुछ दे दिवाय मिला लिया तो सज़ा हल्की पड़ी नहीं तो अपराधी का जी ही जानता है—एक मनुष्य जिस ने इन कोड़ों की सज़ा अपने आखों से देखा था कहता है कि एक बदमाश जिस ने कुछ अपराध किया सज़ा पाने को लाया गया–यह आदमी दिल का बड़ा कड़ा था और हँस २ कहता था ऐसे कोड़ों को हम क्या समझते हैं परन्तु दो ही चार कोड़े पड़े होंगे कि उस्की बिल्कुल पीठ छिल गई और मास उचर २ पृथ्वी पर गिरने लगी और उस्के रुधिर से पास की भूमि चुंदरी सी सुर्ख हो गई और वह मनुष्य जो थोड़ी देर पहले ऐसा हँस २ डींगें मार रहा था अब चिल्ला २ रोने लगा और मारे कष्ट के व्याकुल हो कांख २ कहने लगा दया करो अब जाने दो फिर ऐसा न करेंगे–जब कोड़ा पड़ने के अनन्तर खम्भे से खोल दिया गया तो उस्के शरीर के टुकड़े २ हो गये थे घाव से चूरचूर था तमाम बदन से लोहू बड़े बेग से बह रहा था जान पड़ता था कि उस्में दम बाकी नहीं है–

फ्रान्स और दो एक दूसरे देशों में बधदण्ड देने का एक यन्त्र बना रहता है जिस्का नाम गिलोटाइन है एक तखता नीचे बिछा रहता है और उस्पर लकड़ी के दो खम्भे खड़े किये होते हैं इन खम्भों पर एक दूसरी लकड़ी रक्खी रहती है जिस्में अत्यन्त तीक्ष्ण लोहे के आरा के समान लगा रहता है जो तखता नीचे बिछा रहता है उस्पर ठीक उस आरे के नीचे एक लकड़ी का टुकड़ा गर्दन रखने को बना रहता है–अपराधी को हुकुम दिया जाता है कि गर्दन उस तख्ते पर रक्खे जिस्में गर्दन रखने के नाप का एक घर बना होता है और उस्के गर्दन रखते ही जल्लाद उस आरे को गिरा देता है और गर्दन बिना कष्ट ही सिर से अलग हो जाती है पहले समय में भी यूरोप में यह विधि दण्ड देने की प्रचलित थी पर बीच में रोक दी गई थी अठारहवीं शताब्दी

में डाक्टर गिलोटीन ने इसे फिर जारी किया—इसके द्वारा केवल बड़े लोगों को वधदण्ड दिया जाता है और इससे अपराधी को किसी हालत में कुछ कष्ट नहीं पहुंचता—

स्पेन में वधदण्ड के तरीके को "गैलोट" कहते हैं अपराधी को ढीला ढाला केसरिया रंग का कपड़ा पहिनाय उसके हाथ में सलीब दै देते हैं जिसे वह चूमता जाता है और पादड़ी लोग ढीला ढाला नीला कपड़ा पहिने हुये उसे घेरे रहते हैं इस तरह घिरा हुआ वह अपराधी दो चार सीढियां चढ़ "गैलोट" के पास पहुंचता है—गैलोट एक लोहे का मज़बूत खंभा होता है और उसमें एक लोहे का हल्का जड़ा रहता है जिसको जितना चाहे छोटा बड़ा कर सक्ते हैं—इस खंभे से सटी हुई एक लोहे की चौकी रक्खी रहती है जिसपर अपराधी खंभे से पीठ लगाय बैठ जाता है जल्लाद उस लोहे के हल्के को उसके गले से पहिना देता है और पेच घुमाय खूब जकड़ कर कस देता है यहां तक कि अपराधी का दम घुट कर निकल जाता है जल्लाद फांसी देते समय एक काले रंग का रुमाल भी उसे उढ़ा देता है—

सब से अद्भुत क्रम वधदण्ड का चीन देश में है पहले तो वहां इस बात की कुछ निर्खही नहीं है सब धान बाईस पसेरी किस अपराध में वधदण्ड मिलना चाहिये इसका भरपूर विचार किया ही नहीं जाता हाकिमों के मन की बात है—किसी खयाली अपराध के दण्ड देने को अपराधी की गर्दन में एक प्रकार का काठ का टुकड़ा कस दिया जाता है जिसकी मोटाई कभी को ४ या ५ इञ्च की होती है और लम्बाई इसकी चार फुट और उतनी ही चौड़ाई होती है तौल में यह काठ ३ मन से ५ तक का होता है दोनों टुकड़े अपराधी की गर्दन में कस इधर उधर कांटे ठोक कस देते हैं और जहां कांटे कसे रहते हैं वहां पर किसी बड़े चीनी हाकिम की मुहर की रहती है और उस तख्ते को कैङ्गू कहते हैं—काठ के इस बोझ को लादे अपराधी को दिन भर तमाम शहर में चक्कर लगाना पड़ता है जो कष्ट उसे होता है वही जानता है—मारे बोझ के चला नहीं जाता और गर्दन की पीड़ा से बेहोश हुआ जाता है—यदि कोई दूसरा आदमी उसपर तर्स खाय उसे खाना न खिलावे तो वह भूखा ही रहे क्योंकि उसका हाथ गर्दन की लकड़ी के कारण मुह तक पहुंचता ही नहीं—सब से बड़ी पीड़ा और दुर्दशा जो उस चीनी अपराधी को सहना

पड़ता है वह उसकी चुटैया का काट दिया जाना है जो उसे अत्यन्त ही अखरता है इन सब यातनाओं के भोगने से मौत को वह अच्छी मानता है—

अब अफिरिका में दण्डविधि का क्या क्रम है सो लिखते हैंपहले सिसिर देश का कुछ हाल लिखते हैं जो अफरिका महाद्वीप का सब से अधिक सभ्य देश समझा जाता है–इस देश में टैक्स इतना अधिक है कि जिस्से प्रजा का नाकों में प्राण है और वह कर ज़मीदार अपने असामियों से बड़ी सख्ती के साथ उगाहता है—अपराधी को पेट के बल पृथ्वी पर लेटा देते हैं और पैर के तलवे को नङ्गा कर कपड़े से दोनों पैरों को बांध दो आदमी दो तरफ से उसे खींचे रहते हैं और एक मनुष्य तांत का कोड़ा बड़े ज़ोर से उन खुले हुये तलुओं में मारता है—ज़मीदार या हाकिम जो कोड़े पड़वाता है मसनद पर बैठा हुआ तकिया लगाये पेचवान पीता जाता है और अपने दोस्तों से हंसी मज़ाक करता जाता है मानो उसके हिसाब यह एक तमाशा है–सोचने की बात है कि शरीर भर में पैर का तलवा सब से कोमल भाग है एक तिनके से भी उसे सुहराइये तो कितनी गुदगुदी मालूम होती है कि सही नहीं जाती जब उसपर कोड़े पड़ेंगे तो उस बेचारे को कितना कष्ट होगा इस दण्डविधि को मिसरी भाषा में बैसटिनेडो कहते हैं—मुसल्मानी अमल्दारी के समय हिन्दुस्तान में भी सज़ा देने का यह तरीका जारी था— शेष फिर—

विज्ञापन ॥

प्लीहाचूर्ण (स्प्लीनपौडर)

यह चूर्ण तापतिल्ली के लिये सचमुच अक्सीर है—इस्से सैकड़ों रोगी अच्छे हुए हैं और जहां दिया गया है वहां इस ने जादू कासा काम किया है–इस की बड़ाई जितनी की जावे थोड़ी है–गुण इस के केवल परीक्षा करने से मालूम होंगे—

पूर्वोक्त डाक्टर मुकुन्दलाल इस्की प्रशंसा में यों लिखते हैं यह औषध तिल्ली बढ़ जाने के कठिन रोग के दूरकरने वाली दवाओं से एक अत्युत्तम रीति से बनी है यह उस्के बढ़ने को

निस्सन्देह रोक देती है ज्वर को दूर करती और रक्त के परिवर्त्तन, पाचनशक्ति और रगों को ठीक कर देती है—

दाम एक शीशी का २)
दाम बड़ी पैकट का १॥)
तथा छोटी तथा ॥।)

२ कोष्ठशोधनवटी (ऐन्टीकनस्टिपेशन) जिन्को सदा कोष्ठ बद्ध रहता हो उन्हें दस्तावर दवा कभी न लेनी चाहिये—क्योंकि दस्त अधिक होने से दुर्बलता उत्पन्न होती है इन गोलियों में यह गुण है कि कोठे को शुद्ध करती आंतों को बल देती और पाचनशक्ति को बढ़ाती हैं—और यदि लगातार कोई दिनों सेवन कीजाय तो कोष्टबद्ध को सदा के लिये जड़ से खो देती है दो या तीन वक्सों में मनोरथ सिद्ध हो जाता है—दाम एक डिब्बी का जिस्में १५ दिन के लिये गोलियां रहती हैं १)

इन दवाओं की प्रशंसा में अनेक पत्र हमारे पास मौजूद हैं जिन को देखना हो वे लिख कर हम से मंगा लें—

मिलने का पता—आर एस एल्वर्ट और कम्पनी हेस्टिङ्गज्रोड आगरा

जो परमट के दफ्तर के उत्तर और पूरव के कोने पर और रकावगञ्ज के थाने के दक्खिन और पूरव के कोने पर है—

यह औषधी महाबला कम्पनी सौदागर चौक इलाहाबाद में भी मिलती है ॥

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० १५ सं० ११-१२ } प्रयाग { जौलाइ-अगस्त १८९२

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १५ संख्या ११। १२ } प्रयाग { जुलाइ–अगस्त स१८९२ ई०

सरअकलैंडकालविन और वाटरवर्क्स।

हमारे लफ्टिनैंट गवर्नर सर आकलैंडकालविन साहब वाटरवर्क्स के पीछे बड़ी बदनामी उठा रहे हैं—कितने इस्के विरुद्ध भी हैं वे बजाय निन्दा के उन की इस काम के लिये प्रशंसा कर रहे हैं—हम आज चाहते हैं कि इस बात को तै कर डालें कि कौन पार्टी ठीक और उचित कह रही है और उनके ऐसा कहने की दलीलें क्या हैं—ऐंग्लोइंडियन अखबार तो यही कहते हैं कि यह काम जो उन की हुकूमत का आखिरी काम है अत्यन्त ही प्रशंसा योग्य है—वे कहते हैं यहां के निवासियों का तो यह स्वभाव ही है कि किसी नई बात के जारी होने पर ये लोग बहुत भड़कते हैं जिस्का सबब ये ऐंग्लोइंडियन यह बतलाते हैं कि यहां के लोग अभी सभ्यता में उतना आगे नहीं बढ़े हैं कि किसी नई बात को देख जिस्मे ज़रा भी अकिल को ज़ोर देने से तरक्की की गई है जारी होने से न भड़कैं—पहले पहल इस देश में जब रेल चलाई गई तब लोगों ने क्या २ नहीं तूमार बांधा और अजीब २ चंडू खाने कीसी गप्पैं उड़ीं और दिहात के लोग तो बहुत दिनो तक इस्से भड़का किये नुकसान भी इतना हुआ कि सैकड़ों जंगल कट कर उजाड़ कर दिये गये लाखों बिगहा खेत का नुकसान हुआ–इस्मे कुछ सन्देह नहीं रेल से प्रजा

का थोड़ा सा नुकसान अवश्य हुआ पर अन्त को लाभ जो इससे हुआ उसे हठ धर्मी से चाहो कोई न माने किन्तु नुकसान से फायदा ज़रूर रेल के जारी होने से ज़्यादह है—इसी तरह यद्यपि अभी इस कल के पानी को लोग कम पसन्द करते हैं और इसके कारण टैक्स देने का भी थोड़ा सा क्लेश सहना पड़ा है परन्तु आगे चल कर जब इसका सुख लोग उठावेंगे तो इसके फाइदे के आगे नुकसान को भूल जायंगे—

अब दूसरी पार्टी का यह उत्तर है जो पानी का टैक्स देने के सर्वथा विरुद्ध हैं और कहते हैं वाटरवर्क्स बिल्कुल फुजूल है—हम यहां पर इतना तो अवश्य ही कहेंगे कि ऐसा वे नाहक कहते हैं कि कल का पानी लाना फूजूल है निश्चय वे ऐसा क्रोध और हठ से कहते हैं क्योंकि इससे सर्व साधारण को लाभ तो अवश्यमेव पहुंचता है—विरुद्ध पार्टी का यह कहना अलबत्ता ठीक मालूम होता है कि सर्वसाधारण के लाभ के लिये है तो गवर्नमेंट ने इसे अपने ही खर्च से क्यों न बनवाया क्योंकि ऐसे एक भारी टैक्स का बोझ सर्वसाधारण पर छोड़ना जिसके फाइदे की क़दर वे नहीं समझ सक्ते एक तरह पर वेजां है—यदि यह कहा जाय कि ब्रिटिश गवर्नमेंट की यह पालिसी है कि सर्वसाधारण के लाभ की जो बातें हों उन का खर्च उन्ही से लिया जाय और इसी पालिसी के कारण खास इंगलैंड में भी इतने टैक्स हैं कि पृथ्वी के किसी हिस्से में इतने न होंगे तब हिन्दुस्तान तो उनका जीता हुआ वशवर्ती देश है—किन्तु यह किससे कहने जांय और कौन सुनता है कि इङ्गलैंड और इंडिया की दशा में कितना अन्तर है इंगलैंड इतना सुसंपन्न और धनवान् देश है कि जो टैक्स वहां है उसका दोचन्द टैक्स वहां लगाया जाय तो उसे भी वह खुशी से बरदाश्त कर लेगा परकटी इंडिया की अपेक्षा वहां के लोगों को आमदनी इतनी है उन के लिये द्वार इतने खुले हैं कि भारी से भारी टैक्स भी उन्हें कुछ नहीं गड़ाता—

अस्तु अब यह देखना चाहिये सर अकलैंडकालविन को इससे क्या लाभ हुआ—यह बात अत्यन्त प्राकृतिक है कि राज पुरुष स्टेट्समेन सदा ऐसी ही बात करेगा या निकालेगा जिससे वह प्रसिद्ध हो उसकी वह बात इतिहासों में लिखी जाय " पास्टिरिटी,, भविष्य सन्तति उसे जाने और उसकी

गणना प्रसिद्ध राज पुरुषों में है।—भारतवर्ष के इतिहास मे यह तो अवश्य लिखने योग्य होगा कि एक ऐसे लफटिनेंट गवर्नर आये जिन्हों ने पश्चिमोत्तर के कई शहरों में कलका पानी जारी करगये—रहा यह कि लाटसाहब ने इस काम से बजाय सर्वसाधारण को खुश रखने के गवर्नमेंट को राज़ी रक्खा सो इस लिये कि प्रजा का खुश रहना उन के किस काम आता गवर्नमेंट प्रसन्न हुई तो उन्हे बड़े से बड़ा खिताब दिया गया सर्कारी खर्च से पानी की कल जारी की जाती तो गवर्नमेंट कब खुश होती और जो उपाधियां उन्हें मिलीं कहां मिलतीं—विरुद्ध पार्टी वाले इसे स्वार्थपरता कहेंगे तो कहा करें

"स्वारथ लाय करैं सब प्रीती—सुरजन मुनि की याही रीती"

इस्पर अब प्रश्न यह है कि इस समय के मनुष्य ऐसे हैं जो दूसरे के फाइदे को अपने फाइदे के पहले सोचते हों—हां यह उनका कहना यहां पर ठीक है पर सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाना और उन्हे प्रसन्न रखना जब हमारा मुख्य काम समझा गया है तो हमे सदा ऐसे ही काम करना चाहिये जिनसे पबलिक, सर्वसाधारण को लाभ ही पहुंचे और यह बात तो छोटे से छोटे सर्कारी अफसरों को ध्यान रखना चाहिये न कि ऐसे को जो एक स्थानीय गवर्नमेंट के हेड हों—इस लिये सर आकलेंडकालबिन को अपने फाइदे से आम के फाईदे का अधिक ध्यान रखना उचित था—

इस पर कालबिन साहब की बातों का समर्थन करने वाले यह कह रहे हैं—" तो क्या इस वाटर वर्क्स से पबलिक को कोई फाइदा ही नहीं है इस लिये यद्यपि सर्वसाधारण लाट साहब के इस काम से अप्रसन्न हैं तो हुआ करैं—इस्से उन का कोई नुकसान तो नहीं हुआ बल्कि एक गुना फाइदा है और यही एक प्रधान राज पुरुष का कर्तव्य कर्म है क्योंकि ऐसा काम जो गवर्नमेंट की ओर से होने पर नुकसान पहुंचाने के बदले सबों के लाभ का है तो अवश्य ही गवर्नमेंट उसे पसन्द करे गी—इसलिये उक्त लाट साहब का यह काम किसी तरह निन्दा के योग्य नहीं है—स्वार्थ साधन की कहिये तो यह मनुष्य में स्वाभाविक है और इस का दूर करना हंसी ठट्ठा नहीं है—

इस्के उत्तर में विरुद्ध दल वाले फिर भी यही कहते हैं कि सर्वसाधारण को इस्से इतना फायदा नहीं पहुंच सक्ता क्योंकि हिन्दू धरम की एक ऐसी

अड़चन लोगों के साथ लग रही है कि धर्म भ्रष्ट होने के खयाल से बहुत कम लोग इसे अपने काम में लावें गे इस्में कोई सन्देह नहीं संभव है कि यह झझक उन्में से कुछ दिनों के उपरान्त चाहो दूर भी हो जाय तो भी टैक्स के क्रोध से वे इसे बुराही कहते रहेंगे—दूसरे यह कि सब के ऊपर एक सा टैक्स का लगना चाहो इस्से कोई फाइदा उठाओ वा न उठाओ कितना महा अन्याय है—फिर गवर्नमेंट यदि सबों को प्रसन्न रखना चाहती है तो क्यों इसे अपने खर्च से न करे—टैक्स पर टैक्स का बोझ क्यों लादती जाती है ? यहां के लोगों की मुहताजी और गरीबी की दशा देख उसे उचित था कि इंगलैंड़ में जो क्रम है वह यहां न रखती इसलिये प्रजा का इस्में सरासर नुकसान है फाइदे का कहीं लेश भी नहीं है—इत्यादि दोनों दल वालों के खण्डन मण्डन की अनेक उक्तियुक्ति हैं एडिसन साहब का कहना कि दोनों ओर बहुत कुछ कहा जासक्ता है—थोड़ासा जो यहां पर लिखा गया है उस्से हमारे पढ़ने वाले निश्चय करलें कि किस्की उक्तियुक्ति प्रबल है और कल के पानी का प्रचार हमारे फाइदे का है या इस्से सब तरह पर हानि ही हानि है—

सैकड़ों नखरे के बाद अन्त में मनसून को आना ही पड़ा ॥

यों तो यह मनसून एक दो देश क्या संसार भर में चक्कर लगाया करता है और पारी २ सब ठौर यह साल में एक बार दौरा कर आता है किन्तु हिन्दुस्तान तो मानो इस्की जन्मभूमि ही है जहां के लोग मनसून के सगे बाबा मारुत के बड़े ही उपासक हैं—कबि पौराणिक ज्योतिषी तथा दूसरे २ ग्रन्थकारों ने मारुत का बहुत ही गुण गाया है यहां लोग ऋतु और मौसिमों के अदल बदल या परिवर्तन का सब लक्षण देख हवा का भरपूर रुख पहचानते हैं और महीनों के पहले से यह बतलासक्ते हैं कि इस वर्ष वृष्टि का कैसा सुयोग या कुयोग है—इसी कारण सिवा थोड़े से नई रोशनी वालों के भारत निवासी मारुत को देवता मानते हैं—यह मनसून उसी मारुत का मानो अंशावतार है जो हर साल अपने आने के पहले न जानिये कितने तरह के चोचले देखलाता है—यदि कहीं मनसून या मनसून के चेले मेघराज हमारी गवर्नमेंट के आधीन होते तो वह और कुछ चाहो हम लोगों को देती या न देती पानी तो अवश्य देती—जेठ के उतरते आषाढ के लगते ही

प्रजा को पानी की बड़ी चाह होने लगती है और वर्षात के आरंभ में थोड़ी भी देर हो जाने से विन• पानी सबों का जी पानी पानी हो जाता है—और २ महकमों की भांत गवर्नमेंट ने जब से मिट्रियाजिकल रिपोर्टर का एक महकमा कायम किया है और लाखों रुपया हरसाल हमारा इस्में खर्च करती है तब से हमारे ब्राह्मण और पण्डितों का सब पोथी पत्रा भरभूंजे के भार में झोक दिया गया और लाखों रुपया गंवाय हमने एक लव्ज़ मनसून की सीखा और प्रतिवर्ष एक नई भविष्य वाणी "फोरकास्ट,, निकला करती है—इस साल जो भविष्य वाणी मिट्रियाजिकल रिपोर्टर की ओर से प्रगट हुई उस्में यह था कि साल भर बराबर हवा का दबाव हिन्दुस्तान के हर एक प्रान्त में कम रहा गरमी बहुत अधिक पड़ी हिमालय की आसन्न भूमि में वर्फ कम गिरा इन सब लक्षणों से वर्षा बहुत अधिक होगी किन्तु अरब के समुद्र और बंगाले की खाड़ी में मोसिम की क्या चाल है इस्का पता हवा पानी नापने के दत्फर वालों को बिल्कुल न लगा और उन की भविष्य वाणी एक भी न मिली—वर्षा का आरम्भ अति विलम्ब में हुआ और जो वृष्टि अब तक हुई है वह और साल की आपेक्षा अधिक नहीं है

और और देशों में चाहो ऐसा न भी हो पर हिन्दुस्तान का जीवन मरन ह्रास वृद्धि केवल बरसात से है खास कर ऐसे समय जब यहां की पैदावारी का बड़ा हिस्सा बिलाइत ढो जाता है—यह किसे प्रगट नहीं है कि जो कुछ उद्यम यहां की प्रजा के लिये बच रहा है वह यही खेती है गवर्नमेंट को अधिक से अधिक कर भी इन्ही भूस्वामी ज़िमीदार और किसानों से मिलता है—सच पूछिये तो भारत के ग्रह ही बिगड़े हैं जब यह निश्चय है कि यहां की सर सब्जी और सैराबी केवल पानी बरसने से है इस दशा मे मनसून का यह मन होता है कि अभी न चलें—आश्चर्य नहीं इस दफा मनसून ने यह शोचा हो कि पश्चिमोत्तर जो हिन्दुस्तान भर की नाक है वहां गवर्नमेंट गली २ वाटर वर्क्स फैला रही है और यहां के रहने वालों का यह अभिमान हो चला है कि अब पानी का क्लेश हमे न रहेगा—मनसून ने भी सोचा कि उमदा से उमदा कल का पानी इन्हे मिलता है तब ऐन वख्त पर चल कर हम इन्हे क्यों कृतार्थ करें—या इस्के देर करने का यह कारण हो कि इस

साल जेठ महीने के लगते ही लोगों ने अन्दाज़ा करना शुरू कर दिया कि पानी बहुत बरसेगा और जल्द आरम्भ हो जायगा अखबार भी इस्पर धूम धाम के साथ लिख रहे हैं इन्ही सब बातों को सोच मनसून ने भी चाहा कि एक बार इन्हे जुलदें और इनके कहने को झूंठ कर दिखावें—एक बात हमारे मन में और आती है कि कदाचित् मनसून ने यह बिचारा कि सर्कार को अपनी फौज़ की सफ़ाई का बहुत खयाल रहता है प्रजा चाहो भूख से पीड़ित हो आधेही पेट खाकर दिन काटे पर सर्कार के मुल्की आदमी विलाइत के लोगों को उमदा से उमदा गेहूं खाने को मिलता ही रहे और असंख्य सेनादल जो यहां इकट्ठा है उस के खाने पीने की चीज़ भरपूर मुहैया रहे—अपनी फौज की सर्कार इतनी फिकिर रखती है और हमारी फौज़ जंगल और दुर्गम बनों को काट २ उजाड़ करती जाती है कृपा निधान गवर्नमेंट ने कभी एकबार भी न सोचा कि निरे "बरोमेटर" वायु मापक यंत्र के गिरने और उठने से कुछ न होगा बारोमेटर सौ सौ बार गिरा करो और उठा करो हमारा मन चलने का नहीं होता नहीं आते—हमारे जल्द प्रगट होने का हेतु वन और जंगलों की अधिकाई है पर फिर भी मनसून ने सोचा हमारे प्यारे मित्र भारत सन्तान जिनकी रक्षा के लिये हम इतना कष्ट उठा कर आते हैं और आज दिन जो हद्द से ज़ियादह गिरी दशा में आ रहे हैं बेचारे कहीं बोये न जामें गे—इस छोह ने उसे न रहने दिया और बहुत सा आगा पीछा कर कराय अन्त को उसे आना ही पड़ा—अस्तु सबेरे का भूला सांझ को आवै तो भी उसे भूला न कहना चाहिये अगर हज़रत मनसून देर कर आये हैं तो अपने रहने की पूरी अवधि तक कायम रहैं और अपनी कृपादृष्टि से हमें बराबर कुंआर तक ऐसाही आर्द्र करते रहें तो सब काम बनजाय क्योंकि हस्त का जल हमें अवश्य मिलना चाहिये जैसा किसी कवि ने कहा है :—

एष एव महान्दोषो शालेर्हिजकरस्य च ।
पुनर्वसु समृद्धोपि हस्तोदक मपेक्षते—

संग्रहीत लोकोक्ति-

किं सेव्यते सुमनसां मनसापि गन्धः कस्तूरिका जननशक्ति भृता मृगेण-र-गं-

कस्तूरी मृग जिसे स्वयं कस्तूरी अपनी नाभि के पैदा करने की शक्ति है कभी मन से भी क्या दूसरे सुगन्धित फूलों की महक सूंघने की इच्छा करेगा-

साधूनांसमचित्तानां मतिर्लोकोपकारिणी-पुराणम्-

साधूजन जो छोटे बड़े सब को एक समझते हैं उन की मति सदा लोक के उपकार में तत्पर रहती है—

उत्तमानां विकारेपि नापैति मरणीयता-र-गं—

उत्तम वस्तु में किसी प्रकार का विकार भी हो जाय तो भी उसका सोहावना पन नहीं कम होता—

खलः कांपट्य दोषेण दूरेणैव विसृज्यते। अपाय शङ्किभिर्लोकैर्विषेणाशीविषोयथा।

खल कपटी होने के दोष से दूर ही से बरकाया जाता है-जैसा बुराई की शंका से विष के कारण सर्प दूर से त्याग किया जाता है—

विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतंवा विष मीश्वरेच्छया-रघु—

ईश्वर की इच्छा से विष कहीं अमृत हो जाता है और अमृत विष—

अभितप्त मयोपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु—

अत्यन्त तपाने से लोहा भी जो कैसा कड़ा होता है मुलाइम हो जाता है तब मनुष्य की क्या जो बहुत क्लेश उठाने पर कैसा ही कड़े जी का क्यों न हो अति सन्ताप के कारण धीरज छोड़ कोमलता ग्रहण करता है—

कृष्यां दहन्नपि खलु क्षितिमिन्धनेद्धो वीजप्ररोह जननीं ज्वलनः करोति—रघु—

खेती के योग्य पृथ्वी आग से जल कर और अधिक उपजाऊ हो जाती है-

नधैर्येण विना लक्ष्मीर्न शौर्येण विना यशः। न ज्ञानेन विना मोक्षो न दानेन विना यशः—स—रं—श

बिना धीरज धरे धन नहीं—विना शूरता दिखलाये यश नहीं—विना ज्ञान के मोक्ष नहीं— विना दान के यश नहीं—

बलिनस्त्वकुतोभयाः—स—रं—श

बलवान को कहीं से भय नहीं होता—

सर्वत्रलाल्यते शूरो भीरुः सर्वत्र हन्यते— स—रं—श

शूर सब ठौर आदर पाता है कायर सब ठौर मारा जाता है—

कोवा हेतु रनार्याणां धर्मेवर्त्मनिवर्तताम्—भट्टिः

अनार्य को धर्म के मार्ग में कायम रहने का कोई हेतु नहीं है—अर्थात् भले लोग जो कुमार्ग पर चलैं तो निन्दनीय हों इस लिये वे कुकार्य नहीं करते पर खल को लोक निन्दा की तो कोई डर ही नहीं है तब वह क्यों फूंक २ पाव रक्खे—

उत्साहवन्तो हि नरा न लोके सीदन्ति कर्मस्वतिदुस्करेषु—वाल्मीकिः—

उत्साही बड़े कठिन काम के करने में भी क्लेश नहीं उठाते—

सोत्साहस्यहि लोके स्मिन्न किंचिदपि दुर्लभम्—वाल्मीकिः

उत्साही को कोई बात संसार में दुर्लभ नहीं है—

कवियों की सूझ का अनोखा ढंग—

सर्पइव शान्तिमूर्त्तिः श्वेवायं मानपरिपूर्णः।
क्वीव इव सावधानो मर्कटइव निष्क्रियोनितरां।

अनहोनी का क्याही उत्तम उदाहरण है—

सर्प के समान शान्तिमूर्त्ति—यह ऐसा मानी है जैसा टुकड़ा खाकर पेट पालने वाला कुत्ता—ऐसा सावधान जैसा मतवाला—और बन्दर के समान चंचलता रहित—ये सब वैसी ही अनहोनी बातें हैं जैसा बालू में तेल—

खरहा के सींग–गूलर का फूल–कछुई के स्तन में दूध–मरुभूमि में अथाह जलाशय–समुद्र को भुजा से तैरकर पार जाना इत्यादि–किन्तु कवियों की सूझ के निराले ढंग में असंभावित भी संभावित सी हो जाती है सच है "कवयः किन्न जल्पन्ति„–जैसा–

काणाः कमलपत्राक्षाः कदर्याः कल्पशाखिनः । कातरा विक्रमादित्याः कविदृग्गोचरं गताः—सभारंजनशतकम्—

काने को कमलनयन कदर्य को कल्पवृक्ष—कायर को विक्रमादित्य सा विक्रमी इत्यादि–फिर भी कवियों की मीठी बोल चाल में ऐसा माधुर्य रहता है कि मन को खींच लेता ही है—सौ सूर्य और सौ चन्द्रमा एक साथ उगें पर भीतर का अन्धकार विना सत्कवि विद्वान् की उक्ति युक्ति के दूर होता ही नहीं—

उद्यन्तु शतमादित्या उद्यन्तु शतमिन्दवः ।
न विना विदुषां वाक्यैर्नश्यत्याभ्यन्तरं तमः—

जानाते यन्न चन्द्रार्कौ जानते यन्न योगिनः । जानीते यन्न भर्गोपि तज्जानाति कविः स्वयम्—स–रं–श—

जगत के साक्षी सूर्य और चन्द्रमा जिसे नहीं जानते—योगीजन जिसे नहीं जानते–सर्वज्ञ सदा शिव भी जिसे न जानै उसे कवि अपनी प्रतिभा के वल जान लेता है—शेक्सपियर कालिदास इत्यादि कवि इसके उदाहरण हैं—

नाम रुपात्मकं विश्वं दृश्यते यदिदं द्विधा । तत्राद्यस्य कविर्वेधा द्वितीयस्य स्वयंभुवः—

यह सब दृश्य जगत् दो प्रकार का है एक प्रत्यक्ष जिसे हम देख सक्ते हैं सुन सक्ते हैं टटोल सक्ते हैं दूसरा वह जो खयाली "अइडियल„ है उसमे पहिले के सृजने वाले कर्तार या ब्रम्हा हैं दूसरे के सृजने वाले कवि लोग हैं–

साहित्यविद्याहीनानां सर्वशास्त्रविदामपि । समाजं परिपश्यन्ति समजं बुद्धिशालिनः—स—रं—श

सब शास्त्र के जानने वाले भी साहित्य शून्य हों तो उनकी समाज रसिकजनों को केवल पशु समाज भासती है—

अशिक्षितानां काव्येषु शास्त्राभ्यासो निरर्थकः । किमस्त्यनुपनीतस्य वाजपेयादिभिर्मखैः ।

काव्य जिसने नहीं सीखा उसके लिये शास्त्रों का अभ्यास निरर्थक है इस लिये कि शास्त्रों की सूक्ष्म उक्ति युक्ति उसकी समझ में आवेही गी नहीं जैसा जिसका उपनयन संस्कार नहीं किया गया उसको बाजपेय आदि यज्ञों से क्या—

शास्त्रेषु दुर्ग्रहोप्यर्थः स्वदते कविसूक्तिषु । दृश्यं करगतं रत्नं दारुणं फणिमूर्द्धनि ॥

शास्त्र के विषय अत्यन्त कठिन हैं और किसी तरह समझ में नहीं आते उन्हें कवि अपनी उक्ति के द्वारा अत्यन्त सहज कर दिखाता है—जैसा मणि सांप के फन पर हो तो उसे कोई लेने का मन नहीं करता वही आभूषण में जड़ दिया जाय तो कितना सुन्दर मालूम होता है—

हम ने ऊपर कहा है कवियों की बोली में वह मिठास है जिस्से और दार्शनिक विद्वान् रहित हैं—वीणा वेणु मृदंग आदि शब्द जिन्का कुछ अर्थ नहीं है तौ भी कान को कितना सुहाता है—यहां तो उन की मीठी बोल चाल में अर्थ की कितनी गंभीरता रहती है जिसे सुन या समझ चित्त लोट पोट हो जाता है—कवियों में भी प्रतिभा एक विशेष वस्तु है जिस्से जो उन्हे सूझती है वह दूसरों को दुर्लभ है और वह प्रतिभा ईश्वर की देन है जो सबों में नहीं होती—अलबत्ता काव्यों के अधिक अभ्यास से सरस विदग्ध रसिकों के बीच रहने से उत्पन्न हो जाती और अधिक बढ़ती भी है—जैसा काव्यप्रकाशकार ने लिखा है—

शक्तिर्निपुणतालोके शास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् । काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे—

कवित्वं जायते शक्तेर्वर्द्धते भ्यासयोगतः । तस्य चारुत्वनिष्पत्तौ व्युत्पत्तिस्तु गरीयसी—दण्डिः—

चोज़ ॥

एक साहब के डाढ़ी और मोछों के बाल पक चले पर सिर के जैसे के तैसे स्याह बने रहे इस्पर अचरज में आय उन्हों ने एक अपने मित्र से इस्का कारण पूछा—मित्र उन के बड़े बेतकल्लुफ और ठठोल थे कहने लगे—अगर माफ कीजिये तो इस्का ठीक कारण मैं बतलाऊं—"आप ने अपने मुंह से ज़ियादह काम लिया और सिर को बिल्कुल काम में नहीं लाये,,—अर्थात् आप ने सोंचा बहुत कम है और बकवाद ज़ियादह किया है—

अंगरेज़ी के प्रसिद्ध लेखक कारलाइल से किसी ने पूछा—मामूली बेवकूफ और पढ़ा लिखा बेवकुफ में क्या अन्तर है—कारलाइल ने जवाब दिया मैं खयाल करता हूं जो अन्तर हम्मे और तुम्मे है—

एक डाक्टर साहब जो अपने को चोज़ और दिल्लगी बाज़ी में एकता मानते थे किसी देहाती पण्डित से पूछा—पण्डित जी आप के शास्त्रों में लिखा है पहले के आदमी हज़ारों वर्ष जीते थे इस्का क्या कारण है—पण्डित ने उत्तर दिया इस लिये कि उस समय इतने डाक्टर और वैद्य न थे—

समरथ को वहु दोष गुसाईं ॥

बाबा तुलसीदास ने लिखा है "समरथ को नहीं दोष गुसाईं,, तुलसीदास जी बहुत बड़े अद्वितीय महात्मा पुरुष थे उन का जो कुछ तात्पर्य इस्में रहा हो पर हम को तो यही भावता है कि जितना ही अधिक सामर्थि वाला होता है वह उतना ही विशेष दोष भागी है—अचरज क्या बाबा तुलसीदास का यह सिद्धान्त वाक्य न हो बरन समर्थ बड़े लोगों को बहुधा अत्याचार दुराचार अन्याय करते देख ताने की भांत लिख दिया हो "समरथ को नहीं दोष गुसाईं,, अन्याय और अनुचित कर्म सामर्थि वालों को जो अपने बड़प्पन के अभिमान में उन्मत्त रहते हैं कर डालना कोई अनोखी बात नहीं है बरन उन की उचित कर्तव्यता ही को एक नई बात और घुणाक्षर न्याय हम मानेंगे—महात्मा ईसा का कथन है जिस्को दिया गया उसी से हिसाब लिया जायगा सच है "नंगा नहाय तो क्या निचोड़ै,, जो सब भांत असमर्थ हैं वे

करी क्या सक्ते हैं जिस्की गांठ में फूटी कौड़ी नहीं उस्से भिखारी घेर कर क्या पा सक्ते हैं—कवीश्वर कालिदास ने भी लिखा है "विकार हेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि तएवधीराः,, जिन कारणों से मनुष्य के मन मे विकार पैदा होता है उन के होते हुये भी जिन का चित्त विकृत नहीं होता वे ही धीर हैं—यों तो घी ढरक जाने पर रुखी दाल को स्वादिष्ट कहने वाले बहुतेरे हैं—जब हमे किसी तरह की ताकत या सामर्थि नहीं है तो हमे दोष किस बात का—ज़ोर की आंधी चलने पर जो लम्बे और ऊंचे पेड़ है उन्ही को टूट जाने का भय है छोटे पेड़ों को हज़ार आंधी चलने पर भी क्या हानि पहुंचा सक्ती है—हमारे शास्त्रों में दान धर्म में भी वित्त शाठ्य कहा गया है अर्थात् अपने वित्त के बाहर यज्ञ दान करने वाला दोषी समझा जाता है तो निश्चय हुआ कि कर्तव्य अकर्तव्य का यावत् बोझ सब सामर्थि पर निर्भर है इसलिये समर्थ हो कर जो फूंक २ पांव रखता है वही संसार में नेक नामी और प्रतिष्ठा का अधिकारी होता है तस्मात् "समरथ को बहु दोष गुसाईं,, यही पक्ष समंजस और पुष्ट मालूम होता है किन्तु समर्थ हो कर दोष से बचना लोहे के चने हैं वज्र सरीखे वे जिन के दांत हों वेही इसे चबा ने की हिम्मत बांध सक्ते हैं—

फेशन के प्रवाह का प्रबल वेग ॥

अंगरेज़ी सभ्यता के विस्तार के साथ ही साथ नये फेशन का चसका जैसा लोगों में विस्तार पाता जाता है उस्पर दृष्टि फैलाने से यही मालूम होता है कि असीम महासागर के विस्तार का चाहो पार मिल भी जाय पर फेशन में बारीकी और हिन्दी की चिन्दी निकालते २ कहां तक इसका विस्तार होगया है सब को एक साथ मन में बैठा लेना अति दुर्घट है—संसार के यावत् पदार्थों के फेशन और तरहदारी का थहाना तो कदाचित् सौ वर्ष की आयुष्य में भी हो सके या न हो सके हम एक ही वस्तु के नये अन्दाज़ नई तराश खराश सुबुकपन और खूब सूरती को गिनाने लगें तो पेज का पेज रंग डालना कोई बड़ी बात न होगी—"क्षणे क्षणे यन्नवतां विधत्ते तदेव रूपं रमणीयतायाः,,—छिन २ में जो नया होता रहे उसी का नाम मन का रमाने वाला सौन्दर्य या खूब सूरती है—कवि का कहा हुआ रमणीयता का यह लक्षण यदि कहीं

पूरा २ घटता हुआ देखा जाता है तो विलाइत के इन नये २ फेशनों ही में जिस्के परखने पहिचानने ज़ाइका लेने और ईजाद करने की अकिल का कुछ निराला ही ढंग है हम लोग इस्के तत्त्व को क्या जान सक्ते हैं जिन के मन को कभी ऊब और आंख को कभी घिन होती ही नहीं कि जिस वस्तु को हम सौ पुश्त से युगान युग बीत गये जैसी देखते आये जैसी बैपरते आये वैसी ही बराबर देखते और बैपरते रहेंगे उस्में कुछ अदल बदल या हेर फेर करना हमारी खसलत ही में नहीं है—वरन बहुत मौकों पर और बहुत बातों में कुछ अदल बदल पाप और निषिद्ध कर्म समझा गया है—जिन्में किसी तरह का नया परिवर्तन होआ और जूजू समझा जाता है पास जाने ही से भंभोर लेगा ऐसों की भलाई या उन का आगे का बढ़ना या उन्में किसी तरह की नई तरक्की की आशा करना निरी हिमाकत है—हमारे यहां बाबा आदम के समय से जो सग्गड़ चल निकला उस्में फिर आज तक कोई नई तरक्की न की गई,—वहां केराची से लगा कर ट्रैसैकिल बईसैकिल तक कितनी तरह की सवारी निकल चुकी हैं कि यदि उन्हे गिनाने लगें तो सौ से अधिक उन की किस्में निकलैं गी अब उन्में एक २ के साथ इतने तरह के नये २ फेशन की लर लगी हुई है कि जिस्की तराश खराश का छोर नहीं है—हमारे यहां न जानिये कब से अरबली कागज़ और नरकट की कलम सोखता की जगह बालू के सिवाय दूसरी वस्तु किसी को न सूझी वहां लिखने पढ़ने की सामग्री का कहीं ओर छोर नहीं है—विलाइत में एक २ चीज़ों के अलग २ न जानिये कितने कारखाने और उन के बिकने के लिये अलग २ हौस हैं—स्टीफेन एक स्याही के कारखाने से लखपती करोड़पती हो रहा है—राजस चाकू कैंची इत्यादि कटलरी के बदौलत मालामाल है—मिचेल हिंक इत्यादि दो तीन कारीगर केवल निब तैयार करते हैं और उसी से लाखों कमा चुके—फेबर की पेंसिल रबर इत्यादि दो चार चीज़ें ऐसी हैं कि पुश्तहापुश्त के लिये अमीर बने रहने का सुबीता है—फिर यह भी नहीं कि हमारे यहां के अरबली कागज़ की भांत एकबार एक किस्म की चीज़ के ईजाद के उपरान्त बस छुट्टी हो गई प्रतिवर्ष और प्रतिमास उस्में फेशन की बारीकी निकलती ही आती है—कपड़ा और पहनावे के फेशन में जो बारीकी निकल चुकी और निकली

ही आती है उस्की तो हद्द ही नहीं है कहां तक गिनावें फेशन के प्रवाह के प्रबल वेग से कोईबात नहीं छुटी जिस्पर इस ने अपना असर न पहुंचाया हो उठना बैठना खान पान रहन सहन कौनसी ऐसी बात है जिस्में फेशन ने अपना कदम नहीं जमा रक्खा यहां तक कि इबादत मज़हब और ईश्वर के मानने में भी फेशन का दखल है लिखने पढ़ने में पुराने फेशन की "स्टइल" इबारत से प्रचलित फेशन में बड़ा अन्तर आ रहा है—हमारे अनेक देशहितैषी सज्जन इस बात पर अधिक ज़ोर देते हैं कि अपने देशकी गर्ताक भद्दी मोटी चीज़ों पर हम सन्तोष कर उसी से अपना काम चलावें तो हमारे देश का धन बाहर न जाय—हमारी समझ में यह उन का कहना केवल रिस की खिस मात्र है एक तो कितनी चीज़ें ऐसी हैं जिन के विना एक क्षण भी हमारा निर्बाह नहीं है दूसरे उत्तम से उत्तम हलकी और दाम में भी सस्ती चीज़ आसानी से पाय किस्पर शैतान सवार है जो देश की बनी है इस खयाल के पीछे विक्षिप्त रहे—

"तातस्य कूपोयमितिब्रुवाणाः क्षारं जलं का पुरुषाः पिवन्ति"

यदि वे सच्चे देशहितैषी हैं तो उन्ही चीज़ों को देश में बनने और पैदा करने की उपाय सोचते—यह क्योंकर संभव है खास कर हिन्दुस्तान ऐसे देश में जहां आगे बढ़ने और तरक्की करने का हौंसिला ही नहीं है—यह क्यों कर सम्भव है कि सौ चन्द्रमा की चान्दनी को दबाता हुआ एलेक्ट्रिक लैम्प की रोशनी छोड़ कर आप के भद्दे और मैले चिराग की धुंधली रोशनी में अपने देश की वस्तु समझ कोई आंख फोड़े—आप क्यों न उस्से बढ़ कर लैम्प तैयार करने की उपाय सोचैं जो आप को इस प्रकार की चेष्टा में प्रवृत्त देखते और यह आशा होती कि न आज सही ४ दिन में हम अपना लैम्प बरतने लायक हो जांयगे तो खैर उस धुंधले चिराग ही से सन्तोष कर लेते पर सो तो आप ऐसे अनुत्साहियों से कुछ उम्मेद ही नहीं है—जब साधारण सी पिन तक आप की बनाई न बनी जो अत्यन्त तुच्छ पदार्थ है किन्तु कितनी उपयोगी वस्तु है—तब किस माथे आप यह कह रहे हैं कि हम विलाइत की बनी चीज़ों को बिना काम में लाये इस सभ्यता के ज़माने में अपना निर्वाह कर लेंगे—एक अन्नमात्र अपने देश का आपखालें नहीं तो कागज़ कलम दवात

स्याही कपड़ा डोरा सुई तागा दियासलाई हांड़ी फानूस चाकू कैंची कंघी आरा रन्दा रेती वसूला कौनसी ऐसी चीज़ है जो बच रही और जिस्के बिना एक छिन भी आप का चलाया नहीं चल सक्ता—माना हम ने लैम्प के बदले देशी शमादान काम में लाओगे तो दियासलाई के बदले कौन काम देगा—ढाके की मलमल तनज़ेब लखनऊ की चिकन जामदानी आप पहना करेंगे पर उस्के सीने की सुई कहां से लाओगे निदान ऐसी २ बातों के बिचारने से जान पड़ता है कि बिना परदेश की बनी चीज़ों की सहायता के एक दिन भी हमारा निर्बाह नहीं हो सक्ता—अब यहां पर यह प्रश्न उठता है यह कब से हुआ और कैसे हुआ ? क्या राम युधिष्ठिर के समय से अब तक यही हमारे सहायक रहे जो अब हम ऐसे आलसी हो गये हमारे देश के बड़े २ प्रतापी राजा महाराजा शौकीनी और वज़ेदारी की नाक हमारे नामी गिरामी अमीर उमराव नौबाब बादशाह क्या इन्ही देश की बनी दरिद्र बस्तुओं से अपना काम चलाते थे ? यदि ऐसा है तो आप के प्राचीन ग्रन्थों में जो चौसठ कला और अनेक शिल्प विज्ञान दरसाये गये हैं वह सब दन्तकथामात्र हैं—कारण इस्का यही है कि उस समय इस उन्नीसवीं शताब्दी की सभ्यता का प्रचार न हुआ था दूसरे यह कि अब तो हम पेट के अन्न को भी तरसने लगे बड़े २ कारखाने खोलने के लिये जिस्में हम उन नफासत की चीज़ों को तैयार कर सकैं रुपया भी तो चाहिये कहावत है "जब दांत रहे तब चने न थे जब चने हुये तो दांत नहीं है" जब देश में धन था तब ऐसी २ उन्माद की बातें हमे सूझी कि कभी उस धन से भावी उपकार और तरक्की की कोई बात न सोच सके और अब आंख भी खुली तो कुछ कर नहीं सक्ते सब ओर से जकड़े हुये हैं हाथ मल सिर धुनते और पछताते हैं—एडिटर महाशय आप भूलते हैं हम ने तो वह चक्कान छान ली है कि नशे में गड़गाप हैं हम तो एक अपूर्व सुख का अनुभव कर रहे हैं हम क्यों हाथ मलैं और पछतांय हमे कमती क्या है जिस ने मुह चीरा है खाने को देही गा तब थोड़े से पढ़े लिखे जिन के दिमाग़ में फितूर सा आ रहा है बक्का करें कौन उन का झीखना सुने अभागी रात के पैदा ये झीखा ही करेंगे पर यार लोग अपनी चैन ही में काटैंगे ।

सच है एक चना भार नहीं फोड़ सक्ता देश में दो चार साहसी जिन के जी में चोट है अपने पास वालों को तरक्की करते और आगे बढ़ते देख

खुद भी कुछ किया चाहते हैं तो उन दो चार के किये हो क्या सक्ता है जब तक समुदाय का समुदाय कमर बांध सन्नद्ध न हो—इंगलैंड या समस्त योरप जो आज दिन तरक्की के छोर को पहुंच रहा है सो एक दो आदमियों के किये नहीं बरन देश का देश परिश्रम कर रहा है और यह उन की मेहनत ही है जो भांत २ के नये फेशन में परिणत हो संसार भर को प्रबल प्रवाह के वेग से आप्लावित करता हुआ अपने ईजाद करने वालों को सकल ऋद्धि सिद्धि का महाअधिकारी बनाता जाता है—

विश्वास की कचाहट "सुपरस्टिशन,,

मनुष्य के लिये जहां अनेक प्रकार की आधि व्याधि संसार में नियत की गई हैं वहां हमारे में विश्वास की कचाहट या दुर्बलता "दीनबातिली" भी एक है—जिस्से हमारी स्वच्छन्दता और आनन्द में बड़ा विक्षेप पड़ता है और यह केवल अनपढ़ों ही में हो सो नहीं बरन पढ़े लिखे प्रसिद्ध विद्वानों में भी कुछ न कुछ इस्का लगाव हुई है—न केवल हिन्दुस्तान ही में बल्कि योरप के सुसभ्य देशों में भी इस्का विस्तार है और न इसी समय किन्तु पूर्वकाल के विद्वानों पर भी विश्वास की इस कचाहट का पूरा ज़ोर था—किसी काम के आरंभ में छींक का होना यात्रा के समय बिल्ली का राह काट जाना कुत्ते का रोना चेचक के उपद्रव में चौराहे पर गदहे को चना खिलाना इत्यादि इस्के उदाहरण हैं—जेम्स जो इंगलिस्तान के बादशाहों में प्रसिद्ध पण्डित बादशाह था ऐसी भारी लियाकत रखने पर भी डाइनों में उस्का बड़ा विश्वास था—इस विषय पर एक किताब भी उस ने छपवा दिया था जिस्में डाइनों का होना भरपूर साबित किया गया था—मारटिन लूथर जो दिल का बड़ा मज़बूत था वह भी लिखता है कि मैं ने एक समय भूत देखा है—यूनान देश का प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात अपने को "सुपरस्टिशस" मानता था तो अब इस बात के कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि बड़े २ बुद्धिमान भी विश्वास की कचाहट से खाली नहीं हैं—हमारे यहां तो इस्का एक शास्त्र समझा गया है फलित ज्योतिष के ६४ अंग में यह एक अंग है—समरसार और शकुनवसन्तराज आदि कई एक ग्रन्थ इस्के विद्यमान हैं जिन्में

पशु और पक्षियों की बोली का ज्ञान कि वे क्या कह रहे हैं और उन की बोली तथा चेष्टा और गति इत्यादि की पहचान इस ढंग से कही गई है कि उसी पर शकुन और मुहूर्त्त बांधे गये हैं–एक ऐसी अद्भुत कारीगरी उन ग्रन्थों में देखलाई गई है जो निस्सन्देह एक प्रकार का साएन्स कहा जा सक्ता है–हमारे यहां चन्द्र सूर्य के ग्रहण के समय राहु के ग्रसने का खयाल जिस्पर अंगरेज़ी के बड़े २ विद्वान् हँसते हैं और ऐसे समय हमें गङ्गा स्नान आदि धर्म के काम में प्रवृत्त देख हमें मूर्ख बतलाते हैं वे अपने यहां तो देखें कि उन के बीच कैसी२ बेहूदा बातें विश्वास के दुर्बलता की प्रचलित हैं—

घुन के काठ के घुनने का शब्द सुनते ही यूरोप के लोग अत्यन्त ही भयभीत होते हैं जिस घर में घुन का शब्द हो तो उसे ये लोग यही मानते हैं कि मृत्यु का सन्देसा भेजा गया है कोई प्राणी उस घराने का अवश्य मरे गा—बीर से बीर पुरुष शेर के दड़कने से इतना नहीं डरते जितना कुत्ते का रोना सुन सहम उठते हैं–अस्तु अब देखना चाहिये विश्वास की यह कचाहट हमारे में कैसे आती है––प्रत्येक मज़हब या धर्मसम्बन्धी शिक्षा यद्यपि इसका प्रधान हेतु है तौ भी चित्त में अचरज का पैदा हो जाना भी एक दूसरा कारण इसका हो सक्ता है–जैसा कुत्ते का रोना एक ऐसी बात है जिस्से एक प्रकार की उदासी अवश्य छा जाती है और उस उदासी का असर चित्त पर ऐसा व्यापता है कि कुछ न कुछ विस्मय उत्पन्न कर देता ही है—उसी उदासी और विस्मय की हालत में हरतरह के बुरे खयाल और होनहार कोई अशुभ घटना की तरफ चित्त दौड़ता है—कैसा ही मज़बूत तबियत का आदमी हो अपनी दृढ़ता को नहीं कायम रख सक्ता इसी का नाम विश्वास की कचाहट "सुपरस्टिशन" है—

कुत्ता या बिल्ली जिस घर में या जिस महल्ले में रहते हैं वहां के एक २ आदमियों को वे पहचानते हैं—इतर पशुओं की अपेक्षा इन की बुद्धि इस बात में बड़ी पैनी होती है और मौत की बू ये लोग पहचान लेते हैं इस कारण उन का रोना अवश्यमेव किसी प्रकार की अशुभ सूचना देता है—बहुत से प्रचलित "सुपरस्टिशन" ऐसे भी हैं जो विज्ञान और यूरोप के नये२ साएन्स के द्वारा घटते जाते हैं ज्यों२ साएन्स की उन्नति होती जाती है और

लोगों के चित्त से अज्ञान तिमिर हटता जाता है त्यों२ उन का कच्चा विश्वास भी दूर होता जाता है जैसा ग्रहण इन्द्र की धनुष पुच्छल तारे इत्यादि–ग्रहण को लोग पहले यही समझते थे कि राहु दैत्य सूर्य और चन्द्रमा को पर्व२ में आकर लीलता है सो अब नये साएन्स के प्रकाश ने सिद्ध कर दिया कि यह पृथ्वी और चन्द्रमा की छाया है–इसी तरह पर मेघ के बिन्दु से प्रतिफलित सूर्य की किरणों का धनुष के आकार काला पीला लालरङ्ग आकाश में देख पड़ना ही इन्द्र की धनुष है–पुच्छल तारों के आकार में जब तब केतुओं का देख पड़ना एक साधारण बात है जैसे और सब ग्रह और तारे हैं वैसे ही केतु भी हैं इससे किसी तरह के उत्पात की शङ्का मन में लाना केवल विश्वास की कचाहट मात्र है—

शीतला की बाधा में चौराहों पर जो गदहों को चना खिलाने की रीति हम लोगों में चल पड़ी है इसका कारण भी यही मालूम होता है कि मनुष्य को घबड़ाहट के समय तिनके का भी सहारा बहुत है घबड़ाहट में किं कर्त्तव्यता मूढ़ हो आदमी विचारशक्ति को मन से ढीला कर देता है–विस्फोटक की अधिष्ठात्री देवी का इस पशु के साथ विशेष सम्बन्ध समझा गया है इस लिये उसे चना खिलाना शीतला के शान्त करने की एक उपाय समझी गई है—

अब सोचना चाहिये मनुष्य का विश्वास क्यों ऐसा कच्चा होता है कि छोटी असम्भवित बातों को सम्भवित मान उसपर जम जाता है–मैं समझता हूं कर्ण इन्द्री इसका मुख्य हेतु है ध्यान जैसा सुनी हुई बातों पर जल्द दौड़ जाता है वैसा और२ ज्ञानेन्द्री के आधीन नहीं रहता–आप सुन लीजिये कि उस जगह कुछ भय की शङ्का है तत्क्षण आप के चित्त में भयावनी सूरतों की कल्पना होने लगेंगी—

कुत्ता का रोना सुन यदि मृत्यु की शङ्का मन में आवे और मृत्यु हो भी जाय तो वह विश्वास जिसे हम कच्चा कहते हैं दृढ़ हो जाता है—अन्त को हम यही कहें गे कि इस विश्वास के कचाहट की स्थिरता बहुत ही थोड़ी है जब तक हमें सत्य का परिज्ञान नहीं होता तभी तक " सुपरस्टिशन " की अवधि है और यह भी सम्भव है कि जिसे हम विश्वास की कचाहट कहते हैं कदाचित् वास्तव में सत्य हो इससे निश्चय होता कि मनुष्य के जीवन के

साथ सुपरिस्टिशन का होना भी एक आवश्यक बात है और अनेक आधि व्याधि जिस्में हम अहर्निश पच्यमान रहते हैं उसी का यह भी एक अंग है—

दमयन्तीस्वयंवरनाटक ॥

नान्दी

यस्यालीयत शल्कसीम्नि जलधिः पृष्ठे जगन्मण्डलं—
दंष्ट्रायां धरणी नखे दितिसुताधीशः पदे रोदसी ।
क्रोधे क्षत्रगणः शरे दशमुखः पाणौ प्रलम्बासुरो—
ध्याने विश्वमसावधार्मिककुलं कस्मै चिदस्मै नमः ॥

सूत्रधार का प्रवेश ॥

सूत्र—आज हमारे भाग्य से इस रङ्गशाला में जितनी बात अभिनय की उपयोगी सबों का पूरा सामान संयोग वश इकट्ठा है—देशदेशान्तर के सुयोग्य सुशिक्षित ज्ञानी मानी विद्वानों की यह समाज जो कृपा कर हमारा करतब देखने को तन मन से उत्कण्ठित हो रही है—दूसरे उदारचरित्र पुण्य श्लोक महापुरुषों के अग्रणी राजर्षि राजा नल तथा लक्ष्मी और सावित्री की प्रधान मूर्ति पतिव्रताओं की सिरमौर श्रीमती दमयन्ती के स्वयंवर की लीला का अभिनय—तीसरे हम लोग जो नाटक करने में एकता न सही तो भरतमुनिप्रणीत नाट्यशास्त्र में पूर्ण अभ्यसित अपने को अवश्यमेव मानते ही हैं तो अब क्या कसर रह गई कि हम लोग अपने को कृतकृत्य न समझें—अस्तु अपने साथियों को बुलाय अब तौर्यत्रिक का आरंभ करें—मारिस—मारि (आधा अक्षर मुह पर आधा पेट में था कि नेपथ्य की ओर देख) अरे यह क्या साक्षात् दुर्वासा की मूर्ति आर्य भागुरायण बड़े वेग में क्रोध से भरे इधर ही आ रहे हैं—एक तो यह हमारे राजा का बड़ा मुह लगा निरा अविवेकी दूसरे इस समय न जानिये क्यों नाक भौं सिकोड़े कुछ भुनभुनाता सा चला आ रहा है हम लोगों को देखते ही भस्म कर डाले गा इस लिये इसके सामने रसना उचित नहीं (जाता है) इति प्रस्तावना ।

आर्यभागुरायण का प्रवेश ॥

भागुरायण—न जानिये उस चितेरे रांड के सांड़ ने हमारे प्रिय मित्र राज को कैसा चित्र दिया है कि जब से उन्हों ने उस चित्रपट को देखा है तब से राजपाट का सब काम काज छोड़ अपने धैर्य गुण में बट्टा लगाते निरन्तर उदासीन मनमलीन रहते हैं—राजा ही ठहरे उन्हे कौन मना करने जाय कि यह आप क्या कर रहे हैं—सच कहते हैं इन बड़े आदमियों को कहीं से बुद्धि का लेश भी नहीं रहता मोम की नाक जिस ने जिधर को उसेठा उधर ही को मुड़ गये दिन भर बैठे २ यही खेलवाड़ देखा करते हैं जी तो बहुत कुढ़ता है पर क्या करैं मुह पर कोई बात नहीं ला सक्ते—कहावत है एक तो तितलौकी दूजे चढ़ी नीम—एक तो यों ही यह बुद्धि का सागर था दूसरे अब तो प्रेम के बन्धन में फँस गया है ईश्वर करे किसी की किसी से लगन न लगे पञ्चशर के पैने बाण ऐसे चुभते हैं कि उस्से जो पीड़ा पैदा होती है उस्की साखी भरने वाले केवल दो ही होते हैं एक तो दूध के फेनसी कोमल शैया दूसरे पूर्ण चन्द्रमा की चांदनी—पहले तो इस ने अपनी इस लगन के छिपाने का बहुत सा यतन किया—पर हम लोग भी तो उड़ती चिड़िया पहचान लेते हैं लड़कपन से आज तक एक छिन के लिये भी साथ न छूटा क्योंकर सम्भव था कि हम से वह अपने मन की बात छिपा लेते—इस लिये अब बनविहार के बहाने उसे छिपाया चाहते हैं—हमे आज्ञा दी है कि तुम पहले से जा उद्यान के रखवालों को सावधानकर दो कि वे हमारे विहार की सब सामग्री इकट्ठी कर रक्खें—सो हम तो कभी के आये हैं पर वह अभी तक न देख पड़ा—

कामियों की सी चेष्टा प्रगट करते चित्त पट हाथ में लिये राजा का प्रवेश।

राजा—(उत्कण्ठा सहित चित्र देख) इस चन्द्रमुखी के मुख की शोभा के आगे चन्द्रमा की लोनाई की प्रशंसा व्यर्थ है—इस चम्पकवरनी के अंग प्रत्यंग की दमक के साथ सुवर्ण की उपमा देना निरा अनारीपन है—कमलों से इस मृगनयनी के विशालनेत्रों को मिलाना साफ़ २ भूल है—मन्द मुसक्यानयुक्त इस्के अधरसुधारस का पानकर फिर अमृत पीने की हवस सर्वथा अनुचित

है—कन्दर्प तुम्हे धिक्कार है कि इसकी भौं रहते तुम अपनी फूलों की धनुष का अभिमान रखते हो—सच है विधाता ने फिर २ से बहुत से पदार्थों को भूल कर बनाया है नहीं तो रूपमाधुरी निकाई और लीनाई की खज़ाना इस नायिका के रहते चन्द्र चकोर पद्म आदि पदार्थों के सृजने का क्या काम था—

भागुरायण—(राजा के पास जा कर) महाराज की जय हो आप को दो चिंता देख मेरे मन में भांत२ की शंका उठती है—महाराज क्या इसका भेद मुझ से कहने योग्य नहीं है—

राजा—(उसकी ओर देख) मित्र क्यों न कहें गे अपने हितू से सुख या दुःख का भेद कह देने में बोझा हलका हो जाता है—गुप्त भेद को थाती के समान सीत कर रखने वाला सिवाय मित्र के दूसरा कौन है—

भागु०—महाराज जो ऐसा है तो मैं सावधान हूं आप कहिये—

राजा०—मित्र आज मैंने भोर को स्वप्न में एक ऐसी सुन्दरी देखा है कि उसकी देह की कान्ति मानो चान्दनी की सपत्नी थी उसी क्षण से मेरा मन मन्मथ के बिकार से मथ रहा है—

भागु०—महाराज मैं जान गया आप सच २ महिलालम्पट हो मित्र तब क्या हुआ—

राजा०—वयस्य यह मुझे अपने मदमाते नयनों के कटाक्ष बाण से बेधती चन्द्रोदय की शोभा को भी दबा देने वाला मोतियों का हार झटपट अपने उरोज से अलग कर "ओं नमो मन्मथाय" यह मंत्र पढ़ मेरे गले में छोड़ दिया तब से वह मेरे गले की हार हो गई और मैं अपने चित्त के चित्रपट में उसे लिख दास बन गया हूं—

भागु०—(यज्ञोपवीत हाथ से छू) ब्रह्मनई का यह धागा हाथ में ले कहते हैं कि हम ऐसे कुलीन महाब्रह्मणों के आशीर्वाद से यह स्वप्न सत्य हो—

राजा—(खेद से मुसकिराता हुआ) मित्र न जानिये वह स्वप्ना था या हमी को कुछ भ्रम हो गया है वह चपल नेत्र वाली तो नहीं देख पड़ती

पर यह हार अब तक कण्ठ में पड़ा हुआ है—(कामियों कीसी चेष्टा प्रगट करते) भगवन् कुसुमायुध अपने इन बाणों को कृपा कर हम से अलग कर लीजिये इन बाणों के लक्ष्य तो योगीराज सदाशिव भी हो गये हैं तब हम ऐसे काम किंकरों की कौन जिस्का मन शिरीष पुष्प के तन्तु से भी अधिक सुकुमार है–(चित्रपट को फिर २ देख और स्वप्न का स्मरण कर) न जानिये यह वही चन्द्रमुखी है जिसे मैंने स्वप्न में देखा है या कामदेव का कोई आयुध विशेष है—क्योंकि दुग्ध के समान मुग्ध और उज्ज्वल इस्के एक २ अंग हैं–कमलदल गर्वमोचन इस्के चौड़े नेत्र हैं—मृडाल कोमल भुजदण्ड हैं—निःसन्देह यह अपने बिम्ब के समान अधर से मूंगे की आभा को तिरस्कार कर रही है कहां तक गिनावें कवियों की कल्पना में जितनी उपमा हैं उन सबों का प्रत्युपमान इस्का एक २ अंग है जब से मैंने इसे देखा है तब से चित्त में कुछ ऐसा उचाट हो गया है कि कोई उपाय उस्के बहलाने भी नहीं देख पड़ती–

भागु०—महाराज आज आप को यह क्या हो गया कि अपने धैर्य गुण में बट्टा लगाय विक्षिप्त से हो रहे हो कि जो कुछ तुम ने कह रक्खा उस्की भी कुछ सुध बुध नहीं है आप ने दिल बहलाव के लिये बनविहार की आज्ञा दी थी सो क्या भूल गये—यह क्रीडोद्यान का मार्ग है चलिये (दोनो गये)

२ गर्भाङ्क ॥

स्थान

क्रीडोद्यान

भागु०—महाराज देखिये ये वृक्ष बूढ़े तपस्वियों की भांत वायु से कांपते अपने पाणिपल्लव में फल फूल लिये आप को भेंट दे रहे हैं—

राजा०—(हाथ से उन वृक्षों को छू कर) मित्र तुम स्वस्थचित्त हो तुम्हें ये वृक्ष ऐसे ही भासित होते हैं पर मुझ वियोगी को तो अधिक व्यथा उपजाते हुये उस ललनाललाम की और भी सुध दिलाते हैं–इन रम्भा वृक्षों को देख उस रम्भारू के ऊरू की याद आती है—चन्दन की सी सुगन्धि देने वाले पक्व बेल के फलों को देख उस्के उरोज की ओर खयाल जाता है—मित्र इस

सशोक का अशोक नाम किसने रक्खा है यह अपने लाल पत्तों से जलते अंगारों के समान काम के बान हम पर छोड़ रहा है (हवा में उड़ते फूलों की पराग देख) बाण चलाते चलाते जब कन्दर्पदेव का हाथ पसीज उठता है तब इन्हीं फूलों की धूलियों को मल अपने हाथ का पसीना सुखलाते हैं–(कोकिला का कुहूनाद सुन) कामदेव की प्रियसखी यह कोकिला हमें दुःखी देख कैसे मधुर स्वर से गान कर रही है–सच है (खलाः पर विपत्तिषु) (आगे चल) देखो ! यह माधवी लता नख से सिख तक फूलों से लदी कैसा शोभा दे रही है किन्तु उस सर्वाङ्ग सुन्दरी के दर्शनों के प्यासे इन नयनों को किसी तरह सुख नहीं देती—मित्र कोई ऐसी उपाय सोंचो जिस्में मेरा मनोरथ सफल हो–

भागु०–(हंस कर) मित्र जैसा अहिल्या के जार इन्द्र का सहायक वज्र है वैसा ही दमयन्ती कामुक आप का साहायक मैं हूं–पर इस समय हम तुम दोनों की बुद्धि गोठिल पड़ गई—अच्छा ठहरिये मैं समाधि लगायउस्के मिलने की कोई उपाय सोचता हूं पर देखिये आप बीच ही में रोकर कहीं मेरी समाधि न भंग कर देना—

(आंख मूंद नाक दबाय समाधि लगाता है)

भागु०–(आंख खोल) मित्र उस्के मिलने की उपाय हम ने सोंच लिया है–

राजा०–कहिये क्या—

भागु०–यह कि उस रांड़ की जाई का एक बार फिर ध्यान कर गहरी नींद में गड़गाप हो जाइये–अपने मनोरथ को जल्द पा जाओगे—

राजा०–कन्दर्प के पैने बान हृदय में चुभ रहे हैं स्वप्न में उस सुन्दरी का समागम करने वाली नींद कहां से आ सक्ती है—मित्र आगे जो यह सरोवर देख पड़ता है चलो इस्में जलविहार के द्वारा इस वियोग के सन्ताप को दूर करें—

(दोनों सरोवर के समीप जाते हैं)

राजा–अहह इस सरोवर की गहराई से अनुमान होता है कि रत्ना-

कर मानो मथ जाने की भय से अपने रत्नों को चुरा कर इसी में आ छिपा है—इस्के जल की स्वच्छता से अनुमान होता है मानो हिमालय का सम्पूर्ण हिम द्रव होकर इसी में आ रहा है अथवा चन्द्रमा की चान्दनी जलभाव को प्राप्त हो गई है-मैं समझता हूं त्रिभुवन की पुण्य राशि का पुञ्ज जलरूप हो इसी सरोवर में आ रहा है इस्का जल ऐसा निर्मल है जैसा मुनियों का मन निर्मल रहता है—(उस क्रीडासर के समीप एक हंस को विचरते देख) अहह इस्का कलनाद कानों को कैसा सुहावना मालूम होता है मित्र इस्का सोने का सा पङ्ख देख मेरा मन इस पक्षी के पकड़ने को अत्यन्त उत्कण्ठित हो रहा है (दहिनी आंख और भुजा का फरकना) मेरी दहिनी आंख और भुजा भी फरक रही है-इस्से मालूम होता है मेरे कार्य की सिद्धि जल्द हुआ चाहती है-

भागु०—महाराज मेरी जीभ भी फरक रही है क्योंकि आप का काम सिद्ध हो जाने पर मुझ दरिद्र ब्राह्मण को भोजन मिले ही गा-ऐसे यजमान मिलैं तो मैं अपने घर में लड्डुओं का पुल बांध दूं—

राजा०—चलो मित्र इसे पकड़ें—

भागु०—महाराज आप जाइये मैं यहीं बैठा आप का काम सिद्ध होने के लिये माला फेरता हूं—

गरदन झुकाये बैठा हुआ हंस को राजा पकड़ लेता है हंस फड़फड़ाने लगता है और चोच से राजा को हाथ में काटता है-सरोवर के सब जलचर पक्षी आर्त नाद से चिल्लाते हुये आकाश में उड़ने लगते हैं-

(ने पथ्य में) यह वसुधा अब रहने के योग्य नहीं है जिस्के तुम ऐसे अन्यायी राजा हो-हे नृप तुझे धिक्कार है जिस्का मन तृष्णा से ऐसा चंचल हो रहा है कि तुम इस पक्षी के सोने के पंख पर लोभ उठे और ऐसा अन्याय करने पर प्रवृत्त हो गये-कहीं मेह की झीसियों से समुद्र बढ़ सक्ता है-इतने सुवर्ण से तुम्हारी कितनी संपत्ति बढ़ जायगी-राजा यह हंस तुझे पुण्य श्लोक समझ तुम्हारे विश्वास पर था इस्से इस्के वध में केवल जीवहिंसा ही का पाप नहीं है वरन विश्वासघात का पातक भी है धर्मात्मा लोग जो अपने विश्वास पर हैं उस्के साथ कपट नहीं करते चाहो वह अपना वैरी भी क्यों न

हो–धिक् तुम कैसे पुण्यश्लोक हो "पुण्यश्लोको नलो राजा" यह झूठ ही लिख दिया गया है–राजा तुम्हारे इस वीरता के विक्रम को धिक्कार है जो तुम कृपा के योग्य इस पक्षी पर भी अपना पौरुष प्रगट करते हो क्या तुम्हें कहीं उद्भट योद्धा नहीं मिलते जिसके साथ तुम अपनी बीरता का प्रकाश करो–मुनियों कीसी वृत्ति धारण किये फूल सेवार और कमल की नाल से अपना निर्वाह करने वाले इन पक्षियों पर भी तुम अपना अधिकार प्रगट करते हो? धिक!!! मा इसकी अत्यन्त जप्पल बुढ़िया है और हाल की प्रसूता हंसिनी जो परमसाध्वी और पतिव्रता है उन दोनों का पालन पोषण इसी के आधीन है–हे निर्दयी विधाता ऐसे पर भी प्रहार करते तुम्हे लज्जा नहीं आती–मेरे लिये मृडाल लिये आता होगा ऐसा इसकी प्रिया सहधर्मिणी इसकी राह परखती होगी पर जब पक्षियों से अपने वैधव्य का कारण इसकी दुर्दशा का यह हाल सुनैगी उस समय उस गरीबनी की क्या दशा होगी निस्सन्देह उस जून उसे दशो दिशा सूनी मालूम पड़ेगी—इसके सोच में जब वह चित्राङ्गी भी यमलोक को पधार जायगी तब उन बच्चों की कौन सुध लेगा जो भूख से पीड़ित हो वृक्ष से पृथ्वी पर गिर गतप्राण हो जांयगे तब तो जड़ पेड़ से इसके कुल का नाश हो जायगा—

राजा–(लज्जित और दयार्द्र हो) (स्वागत) मैं यह क्या अनुचित कर्म करने में प्रवृत्त हुआ (प्रकाश) पक्षिराज तुम सुख से प्रयाण करो मैंने तुम्हारा रूप देख लिया जिस लिये मैंने तुम्हें पकड़ा था—

(हंस का त्याग)

(हंस चोंच से अपने परों को खजुआता हुआ चारो ओर उड़ फिर राजा के हाथ पर आकर बैठ जाता है) नेपथ्य में–धर्म का मर्म जानने वालों ने भी राजाओं के लिये आखेट की मनाही नहीं की—हे स्मर सुन्दर आप ने इस हंस को पकड़ फिर छोड़ दिया यह आप के धर्मशीलता की अन्तिम सीमा है—राजा तुम इसे क्षुद्र पक्षी मत समझो यह कमलासन ब्रह्मा के वाहन जो हंस हैं उन के वंश का है स्वर्गगङ्गा में उत्पन्न सुवर्ण कमल की नाल इसका भोजन है इसी से इसके पक्ष सोने के हो गये हैं क्योंकि कार्य के गुण कारण में भी आते

हैं ऐसा दर्शनिकों का सिद्धान्त है—मनुष्य जैसा अन्न खाता है उसी के अनुसार उसका शरीर उत्पन्न होता है—यह स्वच्छन्दचारी है भूलोक विलोकन में उत्कण्ठित सर्वत्र भ्रमण किया करता है-तुम्हारा कुछ प्रत्युपकार करने की इच्छा से यह तुम्हारे पास फिर आया है—

राजा—(चित्रपट आगे रख) मैं जान गया यह हंस नहीं कोई देवयोनि विशेष है देवता लोग तो मनुष्य के मन की बात जान सक्ते हैं तब मुह खोल कर कुछ कहने की क्या आवश्यकता है-साक्षात् रति की सहेली इस नायिका का पता मैं चाहता हूं कि यह कौन है और किस कुल को इसने अपने जन्म ग्रहण से पवित्र किया है-निस्संदेह मेरा यह काम आप के द्वारा सिद्ध होना सर्वथा सम्भवहै—

नेपथ्य में—राजा यह भीमसुता दमयन्ती का चित्र है जिसे राजा भीम दमन ऋषि की कृपा से प्राप्त हुआ है—त्रिभुवन में जितनी सुन्दरी हैं उन सबों के सौन्दर्य मद को इस ने अपनी देह की शोभा से दमन किया इसी से इसका दमयन्ती यह सार्थक नाम रक्खा गया है—राजा उस गुणनिधि भीम से उत्पन्न तुम इसे साक्षात् लक्ष्मी समझो—इस ने अपने नेत्रों की शोभा से नलिन को मलिन कर डाला और हरनियों के गर्व को हर लिया—चन्द्रमण्डल की शोभा का जो कुछ सार था उसी को लेकर विधाता ने इसका मुख बनाया है इसी से जितना भाग चन्द्रमण्डल का निकाल लिया गया है उतना गड्ढा अब तक चन्द्रमा में कलाई के बहाने दिखाई देता है—कमलों के साथ जब इसके मुख की परीक्षा की गई तो वे सब के सब मारे लाज के जल में जा डूब गये आज तक उन्हें जल में डूबने का वह अभ्यास पड़ा है—उसकी भौं क्या है मानो सम्पूर्ण जगत् के जीतने को कामदेव की धनुष है-अपने समान रूपवान् पति ढूंढते २ किसी को न पाय तुम्हें अपना पति करने के लिये सिद्धान्त कर रक्खा है—हे वीर ! इसका यह सिद्धान्त सर्वथा उचित है क्योंकि मणि का हार तरुणी के उरोज ही पर शोभा देता है-आप का भी समस्त शीलौदार्य गुण उसके समागम के विना वैसा ही व्यर्थ है जैसा जिन वृक्षों में फल नहीं लगते उन का फूलना व्यर्थ होता है-राजा आप उसके पाने का जल्द प्रयत्न कीजिये क्योंकि इन्द्र वरुण यम अग्नि चारो देवता उसके मिलने का उद्यम कर रहे हैं-

राजा०—(प्रसन्न हो) मालूम होता है मेरा मनोरथ सफल होने पर आया है—निश्चय हमारा पूर्व पुण्य हंसरूप हो इस काम में आज सहायक हुआ—

भागु०—(रोक के क्रोध से) लम्पटदास तो हमारा माला का फेरना कुछ भी न ठहरा कि इतनी देर से गुरिया फेरते २ अँगुलियां अकड़ गईं हाथ रह गया मंत्र के उच्चारण में ओठ फरकते २ हनुस्तम्भ हो गया—अच्छा तो अब मैं उच्चाटन का उलटा माला फेरता हूं—नहीं तो धी के जाये इस हंस ही की न धुंगार डालें बड़का उच्चाटन हो जाय (लट्ठी लेकर दौड़ता है)

राजा—(रोकता हुआ) हां हां मित्र ऐसा नहीं—कौन् कहता है यह तुम्हारे माला जपने का परिणाम नहीं है—यह सब आप ही सरीखे महा-ब्राह्मणों की कृपा का फल है—(हंस की ओर) पक्षिराज निस्सन्देह आप कोई देवयोनि हैं जाइये आप का कल्याण हो मेरे कार्य की सिद्धि अब आप ही के आधीन है (एक कागज़ में अपना नाम लिख हंस के पंख में बांध उसे उड़ा देता है) (भागुरायण से) मित्र चलिये बड़ी देर हो गई बन में देर तक घूमने से व्यायाम के कारण क्षुधा अधिक सताये हुये है (दोनों गये) प्रथमअंक—

श्राद्ध ॥

पहले इसके कि इस विषय पर हम कुछ लिखें यह कहना आवश्यक है कि हमारे देश के लोग धर्म परोक्ष या परलोक के पीछे सदा से अत्यन्त लौलीन होते आये हैं—श्राद्ध शब्द श्रद्धा से बना है जिसके तात्पर्य हैं धर्म के काम में रुचि—तो इसका यह तात्पर्य हुआ कि जिसके अनुष्ठान से परलोक या परोक्ष की ओर हमारी रुचि बढ़े वह श्राद्ध है अर्थात् श्रद्धा से किया हुआ कर्म—अब इस समय प्रचलित पद्धति और रीति के अनुसार पितरों को कव्यदान में यह शब्द रूढ हो गया और उन की तृप्ति का एक अत्युत्तम कर्म समझा जाता है—इसका फल धर्मशास्त्रों में बहुत कुछ लिखा हुआ है कि जिन जीवों के उद्देश्य से श्राद्ध किया जाता है वे चाहे किसी लोक और किसी योनि में हों उन को परमतृप्ति होती है—यदि वे जीव देवलोक में देवता हैं तो उन्हे वही श्रद्धा पर्वक प्रदत्त पिण्ड या अन्न आदि अमृत हो के मिलता है इसी प्रकार जिस

योनि के लिये जो पदार्थ प्रिय है उसी के द्वारा उसको तृप्तिरूपी फल मिलता है परन्तु इस श्राद्धकर्म को वही लोग करते हैं जिन्हे अपने माता पिता के साथ प्रीति होती है—और यह कर्म प्रायः उन्हीं मनुष्यों के हाथ से हो सक्ता है जिनका चालचलन कुछ अच्छा और जिन्हे परलोक में आस्तिक बुद्धि हो जो अपने परलोकवासी पितरों का कुछ उपकार मानते हों और चाहते हों कि पिता के न रहने पर हम उन से उऋण होने का कोई उपाय करें—यह श्राद्ध कई तहर से किया जाता है पिण्डदान से लेकर अनेक पुण्यकार्य उस जीव के लिये किये जाते हैं और यह कर्म न केवल वैदिकधर्मावलम्बी चातुर्वर्ण ही बरन म्लेच्छों के यहां भी होता है—मुसल्मान लोग श्राद्ध को उर्श कहते हैं और नियत समय पर यथाशक्ति दान पुण्य अपने मत के अनुसार करते हैं—साहबान अंगरेज़ों में भी मृतक की कीर्ति स्थापन निमित्त स्थानरचना स्कूल औषधालय छात्रवृत्ति प्रभृति जो कुछ कार्य वे करते हैं सब श्राद्ध ही में संयुक्त हैं—हमारे यहां केवल उत्तराधिकारी कुटुम्बियों का यह कृत्य ठहराया गया है—भारतवर्ष में श्राद्धकर्म सनातन से चला आता है इन दिनों थोड़े से ऐसे लोग भी हम लोगों के बीच उपज खड़े हुये हैं जो कहते हैं जीवते ही मनुष्य का श्राद्ध होता है मरे पर कुछ नहीं पर इस्में कोई पुष्ट युक्ति और प्रमाण वे नहीं देते—हम कहते हैं जो जीते पिता की श्राद्ध करना जानता है वही मृतक पिता की भी श्राद्ध कर सक्ता है बरन ऐसा ही पितृभक्त पुत्र को श्राद्ध का पूरा २ अधिकार है—

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात् ।
गयायां पिण्डदानेन त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता ॥

राजा रामचन्द्र के समय में श्राद्ध होने का प्रमाण बाल्मीकिरामायण में पाया जाता है—महाभारत की लड़ाई हो चुकी तब महाराज युधिष्ठिर ने उन सबों के नाम श्राद्ध कराया जिन के लड़के बाले न थे—

शान्तिपर्व अध्याय ४२

धृतराष्ट्रो ददौ राजा पुत्राणामौर्ध्वदैहिकम् ।
सर्वकामगुणोपेतमन्नं गाश्च धनानि च ॥

रत्नानि च विचित्राणि महार्हाणि महायशाः ।
युधिष्ठिरस्तु द्रोणस्य कर्णस्य च महात्मनः ॥
धृष्टद्युम्नाभिमन्युभ्यां हैडिम्बस्य च रक्षसः ।
विराटप्रभृतीनां च द्रौपद्या सहितो ददौ ॥
ब्राह्मणानां सहस्राणि पृथगेकैकमुद्दिशन्
धनैरत्नैश्च गोभिश्च वस्त्रैश्च समतर्पयत् ॥

इन श्लोकों से पाया जाता है कि श्राद्ध तथा उस्के और सांगोपांग कर्म उसी प्रकार तब भी हुये जैसा इस समय होते हैं—पूर्वकाल में पिण्डप्रदान तथा दूसरी पुण्य क्रिया ब्रह्मभोज आदि के अतिरिक्त कीर्त्तिस्थापकरूपी श्राद्ध भी करने का प्रचार था जैसा कि उसी स्थल पर लिखा है कि दूसरे ऐसे राजा लोग जिन के कोई कुटुम्ब शेष नहीं रहा उन के निमित्त युधिष्ठिर महाराज ने समस्त और्द्ध दैहिक कर्म कराया न केवल पिण्डप्रदान ही मात्र वरन कीर्त्ति स्थापक "मेमोरियल" भी जैसा आज दिन नई रोशनी वालों में प्रचलित है सभा इस्टिटूशन पुस्तकालय पाठशाला धर्मशाला तड़ाग आदि बनवाये—

ये चान्ये पृथिवीपाला येषां नास्ति सुहृज्जनः ।
उद्दिश्योद्दिश्य तेषां च चक्रे राजौर्द्ध्वदैहिकम् ॥
सभाः प्रपाश्च विविधास्तडागानि च पाण्डवः ।
सुहृदां कारयामास सर्वेषामौर्ध्वदैहिकम् ॥

अस्तु ये सब प्रमाण दिखलाने पर भी हमारे बगल की छुरी या आस्तीन के सांप यही कहें गे आखिर बाम्हन की जात कनागतों का दिन पास आया जान लगा पहले ही से अपना डौल जमाने—

सच है जो बात आदि में जैसी रहती है निस्सन्देह अधिक समय बीत जाने पर बिगड़ते २ उस्का चोखापन और जौहर वैसा नहीं रहता जैसा पहले होता है—इस समय के लोभी स्वार्थपरायण मूर्ख ब्राह्मणों ने इस उत्तम कर्म को और भी धूर में मिला दिया पर राग द्वेष को मन से ढीला कर

न्यायदृष्टि से देखिये तो श्राद्ध के समान शुद्ध वैदिक कर्म अब इस समय दूसरा नहीं है मनु महाराज तो अपनी संहिता में एक पूरी अध्याय की अध्याय इसी के सम्बन्ध में गाय गये हैं—यह श्राद्ध ही कर्म था जिस्में उत्तम से उत्तम सत्पात्र कुलीन और सुयोग्य की पूछ होती थी तो यह श्राद्ध क्या बरन योग्यता और सुपात्रता के जांच की कसौटी थी मनु ने लिखा है—

यत्नेन भोजयेच्छ्राद्धे बह्वृचं वेदपारगम् ॥

बहुत ऋचाओं का जानने वाला या ऋग्वेदी जो समग्र वेद के पार गया हो उसे यत्नपूर्वक श्राद्ध में भोजन करावे—जब इस तरह की निर्ख थी उस समय ब्राह्मण भी समग्र वेद पढ़ने की चेष्टा किया करते थे—बंगाल में अब भी जो ठौर २ पण्डितों के किये हुये टोल चल रहे हैं वह इसी श्राद्ध की बदौलत—बंगाल में बड़े श्रीमन्त राजा बाबू जो जिस योग्यता के हैं अपने वित्त के अनुसार श्राद्धकर्म करते हैं—और दूर २ के विद्वानों को निमन्त्रित कर उन को उन की विद्या और पाण्डित्य के अनुसार इतना धन देते हैं कि वे फरागती के साथ पठनपाठन कार्य में प्रवृत्त रहते हैं अधिक जीविका के लिये उन्हें हम लोगों की भांत बहुतसा हांव २ नहीं करना पड़ता—दूसरी बात इस श्राद्ध के प्रकरण में और भी है कि हमारे शास्त्र वालों ने पितरों को विष्णुरूप माना है "पितृरूपी जनार्दनः" इस लिये जो कुछ पितरों के उद्देश्य से दिया जाता है वह सब विष्णुप्रीत्यर्थ होता है परोक्ष और परलोक के उपकाराय है—इन सब बातों से यही निश्चय होता है कि यह श्राद्ध नित्यकर्म सन्ध्योपासन वलिवैश्वदेव इत्यादि की भांत अवश्य कर्त्तव्य कर्म और अपने ही उपकार के लिये है—पितरों का केवल उद्देश्य मात्र है मण्डनमिश्रप्रभृति प्रबल मीमांसकों ने जो २ युक्तियां कर्मवाद के पोषण में दी हैं उन के देखने से यह कभी नहीं सिद्ध होता कि श्राद्ध हमारे उपकार के लिये नहीं है—वेदान्तियों की मुक्ति और निर्वाण जिस्का नाम सुन मन में घिन और उदासी छा जाती है उस्की अपेक्षा तो यह श्राद्धकर्म बहुत ही बहुत उत्तम और संसार का परमोपकारी उद्यम और पुरुषार्थ का बढ़ाने वाला है—यह तो निरे गवांर और मूर्खों का कहना है कि बाप दादे अब तक क्या बैठे हैं जो यह पिण्ड उन्हें मिलता है—अरे यह उन्हें मिलने की बात तो निरी परोक्ष है कौन कहे कि उस्पर आप

विश्वास करें यह उलटा आकर हमी को फिर मिलता है—श्राद्ध के अन्त में जो आशिष प्रार्थना है इससे प्रगट है कि यह हमी लोगों के उपकाराय है—

गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोभिवर्द्धन्ताम् ।
वेदाः सन्ततिरेव च श्रद्धा च नो माभ्यगमत् ॥
बहु देयं च नोऽस्तु अन्नं च नो बहु भवेत् ।
अतिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः सन्तु ॥
मा च याचिष्म कंचन एताः सत्याशिषः सन्तु ।

ऐसे उदारभावयुक्त आशिष प्रार्थना केवल श्राद्ध ही में पाई जाती है—हमारा गोत्र अर्थात् परिवार बढ़ै—हमे देने वाले बढ़ैं—वेद अर्थात् ज्ञान की सन्तति हमारे में अधिक हो—पारमार्थिक कामों की ओर से हमारी रुचि या आस्तिक्य बुद्धि कभी न घटै—देने को हमारे पास बहुत हो—अन्न बहुत हो अतिथि हमे रोज़ मिला करैं—मांगने वाले हमे हों हम किसी से न मांगैं ये सब सत्य आशिष अर्थात् अभ्युदय हमे प्राप्त हों—ऐहिक फाइदे के लिये और हमे अब चाहिये क्या—हमारे प्रतिपक्षियों को न जानिये इस शुद्ध सात्विक वैदिक कर्म से क्यों मन में लाग आ गई है कि वे नाहक दण्ड हाथ में लिये इसके पीछे दौड़ रहे हैं—केवल ब्राह्मणों की हानिमात्र जिसे वे अपने लिये बड़ा लाभ मानते हैं और कौन यजमान देश का उपकार श्राद्ध की प्रथा उठ जाने से है यह कुछ हमारे मन में नही आता—मनु के जिन श्लोकों में पिण्डदान का विधान किया गया उन्हे आप क्षेपक मान बैठें तो लाचारी है नहीं तो कम से कम २० श्लोक ऐसे हैं जिनमें पिण्डदान का विधान है—

पिण्डनिर्वपणं केचित्पुरस्तादेव कुर्वते । वयोभिः खादयन्त्यन्ये प्रक्षिपन्त्यनलेप्सु वा । पतिव्रता धर्मपत्नी पितृपूजनतत्परा । मध्यमं तु ततः पिण्डमद्यात्सम्यक् सुतार्थिनी ॥ इत्यादि—

प्रतिमापूजन के निराकरण में तो दो एक युक्ति भी उन की कुछ थोड़ा पुष्ट मालूम होती है पर इस श्राद्ध के खण्डन में तो ये ऐसे भरे मुह गिर रहे हैं कि कोई बात इन की युक्तिसिद्ध नहीं है बरन केवल बुराई के खयाल से

है संशोधन का कहीं इसमें लेश भी नहीं है—अस्तु हम को इसके सम्बन्ध में जो कुछ वक्तव्य था कह चुके हमारे प्रतिपक्षी अब भी द्वेषबुद्धि छोड़ इसके गुण पर ध्यान दे इसके अनुमोदन में प्रवृत्त रहते तो अच्छा ही था नहीं तो निस्सन्देह इससे वे अपनी हंसी और हलकाई करा रहे हैं और न उन के कहने का श्राद्ध के प्रकरण में कुछ असर होने वाला है जिस नेकनीयती से इस शुद्ध वैदिक कर्म की नेह डाली गई है वह ऐसी नहीं है कि किसी के हिलाये हिल उठै इत्यलम्—

अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः ॥

न करने से थोड़ा करना अच्छा है। इसी के साथ ही की भाषा में एक दूसरी कहावत है "सूनी सरांय से मरकहा बैल अच्छा" हम कहते हैं सूनी सरांय फिर भी अच्छी मरकहा बैल किस काम का इसी के विरुद्ध एक दूसरी कहावत भी है "खाना गेहूं या रहना एहूं" सच है—

कुसुमस्तवकस्येव द्वयीवृत्तिर्मनस्विनः ।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकानां विशीर्येत वनेऽथवा ॥ अन्यच्च—
नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि ॥

सुगन्धित फूलों का लोगों के माथे पर चढ़ना स्वाभाविक है न कि उसका पावों से रौंदा जाना—हम उस महात्मा की बुद्धि को क्या कहैं जिस ने दिमाग़ को अजहद्द काम में लाय अपने मस्तिष्क के न जानिये किस कोने से मन्दता को प्रोत्साहन देने वाले इस सिद्धान्त को निकाला है—हमारे देश वाले जो महाकन्सर्वेटिव हो लीक पीटते हुये लकीर के फकीर बन रहे हैं उन के मत का पोषक यही सत्यानाशी सिद्धान्त है—जिस पुरानी बात का पीछा वे नहीं छोड़ते और जिसमें कहीं से कुछ टटकापन और रस लेशमात्र को भी नहीं बच रहा तौ भी न करने से कुछ करना ही कल्याण का मार्ग है इस सिद्धान्त को अपना गुरू बनाये पुराने ढर्रे को छोड़ना चाहते ही नहीं—हम तो यही कहेंगे कि हम जिसे समझते हैं कि यह हम से न हो सकेगा उसे करें ही नहीं यदि करते हैं तो भरपूर करैं नन्दकरण से महानन्द क्यों बनैं—तस्मात् न करने से

कुछ करना अच्छा है यह तभी तक काम का है जब तक हम दूरन्देशी को चित्त में स्थान नहीं देते या जब तक हमारे बुझे मन में उत्साह या जोश ने जगह नहीं किया है—जिन्हें कर्त्तव्य से दोचन्द करने का हौंसिला है उन का मन मन्दकरण वाले सिद्धान्त से क्यों कर मान सक्ता है—यह कहावत केवल वृद्ध और निर्बलों ही के आदर योग्य रहे तब भी कुछ हानि नहीं यहां तो नौजवान भी जो बल और पौरुष में कहीं से हेठे नहीं हैं किन्तु बूढों के चलाये रास्ते पर चलना अपने लिये बड़ी सपूती का काम समझते हैं किसी बात को सांगोपांग करने में जो सब भांत समर्थ हैं वे भी मन्दकरण से ही सन्तुष्ट रह आगे कदम बढ़ाना कैसा बल्कि पीछे हटते जाते हैं—इस लिये देश को धूर में मिलाने वाले कई एक सिद्धान्तों में जैसा—

"कोउ नृप होय हमे का हानी, चेरी छोड़ि न होउब रानी।
होइ है वही जो राम रचि राखा, को करि तर्क बढ़ावै साखा।
विधि का लिखा को मेटन हारा।"
यद्भावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा।
इति चिन्ता विषघ्नोऽयमगदः किं न पीयते॥
करम रेख ना मिटै करै कोइ लाखों चतुराई॥

इत्यादि महावाक्यों में एक यह "अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः" भी है—विचार कर देखिये तो संसार के दो ही एक काम ऐसे होंगे जिन्में यह ऊपर का सिद्धान्त कुछ बहुत अनुचित न ठहरे गा नहीं तो कहीं पर इसके चरितार्थ होने से हम भलाई नहीं पाते किन्तु इस्पर अमल लोगों ने बहुत अधिक कर रक्खा है लाचारी है—

धर्मराज की कचहरी ॥

सावन भादों की झड़ी को सबी जानते हैं जिस्में जगत्प्रकाशक सूर्यदेव का दर्शन दुर्लभ है तब रात्रिकर चन्द्रमा की कौन कहे—प्रयाग में सरआकलेण्ड कालविन की कृपा से पाताल फोड़ कर पानी जगह २ गली कूचों में उबल रहा है जिन का काम लोटा भर पानी से होता था उन को घड़ों पानी

से भी अब तृप्ति नहीं होती—आशा है उक्त लाटसाहब अपने जाने के पहले इस देश में अन्न भी हर जगह इसी तरह सस्ता कर फैला दें गे—उक्त श्रीमान् अपने देश का क्रम खाने पीने का हम को सिखलाया चाहते हैं—यूरोप निवासी पेय वस्तु से अपना भोजन आरम्भ करते हैं और हम लोग भोजनोत्तर पेय वस्तु को काम में लाते हैं—जो हो पानी मिला है तो अन्न भी मिले गा जिस्की आवश्यकता हमे इस समय बहुत ही बहुत है—खैर यह तो बात में बात आ गई पाताल से तो पानी निकलता ही था अब आकाश से भी लगातार मुसलधार बरस रहा है—तीन नदियों का सङ्गम तो यहां था ही इस आकाश और पाताल के पानी ने हम लोगों को पानी पानी कर डाला—घर से निकलना दुर्घट हो गया लोगों के काम काज सब बन्द दर्शन या तीर्थयात्रा की ऐसे में किसी की हिम्मता नहीं पड़ती तब लोगों से मिलना झुलना कहां रहा—कारी अंधियारी रात में चोरी डकैती तथा दूसरे २ पापों की बन पड़ी—जिधर देखो उधर जलामयी मालूम होती है जलशायी भगवान् एक ही जगह पड़े २ मानों ऊब कर अब अपना स्थान बदला चाहते हैं—विष्णु चाहो क्षीरसागर छोड़ आ भी जांय पर क्षम्मी जी यहां काहे को कृपा करें गी—अस्तु इस झड़ी में कैदी के समान घर में बन्द बैठे २ नसनिहाव हो रहा था दिन किसी न किसी तरह कटता तो रात पहाड़ हो जाती—एक रात को नींद के आगमन की चिन्ता में पड़ा २ व्याकुल था और यह सोचता था कि कल पायोनियर के ऐडवरटाइज़ वाले कालम में जहां सब तरह के इश्तिहार रहते हैं नींद की दूकान का पता भी ढूढ़ों गा ऐसे २ कई एक खयालों के बाद अन्त में मैं इस मंत्र का जप करने लगा—

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

कुछ देर बाद मुझे याद नहीं मैं सो गया था या जागता ही था की एक जीव आकाश से उतरता हुआ मेरे सामने देख पड़ा जिस्का एक अद्भुत भेख था सूरत इस्की कुछ २ मनुष्यों से भी मिलती थी—बर्फ से भी अधिक सफेद लम्बी डाढ़ी थी जिस्से इस्का मुह छिपा हुआ था पर माथा चौड़ा था इस्की लाल आंख मंगल के तारे के समान चमक रही थी या इंजिन की दो लालटैन

(लाल बत्ती) थीं माथे पर त्रिपुण्ड झलकता था पर हाथ में तस्बी भी थी मरहठों की ढालनुमा पगड़ी इसके शिर पर थी जिसके नीचे लम्बी शिखा दबी हुई थी बाकी शिर घुटा था—निहायत सफेद चमकता हुआ कुरता जो गले से पैर तक लटकता था पहने था और पांव में अङ्गरेज़ी बूट कसे था—दोनों कन्धों पर डहने थे—इस महात्मा की ओर देखने से चित्त चमत्कृत होगया था मुह डाढ़ी से छिपा था पर आंखों की ओर देखने से जो मेरी ओर थी ऐसा मालूम होता था कि यम मुझे कृपादृष्टि से देख रहे हैं—मुझ से मधुर कोमल बानी में बोले एडिटर महाशय आप मृत्युलोक ही का हाल हमेशा लिखा करते हैं और २ लोक के वृत्तान्त से भी तो कभी २ अपने पाठकों को सूचित किया करें—मैंने डर के कहा मुझे मालूम नहीं है—महात्मा ने कृपापूर्वक हाथ मेरे पीठ पर रक्खा और कहा यदि देखा चाहते हो तो मेरे साथ चलो—मैं तत्काल उन के साथ २ घर से बाहर निकला मुझे मालूम हुआ कि उन का पांव भूतलस्पर्शी न था तदन्तर महात्मा ने मेरा हाथ पकड़ा अपने डयनों को इस ज़ोर से हिलाया कि मैं उन के साथ आकाश में उड़ने लगा—जिस समय मैं पृथ्वी से उड़ा शहर का अजीब हाल मालूम हुआ लोग सब अपने २ घरों में बन्द थे किसी २ घर में बिलकुल सन्नाहटा था किसी २ घर में कुछ बात चीत कर रहे थे कुछ गाते बजाते थे पर एक प्रकार की गुंजाहट के सिवाय साफ २ नहीं मालूम होता था कि इसका क्या तान या स्वर है—रास्ते में एक दो चलते जो देख पड़े तो उन की धीमी चाल से मालूम होता था कि वह डरते हैं कि कोई उन्हें देख न ले—कोई आदमी कुछ खाने की वस्तु हाथ में लिये बड़े बेग से झपटा जारहा था कोई दरवाज़े पर खड़ा धुंधली सी लालटेनहाथ में लिये किवाड़ खुलवा रहा था—मैं आकाश मार्ग में चला जा रहा था छोटी २ फुहियां पड़ रही थी और शीतल मन्द पवन बह रही थी जब बस्ती से आगे बढ़ा तो सन्नाहटा और अधिक मालूम होने लगा—किसी मनुष्य या जन्तु की कुछ भी आहट नहीं पाई जाती थी कहीं बड़ी दूर पर कुत्तों के रोने की आवाज़ आती थी या कहीं २ कोई कुत्ता ज़ोर से भूकता हुआ अपने सोते हुये मालिक को चोरों की आहट पाकर होशयार कर रहा था—मुझे लिखने में देर भी लगी हो पर इस सब तमाशा देखते ही देखते क्षणभर में एक चौड़े मैदान में पहुंचा जहां एक बड़ा गुब्बारा सा कुछ देख पड़ा नीचे उसके

आग जलती थी धुआं जिस्का क्रमशः गुब्बारे के भीतर भरता गया—पहुंचते ही महात्मा ने कोई चीज़ जेब से निकाल उस आग पर रक्खा जिससे वह आग एकाएक प्रज्वलित हुई और धुआं चटपट गुब्बारे में फैल गया भीतर जाकर मैं ने देखा कि उस गुब्बारे के बीचोबीच एक उमदा कमरा है जिस्में कुरसियां और मखमली कोच रक्खी हुई थी—भीतर पहुंचते ही महात्मा ने छूरी से उस रस्सी को जिस्में वह गुब्बारा किसी बड़े पेड़ में बँधा हुआ था काट दिया और बान की तरह वह गुब्बारा ऊपर को उड़ा—कुछ दूर तक वह गुब्बारा मुझ को आकाश की ओर चढ़ता हुआ मालूम पड़ा फिर मुझे नहीं मालूम कि किधर को चला—जो २ मैंने ऊपर से देखा और महात्मा ने मुझे बतलाया वह सब जो मैं लिखने लगूं तो एक छोटी सी पुस्तक तैयार हो जाय तौ भी अपने पाठकों की खातिर से संक्षेप में वर्णन करता हूं—

सम्पूर्ण भूमण्डल मेरे दृष्टिगोचर था समुद्र नदी ऊचे २ पर्वत देशदेशान्तर सब मेरे सामने थे किसी देश में वृष्टि हो रही थी आकाश बादलों से आच्छादित था बीच २ केवल बिजुली की चमक से उस देश की कुछ झलक देख पड़ जाती थी—किसी देश में आकाश स्वच्छ और निर्मल तारागणों से शोभित था और वहां के निवासी सुखपूर्वक अचेत पड़े सो रहे थे—किसी देश में चान्दनी छिटकी हुई थी और रसिकजन आमोद प्रमोद कर रहे थे—पहाड़ों पर औषधियां चमचमा रही थीं देवयोनि अप्सरा और देवाङ्गनाओं के साथ कुतूहल में प्रवृत्त थे—किसी देश में सूर्य प्रकाशित था जीवजन्तु सब अपने २ पेट के धन्धे में लगे थे दूकान सड़क बाज़ार सब आबाद थी—किसी देश में अत्यन्त बर्फ पड़ने से पशु पक्षी मनुष्य सब के सब कोनों में दब के पड़े थे और कहीं तीखे सूर्य की किरणों से व्याकुल हो आदमी और जानवर छाया और पानी ढूंढते फिरते थे—निदान यह गुब्बारा एक जगह ठहरा और मेरे साथी महात्मा ने गुब्बारे से उतरने को मुझ से कहा—चकृत हो मैंने उन से पूछा क्यों उतरूं और उतर के कहां जाऊं—महात्मा यह सुन मुसकिराये और कहा सच है मैं भूल गया था—तब उन्हों ने जेब से एक डिबिया निकाल मेरे आखों में सुरमा की भांत लगा दिया और एक शीसी निकाल मेरे कानों में तेल छोड़ दिया—अब सब मुझे देख पड़ने लगा और जो आवाज़ सुनाई देती थी उसे भी सब समझने लगा मैंने गुब्बारे से उतर कर देखा कि एक बड़ा ऊंचा मणिमय मन्दिर है जिस्की चमकके आगे सूर्य का

प्रकाश मन्द था बहुत से जीव अपने २ काम में तत्पर वहां देख पड़े कितनों का भेख वैसा ही था जैसा मेरे दयालु महात्मा का था—वे सब मेरी ओर अचरज और क्रोध से देखने लगे पर महात्मा मेरा हाथ पकड़े थे इस्से कोई मुझ से न बोला—उस मन्दिर के बीचोबीच एक बड़ा चौड़ा फाटक जिस्के ऊपर हाथ में शंख चक्र गदा पद्म धारण किये भगवान् विष्णु की चतुर्भुजी मूर्त्ति थी जिस्के नीचे चमकते हुये बड़े २ सोने के देवनागराक्षरों में लिखा था—

"श्रीमान् महाराजाधिराज धर्मराज की न्याय सभा"

वह महात्मा मुझे उन अक्षरों को दिखला धर्मराज की कचहरी के कमरे में ले गये—जो एक बड़ा भारी कमरा था—जितना सामान सब उस्में सोना चांदी और जड़ाऊ का था बहुत से दूत और पार्षद अपने २ काम पर नियुक्त थे बीच में ऊंचे पर एक लाटसाही कुरसी थी जिस्के आगे बड़ा चौड़ा और लम्बा स्फटिक का एक मेज़ था जिस्में हीरा पन्ना पद्मराग नीलम पुखराज आदि मणि जड़े हुये थे—उस मेज़ के एक ओर एक महापुरुष बैठे थे जिन्हें मेरे साथी महात्मा ने कहा यह चौदहवें यम श्रीमान् चित्रगुप्त जी हैं—इतने में एक ओर से शंख और घंटा का शब्द सुन पड़ा और उसी महात्मा के कहने से मालूम हुआ कि धर्मराज का प्रवेश होता है——महाराज के मुख पर ऐसी ज्योति और चमक थी कि मुझ को सिवा उन के चमकते हुये नेत्रों के और कुछ न देख पड़ा—महाराज उस मणिजटित कुरसी पर आ सुशोभित हुये सब लोग अपने २ स्थान पर खड़े हो सुनने लगे—मेरे साथी महात्मा ने महाराज चित्रगुप्त जी की कुरसी के नीचे मुझे चुप चाप बैठ जाने को कहा और मैंने वैसा ही किया—चित्रगुप्त ने खड़े होकर निवेदन किया जिस का मतलब यह था कि—अब आप की कचहरी का काम बहुत बढ़ गया है मृत्युलोक में मनुष्यों की जन संख्या इतनी बढ़ गई है कि वे अब शस्य पूर्ण उर्वरा देशों के अतिरिक्त अत्यन्त अगम्य स्थानों में भी जाकर बस गये हैं—हमारे दूतों को उन के तलाश में ऊंचे २ पहाड़ गहरे अथाह समुद्र जंगल सहरा और बयाबानों में जाना पड़ता है—अब संख्या बढ़ जाने से मृत्यु भी बहुत होती है यदि महाराज की आज्ञा हो तो हम कुछ और लोगों को मनुष्य देवता यक्ष राक्षस किन्नर गन्धर्व आदि योनि में से नये भरती कर लें—धर्मराज ने आज्ञा दी जितने चाहो उतने लोगों को और बढ़ा लो परन्तु ऐसा कोई प्राणी इन यक्ष आदि योनि में विश्वासपात्र नहीं मालूम होता जिस्को मैं तुम्हारी लिखी

हुई बहियां दिखला सकूं पर मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं यदि कोई तुम्हारे ही कुल का हो तो उसको तुम अपना सहायक बना लो—

उपरान्त धर्मराज की आज्ञा से मृत्युलोक का एक मृतक सामने लाया गया—धर्मराज ने पूछा संक्षेप में इसका जीवन वृत्तान्त कहो जिससे यह अपने कामों के अनुसार स्वर्ग या नरक में जाने के योग्य ठहराया जाय चित्रगुप्त जी हाथ जोड़ कहने लगे महाराज आप के इस प्रश्न का उत्तर अतिकठिन है (अपनी वहियों के पन्ने कई वार उलट पुलट) इस प्राणी के सम्बन्ध में जहां तक मुझे याद है साक्षात् विष्णु भगवान् ने अपने वैकुण्ठ में लक्ष्मी को आज्ञा दी है कि एक कमरा इसके लिये सजा सजाया तैयार रहे इस मृतक के पीछे जो भीर है वह हूर और फिरिश्तों की है विहिश्त की हूरें इसके लिये उत्सुक हो रही हैं कि फूल की सेज पर बैठाय अपने कन्धों पर रख इसे विहिश्त में ले जांय—महाराज यह ऊपर को देखिये देवर्षिगण औलिया पयम्बर सेन्ट्स सब इस की शिफारिस के लिये आप के दरबार में मौजूद हैं—

धर्मराज को यह सुन अत्यन्त अचरज हुआ पूछा इन का मत क्या है—चित्रगुप्त ने कहा—मृत्युलोक में जितने मत हैं सब को इन्हों ने ग्रहण किया है और जन्म भर सब को विश्वास पूर्वक माना है कभी देवमन्दिरों में जाकर विधिवत् मूर्तिपूजन किया है कभी निरंकार सर्वशक्तिमान् निर्गुण ब्रह्म की आराधना किया है तौ भी मूर्तिपूजन का खण्डन नहीं किया—कभी मस्जिद में जाकर अल्लाह एक और महम्मद उसका रसूल है यह कलमा पढ़ खुदा से दुआ मांगा है—कभी गिरजा में जा ईश्वर से प्रार्थना किया है कि अपने बेटे ईसामसीह के खातिर मेरे अपराधों को क्षमा कर मुझे आपत्ति और पापकर्मों से बचा—कभी चैतन्य मतावलम्बियों के साथ "प्रेम एव परो धर्मः" इस सिद्धान्त पर आरूढ़ रह हरिकीर्तन किया है—कभी गुरु नाड़िक के शिष्यों के साथ संसार को मिथ्या और नाम को आधार माना है—न इन्हों ने जैनियों को कभी बुरा कहा न बौद्धों से घिन की—कभी वल्लभीय संप्रदाय वालों के साथ "स्मरणं कीर्तनं विष्णोर्वन्दनं पादसेवनम्" इत्यादि नवधा भक्ति को पुष्ट करते हुये भगवान् कृष्णचन्द्र को वात्सल्यभाव से द्वारिकाधीश तक भजा है श्रीकृष्ण परमात्मा के जितने रूप हैं सबों की पृथक् २ सेवा की है—न कण्ठी और तिलक को इन्हों ने कभी दूषा न रुद्राक्ष और त्रिपुण्ड ही को बुरा कहा

कभी दो कबरें बनाय हसनैन के नाम मातम किया—खुलासा यह कि किसी का कभी निरादर इन्हों ने नहीं किया—

धर्मराज ने पूछा इन का विवाह हुआ या नहीं—चित्रगुप्त ने कहा इन के दो विवाह हुये—जब ये बड़े हुये तब इन्हों ने यह सिद्धान्त ठहराया कि जब तक ईश्वर को साक्षी दै किसी स्त्री पुरुष का सम्बन्ध न कराया जाय तब तक उन का मेल वर्जित और दूषित है—संसार में जितने मत प्रचलित हैं उन के अनुसार विवाह होने से आदमी की आज़ादी में कभी कोई खलल नहीं पहुंच सक्ता—यावज्जीव के लिये गोंद सा चिपक जाना केवल हिन्दुओं ही में है इस्से मैं हिन्दुओं की सात भांवर वाली पाणिग्रहीतीभार्या न लूंगा—

धर्मराज ने पूंछा इन के कोई लड़के वाले हैं—चित्रगुप्त ने कहा इन के बहुत से लड़के बाले हैं वे सब के सब इन्हीं के समान उदार गुणसम्पन्न हैं—पारी २ वे भी एक दिन आप के यहां आवेंगे वे लोग बड़े २ देशहितैषी प्रजा वत्सल संशोधक और संस्कारकारक हैं और इन का दल आज दिन मृत्युलोक में बड़ा ज़ोर पकड़ रहा है—

धर्मराज ने फिर पूछा इन्हों ने मद्यपान परस्त्रीगमन परधनहरणअनृतवाद पिशुनता आदि कभी किया है—चित्रगुप्त ने कहा महाराज किसी प्रकार के मादकद्रव्य को इन्हों ने कभी हाथ से नहीं छुआ—परस्त्री को इन्होंने मन बच कर्म से माता समझा है और पराये धन को मिट्टी का ढेला झुठाई की तो इन्में कहीं गन्धि भी नहीं है—कहां तक गिनावें हमारी बही में इन के पाप के खाने सब सूने पड़े हैं—

धर्मराज ने कहा तो इन्हे ले जा कर बड़े आदर और सुख पूर्वक रक्खो जब तक मैं सोच न लं कि इन का क्या किया जाय—इतने में वह मृतक खुद बोला जहां चाहिये तहां मुझे ले जाइये जैसे चाहिये तैसे रखिये पर एक प्रार्थना है कि आगे से आप के दूत हम लोगों को न लेने जाया करें—

धर्मराज ने आज्ञा दी चित्रगुप्त ऐसों को लेने के लिये अब आगे से तुम खुद जाया करो—यह धर्मराज को प्रणाम कर हटा नहीं कि एक भीड़ ऐसी देख पड़ी जिस्के आते ही उस सम्पूर्ण मन्दिर में एक प्रकार का धुंधलापन छा गया इस भीड़ में जितने लोग थे सबों के हाथ में एक २ कोड़ा था और आध गज का एक २ लोहदण्ड था ठीक वैसा ही जैसा पुलिस के कानस्टेबिल लिये रहते हैं इन सबों की लम्बी २ डाढ़ थी ऐसी भयङ्कर कड़ी आंख थी कि देखते ही जी सहम उठा—इस भीड़ के बीचोबीच एक जीव था जिसे इस

भीड़ का एक कमर में रस्सी कसे अपनी ओर खीचे हुये था और लोग बड़ी चौकसी से उस अपराधी के चारो ओर पहरासा दे रहे थे वह जीव जो बीच में था उसके आधे सिर पर फुदनेदार लम्बी एक टोपी थी आधा सिर इस्का गोल हैट से ढपा था इस जीव की अद्भुत चेष्टा और आकार देख धर्मराज ने चित्रगुप्त से पूछा आप इस्के सम्बन्ध में क्या कह सक्ते हैं—

चित्रगुप्त ने उत्तर दिया महाराज यह उस पहले आये हुये मृतक की अपेक्षा सर्वथा अधम और दुराचारी है—महाराज आप की कचहरी का इन दिनों इतना काम बढ़ रहा है कि मुझे इतनी फुरसत न मिली कि इस्के ऐगुण और दुष्कर्मों का टोटल देंगे की अब तक फुरसत मिलती इस लिये चाहता हूं कि अभी इस्का मुकद्दमा मुलतबी रहे—

धर्मराज ने आज्ञा दी अच्छा इसे अभी ले जाओ और नज़र बन्द रक्खो जब तक हम इसे फिर लाने की आज्ञा न दें—शेष—

मिडवैफरी ॥

श्रीयुत राय महेन्द्रनाथ ओहदेदार बहादुर एसिसटेण्टसरजन शहर इलाहाबाद ने डफरिनफण्ड कमिटी की मञ्जूरी से "मिडवैफरी" "बालतन्त्र" अर्थात् धात्रीकर्म और बालचिकित्सा की बड़ी उपयोगी एक किताब उर्दू भाषा में तैयार कर छपवाया है—इस किताब में बहुत सी बातें ऐसी लिखी गई हैं जो सर्वसाधारण को परम उपकारी हैं और जिसे सबों को जानना चाहिये—जैसा बच्चों की खुराक और पोशाक आदि जच्चे खाने में प्रसूता स्त्री को किस तरह पर रहना चाहिये कैसा भोजन करना चाहिये दूध पिलाने की तरकीब और सद्योजात बालक को उत्तम रीति पर पालन पोषण का क्या सहज प्रकार है इत्यादि—निस्सन्देह इस किताब के लिखे अनुसार सूतिकागृह का सब बन्दोबस्त किया जाय तो जँभुआ आदि रोग जिस्के कारण सैकड़ों बालक नष्ट हो जाते हैं कभी न हों—ग्रन्थकार महाशय यदि इस पुस्तक को हिन्दी में भी छपवा दें तो अत्यन्त उपकार हो बहुत से घरों में विशेष कर स्त्रियां जिन को ऐसी पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिये उर्दू नहीं जानतीं उन को इस्से तभी लाभ पहुंच सक्ता जब यह हिन्दी अक्षरों में छापी जाय—यह किताब लफ्टिनेण्ट गवर्नर सर आकलैंड कालविन को समर्पण की गई है मूल्य इस्का मै डाक महसूल २।) है—गनेशदास बुक्सेलर जानसेन गंज इलाहाबाद में या ग्रन्थकार को लिखने से मिल सक्ती है—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० १६ सं० १ } प्रयाग { सितंबर १८९२

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १६ संख्या १ | प्रयाग | सितंबर सन् १८९२ ई०

वर्षारम्भ ॥

उस करुणा वरुणालय का अनेक धन्यवाद है कि आज हम चन्द्रमा की भांत सोलहो कला पूर्ण हो सोलहवें वर्ष में प्रवेश करते हैं–बारह वर्ष की एक छोटे युग में गिनती है हम एक सवाई उस्के आगे भी डांक गये–देखते ही देखते जो निरे दूधमुहे बालक थे अब तरुण हो गये जो तरुण थे उन पर बुढ़ापा छा चला और जो बूढ़े थे उन का तो कुछ कहना ही नहीं पांव लटकाये बैठे हुये हैं–दिन रात अनेक भांत की चिन्ता में व्यग्र हमारी अकिल भी अब बुढ़ाते चली—नोन तेल लकड़ी की वह फिकिर है कि गृहस्थी के भंवरजाल में पड़ बड़े विशाल बुद्धिवालों की बुद्धि भी गोंठिल पड़ जाती है तब हम ऐसे अल्पज्ञ मन्दमति अकिंचनों की कौन–विशेष कर ब्रिटिशशासन की शोभा इस महा मंहगी के ज़माने में सच किसी कबिने कहा है–

"घृतलवणतैलतण्डुलतक्रेन्धनचिन्तया सततम् ।
नश्यति विपुलमतेरपि बुद्धिः पुरुषस्य मन्दविभवस्य ॥"

अस्तु हमारे रसिक पढ़ने वाले यदि हम पर दया बनाये रहें और हमे बराबर सहारा देते रहैं दूसरी बात यह की हम जो ठीक समय पर उन के

पास पहुंच नहीं सक्ते इससे ऊबैं नहीं तो हम इस बुद्धिमान्द्य पर भी उन की रुचि के अनुकूल अपने को बनाये रखने में कहीं से त्रुटि न करें गे—अपने मुख से अपनी बड़ाई करना लघुता और हलकाई है किन्तु जिन्हे हमारे लेख का स्वाद भीना है वे जान सकें गे कि अति अल्प जो उन की सेवा का वेतन की भांत साल में एक बार हमे दिया जाता है वह उस्के मुकाबिले कुछ भी नहीं है जैसा चित्त विनोद हमारे द्वारा उन का होता है—खैर हम उन महाशयों को फिर भी धन्यवाद देते हैं और निस्सन्देह हम उन के एहसानमन्द हैं जो करावलम्ब की भांत दो ही एक बार के मांगने में मूल्य भेज देते हैं पर उन चाण्डाल महापतितों को कौन सी उपाधि दें जो बरसों तक बराबर पत्र गटकते गये मांगते २ हैरान हो गये मूल्य न पाया सांगता की भांत दो आने और लगाय बी—पी—भेजा सो भी लौट आया तब उन के नाम सियापा गाय चुप हो बैठ रहे—विदित रहे हम आप से पत्र किसी के पास नहीं भेजते जब तक मांग न आवै जब से उन बेइमानों का यह हाल देखा गया तो हम ने भी यह नियम कर लिया कि अपरिचित नये लोगों को नमूने की एक कापी भेज चुप हो बैठ रहते हैं—हिन्दी के ऐसे भक्त और सच्ची चाह रखने वाले हैं कहां जो केवल नमूने की कापी मात्र से प्रसन्न हो तत्काल मूल्य भेज पत्र लेने लगैं हरामी पिल्लों की जथा अलवत्ता जुरी है जिन का मनसूबा यही रहता है कि साल भर पत्र लेने के उपरान्त निबुआ नोन चटा दें गे—चालाकों की इस चालबाज़ी से खिन्न हो हम ने भी यही ठान लिया कि ग्राहकों की नामावली पतली और दुर्बल पड़ जाय गी बला से बिना पहले ही खूब ठोंक बजाय पत्र किसी को न दें गे—यहां इस सब अप्रासंगिक तान अलापने का आशय यह कि अब थोड़े ही लोग हमे सहारा देने वाले रह गये उन्ही के आसरे हमारा जीवन है किम्बहु—

सुनहु बिटप हम पुहुप तिहारे हैं, राखि हौ दया कर तो रावरे बड़ाई है—डार दे ही डारते तो मेरो कछु चारो नाहि, सुर नर मुनि लै के सीस पै चढ़ाइ हैं—सुरन चढें गे सीस नरन चढें गे और कहत रहीम हाथ हाथन लड़ाइ हैं—देस में रहें गे परदेस में रहें गे काहू भेख में रहैं गे तहू रावरे कहाइ हैं—

पश्चिमोत्तर की युनिवरसिटी ॥

यह किस्से छिपा है कि अब हमारी इस गिरीदशा में फिर उठने की जो कुछ आशा है वह केवल शिक्षा है विशेषकर इस पश्चिमोत्तर में जो समुद्र तट से इतनी दूर हटा है कि बनिज में जो २ फाइदे हैं उन से यहां वाले सर्वथा निरास हो रहे हैं—बरन कच्चा बाना जो हमारे खेतिहर अपने लिये पैदा करते हैं उसे भी कलकत्ता बंबई के नामी सौदागर कम दाम में खरीद ऊंचे दाम में बेंच खातिरखाह फाइदा उठाते हैं- व्यौपारियों का जीवन मरन सब रेलीब्रदर के हाथ में गिरों होगया है जो जब चाहता है भाव गिरा देता है और खरीदने लगता है फिर उसी का दाम ऊंचा कर एक का दो कर लेता है और हिन्दुस्तान के कुल व्यौपार का मुनाफ़ा सब उसी के पाकेट में समाता जाता है—रही फौज की सात रुपये माहवारी की सिपाहगीरी की नोकरी सो उस्में भी गवर्नमेंट अब यह कह रही है कि बंगाल आरमी में लड़ने भिड़ने की ताकत और जोश बाकी न रहा इस लिये सिक्ख पठान गोरखे अफगानी भरती किये जांय जिन्में बहादुरी और टटका खून अभी भरपूर कायम है—बिचार कर देखो तो यह कुसूर गवर्नमेंट ही का है इस्में हमारा कौनसा अपराध है—अस्त्र शस्त्र का प्रयोग हम से बिल्कुल छीन लिया गया फौज़ी तालीम कहीं बाकी न रही तब यह झूठी तोहमत हम पर क्यों रक्खी जाती है—बनिज और सैनिक जो दो बड़े हिस्से तरक्की के रहे वे इस तरह पर निकल गये—रहा शिक्षा का द्वार उस्में बड़ा हिस्सा रोटी कमाने का शिल्प शिक्षा "टेकनिकलएज्युकेशन" उसका अभी बीज भी नहीं बोया गया सिर्फ ज़बानी जमा खर्च है—बचा किताबी इल्म "आर्ट एज्युकेशन" उस्में भी अंगरेज़ी शिक्षा जिस्का इस समय हम को बड़ा खयाल है और उसी के ऊपर देश का भावी कल्याण निर्भर है वह शिक्षा दिहाती मदरसों में हई नहीं ज़िला स्कूलों में इन दिनों नेसफील्डसाहब की कृपा है जो हमारे विद्यमान डइरेक्टर अफपबलिक इन्स्ट्रक्शन अर्थात् इस देश के शिक्षा बिभाग के कर्त्ता धर्त्ता महाप्रभु हैं जो इस समय अपनी बनाई किताबों की बदौलत मालामाल हो रहे हैं जिन का सेलेक्शन आठवें दरजे से इन्ट्रेंस तक बराबर जारी है और हरसाल बदला करता है—टका कमाने की हिकमत हो तो ऐसी हो—अस्तु आठ वर्ष तक बराबर नेस्फील्ड साहब का

सेलेक्शन पढ़ने के बाद लड़कों को इतनी योग्यता भी नहीं होती कि चार जुमले अंगरेज़ी के अपने खयाल जाहिर करने में लिख सक्के—अब युनिवरसिटी या कालेजों की शिक्षा जिस्पर अंगरेज़ी शिक्षा का कुल दार मदार आलगा है उस्की कथा यह है ज़रा कान लगा कर सुनिये—यह वह युनिवरसिटी है जो इस उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दुस्तान और योरप के बड़े २ शिक्षा विभाग के तारतम्य देखने के बाद स्थापित कीगई है अब इस्में इन्ट्रेंस के उपरान्त ६वर्ष तक तीन दरजों में विभाग कर पढ़ाया जाता है पहले में ५ विषय दूसरे अर्थात् बी—ए—में ३ विषय और तीसरे एम—ए—में केवल एक—युनिवरसिटी का दो ही काम समझा गया है किताबें चुन देना और इमतिहान ले लेना ३० से ले ७० मार्क तक उन चुनी हुई किताबों में जो पावें उस्को युनिवरसिटी परीक्षोत्तीर्ण मानती है—किताबें जो चुनी जाती हैं वह अंगरेज़ी भाषा के परमाचार्य शेक्सपियर मिलटन टेनिसन जानसन एडिसन मिल स्पेन्सर इत्यादि के ग्रन्थों से थोड़ा २ चुन कर रख दिया जाता है—उसी पर प्रोफेसर लोग लेकचर देने का खाली नाम करते हुये एक बार पढ़ देते हैं—हमारे पहले के प्रोफेसर इडटेन रेकमेलन आदि जो नोट छपा दिये हैं उन से हाल के इन प्रोफेसरों को इस कदर भी मेहनत नहीं करना पड़ता कि छात्रों के पढ़ाने में विशेष मस्तिष्क को क्लेश हो—पांच घंटे कालेज रहता है पर मुशकिल से तीन घंटा प्रोफेसरों का विद्यार्थियों के साथ खर्च होता है——उपरान्त इस्के प्रोफेसर साहब कुछ नहीं जानते यह कौन है कहां का है क्या करता है—हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि हम इन विद्वानों की निन्दा करें किन्तु इस युनिवरसिटी का क्रम ही ऐसा हो गया है कि इतनही पढ़ाना विद्यार्थियों के लिये बहुत समझा गया है—कदाचित इस्का एक कारण यह भी हो कि ये प्रोफेसर बहुधा अंगरेज़ होते हैं अंगरेज़ और हिन्दुस्तानियों में अभी इतनी रबतज़बत नहीं है कि जीखोल दोनों आपस में मिलें जिसे अंगरेज़ खुद मान रहे हैं कि यह एक बड़े हानि की बात है—

प्रोफेसरों को तो यह बहुत ही उचित है कि वे अपने छात्रों के साथ सहानुभूति रक्खें सब प्रोफेसर ऐसे नहीं भी हैं बाज़े २ अपने छात्रों के ऐसे उपकारी हैं और ऐसे स्नेह से मिलते हैं कि उन की उपमा नहीं है जैसा स्वर्गवासी मिस्टर

हरिसन थे जिन को लोग अब तक पढ़ता रहे हैं–कितने ऐसे भी हैं कि अपने अर्दली के चपरासियों को मना कर रक्खा है कि कोई मिलने आवे तो उस्की इत्तिला न करो–कदाचित् इस्का कारण यह हो कि ये प्रोफेसर इतने विद्वान् होते हैं और विद्या अनुशीलन में इतना प्रवृत्त रहते हैं कि छात्रों से मिलने में अपने समय को व्यर्थ नहीं खोया चाहते–इस सब का परिणाम यही देखा जाता है कि लड़कों ने अपना यही मुख्य काम समझा कि नोट जो छपे छपाये मौजूद हैं उन्हे याद कर किसी तरह ३० मार्क पाने लायक हो गये डिप्लोमा हासिल कर अपने को पूर्ण विद्वान् मान बैठे इस लिये प्रत्येक विषय के ग्रन्थ-चुम्बक तो अलबत्ता रहते हैं पर पूर्णता उन्में किसी विषय की नहीं आती–और इसे तो हम कई बार लिख चुके हैं कि छात्र अवस्था के उपरान्त हम लोगों की समाज का क्रम बाल्यविवाह इत्यादि कई कारणों से कुछ ऐसा बिगड़ रहा है कि फिर किस्से हो सक्ता है कि युनिवरसिटी का इमतिहान पास कर विशेष विद्या उपार्जन में समय दे सकें––तो निश्चय हुआ कि इस समय युनिवरसिटी को छोड़ दूसरा ज़रिया उमदा तालीम का नहीं रहा इस लिये यदि इस्का क्रम सुधारा न गया तो हम लोगों के पूर्णविद्वान् होने की बहुत कम आशा है–

दमयन्ती स्वयंवर नाटक ॥

द्वितीय अङ्क

स्थान

अन्तःपुर

(सखी सहित दमयन्ती बैठी हुई हंस आकाश से उतरता हुआ दमयन्ती के पास आकर चुगने लगता है) (दमयन्ती सखियों के साथ गेंद खेलती हुई अकस्मात् हंस पतन का शब्द सुन चकितसी हो क्रीड़ा पर्वत के पास हंस को चुगते देख)

दमयन्ती–सखि विहंगिके देख यह कैसा उत्तम पक्षी है इस्के सोने के पंख कैसे चमक रहे हैं चरण इस्के ऐसे लाल हैं मानो मूंगे के बने हों–– हमारी बेंदी के बिखरे मोतियों को अपनी सुराही सी लम्बी और पतली गरदन झुकाये कैसा चुग रहा है सखि तू यहीं बैठी रह मैं इसे पकड़ लाऊं ॥

(हंस के पकड़ने की चेष्टा में यह धीमी चाल से चलती है और हंस इसे आते देख थोड़ा उड़ फिर वहीं आकर बैठ जाता है)-(दमयन्ती इसे पकड़ती है और यह भुलावा दे उसके हाथ से छुट जाता है दमयन्ती का प्रयास व्यर्थ देख विहंगिका ताली दे हंसती है—हंस उस हंसगामिनी के आगे २ चलता है और जब यह उसको पकड़ने लगती है तब उड़ जाता है)

नेपथ्य में—दमयन्ती क्यों व्यर्थ परिश्रम कर रही है कितनी दूर तक मेरे पीछे दौड़ैगी श्रम के कारण पसीने के बूंद तेरे चांद से मुखड़े पर मोतियों की आभा दे रहे हैं—बेल हवा में झोका खाती हित चाहने वाली सहचरी सहेली की भांत लता पल्लवरूप कर से तुझे मना करती है—तुम पृथ्वी पर चलने वाली और यह आकाश चारी है भला यह किस तरह तेरे हाथ में आ सक्ता है—यह हंस स्वर्गवासियों में से है पर राजा नल की धर्मशीलता और गुणों के वशीभूत हो देवराज इन्द्र ने उन्हीं के बगीचे के क्रीड़ासरोवर में रहने की इसे आज्ञा दी है—उन के कामक्रीड़ा के प्रमोद के समय स्वर्गगङ्गा मन्दाकिनी के जल से ओदे अपने सुवर्णमय पङ्खों से यह उन्हें बीजन करता है—दमयन्ती राजर्षि नल के असीम उत्कृष्ट गुणों का वर्णन आद्योपान्त कोई कहां तक कर सक्ता है—साधु और गुणियों की गणना में राजा नल अग्रगण्य हैं स्वर्ग की अप्सराओं में मुख्य रम्भा इस हंस के मुख से राजा नल की प्रशंसा सुन उन्में अनुरक्त हो जब नल को न पा सकी तो नल इस नाम की गन्धि से कुबेर के पुत्र नलकूबर को बरा—नल के स्वर का माधुर्य सुन इन्द्र के यहां के गवैया ने दुःख की सांस भर सोंच से हा हा ऐसा शब्द किया इसी से उस का हाहा नाम पड़ गया—मानुषी की क्या गणना है देवियों को भी उन के गुण और सौन्दार्य का स्मरण कर स्मर विकार होता है—पतिव्रताओं की अगुआ सती पार्वती अपने सतीत्व भंग होने की डर से उन के गुण सुन कर्णकण्डूयन के बहाने कानों में अंगुली दे लेती हैं—वेद पढ़ते २ जलजब्रह्मा जडतुल्य हो इसी डर से सदा समाधि लगाये बैठा रहता है जिस्में वक्रोक्ति निपुण राजा नल के वशीभूत सरस्वती का दुश्चरित्र न सुनने में आवे—श्री देवी यद्यपि मन वच कर्म से विष्णु की पतिव्रता पत्नी हैं पर वह भी अब राज्यलक्ष्मी और देह की शोभा के व्याज से नल में अनुरक्त हो गई हैं—अपनी अर्द्धाङ्गिनी के इस

चांचल्य दोष से खिन्न हो, सोच से विष्णु श्याम हो गये–दिन और रात दोनों में प्रकाश देने को नल के प्रताप का सूर्य और यश का चन्द्रमा तो विद्यमान ही था फिर इस प्रत्यक्ष सूर्य और चन्द्रमा को मैं ने क्यों बनाया यह तर्क जब२ ब्रह्मा के मन में उठता है तब२ सूर्य और चन्द्रमा इन दोनों के चारो ओर मण्डल कर देता है जैसा कोई अपनी भूल प्रगट करने को अशुद्ध अक्षर के चारो ओर गुड़िला खीच दे––ब्रह्मा के उस हाथ को धिक्कार है जो नल का मुख चन्द्र निर्माण कर फिर पर्व २ में पूर्णमासी को पूर्णचन्द्रमा बनाता है—नहीं२ मालूम होता है ब्रह्मा निरा जड़ नहीं है किसी२ समय बुद्धि का प्रकाश भी उस्में आ जाता है क्योंकि चन्द्रमा को थोड़ा बनाय जब नल के मुख की सुध आती है तो महादेव के जटा जूट में उसे फेक देता है—चन्द्रमा खुद भी यह बात सुन कि मेरी शोभा का जीतने वाला नल का मुख है लज्जित हो कभी सूर्यमण्डल में जा छिपता है कभी अभ्रपटल में लुकता फिरता है कभी समुद्र के जल में मारे लाज के जा डूबता है–नल के अंघ्रि कमल ने पद्मों को घृणित कर डाला और शरत् की पूनों का पूर्णचन्द्रमा तो उस्के मुख की सेवकाई के लायक भी नहीं है–अपने दान से कल्पवृक्ष को भी तुच्छ करते "यह मनुष्य दरिद्र होगा यह विधना का लेख जो याचक के ललाट में लिख दिया गया था उसे दारिद्र्य की दरिद्रता कर झूंठ न किया"–हे दमयन्ती कमलों को उस्के नेत्रों ने जीत लिया चन्द्रमण्डल की शोभा का तिरस्कार उस्के ईषत् हास्य की दमक ने कर डाला कहां तक कहें उस्के मुख की उपमा कहीं ढूंढ़े से भी नहीं मिलती–स्मर सुन्दर राजा नल के सौन्दर्य पर मोहित हो रमण के समय किस सुन्दरी ने अपने पति में नल की बुद्धि नहीं किया—नाग पत्नी चक्षुश्रवा होने के कारण नेत्रों से नल का सुयश सुन अपना जन्म सफल कर मानती हैं किन्तु उन के दर्शन से अपने नेत्रों की प्यास नहीं बुझा सक्तीं इस कारण अपने को धिक्कारने भी लगतीं हैं––भैमी उन के गुणों को कहां तक गिनावें यदि त्रैलोक्य के समस्तप्राणीमात्र एक साथ गिननें लगें और उन की आयुष्य का भी अन्त न हो दूसरे परार्द्ध से परे भी संख्या के अङ्क हैं तो कदाचित उन के अनगिनत गुणों की गिनती हो सके–

दमयन्ती–(स्वगत) हंस का आगमन तो आज हमे कोई अतर्कित बड़ी सम्पत्ति के भांत हुआ है–(प्रकाश) हे सौम्य आप का स्वरूप बिना जाने

मैने जो कुछ अनादरपन से तुम्हारा निरादर किया हो उसे क्षमा कीजिये—इससे अधिक मेरा और क्या उपकार हो सक्ता है कि प्राणनाथ का वृत्तान्त सुनाय चित्त चकोर को आनन्द में मग्न कर दिया—पक्षिराज जिस बात को मन नहीं त्याग कर सक्ता उस का कण्ठपथ में क्योंकर आना संभव है कौन कुलवती अपक्व यौवना निर्लज्ज हो पाणिग्रहण की अभिलाषा भी प्रगट कर सक्ती है तब प्रत्यक्ष कहने की ढिठाई तो दूर रही—

नेपथ्य में—हे वैदर्भी ! तुम धन्य हो जो अपने उदार गुणों से राजा नल को वशीभूत कर लिया है—वह भी तुम पर ऐसा ही लौलीन हो रहा है—निस्सन्देह नल के पुण्यराशि का फल हो कर तुम उदित हुई हो—यह हंस उन्हीं का भेजा हुआ तुम्हारे पास आया है नलनामाङ्कितपत्र जो इसके परों में बंधा है यह इस बात की पहचान है दमयन्ती अब तू विश्वास रख और नल को अपने हस्तगत हुआ जान—दमयन्ती उसके परों से पत्र निकाल प्रणाम कर उसे विदा करती है और सखी समेत आप भी वहां से चल देती है—

द्वितीय गर्भाङ्क ॥

स्थान

राजद्वार

दमयन्ती की दो सखी विचक्षणा और सुलक्षणा का प्रवेश—

विचक्षणा—(दूर से पुकार कर) सखि सुलक्षणा आज तू क्यों ऐसी घबड़ाई सी दौ चिती दीख पड़ती है कहां की ऐसी उतावली तुझे है कि पुकारने पर भी कान न दै झपटी चली जा रही है—

सुलक्षणा—(पीछे देख खड़ी हो) प्यारी मेरा अपराध क्षमा कर मैं नहीं जानती थी कि तू आरही है—बहना मेरी उतावली का कारन क्या तू नहीं जानती कि हम लोगों की प्रिय सखी दमयन्ती महाकष्ट में व्याकुल सुस्त और अचेत पड़ी है सो महाराज भीम से इसका निवेदन करने जाती हूं—

विचक्षणा—सखी राजकुमारी दमयन्ती को कौनसी बिथा ने आ घेरा है जो आज वह ऐसी अचेत हो रही है—

सुलक्षणा—सखी यह तो तुम जानती ही हो कि राजकुमारी बहुत दिनों से नल में अनुरक्त है किन्तु जब से हंस के मुख से उन के गुणों की प्रशंसा सुना है तब से उसकी बिरह बिथा इतनी बढ़ी है कि किसी भांत शान्त नहीं होती—काम की अगिन के ताप से उसका मुख मलीन हो रहा है चन्द्रमा की शीतल किरने भी उसके लिये सूर्य की जलती हुई किरनों के समान झुलसा रही हैं-इस बिथा में महाउर का रंग भी उसके चरणों को बड़ा बोझ है-चोटियों में गुथे फूल और चन्दन अरगजा का लेप अत्यन्त श्रम दे रहा है—नल जिन्हों ने हमारे शरीर की शोभा छीन लिया है सो इसके मन में बसते हैं इस खार से कामदेव उसे और भी सताता है—काम के आग की दाह दूर करने को मृडालनाल को शीतल समझ दमयन्ती अपने ऊपर रखती है सो अपने से अधिक सरल और शीतल दमयन्ती की भुजा देख लाज से मलिन और सङ्कुचित हो जाती है—सीता ने अग्नि में प्रवेश कर अपनी शुद्धता प्रगट किया था इसी से दमयन्ती भी कामाग्नि में अपना शरीर जलाती है जिस्में हृदय स्थित नल को प्रगट हो कि मैंने स्वप्न में भी कभी दूसरे पति की इच्छा नहीं किया—अग्निबाण के समान पञ्चबाण के बाण उसके मन में चुभे हैं इसी से उस आग के बुझाने को अबिच्छिन्न आसुओं की धारा बहा रही है—बहना मैं अधिक नहीं ठहर सक्ती महाराज से जाके कहूं जिस्में वे आकर जल्द इसकी कोई उपाय करें—

विचक्षणा—सखि तू बिलम्ब मत कर मैं भी प्यारी के देखने को जाती हूं (दोनों गईं)

तृतीय गर्भाङ्क ॥

स्थान

दमयन्ती का शयन मन्दिर ॥

दमयन्ती फूलों की सेज पर पड़ी कहर रही है विहङ्गिका आदि कई सहेलियां उसके चारो ओर बैठी हुई शीतलोपचार कर रही हैं विचक्षणा छिप कर उसकी उन्माद अवस्था के प्रलापों को सुन रही है ॥

दमयन्ती—(चन्द्रमा की ओर देख) ऐ कलङ्की चन्द्रमा तू अपनी दाहक किरणों से बिरही जनों को जलाने की निर्दयता किस गुरु से सीखा है—

महादेव के कण्ठ में बसने वाले कालकूट विष का तू सहवासी है समुद्र की बाड़वाग्नि का सहोदर है तब तेरी किरनों में दाहकशक्ति का होना कौनसा अचरज है—समुद्रमथन में मन्दराचल की रगड़ से तू चूर २ क्यों न हो गया—यदि तू यह समझता हो कि प्राणान्त के उपरान्त तो दमयन्ती का मन मेरे में अवश्य ही आ रमेगा क्योंकि लिखा है "मनश्चन्द्रे निलीयते" सो इस वाक्य का अर्थ स्मर पण्डित ने मुझे चन्द्र शब्द नल का मुख चन्द्र का वाचक बतलाया है—हम ऐसी विरहिणी के वध का पातक तू किस तीर्थ में स्नान कर धोयेगा—ज्योतिषियों की मूर्खता को क्या कहें कि विरही जनों के वध का पातकी इस पूर्णचन्द्र को शुभग्रह कहते हैं और कृष्णपक्ष के क्षीणचन्द्र को पापग्रह -ऐ सखी तू राहु से मेरे ओर से विनती कर कह दे कि तू इसे द्विजराज समझ ब्रह्महत्या की भय से निगल कर फिर क्यों त्याग देता है—पञ्चबाण तुझे अत्यन्त निर्दयी और निठुर जान विधाता ने जो तेरे बाणों को फूलों का बनाया सो अच्छा ही किया यदि कहीं तेरे बाण लोहे के होते तो तीनों लोक में प्रलय हो जाता

विहंगिका—प्यारी धीरज धर, धीरज धर महाराज भीम प्राणनाथ के मिलने की उपाय अवश्य करेंगे—अपने धैर्य गुणों को प्रकाश कर किसी भांत प्राणों की रक्षा कर—

दमयन्ती—सखी ये प्राण ही तो मेरे बैरी हो रहे हैं यदि मैं न जीती रहती तो इन दुःखों को क्यों सहती (मूर्छित हो जाती है)

(विहंगिका और चन्द्रलेखा दोनों उसे बीजन करने लगती हैं)

दमयन्ती—(अकुला कर) सखियो! तुम मेरे लिये क्यों कष्ट सह रही हो (दोनों सखी एक दूसरे का मुख देखने लगती हैं)

चन्द्रलेखा—(मदनिका से) सखि इस रोग की औषधी मिलना तो अतिकठिन है और यह रोग इस्का ऐसा है कि इस्में विलम्ब न होना चाहिये इस्से जहां तक हो सके उपाय तो करना ही चाहिये—सखि सोमकुलभूषण उस राजर्षि में इस्की लगन बड़ाई के योग है—मैं चाहती हूं यह इस्का रोग भी दूर हो और उपाय किसी को प्रगट न हो—

मदनिका—उपाय गुप्त रखना तो बड़ा दुर्घट नहीं है किन्तु उस राजर्षि के साथ इस्का संयोग करा देना हम लोगों की सामर्थि के बाहर है ॥

चन्द्रलेखा—मेरे मन में आता है एक प्रीतिपत्र लिख उसके पास भेजूं।

मदनिका—सखी यह उपाय तो उत्तम है परन्तु दमयन्ती से पूछ लो (दमयन्ती से) प्यारी तू कह तो मैं एक पत्र प्राणनाथ के पास भेज तेरा सब हाल उन से निवेदन करूं—

दम०—सखी मैं डरती हूं मुझे मन्दभाग्य समझ प्राणनाथ उस पत्र को लौटा न दें—

चन्द्रलेखा—प्यारी तू अपने को इतना हीन दीन क्यों मानती है कौन ऐसा मूर्ख होगा जो अचानक कहीं गड़ा हुआ खजाना पाय उसके लेने से इनकार करे—

(मन्त्री और वैद्य सहित राजा भीम का प्रवेश)

वैद्य—(नाड़ी देख) महाराज इसे कोई मानसी दुःख मालूम होता है—मुझे तो इसके सब ढंग कामी जनों के से प्रतीत होते हैं—

मन्त्री—महाराज मुझे भी कुछ ऐसा ही भ्यासती है—इस लिये कुल प्रथानुसार अब आप स्वयम्बर रचिये तो जो इसके उपयुक्त वर होगा वह स्वयं प्रगट हो जायगा और दूसरी कोई उपाय इसके सदृश वर मिलने की क्या हो सक्ती है—

राजा—अच्छा तो तुम देश २ के राजाओं के पास पत्र लिख भेजो जिन के पास केवल पत्र भेजने से कारज होते देखो तो पत्र भेजो नहीं तो दूतों को भेज २ सबों को बुलाओ—

मन्त्री—जो आज्ञा—महाराज दमयन्ती के रूप और गुनों की तीनों लोक में धूम है मनुष्यमात्र क्या वरन देवता गन्धर्व किन्नर और दिग्पाल तक उठ धावेंगे—

राजा—अच्छा तो चलो स्वयम्बर के समारोह की फिकिर करें—(सब गये)

प्रेरित ॥

सम्पादक जी महाशय—

संसार में जितने दुःख और अधर्म हैं सब का मूल विषय वासना है इस लिये सुख की सामग्री जितनी ही अधिक और सुसाध्य होती जाती है उतनी

ही लोग सुख के लालची सुकुमार और आलसी होते जाते हैं—इतिहासों से यह अच्छी तरह प्रगट है कि जितने देश बन २ कर बिगड़ गये उन्में पहले लोग बड़े परिश्रमी सीधे स्वभाव वाले थोड़ी सामग्री में अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले होते रहे और इसी कारण उन को अपनी तरक्की करने का भरपूर अवकाश और बल प्राप्त था किन्तु पीछे जब वे ही लोग शत्रुओं का दमन कर सार्वभौम और चक्रवर्त्ती हो गये तब उन का ध्यान सुख और विषय वासना की ओर झुक पड़ा और यहां तक सुख की नींद में गड़गाप हुये कि जितना पहले का बल और उत्साह था सब खो बैठे—उपरान्त दूसरे लोग उपज खड़े हुये जिन्में समस्त पौरुषेय गुण सीधी चाल और सरल वर्त्ताव तो अलबत्ता था पर विषय वासना से उन की भेंट न हुई थी और जिन्हें पहले के लोग जो अपने को परमसभ्य चक्रवर्त्ती और सार्वभौम मानते थे इन हाल के पौरुषेय गुण वाले सीधे स्वभाव के लोगों को जङ्गली और असभ्य कहने लगे और अपने पहले अभ्युदय और बल के गर्व से जिस्का लेश भी अब उन्में कहीं बाकी न रहा इन की निन्दा तिरस्कार और हँसी करते रहे—परन्तु अन्त में उन्हीं के हाथों से परास्त हो उन के क्रीतदास बन गये—फिर समय के हेर फेर से ये दूसरे लोग इसी क्रम पर तीसरों के वशंवद हुये—इतिहास और तवारीखें इस बात की गवाही दे रही हैं कि फारस देश की प्राचीन सभ्यता किस ओर छोर को पहुंच गई थी उपरान्त पौरुषेय गुणशाली सीधे साधे यूनानी जब बढ़े तो फारस की सभ्यता को खण्ड २ कर दिया कुछ दिनों बाद जब यूनानियों में भोग लिप्सा बढ़ी तो रूमियों के हाथ से चूरंचूर किये गये—स्पार्टा एथैन्स करिन्थ थीब्स आदि यूनान के नगर जो किसी समय अमरावती का मुकाबिला कर रहे थे ढूहामात्र बच रहे—कभी सम्भव था कि रोमसरीखी महाराजधानी जो ४० कोस के गिर्द में बसी थी और दुनिया भर को लूट और उजाड़ कर अकेला रोम मालदार बन बैठा था जिस्की पुरानी सभ्यता की नकल आप की उन्नीसवीं शताब्दी के लोग करते २ हैरान हो रहे हैं पर रूमियों की नज़ाकत का शतांश भी अब तक न पा सके—कभी सम्भव था कि प्रबलबलशाली रोम उत्तरीय योरोप के पहाड़ी जंगली गाल्स तथा और २ जाति वालों के हाथ से दह कर उजाड़ कर दिया जायगा—तस्मात् एडिटर

महाशय जोश में आय एड़ी बेंड़ी कलम न चलाय दिया कीजिये यह तो हमें विश्वास है कि हम ऐसे गन्देदिमाग वालों की बात आप के मन में जगह न पावेगी किन्तु इस बात को याद रखिये मनुष्य में सादगी और विषयवासना का अभाव जब तक है तभी तक वह सब भांत प्रबल है और अधिक जन संख्या जहां इस तरह की है वह देश अवश्य उन्नति के शिखर पर चढ़ा रहता है—साहस बल वीर्य बुद्धि और सम्पत्ति का टूटा उस जाति के लोगों के बीच कभी न पाओगे—निश्चय जानो यह आप का फेशन तरहदारी और नज़ाकत इत्यादि देश या जाति के अवनति और घटती की निशानी हैं—औरङ्गज़ेब अपनी ज़र्क वर्क सेना लेकर २५ वर्ष तक दक्खिन में लड़ता रहा पर बीर बांकुरे सख्त महराठों से कभी एक बार भी पार न पाया वही पीछे जब इन महराठों में नज़ाकत आ समानी तब उन का क्या हाल हुआ यह भी उसी इतिहास से प्रगट है—बलन्दी के चोटी पर पहुंचे हुये गर्विष्ट महामदान्ध इङ्गलैण्ड से सब भांत पस्त गरीबनी इण्डिया का क्या जोड़ है इङ्गलैण्ड जो भोगविलास और सुख के सामानों को बढ़ाता जाता है सो यह किसी भांत अप्राकृतिक नहीं है—इङ्गलैण्ड इस समय दूसरा रोम बन रहा है इस्की नज़ाकत तरहदारी और फेशन की तरक्की का पूरा ज़माना आ गया है—पर इण्डिया जो अवनति की सीमा तक पहुंच चुकी उसे आप तरहदारी फेशन और भोग विलास की कीचड़ में क्यों सैंदा चाहते हैं—आप हम को जैसे हैं वैसे ही रहने दीजिये मोटा खाना और मोटा पहिनना जो सुगमता से मिल सक्ता है उसी में हमें सन्तुष्ट रहने दीजिये कोढ़ में खाज की भांत अब हमे और भी सुकुमार और विलासी बना कर क्या कीजिये गा—यदि आप यही चाहते हैं कि हमे कुछ सीख दें तो सहिष्णुता हमें सिखाइये कठिनाई और सख्ती सहने की आदत हम्मे पैदा कर दीजिये दूसरों के घर की खीर का लालच हमें न सिखलाइये हम अपने घर की जौ की मोटी रोटी में सुखी रहें इसी में भलाई है—यदि उस खीर से केवल दो आदमियों का पेट भरा और दस आदमी भूखे रहे वही जौ की रोटी से सब का पेट भर सक्ता है तो विचारवान तो यही कहेंगे कि खीर हमारे लिये विष है क्योंकि जब हमारे देश के दस आदमी भूखों मर गये जिन को लूट कर आज हम खीर खा रहे हैं तब शेष में सिवा अन्त के और

क्या होना है—जो लोग देश में सब चीज़ों के बनने का उपदेश तो देते हैं परन्तु स्वयम् आराम और आशाइस के परवश हो विलाइत की बनी चीज़ों के महारसिक और तन मन से विलाइत पर अपने को तसद्दुक किये हुये हैं उन से हमारा यह प्रश्न है कि क्या रोम एक ही दिन में और विना सबों के एक मत होने के बन गया था—इङ्गलैण्ड ही में यदि मेहनत और कारगरी के कदरदां न होते और वह कानून न बनता जिस्से विदेश की बनी चीज़ें बेचने वाले और काम में लाने वाले दण्डनीय होते तो कभी सम्भव था कि इङ्गलैण्ड इतनी उन्नति करता—तब यहां वाले जो मेहनत करैं और अपना रुपया लगावैं तो किस साथे—पहले ही पहल सब चीज़ें वैसी ही साफ स्वच्छ और सुथरी बनने लगैं जैसी इङ्गलैण्ड में इतने दिनों के उपरान्त बनने लगी हैं सो यह आप की निरी भूल है—अवश्य पहले पहल जो चीज़ें बनैंगी वह कुछ न कुछ मंहगी और भद्दी होंगी आप उन्हें देख चिढ़ैंगे और काम में किसी तरह लावैं ही गे नहीं तब रुपया लगाने वाला किस भरोसे अपना रुपया फंसावै और मेहनत करने वाला क्या खाकर आगे को अच्छी चीज़ बनाने की चेष्टा करे इस लिये सम्पादक महाशय आप इन सब बातों के पूर्वापर को पहले विचार के कांटे में रख के तौलिये तब हम लोगों को यदि दोष दें तो अलबत्ता आप जो कुछ कहें हम सब मान लेंगे नहीं तो यही कहा जायगा कि यह सब आप की केवल उक्ति युक्ति मात्र है विचारशक्ति को काम में नहीं लाये—किम्बहु तत्र भवत्सु विज्ञवरेषु—ह—दे—प्र—

श्रीमद्भागवत ॥

पहले इस्के कि भक्ति ज्ञान वैराग्य का सन्दोह संस्कृत के साहित्यामृत का प्रवाह वात्सल्य शृंगार आदि नव रसों का अलग २ स्वाद लेने की पीयूष-लहरी इस अनुत्तम रत्न श्रीमद्भागवत की समालोचना में हम कुछ लिखैं पुराण मात्र की एक सामान्य समालोचना हम इस लेख का अवतरण मानते हैं—

ये पुराण सब राजनीति, धर्मनीति, समाजशिक्ष, महानुभावों के चरितारख्यान, इतिहास, विज्ञान दर्शन, फिलासोफी, समय २ देश की रीति नीति में परिवर्तन का आदर्श संग्रह या मजमूआ हैं—सब पुराण एक ही समय और एक ही विद्वान के मस्तिष्क का नमूना हो सो नहीं वरन दो चार टकसाली

पुराणों को छोड़ अब तक बनते ही जाते हैं और समय के अनुसार उन्में नई २ गढ़न्त होती ही जाती है–जैसा गर्गसंहिता रामाश्वमेध जैमिनि अश्वमेध अध्यात्मरामायण अद्भुतरामायण नारदीयपुराण ब्रह्मवैवर्त कालिकापुराण आदि–छापा सुलभ हो जाने से तीर्थों के नये २ माहात्म्य व्रतों की कथा और दूसरे किस्मे कहानियां पुराणों के नाम से अब तक बनते ही जाते हैं–किन्तु इस्में कोई प्रकार की बुराई या प्रजा को किसी कुप्रवृत्ति की ओर झुकावट पैदा करने की कोई बात हो सो नहीं बरन वर्तमान हिन्दूधर्म जिस्पर सब ओर से कुलाढ़े चल रहे हैं उसी की पुश्तपनाही या जीर्णोद्धार की उपाय समझ जैसा लोना चाटी हुई दीवाल पर ऊपर से तोपताप कर उस्की मज़बूती कोई करे तद्वत ये पुराण अब तक बनते ही जाते हैं—दूसरे यह कि ये पुराण वेदों की टिप्पणी टीका या कमेंटरी हैं वेदों में जिन बातों का केवल सूत्रपात मात्र था उन्हें पुराणप्रवर्तकों ने रोचक और भयानक वर्णन के द्वारा अत्यन्त पल्लवित कर दिखाया बल्कि कहीं २ पर वेदों के समय की प्रचलित वदिकीहिंसा आदि महावीभत्सक्रियाओं को तोप ताप करते पुरणों ने वेदों की लाज रख लिया–बौद्ध और जैनियों को वेदों ही ने प्रबल पड़ने का मौका दिया वेद में यदि जीवहिंसा को इस प्रकार आदर न दिया जाता तो बौद्ध लोग "अहिंसा परमो धर्मः" इस सिद्धान्त को आगे रख क्यों तमाम हिन्दुस्तान में एकाधिपत्य स्थापित कर लेते—इस लिये पुराणकर्ताओं ने यही सोचा कि जो वेद के ऐब हैं उन्हें जैसे हो सके छिपाते जांय और जो उस्में शुद्ध सात्विककर्म यह लोक परलोक दोनों के लिये महोपकारी शिक्षा और रीति नीति हैं उन्हें आगे रक्खें—वेद जिस समय बनाये गये वह सृष्टि का आदिम समय था इस लिये वेद के प्रवर्त्तक सीधे सादे भोले लोगों को अनेक बुरी भली बातों का अनुभव कहां तब तक हुआ था जो वे उन २ विषयों को हांथ में ले उन की समालोचना में प्रवृत्त होते—पुराणकर्ता पण्डितों को दोचन्द फाइदा उठाने का मौका मिला एक तो जो कुछ उन्हों ने वेदों में देखा सुना या पढ़ा पढ़ाया दूसरे तब से अब तक में अनेक प्रकार की विद्या, शिल्प, विज्ञान आदि को भी अब कुछ २ प्रभात समय के अरुणोदय समान तरक्की पाने का अवकाश मिल चुका था इस लिये पुराणों में उन का भी संग्रह किया गया—फिर वेद

की खड़ विड़ही "अनपालिश्ड" रूखी इबारत और मज़मूनों में कहीं से रस तो टपकता ही नहीं तब रसिकजन जो केवल रसास्वाद में अपने जीवन की सार्थकता मानते हैं क्यों कर उधर बड़ी चाह और ललक के साथ रुजू हों—पुराणों की सरल सीधी इबारत और मज़मूनों में तो वह अलौकिकरसास्वाद का सुख अनेक स्थलों में पाया जाता है—हरिश्चन्द्र दधीच शिवि बलि इत्यादि उदारदानशील सत्पुरुषों के रोचक इतिहास वेदों में कहां पाये जाते हैं—वेदों में सत्य सहिष्णुता शान्ति आदि गुणों का प्रतिपादन मात्र किया गया पर उन २ उत्कृष्ट गुणों का दृष्टान्त द्वाररूप खड़ा कर देना पुराणकर्ताओं ही से बन पड़ा और जो अहिल्या तारा निमि नृग इत्यादि का भयानक इतिहास है उस्से यह दिखलाया कि काम क्रोध लोभ मोह आदिभयंकर षट् रिपु कैसे प्रबल हैं कि बड़े ज्ञानी सामर्थि वाले बुद्धिमानों को भी दबा लेते हैं इस लिये इन प्रबल इन्द्रियग्राम का विश्वास कभी न करे ये सब सत्कर्म और ज्ञान के बड़े ही परिपन्थी हैं इत्यादि पुराणों की साधारण समालोचना में हम ने कहा अब प्रस्तुत का अनुसरण करते हैं—

"विद्यावतां भागवते परीक्षा" "विद्यावान् की परीक्षा भागवत में है" पुराणों की समष्टि का सिरमौर यह श्रीमद्भागवत निस्सन्देह ऐसा ही है कि इस्में संस्कृत का सर्वस्व रक्खा हुआ है—यद्यपि अनेक विद्वानों का यह भी मत है "यन्न भारते तन्न भारते" "जो बात महाभारत में नहीं वर्णन की गई वह हिन्दुस्तान में नहीं है" किन्तु अलौकिक रसास्वाद और विद्वत्ता की परख और कसौटी के लिये केवल भागवत ही है—जो संस्कृत के साहित्य की एक महाप्रदर्शनी स्वरूप है अथवा विद्या की यह एक ऐसी बाज़ार है जिस्में जो जिस बात का रसिक हो जिस विषय का जो पण्डित हो उसे उस प्रकार का महंगे से महंगा और सस्ते से सस्ता मनमाफिक सौदा मिल सक्ता है—महंगे से महंगा हम इस लिये कहते हैं कि जो जिस बात में कच्चा है उसे उस विषय के समझने और हल करने में दान्तो पसीने आते हैं फिर भी उस्के समझ में वह विषय नहीं आता जैसा जिसने वेदान्त और उपनिषदों को नहीं पढ़ा या समझा उस्के लिये वेदस्तुति गर्भस्तुति आदि प्रकरण अतिक्लिष्ट और दुरूह हैं—एवम् सांख्य और योग की प्रक्रिया न समझा हो तो उसे एकादश

और तृतीयस्कन्द मानो वज्र का एक टुकड़ा है कवियों के वर्णन की अनोखी शैली का अनुशीलन जिस ने न किया हो उस की रूखी तबियत में वेणुगीत भ्रमरगीत पंचाध्यायी आदि की अनुपम कविता का रस कभी भीने ही गा नहीं—शान्तरस इस का स्थायीभाव है क्योंकि भक्ति ज्ञान वैराग्य जो शान्तरस के पोषक हैं उन का निर्वाह इस में आदि से अन्त तक किया गया है वात्सल्य और शृंगार रस का पोषक दशमस्कन्द से बढ़ कर और क्या हो सक्ता है जब कि व्रजवनितायें कविसंप्रदाय में शृङ्गार की अधिष्ठात्रीदेवी और चोर जार शिरोमणि कोटि काम के लजावने वाले भगवान नन्दनन्दन शृङ्गार के सर्वस्व माने गये हैं—कृष्णमय जीवन नन्द और यशोदा का जैसा वात्सल्यभाव दिखलाया गया है उसे पढ़ या सुन किस कट्टर कलेजे वाले निपूती का मन पुत्रस्नेह से परिप्लुत नहीं हो उठता—अक्रूर के आगमन या उद्धवसन्देस में गोपिकाओं का विलाप और करुणा इस ढंग से वर्णन की गई है कि पाखान भी पसीज उठे और नन्द यशोदा के वात्सल्य पर चिर प्रसूता पुत्रवतियों के स्तन से दूध टपकने लगता है—एवम् हास्य रस के पोषक अनेक स्थल में अनेक इतिहास ठौर २ युद्ध के वर्णन से वीर और वीभत्स रस का उद्गार—मिट्टी खाने के व्याज से यशोदा को मुख में समस्त ब्रह्माण्ड का दिखलाना यमलार्जुन वृक्षों की जड़ से यक्षाधिप का प्रगट होना इत्यादि कई इतिहास अद्भुत रस के परम पोषक हैं-सुतराम् पुराणों का सर्वस्व यह भावगत रसामृत का एक ऐसा महासागर है जिस्में नवो रस की तरंगें उठ २ काव्य वासना परिपूर्ण विदग्ध रसिक को परिप्लावित कर देती हैं-इसी तरह दार्शनिक के हृदय का भी पूरा सन्तोष देने वाला पुराणों में यह भागवत ही है—जिस्में दार्शनिकों के गूढ़सिद्धान्त स्थान २ में ऐसे जड़ दिये गये हैं कि मानो दर्शनशास्त्रों की यह "इनसैक्लोपीडिया" वृहत् अभिधान है-यहां तक कि गोवर्द्धन की पूजा के लिये इन्द्रयाग के खण्डन करने में कर्मवाद का आश्रय ले अनीश्वरवाद और नास्तिकता को भी प्रतिपादन किया है और नृसिंह की प्रह्लादकर्त्तृकस्तुति में आज़ाद खयाल "फ्रीथाट" भी दर्शाया गया है—सिवाय इस्के वर्णाश्रम के धर्म देवर्षि राजर्षियों में जो महानुभाव हो गये हैं उन का चरिताख्यान ऐसे मनोहर ढंग और दिल में चुभने वाले शब्दों में लिखे गये हैं कि पढ़ने या सुनने वालों के जी पर एक अनोखा असर पैदा करते हैं-सूर्य और चन्द्रवंश में उत्पन्न राजाओं

का वर्णन जैसा सिलसिलेवार इस्में पाया जाता है वैसा किसी दूसरे पुराण में नहीं—वेद और उपनिषदों की ऋचायें भाषान्तर कर "पाराफ्रेज" के ढंग पर इस्में रख दी गई हैं तात्पर्य यह कि संस्कृत साहित्य का कोई हिस्सा नहीं बच रहा जिस्का पूरा २ समावेश अनोखी उक्ति युक्ति के साथ इस्में न किया गया हो अलङ्कार और छन्दप्रबन्ध की कारीगरी तथा भवभूति और कालिदास प्रभृति कवियों कीसी योजनाशक्ति में यह किसी अंश में उन से पीछे नहीं हटा हुआ है—धन्य है इस्के कर्ता की लोकोत्तर प्रतिभा को ऐसा सर्वज्ञ अद्भुत विद्वान् हिन्दुस्तान ही में क्या वरन और किसी भाषा में भी नहीं हुआ—कोकिलकण्ठ जयदेव की कोमल वाक्यपदावली केवल भागवत ही का प्रसाद है—अब इस्का कर्ता कौन था इस प्रश्न के उत्तर में यह तो स्पष्ट ही है और भागवतकार ने मुक्तकण्ठ होकर स्वीकार किया है कि यह पुराणार्क सब के पीछे बना है—नारदपञ्चरात्र जो साफ २ सातसौ वर्ष के ऊपर का बना हुआ नहीं मालूम होता उस्का हवाला भागवत में दिया गया है तब इस्के आधुनिक होने में कौनसा सन्देह है ऐसा मालूम होता है कि भागवत वाले ने विष्णुपुराण भारत और हरिवंशपुराण को आगे रख उस्के कथा भाग को विशेष पल्लवित किया है सिवाय इस्के वेद के समय के ऋषियों के से सरल सीधे अक्लिष्ट शब्द जो पुराण और आर्षग्रन्थों की शैली है वह तो इस्में कहीं पर हुई नहीं है—कोई स्थल इस्का ऐसा नहीं है जहां पर इस्की इबारत में केवल एक प्रसाद गुणमात्र हो किन्तु समास बहुल और अत्यन्त क्लिष्ट शब्दों से यह स्पष्ट है कि इस्के कर्ता ने ओज और माधुर्य गुणों के समावेश की भी इस्में भरपूर चेष्टा की है—अतएव वैदर्भी गौणी पांचाली काव्य की तीनों रीतियों का आदर्शस्वरूप प्रसाद ओज माधुर्यगुण विशिष्ट महाकाव्यों का भी किवलेगाह भागवत को कहने में किसी को कभी उजर हो ही गा नहीं—इस्से हम यही निश्चय करते हैं कि विक्रम और भोज आदि जो संस्कृत की उन्नति के बड़े भारी स्तम्भस्वरूप हुये हैं और जिन की गुण ग्राहकता के कारण संस्कृत अपनी चरमसीमा को पहुंची और शङ्कर रामानुज माध्व वाचस्पति मण्डन सायन प्रभृति महापण्डितों के होने के उपरान्त भागवत बनाया गया है—क्योंकि उन २ विद्वानों के सब खयालात भी इस्में पाये जाते हैं फिर एक स्थान में द्रविड़ देश और ताम्रपर्णी नदी की बहुत कुछ प्रशंसा की गई है और

वैष्णवसम्प्रदाय की उत्पत्ति वहीं से इसमें मानी गई है इससे स्पष्ट है कि यह रामानुज और माध्व आदि विद्वानों के प्रादुर्भाव के उपरान्त लिखा गया है क्योंकि तप्तमुद्राङ्कित वैष्णवसम्प्रदाय के प्रवर्त्तक आचार्य वहीं पैदा हुये हैं— जो हो यह किसी हाल के महापण्डित का बनाया हुआ ग्रन्थ है जब कि संस्कृत सब भांत परिपूर्ण हो घटने लगी थी--लोग बोपदेव को इसके कर्ता कहते है वही हों हम को इससे कोई प्रयोजन नहीं है कि यह आधुनिक ग्रन्थ है या प्राचीन किन्तु जो कुछ भागवत में है और जैसा कुछ इसके द्वारा विद्वानों का सन्तोष और मनोरञ्जन होता है वैसा संस्कृत के और किसी दूसरे ग्रन्थ से होना असम्भव है—किन्तु हमे इस बात को प्रगट करते बड़ी शरम और दुख होता है कि इस भागवत को जो संस्कृत के समस्त साहित्य और शास्त्रों का सर्वस्व है उसे इन दिनों के कदर्य ब्राह्मण जिन्हें शुद्ध श्लोक बांचने का भी शऊर नहीं है. मूठी मूठी भर अन्न के लिये कहते फिरते हैं जो इस बात की गवाही है कि हिन्दूस्तान के कहां तक बुरे दिन आगये और हिन्दूधर्म तथा उसके मुखिया ब्राह्मण कहां तक निकम्मे और कदर्य हो गये—जो हो हम यह अवश्य कहेंगे कि जो भगवान की निष्काम भक्ति और चित्त की शान्ति चाहता हो उसे चाहिये कि नित्य भागवत शास्त्र का अनुशीलन किया करे—

श्राद्ध ॥

श्राद्ध के प्रकरण में मिताक्षराकार विज्ञानेश्वराचार्य ने यह प्रश्न उठाया है कि अपने किये हुये शुभ अशुभ कर्म के वश हो स्वर्ग या नरक को गया हुआ प्राणी पुत्रादि द्वारा प्रदत्त अन्न पान आदि से क्योंकर तृप्ति पा सक्ता है— पाता भी हो तो पितर अर्थात् पितृपितामहादि तो स्वयं अपने किये पाप पुण्य का फल भोग रहे हैं वे पुत्र पौत्र आदि का कल्याण क्या कर सक्ते हैं— कैद में पड़ा हुआ जब आप ही नहीं छुट सक्ता तो वह दूसरे के लिये क्या शिफारिस कर सक्ता है—इस लिये श्राद्ध करना सर्वथा व्यर्थ और निष्फल है— यह श्राद्ध जिसके उद्देश्य से की जाती है न तो उसको पहुंचती है न उसके करने से अपना कुछ कल्याण होता है—

इस प्रश्न के उत्तर में उक्त ग्रन्थकार ने यों लिखा है कि इस श्राद्धकर्म में पितृपितामह देवदत्त यज्ञदत्त आदि के समान श्राद्धदेय वस्तु पाने के अधि-

कारी नहीं होते किन्तु वे पितरशब्दवाच्य हो उन के अधिष्ठातृदेवता वसु, रुद्र आदित्य स्वरूप सहित समझे जाते हैं वे ही अधिष्ठातृदेवता पुत्रादिकों से दिया हुआ अन्न पान से तृप्त हो उस प्राणी को तृप्त करते हैं और श्राद्ध कर्ता को धन पुत्र आदि फल से योजित करते हैं—जैसा गर्भिणीमाता कुटुम्ब परिवार से दिये हुये दोहद स्वरूप अन्न पान से तृप्त हो पेट में जो गर्भ का बालक है उसे भी तृप्त करती है और अपने कुटुम्बियों का उपकार करती है इसी तरह वसु, रुद्र, आदित्यस्वरूप देवता क्रम से बाप, दादा, परदादा के नाम से श्राद्ध में दिये अन्न पान आदि से तृप्त हो देवदत्त यज्ञदत्त नाम वाले पितृपितामह को तृप्ति पहुंचाते हैं और कर्त्ता को—

"आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः ॥"—

गत संख्या में युक्तिद्वारा श्राद्ध के प्रचलित क्रम को हम ने संसार के बड़े उपकार का कर्म सिद्ध कर दिखाया इस संख्या में शास्त्रानुसार श्राद्धकर्ता को क्या लाभ होता है सो लिखा जो केवल विश्वास और मान लेने की बात है तर्क की नहीं—अब यह प्रचलित क्रम कहां तक श्रुति स्मृति सम्मत है सो दिखाते हैं—मनुः—

त्रींस्तु तस्माद्धविःशेषात् पिण्डान् कृत्वा समाहितः।
औदकेनैव विधिना निर्वपेद्दक्षिणामुखः ॥

होम करने से बच गई जो हवि है उस्में से तीन पिण्डे बनावे और विधिपूर्वक दक्षिणाभिमुख हो पितरों के उद्देश्य से दे—

न्युप्य पिण्डांस्ततस्तांस्तु प्रयतो विधिपूर्वकम्।
तेषु दर्भेषु तं पिण्डं निमृज्यात्लेपभागिनाम् ॥

उन पिण्डों को विधिपूर्वक दे जिन कुशों पर पिण्ड दिया गया है उन की जड़ में लेप भाग भुज पितरों के उद्देश्य से हाथ पोंछ साफ करे "पितृपितामह प्रपितामह के उपरान्त जो पितर हैं उन्हें लेपभाग भुज कहते हैं"—और भी—यजु० अ० २ मं० ३१

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायिषत—

हे पितर तुम इस कुशे पर आकर सुख से आनन्द करो तब हमारे दिये हुये अन्न हविष को जितना जिस्का भाग हो उस्के अनुसार जैसा बैल घास खाकर तृप्त होता है तैसे ही तुम हविष से सन्तुष्ट हो—ऋक् मं० १० सू० १५ मं० ६

आच्या जानुदक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभिगृणीत विश्वे ।
माहिंसिष्ट पितरः केनचिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम ॥

हे पितर तुम सब घिटुने टेक दहिने अलंग बैठ के इस यज्ञ की बड़ाई गाओ—मनुष्य के स्वभाव से हम लोगों ने तुम्हारा जो कुछ अपराध किया हो उस्से तुम हमारी हिंसा मत करो—ऋक्० मं० १० सू० १५ मं० ५

उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।
त आगमन्तु त इह श्रुवन्त्वधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥

हम पर अनुग्रह करने वाले या सोम के सम्पादन करने वाले पितर जो तुम यज्ञ के योग्य प्रिय और तृप्ति करने के योग्य निधि सदृश हविष के निमित्त बुलाये गये हो सो यहां आकर इस कर्म में हम लोगों से की हुई स्तुति को सुनो और आदर पूर्वक हमारी बड़ाई करो और हमारी रक्षा करो—

ऐसी २ यजु और ऋक् की कोड़ियां ऋचाये हैं जिन से यह स्पष्ट है कि पितर कुशे पर आवाहित हो बैठाये जाते हैं और अन्न आदि जो उस समय दिया जाता है उस्से उन को तृप्ति पहुंचती है और तृप्त हो श्राद्धकर्ता के धन पुत्र आदि की वृद्धि करते हैं—यह हम अवश्य कहेंगे कि इन दिनों के कदर्य ब्राह्मण जिन को पितरों के उद्देश्य से दिया जाता है किसी तरह पर हव्य कव्य पाने के अधिकारी शास्त्रानुसार नहीं ठहर सक्ते तो इस्से श्राद्धकर्म क्यों दूषित हुआ प्रथा बनी रहेगी तो श्रद्धालू जन योग्यपात्र ढूंढ लेंगे—

बार २ दो नम्बर से श्राद्ध इस मनहूस शब्द को पढ़ते २ हमारे पाठक लोग ऊब गये होंगे ईस लिये अब हम इस श्राद्ध संबन्धी लेख ही को श्राद्ध किये देते हैं—अब कि बार तो हमे पढ़ने वाले क्षमा करैं आगे से श्राद्ध के सम्बन्ध में हम न लिखेंगे क्योंकि इन मज़हबी झगड़ो को तै करने बैठें यह हमारे पत्र का उद्देश्य नहीं है इत्यलम्—

धर्मराज की कचहरी—पहले के आगे से—

उस अपराधी के हट जाने पर एक दूसरा प्राणी सामने आया यह जीव एक ऐसे आकार का था कि सबों का ध्यान उसी की ओर जा टूटा—इसके चोटी या डाढ़ी कुछ न थी मुच्छें गाल तक और नीचे को झुकी हुई थीं इसकी चकोर सी चंचल आंख चश्में से ढंपी थी चेहरा गोल नज़ाकत और तरहदारी का मानो खातिमा था अंगरेज़ी कटाव का चपकन बदन से चुभा हुआ था गरदन में कालर और पैरों में पतलून और बूट कसा हुआ था—

धर्मराज इसका बाहरी आकार देख कुछ अचरज में हो बोले यह तो कोई बड़ा ही योग्य और प्रतिष्ठापात्र मालूम होता है।

चित्रगुप्त ने कहा महाराज इसकी योग्यता और इसके प्रतिष्ठापात्र होने में कोई सन्देह नहीं है मिलनसारी और नुमाइश का तो यह पुतला है और जीवनपर्यन्त इसी को इस ने संपूर्ण योग्यता का सर्वस्व माना संसार में जितने अर्थ हैं उसमें स्वार्थ को इस ने सबों से बढ़कर समझा—खुशामद करने में यह बड़ा पण्डित था योग्यता और विद्या की बदौलत इतना नहीं जितना खुशामद से इस ने बड़े २ हाकिमों को अपना पक्षपाती बना लिया और बड़े २ खिताब और पद हासिल किये—इस धूर्त ने खुशामद की पालिसी को ऐसा गह के पकड़ रक्खा की कार्य अकार्य लोकनिन्दा अपने देश या जाति के नफा या नुकसान को भी कुछ न खयाल किया—विश्वास इसका किसी धर्म या दीन पर न था "स्वार्थभ्रंशो हि मूर्खता" इसका सिद्धान्त था—स्वार्थ ही को इस ने देवता माना स्वार्थ ही को परमार्थसाधन का प्रधान अङ्ग समझा—पृथ्वी पर अपना सहधर्मी मनुष्यों का एक फिरका पैदा कर देने की इस ने बड़ी ही कोशिश की कि पढ़े लिखे नवयुवक सब मेरे साथी और चेले हो जांय किन्तु बहुत ही थोड़ी दूर तक इसमें कृतकार्य हुआ और अन्त को जब इसकी सब धूर्तता खुल गई तो हाकिमों ने भी जो इसे अपना कृपापात्र समझते थे इसपर विश्वास लाना मन से ढीला कर दिया तब यह इतो भ्रष्टस्ततोभ्रष्टः हो गया और सब इससे घिन करने लगे बल्कि जो इस की खुशांट की ढंगदारी से इसके बड़े मुशफिक और मेहरबान थे वे ही पीछे इससे फिरंट हो गये तब अन्त में वृद्धा वेश्या तपस्विनी की भांत सब ओर से निराश हो इस ने

माला हाथ में लिया—इतने में आप के दूत गये और इसे पकड़ लाये—अन्त समय ज्ञानी बन शान्ति भाव धारण करने का कोई हेतु होगा जिस्का भेद यही जानता होगा हमारी अकिल तो कुछ काम नहीं करती कि हम इस्की अत्यन्त गूढ़ कुटिलाई को थहा सकें—इतने में हाथ जोड़ यह खुद बोल उठा महाराज पृथ्वीतल निवासियों को तो मैं ने अपनी ढङ्गदारी और बाहरी वर्ताव से ऐसे जुल दिये कि मैं उन के बीच महत्तर समझा गया और खाति-रखाह अपना मतलब गांठा अब चाहता था कि आप को भी ठगूं और आप की नज़र में यह बात जंचा दूं कि मैं बड़ा ही ज्ञानी धर्मात्मा और भक्त हूं पर क्या करूं आपने बहुत जल्दी किया जो मुझे बुला भेजा—

धर्मराज ने आज्ञा दी कि चित्रगुप्त इसे ले जाओ और उस धुंधले ताखाने में जहां दांभिक और मक्कारों का दल इकट्ठा है कैद रक्खो जब तक सोच कर मैं फिर यह आज्ञा न दूं कि इसका क्या करना होगा—धर्मराज की आज्ञा पाय बिकराल भयङ्कर दूत एक साथ भीर के भीर टूट पड़े और लोहे के मु-दगरों से पीटते घिरीते इसे बाहर ले गये—क्रमशः—

कहावत या मसलें ॥

ऐसा मालूम होता है कि प्रत्येक भाषा के साहित्य को पुष्टि करने के लिये उस्में कहावत या मसलें होना बहुत आवश्यक है—फारसी के एक कवि ने लिखा है कि जानवर खाने पीने से पुष्ट होता है पर आदमी कान की राह से अर्थात् सब तरह की बातें सुनने से—इन कहावतों के द्वारा हम बहुत सी बातें ऐसा सहज में सिख लेते हैं जिन का सीखना किसी दूसरी तरह पर असाध्य है—दूसरी बात यह कि ये मसलें हमारी चाल चलन बात व्यौहार और नित्य वर्त्ताव में बहुत कुछ मदत देते हैं इस्के सम्बन्ध में एक बड़ी बात यह है कि कहावतों के बनानें या ईजाद करने वाले बहुधा बड़े विद्वान् या पण्डित नहीं होते पर साधारण बुद्धि वाले गंवार या देहकानी हैं—जिन के ज़रा २ से छोटे २ जुमलों या वाक्यों में कितनी ऊंची नीची बातों का अनुभव भरा रहता है—हमारे यहां इन मसलों के ईजाद करने वालों में एक घाघ था जिस्के कहे हुये मसलें वर्षा के सम्बन्ध में ऐसे अनुभव सिद्ध हैं कि उन कहा-वतों के ज़ोर से सब लक्षण मिलाय एक साधारण गंवार वर्षात के बारे में वह

बात कह देगा और पूरी उतरैगी कि इस समय के हवा पानी नापने वाले बड़े विद्वानों को भी न सूझै गी—जैसा—"रात निचन्दर दिन किचरान। कहैं घाघ बरषा नियरान" इत्यादि—और भी—"मुये चाम से चाम कटावै भुंइ सकरी में सोवै। घाघ कहैं ये तीनों भकुआ उढ़र जाय औ रोवै"—ऐसी २ घाघ की बहुत सी कहावतें हैं—एक कविगङ्ग हुये हैं उन के मसले फूहर और गंवारू तो हैं पर हास्य रस के पोषक हैं—ऐसे ही कबीर के अनमोल बोल सब एक २ ऐसी अनोखी कहावतें हैं जिन्में बड़े २ दार्शनिकों के सिद्धान्त भरे हुये हैं न उन्में कविता के अंश में कहीं से किसी तरह की त्रुटि पाई जाती है—ये कहावतें उर्दू हिन्दी बंगाली गुजराती महराठी आदि जितनी भाषा हैं जो हमारे बोल चाल के वर्त्ताव में हैं सबों में पाई जाती है तुलसीदास प्रभृति कवियों ने जहां पर अपने काव्यों में इन मसलों को रख दिया है वहां मानो नगीनासा जड़ दिया गया है—संस्कृत, फारसी, अंगरेज़ी आदि भाषाओं में भी कालिदास, सेक्सपियर, शेखसादी आदि कवियों ने जो कहावतें अपने २ काव्यों में रक्खी हैं वे सब लोकोक्ति "प्रोवर्ब" के नाम से चल पड़ी हैं—और जिन्में बुद्धि का सर्वस्व रख दिया गया है—संस्कृत में जो लोकोक्ति हैं उन्हें हम बहुधा उद्धृत कर लिखा करते हैं उस्से हमारे पढ़ने वाले अच्छी तरह परिचित हो गये हैं—हिन्दी के एकमात्र अवलम्ब ब्राह्मण सम्पादक पं० प्रतापनारायण मिश्र ने हाल में एक छोटीसी पुस्तक लोकोक्तिशतकनामक लिखी है जिस्में बहुधा बाबा तुलसीदास के भी काव्यों से लोकोक्ति चुन २ कर रक्खी गई हैं उस्के पढ़ने से हमारा यह कहना कि इन मसलों में चतुराई के बड़े २ सिद्धान्त रख दिये गये हैं अच्छी तरह स्पष्ट होता है—क्रमशः—

कृपालु ग्राहकों से ॥

हम आरंभ में कहचुके हैं कि आप हमारे जीवन हैं सर्वस्व हैं हम पर आप का छोह हमारे लिये सौकरोर असंख्य धन है हमे कोई दूसरा सहारा नहीं शरण नहीं वसीला नहीं—तो हे अशरण शरण हमारी न कुछ विशेष सहायता कीजिये तो वार्षिक कर की भांत अपना २ दाम तो भेज दीजिये आप सहज ही में मूठी ढीली कर दीजिये तो हम क्यों वार २ कृपणवत् याचना करें और प्रतिमास एक पैसे का एक कार्ड खराब कर पावआने का नुकसान सहा करें—इस लिये प्रार्थना है कि वर्ष पूरा हो गया अवश्य हमारी सुध लीजिये—"परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ"—किम्बहु—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि सूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० १६ सं० २ } प्रयाग { अक्टूबर १८९२

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १६ } प्रयाग { अक्टूबर
संख्या २ } { सन् १८९२ ई०

सर आकलैण्ड कालविन की हुकूमत के पांच वर्ष–

पूरे ५ वर्ष और १० दिन हमारा मनमाना शासन कर २८ नवम्बर को यह हम से अब सदा के लिये बिदा हुये–सुनते हैं रास्ते में मिसिर देश होते हुये इङ्गलैण्ड पधारें गे—इन की हुकूमत के ५ वर्ष तक बराबर हम लोग यही उम्मैद करते रहे कि इन से हमारी कोई बड़ीही भलाई होगी क्योंकि ये पुश्तैनी लफ्टिनेण्ट गवर्नर थे अब तक ऐसे कोई हाकिम नहीं आये थे जिन के पिता भी उसी काम पर रहे हों सिवाय इस्के ये बराबर हमारे ही ज़िलों में अब तक जंट और बन्दोबस्त के हाकिम से लफ्टिनेण्ट तक ऊंचे अधिकार पर पहुंचे इस लिये जैसा हम लोगों के भीतरी हाल से वाकिफ थे थे वैसा दूसरा गवर्नमेण्ट के कर्मचारियों में कम होंगे परन्तु आदि से अन्त तक निरास रहे और कोई ऐसा काम हम लोगों के उपकार का न देखा गया जिस्से हम इन्हें याद रखते वरन इन की ऊपटांग बातों से हम लोगों को ऊब अलबत्ता हो गई—ऐसा स्टेट्समेन पोलिटिशन राजनीति का मर्म जानने में कुशल और खज़ानचीगीरी "फैनैन्स" का काम समझने वाला सिवाय सर जानस्ट्रेची के दूसरा नहीं आया—यहां पांव रखते ही पहला काम इन का यह प्रगट हुआ कि–इलाहाबाद, बनारस, आगरा, बरेली और लखनऊ में दरबार किये गये पश्चिमोत्तर और अवध भर के राजा बाबू तअल्लुकेदार रईस महाजन उन २ दरबारों में बुलाये गये और उक्त लाट साहब ने अपने दरबारियों से प्रसन्न

मन हो कहा आप लोगों से परिचय करने का हमारा यही प्रयोजन है कि आप लोग जो कुछ जिस्के मन में हो जी खोल निर्भय हो हम से कहो प्रजा को जो कुछ क्लेश हो उस्के दूर करने का उपाय सोचना हम अपना परमधर्म मानते हैं—सहारनपूर से बलिया तक धूम मचगई कि अब प्रजा का सब दुःख दरिद्र दूर हो जायगा ज़मीन्दार और काश्तकार दोनों एकभाव समझे जांयगे अमीर गरीब सब की सुनाई होगी—कान को सुहावने मीठे २ ये वचन कह श्रीमान् इधर नैनीताल की ठण्ढी वर्फिस्तान की हवा सेवन को चले गये उधर सन् १८८८ में पश्चिमोत्तर और अवध के लिये एक बड़ेही राजनैतिक और सामाजिक आन्दोलन का साल शुरू हो गया—कहीं कानग्रेस कहीं कानफेरेन्स कहीं गोरक्षा सम्बन्धी आन्दोलन आरम्भ हो गये समाचारपत्रों में उन २ विषयों पर लेख और लेक्चर छपने लगे—चिरकाल तक याद रखने लायक पं० अयोध्यानाथ की स्पीच लखनऊ में और ह्यूम साहब की स्पीच इलाहाबाद में कानग्रेस के पोषण में दी गई—उधर सैयद साहब ने जिन को हाल में सर का खिताब मिलने से मुसल्मानों के बीच दोचन्द प्रतिष्ठा मिल चुकी थी अलग २ दो स्पीचें लखनऊ और नौचन्दी के मेले मेरठ में दीं मानो दो बंके गोले कानग्रेस के सत्यानाश के लिये छोड़े गये—हिन्दू और मुसल्मानों के दिलों में मुहर्रम और दसहरे से बढ़ कर खार पैदा होने लगी—कहीं कानग्रेस कमेटी कहीं पेट्रियाटिक एसोसियेशन के बोर्ड टंग गये—नैनीताल की हवा अलीगढ़ के रुख बहते देख अवध के नामी गिरामी तअल्लुकेदार कानग्रेस के विरोध में मीटिंग कर पेट्रियाटिक् एसोसियेशन के हितैषी और पोषक बने—सरकारी नौकरों को राजनैतिक आन्दोलन में शरीक होने की मनाही की गई—ह्यूम साहब की चिट्ठी का जवाब जो उक्त लाट साहब ने पायोनियर में दिया उस्से हम लोगों को इन का भरपूर स्वरूप ज्ञान हो गया—यद्यपि इन के आगमन के पूर्व ही इलाहाबाद में विश्वविद्यालय युनिवरसिटी और लेजिसलेटिव कौंसिल कलकत्ता बम्बई की तरह पश्चिमोत्तर के लिये भी कानून बनाने वाली सभा स्थापित हो चुकी थी पर उस्की कुछ काररवाई इन्हीं को दिखलाना पड़ा सो शिक्षाविभाग की ओर से तो ये आदि से अन्त तक बराबर उदासीन रहे तब विश्वविद्यालय की अधिक उन्नति क्योंकर सम्भव थी—रही लेजिसलेटिवकौंसिल सो उस्में ऐसी दो एक अण्ड बण्ड बिलैं

पेश की गईं और कानून बने जिस्से प्रजा को कोई लाभ नहीं म्युनिसिपलिटी के कानून और बईलाज़ अलबत्ता कस के गढ दिये गये—निस्सन्देह ये पुलिस का ज़ोर तोड़ने में बड़ेही सयत्न रहे इसी लिये पुलिस कमिशन बैठाया गया पर उस्का कोई परिणाम दृष्टिगोचर अब तक न हुआ और पुलिस की ओर से लोगों की शिकायत ज्यों की त्यों बनी है—बड़ा भारी काम जिस्का इन को बड़ा फक्र था वह यह है कि सफाई के बहाने शहर २ की म्युनिसिपलिटियों पर प्रबल पड़ इलाहाबाद, बनारस, आगरा, कानपूर, लखनऊ में वाटरवर्क्स फैलाया गया जिस्की बदौलत बनारस रयट को हम बहुत दिनों तक न भूलेंगे—कानपुर में वाटरवर्क्स सर्वथा वहां के रहने वालों की रुचि के विरुद्ध किया गया नहर के रहते वहां पइप फैलाने की कोई आवश्यकता न थी बरन वाटरवर्क्स का खर्च निवहने को जो चुंगी जारी कर दीगई इस्से वहां का व्यौपार मिट्टी में मिल गया और शहर की रौनक थोड़े दिनों में आधी हो जायगी—हम लोग इलाहाबाद वाले जो कष्ट उठा रहे हैं वह जीही जानता है—इस चिरस्थायी दुर्भिक्ष के समय जन्म २ के लिये एक ऐसा टैक्स जी का गांहक हो गया जिस्से काहे को कभी छुटकारा होने वाला है—यहां जो यावत् वस्तु इतनी मंहगी हो गई हैं कि पहले के अपेक्षा सवाई डेढ़ुड़े दामें पर बिक रही हैं वह इसी वाटरवर्क्स के कारन—दो चन्द सेचन्द चुंगी अलग दें उस्पर घरों के किराये की आमदनी के हिसाबसे सैकड़ा पीछे साढ़े सात रुपया पानी के टैक्स का भी दें—दाने २ को चाहे तरसें पर कल का स्वच्छ नीरोग पानी अवश्य पियें—लेडीडफरिन फंड जमा करने में भी कोई उपाय न छोड़ रक्खा और जैसे मिला रुपया जमा करने में न चूके—तात्पर्य यह कि दिया हमे कुछ नहीं जिसे हम प्रसाद की भांत सदा याद रखते जहां तक बन पड़ा हर एक बहाने लिया अलबत्ता—जाते २ भी यहां की हाईकोर्ट में सैयदमहमूद की जगह हिन्दुस्तानी जज के एवज़ सिविलियन अंगरेज़ जज कर हम लोगों की ऐसी हकतलफी की गई कि शायद जो घाव बहुत दिनों तक न पुरै गा—बड़े मुशकिलों से यह पद यहां की हाईकोर्ट में हिन्दुस्तानी को दिया गया था सो फिर छीन लिया गया इसी से हमने कहा कि इन से हमने कोई ऐसी बात न पाया जिसे सदा याद रखते बल्कि जो कुछ मिल चुका

था वह भी हर लिया गया—हिन्दुस्तानियों में कम से कम आधे दरजन ऐसे लोग यहां की हाईकोर्ट में इस समय मौजूद हैं कि जिन को यदि यह काम दिया जाता तो योरोपियन जज की अपेक्षा अधिक योग्यता के साथ अंजाम देते—अस्तु आशा है हमारे नये लाट साहब इन्हीं के कदम पर कदम रख न चलें गे नहीं तो अब हमारा जीवन अतीव दुर्घट हो जायगा क्योंकि प्रजा सब इन्हीं के नवाभ्युत्थान की बाट जोहती हुई श्वास ले रही है इस लिये अब इन के सौम्य दर्शन और कृपादृष्टि ही में हमारा कल्याण है किमधिकम्—

एक्सचेंज और सेक्रेटरी अफस्टेट फार इंडिया।

सेक्रेटरी आफस्टेट और उन के क्लर्क बैठे हुये—

क्लर्क—मइलार्ड—लंकेशयर के कारखाने वालों की तो अर्ज़ी पहले ही आ चुकी थी अब उन २ कारखानें के कुली सब अर्ज़ी लिये घेरे खड़े हैं—जब तक उन की इच्छा के अनुकूल उत्तर यहां से न मिलै गा किसी तरह न हटैं गे—

सेक्रटरी—अच्छा तो ये लोग क्या चाहते हैं—

क्लर्क—कारखाने वाले तो यह कह रहे हैं कि हिन्दुस्तान में जो हमारा माल बिकने जाता है उस्का दाम हमे चांदी के सिक्कों में न मिलना चाहिये चांदी का भाव गिरजाने से जो एक रुपया पहले यहां दो शिलिंग का होता था वह अब एक शिलिंग और ३ पेन्स से भी कम ठहरता है इस लिये बट्टे की दर के बढ़ने से हमारा माल हिन्दुस्तान में बहुत कम जाता है बम्बई वालों का माल बिकता है हमारा पड़ा रह जाता है

सेक्रेटरी—इसी मतलब की एक अर्ज़ी न्दिुस्तान से सर्कारी नौकरों की भी आई है वे लोग भी बट्टे के कारन बड़े घबड़ा रहे हैं उन सबों की भी यही दरखास्त है कि हिन्दुस्तान में सोने का सिक्का जारी किया जाय और जो सोने का सिक्का वहां जारी करते हैं तो हमारे भाई लोग जो वहां चाय की खेती करते हैं उन का नुकसान होता है—उन लोगों की भी एक अर्ज़ी पहले

हमारे सिविलियन भाई जो हिन्दुस्तान में हैं उन का सब से अधिक नुकसान हो रहा है कहीं नौकरी से इस्तयाफा दै विलाइत लौट आये तो इस्में ह-मारी बड़ी ही बदनामी होगी उन का यह कहना उचित भी है कि हम लोग हिन्दुस्तान ही के आरम और सुख के लिये जिस्में वहां के सब लोगों की उत्तम शासन के कारण सब तरह पर रक्षा रहे कुटुंब परिवार घर द्वार छोड़ भेजे जाते हैं–तब बट्टे के कारन जो कुछ खसारा हो इण्डिया गवर्नमेंट सहे हम क्यों यह नुकसान सहें कि प्रति मास अपनी तनखाह घर भेजने के वख्त रुपये के बारही आने रह जाते हैं–लंकेशायर के जुलाहों का भी यह कहना कुछ अनुचित नहीं है कि हमारे बाप दादे हिन्दुस्तानियों के लिये पचमरे और उन की पसन्द के लायक बढ़िया से बढ़िया और सस्ता कपड़ा तैयार कर बराबर भेजते रहे–और अब उन्में तरहदारी सुबकपन क्या चीज़ है पह-चानने का शऊर पैदा कर उन्हे जंगली से आदमी बना दिया और अब हम भी वही कर रहे हैं तो गुरुमार विद्या की भांत बंबई वाले हमी से सब सिख पढ़ बट्टा बढ़ जाने का पूरा लाभ उठाते हुये अपना माल हिन्दुस्तान और चीन आदि दूर देशों में भी हम से सस्ता बेंच रहे हैं और हम मुह ताकते रह जाते हैं–हमारे कारखाने घाटा सहते २ दिवालिये होते जाते हैं–हमरी चीज़ें तो हिन्दुस्तान में पहले से अब कम खपने लगी हैं पर हम जो गेहूं इत्यादि कच्चे बाने वहां से मंगाते हैं वह हमे बट्टा दे दिवाय एक का डेढ़ में पड़ता है—गेहूं इंगलैंड में न आवे तो भूखों मर जांय मंगाते हैं तो बट्टा देने के बाद हमे सौ रुपये का गेहूं डेढ़ सौ का पड़ता है—(क़लम से) अच्छा तुम इन अर्ज़ियों पर हुक्म लिखो कि हम बहुत जल्द इस्की कुछ फिकिर करेंगे और एक चिट्ठी मिस्टर ह्यूम को लिखो कि यह सब नुकसान इंगलैंड को हिन्दुस्तान के बदौलत हो रहा है इस्में सन्देह नहीं इंडिया हर तरह पर इंगलैंड ही की पुश्तपना ही से सब भांत रूस आदि बड़े २ दरिन्दे जानवरों से बचा हुआ है इस लिये अपने कानग्रेस सम्बन्धी रिज़ोल्यूशन में एक यह भी रख दें कि इंगलैंड वालों को जो बट्टे के कारन नुकसान हो रहा है उस्के लिये कानग्रेस एक चन्दा जमा करे क्योंकि ह्यूम से बढ़ कर हिन्दुस्तान का हितैषी दूसरा इस समय हम लोगों में कोई नहीं है इस्से यह काम उन्ही से

हो सके गा (घंटी की आवाज सुन) हाजिरी खाने का वख्त हो गया अब बरखास्त इसे फिर के सोचैं गे-सब गये-

सोशल कानफेरेन्स केवल हाथी के दांत हैं।

हम पहले भी लिख चुके हैं कि यह सोशलकानफेरेंस हमारे किसी फायदे का नहीं है—बंबई और पूना के नई रोशनी वाले मरहठों की यह एक जमात है जिन की यही इच्छा मालूम होती है कि हम हिन्दूसमाज के बन्धन से छंदान तोड़ किसी तरह दूर भागैं और मन माना आहार बिहार में प्रवृत्त हो साहबान अंगरेज़ों के भी दो हाथ आगे बढ़ निकलैं—कानग्रेस को जो हम लोग अच्छा समझते हैं इसका एक कारण यह है कि इस्से न कुछ लाभ सही तो साल दरसाल "पोलिटिकल इस्टिटूशन„ राजनैतिक शिक्षा पाने का एक द्वार तो है—जिस्के ज़रिये न जानिये कितनी गूढ़ बातें राजनैतिक सम्बन्धी हमे मालूम होने लगी हैं—उस्में दाल भात में मूसलचन्द की भांत यह कानफेरेन्स कहां से आ कूदा—हमारे कानग्रेस के अधिष्ठाता क्यों इसे अपने बीच से अलग नहीं कर देते—जिस मेल और ऐक्य के लिये कानग्रेस वाले तन मन से यत्न कर रहे हैं उस्का यह कानफेरेन्स मूलोच्छेद कर रहा है—पार साल नागपूर में कानफेरेन्स की फज़ीहत देख हमें यह विश्वास और भी दृढ़ होगया—आपस की फूट और विरोध के कारन तीन दिन तक इस्के प्रधान अधिष्ठाताओं के बीच जो चांव २ होती रही वह देखते ही बनती थी और कानफेरेन्स के अधिवेशन के समय ऐसा गुल गपाड़ा रहा कि कोई बात तै न पाई इसी से हम कहते हैं कानग्रेस के सभामण्डप में कानफेरेन्स का होना ही अनुचित है—समाजसंशोधन जिस्के लिये कानफेरेन्स का जन्म हुआ है उस्में बजाय संशोधन के बिगाड़ अलबत्ता देखा जाता है—एक तो यह कि हमारे यहां समाज का कुछ ऐसा क्रम देखा गया है कि हम जिस बात के लिये ज़ोर दै समाज से कुछ कराया चाहैं गे तो लोग ज़िद्द में आय और भी हमारे विरुद्ध हो जांयगे इस लिये अनुभव से यही मालूम होता है कि

समय सब आप से आप करा लेगा—कितनी बातें जिस्के लोग पहले आदि में बड़े विरुद्ध थे अब आराम और सुबीता देख आप से आप उस ओर झुक पड़े और जिसे पहले वे हेय समझते थे उसी को उन्होंने ग्रह्य और लीन कर लिया इस लिये कानफेरेन्स का प्रयत्न सर्वथा व्यर्थ और हानिकारक है—हानिकारक हम इस लिये कहते हैं कि कितनी बातें जिसे कानफेरेन्स किया चाहता है पर लोगों को उस्में अपने प्रतिकूल देखता है तो गवर्नमेंट और कानून की सहायता से उसे कराने की इच्छा कर रहा है और हमारी सामाजिक स्वच्छन्दता भी हम से छिनाय हमे निरा गोबरगनेस बनाया चाहता है—बाल्यबिबाह परिवार भर के एकान्न भोजन आदि कुरीतियों के मिटाने पर कानफेरेन्स का इतना ज़ोर नहीं है जितना विलाइत गमन होटलों में सब के साथ भोजन प्रचलित कराने पर है—न जानिये क्यों हम को कानफेरेन्स की ओर से बड़ी ही खटक है हमारी समझ में तो यही बात समानी हुई हैं कि यह हमारी रीति नीति तथा हिन्दूधर्म के सत्यानाश के लिये उठ खड़ा हुआ है—इसी से कानग्रेस के अधिष्ठाताओं से हमारा सविनय निवेदन है कि इसे कानग्रेस के स्थान में न होने दें न किसी तरह की सहायता इसे पहुंचावें बल्कि जहां तक हो सके इस्के प्रवर्त्तकों का उत्साह भंग किया जाय जिस्में सर्वनाशकारी यह दल छिन्न भिन्न हो जाय—अभी ही से इस्के उखाड़ने की फिकिर इस लिये होनी चाहिये कि यह अभी नया पौधा है अभी इस्का निराकरण बहुत सहज है यदि प्रबल पड़ जायगा तो समाजिक झगड़ों में यह हमे ऐसा फसा देगा कि राजनैतिकशिक्षा तथा पोलिटिकलजोश और सरगर्मी जिस्की हम लोगों को बड़ी आवश्यकता और जो कानग्रेस का मुख्य उद्देश्य बिलकुल रह जाय गा इस लिये इस्का जड़पेड़ से उखड़ जाना ही क्षेमंकर है—

दमयन्ती स्वयंवर नाटक ॥

३ अङ्क

स्थान

विदर्भनगर का पुरद्वार ॥

एक ओर से ४ देवता, अग्नि, वरुण, यम, इन्द्र और दूसरी ओर से रथारूढ़ नल का प्रवेश ॥

चारो देवता (एक दूसरे को देख मन में) हा इसकी रूप माधुरी लवनाई और तारुण्य देख दमयन्ती अब हमें काहे को कभी अपने चित्त में स्थान देगी—मनुष्य कीट में भी ऐसे रूपवान् हैं तो हम सबों को जो अपने को देवयोनि मानते हैं धिक्कार है—यदि दमयन्ती नल को छोड़ हम्मे से किसी को चुन भी ले तो हम यही कहेंगे वह निस्सन्देह रूप की परख में गँवार है (तीनों देवताओं को स्थगित सा देख इन्द्र नल के रथ के पास जा)

इन्द्र—राजन् तुम्हारी कुशल हो तुम्हारे रूप और आकृति से बोध होता है कि जगत् उजागर बीरसेनात्मज पुण्य श्लोक राजा नल तुम्ही हो—तुम्हें पाय हम लोग अब अपना मनोरथ सिद्ध हुआ मानते हैं—बीरसेनात्मज यह अग्निदेव है, यह वरुण हैं, यह यम हैं, और मैं इन्द्र हूं हम चारो आप के भिखारी बन आप से कुछ मांगा चाहते हैं—आशा है आप हमें विमुख न करेंगे—

(नल रथ से उतरते हुये मन से उन देवताओं को प्रणाम कर स्वगत) क्या संसार में ऐसे भी पदार्थ हैं जो देवताओं को भी दुर्लभ हों और मैं इन के लिये उन्हें सम्पादन कर सकूं—मैं क्यों कर जानूं कि इन सबों को कौनसी बात की चाह है और उसे विना मांगे ही पुरै दूं—क्योंकि ऐसे दानी को धिक्कार है जो मांगने वाले के बाहरी आकार और मुद्रा से अच्छी तरह जान गया है कि यह अर्थी है फिर भी यही प्रतीक्षा कर रहा है कि मुह खोल कर मांगे तो इसे हम दें—दान के समय जो कुशा हाथ में लिया जाता है उसका यही तात्पर्य है कि मंगता को न केवल धन ही इस कुशे के समान जो तृण की जाति है उदारदानशील को दे डालना चाहिये किन्तु अपना प्राण भी

जो उस्के काम में आ सके तो दे डाले–पद्म जिस्का जन्म पंक ऐसे मैले पदार्थ से है वह पद्म लक्ष्मी के वास योग्य उत्तम स्थान नहीं है इस लिये विचारवान् दानी को चाहिये कि वह सोचै कि उस कमल से जो महामलिन पंक से पैदा है अर्थी का पाणिपद्म लक्ष्मी के बास का कितना अधिक उत्तम स्थान है–याचक का मनोरथ पूर्ण करने से जिस्का जन्म सफल नहीं है उस्के बोझ से यह पृथ्वी जितना दब रही है उतना ऊचे २ पेड़ और पर्वतों से नहीं—(प्रगट) निस्सन्देह पृथ्वी जो सब का बोझ अपने ऊपर सह रही है यह उस्की तपस्या आज सफल हुई कि स्वर्गवासी देवताओं के अग्रणी आप लोग भी अपने चरण कमलों से वसुधा देवी के पूजन को आज नीचे उतरे (प्रणाम पूर्वक) निस्सन्देह मैं बड़ा भाग्यवान् हूं जिस्के याचक आप लोग हुये–कहिये क्या आज्ञा है–

इन्द्र–हे बीरसेनात्मज तुम न केवल नाम ही से पुण्यश्लोक हो बरन गुण में भी तुम वैसे ही हो—सच है "यत्राकृतिस्तत्र गुणावसन्ति" जैसी सुन्दर तुम्हारी मधुर आकृति देख आंख जुड़ाती है वैसी ही तुम्हारा दानशीलवदान्य गुण का स्मरण कर कलेजा दह होता है–यह पृथ्वी अनेक राजमण्डल से मण्डित है किन्तु वे सब तुम्हारे मुकाबिले समुद्र की अपेक्षा कूप के समान हैं–राजन् हम लोग त्रिभुवन सुन्दरी दमयन्ती का पाणिग्रहण चाहते हैं इस लिये आप हमारे दूत हो हम लोगों का संदेसा उस्के पास ले जाइये यह काम आप ही से हो सकेगा—

नल–महामहिम आप लोग मनुष्य के मन की सब बात जानते हैं तब यह आप की आज्ञा कुटिलता रहित नहीं है—जब आप जानते हैं कि दमयन्ती मेरे मन में बसी है तब इस आज्ञा को एक पामर मनुष्य भी कह सकेगा कि यह सर्वथा बुराई की इच्छा से की गई है–धिक् देवताओं में भी क्या कुटिलता का भाव रहता है तब तो हमी लोग जो मनुष्य कोटि में हैं सब भांत अच्छे ठहरे–क्षण २ में जिस्के बिरह ताप से तापित हो हम विकल हुआ करते हैं इस दशा में आप ही बतलाइये हम क्योंकर इस बात को छिपा सकेंगे कि हम नल नहीं हैं—फिर राजभवन में जब उसे सूर्य चन्द्रमा तक नहीं देख सक्ते तब हमारी पहुंच वहां क्योंकर सम्भव है—

कुण्डिनेश कन्या दमयन्ती हमें पहिले ही से अपने लिये उपयुक्त वर स्वीकार कर चुकी है सो अब वह मुझे देख लज्जित भलेही होगी और आप लोगों में किसी को भी अपना पति न स्वीकार करेगी—इस लिये नाह करने की हमारी धृष्टता क्षमा कीजिये इस काम में हमारा दूत हो कर वहां जाना किसी तरह योग्य नहीं है—

इन्द्र—जगत् उजागर चन्द्रमा के वंश में जन्म लेकर राजन् तुम्हें यह बात किसी तरह नहीं सोहती जिस मुख से तुमने अर्थी के मनोरथ को पूरा कर देने की प्रतिज्ञा किया अब उसी मुख से नाह करते क्या तुम्हें लाज नहीं आती—हे धीरबीर क्या तुम नहीं जानते कि यह संसार क्षणभङ्गुर और नश्वर है तब क्यों इस क्षणभङ्गुर संसार ही में केवल साथ देने वाले पदार्थ धन पुत्र दारा के निमित्त इहलोक परलोक दोनों में उपकारी धर्म और उज्ज्वल यश में बट्टा लगाते भ्रष्टप्रतिज्ञ होते हो—तुम्हारे वंश में ऐसा अब तक कोई नहीं जन्मा जो अर्थी के मनोरथ को पुरे देने की प्रतिज्ञा कर पीछे पलट गया हो—तुम्हारे कुल का प्रथमपुरुष चन्द्रमा अलवत्ता कलङ्कित प्रसिद्ध है हमें खटका है कहीं तुम भी हम लोगों को विमुख कर संसार में झुठाई के कलङ्क से कलङ्कित प्रसिद्ध न हो जाओ—राजन् यह सन्देह तुम अपने चित्त से दूर करो कि हम वहां कैसे पहुंच सकें गे हमारी कृपा से तुम्हें कोई न देख सके गा और तुम सब को देखोगे—

अग्नि—राजन् तुम बहुत भूलते हो जो इस समय चन्द्रमा से भी अधिक उज्ज्वल यश पाने से विमुख हो रहे हो कल्पवृक्ष के भी अधिपति इन्द्र आज तक किसके संगता हुये हैं तब हम लोगों की याचना के स्वीकाररूप कल्पपादप को भी अत्यल्प कर देने वाले इस दौत्यकर्म में क्यों नहीं प्रवृत्त होते—

यम—हे बीरसेनकुलदीपक जिस उज्ज्वल कुल में तुम उत्पन्न हो उसके यह सर्वथा अयोग्य है—हम लोगों की इस याचना को न स्वीकार करने से आप अवश्य उस जगत् उजागर कुल को मैला कर रहे हैं—

वरुण—हे बीर! सच है तुम्हारे लिये कीर्त्ति एक ऐसा उत्तम धन है जिसकी तुलना संसार में किसी के साथ हो ही नहीं सक्ती—हम लोगों का मनोरथ पूरा कर देना मानो दानबीर होने की कीर्त्ति से दिशाओं के अन्त

को पूर्ण कर देना है--स्वर्गवासी देवताओं की कामना पूरा न कर सका तो देवता लोग राजा नल के संगता हुये इस बदनामी से मैला होकर कल्पवृक्ष केवल साधरण वृक्षमात्र रह जायगा—उस्के उदारगुण अब से तुम्हारे ही में आ बसैं गे—

नल—(स्वगत) मैंने कितना ही चाहा कि इन धूर्त्तों से जी छुटाऊं किन्तु नहीं बचा चाहते तो अब इन की आज्ञा का पालन करना ही पड़ा—(प्रकाश) महामहिम चाहो हानि हो या लाभ मैंने आप की आज्ञा का भार स्वीकार किया आप लोगों के लिये दमयन्ती के प्रलोभन में तनिक भी त्रुटि न करूंगा किन्तु कार्य की सिद्धि दैव के आधीन है—

चारो देवता—(प्रसन्न हो) राजन् तुम्हारा कल्याण हो और तुम्हारी यात्रा सफल हो—(सब गये)

द्वितीयगर्भाङ्क ॥

स्थान अन्तःपुर

चारायण एक बूढ़े कंचुकी का प्रवेश ।

बड़े २ नामी राजा महाराजाओं के रनबास में रहते २ बूढ़े हो गये—डाढ़ी और मुच्छों के सब बाल पक कर सन हो गये—हाथ और पांव में कम्प वायु ने आ कर बसेरा कर लिया—कमर झुक कर मानो कमान हो गई—संयमिनी की यात्रा के लिये प्रस्थान रक्खे हुये हैं—पांव लड़खड़ाता है रखते कहीं है पड़ता कहीं है—किन्तु बड़े घरानों के रनबास तथा अन्तःपुर की सब लीला देखने और सुनने को एक आंख और कान भले ही नित २ चोखे और पैने होते जाते हैं—देख भाल कर भी सुजाखर से अन्धा बन जाना पड़ता है और सुन कर भी आनाकानी करना पड़ता है—रनबास में रहना हमारी जीविका ठहरी तो जल में रह मगर से विरोध कौनसी बुद्धिमानी है—पर ऐसी दुलारी कुंवरी काहे को किसी के जन्मी होगी (मुह बिगाड़ माथा ठोक) उः-दिन भर तरह २ के चोंचले देखते ही बनता है सरग की तरई भी दमयन्ती मांगे तो हमारे महाराज और महाराणी उस्के सम्पादन करने में विलम्ब न करैं—न जानिये कितने स्वयम्बर बड़े २ यज्ञ और सभारोह देख डाले किन्तु ऐसे

अनोखे ढंगका स्वयम्बर आज तक देखने में न आया–बाप रे बाप ऐसी भीर–चारो ओर से लोग उमड़े चले आ रहे हैं––अरे मानुस की कौन कहे देव, दानव, यक्ष, राक्षस, किन्नर, गन्धर्व, कोई भी तो नहीं बच रहे जिन्हे दमयन्ती के बरने का हौसिला न भया हो और यहां न आये हों—कुंडिननगर इस समय चौदहो भुवन का एक नमूना या तस्वीर बन रहा है (हंस कर) अरे! फिर दमयन्ती इन सबों को निबुआ नोन चटा देगी और अपना सा मुह लिये निरास हो उन सबों को लौटते ही बने गा––सुनते हैं निषधदेश के राजा बीरसेन का राजकुमार कोई नल नाम का है उसी के रूप और गुणों को सुन यह उस पर तन मन से लट्टू हो रही है उसी के मिलने के लिये यह सब ढकोसला और आडंबर रचा गया है–धी के जाये ये सब जो इतना कष्ट उठा आ रहे हैं यह सब वृथा है दमयन्ती इसमें से किसी को न बरै गी—क्या महाराज क्या महारानी तथा दूसरे २ राजकर्मचारी मंत्री आदि सब ऐसे व्यग्र हैं कि किसी को तन मन की सुध नहीं है–हुआ चाहें कहावत भी तो है "क्या बेटी की बरात ओनई है"–मेरा यह हाल है कि चलते २ पांव घिस गये दौड़ते २ कमर टूट गई—मैं ही अकेला इतने बड़े रनबास की देखभाल करने वाला–एक भवानी कुल गांव अन्धा किसे २ आंख दें–जिधर नहीं देखते उधर ही बिगड़ता है—उपेक्षा कर दें तो भी नहीं बनता जन्म भर महाराज का नमक खाया काम पड़ने पर कैसे दुम दबाय बैठ रहें (नेपथ्य में) चारायण चारायण कहां गया—

चारायण–(ताली का झुप्पा कमर से खोलता हुआ स्वगत) भंडारे की ताली सब मेरे ही पास हैं जान पड़ता है महाराज को किसी वस्तु की दरकार है (प्रकाश) हां आया आया—जाता है–शेष—

प्रेम और भक्ति ॥

प्रेम और भक्ति इन दोनों में परस्पर अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है न तो विना भक्ति के प्रेम होता है न विना प्रेम के भक्ति ही सधती है वल्कि प्रेम एक बीज है जो चित्तरूपी आलबाल में बोया जाता है जिस्की भक्ति शाखा पल्लव प्रसून और फल है–ज्ञान और विरक्ति भी जो भक्तिमूलक हों तो मुक्ति और

परमार्थ के महासाधन हो सक्ते हैं नहीं तो प्रेम और भक्ति शून्य नीरसहृदय वाला ज्ञानी महाकट्टर नास्तिक से भी बढ़-कर होगा—प्रेम और भक्ति का कुछ मार्ग ही निराला है जिस्का होना केवल विश्वास के मूल पर है विश्वास से पहले श्रद्धा होती है श्रद्धा से प्रेम बढ़ता है प्रेम का परिणत फल भक्ति है—चित्त की अकुटिलता और सीधापन इस्का पोषक है ज्ञानी में जिस्का होना दुर्लभ है क्योंकि वह तो ऊहा पोह और तर्क वितर्क विना किये सीधे चित्त से किसी बात को माने ही गा नहीं जब तक तकरीर और मुबाहिशे से अपने तिरछे बांके दिल को अच्छी तरह आसूदा न कर लेगा—कोरा ज्ञान कुछ नहीं कर सक्ता आस्तिक संप्रदाय में अन्त को भक्ति ही ईश्वर के मिलने का ज्ञानी के लिये भी सहारा होती है भक्तिशून्यज्ञानी या तो नीम पागल होगा नहीं तो महाकट्टर नास्तिक होगा—प्रेम में जहां अणुमात्र भी कपट हुआ और भक्ति जब चित्त से न हुई तो वही दम्भ और मक्कारी हो जाती है तब ये दोनों केवल ऊपर से दिखाने के लिये हैं या कभी २ जीविका के निमित्त भी होते हैं पर वह सच्चा प्रेम और सच्ची भक्ति नहीं कही जा सक्ती इस लिये ये दोनों केवल अन्तःकरण के धर्म हैं सच है " मन काचे रांचे वृथा साचे रांचे राम„—"माला फेरत युग गया मिला न मन का फेर—कर का मन का छाड़ के मन का मन का फेर„ महात्मा ईसा ने भी कहा है "जो कोई छोटे बालकों के समान निपट अबोध और सरल न हो उस्के लिये स्वर्ग के राज्य में स्थान पाना अतिकठिन है„—जो बात शुष्क ज्ञानी के लिये अत्यन्त दुरूह है शुष्क ज्ञानी जो अपनी बुद्धि के मद में मदान्ध है विना ऊहापोह और तर्क वितर्क के कभी किसी बात को माने ही गा नहीं वरन अबोध बन सीधे मन से कुछ मान लेना अपनी लियाकत और योग्यता में हेठापन समझता है—श्रीमद्भागवत में जो भक्तिरसामृत की पीयूषलहरी है यह बात कई ठौर बड़ी योग्यता के साथ दरसाई गई है—यथा—

येन्येरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ।
आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधोऽनादृतयुष्मदङ्घ्रयः ॥

हे अरविन्दाक्ष जो तुम्हारी भक्ति से विमुख रह केवल बड़े विवेकी और ज्ञानी बने बैठे हैं और अपने को विमुक्त मानते हैं आद में जिन की पैनी

बुद्धि बड़ी कुशल है किन्तु तुम्हारी विमल निष्काम भक्ति की ओर से उदासीन और अनपेक्ष हैं वे बड़े कठिनाई से सुचिरज्ञानानुशीलन के द्वारा आप के परंपद तक पहुंच कर भी वहां से भरे मुंह नीचे गिरते हैं क्योंकि भक्ति और प्रेम से आप के चरण कमल का आदर करना इन्हों ने नहीं सीखा—इस भक्ति और प्रेमपथ के बटोही वेही हो सक्ते हैं जिन पर परमात्मा की कृपा है और पूर्वजन्य संस्कार द्वारा जो सर्वथा धौत पाप हो उसकी कृपा के कृपापात्र बनने लायक हैं—जिसका मर्म समझना इस उन्नीसवीं शताब्दी के नास्तिकता के ज़माने में बड़ा ही कठिन है अतएव केवल फिलासोफी चाटने वाले हमारे इस लेख के अधिकारी भी नहीं हो सक्ते—शेष फिर—

रोटी तो किसी भांत कमा खांय मुछन्दर ॥

आदमी को अपना जीवन पार करने के लिये कोई न कोई पेशा इख्तियार करना ज़रूरी बात है—दल्लाली मीर शिकारी किस्सेगोई इत्यादि पुराने ज़माने के पेशों का यहां पर चर्चा करना व्यर्थ है क्योंकि अब इस उन्नीसवीं सदी में जहां लोग नई से नई टटकी बातों की तालाश और ईज़ाद में परेशान हैं तो उचित हुआ कि पेशे भी इस नई रोशनी के लगाव में नये २ किस्म के हों तब तो इस समय के लोगों को भरपूर सूट करेंगे—मैंने एक बार अपने एक दोस्त से पूछा जनाब आप इन दिनों क्या किया करते हैं उन्होंने बड़े ज़ोश खरोश के साथ जवाब दिया मैं इन दिनों "की,, तैयार कर रहा हूं—पहले तो मैं बड़े हैरत में आया कि "कि,, एक अंगरेज़ी शब्द है इसके माने ताली या कुंजी के हैं लो क्या मेरे दोस्त साहब अब लुहारी के काम में कुछ मश्शाकी पैदा कर रहे हैं—पहले तो मुझे हंसी आई जब मैंने सोचा कि यह काम तो हमारे दोस्त के शान के बिल्कुल खिलाफ है—"पढ़िन फारसी बेचिन तेल यह देखो कुदरत का खेल"—फिर मैंने सोचा ठीक तो है हम लोग टेकनिकल इज्युकेशन कलाकौशल के लिये इन दिनों बड़ा ज़ोर दे रहे हैं कि जब तक हम लोग पढ़ लिख कर बढ़ई लुहार जुलहा धुनिया इत्यादि पेशे के सीखने में मन न देंगे तब तक मुल्क की तरक्की नामुमकिन है—बड़े खुशी की बात है कि हमारे दोस्त जो इस काम में पहले राह के दिखलाने हुये—यह बात मेरे मन में किसी भांत न समाई कि मेरे दोस्त किसी पुस्तक की

टिप्पणी टीका या व्याख्या लिख रहे हैं क्योंकि मैं अपने दोस्त की लियाकत का सब हाल जानता था इस लिये फिर पूछा ज़रा बतलाइये तो किस किस्म की "की,, आपने तैयार किया है–मित्र ने कहा इण्ट्रेंस और मिडिल के कोर्स की किताबों की—यह सुन हमे कुछ अचरज हुआ कुछ खुशी भी हुई इस लिये कि हमारे मित्र ने अपनी लियाकत में अब कुछ तरक्की की वल्कि बतौर मसौदे के चन्द वरक उसके पाकट से निकाल मुझे दिखलाये भी—इसे "की,, कहें या घुड़दौड़ का सरपट मैदान जो कठिन और गूढ़शब्द वा जुमले थे उन्हे हज़रत आंख मूंद छोड़ गये और जो सहल जुमले और लब्जें थीं उन पर मघवा का विड़ौजा की भांत जो कुछ मन में आया बहुत सा खुराफात गा गये वे शिर पैर न जानिये क्या २ पेज का पेज भर दिया–खैर दोस्त के इस किस्से से हमारे पढ़ने वाले सकफ़ गये होंगे कि किसी किताब की शरा व्याख्या या "की,, बनाना भी इस समय के नये ईजाद पेशों में एक है–हम यह नहीं कहते कि जितने "की,, बनाने वाले सब ऐसे ही होते हैं सौ में एक दो कोई अच्छे भी निकलेंगे–हम इसे नये ईजाद पेशों में इस लिये दाखिल करते हैं कि चटपट इधर उधर की खुराफात से भर एक किताब तैयार कर डेढ़ुड़े दुगने दाम रख बड़ालम्बा चौड़ा इशतिहार छपवा बेचना लोग शुरू कर देते हैं–क्योंकि जब हमने देखा कि यह बिल्कुल रद्दी है तो दोस्त साहब से कहा यार तुम को जो "की,, बनाना था तो किसी अच्छे योग्य से जहां तुम्हारी अकिल खता करती थी पूछ लेते जो काम करना उसे पूरेतौर पर करना नहीं तो करना ही नहीं– दोस्तने जवाब दिया—आप इन बातों को क्या जानें लड़के किताब खरीदते ही "की,, तलाश करने लगते हैं उन्हे यह क्या ज्ञान कि यह अच्छी लिखी गई है या रद्दी है हमे तो इस्की बदौलत रुपया कमाना है विद्यार्थियों के नफा नुकसान से हमे क्या प्रयोजन स्कूल के मास्टरों को अलवत्ता साध रखना चाहिये–मैं उन की ये बातें सुन दंग हो गया और अपने मन में कहने लगा सच है–"रोटी तो किसी भांत कमा खांय मुछन्दर"—

इस्में सन्देह नहीं इस नई सभ्यताने लोगों को चालांकी से अपना मतलब साधना यहां तक सिखला रक्खा है कि बड़े २ बुद्धिमान् तीक्ष्णबुद्धि वाले भी उन के जुल में आ ही तो जाते हैं तब साधारण लोग किस गिनती में हैं–

कहीं से दो चार ऊटपटांग दवाइयां इकट्ठी कर अखबारों में इश्तिहार देना शुरू कर दिया—कुल तिब्ब का रस चाटे हुये अफलातूं अरस्तू सरीखे बड़े २ हकीमों के खासनवासे महामहिम श्रील श्री महा महा महाराजवैद्य अमुक अमुक अमुक समस्त वेद लवेद तथा आयुर्वेद के एकमात्र पारङ्गत अपने भुवन विदित औषधालय में अमुक अमुक वटी रस अवलेह चूर्ण और तैल आदि सब प्रस्तुत रखते हैं—हम ने समस्त चरक और सुश्रुतसंहिता को निचोड़ इन दवाइयों को तैयार किया है वैद्यकशास्त्र में अब जो कुछ बच रहा है वह केवल सीठीमात्र शेष है रस सब ग्रन्थों का बड़ा परिश्रम कर हमी ने खींच लिया—हमे धन्वन्तरि दिवोदास और अश्विनीकुमार आदि भिषग्वरों का साक्षात्कार हुआ है उन्हों ने हमे वरदान दिया है कि तुम आज से पीयूषपाणि हुये तुम अपने हाथ से खाक उठा कर भी दै दोगे तो वह भी रोगी को अमृत तुल्य होगी—हम ने एलोपथी तथा होमिओपथी में भी घनी मेहनत की है—हाथ कंगन को आरसी क्या एक बार हमारी औषधियां मंगा कर अजमा देखो—हम ने केवल परोपकार की दृष्टि से इस औषधालय को खोला है—इत्यादि इत्यादि—घटिया से घटिया कम दाम की दवाई के किस्म की चीज़ें कूट पीस कपरछान कर बड़े २ बोतलों में भर लाल पीले कागजों का लिबेल उस्पर चिपका दिया और संस्कृत तथा अरबीभाषा का कोई नाम रख दिया जिस्से यही मालूम होकि हकीकत में यह दवा कुल हिकमत और समस्त वैद्यक का निचोड़ है—किसी पण्डित या मोलवी से खास उस दवा की तारीफ में कुछ श्लोक या शैरें छपवा दीं जिस्में इस मतलब का कोई मज़मून ज़रूर रहना चाहिये कि यह औषधी चिरकाल तक सेवन से मौत को भी हटा देती है और बूढ़ा भी २० वर्ष का गभरू जवान हो जा सक्ता है—चन्द फर्ज़ी झूठे नामों की "टेस्टिमोनियल" छपवा दिया चलो एक अच्छा खासा डाक्तरखाना उन के घर पर तैयार होगया और खातिर खाह आमदनी होने लगी—इस फेशन के हकीम और वैद्य आज दिन हमारे मुल्क में सैकड़ों हज़ारों हैं—हमारे एक दोस्त जो एकबार इन वैद्यों के जुल में आचुके थे कहते थे कि एकबार मैंने अखबारों में एक नोटिस पढ़ा कि अमुक कविराज ने एक नई दवाई तैयार की है जो पेट के रोगों के लिये एक बड़ा ही अकसीर लटका है—हम को उन दिनों बदहज़मी की कुछ शिकायत रहा करती थी बेवकूफी सवार

हो गई एक शीशी उस्कीमंगा भेजा नाम भी उस शीशी के ऊपर के लिवेल में छपा हुआ था और एक कागज़ उस शीशी के साथ था जिस्में आयुर्वेद के कई श्लोक थे—शीशी की डाट खोला तो उस्में मामूली ज़ीरे का पानी भरा हुआ था—जब हमने पत्र लिख पूछा यह क्या तो वहां से उत्तर आया कि पेट के रोग के लिये ज़ीरे से बढ़ कर अकसीर और क्या हो सक्ता है—बतलाइये रोटी कमाने की हिकमत इस्से अधिक और क्या हो सक्ती है—

इसी तरह का रोटी कमाने वालों का एक फिरका और चल पड़ा है अर्थात् स्कूलों में पढ़ाने की किताब बनाने वाले—जैसा फाल निकाली जाती है उसी तरह चार पांच किताबों को उलट पुलट किसी एक पन्ने के बीच से आंख मूंद लिखना शुरू कर दिया और इधर उधर की किताबों से छांट एक संग्रह तैयार कर डाला प्रारम्भ में एक छोटी सी भूमिका या "प्रिफेस" लिख डइरेक्टर, या शिक्षा विभाग के किसी दूसरे अफसर के पास भेज दिया जिस्में दो चार शब्द तारीफ और खुशामद के अवश्य होने ही चाहिये—खैर किसी तरह हेडमास्टर की बहुतसी खुशामद बरामद के बाद उस्की मंज़ूरी डइरेक्टर या इन्स्पेक्टर के यहां से करा लिया मतलब सिद्ध होगया—सच पूछिये तो जितने इस किस्म के पेशे लिखे गये उन्में खातिरखाह फाइदा यही उठाते हैं दस पैसे के लागत की किताब का दस आना दाम रख दिया—किताब में चाहो बिल्कुल खुराफात भरा हो पर डइरेक्टर का हुक्म ठहरा खरीदना ही पड़ता है और यदि डइरेक्टर या इन्स्पेक्टर साहब खुद किताब के मुसन्निफ हुये तब क्या "परम स्वतन्त्र न सिरपर कोई—भावै तुम्है करो सोइ सोई" साल में तीनबार किताबों के तबदील का हुक्म निकाल दें तो मानना ही पड़ेगा सरिश्ते तालीम क्या मीनाबाज़ार भी मात है—

अब एक दूसरे किस्म के पेशे वालों का भी ज़िक्र सुनते चलिये जो इस तिंजे के ढ़ेलों के माफिक गली २ मारे फिरते हैं और जो इसी अंगरेज़ी राज और अंगरेज़ी तालीम के साथ ही साथ उपज खड़े हुये हैं—इस पेशे के लिये थोड़ा २ नीमहकीम हर एक बात और हर एक भाषा में होना चाहिये थोड़ी सी अंगरेज़ी भी सूंघ लिया हो कुछ थोड़ा सा उर्दू फारसी का भी अवलेह चाट रक्खा हो हिन्दी तो घर की लौंड़ी ही ठहरी रही संस्कृत सो उसे

बोलते या लिखते क्या लगता है ज़रा सा ज़बान को एड़ी वेड़ी कर बोलना शुरू कर दिया शंसकीरत हो गई–आपने शायद न जाना हो कि ये लोग कौन हैंऔर किस बिलाइत के जानवर हैं इस लिये हम इन का परिचय भी आप को कराये देते हैं ये हमारे हम पेशा एड़िटर लोग हैं जिस्का एक २ अक्षर मतलब से खाली नहीं है–ए–डि–ट–र

एक बात को फिर२ गावैं, डिसलायलटी को बरकावैं–
टरकावैं अवनति को दूर, रहैं देश की फिकिर में चूर–

नये ईजाद पेशों में जितना इस पेशे ने ज़ोर पकड़ा है उतना दूसरे ने नहीं ये लोग सब तरह का स्वांग लाना जानते हैं–भांड़ ये बनै नई २ कविता इन से सुन लो; ताज़ी २ टटकी खबरें पहुंचावें, गठीले से गठीला रसीला मज़मून इन से ले लो; किसी प्रकार की विद्या साएन्स और शास्त्र नहीं बच रहा जिस्में ये दम न भरते हों तौ भी कौड़ियों के भाव इन्हें कोई नहीं पुछता–कितनों का वार्षिक मूल्य कुल बारह आने; डाक महसूल भी पूरा नहीं होता तो छपवाई और कागज़ की कौन कहे–तौ भी एडिटरी का हौसिला यहां तक चर्राया हुआ है कि सब लोग उन्हें एडिटर कहें चाहो घाटा हो—अब ज़रा इन की लियाकत की टटोल भी यहां पर मुनासिब है–बहुधा तो एक दूसरे की नकल करते हैं किसी ने लिखा आज फलां आदमी ने एक चुड़ैल देखा—एक मनुष्य एक जगह बैठा २ घास खा रहा था—अमुक देश में एक चिड़िये के सिर पर टांग थी–फलाने शहर के फलाने मुहाल में एक कोरी की एक बकरी दो शेर जनी इत्यादि इत्यादि–इडिटर महाशय से किसी से कुछ झगड़ा पड़ा या किसी ने पत्र लौटा दिया अथवा दाम देने से इनकार किया उस्की फज़ीहत और गुड्डा बांधना शुरू कर दिया या किसी ने इन्हें कुछ दिया तो उसे इन्द्र, वरुण, कुबेर बनाय झूठी तारीफों से अखबार भर दिया–नङ्गा नाची फाटी का, इन से सदा डरता रहे—इन के दल में सम्पन्न और सामर्थ्य वाले तो ऐसे ही कोई होंगे भुक्खड़ या जिन्हें कहीं ठिकाना नहीं है एडिटर बन संसार में नमूद हुआ चाहते हैं और जब इन की धूर्त्तता और चालाकी कारगर न हुई तो शिकाइत और निन्दा अलबत्ता कहीं गई ही नहीं—हम कहते हैं उन के रद्दी अखबारों में क्या रहता है जिस लोभ से कोई उसे खरीदै

और पढ़े माना हमने कि हमारे देश में अभी विद्या रसिक कम हैं फिर भी जो लेख उमदा हो तो समाचार पत्रों के "सेल्फसपोरटिंग" होने में तो कोई सन्देह ही नहीं है किन्तु उन के लेख में कुछ सार भी तो हो जो ऊब उठा होगा अतः इन रोटी कमाने वाले मुछन्दरों के चरित्र की यह अध्याय समाप्त कर एक दूसरा पत्रा खोलते हैं—इन रोटी कमाने वालों के दल में एक हमारे पादरी साहब भी हैं—हमारे ब्राह्मणों को लोगों ने धूर्त्त और खुदगर्ज़ बदनाम कर रक्खा इन के गिरे दिन हैं और ये सब भांत अपाहिज और मूर्ख हो गये इन्हें चाहो जो कहो सब फब जा सक्ता है पर पादरी साहब पढ़े लिखे बहुधा बड़े लायक होते हैं इस लिये उन के शान में कुछ कहना खिलाफ तहज़ीब समझा जायगा किन्तु रोटी कमाने वाले मुच्छन्दरी ढंग इन के हमारे ब्राह्मणों से भी बहुत चढ़े बढ़े हैं—हमारे हिन्दूधर्म के अगुआ ब्राह्मण तथा दूसरे लोग जो पुण्य और परलोक की रास्ता बतलाने के नाम से पुजाते हैं उन्में अब इस बिगड़े ज़माने में भी कितनी सहिष्णुता दया और शान्ति की पोषक बातें पाई जाती हैं इन पादरी साहबों में कौनसी ऐसी बात है जिस्से हम निश्चय करें कि ये अपने चेलों को जिन के ये पेशवा हैं विहिश्त में उन्हें पहुंचा ही देंगे—विलाइत के धर्मिष्ठ और इसाईधर्म में श्रद्धालू सत्पुरुषों की जो बड़ी २ समाज और सोसाइटी हैं उन्हें जुलदै उन का असंख्य धन लुटाते हुये सुथरे साफ सजावटी बंगलों में चैन करते हैं जिन्में एक भी ऐसी बात नहीं पाई जाती जिस्से हम इन्हें शान्त दान्त तितिक्षु और सहिष्णु कह सकें, वरन जो रुतबा छोटे मोटे अमीर और नौवाबों को न होगा सो यहां एक २ पादरी साहब को प्राप्त है—तब हम कैसे मानें कि पादरी साहब अपने भक्तों को स्वर्ग और वैकुण्ठ में बैठा ही देंगे। हां रोटी कमाने का ढंग इन का अलबत्ता बहुत प्रतिष्ठित और निराला है जैसा औरों का हरगिज़ नहीं है—

एक फिरका और भी इसी किस्म का रहा ही जाता है जिस्का कुछ चर्चा करना यहां पर लाज़िम जान पड़ता है और वह सामाजिक या राजकीयसंशोधन चाहने वाले देशहितैषियों का है—कितने सबस्क्रिप्शन डोनेशन चन्दे और दान पचा बैठे—ऐसा भारी पेट कि बड़वानल वृकोदर और अगस्त भी हैरत में आजांय—ऐसा निगल बैठें कि डकार तक न आवै एकबार अपने पेट में किसी को लाने भर पावैं—मीटिङ्ग औ सभाओं में बड़े जोश खरोश

के साथ बोले सबों को यही निश्चय हुआ कि इन से बढ़ कर देशहितैषी और परोपकारी दूसरा न होगा मीटिङ्ग के मुखिया या सेक्रेटरी कर दिये गये पाकेट गरम होना आरंभ हो गया और यही समस्त देशहितैषिता का हीर था—इत्यादि इन सुछन्दरों के फिरके को ज्यों २ सोचते जाइये नये २ तरह के लोग निकलते ही आवैंगे यह लेख यहां पर केवल दिक् प्रदर्शनमात्र के ढंग पर लिखा गया है—एस—पी—

श्रीमान् सर आकलैंडकालविन की करतूतों का संग्रह ॥

पांच बरस की अवधि में—जो २ उन यश कीन ।
लिखौं कछुक संक्षेप में—पढ़िये चतुर प्रबीन ॥१॥
आवत ही इस देश में—चहुंदिश करि दरबार ।
दियो भरोसो भांति बहु—कोरे लेक्चर झार ॥२॥
काङ्ग्रेस के बैरी भये—बलवाई ठहराय ।
देशहितैषी सभा कर—सरसैयद हि मिलाय ॥३॥
बड़ो कष्ट सबही सहे—यात्रीजन तहां आय ।
~~[illegible]~~ ॥४॥
कल पानी की खोल के—दीह्न्यौ टैक्स लगाय ।
प्रजा मरै भूखन चहै—इज्जत हू चह जाय ॥५॥
लीक सनातन मेटि के—अपनो हुकुम चलाय ।
समदर्शी ह्वै देश में—वैष्णव शैव लड़ाय ॥६॥
कीन्ह खुशामद रातदिन—जिन उन्नति हितलाय ।
तिन का कछु पदवी दई—जनु सरबस दियो लुटाय ॥७॥
पश्चिम उत्तर देश की—शिक्षा चित नहिं दीन ।
जापै है निर्भर सबै—ताको निर्बल कीन ॥८॥

पुलिस कमेटी नियत करि—दीन्ह्यौ खर्च बढ़ाय ।
अन्त समै कीन्ह्यौ वही—गुरु जो दियो पढ़ाय ॥९॥
चलत २ हइकोर्ट में—नेटिव को हक छीन ।
गूढ़ पालिसी चित्त धरि—जज्ज फिरंगी कीन ॥१०॥
दुःखन को सब अन्त करि—गये विलाइत भाग ।
आये परम उदार अब—खुलि हैं सब के भाग ॥११॥
यही एक चित में खटक—रह्यो न दुख कर लेश ।
बच्यो नहीं कछु करन को—हरिहैं कौन कलेश ॥१२॥

महाकवि श्रीहर्ष ॥

यद्यपि काव्य की लघुत्रयी और अभिज्ञानशाकुन्तल तथा विक्रमोर्वशीय के कर्त्ता महाकवि कालिदास प्रसादगुण और लोकोत्तर उपमा के लिये निस्सन्देह प्रशंसनीय हैं किन्तु ओज और लालित्य के लिये श्रीहर्ष ही अद्वितीय समझे जाते हैं—कविता के जिस पथ का अनुसरण इन्हों ने किया है वह भारवि और माघ कवि के ढंग से बिलकुल निराला है—इन की काव्यमयी सरस्वती का क्या निराला ढंग है और इन की लोकोत्तर प्रतिभा कहां तक पैनी और कितना समावेश उस्में है इसे वेही पहचान सक्ते हैं जो काव्य वासना पूर्ण सरसहृदय हैं—इन की रचना नैषधचरित्र निस्सन्देह भारवि प्रभृति कई एक महाकवियों के काव्य के उपरान्त प्रकट की गई इस लिये सम्भव है कि श्रीहर्ष ने उन कवियों की छाया का सहारा अपने काव्य में लिया हो किन्तु कालिदास को छोड़ जो कविसम्प्रदायमात्र के दादा गुरू हैं और जिन के कविता के भण्डार से विना कुछ न कुछ चुराये कोई आगे बढ़ी नहीं सक्ता और किसी कवि का अनुकरण श्रीहर्ष ने कहीं पर नहीं किया बल्कि कविता के अंश में जो कुछ इन्हें सूझा वह न इन के पहिले के कवियों को सूझा था न इन के उपरान्त के कवियों से बन पड़ा—अतएव संस्कृत के षट् काव्यों में नैषध जैसा सब का अन्तिम है वैसा ही काव्यों की पूर्णाहुति भी इस्से होती है—ऐसा जान पड़ता है कि माघ और भारवि ये दोनों कवि पर-

स्पर स्पर्द्धालु थे और इन दोनों के काव्यकी इबारत ऐसी मिल जाती है कि उन्में यह निर्ख कर लेना कि यह किसकी कविता है असम्भवसा है—या वही निर्ख कर सक्ता है जिस ने आद्योपान्त किरात और माघ को कई बार पढ़ा पढ़ाया है—पर नैषध के श्लोकों का ढंग ही निराला है पढ़ते ही मालूम हो जाता है कि यह कालिदास भारवि और माघ तीनों से पृथक् है—माघ और किरात दोनों के अन्त में चित्रकाव्य, सर्वतोभद्र, अर्द्धभ्रमक, मुरजाबन्ध, कमलबन्ध, गोमूत्रिकाबन्ध, एकाक्षरी, द्व्यक्षरी, अमात्रिकछन्द, इत्यादि की कल्पना प्रकट करती है कि उन २ कवियों में परस्पर स्पर्द्धा थी पर श्रीहर्ष ने जान बूझ इस क्रम को नैषध में बरकाया है और शब्द चातुरी को निकृष्ट और अधम काव्य समझ इन विविध बन्धों का सामवेश नहीं किया केवल अर्थ की गम्भीरता और पद लालित्य को प्रधान रक्खा है—श्रीहर्ष ने श्लेषालङ्कार को आदि से अन्त तक आदर दिया है और इन के श्लेष कुछ ऐसे नहीं हैं कि सहज में खुल जांय बरन काव्यों के पठनपाठन और अनुशीलन से जो पटुबुद्धि हैं उन्हीं के चित्त को श्रीहर्ष की कविता हर्ष पहुंचा सक्ती है इसका सर्ग का सर्ग ऐसी कविता क्लिष्ट का सन्दोह है कि कालिदास का प्रसादगुण जी से उखड़ जाता है—अकिल चक्कर में आजाती है—कालिदास के काव्य को जो मक्खन का लड्डु कहैं तो इसे कन्द का ढोंका कहेंगे—इन की रचना छात्रदशा के पठन पाठन की उपयोगी नहीं है जब तक समग्र व्याकरण और तर्कवाद में पूरा प्रवीण न होजाय—

अब यह किस समय में हुये इसका निर्णय करने के पहले यह कहना उचित मालूम होता है कि यह श्रीहर्ष वह नहीं है जिन का ज़िकिर रत्नावली नाटिका में किया गया है—"श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी" न यह वही श्रीहर्ष हैं जिन के लिये बाणभट्ट ने श्रीहर्षचरित्र बनाया है वह श्रीहर्ष काश्मीर के राजा थे और विक्रम के संवत् के सातवीं या आठवीं शताब्दी में हुये हैं किन्तु यह श्रीहर्ष भारवि और माघकवि के बहुत दिन बाद कन्नौज के राजा जैचन्द्र के समय के लगभग विक्रमाब्द की नवीं शताब्दी में हुये हैं—काव्य प्रकाशकार मम्मटभट्ट जिस्को लोग पतञ्जलि महाभाष्य के तिलककार कैयट के भाई मानते हैं उन्हों ने अपने काव्यप्रकाश में सब कवियों के उदाहरण दिये हैं और उस समय तक भारवि आदि जो २ कवि हो चुके थे

गुण दोष निरूपण द्वारा उन सबों की कविता की साधारण समालोचना की है पर श्रीहर्ष के नैषध का एक श्लोक भी कहीं पर उदाहरण में नहीं दिया इससे निश्चय होता है कि मम्मटभट्ट के उपरान्त श्रीहर्ष ने नैषधचरित्र निर्माण किया--किंवदन्ती है कि मम्मट जब काव्यप्रकाश बना चुके तब श्रीहर्ष की भेंट उन से हुई और इन्हों ने नैषधचरित्र उन्हें दिखलाया और कहा कि हमारे काव्य की भी समालोचना आप कर दीजिये तब मम्मटभट्ट ने नैषध के इस श्लोक की भूल दिखलाया–

"तव वर्त्मनि वर्त्ततां शिवं-पुनरस्तु त्वरितं समागमः।
अपि साधय साधयेप्सितं स्मरणीयाः समये वयं वयः ॥

इसका अर्थ यह है "राजानल हंस को विदा करने के समय कहते हैं जाइये मार्ग में तुम्हारा शुभ हो जल्दी फिर लौटकर आवना हमारे मनोरथ को साधो और समय पर स्मरण रखना" यहां "वर्त्मनि वर्त्ततां" वर्त्मनि सप्तमी है है और वर्त्ततां क्रिया है किन्तु वर्त्मनि का नि अलग कर वर्त्ततां इस क्रिया में लगा दो तो निवर्त्ततां होता है तात्पर्य यह कि तुम्हारे मार्ग में शुभ की निवृत्ति हो अर्थात् मार्ग में तुम्हारा अशुभ हो–श्रीहर्ष लज्जित हो चुप हो गये समालोचना के लिये फिर न कहा—यह कन्नौज के राजा के सभा पंडित थे नैषध के अन्त में इन्हो ने लिखा है "ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्" अर्थात् कान्यकुब्जाधिप से जो दो बीड़ा पान और आसन पाने के अधिकारी थे—यह श्रीहीर पंडित के पुत्र थे और मामल्लदेवी इन की मा का नाम था—कहते हैं जब इन के पिता श्रीहीर वाद में परास्त हो लज्जा से प्राण त्याग दिया तब इन की मा मामल्लदेवी ने इन से शवसाधन कराया और सरस्वती के चिन्तामणि मन्त्र का मुरदे की छाती पर श्रीहर्ष को बैठाय जप कराया तब यह केवल ५ वर्ष के थे–चिन्तामणि मन्त्र के प्रभाव से यह ऐसे उद्भट पंडित हुये कि लड़कपने ही में इन्हों ने अपने पिता को परास्त करने वालेप डित को वाद में जीत लिया—खाद्यखण्डन आदि कई ग्रन्थ इन के बनाये हैं–नैषध के प्रतिसर्ग के अन्त में इन्हों ने इस श्लोक से सर्ग की समाप्ति की है जिस्में अपने माता पिता का नाम तथा अपना सूक्ष्मवृत्तान्त बराबर प्रकट करते गये हैं—

श्रीहर्षकविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतं—
श्रीहीरः सुसुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम् ।
तच्चिन्तामणिमन्त्रचिन्तनफले शृङ्गारभङ्ग्यामहा—
काव्ये चारुणि नैषधीयधरिते सर्गो निसर्गोज्ज्वलः ॥

श्रीहर्ष की उक्ति युक्ति की बानगी के ढंग पर नैषध की लोकोक्तियों का संग्रह हम यहां पर करते हैं यद्यपि नैषध की लोकोक्तिओं को एक वार हम पहले उद्धृत कर चुके हैं इस बार उसे आनुपूर्वी क्रम से लिखते हैं—

त्यजन्त्यसून् शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न
त्वेकमयाचितव्रतम्—

मानी जन प्राण और सुख दोनों से हाथ धो बैठते हैं पर एक अयाचितव्रत नहीं छोड़ते—

क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग् जनः ।

भाग्यवान् जहां जाते हैं वहीं सब भोग सामग्री उन्हे प्राप्त होती है—

अवश्यभव्येष्वनवग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा ।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते जनस्य चित्तेन भृशावशात्मना ॥

विधाता की इच्छा जिसे अवश्य होनहार के सुघटित करने का हठ है—जिस ओर अपनी झुकावट प्रकट करती है उसी ओर मनुष्य का चित्त भी हवा के झोक से तृण के समान विवश हो दौड़ जाता है—

विगर्हितं धर्मधनैर्निवर्हणं विशेषविश्वासजुषां द्विषामपि—

जिन का धर्म ही धन है ऐसे लोगों को जो अपने विश्वास पर हो चाहो शत्रु क्यों न हो मारना विशेष निन्दा के योग्य है—

ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् ।

साधुजन जब किसी का कुछ उपकार करते हैं तो करके दिखा देते हैं मुख से कहते नहीं—क्रमशः—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० १६ सं० ३,४ } प्रयाग { नवंबर,दिसंबर १८९२

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १६ संख्या ३-४ | प्रयाग | नवम्बर-दिसंबर सन् १८९२ ई०

इलाहाबाद में आठवां कानग्रेस ॥

अथाह जल में डूबती हुई बोझी नौका की डोर थामने वाला कोई एक भी साहसी पुरुष मिल जाता है तो वह नाव किसी न किसी भांत पार लगी जाती है—पं० अयोध्यानाथ के सुरधाम सिधार जाने और मिस्टर ह्यूम को इसे छोड़ बिलाइत चले जाने पर अब की साल यह कानग्रेस की बोझी नाव बीच ही में डूबती थी और इतने दिनों का कराधरा सब मिट्टी में मिल रहा था कि ऐसे समय एक दृढ प्रतिज्ञ साहसी भाई का लाल खम्ब ठोक खड़ा हो गया और तन मन से इस काम में लग अन्त में इस नाव को पार ही तो लगा दिया—हिम्मत हिम्मत पैदा करती है हमारे मालवीय कुल भूषण पहलवान को मुस्तैद देख दो चार सज्जन पुश्तपनाही की भांत और भी तैयार हो गये और यह शुभकार्य निर्विघ्न समाप्त हो गया सच है—"बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति" जैसा लड़ाई में एक भी उत्साही योद्धा भिड़ जाय तो समस्त सेना डटकर लड़ने लगती है—यद्यपि हमारे देश की पुरानी सेना का यह ढङ्ग न था यह क्रम हाल की अङ्गरेज़ी फौज में देखा जाता है—बड़े खुशी की बात है कि जो गुण केवल यूरोप की सेना में था वह हमारे हिन्दुस्तानी वीरों में आने लगा—यह कानग्रेस प्रतिवर्ष एक ऐसे राजनैतिक युद्ध का समारोह रचा जाता है जो सम्पूर्ण हिन्दुस्तान और हिन्दूस्तानीमात्र के लिये महोपकारी है जिससे आला से अदना तक सभी फाइदा उठा सक्ते हैं इस लिये इसमें एक भी कोई अगुआ हो सब भार अपने ऊपर उठाने को मुस्तैद रहे तो

यदि रास्ती और इनसाफ सत्य और न्याय कोई वस्तु है और गवर्नमेंट भी सच्ची न्यायशील है तो एक न एक दिन अवश्य कानग्रेस अपनी कामयाबी को पहुंच ब्रिटिशगवर्नमेंट के गौरव को चतुर्गुण अधिक कर दिखावेगा—सर्व साधारण अपढ़ लोग यही समझते हैं कि यह एक ढकोसलामात्र है जिसे मिस्टर ह्यूमने रच खड़ा किया है—पं० अयोध्यानाथ तथा दो एक और जोश खरोश वाले मिस्टर ह्यूम के साथी बन गये हैं हर साल एक मेले की भांत स्थान २ में इसका समारोह नाटक की तरह किया जाता है—देश प्रतिवर्ष इतना रुपया बरबाद कर एक प्रकार की हानि उठा रहा है और हाकिमों के मन में लाग पैदा होती जाती है सोई है इसका बुरा परिणाम है—किन्तु यह केवल भ्रममात्र है अब इस समय देश में आवश्यकता ही ऐसी है नहीं तो यह निरा दीवानापन नहीं तो और क्या है कि इतने मनुष्य हरसाल पास का धन खर्च और शारीरिक क्लेश बरदाश्त कर उठ धावें—क्या ये सब पागल हो गये हैं ? और जो आते हैं सो कोई ऐसे वैसे ऐरे गैरे घास फूस नहीं आते किन्तु वेही लोग जो देश में इन्द्र चन्द्र के समान प्रकाशमान प्रद्योतित हृदय हैं योग्यता प्रतिष्ठा आदि जो २ बातें आदमी में बड़प्पन आने के लिये आधारस्तम्ब हैं उन से भरे पूरे हैं—गवर्नमेंट को उचित है अब कानग्रेस के बिचारों को जी में स्थान दे और इसकी ओर से जो कुछ खटक हो उसे दूर बहावे—मैं समझता हूं कानग्रेस में अब की साल एक प्रकार की अल्प आगई थी ईश्वर की कृपा से वह अल्प इसकी कट गई तो अङ्गद के पैर की भांत यह अचल हो गया और टसकाये न टसके गा—

देश में जैसी राजनैतिक आन्दोलन की ओर लोगों की झुकावट हो रही है उससे यही सिद्ध होता है कि कोई एक आदमी भी इसमें अगुआ खड़ा हो जायगा तो यह होता ही रहेगा और अन्त को कोई ऐसा समय आवेगा कि गवर्नमेंट को भी लाचार हो कानग्रेस की सब बातों को मानना ही पड़ेगा—सातसौ डेलिगेट और चारहज़ार दर्शकों की भीड़ एकत्रित हो सभामण्डप को ऐसी शोभा दैरहे थे कि जिसे देख देशहितैषियों का मन प्रफुल्लित होता था—लाला रामचरणदास और बाबू चारूचन्द्र मित्र के प्रबन्ध से पंडालरचना भी ऐसी उत्तम की गई थी कि जैसी अब तक किसी पहले के कानग्रेसों में नहीं

की गई—रिसेप्शन कमिटी स्वागतसञ्चारिणीसभा के प्रधान पं-विश्वम्भरनाथ की स्पीच को कौन न सराहेगा मेरी समझ में और २ स्पीचें भी सब बड़े ही कोमल और नम्रभाव से दी गईं जिनमें राजभक्ति और कौम की भलाई आदि से अन्त तक झलक रही थी—एक बात अब की विशेष लक्ष्य करने के योग्य थी कि यद्यपि मेहता नार्टन मनमोहन प्रभृति बड़े २ प्रसिद्धवक्ता कोई भी नहीं आये सुरेन्द्र तथा गोखले ऐसे दो एक को छोड़ सब "रिक्रूट" नये सिपाहियों की भरती थी फिर भी खुशी की बात है कि इस नई भरतीने भी सब काम कानग्रेस का ऐसे सरल गम्भीर और उचित क्रम पर किया कि कानग्रेस का सदा का विरोधी लंडनटइमने भी अपने एक खास लेख में अब के बार के कानग्रेस की सब बातों की सराहना की—डेलिगेट भी जो बाहर से आये थे सब प्रसन्न गये किसी को किसी बात की तकलीफ नहीं हुई—अब हमारे हाकिमों को न्याय और इन्साफ काम में लाय सोचना चाहिये कि हम लोग जो सर्कार से मांगरहे हैं उसे अंजाम देसक्ते हैं केवल गाल बजाना ही मात्र नहीं है—इस लेख को समाप्त करने के पहले हम अपने नये वक्ताओं को सावधान किया चाहते हैं कि हवाला के भांत जो "फैक्ट" और "फिगर" वे अपनी २ स्पीचों के समर्थन में लिख कर लावें उसे चुपचाप दे दिया करें पुस्य पाठ की भांत खड़े हो कर वहां पढ़ने में सुनने वालों को अत्यन्त अरोचक मालूम होता है और समय भी कम रहता है—अब दूसरा कानग्रेस अमृतसर पंजाब में होगा—

पश्चिमोत्तर के सुदिन ।

चिरकाल तक बड़े २ क्लेश सहने के उपरान्त पश्चिमोत्तर के अब कुछ २ दिन सुधरते हुये मालूम होते हैं—शिफारसी टट्टुओं से कहो सिर पर हाथ रख रोवें—कालविन उडबर्न डेनियल का ज़माना गया खुशामद और शिफारस के घोड़े अब नहीं दौड़ सक्ते केवल मिडिल पास करने वालों को डिपुटी कलट्टरी की उम्मेद अब बाकी न रही—ऐसे दिन तो हमे बहुत समय के उपरान्त देखने में आये कि एक से एक बढ़कर विद्यमान् बुद्धिमान् मुनसिफ मिज़ाज और दयालु लफटिनेंटगवर्नर चीफ सेक्रेटरी सीनियर मेम्बर बोर्ड इकट्ठे हुये हों—संयोगबश मानो पश्चिमोत्तर और औध के लिये लिबरल मिनिसटरी कायम

हुई है—ईश्वर से प्रार्थना है कि वह कुछ ऐसी ही प्रेरणा करे कि ये लोग यहां कुछ दिनों तक कायम रहें तभी अच्छा—इलाहाबाद में ऐसा कौन होगा जो चीफ सेक्रेटरी लटूस साहब के नेक मिज़ाजी और रहीम तबियत का हाल न सुना हो अमीरों के मुकाबिले गरीबों की सुनने वाले और योग्यता की भरभूर यथोचित कदर करने वाले यही साहब हैं—अभी बहुत दिन नहीं हुये कि बोर्ड के सीनियरमेम्बर रीडसाहब की कलट्टरी बरेली की अब तक मशहूर है जहां यह बहुत ही नेकनाम रहे- हमारे नये लफटिनेण्टगवर्नर चार्ल्स क्रासवेटसाहब वही हैं कि जिस समय बर्म्हा की अत्यन्त दुर्गति थी ब्रिटिशशासन का आरम्भ वहां था सब ओर डकैती और राजविराजी छाई हुई थी उस समय लार्डडफरिन ने तमाम सिविलियनो में इन्हे चुन वहां का चीफकमिशनर कर भेजा था—यह इन्ही की कारगुज़ारी थी कि बर्म्हा के डकयतों को भी यह निश्चय हो गया कि अंगरेज़ों से बढ़ कर दंयालु और इनसाफ पसन्द क़ौम दूसरी नहीं है—सच तो यह है कि सदा सब के एक ही तरह के दिन नहीं रहते "नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण"—हम उम्मेद करते हैं हमारी आशा विफल न होगी और हाकिमों के मनमाना शासन से जो २ शिकाइतें हमे हैं सब दूर की जांयगी छोटे बड़े सब एक भाव समझे जांयगे खुशामद से काम निकालने वाले मुसल्मानों के मुकाबिले हिन्दुओं की हकतलफी न होगी इत्यादि—

दमयन्ती स्वयंवर नाटक

चतुर्थ अङ्क

स्थान

अन्तःपुर

राजानल का प्रवेश—

नल—देवताओं की कृपा से ६ डेहुड़ी नांघ अब सातवें में प्रवेश कर रहे हैं पर किसी ने हमे अब तक न पहिचाना कि तुम कौन हो और क्यों यहां आये योगनिद्रा ने ऐसा सबों के नेत्र पर अपना प्रभुत्व फैला रक्खा है कि हम इस अन्तःपुर के प्रत्येक प्रदेश में जहां जाते हैं वहीं सबों को सोते हुये पाते हैं—गारद के सिपाहियों में जो कोई एक आध जागते भी देख पड़े तो उन

की आखों में कुछ ऐसा विकारसा हो गया कि हमने सबों को देखा और हमे कोई भी न पहिचान सका–धिक् हम इस समय चोरों का अनुकरण कर रहे हैं बला से रूप और गुण की खान दमयन्ती को देख जिसके देखने को इतने दिनों से लोलगी है आज मनोरथ तो सफल होगा–दूत होकर आये हैं कदाचित् दमयन्ती हमारी अवज्ञा भी करेगी तो कुछ चिन्ता नहीं इन आखों की चिरकाल की प्यास तो आज बुझैगी—(सहेलियों से घिरी हुई दमयन्ती को आगे बैठी देख स्वगत) निश्चय यह शृङ्गार रस की नदी है जो इस नई तरूणाई में लावण्य की निरन्तर वृष्टि से उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है–सुधास्यन्दी अपने ईषत् हास्य का सहस्रांश भी यदि यह चन्द्रमा को प्रसाद की भांत दै देती तो चन्द्रमा उतने ही से अपना जन्म सफल कर मानता और इसका ईषत् हास्य अपनी चान्दनी में मिलाय जगत् को दोचन्द उँजाला पहुंचाता—चन्द्रमा इसके मुख का सहारा पाय राहु से ग्रसने के भय से निःशङ्क हो गया इसका अधरबिम्ब उसी चन्द्रमा की प्रभामण्डल का विस्तार है–(दोनों का एक दूसरे को देखना और सखी समेत दमयन्ती का नल के अभ्युत्थान के लिये खड़ा हो जाना)

दमयन्ती—शिष्टाचार में कुशल लोग कह गये हैं कि आये हुये अतिथि सत्कार निमित्त जो साष्टांग प्रणाम है वही पाद्य है—प्रिय कोमल और मीठे अक्षरों से जो बोलना वही मधुपर्क है—अपना स्थान छोड़ अभ्युत्थान पूर्वक आये हुये की टहल के लिये तन मन को तृण तुल्य समझ अर्पण कर देना बैठने के लिये आसन है—अपने भाग्य को धन्य समझ नेत्रों से जो आनन्दाश्रु का विसर्जन वही पांव धोने के लिये जल है–शिरिष के फूलों के समान इन कोमल चरणों को क्लेश दै आप कितनी दूर चल कर आये हैं—किस देश को सूना कर आप यहां पधारे–नाम गोत्र सुन क्या मैं अपने जन्म को कृतार्थ कर सक्ती हूं ? पहरूओं से चारो ओर सुरक्षित इस अन्तःपुर में आप का प्रवेश पाना गम्भीर महासागर को भुजाओं से तैर जाने के समान है—मैं अब तक निश्चय न कर सकी कि इस साहस का फल क्या है?—मैं तो यही मानती हूं कि आप का यहां प्रवेश मेरे नेत्रों को उन के सुकृत का फलरूप हो परिणत हुआ है—कामदेव के सौन्दर्य को भी दबा देने वाली यह आप की दमकती हुई

देह की प्रभा है जिसने पहरा देने वालों को अन्धा कर दिया–तुम्हारी आकृति अग्नि में तपाये कुन्दनसी दमकती हुई मन में खटक पैदा करती कि आप अमरगण में कोई हैं—यदि देवताओं में आप को कामदेव कहें तो कामदेव अतनु होने से देहधारी नहीं हो सक्ते–अश्विनीकुमार तुम्हें समझें तो अश्विनीकुमार दो देवता साथ विचरते हैं अकेले कभी रहते ही नहीं–अपने से अधिक गुण वाले की प्रशंसा न कर मौन रहना मानो मुख में जिह्वा का जन्म ही विफल है इससे तो गूंगा ही पैदा होना भला था फिर जो जिस योग्य है उससे घटा कर वर्णन करना खलता और द्वेषबुद्धि प्रकट करता है इससे लोग बन्दी और भाटों के समान वाचाट मानेंगे बला से जिह्वा की तो सफलता योग्य की योग्य स्तुति में है–

"वाग्जन्मवैफल्यमसह्यशल्यं गुणाधिके वस्तुनि मौनिताचेत् ।
खलत्वमल्पीयसि जल्पितेपि तदस्तु वन्दिभ्रमभूमितैव–"

मनुष्यों में यदि आप हैं तो यह पृथ्वी स्वर्ग के साथ रूप और लवनाई में होड़ करे तो किसी तरह अनुचित नहीं है—अथवा तुम नल तो नहीं हो क्योंकि विम्ब प्रतिविम्ब न्याय से ऐसा अत्युत्कृष्टरूप निर्माण विधाता की सृष्टि में दूसरे का होना सम्भव कहां है?–जो हो आप की रूप माधुरी का पानकर मेरे प्यासे नेत्रों ने अपना जन्म सफल माना अब कान अलवत्ता उकता रहे हैं कि मुझे कर्णरसायन अमृत क्यों कर पीने को मिलै—धन्य उसके भाग्य जिसके तुम पाहुंने बन कर आये हो—

नल—राजकुमारी ! आभिजात्य और कुलीनता की प्रकाशक मैं तुम्हारी इन कोमल वाक्यपदावलियों से अत्यन्त प्रसन्न हुआ इन्द्र, वरुण, यम और अग्निदेव का भेजा हुआ मैं तुम्हारा ही अतिथि हो यहां आया हूं–हम तुम्हारे इस अभ्युत्थान उचित सत्कार से अत्यन्त सन्तुष्ट हुये --क्यों आप अपने कोमल अङ्गों को क्लेश देरही हैं बैठ जाइये मैं देवताओं का जो सन्देसा लैकर आया हूं उसे यदि अनुग्रहपूर्वक अपने पवित्र मनमानस में स्थान दीजिये तो वही मेरी पहुंनाई है— (दोनो बैठ जाते हैं)

नल—हे कल्याणि ! बालपन से आज लों तुम्हारे शील सौन्दर्य की प्रशंसा सुनते २ इन देवताओं की उत्कण्ठा अब यहां तक बढ़गई है कि तुम्हारे

वियोग में उन्हें किसी भांत कल नहीं पड़ती तुम्हारे वियोग तापज्वर के दूर करने को शीतलोपचार की भांत नन्दन वन के फूलों की सेज बनाते २ कल्पवृक्ष जिसे दूसरों की दरिद्रता के हर लेने का बड़ा अभिमान था फूल और पत्तों के अभाव से स्वयं दरिद्र होगया—उर्वशी जिसे अपने रूप से जगत् भर को वशकर लेने का अखर्व गर्व था अपने मालिक इन्द्र को तुम्हारे रूप लावण्य पर मोहित देख ठगीसी हो सजीव सालभञ्जिका समान होगई है—अग्नि जो शिव की आठ मूर्त्तियों में एक देदीप्यमान मूर्त्ति है सो भी तुम्हारे रूप लावण्य पर मोहित दास बनने को सन्नद्ध है——कमलों को प्रकाश करने वाले सूर्य जिस्से अपने को पुत्रवान् मानते हैं मलयागिरि की वासभूमि दक्षिण दिशा के जो पति हैं सो धर्मराज यम भी तुम्हारे मिलने के लिये अधैर्य हो रहे हैं—शैत्य-सम्पादन का एकमात्र कारण जल के अधिष्ठाता होकर भी वरुण देवता तुम्हारे वियोग में कामज्वर की दाहको निरन्तर जल में डूब कर भी नहीं बुझा सक्ते—दाह को दूर करने और ठण्ढक पैदा करने के लिये सब तरह का शीतलोपचार करते हैं पर पञ्चबाण के बाण ऐसे चुभे हुये हैं कि कलेजे में ठण्ढक आती ही नहीं—कल तुम्हारा स्वयंवर होने वाला है इस्की चर्चा इन देवताओं तक पहुंची है सो ये चारो देवता अकुला और तुम्हारे पाने लिये के आशाबद्ध हो हमें तुम्हारे पास भेजा है मैं समझता हूं इन चारो में एक किसी को तुम अवश्य सनाथ करोगी—

दमयन्ती—(देवताओं के सन्देसे पर अरुचि प्रकट करती हुई अनमनसी हो) स्मरसुन्दर ! वाक् चातुरी का यह अनोखा ढंग आप ही में देखा गया कि प्रश्न कुछ और उत्तर कुछ और—हमने आप का पवित्र नाम और गोत्र तथा जन्म की पुण्यभूमि पूछी थी आप कुछ और ही गाथा गाचले—कानों को अमृत के समान तृप्ति पहुंचाने वाली आप की वाणी तो सुना पर श्रीमान् के नाम सुनने की अभिलाष फिर भी बनी ही रही जल की प्यास कितना ही दूध और मधु पिओ नहीं जाती किन्तु जल की प्यास जल ही से बुझैगी—आप सरीखे नायकरत्न किस उज्ज्वल वंश को अपने जन्म से पवित्र करते हैं और आप का पवित्र नाम किन २ अक्षरों को आभूषित करता है—

नल—बुद्धिमति ! मेरी समझ में कुल और नाम दोनों का उद्घाटन अनावश्यक है इस लिये उनके कहने में मेरी जिह्वा सर्वथा उदासीनभाव रखती है क्योंकि कुल यदि स्वयं उज्ज्वल नहीं है तो अपने मुख से उसका वर्णन कहां तक उसे उज्ज्वल कर सकेगा और यदि उज्ज्वल है तो हमारा दूत बन कर यहां आना कुल की यावत् उंचाई और गौरव को छार में मिलाता है—इस लिये नाम और गोत्र के प्रति आप का यह हठ सर्वथा अनुचित है—प्रत्यक्ष रूबरू बातचीत करने में तुम और हम ये सर्वनाम ऐसे कामधेनु हैं कि इनसे सब काम निकल सक्ता है तब नाम गोत्र बतलाने की आवश्यकता ही क्या रहगई—कुल जानने में यदि आप को अत्यन्त हठ है तो क्या इतने से तुम्हें सन्तोष नहीं हो सक्ता कि यह तुच्छ मनुष्य चन्द्रवंश का एक अङ्कुर है—बड़े लोगों की ऐसी परम्परा रीति चली आई है कि अपना नाम अपने मुख से नहीं कहते " आत्मनामगुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च । श्रेयस्कामो न गृह्णी-याज्ज्येष्ठापत्यकलत्रयोः" इस लिये मैं अपना नाम अपने मुखसे नहीं कह सक्ता यदि इस शिष्टाचार के विरुद्ध करता हूं तो लोक में निन्दा होती है—"जनः किलाचारमुचं विगायति"—

दमयन्ती—आप चन्द्रवंश को शोभा देने वाले हैं इतना जान लेने पर भी नाम पूछने की विशेष जिज्ञासा शान्त न हुई—यह आप की चतुराई है कि किसी बात को विशेष पल्लवित कर कहा और कहीं पर बिलकुल चुप रहे यदि ऐसा है तो मैं भी आप की बात का उत्तर नहीं दे सक्ती क्योंकि कुलवन्तियों को किसी दूसरे पुरुष के साथ बात चीत करना भी निन्दित है, और निन्दित का आचरण वैसा ही शिष्टाचार के विरुद्ध है जैसा तुम को अपना नाम लेना शिष्टाचार के विरुद्ध है—

नल—अस्तु यह सब वाग्विडम्बना तो बहुत होचुकी अब उस्का तो कुछ उत्तर दो जिस्के लिये मैं आया हूं—चार देवताओं में तुम ने किसे अपने लिये उपयुक्त समझ स्वीकार किया—मुझे धिक्कार है कि मैं इस योग्य भी न ठहरा कि अत्यन्त छोटी बात दूतकर्म भी मुझसे हो सक्ता—

दमयन्ती—यदि यह कहती हूं कि यह सब आप का कहना केवल वृथा परिहासमात्र है तो धृष्टता होती है—ऐसी चर्चा चलाने से यदि आप को

रोकती हैं तो अवज्ञा होती है नहीं कुछ उत्तर देती तो आप का बड़ाही तिरस्कार होता है—एक साधारण मनुष्यजाति की स्त्री पर इन्द्र की आसक्ति केवल बिडम्बनामात्र है—देवाङ्गनाओं के होते मानुषी किस गिनती में हैं हां अलवत्ता जहां देवाङ्गना न हों वहां मानुषी ही सही जिस नायिका के अङ्ग में सोने का आभूषण न हो उसके अङ्ग की शोभा के लिये पीतल के गहने भी काम दे सक्ते हैं—अस्तु आप चाहो सो कहो मुझे इन अक्षरों के सुनने में सर्वथा बाधिर्य है यह क्योंकर सम्भव है कि हरिणी हाथी के साथ अनुराग प्रगट करे—

(अपनी सखी सुलक्षणा को इशारा कर)

सुलक्षणा—महाभाग! मेरी प्रिय सखी राजकुमारी आप से स्पष्ट कहने में लजाती है—इसके चित्त में नल चिरकाल से ऐसा चुभ गये हैं कि दूसरे पुरुष को मन में स्थान देते डरती है कि कहीं पातिव्रत्य में त्रुटि न आजाय—सती स्त्रियों को सतीत्व का निर्वाह मृणाल के नाल के समान कोमल और भंगुर होता है जो अणुमात्र चपलता से टूट जा सक्ता है—देवता तो सर्वज्ञ होते हैं स्वयं जान सक्ते हैं कि इसने कभी स्वप्न में भी नल छोड किसी दूसरे की इच्छा नहीं किया—देवताओं से अधिक धर्मशील कौन होगा तब जो दूसरों को धर्मपथ पर चलाने को नियत किये गये हैं वेही जब उसके बिगाड़ने में सन्नद्ध हुये तो अब किसकी शरण गहैं—नल में तन्मयजीवन मेरी प्यारी सखी उन देवताओं से अपने लिये नल को भीख में मागती हैं आशा है आप के देवता लोग अवश्य इतनी अनुग्रह करेंगे—अथवा हे वीर मेरी सखीने यह ठान ठान लिया है कि यदि नल प्राप्त न होंगे तो आग में जल फांसी लगाकर या पानी में डूब अपने जीवन का अन्त कर डालूंगी पर किसी दूसरे को न वरूंगी—क्या किया जाय जब सर्वथा सत्कर्म से रक्षा और कल्याण नहीं है तो निषिद्ध आचरण से अपनी रक्षा करना न्यायविरुद्ध क्यों कर हो सक्ता है—राजमार्ग में जब अतिवृष्टि केकारण विप्लवहर हो जाता है तो बुद्धिमान्जन सकेती गलियों में चलकर निर्वाह करते हैं—

"निषिद्धमप्याचरणीयमापदि क्रिया सती नावति यत्र सर्वथा।
घनाम्बुना राजपथे हि पिच्छले क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते"—

तस्मात् आप से यही प्रार्थना है कि हमारी प्रिय सखी इन देवताओं के पेच में आने से जिस तरह पर बचे सोई कीजिये—

नल—इस्से अधिक अनुचित और क्या हो सक्ता है कि देवताओं की अपेक्षा मनुष्य पांव की धूलि भी नही हैं देवताओं में सामान्य देवता नहीं बरन इन्द्र बरुण ऐसे जिन की लोकपालों में गिनती है सो तुम्हारे लिये ऐसे आसक्त हैं और तुम उन पर विरक्तिभाव दरसा रही हो—यह तो वैसा ही है जैसा कहीं की गड़ी हुई सम्पत्ति आप से आप किसी निर्द्धनी के पास आवे और वह उसे भीतर आने से रोक किवाड़ बन्द करले—दमयन्ती तू वृथा पण्डित-मन्या बनती है इन्द्र को छोड़ एक साधारण मनुष्य नल पर अपनी आसक्ति प्रकट करते तुझे लज्जा नहीं होती—मरणधर्मी मनुष्यजाति में जन्म ले अमर देवताओं को न चाहती हो यह एक नई बात आज देखने में आई—नल को विना पाये यदि तुम अनल में प्रवेश करोगी तो अग्नि का मनोरथ विनप्रयास ही सफल हो गया मानो अग्नि देव पर तुमने बड़ी ही कृपा की जो अपने आप तुम उन से जा मिली—और जैसा तुमने जल में डूब प्राणदेना सोचा यह भी वरुण देव पर बड़ी ही कृपा हुई क्योंकि उन्हे भी विनप्रयास ही अभीष्ट लाभ हुआ—अथवा विष आदि के द्वारा यदि तुमने अपना अन्त सोचा हो तो मानो यमराज को कृतार्थ कर दिया और स्वयं जाकर उन के हस्तगत हुई—इस्से लज्जा त्याग स्पष्ट क्यों नहीं कहती हो कि किस देवता को तुम अपना योग्यवर बनाया चाहती हो—अथवा तुम्हारे इस इनकार का उलटा अर्थ तो नहीं है ? बहुधा चतुर सयाने लोगों का यह भी एक क्रम होता है कि वे अपने चित्त की थाह नहीं देते यदि ऐसा है तो इस भंवरजाल में कब तक फसाये रहेगी लज्जा को दूर बहाय साफ २ क्यों नहींकह देती कि किस देवता को कृतार्थ किया चाहती है—यदि इन्द्र को चुना तो उचित ही किया क्योंकि सिवा इन्द्र के तुम्हारे कोमल सुडौल अङ्गों की शोभा सहस्र नेत्रों से कौन दूसरा देख सक्ता है—यदि अग्नि को पसन्द किया हो तो यह भी उचित ही है क्योंकि अग्निदेव भी तो क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न हैं दूसरे यह कि जो तेजस्वी हैं उन का साथ तेजस्वियों ही से जोड़ खाता है—आप ऐसी धर्मशीला ने यदि धर्मराज को अ-

पने लिये पति करना चाहा तो यह भी उचित ही हुआ हम को यह क्रम बहुत पसन्द आया क्योंकि "चकास्ति योग्येन हि योग्यसङ्गमः" योग्य का सङ्गम योग्य ही के साथ शोभा देता है—अथवा शिरीष कोमलांगी क्या तूने वरुण को वरा चलो तब अच्छा ही हुआ क्योंकि वरुण जलमय हैं और जल यावत् कोमल पदार्थों की कोमलता का सम्पादक है वरुण के साथ मनमाना जलविहार का सुख अनुभव करैगी—

दमयन्ती—(सिर नीचा कर आंख में आंसूभर) देवताओं का सन्देसा रूप इन कटुवचनों से सूजे के समान मेरे कानों को बेधते हुए तुमने मेरे प्राणान्त के समय ठीक २ यम की दूतता का निर्वाह किया यमराज के दूत हो कर आये हो हमारा भी अन्त समय है जहां तक विथा पहुंचा सको पहुंचाओ सब सहने कोसन्नद्ध हैं—(रोने लगती है) पक्षि राज हंस के समागम के समय जैसी अङ्ग प्रत्यङ्ग की शोभा प्राणनाथ नल की मुझ से कही गई थी वह सब तुम्हारे में मिलती है इस लिये प्रार्थना करती हूं कि आप मेरे सन्मुख रहें "अन्ते मतिः सा गतिः" जो यह सिद्धान्त ठीक है तो यद्यपि यह अभागिनी अपने प्रबल पापों के कारण पुण्यश्लोक प्राणनाथ को इस जन्म में न पासकी तो जन्मान्तर में तो उन्हे पावे—

नल—जन्मान्तर में भी नल का पाना तुम्हारे लिये अतिदुष्कर है क्योंकि इन्द्र के घर के अङ्गने ही में कल्पवृक्ष लगा हुआ है तुम जानती हो कि कल्पपादप से याचना कभी विफल नहीं होती इन्द्र यदि तुम्हे कल्पवृक्ष से मांगलें तो तुम क्या करोगी—वेदों में सर्वकामिकयज्ञ का विधान लिखा है अग्निदेव यदि सर्वकामिकयज्ञ के द्वारा तुम्हे अपने लिये मांगलें तो तुम क्या कर सक्ती हो—वरुण के घर में कामधेनु बंधी है यदि तुम्हे कामधेनु से मांगलें तो लाचार हो तुम्हे उन के आधीन होना ही पड़ेगा—इसी तरह पर धर्मराज की दिशा दक्षिण में अगस्त्यमुनि बास करते हैं तुम जानती हो महामुनि अगस्त्य देवऋषि हैं उन्हे सब तरह की सामर्थि है और धर्मराज की दिशा में रहते हैं अतएव उन के बाध्य हैं—उन से यदि यमराज तुम्हे मांगलें तब तुम क्या कर सक्ती हो—दमयन्ती तू अपने को पण्डितमानती है पर वास्तव में बड़ी मूर्ख है जब

देवता लोग विघ्न करने पर सन्नद्ध हैं तब मनुष्य की क्या सामर्थि कि हाथ की धरी वस्तु भी पासके–

दमयन्ती–सब ओर से निरास हो आकुलभाव से–अरे प्राण तुम्हारे रहने का स्थान हृदय शोकअग्नि से जल रहा है अब तुम क्यों देर कररहे हो क्या अभी तक तुम्हे सुख भोगने की आशा लगी है कहां का आलस्य तुम्हे आकर घेरे हुये है जो तन से जल्दी नहीं निकलजाते–हा रमण ! हा जीवितेश ! हा प्राणनाथ ! विना तुम्हारे इन प्राणों को सैंत के क्याकरूंगी—अरे ये अपराधी नेत्र तुम अब वृथा प्राणनाथ के दर्शन की लौ लगाये हुये हो तुम ने इतना पाप कमा रक्खा है कि सौ वर्ष तक अश्रुजल में स्नान करते रहोगे तौभी यह पाप राशि ऐसी नहीं है कि जल्द कट जाय—हाय एक२ क्षण सौ युग के समान विताये नहीं वीतते तौभी वाम विधाता इस यातना का अन्त नहीं करता–हे प्राणधन ! यह मन तुम्हारे चरणकमलों में लौलीन है तुम्हे क्योंकर इस बात का निश्चय कराऊं दूसरे के हृद्गत भाव का ज्ञान ऐसे महाघोर अन्धकार में छिपा रहता है कि किस्की सामर्थि जो उसे टटोल सके तब आप का भी इस्में क्या अपराध—तुम्हारे लिये यह दासी अब किस्से कहानियों में केवल कहने सुननेमात्र को रह गई इसे जब आप सुनो गे उस समय दयार्द्र हो जो मेरे लिये पछतावेंगे मैं उतने ही से अपने को आप ही के समान पुण्यकीर्तनवाली समझ कृतकृत्य मानूंगी—हा ! प्राणधन के वियोग अग्नि की ज्वाला का सन्ताप बढ़ता ही जाता है–हा नाथ ! हा रमण !! हा प्राणधन !!! हा जी:::: (मूर्छित हो जाती है) सखियां उसे थांब पंखा करने लगती हैं)

नल—स्वगत—अब तो मैं प्राणप्यारी का यह कष्ट नहीं सहार सक्ता दूतता के धर्म में बट्टा लगेगा। बला से देवताओं का कार्य सुधरै चाहो बिगड़ै अब मैं इसे विशेष संताप नहीं दिया चाहता (प्रगट) अयि प्रिये तुम अपने मुखचन्द्र को आसुओं की धार से मैला करती हुई किस्के लिये विलाप कर रही हो आप का आज्ञाकारी किंकर तो सामने ही खड़ा है तब इस सन्ताप का क्या कारण है—मणियों के हार पर अरुचि प्रगट कर अश्रुजल कण का बना मोतियों का नया हार पहनने के लिये क्यों इतना उत्सुक हो रही हो—कृशोदरि अब आसुओं की धारा का अन्त करो अपने ईषत् हास्य के प्रकाश से

शोक की घनघोरघटा को छिन्न भिन्न कर शरत् काल के चन्द्रमा समान अपने मुखच्छवि के उजाले से कुमुद सदृश इस आश्रित के मनोमुकुल को प्रफुल्लित करो—प्रिये मैंने तुम्हें बड़ा क्लेश दिया मैं तुम्हारा अपराधी हूं—

दमयन्ती—(स्वगत) यह क्या मैं स्वप्न देख रही हूं किस दयासागरने अमृत समान वचन सुनाय मुझे मृत्यु के आधे रास्ते से खींच लिया (आंखखोल) यह तो वही देवदूत हैं क्या अब मेरे दुर्दैव का अन्त आगया (बाईं आंख का फरकना) मेरी बाईं आंख भी फरक रही है—

सुलक्षणा—प्रिय सखी अब तू क्यों सन्देह कर रही है तेरे भाग जगे यह वही प्राणनाथ हैं जिस्पर तू इतने दिनों से लौ लगाये थी आज यह अनोखा पाहुना तुझे आकर मिला चलो हम सब लोग इन की पहुनाई से अपना जीवन सफल करें (सब गईं) (परदा गिरता है)

राजनैतिक संशोधन की हमें क्यों आवश्यकता है—

बहुत लोगों का मत है कि हिन्दुस्तानियों को राजनैतिक संशोधन "पोलिटिकल रिफार्म" के वास्ते गुल शोर मचाना बिलकुल बेजां है—क्योंकि हमारे विद्यमान शासकों की शासनप्रणाली में न तो कोई भूलचूक है न अभी हिन्दुस्तानी इस लायक हुये हैं कि राजनैतिक बातों को अच्छी तरह समझ सकें आज हम इसका निर्णय किया चाहते हैं कि उन का यह कहना कहां तक वाजिबी और सच्चा है—

सब जानते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य की प्रकृति में भूल और भ्रम रक्खा है इस लिये मनुष्यमात्र के कोई भी काम या खयाल भूल से खाली नहीं हो सक्ते कुछ न कुछ भूल का होना उसमें अवश्य ही संभव है और जैसा कि कानून के बनाने वाले ये हाकिम भी मनुष्य ही हैं देवता नहीं इस लिये क्या सम्भव

नहीं हो सक्ता कि उन से भी भूल हुई हो जिसे दूसरे लोग अच्छी तरह गिरफ्त कर सक्ते हैं–दूसरी बात यह है कि वही वस्तु जो पहले बहुत सोहावनी मनभावनी मालूम होती है पीछे चिरकाल तक देखते २ ऊब पैदा करने वाली और बहुत से दोष उस्में नज़र पड़ने लगते हैं–यदि कोई अँधियारे रास्ते में चला जाता हो अकस्मात् एक धुंधली रोशनी की झलक प्रथम उसे जीवदान के समान मालूम होगी परन्तु थोड़ी देरबाद उस बटोही को अवश्य यह इच्छा होगी कि अब इस्से अधिक प्रकाशवाली कोई रोशनी मिलती तो अच्छा होता–इसी तरह आदि में सम्भव है कि अनेक राजनैतिक दोषों को हम नहीं समझ सक्ते थे किन्तु इतने दिनों के उपरान्त जो अब हमे उस्के गुण और दोषों का परिज्ञान होने लगा तो अब इस्में अचरजक्या हुआ ?। क्या हम हिन्दुस्तानी होने ही से सब भांत गये बीते हो गये–इस लिये यह कहना कि हमें राजनैतिक संशोधन की कुछ आवश्यकता नहीं है सब तरह पर अयुक्तिक है—इतिहासों से पूरा पता लगता है कि संसार की प्रत्येकजाति अपनी राजनैतिकदशा में सदा अदलबदल करती रही क्या इंगलैण्ड की राजनैतिकदशा अब भी वैसी ही है? जैसी यह एक हज़ार वर्ष पहले थी हरगिज़ नहीं बल्कि दिनोदिन बदलती गई–हिन्दुस्तान ही को देखिये मुसल्मानों का शासन हिन्दुओं के क्रम के बहुत बातों में विरुद्ध था और अब अंगरेज़ी शासन यहां हिन्दू और मुसल्मान दोनों की रीति नीति के बहुत दूरतक विरुद्ध है–हम तो कहैंगे कि मनुष्य के लिये यह प्राकृतिक है कि जैसा वह सादा एकही तरह का वस्त्र पहनते २ एकही तरह का भोजन करते २ ऊब जाता है और नये वस्त्र और भोजन पर रुचि दौड़ाता है वही हाल देश के निवासियों की समष्टि "नेशन" का है–हमारे प्रतिपक्षी यह भी कह रहे हैं कि इङ्गलेण्डने इण्डिया को पढ़ाय लिखाय जानवरों से आदमी बनाय और लूट मार ठौर २ राजबिराजी अत्याचार मिटाय अमन अमान कायम किया तो इस्से यह कहां निकला कि अब इण्डिया में आगे राजनैतिक संशोधन न होना चाहिये–यदि हम पढ़ लिख कर आदमी हुये और अच्छे बुरे की तमीज़ हम्में आगई जो विद्या का मुख्य फल है तब तो हमारे पढ़ाने वालों को रंज़ीदा होने के एवज़ खुश होना चाहिये कि हम उन के चेले कुपात्र नहीं बरन सुपात्र निकले और जो कुछ परिश्रम उन्होंने

हमारे साथ किया बस सफल हुआ " क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति " हम पहले ही कहचुके हैं कि कोई जाति सदा एकसी दशा में नहीं रहती—सभ्यता की परमसीमा को पहुंची हुई जाति बिगड़ कर हीन दीन हो जाती है और जो जाति पहले निरी असभ्य और वन्य थी अब सभ्यता के सूत्रपात में सब के सिरे पर अपने को मानती है—दूर क्यों जाइये खास यूरोप में देखिये ग्रीस और रोम जो किसी समय किस आनशान को पहुंच गये थे अब घटकर साधारण जाति वाले हो गये—उत्तरीय यूरोप की असभ्यजाति वाले जिन में मनुष्यता की झलक भी न थी अब सभ्यता की उत्कृष्ट सीमा को पहुची हुई समस्त सभ्यजाति के सम्राट् हैं—ये हमारे शासक महाशय उसी उत्तर की असभ्यजाति में के एक तन्तु और प्रतान हैं जो हमारे सिर पर गाजते हुये हमे सब तरह शिक्षा दे रहे हैं—जब ऐसे २ असभ्यजाति वाले इस उच्चश्रेणी की सभ्यता को पहुंचे तब क्योंकर सम्भव है कि हिन्दुस्तानी सदा एकही हालत में रहेंगे—फिर यदि ये इस योग्य न होते तो कभी इतना मुह न बगारते कि अब हमारे लिये राजनैतिक संशोधन किया जाय मनुष्य उतना ही मांगसक्ता है जितना वह निबाह सके—कोई मज़दूर या मोटिया यदि वह पागल न हो कभी यह न कहेगा कि हम पर १० मन का बोझ लाद दो—अब वह समय आगया है कि इण्डिया पोलिटिकल रिफार्म को पूरी तरह बरदाश्त कर सक्ती है—हमारे प्रभुवरों को विश्वास करना चाहिये कि हिन्दुस्तानी ऐसे सहनशील हैं कि बिना बहुत अधिक कष्ट के वे शिकायत कभी नहीं करते आज दिन जो वे राजनैतिकसंशोधन के लिये गुल शोर मचाये हुये हैं तो निस्सन्देह उन्में इसकी आवश्यकता है—कितने लोग ऐसा भी कहते हैं कि राजनैतिकसंशोधन समाजसंशोधन होने ही से आप से आप हो जायगा इस लिये हम राजनैतिक संशोधन के लिये व्यर्थ सिर दुखा रहे हैं—हम अपनी समाज को निर्दूषित और शुद्ध करैं ज्यों २ हमारी समाज पुष्ट पड़ती जायगी और जातीयता का भाव " नेशनालिटी " हम्में आता जायगा त्यों २ राजनैतिक बातों में भी हम पुष्ट पड़ते जांयगे इस लिये कानग्रेस इत्यादि के द्वारा अपने शासनकर्त्ताओं को अप्रसन्न करना व्यर्थ है जो कुछ राजनैतिक भलाई होने वाली है सो भी न होगी—

हम समझते हैं ऐसा नहीं है किन्तु हमारी सामाजिक भलाई भी राजनैतिकसंशोधन पर निर्भर है—जब तक राजकाज में हमे दखल देने का भरपूर अधिकार न मिलैगा तब तक क्योंकर बिना दण्ड का भय दिखाये उन २ सामाजिक बुराइयों को हम अपने में से हटा सक्ते हैं—इसका अच्छी तरह अनुभव हो गया है कि हमारे देश में समाजसंशोधन अपने आप होना असंभव है बिना दण्ड का भय दिखाये। जब तक इन्हें भय न दिखाया जायगा ये अपनी मूर्खता से कभी न मुह मोड़ैंगे—बाल्यविवाह जिस्के कारण देश धूर में मिला जाता है सौ सौ तदबीरैं की गईं कि यह बुराई इन्में से किसी तरह दूर हो पर कोई उपाय सफल नहीं होता तो अब कोई ऐसा ही भारी दण्ड इस्के लिये होना चाहिये जैसा हाल में सहबास बिल के पास होजाने पर नियत किया गया है और यह सब तभी संभव है जब हमे गवर्नमेंट के राजनैतिक प्रबन्धों में हाथ डालने का अधिकार रहेगा—दूसरे यह कि समाजसंशोधन तो राजनैतिकसंशोधन की शाखा प्रशाखा है जब जड़ पुष्ट होगी तो शाखा और पल्लव सब आप ही हरे भरे बने रहेंगे—अगर पोलिटिकल इखतियारात हमें मिल जांय तो समाजसंशोधन की आवश्यकता ही हमें न रहे फिर समाज का शुद्ध करना तो हमारा घरैलू झगड़ा है इसे हम जैसा जब चाहें गे निपटाते रहेंगे पोलिटिकल मामिलों में हम सबों को एक तन एक मन होकर रहना चाहिये—यूरोप के बीताभर के छोटे २ देशों के समान यह भारत तो है नहीं कि यहां एकही जाति के लोग और एकही केवल ईसाईधर्मावलम्बी रहते हों यहां तो एक ही घर में प्राणी २ का अलग २ सिद्धान्त मत और संप्रदाय है—हिन्दू मुसलमान ईसाई पारसी बौद्ध जैन यहूदी आदि सब जाति के लोग रहते हैं—तब कैसे हो सक्ता है कि समाजसम्बन्ध में सब एक सूत्र में बंध एक ही ढर्रे पर चलने लगें हां पोलिटिकल मामिलों में सबों का एक होना अधिकतर संभव है—इस लिये राजनैतिक संशोधन होने ही से फिर हमें समाजसंशोधन के लिये बहुत कम फिकिर करनी पड़ेगी बरन आप से आप और बिन प्रयास कोढ़ के समान जो अनेक बुराई हम्में आगईं हैं दूर होते २ समाज शुद्ध और परिश्कृत हो समस्त भारत निवासियों को दिव्य देवयोनि के समान कर देगी--

जेन्टिलमेन–

इस्का आजतक पता न लगा कि जेन्टिलमेन किसे कहते हैं और आदमी क्योंकर जेन्टिलमेन समझा जाता है इस्की क्या पहचान है—सतयुग के समय का एक ब्राह्मण नंगे सिर नंगे पाव नंगे बदन खाली एक अंगोछा कंधे पर धरे मन बच कर्म से पराई बहू बेटी को मा बहन समझने वाला विद्या और गुण में आगर पर बनावट और मक्कारी से बिल्कुल खाली जेन्टिलमेन होगा या नहीं—अथवा तखी को एकदम हाथ से जुदा न करने वाला रोज़े नमाज़ से दुरुस्त कोरान हिफ्ज़ किये बादशाही ज़माने का एक मुसल्मान इस पदवी के पाने लायक होगा या नहीं ?–या अपनी गाढ़ी मेंहनत पर भरोसा किये हुये फटे कपड़े पहने फाकेमस्त फरेब दगाबाज़ी मक्कारी और कुटिलाई से कोसों दूर सीधासादा अंगरेज़ी राज का एक किसान जेन्टिलमेन होसक्ता है ?—नहीं नहीं नहीं जेन्टिलमेन होना बड़ी चीज़ है महज़ रेलवेस्टेशनों के पाखानों के खयाल से कनात न कर लीजिये इस्के कुल औसाफ शायद आप को मालूम न होंगे तो हम से सुन लीजिये—जेन्टिलमेन बनने के लिये बड़ा दिमाग़ बड़ी अकिल बड़ी लियाकत चाहिये दाल भात का कौर नहीं है किसाना गप से मुह में रख लिया—बङ्गलों का बूदवाश खान पान रहन सहन बोलचाल उठने बैठने में फेशन की गुलामी सवारी के लिये गाड़ी वग्घी टमटम फिटिन गिग ब्रूहम ट्रैशैकिल बैसइकिल जो जिस दरजे का जेन्टिलमेन होना चाहें—दियानतदारी को डिसमिस किये ईमान और दीनदारी को भड़भूंजे के भार में झोंक कर्ज़दारी को आगे किये औकात से ज़ियादह खर्च श्रेष्ठ लोगों की श्रेणी में मिलने के दामी नखरे–हिन्दुस्तानियों से परहेज़ और नफरत इसलिये कि इन से ज़ियादह हेल मेल रक्खेंगे तो टटके विलाइत से आये हुओं की नज़र में देशी समझे जायंगे–दिमाग में अमीरी की बू नौवाब बनने का हौंसिला आरामतलबी बड़े से बड़े राजा बाबू तअल्लुकेदारों से खुशामद की खाहिश आठ पहर चौंसठघड़ी शराब के नशे में चूरंचूर–हमारे साहब लोगों की साहबी की और एक बात तो रही जाती है और वह उन की मेम साहबा और मिस बाबाओं के कलोल और नखरे हैं जिसे साहब बहादुर को

लाचार हो बरदाश्त ही करना पड़ता है—मैं समझता हूं इतने से आप को जेन्टिलमेन की पूरी शिनाख्त होने में कोई शक शुबहा न रहेगा और इस लब्ज़ के कान में पड़तेही उन के सब औसाफ़ कौन आप के मन में आजांयगे—

धन्य हो आपने मेरा सब भ्रम दूर कर दिया इसी से लोग कहते हैं हिन्दुस्तानियों में जेन्टिलमेन नहीं हैं—

रस में फीकापन कब आता है ॥

रसीलीवस्तु रसीलीबात रसीली तबियत में रस ज्यों का त्यों बना रहता है किन्तु दशा के परिवर्त्तन में वही चीज़ या वही बात बेमज़े या बदज़ायके हो ऐसी फीकी मालूम होने लगती है कि न जानिये पहिले कौनसी मिठास कहां विलाय जाती है—बहुधा तो रसके आस्वाद में सुख का अनुभव तभी तक होता है जब तक मनमें किसी तरह का उद्वेग चिन्ता या उतावली नहीं स्थान पाती—बुद्धिमानों का सिद्धान्त है यह संसार जो विष का एक वृक्ष है इस्में दो ही फल अमृत के तुल्य फलते हैं काव्यामृत के रस का आस्वाद और सज्जनों के साथ सहवास " संसारविषवृक्षस्य द्वे फले ह्यमृतोपमे । काव्यामृतरसास्वादः सङ्गतिः सुजनैः सह„—हम कहते हैं सज्जनों के सहवास में और काव्यामृत में भी रस तभी तक है जब तक चित्त चिन्तायस्त हो खिन्न और उद्विग्न नहीं हुआ—प्रसिद्ध आशुकवि जिन्में ऐसी ईश्वर की देन पाई गई कि पलक भँजने में चाहो देर लगे पर उनकी लोकोत्तर प्रतिभा को उत्तम से उत्तम रसीली कबिता गढ़ते देर नहीं लगती जिनका दिमाग क्या टकसाल घर है—इसी तरह पर विद्वान् दार्शनिक और मेथिमेटिशन जो दर्शनशास्त्र के अत्यन्त सूक्ष्म और बारीक विचार अथवा मेथिमेटिक्स के कड़े से कड़े सवाल चटकी बजाते हलकर डालते हैं वे भी चिन्तायस्त उद्विग्नदशा में ऐसे शिथिल पड़गये और उनकी पैनीबुद्धि यहां तक गोठिल होगई कि काम पड़ने पर वह प्रतिभा न जानिये किस अन्धे ताखाने में जाछिपी मानों वाक्स्तम्भसा होगया इससे यही सिद्ध हुआ कि मनुष्य को रसीली बातों में भी रस का आस्वाद या अनुभव केवल दशा के परिवर्त्तन पर निर्भर है—चढ़ती जवानी है धन की कमी नहीं लाखों लुटायें तो भी घटने का नहीं सब भांत स्वच्छन्द निरङ्कुश

किसी की दाब नहीं निडर निःशङ्क हो आमोद प्रमोद की ओर झुक पड़े—विलासिता में अपना औवल दरजा समझने लगे प्याले पर प्याला उड़ता है कभी दमभर के लिये भी बाबू साहब सरूर से खाली नहीं रहते अपने शहर की तो कोई बात ही नहीं देस विदेस में भी जहां तक हुसन परस्ती की हद्द है अपने भरसक नहीं छोड़ते—एक तो किसी गिनती ही में नहीं जब तक दोचार लोनाई और सौन्दर्य में एकता न मिलें तृप्ति नहीं—एक साथ ऐसा उतारू हुये कि दोही चार वर्ष में निचुड़ पीले आम पड़गये उधर उमर ढलचली सब भांत निःसत्व और क्षीण होगये गाल चुचक गया आंख की पलकों पर गड्ढे पड़ गये जिन्में पसर भर चना समाजाय—रोज़ खिज़ाब करते हैं दिन में चार दफा दवा चाटते हैं सेरों मोती घोंटकर खागये पर पहिले कासा रस नहीं आता जिस्के पाने को हज़ार तदबीर और यत्न करते हैं कुछ कारगर नहीं होती तेल और पानी से नित्य देह चुपड़ते हैं कि पुराने ठिकरे पर नई कलई की भांत फिर जवान मालूम हों पर असली बात नहीं आती वरन फीकापन बढ़ता ही जाता है—

असंख्य धन है राज है पाट है सब तरह की हुकूमत हासिल है सातखण्ड का सतमहला राजभवनसा मकान है किन्तु चिराग बुझ रहा है इस सब का वर्त्तने वाला आगे कोई दीखता नहीं—सब २ उपाय कर थके टोना टनमन पूजापाठ जपतप गया बनारस जिसने जो उपाय बतलाया कोई न छोड़ रक्खा दोदो तीन तीन ब्याह भी किये कि अब भी कोई एक वंश का अङ्कुर हो पर करतार ने कृपा न किया पुत्र का मुंह देखने में न आया—राजपाट धन दौलत सब फीकी मालूम पड़ने लगी किसी में कहीं रस नहीं मिलता ज़िन्दगी का दिन भरना पड़ा—कौड़ी २ जमा करते रहे पेटभर अन्न न खाया फटा पुराना मैला कुचैला कपड़ा पहिन किसी तरह तन ढांप अत्यन्त कदर्यतापूर्वक मारकर लाखों जमा किया एकान्त में बैठ जब उन रुपयों को गिनता है आनन्द में मग्न फूला नहीं समाता अपने में भाग्यमानी की सीमा मानता है—अकस्मात् कोई ऐसा ईश्वर का कोप हुआ कि चोर सेंध लगाय सब धन चुरा लेगये या कोई दूसरा धक्का लगा कि सब का सब गायब होगया—उस समय इस कृपण के जी से पूछना चाहिये जिसे यह जगत जीर्ण अरण्यसा बोध होता है केवल प्राणमात्र शरीर से जुदा नहीं होता और सब २ दशा इस कदर्य की होजाती है—

ऊंचे कुल में जन्म है सामान्य रीति पर असनवसन खाना पीना अच्छी तरह पर निभता जाता है किसी बात की मोहताजगी नहीं है परिवार भर में बड़ी साहुत और एका है बाहर शिष्टाचार में बात सब भांत बनी है दस भले आदमियों में कदर है—पण्डित जी लाला जी शाह जी जो हों समाज में अगुआ सरपञ्च और सिरताज समझे जाते हैं पर घर में स्त्री ऐसी कुकाला कलहकारिणी कुभार्या आई कि हवा से लड़ती है घरभर का नथुनों में प्राण आलगा—कुनवा भरके आदमियों को तोड़ फोड़ अलग कर दिया ऐसा विद्रोह फैला कि प्रत्येक के मनमें गांठ पड़गई जो कुछ एका था कि बंधी मूठी रहने से फूटी आंजी कोई नहीं जानता था भण्डआढ़ होगई सब भरम खुल गया—लाला जी के भीतर की चोट भीतर ही सालती है ज़िन्दगी बेमज़े होगई—"घरके लोगवा यों कहैं मियां जियैं अरु बरकत है। मियां की गत मियैं जानैं सांस लेत जी सरकत है॥" सच है "जन्म नष्टं कुभार्यया"—

व्योपार करते हैं बड़ी भारी दूकान है लाखों का वारा न्यारा महीने में होता है सिरे सराफ में गिनती है प्रकृति और आकृति दोनों में पूरे पिशाच दूसरे की जमा कहो सर्वस्व गटक बैठें अपनी एक कौड़ी भी निकलती हो तो काईं छूंकाईं छूं कर दिमाग चाटडालें—व्योपारी चाहता है कि हम सेठ जी की लिपड़ी बरताना करलें और सेठ जी इसी ताक में हैं कि यह खूसट जाने न पावे जहां तक होसके इसका ऐसा वस्त्र मोचन करलें कि तसमा न बचै—दलाल अपनी ही घात में है यह हज़रत व्योपारी और सेठ जी दोनों को गावली दे अपना मतलब गांठ चम्पत हुआ चाहते हैं—फकीरचन्द भिखारीदास की २५ हज़ार की हुण्डी ५४ मिती की ली थी मिती पुरती है रुपया तैयार नहीं है आज नहीं देते दिवाला पिटता है मुनीम और गुमाश्तों पर हांव २ खांव २ कोई कुछ बोला काटने को दौड़े किसी की बात नहीं पोसाती—दूकान का टाट उलट मुंह छिपाये सोच रहे हैं अब संसार में क्या मुंह दिखावेंगे बात गई तो जी ही के क्या करेंगे ऐसी ज़िन्दगी से तो मौत भली—जो कुछ सेठानी का ज़ेवर था सो सब बेंच अभी चार दिन हुये तिनकौड़ी मल गरीबदास का १५ हज़ार का सट्टा रख लिया था मिती पुजने पर ज्यों त्यों कर दै इज्जत

बचाया अब ज़ेवर भी न रहा क्योंकर बात रहे—बरसों तक दिनों रात पढ़ते २ आंख कमज़ोर पड़गई चश्मे की हाजत होगई " नई जवानी मांझा ढील " शेखचिल्लियों कासा मनसूबा गांठते हैं अब की बार इस इमतिहान से पार हुये तो दूसरे साल वकालत या इंजीनियरिंग के लिये कोशिश करेंगे औवल हुये तो तगमा पावेंगे बड़े २ लायकों में शुमार होगा—इमतिहान देने गये फेल होगये सब जोश उतर गया उमंग जाती रही महीनों तक संसार की किसी बात में मज़ा नहीं मिलता मायूसी की हालत में पड़े २ सोया करते हैं सोझती जाती ही नहीं—

नाती हैं पोते हैं परोता हुआ सोने की सीढ़ी चढ़े बड़भागियों की लिस्ट में अपना भी नाम दर्ज कराये हुये हैं—आज इसकी मंगनी है कल उसका ब्याह है लड़की के लड़का हुआ रोचना आया जन्ना साजने की फिकिर हुई मोह-मयी प्रमादमदिरा के पान से उन्मत्त यह जीर्णजरद्भव सौभाग्य की सीमा माने हुये है अकस्मात् एक ऐसी हवा बही कि एक एक कर कुनबा छीजने लगा दो चार तरपर ऐसी गभी हुई कि बड़भागी बनने का सब नशा उतर गया जीवन अपाढ़ समझने लगे—

हमारे वाइसराय गवर्नरजेनरल साहब महाराणी के प्रतिनिधि कुल स्याह सुफैद के मालिक जहां जाते हैं लोग हाथों हाथ लेते हैं बड़ी अच्छी कमाई कमा रक्खी है जिसका फल इस जन्म में भोग रहे हैं—हिन्दुस्तान ऐसे शैतान की आंत से देश का शासन जिस्में सैकड़ों जुदे २ कौम के लोग बसते हैं किसी बात में ज़रा चूके लेव देव करली गई अखबार वालों को जीट उड़ाने का मौका मिला—हिन्दुस्तानियों का किसी बात में पक्ष किया सिविलियनों के चेले पायो-नियरने गुर्राना शुरू किया उधर विलाइत वाले जुदा ही चाप चढ़ाये हुये हैं उन के मन की नहीं करते नालायक समझे जाते हैं—ऐसी २ कितनी फ़ौफ़टें उन के लिये तैयार रहती हैं तब क्योंकर कहा जासक्ता है कि उन का जीवन सर्वथा नीरस नहीं है—

हमने समझा था एडिटरी का काम सब से आराम और स्वच्छन्दता का है समयपर पत्र निकाल निर्द्वन्द हो बैठे रहे—समाज में मान और प्रतिष्ठा के अधिकारी गवर्नमेंट के बड़े २ राजनैतिक विचारों में राय देने को पांच सवारों

में एक हम भी—एडिटरी के झोंक में कभी को एंड़ीबेंड़ी कोई बात लिखमारा जो सर्कारी कानून के खिलाफ पड़ी या गवर्नमेंट के कर्मचारी हाकिमों की पालिसी उस्से दूषित होती है रिपोर्ट हुई मेजिस्टरेट साहब ने तलब किया—उस समय जो प्राण संकट होता है वह जोही जानता है एडिटरी का जितना जोश न जानिये कहां बिलाय गया ज़िन्दगी फीकी मालूम पड़ने लगी—लोग समझते होंगे पण्डित जी बड़े सुखी हैं बेहनेधुने का काफी से ज़ियादह मिलता है नगावड़ी बैलसे बैठे २ पागुर किया करते हैं और एंड़ाते रहते हैं यह कोई क्या जाने कि यजमानों का ताव सम्हलना कैसी भारी मुहिम है जिन की झिड़की और फिटकार से बचे रहने की कोशिश ज़िन्दगी को फीका कर देने के लिये क्या कम तरद्दुद है—इत्यादि इस्के अनेक उदाहरण हैं जहां तक चाहिये पल्लवित करते जाइये चुकेगा नहीं—

विद्यापतिकाश्मीरकभट्ट बिल्हण कविकी उक्ति

किं जातु गुञ्जा फलभूषणानां सुवर्णकारेण वने चराणाम्—

वन के रहने वाले जङ्गली जो घुमची से अपने अङ्ग को आभूषित करते हैं उन को सोनार से क्या प्रयोजन यह उक्ति वैसी ही है जैसा—"धोबी बस के क्या करे दीगम्बर के गांव" अथवा "ये गांहक करवीन के तुम लीन्ही कर वीन"—

निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव—

ऊंट फूले फले सुहावने बाग में जाकर केवल काटों से लसे पेड़ों को अपने लिये ढूंढता है—

रत्नेषु लुप्तेषु बहुष्वमर्त्यैरद्यापि रत्नाकर एव सिन्धुः—

देवताओं ने समुद्र मथ सब रत्न निकाल लिया फिर भी समुद्र रत्न का आकर बनाही रहा—

लङ्कापतेः संकुचितं यशो यद्यत्कीर्तिपात्रं रघुराजपुत्रः ।
स सर्व एवादिकवेः प्रभावो न कोपनीयाः कवयः क्षितीन्द्रैः—

लङ्कापति रावण का यश जो संकुचित हो गया और रामचन्द्र जो प्रशंसा के पात्र हुये यह सब आदि कवि वाल्मीकि की लेखनी का प्रताप है इस लिये राजाओं को उचित है कवियों को कुपित न करें—

फलं हि पात्रप्रतिपादनं श्रियः—

लक्ष्मी का यही फल है कि योग्य पात्र को दी जाय—

किमस्ति वैदग्ध्यवतामसाध्यम्—

चतुर के लिये क्या बात असाध्य है—

लज्जा कुतः स्वार्थपरायणानाम्—

जो स्वार्थसाधन को मुख्य काम समझते हैं उन्हें कहां लाज—

शुभाशुभानि वस्तूनि सम्मुखानि शरीरिणाम् ।
प्रतिविम्बमिवायान्ति पूर्वमेवान्तरात्मनि ॥

होनहार शुभ अशुभ प्रतिविम्ब के समान अन्तरात्मा में पहले ही से स्थान जाता है—

उचिताचरणे केषां नोत्साहचतुरं मनः—

उचित के करने में कौन नहीं बड़े उत्साह के साथ चतुराई दिखलाता—

न कृच्छ्रेपि महाभागास्त्यागव्रतपराङ्मुखाः—

क्लेशित होकर भी बड़े लोग अपनी दानशीलता नहीं छोड़ते—

किं लक्ष्मीसुखमुग्धानामसम्भाव्यं दुरात्मनाम् ॥

धन के सुख में मोहित दुष्ट के लिये क्या असम्भव है—

त्यागो हि नाम भूपानां विश्वसंवननौषधम् ॥

राजाओं के लिये उदारता संसार भर को अपने बसकर लेने की औषधी है—

परोपतापैकपरायणाश्चिरं कवा भवन्त्यभ्युदयस्य भूमयः—

दूसरों को दुःख पहुंचाने वाले चिरकाल तक सुखी कब रहे हैं—

भङ्गमेति भवितव्यता कुतः—

होनहार किसी तरह नहीं मिटता—

तेजस्विनोपि कुर्वन्ति किं कालवशमागताः—

तेजस्वी भी काल के वश में पड़ क्या कर सक्ते हैं—

प्रायेण देहविरहादपि दुःसहोयं सर्वाङ्गसंज्वरकरः प्रियविप्रयोगः—

बहुधा देह छुटजाने से भी अधिक सब अङ्गों में ज्वर पैदा करने वाला प्रिय का वियोग दुःसह होता है—

अनन्यसाधारणपुण्यशालिनां फलन्त्ययत्नेन मनोरथद्रुमाः—

असाधारण पुण्यशालियों के मनोरथ वृक्ष विना यत्नही फलते हैं—

सत्त्वमुन्नतपदात्पतितानां विद्यते न महतामपि नूनम्—

ऊंचे पद से गिरे हुये बड़े लोगों का भी सत्त छुट जाता है—

महाकवि श्रीहर्ष की उक्ति नैषध से संगृहीत

पहिले के आगे से ॥

सन्दर्भ्यते दर्भगुणेन मल्लीमाला न मृद्वी भृशकर्कशेन ।

मालती की माला जो अत्यन्त कोमल होती है कुशा को बटकर कोई नहीं गुथता किन्तु जैसी मालती कोमल होती है वैसाही सूत उसके योग्य है—

झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः—

चतुर लोग दूसरे के मन का भाव चट जान जाते हैं—

कर्मकः स्वकृतमत्र न भुङ्क्ते ॥

यहां इस संसार में अपने किये का फल कौन नहीं भुगतता—

तं धिगस्तु कलयन्नपि वाञ्छामर्थिवागवसरं सहते यः ॥

ऐसे दानी को धिक्कार है जो मांगने वाले की इच्छा जानकर भी प्रतीक्षा करता है कि मुह खोल कर मांगे तो दें—

याचमान मन मानसवृत्तेः पूरणाय वत जन्म न यस्य ।
तेन भूमिरतिभारवतीयं न द्रुमैर्न गिरिभिर्न समुद्रैः ॥

याचक की कामना पुरै देने को जिस्का जन्म नहीं है उसके बोझ से यह धरती जैसी गरुई है उतनी बड़े २ वृक्ष पहाड़ और समुद्रों से नहीं—

किं ग्रहा दिवि न जाग्रति ते ते भास्वतस्तु कतमस्तुलयास्ते—

आकाश में क्या इतने ग्रह और तारे नहीं प्रकाश करते किन्तु सूर्य की तुलना उन्में किसी में नहीं है—

आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः—

कुटिल के साथ सिधाई नीति विरुद्ध है—

दुर्जया हि विषया विदुषापि—

पांचों इन्द्रियों के विषय ऐसे प्रबल होते हैं कि विद्वान् भी उन्हे नहीं जीतसक्ते—

आकीटमाकैटभवैरितुल्यः स्वाभीष्टलाभात् कृतकृत्यभावः ।
भिन्नस्पृहाणां प्रति चार्थमर्थं हिष्टत्वमिष्टत्वमपव्यवस्थम् ॥

एक भुनगे से लेकर विष्णु तक को अभीष्ट लाभ से अपनी २ दशा के अनुकूल प्रसन्नता एकसी होती है—संसार के लोगों की रुचि भिन्न २ है इसलिये क्या किसे इष्ट है क्या अनिष्ट इसकी व्यवस्था का कोई ठीक क्रम नहीं है—एकही वस्तु जो एक को अनुकूल है वही दूसरे को प्रतिकूल होसक्ती है—

मुग्धेषु कः सत्यमृषाभिलाषः —

उत्तम को सच्च झूंठ का विवेक कहां ।

विवेकधाराशतधौतमन्तः सतां न कामः कलुषीकरोति—

विवेक की सौ धारा से जिन्का मन धोया हुआ है उन के मन को बुरी वासना मैली नहीं कर सक्ती—

हिषन्मुखेपि स्वदते स्तुतिर्या तन्मिष्टता नेष्टमुखेप्रमेया ॥

तारीफ शत्रु के मुख से भी भली लगती है तब मित्र के मुख से वह कहां तक मन को सोहावनी होगी इसका ओर छोर नहीं है—

नामापि जागर्ति हि यत्र शत्रोस्तेजस्विनस्तं कतमाः सहन्ते—

शत्रु का नाम भी जहां विद्यमान है उसे कौनसा तेजस्वी सहेगा—

कृच्छ्रेप्यसौ नोज्झति तस्य सेवां सदा यदाशामवलम्बते यः—

जो सदा जिस्की आशा में रहता है वह विपत पड़े पर भी उस्की सेवा नहीं छोड़ता—

पिपासुता शान्तिमुपैति वारिजा न जातु दुग्धान्मधुनोधिकादपि—

जल की प्यास कितनाही दूध और शहद घोल कर पिओ नहीं बुझती—

मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता—

कम और सार वचन बोलना ही वचनचातुरी है—

जनः किलाचारमुचं विगायति—

शिष्टाचार को छोड़ देने वाले की सब लोग निन्दा करते है—

अकाञ्चनेऽकिञ्चननायिकाङ्गके किमारकूटाभरणेन न श्रियः—

जिसे सोने का गहना मयस्सर नहीं उस नायिका के अङ्ग की शोभा क्या पीतल के गहनों से नहीं होती—

पृषत्किशोरी कुरुतामसङ्गतां कथं मनोवृत्तिमपि द्विपाधिपे ॥

हरनी अपना अनुराग गजराज पर क्यों कर प्रगट कर सक्ती है—

मृडालतन्तुच्छिदुरा सती स्थितिर्लवादपि त्रुट्यति चापलात्किल—

सती पतिव्रताओं को सतीत्व का निर्वाह बड़ा नाजुक है जो ज़रीसी चापलाई में टूट जाता है—

निषिद्धमप्याचरणीयमापदि क्रिया सती नावति यत्र सर्वथा।
घनाम्बुना राजपथे हि पिच्छले क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते ॥

जहां सदाचरण से काम चलते न देखे तो विपद पड़े पर निषिद्ध आचरण से भी अपना निर्बाह करे—बरसात में जब सड़कों पर बिछलहर हो जाता है तो बुद्धिमानी यही होगी कि सकेती गलियों में चल अपना निबाह करे—

चकास्ति योग्येन हि योग्यसङ्गमः ॥

योग्य ही के साथ योग्य का साथ शोभा देता है—

जनाननेकः करमर्पयिष्यति—

सब लोगों के मुह में कौन हाथ दे सक्ता है अर्थात् एक साथ सब लोग जब किसी की बदनामी करने लगे तब किन्हें २ रोके—

पित्तेन दूने रसने सितापि तिक्तायते—

जिस्की जीभ पित्त से कडुई है उसे मिसरी भी तीती मालूम होती है—

होली-धम्माड़ ॥

भारत के दुःख हरो कोई-
इस भारत में शूर बहुत थे-कहां सब जाय रहे सोई-
भारत के० १-
आर्यावर्त राज अंगरेज़ी-नहि क्षत्री वंश बचा कोई-
भारत के० २-
विद्या हीन भये बहु मूरख-वैर के बीज रहे बोई-
भारत के० ३-
पर उपकार कोऊ नहि जानै-आश्रम धर्म गये खोई-
भारत के० ४-
गो हिन्सा कोउ रोक न पायो-चहुंदिश आर्य रहे रोई-
भारत के० ५-
धर्म्म विचार रहित सब कोऊ-केहि विध जाय पाप धोई-
भारत के० ६-
निज सुख हेतु भूप परदेशी-लै गये धन सब घर ढोई-
भारत के० ७-

होली राग काफ़ी-

भारत में कोउ वैर करोना-टेक-
प्रेम अबीर उड़े भर झोरिन-द्वेष को भाव धरोना-
नेह के रंग से भरो पिचकारी-एक सो एक लरोना-
प्रीत की रीत हरो ना-भा० १
सत्य असत्य विवेक विचारो-धर्म्म से नेक डरोना-
शील सनेह दया धर धीरज-तामस ताप जरोना-
कुमति के कूप परोना-भा० २-
पर उपकार सदा जिय राखो-पीड़ित जीव करोना-
कर्म्म परायण हो निशबासर गाल बजाय मरोना-
पाप के सिन्धु तरो ना ? भा० ३-

सुन्दर सिक्षा शास्त्र की मानो–दुरमति ध्यान धरोना–
कहैं सुकुलेश परम हितकारी–कुल अभिमान भरोना–
कपट को भेष धरोना–भारत मे० ४–

शीलपालन ॥

राजर्षि भर्तृहरि ने लिखा है "शीलं परं भूषणम्" मनुष्य जैसा शील से शोभा पाता है वैसा हीरा पन्ना आदि किस्म २ के जवाहिरों से लसा हुआ नहीं–शील और वृत्त दोनों पर्याय शब्द हैं—वृत्त के माने हैं चालचलन और चालचलन अधिकतर समाज के वर्ताव से सरोकार रखता है तो शीलपालन का यही प्रयोजन हुआ कि समाज की जैसी रीति नीति और वर्ताव हो तदनुकूल सब को सदा प्रसन्न करता रहे–और जैसा कि शीलपालन वाले का समाज से परस्पर सम्बन्ध है इस लिये समाज की प्रसन्नता शीलपालन से है और शीलपालन में जो निरत हैं उन्हें समाज भी बदला चुकाने की भांत प्रसन्न रक्खे–

शील चाहो बनावटी हो चाहो स्वाभाविक और सच्चा समाज यत्न का प्रधान अङ्ग है–शील से केवल इतना ही प्रयोजन नहीं है कि समाज के बन्धे हुये क़ायदों पर अमल कर चलता रहे बस छुट्टी हो गई–ज़ाहिरदारी और कपट के पुतले अपने दांव पर चढ़ाय पावें तो ऐसा काटैं कि लहर न आवै विषधर सर्प के भी उपदेशक परमाचार्य पर समाज के कायदों की पाबन्दी करते हुये चार आंख होने पर ऐसा चुनाचुनी करैं और ऐसे चुब्ब से मिलैं कि कलेजा काढ लें मानों सज्जनता और साधुभाव का सोता उन के आकार और चेष्टा से निकल कर सब ओर फैल रहा है–यदि इसी का नाम शीलपालन है तो इस दांभिक सक्कार से हम उसे अच्छा मानैं गे जो जगत् में रूखा बेमुलाहिज़े दुःशील प्रसिद्ध है पर चित्त का विमल निष्कपट और सर्वजन हितैषी है–हां असलत्ता सभ्यता का दखल उस्में नहीं हुआ न कपट और चुना चुनी को पंख पसारने का मौका मिला है कि उसे अपने पन्थ में ला सके–इसलिये निश्चय हुआ कि निरी नुमाइश किसी काम की नहीं है कुछ तो सचाई और असलीयत का रहना बहुत ही आवश्यक है और जब तक ये दोनों नहीं

आये तब तक न हमी समाज के खुश रखने के वाइसहोंगे न समाज ही हमे प्रसन्न रख सकेगी—यदि कोई आप से अत्यन्त नम्रता पूर्वक मिले मीठी २ बातों में आप के गुणों की प्रशंसा करे पर इतना मालूम हो कि वह यह सब ऊपरी दिल से करता है तो यद्यपि सभ्यता के क्रम अनुसार संकोच में पड़ शीलपालन के लिये आप को उस्से भलमनसाहत के साथ वर्त्तना पड़ेगा पर सचाई जो उस्के वर्ताव में नहीं पाई जाती इस्से कुछ खटक मन में बनी ही रहेगी—हज़ार २ खूबियां आप में हैं पर बिना दिल की सचाई के चूनापोती कबर की तरह सब निष्फल हैं—तस्मात् यह उन की बड़ी भूल है जो शील-पालन को केवल शिष्टाचारमात्र समझते हैं—वरन जो वास्तव में शीलवान् हैं और जो जीसे शीलपालनव्रत के धारण करने वाले हैं उनसे किसी को कभी उद्वेग होता ही नहीं—बाबा तुलसीदास का यह सिद्धान्त ऐसों ही के लिये है—

"तुलसी या संसार में सब सों मिलिये धाय ।
ना जानी केहि भेख में नारायण मिल जांय ॥"—

ऐसे लोग ऊपर से चाहो कैसी ही रुखाई से बरतैं पर भीतर से दाखरस के समान कोमल और सरस रहते हैं ॥

उपरि करबालधाराः क्रूराः सर्पा भुजङ्गमपुङ्गवाः ।
अन्तः सान्द्राद्राक्षादीक्षागुरवो जयन्ति केपि जनाः"

सच्चे शीलवान् उदारचरित्र वाले को सब अपने ही हैं पराया तो उन को कोई हुई नहीं—

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥"

इस गुण से अधिक प्रशंसनीय दूसरा और कौन गुण होसक्ता है जिस्से हम बिना परिश्रम और बिना एक पैसा भी पास का गंवाये दूसरे को प्रसन्न कर उस्का चित्त अपनी मूठी में करले सक्ते हैं—पृथ्वी के सब पदार्थों में यह अ-नमोल द्रव्य है जो केवल चित्त की स्वच्छता और सचाई से प्राप्त हो सक्ता है धन और विद्या के उपार्जन में बड़ा परिश्रम होता है इसलिये सब लोग उसे सहज में नहीं पासक्ते पर शीलपालन के अधिकारी सभी हैं और आभिजात्य

या खानदानी होने की तो यह एक अनोखी पहचान है—बल्कि यों कहिये कि शिराफत की कुंजी है अच्छे कुल में जन्म पाकर शीलवान् न हुआ तो उसे कुलीन कहते किसकी जीभ न संकुचाती होगी—धन केवल अपने ही लिये सुख का कारण है पर शीलपालन सर्वसम्मत और चित्त में "यत्परो नास्ति,, सन्तोष पैदा करता है—स्त्रियों के लिये शील ही एकमात्र सब को वस कर लेने का अद्भुत लटका है "शीलेन प्रमदाः" स्त्रियां जिन्में चांचल्य एक स्वाभाविक दोष है उन के लिये शील ही उस दोष के ढांपने का और शालीनता तथा लज्जा सम्पादन का उपाय है इसी प्रयोजन से माघ कविने लिखा है—

"अन्यदा भूषणं पुंसां क्षमा लज्जेव योषितः ।
पराक्रमः परिभवे वैयात्यं सुरतेष्विव"—

हमने पहले लिखा है शील और वृत्त साथ २ चलते हैं बल्कि शीलपालन सद्वृत्त होने का प्रधान अंग है और मनुष्य में सुपात्रता न केवल विद्या से होती है बरन सद्वृत्त भी चाहिये इस परम्परा सम्बन्ध द्वारा शीलपालन ही सब की नेव है जिसपर सद्वृत्त और सुपात्रता के ऊंचे महल खड़े किये जा सक्ते हैं—सारांश यह कि जो हम अपने को लायक़ बनाया चाहें और बड़प्पन की प्रतिष्ठा पाने की लालसा रखते हों तो शीलपालन के लिये अवश्य यत्न करें जो लायक़ और बड़े होने की पहिली सीढ़ी है—सर्वसम्मत और हरदिलअज़ीज जैसा शीलवान् होसक्ता है वैसा धनवान् विद्वान् और सुजान नहीं बरन इन को भी अपने लिये शीलवान् का मुंह जोहना पड़ता है इस लिये सुशील सब से अधिक बलवत्तर और माननीय है—एस० पी०—

अब इस समय ब्राह्मणों को क्या कर्त्तव्य है ॥

इस अंगरेज़ी राज्य की स्वच्छन्दता और स्वास्थ्य में जब कि सब आगे बढ़ रहे हैं और अपनी २ जाति या जथा का कुछ न कुछ अवश्य उपकार सोंच रहे हैं—ब्राह्मणजाति आगे बढ़ने की कौन कहे नित्य २ अवतर और रद्दी होती जाती है—यह तो इन के पूर्वपुरुष ऋषियों का न जानिये कैसा उग्रतपोबल था कि हज़ारों वर्ष बीतगये फिर भी उन के पुण्य से इन का बेड़ा पार होता

ही जाता है—जैसा कोई बड़े करोड़पती महाजन का दिवाला निकलजाय तो उसे बिगड़ते २ दो तीन पुश्त सौ पचास वर्ष सहज में बीत जाता है—वही हाल हमारे ब्राह्मणों का है जो सहस्त्रों वर्ष से बराबर गिरते ही आते हैं—हींग निकल गई केवल महक अकेली बच रही है जिन का पहिले कासा ब्रह्मतेज अब किस्सा कहानी और सपने कीसी बात होगई—फिर भी उन महात्मा ऋषियों ने आगे होनहार अपने बाल बच्चों के लिये ऐसी पोढ़ीनेव जमादिया है कि हिलाये नहीं हिलती और बिला मेहनत हद्द से ज़ियादह मिलने की हिकमत दक्षिणा जिसने इन्हें इस नीचदशा को पहुंचा सब तरह पर मिट्टी का लोंदा बना दिया तब भी इन का दामन नहीं छोड़ा चाहती—सच मानिये यह केवल दक्षिणा का लोभ है जिस्से ये सब अपना ब्रह्मतेज खो बहाय सर्वथा अकर्मण्य महाकदर्य हीनदीन विद्यागुणरहित होगये तो अब आगे बढ़ने के लिये दक्षिणा से घिन का होना पहिली बात है—हम देखते हैं तो ब्राह्मणों में जो भिक्षुकी छोड़ कोई दूसरे व्यवसाय की ओर झुक पड़े हैं वे सब तरह की प्रतिष्ठा और ऊंची पदवी के छोर तक पहुंच गये हैं—वही प्रतिग्रह महाविष ने जिन की रग २ में प्रवेश कर लिया है वे दोही एक पुश्त में अपने पूर्वपुरुष की सब योग्यता प्रतिष्ठा पाण्डित्य और ब्रह्मवर्चस से हाथधो महानिकम्मे कदर्य और दासानुदास होगये—

दूसरी बात ब्राह्मणमात्र का एकपङ्क्ति में सहभोजन इन के बड़े उपकार के लिये है—कुलीनब्राह्मण जो व्रत्ताध्ययन सम्पन्न हों अर्थात् जिन्में विद्या तथा दूसरी प्रकार की योग्यता हो और जो आचार विचार में भी न बिगड़े हों ऐसे ब्राह्मण चाहो जिस जाति के हों किन्तु अपनी २ श्रेणी में कुलीन हों उन सबों की सखरी और निखरी में एकपङ्क्ति होजाने से बड़ी ही भलाई है—कुलीन ब्राह्मणों में परस्पर "यौनिकसम्बन्ध„ लड़की लड़कों का आपस में व्याह शादी भी होने लगे तो बाल्यविवाह की बहुत दूरतक जड़ कटजाय—किसी २ जाति के ब्राह्मणों में कुलीनों का मण्डल जैसा कान्यकुब्जों में षट्कुल हैं इतना कम है कि पैदा होते ही लड़की लड़के का सम्बन्ध पक्का होजाता है इसलिये कि पीछे से कुलीन घराने की लड़की को कुलीन घर का लड़का न मिलेगा—यदि कुलीनों का मण्डल बढ़जाय तो क्यों यह विपत्ति भोगना पड़े—और सङ्कुचित

समूह के कारण जो कूर को हूर हूर को कूर मिला दिये जाते हैं जिस्से जन्म-पर्यन्त दोनों की ज़िन्दगी ही फीकी पड़जाती है सो भी न हो उपयुक्त वर कन्या का संयोग हुआ करे-हमारे इस कहने पर लोग हसेंगे और जीट उड़ावेंगे सही किन्तु हमारा यह कहना किसी तरह शास्त्रविरुद्ध नहीं है न युक्ति विरुद्ध है-पर यह तो हम बहुत दूर की हांक गये और एकबारगी उछलकर सब के ऊपर चढ़जाना चाहा क्रम २ से चढ़ते तो कदाचित् एक दिन ऐसा हो-जाना भी असम्भव न होता इसलिये पहिले सहभोजन की प्रथा तो निकले विवाह सम्बन्ध आप ही होने लगेगा-यद्यपि कनौजिये इस बातों के लिये बद-नाम हैं कि इन के कारण सहभोजन की प्रथा नहीं चलने पाती-किन्तु गुज-राती और नागर ब्राह्मणों से ये कनौजिये फिर भी अच्छे जैसा दम्भ गुजरा-तियों में फैला हुआ है उस का दशांस भी इन्में नहीं है—यद्यपि देश में जो गुजराती हैं वे तो विलाइत तक हो आये हैं पर यहां इन प्रान्तों में जो आ बसे हैं उन का दम्भ और ढकोसला देखते ही बनता है-

विलाइत जाने की चरचा चलपड़ी है तो इस अवसर पर एक बात हम और कहा चाहते हैं-यद्यपि जैसा प्रवाह चलनिकला है उसके अनुसार हमारा यह कहना निरा खुराफ़ात मालूम होगा अस्तु--हम यह कहा चाहते हैं कि ब्राह्मणता जो इस नई रोशनी के प्रकाश में निरा पुरानाढर्रा केवल आभास-मात्र बच रहा है उसे कायम रखना ही और ब्राह्मणों को हिन्दुस्तान का सर्वस्व और हिन्दूधर्म का जीवन मानते हो तो विलाइतगमन को कभी मनमें आदर न दो न बङ्गाल और दक्षिण के कुलीन ब्राह्मणों की पतितसमाज में दाखिल होने का इरादा रक्खो—सोशलकानफ्रेंस के अगुआ दोचार धूर्त्त इसके लिये बड़ा प्रयत्न कर रहे हैं तुम्हें हर तरह बहकाते हैं किन्तु ख़बरदार कभी उनके बहकाने में न आना ये सब स्वच्छन्द आहार विहार के कारण समाज से च्युत कर दिये गये हैं तो अब लागमें भर अपना नककटा पन्थ बढ़ाने के लिये हर तरह की कोशिश करते हैं-अब तक इतने लोग विलाइत से लौटकर आचुके मुल्क के सच्चे दोस्त एक भी न पाये गये बहुधा तो कोढ़ में खाज की भांत एक मेम साथ लेकर लौटते हैं नहीं तो पल्लेदरजे की शराबख़ोरी तो कहीं गई ही नहीं--बन्दर कीसी शकल मिज़ाज में अंगरेज़ी ढङ्ग की तहज़ीब जगह

किये हुये देशी चिड़िया मरट्ठी भाखा की भांत "काबिल गये मुगल हो आये बोलैं बोल पठानी „ बाबू या लाला कहना पसन्द नहीं आता मिस्टर छोड़ अगर देशी पदवी या अलकाब उनके नामके साथ जोड़ा जाता है तो इतक इज़्ज़त होती है–दो वर्ष विलाइत में रहकर लौटे क्या कि हम सब लोग उन की नज़रों में जानवर से भी बत्तर होगये–किसी लायक़ के नहीं हुये न कोई ऐसी करतूत कर दिखायी कि जिस्से हम अपने भाग्य सराहते पर हिन्दुस्तानी रहन सहन से नफरत अलबत्ता पैदा होगई–हम लोग व्यर्थ उन्हें अपने समाज में मिलाने की चेष्टा करते हैं उन्हें तो यह पसन्द आता ही नहीं कि हम साहब लोग होकर फिर हिन्दुस्तानी कहलायें विहिश्त में दाख़िल हो फिर खन्दक में गिर जहन्नुम रसीदा हों–इस दशा में ब्राह्मणजाति का विलाइत जाना दीनदुनिया दोनों से हाथ धो बैठना है–मुल्क की भलाई और कौम की बेहतरी के लिये विलाइत जाते हैं यह केवल बहाना मात्र है वास्तव में महाकपटी धूर्तलम्पटों की एक जथा अलबत्ता देश में जुड़ती जाती है–

तीसरी बांत जिस्से पूर्वजऋषियों का उद्दण्ड ब्रह्मवर्चस फिर नये सिरे से तरोताज़ा होसक्ता है वह बाल्यविवाह महापाप से देश का उद्धार करना है–इस्के लिये पहली बात जिस्से बाल्यविवाह में कुछ रोक होसक्ती है गौने की रसम का उठा देना है—कात्यायन आश्वलायन गोभिल आदि गृह्यकारों को आदि से अन्त तक उलट डाला गौने का विधान कहीं न पाया न बाराहमिहर आदि प्रामाणिक ज्योतिषियों के ग्रन्थों में इस्का मुहूर्त पाया जाता है—सिवा मूर्खचिन्तामणि के किसी प्राचीनग्रन्थ में इस्का पता नहीं है न इस्के लिये कोई पद्धति ब्राह्मणों की पोथियों में पाई गई—दुर्दान्तयवन जिन की भय से ये सब कुरीतियां चलाई गईं उन का अत्याचार अब न रहा तो इन कुरीतियों को तोड़ देने में कौन सी हानि है–विवाह के ३ या ५ वर्ष उपरान्त गौना रक्खा गया है सो क्यों? जो समय गौने का है उसी में विवाह हुआ करे तब भी बाल्यविवाह में कुछ रुकावट होजाय–बहुतों ने सिर पीटा पर सर्कार ने सहवासबिल को पासकर कानून करीदिया और ऐसी विभीषिका लगा दिया कि यदि कोई समझदार अक्लिमन्द कौम होती तो अब तक चैतन्य होजाती पर हिन्दुओं की बेहया बेअक्ल घस्सड़ कौम काहे को कभी चेतने वाली है–

तो गवर्नमेंट से अब यह प्रार्थना है कि सहबास के कानून में उमर की कैद १२ से १४ बढ़ा दीजाय तथा और जहां तक सख्ती कानून के द्वारा संभव हो सर्कार अपनी ओर से न चूकै बल्कि हम तो यह भी कहेंगे कि २० या २२ वर्ष के पहले लड़के का और रजोदर्शन के पूर्व लड़की का व्याह करने वाले पर सख्त जुर्माना कायम किया जाय—इस लिये हम अपने ब्राह्मण भाइयों को भी सुझाते हैं कि तुम हिन्दूजाति के पेशवा और राह दिखलाने वाले हो तुम पहले बाल्यविवाह रोको तो कहां तक दूसरों पर इसका असर न पैदा हो—

कालो जगद्भक्षकः ॥

इलाहाबाद में महाजनी के खम्ब रोज़गार का मर्म समझने में अद्वितीय खत्री वंश के पताका लाला मनोहरदास ८७ वर्ष की उमर में २४ फरवरी को इस असार संसार से मुंहमोड़ सुरधाम सिधार गये—उक्त लाला साहब पुरुषार्थ और अपने निज बाहुबल से आदमी कहां तक कर सक्ता है इसके नमूना थे—इनके पिता जै हज़ार इन्हें हिस्सा बांट में दैगये थे ये उसका चौगुना पचगुना लाख कर छोड़ गये—रोज़गार में घाटा किसे कहते हैं कभी जाना ही नहीं व्यौपार में यहां तक कुशल थे—मिट्टी छूते सोना होने की कहावत इन्हीं के साथ सुघटित होते देखी गई—कुटुम्बी ऐसे थे कि लोग एक नाती पोते को तरसते हैं यहां नाती पोते परोतों की गिनती दरजनों में की जाती है—

यदि रामा यदि च रमा यदि तनयविनयगुणोपेतः ।
यदि तनये तनयोत्पत्तिः सुरवरनगरे किमाधिक्यम्—

लाला साहब का प्राणान्त भी बहुत ही चैतन्य और शान्ति के साथ हुआ अन्त समय में पुण्य दान भी बहुत अच्छा किया ३० हज़ार असपताल के लिये देगये लाख रुपया घाट बनवाने के लिये अलग रखगये हैं—ऐसे भाग्यवान् पुरुष संसार में कम उपजते हैं किन्तु अफ़सोस काल किसी को नहीं छोड़ता—

"कालो जगद्भक्षकः"—

नये तरह का जनून ॥

थोड़े दिनों से हमारे मुल्क में नये तरह का जनून पैदा होगया है और इन जनूनियों की संख्या अब इतनी अधिक होगई है कि इनका एक फिरका होता जाता है—अंगरेज़ी तालीम के साथ ही साथ यह उपज खड़ा हुआ है और इस जनून का नाम संशोधन या "रिफारमेशन" है—इसका सब से ज़ियादह जनून एडिटरों को होता है जो दीवानों की तरह मन आया सो बक्का किये कोई चाहो मानो चाहो न मानो कुछ उसका असर हो या न हो जो सिर सवार हुई सो हुई—शुभचिन्तक लोग कितना ही मना करते हैं कि सुअरों के सामने अपना कीमती मोती न फेंको इन्हों ने राणों के भांत जो एक चरखा शुरू किया ओटते ही जाते हैं कब किसी की सुनते हैं—यह जनून आर्यसमाजियों को भी किसी से कुछ कम नहीं हैं कोई कितना ही कहे इन्हें जो झक्क सवार है सो कभी उतरे ही गी नहीं कि वेद अपौरुषेय और स्वतःप्रमाण हैं पुराण सब गप्प हैं वेद में यावत् सायेंस और विज्ञान सब उसके नस २ में भरे हैं—यों तो पेटारथू न जानिये कितने जनूनिये प्रीचर और उपदेशक के नाम से प्रसिद्ध हैं कौन उन की सुनै जैसा किसी को गोरक्षा का जनून सवार है कोई टेम्परेन्स को यावत् संशोधन का हेतु मानता है किसी को औरतों की तालीम सवार है कोई विधवाओं के विवाह के नशे में गड़गाप है—हम अपना एक निराली ही तान गा रहे हैं कि कमसिनी का व्याह मुल्क से उठा दिया जाय बस देश उन्नति के शिखर पर एकबारगी फलांग मार उछल कर चढ़ जांय—किसी सत्यानासी को विलाइतयात्रा सवार है किसी ने होटलों में बैठ अंगरेज़ों का जूठा खाने ही में मुल्क को आज़ाद करने की उपाय सोंच रक्खा है—किसी का औरतों की परदेदारी शिकस्त करने पर कस्द है—कितने नराधम ऐसे भी उपज खड़े हुये हैं जिन्हों ने संशोधन ही को अपने लिये रोटी कमाने की एक हिकमत मानरक्खा है किसी समाज या कमेटी के सेक्रेटरी अथवा मेनेजर बन चन्दा उगाह २ निगलते रहे न जानिये कै हज़ार रुपये पचै डाले और डकार तक न आई—" अगस्त्यं कुम्भकरणं च भीमं च बडवानलम्"—कानग्रेस वालों का जनून सब से महा अधिक असाध्यरोग है जिस्के दूर होने की कोई उपाय हुई नहीं कर्मचारियों ने हज़ार सिर धुना कि

इस विषवृक्ष की जड़ उखाड़ डालें पर यह दिन २ पुष्ट पड़ता जाता है और अब तो अजर अमर होगया—

महात्मा ईसा का कहना कि हम बासुरी बजाया तुम न नाचे—इन जुदी २ धुन वाले संशोधकों का दल इकट्ठा किया जाय तो कई लाख आदमी निकलेंगे जो अपने २ जनून को पूरा करने में तन मन से तत्पर हैं कोई दूसरा देश होता तो अब तक न जानिये क्या होजाता यहां "भैंस के आगे बीन बाजै भैंस खड़ी पगुराय" जो चाहो सोहो इन्हे पागुर करने से काम जिसने मुह चीरा है झखमारेगा खाने को देहीगा "जान को देत सुजान को देत अजान को देत सो तोहू को दे है"—एक वह कौम है कि साधारण से सुई और दियासलाई के कारखाने वाले करोड़पती हैं साल में लाखों कमाते हैं—स्याही का कारीगर स्टीफेन की ओर से एकहज़ार माहवारी तनखाह के कई आदमी नौकर हो खाली इस लिये भेजे गये हैं कि ये लोग शहर २ घूम इस बात की जांच करते रहें कि उन की पेटंट स्याही की नकल कोई न बनाने पावे न जानिये कि लाख साल की आमदनी एक स्याही के कारखाने से है—ऐसे २ हज़ारों किस्म के कारखाने इङ्गलेण्ड जरमनी फ्रान्स और बेलजियम वालों के हैं—वही हम हैं जिन्हे लड़की लड़कों के व्याह से इतनी फुरसत नहीं मिलती कि दूसरा काम करें बस इसी के लिये जन्में हैं कि गन्दी सृष्टि बढ़ाते ही जांय औलाद को तालीम वगैरह की तो चर्चा ही क्या उन के लिये पेटभर अन्न न मुहैया करसकें बला से तन ढापने को कपड़ा न सम्पादन कर सकें कोई हर्ज़ नहीं सन्तान को कुंवारा न रहने दें जिस्में सृष्टि बढ़ती रहे और अनुत्साही मुर्दा दिल निष्पुरुषार्थियों का दल जुड़ता जाय—हज़ार मेहनत मशक्कत के बाद स्त्रीपुत्र को अन्न वस्त्र से सन्तुष्ट रखना और काम काज में डेढ बीते की नांक न कटने पावे जहां सपूती का छोर है वहां संशोधकों को अपना व्यर्थ सिर पचाना जनून नहीं तो और क्या कहा जाय—

अंगरेज़ी राज्य के इस कड़े शासन में जब हम सब ओर से दबे हैं और चारो ओर से ऐसे कस दिये गये हैं कि हिल नहीं सक्ते—आमदनी का कोई द्वार खुला न रह गया यावद्वस्तु की गिरानी से खर्च इतना बढ़ गया कि किसी तरह पेटभर अन्न मिलता जाय रूखी सूखी खाकर बालबच्चों को पालसकें सानों

समस्त सपूती का निचोड़ आगया—ऐसी हालत में भी जब हमने न चेता तो अब कब चेतैंगे—दूसरे यह कि गवर्नमेण्ट के कानून की जागतीज्योति सोह-हो कला पूर्ण जगमगा रही है—न्याय और इनसाफ़ सब के लिये एकसा खुला है शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं किसी पर किसी का अन्याय और अत्याचार नहीं चल सक्ता एक २ आदमी आज़ाद और स्वच्छन्द हैं—ऐसा सुबीता पाकर जब हमने कुछ न किया तब सिवा इसके और क्या कहा जाय कि हमारी बराबर घस्सड़ क़ौम दूसरी कोई नहीं है—आगे क़दम बढ़ाने को कौन कहे ऐसे २ सामाजिक और मज़हबी क़ैद पीछे लगा दिये गये हैं जिन का परिणाम ईर्षा द्रोह लड़ाई झगड़ा और आपस की फूट के सिवा और कुछ हो ही नहीं सक्ता जिस्से कौमीयत या जातीयता का भाव हमारे में कभी आही नहीं सक्ता—अच्छी तरह जो गवाही दे रहा है कि अमुक बात हमारी समाज में बड़ी बुराई की है उठा दीजाय तो सिवा फाइदे के कभी नुक़सान हई नहीं पर मौका आने पर हम तुम्हारा मुंह देख रहे हैं तुम हमारा इतनी हिम्मत नहीं है कि राह दिखलाने वाले अगुआ बन उस बुराई को तोड़ सकैं मसल है " और को लुखरी सगुन बतावे आप कुत्तों से चियावे"—पढ़े लिखे बड़े आली दिमाग़ काम पड़े तो कहो ऐसा लेक्चर झारैं कि पक्के घंटेभर बाद दमलें किन्तु समय पर लेक्चर में कही हुई बात को करके दिखाय देने में दुमदबाय कोसों दूर भागैंगे—करते आप हैं पर उस भूल का दोष किस्मत होनहार या संस्कार को देते हैं—

परम सुन्दरी कन्या साक्षात् देवी की मूर्त्ति जिस्की क़ीमत दस हज़ार से कम नहीं होसक्ती उस्के योग्य लड़का भी पढ़ा लिखा सुशील खुशनसीब सब तरह पर उपयुक्त है पर नाड़ीवर्ग न बना शादी फिस्क कर दीगई—या बना भी तो हाड़ अच्छा नहीं है सम्बन्ध नहीं होसक्ता—हाड़ का अच्छा महा उजड्ड छत्तीसी गुन बनता भी है उस रूपवती सुन्दरी के साथ व्याह दिया गया व्याह के महीने ही भर बाद लड़का यमलोक का बटोही होगया—अब इस समय संस्कार और किस्मत को दोष दे सिर धुनते हैं अपनी भूल को कभी एकबार भी न पछतांयगे न अपनी गन्दी समाज को कुछ दोष देंगे—कितने ऐसे सामाजिक काम हैं जो केवल स्त्रियों ही के आधीन हैं और स्त्रियों की जैसी हीनदशा हमारे देश में है वह विदित ही है ये संशोधक लोग बाहर चाहो जितना जोश और जनून दिखलावें घरके भीतर इन के उपदेश और

वक्तृता की गन्ध भी नहीं पहुंचने पाती—तस्मात् हमे तो यही जानपड़ता है कि हमारे देश में संशोधन केवल सपने में बरोंने के समान है कोई कितना ही सिर खाली करे होना जाना कुछ नहीं है इसीलिये हम कहते हैं हमारे देश में एक नये तरह का जनून पैदा होगया है—

महाकवि विल्हण ॥

यह कवि काश्मीर में हुये हैं विक्रमाङ्कदेवचरित १८ सर्ग का महाकाव्य इन की प्रधानकविता है—विक्रम चालुक्यवंशोद्भव करनाट देश के एक प्रसिद्ध राजा हुये हैं जिन की सभाके यह प्रधानपण्डित थे—विक्रमाङ्कचरित में इन्हों ने अपने को "त्रिभुवनमल्लदेव विद्यापति काश्मीरकभट्टविल्हण" लिखा है—विक्रमाङ्कचरित को इन्हों ने बाणभट्टकृत थानेश्वर के राजा हर्षवर्द्धन के हर्षचरित्र के ढंग पर लिखा है—बाणभट्ट का हर्षचरित्र गद्यरचना में है पर विल्हण का विक्रमाङ्कचरित पद्य में लिखा गया है—यद्यपि बाणकी लोकोत्तर गद्यरचना को इन की कविता नहीं पाती तौ भी वैदर्भी रीति जिस्में इन्हों ने अपनी कविता किया है दोयम दरजा इस्का अवश्य कायम किया जासक्ता है—इस लिये कालिदास भवभूति भारवि जयदेव प्रभृति यदि प्रथमश्रेणी के कवि समझे जांय तो विल्हण को द्वितीय श्रेणी के कवि होने में तो कोई सन्देह ही नहीं है—गौड़ी और पांचाली काव्य की दो रीतियों से वैदर्भी रीति को इन्हों ने अधिक उत्तम माना है जिस्की प्रशंसा में इन का यह पद्य यथार्थ में वैदर्भी रीति को सरस्वती की उपयुक्त जन्मभूमि प्रशंसा वादमात्र नहीं है—

अनभ्रवृष्टिः श्रवणामृतस्य सरस्वती विभ्रमजन्मभूमिः ।
वैदर्भरीतिः कृतिनामुदेति सौभाग्यलाभः प्रतिभूः पदानाम्—

रीतियों में वैदर्भी गुणों में प्रसाद ये दोनों वास्तव में काव्य के जीवन हैं—प्रसाद ओज माधुर्य काव्य के तीनों गुणों का वैदर्भी गौणी पांचाली तीनों रीतियों को विस्तार के साथ हम अपने आगामी किसी नंबर में दिखलावेंगे—कदाचित् किसी समय विल्हण के काव्य का अधिकप्रचार रहा हो पर इस समय तो कोई इन का नाम तक नहीं जानता—

किसी २ का यह भी मत है कि यह वही विल्हण हैं जो चोरकवि के नाम से प्रसिद्ध हैं जिन्हों ने चौरपञ्चाशिका नाम का छोटासा काव्य ५० श्लोक का बनाया है जिस्का यह अन्तिम पद्य है—

अद्यापिनोज्झतिहरःकिलकालकूटं कूर्मोबिभर्त्तिधरणींखलुपृष्ठकेन ।
अम्भोनिधिर्वहतिदुःसहवाडवाग्निमङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति॥

ऐसा प्रसिद्ध है कि विल्हण गुजरात के राजा वीरसिंह की राजकुमारी चन्द्रलेखा के अध्यापक नियत हुये थे पीछे से यह उस्पर आसक्त हो गान्धर्व-विवाह के क्रम पर उसे इन्हीं ने अपनी स्त्री कर लिया--इस बात के प्रगट होने से वीरसिंह क्रोध में आय विल्हण को सूली पर चढ़ा देने की आज्ञा की-राह में जल्लाद जिस समय सूली देने के लिये इन्हें लिये जाते थे अपनी प्रियतमा राजकुमारी के सौन्दर्य वर्णन में ५० श्लोक विल्हण ने कहे इन की अद्भुत कवित्वशक्ति की यह खबर प्राय वीरसिंह ने इन को जान बख्श दी और राजकुमारी चन्द्रलेखा को भी देडाला--यदि यह सब सत्य है तो कालिदास आदि प्रसिद्ध कवियों की प्रतिभा से भी इन की कवित्वशक्ति आशुकविता में बहुत चढ़ी बढ़ी कहना चाहिये क्योंकि जब यह मालूम होगया कि थोड़े समय के उपरान्त शूली के द्वारा हमारा प्राणान्त किया जायगा उस समय तक इन की प्रतिभा में किसी तरह की त्रुटि न हुई और ऐसी सरस कविता का जन्म हुआ तो निस्सन्देह इनकी अद्भुत कवित्वशक्ति सब से अधिक सराहने योग्य है--विक्रमाङ्कचरित के अठारहवें सर्ग में विल्हण ने अपना भी संक्षिप्तवृत्तान्त दिया है—जिसमें इन्हों ने अपनी उत्पत्ति की जन्मभूमि काश्मीर की पुरानी राजधानी प्रवरपुर जो वितस्ता अर्थात् झीलम और सिन्धुनदी के सङ्गम पर थी उससे गव्यूति ३ मील की दूरी पर खोणमुख नाम का एक छोटासा ग्राम लिखा है-कौशिकगोत्री मध्यदेशी ब्राह्मणों के कुल में अपने को ठहराया है-अपने प्रपितामह मुक्तिकलश को और पितामह राजकलश को इन्हों ने उस समय में काश्मीर के प्रसिद्ध अग्निहोत्री और वेदपाठियों में लिखा है और तातचरण ज्येष्ठाकलश को प्रसिद्ध वैयाकरण महाभाष्य के तिलककार लिखा है-इन की मा का नाम नागदेवी था—समग्र षडङ्ग वेद भाष्यान्त व्याकरण और अलङ्कारशास्त्र में इन्हों ने अपने को पूर्णविद्वान् लिखा है बल्कि श्रवण सुभगा साहित्यविद्या को इन्हों ने अपना प्राण ठहराया है—

"साङ्गोवेदः फणिपतिदृशा शब्दशास्त्रे विचारः, प्राणा यस्य श्रवणसुभगा सा च साहित्यविद्या । कोवाशक्तः परिगणयितुं श्रूयतां तत्त्वमेतत्प्रज्ञादर्शे किमिव विमलेनास्य सङ्क्रान्तमासीत् „—

ऐसा मालूम होता है कि इन दिनों के पण्डितों के समान विल्हण भी

वृत्तिकर्षित थे और तीर्थयात्रा के व्याज से उस समय के राजाओं के दरबार में घूमा किये—काश्मीर से सेतुबन्धरामेश्वर तक गये हैं—पहिला स्थान जहां यह आये मथुरा है क्योंकि अपनी यात्रा के वर्णन में पहिला मथुरा का वर्णन है—वहां से कन्नौज गये हैं कन्नौज से प्रयाग वहां से काशी उसके पूरब और आगे नहीं गये—ऐसामालूम होता है कि उस समय इन के जीते ही इन के काव्य का अच्छी तरह प्रचार होगया था—क्योंकि अपने काव्य की प्रशंसा में इन्हों ने यह श्लोक लिखाहै—

"ग्रामो नासौ न स जनपदःसास्ति नो राजधानी तन्नारण्यं न तदुपनं सा न सारस्वती भूः। विद्वान्मूर्खः परिणतवया बालकः स्त्रीपुमान्वा यत्रोन्मीलत्पुलकमखिला नास्य काव्यं पठन्ति"

वहां से चेदी के राजा कर्न से जामिले जिस की प्रशंसा इन्हों ने कालिंजर का विजेता कहकर किया है—फिर सोमनाथ की यात्रा को गये सोमनाथ से लौटकर धारापति भोज के यहां आने का इरादा किये थे पर रास्ता भूल गये इस कारण कोंकण देश में जा पहुंचे इसी से भोज प्रबन्ध में जहां भोज के समय के सब कवियों का नाम दिया है विल्हण का नाम नहीं पाया जाता—भोजराज का नामोल्लेख अपने काव्य में इन्हों ने इस तरह पर किया है—

"भोजः क्ष्माभृत्स खलु न खलैस्तस्य साम्यं नरेन्द्रैस्तत्प्रत्यक्षं किमिति भवता नागतं हा हतोस्मि—"

सोमनाथ के सम्बन्ध में गुजरात का वर्णन बड़ी निन्दा के साथ लिखा है इससे स्पष्ट है कि गुजरात के राजा वीरसिंह किस तरह इन के साथ पेश आये—कोंकण में कई तीर्थों की यात्रा के उपरान्त कल्यानपुर में गये जहां के राजा विक्रम ने इन का बड़ा स्वागत किया और विद्यापति की पदवी इन्हें दिया और वहीं रहकर विक्रमाङ्कचरित्र रचा—विल्हण विक्रमी सम्वत् के दसवें शतक और इसवी सन की ईसवीं सदी के अन्त और ग्यारहवीं के प्रारंभ में हुये—इन की कविता विक्रमाङ्कदेवचरित और चौरपंचाशिका काव्य के समस्त उत्कृष्टगुण भूषित हैं—जिन्में जैसा ही ओज वैसा ही प्रसाद गुण की भी कमी नहीं पाई जाती—ऐसा मालूम होता है कि विल्हण बड़े आज़ाद खयाल और अल्हड़ तबियत के थे घूमें बहुत से राजाओं के दरबार में पर दब कहीं किसी से नहीं बहुधा इन के पद्य ऐसे पाये जाते हैं जिन्में राजाओं को बड़ी रूखी सुनाया है इन की कविता का नमूना पहले हम दिखा चुके हैं—इति—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी 'प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० १६ सं० ५,६,७ } प्रयाग { जन०फर०मार्च १८९३

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०००— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १६ } प्रयाग { जनवरी, फरवरी, मार्च
संख्या ५-६-७ } { सन् १८९३ ई०

इण्डियाकौंसिल ऐक्ट के नये कायदे ॥

बहुत दिनों की आशा के उपरान्त इण्डियाकौंसिल ऐक्ट अब गवर्नरजेनरल गवर्नर और लफ्टिनेंटगवर्नर की कौंसिलों में पूरी तरह बर्ताव में आया चाहता है—मन्द्राज और बम्बई में २१ बङ्गाल में २० पश्चिमोत्तर और औध में १५ कौंसिल के मेम्बर होंगे—मद्राज और बम्बई में आधे मेम्बर कौंसिल के ऐसे होंगे जो गवर्नमेंट के कर्मचारी न हों, बङ्गाल और पश्चिमोत्तर की कौंसिल में एक तिहाई मेम्बर ऐसे होंगे जो सर्कारी कर्मचारी न हों—वाइसराय साहब ने अपनी स्पीच में कहा है कि सेक्रटरी आफस्टेट से बहुत लिखा पढ़ी के बाद अधिक से अधिक इतने ही मेम्बर गवर्नमेण्ट के "नानआफिशल" अनधिकारियों में से तै पाये हैं—लाट साहब ने यह भी राय ज़ाहिर किया है कि इतने मेम्बर बहुत कम हैं और इतने से देश के सब जाति और सब फ़िरके के प्रतिनिधियों का आजाना असम्भव है—सच है इसको पार्लियामेण्ट सहासभा के ढङ्ग पर करना दूर रहे तो इतना तो होता कि हिन्दू मुसलमान पारसी जैन इत्यादि जाति के एक २ आदमी तो प्रतिनिधि होकर कौंसिल में आसक्ते—

इस ऐक्ट में सेक्रेटरी आफस्टेट की यही मनशा है कि इन प्रतिनिधियों में हर एक दरजे मज़हब और पेशे के लोग हों—इससे सिद्ध होता है कि केवल नामिनेशन से जैसा गवर्नमेण्ट अबतक अपने मन से चुन २ के करती आई है ये मेम्बर न किये जांय बरन "एलेक्टिव प्रिन्सिपल" पर अर्थात् प्रजा की ओर से उन का इन्तिख़ाब हुआ करे—मिस्टर ग्लाडस्टन जो उस समय जब

कि पार्लियामेण्टमें इस्पर वादविवाद हो रहा था विरुद्ध दल में थे उन्होंने भी यही बात निश्चय किया कि इस नये इन्तिखाब में कुछ न कुछ प्रजा की ओर से मेम्बरों के चुनने का वसूल अवश्य रहना चाहिये और गवर्नमेण्ट इण्डिया को भी लाचार हो यह मान लेना पड़ा किन्तु ऐसा मान लेने से क्या, जब उस्का बर्ताव ठीक २ न किया गया—हम बङ्गाल बम्बई मन्द्राज को छोड़ पश्चिमोत्तर के लिये जो कानून कौंसिल के बनाये गये हैं उन की समालोचना करते हैं—हमारे छोटे लाट साहब की कौंसिल में इस नये बने कानून के मुताबिक ६ नानअफिशल मेम्बर होंगे पहले म्युनिसिपलबोर्ड फिर डिस्ट्रिक्टबोर्ड अर्थात् दिहातों में जो सफाई आदि की निगरानी के लिये मुकर्रर हैं उन्में से चुने जांयगे—फिर सौदागर या तिजारत करने वालों की जमात एसोसियेशन से जिस्का इस पश्चिमोत्तर में सर्वथा अभाव है—यहां इस किस्म का कोई एसोसियेशन हुई नहीं तब उस्में से मेम्बरों का चुनना कहां रहा—तब युनिवरसिटी के सिनेट में से उपरान्त लाटसाहब को इखतियार है कि इन्में से कोई न मिलें तो अपने मन से जिसे योग्य समझें चुन लें—

अब सच पूछिये तो कहनेमात्र को तो यह इन्तिखाब एलेक्टिव प्रिन्सिपल पर रक्खा गया है पर वास्तव में प्रजाके सच्चे हितैषी इन्में से एक भी नहीं हैं म्युनिसिपल कमिश्नर केवल कलट्टरों की हां मे हां मिलाने वाले होते हैं—कर्मचारियों की निगाह में उन की सुर्खरूई रहे इसलिये प्रजा की वास्तविक हानि या लाभ पर कभी उन का ध्यान नहीं रहता सच तो यों है कि म्युनिसिपल कमिश्नरी यहां तक बदनाम होगई है कि प्रजा के बीच जो सच्चे चोखे आदमी हैं और इस लायक हैं कि म्युनिसिपल कमिश्नर किये जांय इसे किसी तरह पसन्द नहीं करते—प्रजा के सच्चे हितैषी कानग्रेस वालों में से अलबत्ता मिल सक्ते हैं कोई २ हाईकोर्ट तथा जिलों के वकीलों में भी हैं सो ये लोग काहे को कभी कौंसिल की मेम्बरी के लिये पसन्द आसक्ते हैं तब यह सब केवल हमारा मुंह बन्द करने के लिये किया गया है—अस्तु राह तो निकली क्या अचरज कभी को वह दिन भी आवे कि हमारी खाहिशों के माफिक इस्का इन्तिखाब हो और जैसा हौस आफ कामन्स में प्रतिनिधि भेजने के समय देश में आन्दोलन मचता है और किसी को कोई तरह की शिकायत का मौका नहीं रहता यहां भी वैसा ही हो—

हिन्दुस्तान में सिविलसरविस की परीक्षा—

इसमें सन्देह नहीं दादाभाई नौरोजी का पार्लियामेण्ट में होजाना हिन्दुस्तान के लिये अवश्य सुदिन का कारण है कोई मौका खाली नहीं जाता कि हिन्दुस्तान की भलाई की कोई न कोई बात पार्लियामेण्ट में ये न पेश करते हों—अभी हाल में जब चांदी सोने के प्रश्न का झगड़ा पार्लियामेण्ट में पेश हुआ था तब इण्डिया में टैक्स देने वालों की तरफ से इन्हों ही ने कुछ कहा इस बात को इन्हों ही ने रोका कि भूमिकर इत्यादि सोने के सिक्कों में लेने से हमारी दोचन्द हानि है—अब सिविल सरविस का इमतिहान हिन्दुस्तान और विलाइत में एकसां हुआ करे इसके लिये भी ये बदिलोजान कोशिश कर रहे हैं—विलाइत जाना हिन्दुस्तानियों के लिये कितना बुरा है और बहुधा इन की "मोरालिटी" को कितना सत्यानाश में मिला देता है इसे हम कई बार और कई तरह पर दिखा चुके हैं—यदि नौरोजी महाशय कृतकार्य हुये यह रिज़ोल्यूशन जारी होगया और एक तिहाई नौकरी भी सिविलसरविस की हिन्दुस्तानियों को मिल सकी तो हम लोगों के अहो भाग्य हैं—और सब से उमदा बात यह होगी कि लोग विलाइत जाय बरिस्टर होकर लंगूर की सी शकल में मेम साथ लिये वहां से न लौटेंगे और यहां इस्तिज्जे के ढेले न बनेंगे और हमारे नवयुवकों का हौंसिला विलाइत जाने का घर बैठे ही पूरा होगा—अब गवर्नमेण्ट से हमारी बिनती यह है कि इसमें रंग और मज़हब का फरक न रहना चाहिये किन्तु सब के साथ एकसा बर्त्ताव किया जाय जैसा वकालत इत्यादि की परीक्षा में होता है—देखा चाहिये नौरोजी इसमें कहां तक कामयाब होते हैं—

बिना भाव ॥

भोगबिलास धन सम्पत्ति अनेक प्रकार का वैभव आराम आसाइश इत्यादि सब सुख एक ओर—गरीबी अकिञ्चनता अन्न वस्त्र का कष्ट सहनपूर्वक दुःख जीवन दूसरी ओर—ये दोनों वास्तव में कुछ नहीं हैं बरन इसी बिना भाव के संकोच और बिकाश हैं—इससे बिकाश हम इसलिये कहते हैं कि सन्तोष को मन में बिना जगह दिये यह बिनाभाव किस ओर छोर तक बढ़ता रहेगा कि

जिसकी सीमा नहीं है उसके सिमटने के लिये इस अखण्डब्रह्माण्ड का एकाधिपत्य भी पर्याप्त नहीं है—अब संकोच इसे इसलिये कहते हैं कि सन्तोष जहां मन में आया कि इसकी जितनी ख़ाहिशें और हिर्सहवा सब कछुये के पांव के माफिक सिमिट जाती हैं इस समय की मन की दशा को चाहो शान्ति कहो, चाहो उदासी कहो, चाहो दैन्य कहो, या घी ढरक जाने पर रूखी दाल को मज़ादार कहने वालों की ताईद मानो, चाहो इसे मन का समझौता कहो, चाहो शुष्क वेदान्तियों का सन्तोष मानो। एक हिन्दुस्तान ही ऐसा अभागा देश है जहां बिना भाव के संकोच ने इस कदर पंजा फैला रक्खा है कि उत्साह उमङ्ग जोश सब एक साथ बिदा होगये—तरक्की और आगे बढ़ना सपने के से खयाल होगये ज़हर के समान रग २ में यह ऐसा व्याप्त हो रहा है कि लोगों की तबियत में उभाड़ होता ही नहीं—२४ घण्टे में एकबार भी रूखा सूखा अन्न आधे पेट भी मिल जाय और चिथरा गुदड़ा भी तन ढांपने को मिलता रहे तो उतने ही से सन्तोष करलें—वही दुनिया के और २ मुल्क हैं जहां सभ्यता और तरक्की इस अन्तिम सीमा तक पहुंच चुकी है फिर भी बिना भाव का विकाश बढ़ता ही जाता है—

एक समय वह था कि मखमली बिछौना भी देह में चुभता था अबरवां तनज़ेब मलमल गड़ता था और बड़ा बोझा मालूम होता था तकल्लुफ का षट्रस भोजन किसी एक मसाले के ज़रा से घटबढ़ में फीका और बदज़ाइके मालूम होता था—बदकिस्मती से ऐसा एक ज़माना आगया कि टाट बिछौना और कमली ओढ़ना कंकड़ों पर बिछा के सोते हैं तो वह घण्टे की नींद आती है कि जिसके लिये साटन और मखमल से मढ़ी कोच पर सोने वाले तरसते हैं—सच है "निद्रातुराणां न च भूमिशय्या" कमली का ओढ़ना तनज़ेब और मशरूम को मात करता है जहां षटरस भोजन में ज़ाइका नहीं मिलता था वहां अब सूखे चने और ज्वार की रूखी रोटी खाली नोन के साथ अमृत मालूम होती है—"क्षुत्स्वादुतां जनयति,, पहले तोले भर बालाई में अजीरन होजाता था अब पत्थर के टुकड़े भी खालें तो पच जांय "गत सुखी संसार" इस कहावत की सचाई ऐसेही ऐसे मौकों पर प्रत्यक्ष होती है—सुकुमारी सीता जिन के कोमल चरणों की महाउर का रङ्ग भी बोझ था राजकुमार राम लक्ष्मण जिन को दूध के फेनसी कोमल शय्या पर नींद नहीं आती हाय नंगे पांव दंडक वन की क-

टैली पथरीली पृथ्वी पर घूमते हुये क्योंकर चौदह बर्ष पार करेंगे महाराज दशरथ ने इसी शोक में तन त्याग दिया—किन्तु इसी गत सुखी संसारवाली कहावत के अनुसार हमारा यह विनाभाव धीरधुरन्धर श्रीरामचन्द्र के मन पर ऐसी प्रभुता जमाया कि बनवास के १४ बर्ष भी वैसा ही कटे जैसा राजभवन में कटते ऐसा ही नल दमयन्ती द्रौपदी और पाण्डवों की विपत् का समय सुमिर रोंघटे खड़े होते हैं किन्तुयही विना भाव उन २ धीरधुरीण महापुरुषों के लिये भी विपत्ति के समय का सहारा हुआ—किम्बहुना सूक्ष्मदृष्टि से देखिये तो विनाभाव का संकोच यहां तक पाया जायगा कि आदमी आधसेर तीन-पाव रूखा सूखा अन्न कन्दमूल फल या इस प्रकार के दूसरे पदार्थ खाय और स्वच्छ निर्मल जल पान कर पूर्ण आयुष्य जी सक्ता है—राबिनसनक्रूसो का किस्सा हमारे इस लेख का उपयुक्त उदाहरण है—

शायरी ॥

नीरस तबियत वालों की कौन जाने सरसहृदय वालों की तो कवियों की नई २ अनोखी उक्ति युक्ति चाहो जिस भाषा में हो जीवनमूल है—एकबार पहले शायरों के अनूठे कलाम का नमूना हम अपने रसिक पाठकों को बानगी के भांत भेट कर चुके हैं आज फिर उसी का थोड़ासा संग्रह नजर करते हैं—

मलके मिस्सी रुतबा दांतों का बहुत कम कर दिया—
क्या गज़ब तू ने किया हीरे को नीलम कर दिया—
नहीं दांतों में मिस्सी की लड़ी है-कनी नीलम की हीरे में जड़ी है—
लोग सेकें आखें उस बुत से हमारा जी जलै—
हाय बेदरदी कोई तापे किसी का घर जले—
करके आराइश जो देखा उस सनम ने अपनी शक्ल—
बन्द आखें हो गईं आईना हैरां रह गया—
बोसे खुद लेने लगा तिल्पहसीं-आइने में अपनी सूरत देख के—
बाज़ार मुहब्बत में न दिल बेच तू अपना—
बिक जाता है साथ इसके ज़फर बेचने वाला—
सौदा के लिये बर सरे बाज़ार गये हम—
साथ उसके बिके जिसके खरीदार हुये हम—

सौदा शराब इश्क कहते थे हम न पी–
आखिर मज़ा न पाया अब उसके खुमार का–
बाल चोटी के करैंगे बदनाम–ये मुये पीछे पड़े रहते हैं–
दिलो दीं जुल्फे दौता मांगती है–मांग क्या जानिये क्या मागती है–
वफा कहती है वक्ते ज़बह भी मुंह से यह दुआ निकले–
रहे क़ातिल सलामत तेहेखंजर यह सदा निकले–
उस शोख से जो वस्ल के सामान हो गये—
थे दर्द जितने दिल में वह अरमान हो गये–
जबहसाई तेरे दहलीज पर कुछ फर्ज़ न थी–
अपने तक़दीर के लिखे को मिटाता हूं मैं–
सन्दल की है दहलीज असीर उस गुलेबर की–
माथाका रगड़ना है जिसे दर्द सरी हो—
गिरा था कट के ज़मीं पर कभी तेरा नाखून ।
फलक़ने उसको उठा के वहीं हिलाल किया ॥
शफक फूली है देखो शाम को शहरे बदोखशामे ।
लबे रंगीं पै मिस्सी मलके उसने पान खाया है ॥
रूखे रंगी को हंसकर ज़ुल्फ में उस ने छिपाया है ।
तपा है अब्र में बिजली चमन में अब्र छाया है ॥
सर मेरा काट के पछताइयेगा । झूठी फिर किसकी क़सम खाइयेगा ॥
शोखी से ठहरती नहीं क़ातिल की नज़र आज ।
यह बर्के बला देखिये गिरती है किधर आज ॥
दिल को करैंगे जान की ख़ैरात इश्क़में ।
शायद यही फिराक़ की आफ़त को टाल दे ॥
आई दिले बरबाद में फिर याद किसी की ।
उजड़ी सी बस्ती हुई फिर आबाद किसी की ॥
लज्ज़ते दर्द सरापा मुझे हासिल हो जा ।
आरज़ू है कि हर अज़वे बदन दिल होजा ॥
दिल लिया है तो जान भी लेलो । हम से बेदिल रहा नहीं जाता ॥
लबे रंगीं पै मिस्सी मलके जब वे पान खाते हैं ।

तसद्दुक शाम होती है शफक कुर्बान जाती है ॥
पीली है एक चीज़ नहीं बेसन की बनाते ।
है खाने की नहीं चीज़ पर खाते हैं ॥ अशरफ़ी
सौदा न मानियो कभी बाइज़ की गुफ्तगू ।
आवाज़ ये दुहल है खुशायन्द दूरका ॥ "दूरका ढोल सुहावना,
खूने जिगर शराब तरस्सोयचश्मतर ।
सागर मेरा गिरो नहीं अब्रे बहार का ॥
यह सियाहकार जो पढ़ते हैं सुबह उठ के निमाज़ ।
इसे आदत में लिखूं या इबादत में लिखूं ॥
एक तो जलना शमा का दूजे सितंगुलगीर का ।
क्या अदालत है कि सर कटता है बेतकसीर का ॥
काटना सिर शमा का बेजा नहीं गुलगीर का ।
खूं किया है शमा ने परवाने बेतकसीर का ॥
काम करती नहीं दांतों की सफाई पर निगाह ।
बिजली गिर पड़ती है जब हंसता है वो गैरते माह ॥
हाफिज़ सबूर बाश दर राह आशिकी ।
हरकस की जांन दाद बजाना नमी रसद ॥
तुम पर मरने ही को हमने जीने का सुख जाना है ।
बहरे इश्क में यहां तो हंस हंस के गोते खाना है ॥
खबर को उसके फिर भेजूंगा कासिद ।
मेरा दिल ढूंढतो पहिले कहां है ॥
नातावानी से खूं हुआ मेरे दिल का सुफेद ।
क्या बहाना है जो यह बहजाय आंसू होकर ॥
लायेंगे आफताब को वह अपने जाल में ।
जुल्फों के बाल धूप में सुखलाये जाते हैं ॥
मिसी मालीदा लब पर रंग पां है ।
तमाशा है तहे आतश धुआं है ॥
रिश्तये उल्फ़त में गरदन है हज़ारों की ।
तसबीह इसे कहते हैं जुन्नार इसे कहते हैं ॥

गोवर्द्धनाचार्य-

शृङ्गाररसप्रधान आर्यासप्तशती अर्थात् सातसौ आर्याछन्द की समष्टिका एक ग्रन्थ इन की प्रधान कविता है-इसी आर्यासप्तशती के परतोपर बिहारी कवि ने जयपुराधीश के प्रोत्साहन से शृङ्गाररसप्रधान सातसौ दोहों का एक ग्रन्थ ब्रजभाषा में सतसई नाम का रचा है-गोवर्द्धन के पिता का नाम नीलाम्बर था सप्तशती के प्रारम्भ में गोवर्द्धन ने जहां कवियों की गणना में व्यास वाल्मीकि गुणाढ्य कालिदास भवभूति बाण के लिये पृथक् २ एक २ आर्या लिखा है वहां अपने पिता नीलाम्बर की प्रशंसा में भी एक आर्या दीहै—

"यं गणयन्ति गुरोरनु यस्यास्ते धर्मकर्मसङ्कुचितम् ।
कविमहमुशनसमिव तं तातं नीलाम्बरं वन्दे ॥"

और एक आर्या सेनकुलतिलक प्रवरसेन नृप की प्रशंसा में भी लिखाहै जिस को इन्हों ने अपने लिखित प्रबन्ध का प्रभु कहा है—

"सकलकलाः कलयितुं प्रभुः प्रबन्धस्य कुमुदबन्धोश्च ।
सेनकुलतिलकभूपतिरेको राकाप्रदोषश्च ॥"

इस्से मालूम होता है कि गोवर्द्धन बंगदेशी थे क्योंकि सेनकुल के राजाओं की परम्परा में लक्ष्मणसेन अन्तिम राजा था और कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का पहिला मुसल्मान बादशाह का सिपहसालार बखतियार खिलजी जिस समय बंगाल पर चढ़ा उस समय लक्ष्मणसेन ही नदिया शान्तीपुर में राज करता था-बखितयार के आने की खबर सुनते ही यह किश्ती पर सवार हो ऐसा भागा कि आज तक पता न लगा लोग कहत हैं यह सकुटुम्ब गंगा में डूब मरा-जोहो प्रवरसेन लक्ष्मणसेन के पूर्व पुरुषों में हुये हैं और बखितयार ने ईसवीसन् की बारहवीं सदी के आरम्भ में बंगाल पर चढ़ाई की थी तो निश्चय होता है प्रवरसेन लक्ष्मणसेन के कुछ पहले राज करते थे उन्हीं के समय गोवर्द्धनाचार्य हुये हैं इसलिये गोवर्द्धन कवि को हम ईसवी सन् की ग्यारहवीं सदी के आरम्भ में मानते हैं जो विक्रमी संवत् के दशम शतक का मध्य होता है-जयदेव कवि ने गीतगोविन्द में और २ कवियों के साथ गोवर्द्धन का भी नामोल्लेख किया है-

"शृङ्गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्द्धनः स्पर्द्धी
कोपि नविश्रुतः श्रुतिधरोधोयीकविक्ष्मापतिः"—

इस्से निश्चय होता है कि गोवर्द्धन जयदेव के समकालीन थे—सनातन गोस्वामी का मत है कि गोवर्द्धन, शरण, जयदेव, उमापति, कविराज, ये लक्ष्मणसेन की सभा के रत्न थे—जोहो धारापति भोजराज के समय से जयदेव के समय तक काव्य की बड़ी उन्नति कीगई भारतवर्ष के प्रायः समस्त प्रान्तों में उत्तमोत्तम कवि इसी समय में हुये हैं—

प्रसादगुणयुक्त कोमल ललित छोटे २ शब्दों में गोवर्द्धन की कविता काव्यरसवासनाविदग्धों के मन को बहुत ही भावती है प्रसादगुण में भी श्लेष ऐसा ठौर २ जड़ दिया है जिस्से इन की एक २ आर्या बहुमूल्य होगई जिन्में अर्थ की गम्भीरता यहां तक भरी है कि सप्तशती के तिलककार अनन्त पण्डित ने एक २ आर्या का तीन २ चार २ अर्थ किया है—तिलककार अनन्त पण्डित ने काशी में १७०२ के संवत्में व्यङ्गार्थसन्दीपन नाम का इस्का तिलक बनाया है—बिहारी के समान गोवर्द्धन ने भी बीच २ सदुपदेश और उत्तमशिक्षापूर्ण आर्या अपने ग्रन्थ में रख दीं हैं—संस्कृत जानने वाले पाठकों के विनोदार्थ थोड़ी सी आर्या यहां पर हम उद्धृत करते हैं जिस्से गोवर्द्धन की प्रतिभा का परिचय भरपूर हो जायगा—

अयि कोषकार कुरुषे बनेचराणां पुरोगुणोद्गारम् ।
यन्न विदार्यविचारितजठरस्त्वं स खलु ते लाभः ॥
अन्यमुखे दुर्वादो यः प्रियवदने स एव परिहासः ।
इतरेन्धनजन्मा यो धूमः सोऽगुरुसम्भवो धूपः ॥
आरब्धमब्धिमथनं स्वहस्तयित्वा हिजिह्ममरैर्यत् ।
उचितस्तत्परिणामो विषमं विषमेव यज्जातम् ॥
एकः स एव जीवति हृदयविहीनोपि सहृदयो राहुः ।
यः सर्वलघिमकारणमुदरं न बिभर्ति दुष्पूरम् ॥

केशैः शिरसो गरिमा मरणं पीयूषकुण्डपातेन ।
दयितबहनेन वक्षसि यदि भारस्तदिदमचिकित्स्यम् ॥
गुरुरपि लघूपनीतो न निमज्जति नियतमाशये महतः ।
वानरकरोपनीतः शैलो मकरालयस्येव ॥
वक्राः कपटस्निग्धा मलिनाः कर्णान्तिके प्रसज्जन्तः ।
कं वञ्चयन्ति न सखे खलाश्च गणिकाकटाक्षाश्च ॥
वंशावलम्बनं यद्यो विस्तारो गुणस्य यावनतिः ।
तज्जालस्य खलस्य च निजाङ्कसुप्तप्रणाशाय ॥
हरिरपि भुजङ्गभोगे मोहनविज्ञेन शीलिता येन ।
सोपि हरिः पुरुषो यदि पुरुषा इतरेपि किं कुर्मः ॥
शीलितभुजङ्गभोगा क्रोडेनाभ्युद्धृतापि कृष्णेन ।
अचलैव कीर्त्यते भूः किमशक्यं नाम वसुमत्याः ॥
सरित इव यस्य गेहे शुष्यन्ति विशालगोत्रजा नार्यः ।
क्षारास्वेव स तृष्यति जलनिधिलहरीषु जलद इव ॥
सम्भवति न खलु रक्षा सरसानां प्रकृतिचपलचरितानाम् ।
अनुभवति हरशिरस्यपि भुजङ्गपरशीलनं गङ्गा ॥
सुगृहीतमलिनपक्षा लघवः परभेदिनः परं तीक्ष्णाः ।
पुरुषा अपि विशिखा अपि गुणच्युताः कस्य न भयाय ॥
स्वकपोलेन प्रकटीकृतं प्रमत्तत्वकारणं किमपि ।
द्विरदस्य दुर्जनस्य च मदं चकारैव दानमपि ॥
गौरीपतेर्गरीयो गरलं गत्वा गले जीर्णम् ।
जीर्यति कर्णे महतां दुर्वादो नाल्पमपि विशति ॥

गुणमान्तरमगुणं वा लक्ष्मीर्गङ्गा च वेद हरिहरयोः
एका पदेपि रमते न वसति निहिता शिरस्यपरा ।
गुरुषु मिलितेषु शिरसा प्रणमसि लघुषून्नता समेषु समा ।
उचितज्ञासि तुले ! किं तुलयसि गुञ्जाफलैः कनकम् ॥
दुर्जनसहवासादपि शीलोत्कर्षं न सज्जनस्त्यजति ।
प्रतिपर्वतवनवासी निःसृतमात्रः शशिः शीतः ॥
दीपदशाकुलयुवतिर्वैदग्ध्येनैव मलिनतामेति ।
दोषा अपि भूषायै गणिकायाः शशिकलायाश्च ॥
निर्गुण इति मृत इति च हावेकार्थाभिधायिनौ विद्धि ।
पश्य धनुर्गुणशून्यं निर्जीवं तद्दिह शंसन्ति ॥
पिशुनः खलु सुजनानां खलमेव पुरोविधाय जेतव्यः ।
कृत्वा ज्वरमात्मीयं जिगाय वाणं रणे विष्णुः ॥
प्रायेणैव हि मलिना मलिनानामाश्रयत्वमुपयान्ति ।
कालिन्दीपुटभेदः कालियपुटभेदनं भवति ॥
यद्यपि चन्दनविटपी फलपुष्पविवर्जितः कृतो विधिना ।
निजवपुषैव तथापि हि स हरति सन्तापमपरेषाम् ॥
सन्तापमोहकम्पान्सम्पादयितुं निहन्तुमपि जन्तून् ।
सखि दुर्जनस्य भूतिः प्रसरति दूरं ज्वरस्येव ॥
स्वयमपि भूरिच्छिद्रश्चापलमपि सर्वतोमुखं तन्वन् ।
तितउस्तुषस्य पिशुनो दोषस्य विवेचनेऽधिकृतः ॥
काव्यस्याक्षरमैत्रीभाजो नच कर्कशा नच ग्राम्याः ।
शब्दा अपि पुरुषा अपि साधव एवार्थबोधाय ॥

वंशे गुण इव न विशति दोषो रसभावितेसतां मनसि ।
रसमपि च प्रतीच्छति बहुदोषः सन्निपातीव ॥
विगुणोपि काव्यबन्धः साधूनामाननं गतः स्वदते ।
फूत्कारोपि सुवंशैरनूद्यमानः श्रुतिं हरति ॥
अन्तर्गूढानर्थानव्यञ्जयतः प्रसादरहितस्य ।
सन्दर्भस्य नदस्य च न रसः प्रीत्यै रसज्ञानाम् ॥
यदसेवनीयमसतामसृतपापं सुवर्णविन्यासम् ।
सुरसार्थमयं काव्यं त्रिविष्टपं वा समं विद्मः ॥
सत्कविरसनाशूर्पी निस्तुषतरशब्दशालिपाकेन ।
तृप्तो दयिताधरमपि नाद्रियते का सुधा दासी ॥
अवधिदिनावधिजीवाः प्रसीद जीवन्तु पथिकजनजायाः ।
दुर्लङ्घ्य वर्त्मशैलौ स्तनौ पिधेहि प्रयायालि ॥
अन्धत्वमन्धसमये बधिरत्वं बधिरकालमालम्ब्य ।
श्रीकेशवयोः प्रणयी प्रजापतिर्नाभिवास्तव्यः ॥

आनशान ॥

संसार में सब से अधिक धनवान् वे ही हैं जिन्हे अपनी आनशान का खयाल है ऐसे लोग सर्वस्व खोकर भी अपनी शान नहीं जाने देते असामान्य अनोखा निराला ढंग जो उन की स्वच्छन्द आज़ाद तबियत और सिंहवृत्ति के लिये उपयुक्त है उसी का नाम शान है और मनस्वीजन बड़ी सी बड़ी हानि सहकर अरत्न सब से अमूल्य धन अपना जीवन भी गवां देते हैं पर अपनी शान नहीं जाने देते—आनशान निभाने को मनस्विता के अतिरिक्त उदारता एक दूसरा गुण है जिस्के न होने से शान कभी रही नहीं सक्ती संकीर्ण और दुर्बल हृदय वाले ओछे छोटी तबियत के लोग जिन को निज स्वार्थ ही अपने जीवन का उद्देश्य है वे आन शान इज्ज़त और प्रतिष्ठा को तिनके के बराबर

भी नहीं मानते—आदमी को अपने थोड़े दिन की ज़िन्दगी आनशान के साथ पार करना कोई सहज बात नहीं है संसार के अनेक जघन्य क्षुद्र सुखों से मुंह मोड़ चञ्चल मन की वृत्तियों को वश में लाके स्थिरचित्त कौल का सच्चा हो यही अपनी शान कायम करसक्ताहै—मृच्छकटिक में चारुदत्त का उदारचरित्र इसका उदाहरण है नागानन्द में जीमूतवाहन इसका दूसरा उदाहरण है—चण्डकौशिक में हरिश्चन्द्र ने अपनी शान निबाहने को सब २ दुःख उठाया राज्य छुट गया स्त्री छुट गई पुत्र का वियोग होगया चाण्डाल के हाथ बिके पर सत्य भ्रष्ट न हुये—नल और दमयन्ती के चरित्र में राजा नल इसके उदाहरण हैं—शान बड़प्पन और महत्व का एक प्रधान अङ्ग है ऐसे ही लोग समाज के अगुआ और नायक होने के योग्य हैं—मिस्टर ग्लैडस्टोन केवल आनशान के कारण कंसर्वेटिव दल के इतना विरोधी होने पर भी फिर लिबरल मिनस्टरी के अगुआ किये गये—बड़े २ कामों की ज़िम्मेदारी ऐसे लोगों पर रख दी जाती है तो उस काम के निर्विघ्न समाप्त होने की पूरी सम्भावना रहती है—मुगल बादशाहों ने हज़ार सिर धुना पर उदैपुर के राणाओं ने बेहद्द तकलीफ उठाने पर भी अन्त तक अपनी आन निबाह लेगये और मुसलमानों को अपनी लड़की न दिया—टाड साहब के राजस्थान को पढ़ो तो हमारे क्षत्रियों की शान का हाल समझ रोंघटे खड़े होजाते हैं—चौहानों के सिरमौर हमीर मिट गये प्राण से भी हाथ धो बैठे पर अलाउद्दीन की इतात न कबूल की आज तक कहावत चली जाती है "तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजीबार"—कौल दे कर फिर उसे तोड़ना आनशान वाले अपनी शान मिट्टी में मिलना मानते हैं—ऐसों के मुंह से पहले तो कोई बात मुंह के बाहर निकलती ही नहीं और जो निकली तो फिर हाथी के दांतों के समान हो गई—हांथी के दांत जो निकले सो निकले फिर भीतर को नहीं मुड़ते—"विदुषां वदनाद्वाचः सहसा यान्ति नो बहिः । यातास्च न पराञ्चन्ति द्विरदानां रदा इव"—इसी शान का दूसरा नाम चरित्रपालन भी है स्माइल साहब कृत "स्माइल आन क्यारक्टर" पढ़ने से न जानिये कितने उदाहरण इसके पाये जाते हैं उन्हे यदि यहां पर लिखा चाहें तो एक स्वच्छन्द छोटी सी पुस्तक बन जाय—और इतिहास तथा जीवनचरित्र का पठन पाठन तो मानो शान वाले सुजन पुरुषों से परिचय करादेने का एक उ-

तम द्वार है-क्षुद्र नीची और ओछी तबियत वालों का जिस्मा तो हम नहीं ले सक्ते किन्तु जिसके उदार और उन्नतचित्त में अणुमात्र भी ज्ञान का अङ्कुर है-उसके लिये तो ये उदाहरण बहुमूल्य रत्न हैं जिन पर ध्यान रख आदमी चलता रहे तो ऊंची नीची दशा में पड़ हिम्मत न हार दूसरों के लिये चरित्र-पालन का खुद एक नमूना हो इति—

यथारुचि संगृहीत उपनिषद् महाविद्या-

ओ३म्-विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥
ये उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु ।
ओम्-शान्तिः शान्तिः शान्तिः—

बड़े हर्ष की बात है कि बहुत दिनों के उपरान्त यह समय आया कि मैं अपने अपरिपक्व अज्ञानसंमिलित परिमित विचार को अपने पूर्व पुरुषों के परिपक्व-पूर्ण-अपरिमित-ज्ञान-युक्त विचारों पर जो इन उपनिषदों के द्वारा प्रकाशित हैं प्रगट करूं—इस काम के लिये ढिठाई करना वैसाही है जैसा पिपीलिका अगाध महासागर के थहाने का मन करे-जो हो एक डुब की तो अवश्य ही मारूंगा अगर २७ हाथ नीचे जासके तो एक बहु मूल्य मोती हाथ लगे होगा जो जन्मभर के लिये मुझे अयाचक कर देगा क्योंकि यह यहूदा या अरब का समुद्र नहीं है कि जिसमें चाहो सैकड़ों गोते मारोकरो सिवा घोंघा के और कुछ हाथ न आवे-यह हिन्दुस्तान का समुद्र है जहां मोतियों की खान है यरूशलीम के पास वाला गेलिली का समुद्र यह नहीं है-उपनिषद् का अर्थ प्राचीन विद्वानों ने आत्मविद्या या आत्मविद्या की पुस्तक माना है पर यूरोप के विद्वानों ने इसका अर्थ गुरु के निकट या नीचे बैठ सुशिक्षा सुनना माना है-उप+नि+सद् धातु से उपनिषद् निकला है जिस्का अर्थ समीप निकट बैठना है-धात्वर्थ तो यही है पर लक्षण से यह अर्थ निकलता है कि गुरु के निकट बैठकर आत्मविद्या का सुनना ये प्राचीन विद्वान् प्रजा को कुवृत्ति से रोकते और सत्प्रवृत्ति में उन्हे लगाते एक प्रकार से उन का शासन भी अपने आधीन किये थे पर सामयिक शासनकर्ताओं के क्रम पर न तो खुद आप कभी ऐसा

सोचते थे न अपने शिष्यों को यह सिखलाते थे कि प्रजामात्र पर ऐसा टिकस लगाया जाय जो न तो उन को गड़ाय न कुछ जान पड़े पर रुपया उन का सब अपनेहाथ आ जाय जैसा सोते और नदियों का पानी समिट २ अन्त में जा कर समुद्र में मिल जाता है—किन्तु इन के शासन का प्रकार कुछ और ही ढंग का था उन के शासन का असर प्रजा की मानसिक वृत्तियों पर पहुंचताथा इसलिये उन्होंने ऐसी ही बात सोंचा जिस्से प्रजामात्र को सुख मिले और दुःख उन का जड़ पेड़ से उड़जाय—हमारी उपनिषद्विद्या यही बतलाती है कि सच्चा सुख क्या है और कैसे प्राप्त होसक्ता है—सत्य और असत्य सुख का निरूपण करना केवल उपनिषदों ही का काम है—

श्रुतियां जो ईश्वरवाक्य हैं उन्हें यहां मनुष्यों के बीच उतरे बहुत समय व्यतीत होगया था महात्मा सप्तर्षिगण इन श्रुतियों का सत्य अर्थ अपने पुत्र पौत्र और शिष्य समूह को बतलाय अपने २ धाम को पधार गये थे और ये लोग हेमकूट पर्वत पर जो काश्मीर के ऊपर का प्रान्त है बसकर अपना सब नित्यकर्म पुत्रजन्म उत्सव और दूसरे २ सामाजिकोत्सव षट्ऋतु वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरत् आदि के जुदे २ उत्सव शवदहन पिण्डदान आदि कर्म उन्हीं महर्षियों के बतलाये हुये अर्थ के अनुसार श्रुति अनुकूल बराबर करते आये—पर बहुत दिनों के उपरान्त ऋचाओं का शुद्ध अर्थ करीब २ भूल गये किन्तु ऋत्विक् अध्वर्यु सदस्य सब अपने २ कर्मकाण्ड में वैसा ही तत्पर रहे जैसा आज कल दक्षिणा पुजाने वाले पाधा पुरोहित चकरी मूसल लोढ़ा सिल के द्वारा अपना कर्मकाण्ड कराते हैं—उस समय से अब फरक यह होगया है कि अब केवल चकरी मूसल की पूजा ही मात्र बच रही तब ऐसा न था—दसमहस्र विद्यार्थियों को अन्न वस्त्र देकर जो पढ़ता पढ़ाता रहे उसे कुलपति कहते थे—

"मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात् ।
अध्यापयति विप्रर्षिः स वै कुलपतिः स्मृतः ॥"

कुलपति से १२ वर्ष कभी को २४ वर्ष तक समग्र वेदवेदाङ्ग पढ़कर तब द्विजसज्ञा प्राप्तकर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे जब यह क्रम प्रचलित था तब तक यद्यपि वे उन महर्षियों के उपदेश से कुछ २ भटक भी चले थे पर इतना पतित नहीं हुये थे जैसा अब होगये हैं जब कि बहुधा पांच ही वर्ष की

उमर में सिर पर मूसल घुमा दिया जाता है और तभी से गृहस्थी के चक्कर में फंसते हैं—कहां का ब्रह्मचर्य्य कहां का समग्र वेदवेदाङ्ग का पठन पाठन—ऐसे २ अनेक कुसंस्कार और कुरीतियें में पिस यह आर्यजाति जिसे संसार के समस्त जन समाज से श्रेष्ठ बनने का अभिमान अब भी बना है कूकर सूकर समान अपवित्र और नीचातिनीच होगये और होते ही जाते हैं—अस्तु ये लोग न केवल पूर्वज महर्षियें के बताये श्रुतियों के अर्थ ही भूल गये वरन उन की संख्या के अधिक होजाने से हेमकूट के थोड़े से प्रदेश में न रह सके तो नीचे उतरना पड़ा और काश्मीर की अधित्यका से उतर पञ्जाब की समभूमि में आबसे जहां ये अपने वर्ग के उन लोगों से हिल मिलगये जिन्हें भक्ष्य अभक्ष्य का बहुत कम विचार था जिन्हें पीछे से इन्हों ने खुद अनार्य ठहराया—किन्तु इन के कर्मकाण्डियों ने इन अनार्यों की बुरी २ रीतें और उन के अभक्ष्यभोजन मांस आदि को स्वीकार कर लिया—यहां तक गोमेध आदि महाघिनौने यज्ञ को भी अपने कर्मकाण्ड का हिस्सा बना लिया वैसा ही जैसा इन दिनों के बहुत से हिन्दूधर्मावलम्बी द्विजन्मा पढ़े लिखे विद्वान् भी यूरोप के गौराङ्गों से अधिक तर घिष्टपिष्ट के कारण होटलों में सब तरह के अभक्ष्य भोजन कर पतित होते जाते हैं—इन्हीं-कर्मकाण्डियों ने वेद का ब्राह्मणभाग बनाया जिस्में उन्हों ने उन पवित्र ऋचाओं को अपने कर्मकाण्ड का आधार माना यहां तक कि जिन ऋचाओं में गोमेध के अर्थ इन्द्रियों का दमन करना था वहां ये लोग यज्ञ में गौका वध उसी प्रकार करने लगे जैसा इन दिनों के तान्त्रिक देवी के सामने बकरे को बलिदै यथेष्ट प्रसाद की भांत जिह्वा के स्वाद का मज़ा लेते हैं—जुदे २ गृह्यकारों के गृह्य और परस्पर विरुद्ध बहुतसी स्मृतियें का जन्म भी इसी समय में हुआ—इसी लिये गृह्यकारों ने अन्नप्राशन आदि संस्कारों में कृकलास मांस तक का विधान लिखा है—इन लोगों ने पवित्र ऋचाओं का अर्थ अपनी मनुष्यबुद्धि के अनुसार तथा समयानुसार वैसा ही अण्ड बण्ड किया जैसा बहुतसी ऋचाएं जिन का अर्थ ५० वर्ष भी नहीं बीते विधवाओं को पतिसङ्ग जलाना बतलाते थे अब उन्हीं ऋचाओं से विधवाविवाह सिद्ध करते हैं—पतिव्रता विधवाओं का स्वतःजलजाना और सदनातुरा विधवाओंका अपने मन से विवाह कर लेना दोनों बराबर उत्तम हैं—परन्तु विधवामात्र का ज़बर दस्ती जला देना या उन का पुनर्विवाह करवा देने की रिवाज़ फैलाना दोनों

बराबर एकसां बुरे हैं—जब इन कर्मकाण्डियों ने इतना अत्याचार मचाया तब परमकारुणिक ने शुद्धात्मा श्वेताश्वतर मैत्री माण्डूक आदि ऋषिओं को उत्पन्न किया इन ऋषियों ने फिर ऋचाओं के शुद्ध अर्थों का प्रचार किया—इन लोगों ने पहिले तो वेद के बहुत से मन्त्रों का जिन्में परमात्मा की आज्ञा केवल परमार्थ साधन की थी और व्यवहार से कुछ सम्बन्ध न रखती थी दिखलाया उपरान्त श्रुतियों का सारांश लेकर अपनी ओरसे भी बहुतसे उपनिषद् रचे कठ केन आदि जो उन २ ऋषियों के नामसे प्रचलित हुये इसपर भी कर्मकाण्डी अपनी हरकत से बाज न आये—यज्ञ की शेष मांस खा सोमपान कर मज़ा उड़ाते ही रहे "दर्शपौर्णमासं यजेत्" इत्यादि श्रुति को प्रमाण में रख अमावाश्या अथवा पूर्णिमा आई फसल तैयार हुई सौदोसौ बकरों के गले पर छुरी चलगई—अन्त में उपनिषद्प्रचारक ऋषियों ने उन की यह दशा देख कहा कि वेदवेदाङ्ग केवल पराविद्या है इससे कदापि निर्वाणपद मोक्ष नहीं मिल सक्ता परमपद केवल परमात्मा के शुद्धज्ञान ही से प्राप्त होसक्ता है इसलिये उपनिषदों को अपराविद्या बतलाया जैसा गीता में भी भगवद्वाक्य है—

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ॥"

पर ये कब मानने वाले थे इन्हें तो लज़्ज़त मिलगई थी जिह्वा के स्वाद को कब छोड़ सक्ते हैं बड़े संयम से प्राप्त होने के योग्य परमपद के अद्वितीय सुखके पाने के अतिकठिन साधन में क्योंकर प्रवृत्त होसक्ते हैं—नापदान के कीड़ों की भांति उसी को स्वर्गसुख और मोक्षपद मान बैठे—इतने पर भी जब ये न चेते तब परमदयालु परमात्मा ने विशुद्धात्मा बुद्धदेव को प्रकट किया जिन्हों ने वेदों को न केवल पराविद्या कहा वरन अत्यन्त मिथ्या और कपोलकल्पना कह उस्की अत्यन्त निन्दा किया—पीछे इन बौद्धों ने यहां तक ज़ोर पकड़ा कि परमात्मा ने जिस लिये उन्हें उत्पन्न किया उस आज्ञा को उल्लङ्घन कर आगे बढ़े और उसी को भुला चले—तब वह कर्मप्रेरक प्रजामात्र को सुख देने वाला भगवान् शङ्कराचार्य को प्रगट किया जिन्हों ने सृष्टि के आदि से उत्पन्न उपनिषद्विद्या या उस्का मूलकाण्ड वेदान्त या उत्तर मीमांसा को प्रचलित किया—अब आप लोगों को मालूम हुआ होगा कि उपनिषद् किसे कहते हैं और क्यों उन की उत्पत्ति हुई—जिसे दयालु परमात्मा ने मनुष्यों के दुःख

त्रय दूर करने को प्रगट किया और जो परमपद प्राप्त करने के लिये एक सरलमार्ग है—इन उपनिषदों में जितने पृथक् २ मार्ग मोक्षसाधन के बतलाये गये हैं उतने और किसी देश के व्यर्थ ईश्वरप्रदत्त नामसे प्रख्यात धर्मपुस्तकों में कदापि नहीं पाये जाते—भला कैसे पाये जासक्ते हैं पाये तो उसी समय जाते जब वे धर्मपुस्तकें आदमियों की गढ़न्त न हो ईश्वर की ओरसे आई होतीं—इन अन्य मतावलम्बियों के धर्मपुस्तक में जो मुक्ति का मार्ग दिखलाया गया है वह इन्हीं उपनिषदों में कहे हुये मार्ग का कोई एक भेद है—यद्यपि इन आधुनिक मतावलम्बियों ने हमारे उपनिषदों को प्रमाण नहीं माना तथापि इसके विरुद्ध कोई नया मार्ग न दिखला सके कैसे दिखला सक्ते हैं जब कोई दूसरा मार्ग हई नहीं—कोई सच्चा पक्षपातरहित उद्योगी पुरुष यदि भूमण्डल की यावत् धर्मपुस्तकों को पढ़ता तो अन्त में विदित होजाता कि हमारा यह कहना कहां तक सत्य है—

अब तक वैदिकधर्म को छोड़ के केवल पांचही प्राचीन धर्म माने गये हैं बौद्ध इसाई मुसलमान यहूदी और पारसी—इसे तो सबी लोग मानते हैं कि बौद्धधर्म वैदिकधर्म ही से निकला है अन्तर केवल इतना ही है कि बौद्धधर्म उस ईश्वर को नहीं मानता जिसमें पशुयज्ञ की आज्ञा दीगई है—इसाई लोग इस घमण्ड में फूले हैं कि सिवा बाइबिल के और किसी धर्मपुस्तक में ईश्वर मुक्ति देने की प्रतिज्ञा नहीं करता—यह बइबिल है जो हमे बतलाती है कि प्रभु ईसामसीह के शरण में आओ वह तुम्हें संसार के दुःखों से छुटा मोक्ष देगा—यह इसाइयों की एक हिमाकतमात्र है कि अनन्यता का प्रतिपादन केवल उन्हीं के धर्मग्रन्थ में है गीता में भगवान् कृष्णचन्द्र ने शरण में आने की शिक्षा का प्रतिपादन जिस उमदगी से किया है वैसा कहीं नहीं पाया जाता—

"सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥"

यह तो केवल पुराण और स्मृति के वाक्य हैं यदि श्रुतियों को देखो जो इस अर्थ की प्रतिपादिका हैं तो आखें तिरमिरा उठें और हृदय की आंखें खुलजांय और उन के धर्म की शिक्षा के अनुसार ईश्वरका ज्ञान जो एकदेशी है दूर होजाय—मोक्ष के लिये ईसा के शरण में प्राप्त होने के एवज़ श्वेताश्वतर उपनिषद् के इस वाक्य को—

"तेऽहं देवात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये-

तो ये लोग अपने लिये सत्यमार्ग का दिखलाने वाला ईसा को त्राणकर्त्ता अर्थात् बचाने वाला है न कहकर यह अवश्य कहते कि हमारी आत्मा हमारा बचाने वाला त्राणकर्त्ता है-

अब रहे मुसल्मान इन की क्या पूंछना ये तो " लाहिलाहि लिल्ला मुहम्मद रसूललिल्लाह " कहते हुये आप तो मुसल्लम ईमान बनते हैं और सारे संसार को काफिर बना रहे हैं तेगतेहे करना अपना धर्म मानते हैं ये लोग फरमाते हैं कि सिवा कुरान के और किसी धर्मपुस्तक में खुदा को वाहिद नहीं माना—उपनिषदों के अद्वितीय वाक्यों पर "एकोब्रह्म द्वितीयो नास्ति,, " एको हं बहु स्याम् " " एको नित्यः शाश्वतो यं पुराणो ,, कभी ध्यान भी नहीं देते न तअस्सुब से मुह मोंड़ते हैं—उपनिषद् के अनुसार इतना तो अवश्य है कि रसूल अपराशक्ति विशिष्ट अहङ्कार है जिस्के कारण सत्यज्ञान का प्रकाश जागृत अवस्था में स्थित मनुष्यों पर किया जाता है—क्या अच्छा होता यदि "लाहिलाहि लिल्ला,, इत्यादि के जगह "लाहिलाहि लिल्ला अहमेवरसूलिल्लाह,, मान कर प्राणीमात्र का हित करना ये लोग अपना धर्म समझते—अब यहूदी जो मूसाके पैरवी करने वाले हैं ये तो यरूशलीम के कर्मकाण्डी हैं इन को इतना ही चाहिये कि कर्मकाण्ड अर्थात् भांति २ की कुरबानी से मोक्ष की आशा छोड़ ईशा पर विश्वास लावें अर्थात् अपने को अपना बचाने वाला मान, ज्ञान के द्वारा मुक्ति की आशा करें—अब रहे पारसी ये लोग ज़िन्दबस्ता को धर्मपुस्तक मानते हैं—यह पुस्तक करीब २ वेद के ब्राह्मणभाग की तरह है और इन का ज्ञान जो अग्नि और सूर्य को पूजना है यह समझकर कि हृदयस्थ तेज जो ईश्वर है यह उपनिषद् ही का भावार्थ है "अंगुष्ठमात्रः पुरुषो ज्योतिरिति वा धूमकः,, इत्यादि—

अब तक तो प्राचीन मत वाले उपनिषद् ही के मार्ग पर चलते रहे सो हम ने दिखा था और ईसा महम्मद आदि अपने अहम्भाव को प्रतिष्ठा सन्मान दिलाने के अर्थ और अपनी चोरी छिपाने के लिये हमारे उपनिषदों को जिस तरह अप्रमाणिक ठहराते रहे सो भी हमारे पाठकों को विदित हुआ होगा—ये सब प्रपञ्च फैले ही थे कि समाज में बहुतसी बुराइयों को बढ़ते देख कितने

सत्पुरुष आर्द्रहृदय संशोधक और उद्धारक के अभिमान से प्रेरित नये २ मत प्रचलित किये—इन्में सब से पहिला ब्रह्मसमाज है जिस्के प्रवर्तक राजा राय मोहन हुये—यह बड़े विद्वान् पुरुष होगये हैं और विद्वान् होने के कारण इन्होंने वेदों को पढ़ा परन्तु इन्हें वेदों का वही अर्थ मिला जैसा कर्मकाण्डी लोग अब तक करते आये इसलिये इन्हों ने व्यर्थ वेद को असभ्य भाषा ठहराया पर पण्डित तो थे ही सत्य का तिरस्कार कब कर सक्ते हैं जब उपनिषदों को पढ़ा तो इन को वही ज्ञान हुआ जो प्रथमसे इन के चित्त में समाया हुआ था—वेदों को असत्य ठहरा उपनिषदों को सत्य माना पर मनुष्यकृत समझा और ईसा और महम्मद के समान अपने अहङ्कार को पुष्ट करते हुये एक नया मज़हब निकाला जो अब कई एक शाखाओं में बंट गया है पर मूल ब्रह्मसमाज का भी उपनिषद् ही ठहरता है—दूसरे यह कि हिन्दूधर्म का सत्यानाश जैसा इस ब्रह्मसमाज से हुआ वैसा किसी दूसरे से नहीं हुआ था—ब्राह्मधर्मावलम्बी वर्णाश्रम अर्थात् जाति पांति के विवेक को तहस नहस करते भक्ष्य अभक्ष्य सब तरह का भोजन करते हैं समाज बन्धन से आज़ाद होने के लिये इन्हे एक तरह का सहारा मिला—अपने मत का नाममात्र एक ब्राह्म रक्खे हैं जो संस्कृत शब्द से बना है पर और सब तरह पर क्रिश्चनों की नकल करते हैं—बंगाली नकल करने में बड़े पटु होते ही हैं तो अपने चलाये हुये धर्म को भी क्रिश्चनधर्म का एक दूसरा चित्र उरेहा—लाभ इस्से केवल इतना ही है कि ब्रह्मसमाजी मरने पर कबर में नहीं गाड़े जाते और देश में इसाई नहीं समझे जाते पहली उमंग में जो इसाई होगये थे वे भी अब ब्राह्म होते जाते हैं—हिन्दूधर्म से च्युत हो होकर जो लोग अब तक अन्य मतावलम्बी होते जाते थे और हिन्दुओं का दल संकुचित होता जाता था सो बन्द होगया इसे अलबत्ता हम बड़ा लाभ मानते हैं—

इस्के उपरान्त और इसी के जोड़ पर एक दूसरा समाज आर्यसमाज के नाम से स्थापित किया गया है इस्के प्रचारक अद्वितीय महाविद्वान् देश के परमोद्धारक भारत के सच्चे शुभचिन्तक को कौन नहीं जानता इन्हो ने उपनिषद् और उन की मूल श्रुतियों को वैसा ही माना जैसा शङ्कर स्वामी ने माना था—इस्के स्थापक महाशय वेद के तत्व को भरपूर समझ गये थे और वेद को अपौरुषेय सिद्ध करने में कोई युक्ति नहीं छोड़ रक्खा—खान पान भक्ष्य अभक्ष्य

की शुद्धता और वर्णाश्रम के महत्व को सब भांत पुष्ट रक्खा—निस्सन्देह हाल में जितने संशोधक और देशोद्धारक हुये सबों से इन का नम्बर चढ़ा बढ़ा और इन के चलाये हुये मत के द्वारा देश का वास्तविक कल्याण है पर यदि आर्यसमाज वाले इन के उद्देश्य पर सच्चे मन से दृढ रहते और ब्रह्मसमाज की तरह ये लोग भी आर्यसमाज में शरीक होने को समाज बन्धन से मुक्त होने का ज़रिया इसे न मानते—ब्राह्मण भाग को आर्यसमाज के प्रचारक ने कल्पित और आधुनिक माना इसी से कर्मकाण्ड के बिरोधी हुये और कर्मकाण्ड जो ब्राह्मणमात्र की एक मुख्य जीविका है उन से विरोध का भी यही कारण हुआ और अब आर्यसमाज जितना खण्डन मण्डन में प्रवृत्त रह व्यर्थ अपना अमूल्य समय और बुद्धि को नष्ट कर रहा है उतना देश के कल्याण की बातों में नहीं जो इसके उदारचित्त संस्थापक की कदापि मनसा न थी—

अब रही छोटी सी एक और समाज जो अभी तक बहुत प्रख्यात नहीं है पर तथापि इसके स्वरूप को दर्साना बहुत आवश्यक है—इस समाज का नाम सन्तसमाज है कोई २ इसे कूड़ापन्थ भी कहते हैं इस मत के आदि और अन्त गुरू शिवदयालसिंह जी हैं—इनका मत है कि जो सीधा मार्ग ये बतलाते हैं वह संसार में आजतक किसी को नहीं सूझा ये मुक्ति का मार्ग श्रुति शब्द को मानते हैं परन्तु खेद की बात कि इसके प्रवर्त्तक कुछ पढ़े लिखे न थे पर ईश्वर के भक्त अलबत्ता थे—दूसरों से सुनी हुई बातों के साधने वाले थे इसी से इन्हों ने शब्द द्वारा मोक्षपाने का मार्ग अद्वितीय और अपना नया निकाला हुआ समझा—ये यदि स्वतः संस्कृत के प्रवीण पण्डित होते या किसी महात्मा विद्वान्के शिष्य होते तो यह इन का अहङ्कार इतना ज़ोर न पकड़ता बल्कि उपनिषद् को अपने मत का मूल आधार मानते—यह कहते हैं शब्द का ज्ञान पहले ही पहले कबीरदास को हुआ—इन का यह कहना कुछ २ सत्य भी है जहां तक इन्हों ने भाषा में पढ़ा तो योगविद्या पर लिखने वाले कबीर ही पाये गये पर यदि मैत्री उपनिषद् को आदि से अन्त तक पढ़ते तो कबीर को नहीं वरन मैत्री उपनिषद् को आदि में शब्द का ज्ञान देने वाला मानते—सन्तमतावलम्बी लोगों के हितार्थ मैत्री उपनिषद् की २१ वीं ऋचा ५ वां प्रपाठक में लिखा है—

अपरे शब्दवादिनः श्रवणाङ्गुष्ठयोगेनान्तर्हृदयाकाशशब्दमाकर्णयन्ति सप्तविधेयं तस्योपमा यथा नद्यः किङ्किणीकांस्यचक्रकभेकविःकृन्धिकावृष्टिर्निर्वातेवदतीति तं पृथग्लक्षणमतीत्य परेऽशब्देऽव्यक्ते ब्रह्मण्यस्ते गतास्तत्र तेऽपृथग्धर्मिणोऽपृथग्विवेक्या यथा सम्पन्ना मधुत्वं नाना रसा इत्येवं ह्याह—

द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये शब्दब्रह्म परं च यत्—
शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति—

यदि ये लोग इस ऋचा को जानते होते तो यह अहङ्कार इन्हे कभी न होता कि यह बिल्कुल नया मत और उन्हीं का निकाला है—ब्रह्मसमाज ने भी हिन्दूमत का इतना ,सत्यानाश नहीं किया जैसा यह सन्तसमाज कर रहा है इन लोगों ने श्रुतिस्मृतिप्रणीत हिन्दूधर्म का सब तरह पर लोप करडाला—इन के यहां न कोई वर्ण है न आश्रम है सब भांत स्वच्छन्द गुरु जो राधास्वामी के प्रतिनिधि हैं उस्का दरजा ईश्वर से भी चार अंगुल आगे बढ़ा है—गुरु चाहो जिस जातिके हों उन का जूठा खाने में मन में ज़रा भी घिन का दखल न होने पावे सन्त मत का सार है—जो आचार विचार हम लोगों में अपवित्र आत्मा के कल्याण का विरोधी है वही इन के यहां पवित्र और आत्मा का कल्याण करने वाला है—तात्पर्य यह कि आर्ष क्रम का ऐसी जल्दी सत्यानाश जैसा इस मत के द्वारा सम्भव है वैसा न ब्रह्मसमाज ने किया न आर्यसमाज ही कर सका—

यहां तक तो उपनिषदों के छिपे २ मानने वाले थे अब थोड़े से यूरोपनिवासियों का मत लिखना आवश्यक है—शेपनहार जो यूरोप का बड़ा भारी फिलासोफर था जिस्की फिलासोफी सब से अधिक प्रामाणिक समझी जाती है वह अपनी फिलासोफी में लिखता है कि सम्पूर्ण संसार में मूलग्रन्थ के अतिरिक्त कोई पुस्तक पढ़ने योग्य नहीं है और इस प्रकार मूलग्रन्थ के समान और कोई दूसरी पुस्तक आत्मा का कल्याण करने वाली और ईश्वर से मिला देने वाली नहीं है—इसका पढ़ना मेरे जीवन का सहारा था और मेरी मृत्यु का भी सहारा होगा—हिन्दुस्तान का वेदान्तमत जो उपनिषदों का सारांश है

जल्दी या देर में संसार की समस्तजाति का धर्म होने वाला है—फिर शेपन हार साहब लिखते हैं भारतवर्ष में इसाई धर्म कदापि जड़ नहीं पकड़ सक्ता क्योंकि मनुष्यमात्र का प्रथम ज्ञान गेलली की थोड़ी सी घटनाओं से कभी नहीं मिट जा सक्ता बल्कि इसके विरुद्ध हिन्दुस्तान के इसप्रकार के ज्ञान का प्रवाह किसी समय समस्त योरोप भर में बहेगा और यहां की बुद्धि और समझ पर पूरा असर पहुंचावेगा—

श्रीमान् भट्ट मोक्षम्यूलर अपने उपनिषद् के प्रस्ताव में लिखते हैं कि ये पुरानी कहावतें उपनिषद् इस कारण सुरक्षित रहीं कि यह इस तरह सत्यज्ञान से पूर्ण हैं कि भुलाई नहीं जासक्तीं—इन का मत है कि उपनिषद् हर एक जमाने में और हर एक मुल्क में संसार के साहित्य में वह प्रतिष्ठा पावेंगी जो साधारण मानुषीबुद्धिकृत साहित्य को अति दुर्लभ है वरन मनुष्य की साधारण बुद्धि में उन का मर्म आना ही दुष्कर है—

पढ़ने वाले अब जान गये होंगे कि उपनिषद् क्या वस्तु हैं—निस्सन्देह ये उपनिषद् उस सर्वनियन्ता सर्वेश्वर सर्वाधार जगदुत्पादक के दया की पताका हैं जिसने मनुष्यों को अल्पज्ञ जान अपना ज्ञान विमलान्तःकरण महर्षियों के द्वारा प्रकट किया—ये ईश्वर के बताये हुये ज्ञान के वे भाग हैं जो केवल मोक्ष ही से सम्बन्ध रखते हैं—इस्में परमार्थ के अतिरिक्त धर्म अर्थ काम से कुछ सरोकार नहीं है क्योंकि इन तीनों का साधन मनुष्य प्रथम के ३ आश्रमों में ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ दशा में कर लेता था तब चतुर्थ आश्रम संन्यस्त हो इस ज्ञान का साधन करता था—जिन लोगों ने उपनिषदों को पढ़ा है वे जान सक्ते हैं कि कैसे लोग इस ज्ञान के अधिकारी हैं—उस समय छापा नहीं था कि उपनिषदों की जिल्द सबों को सुलभ होती उस समय इसके सत्य वाक्यों की ऐसी दुर्दशा न थी जैसी आज कल हो रही है जैसा बाबा तुलसीदास कहते हैं "नारिमुई घर सम्पतिनासी। मूड़ मुड़ाय भये संन्यासी" ये मुयेनिगोड़े अबधूत मुछन्दर के पूत सेरों राख लगाये सनसी चमचा हाथ में लिये जटा बढ़ाये आलस्य और अपुरुषार्थ की शकल बने हिन्दुस्तान के दुर्दिन का पूरा सामान मुहैया किये गलियों में सांड ऐसे बिचरते फिरते हैं जहां देखो यही उपदेश दिया करते हैं बच्चा यह संसार मिथ्या है रामभजो सब काम तजो इस प्रकार

पेट के लिये भाड़ों की तरह नकल करते आवारा डोला करते हैं—उपनिषदों के महावाक्य इन कुपात्रों के हाथ पड़ने से भारतवर्ष की देवभूमि नरक तुल्य होगई—उन उपनिषदों ही में लिखा है कि कुपात्र के हाथ में पड़ने से प्रतिपादित ज्ञान मुक्ति नहीं बरन नरक पात का कारण होता है सो सत्य ही देखने में आया—श्वेताश्वतर उपनिषद् का वाक्यहै—

"एतद्गुह्यतमं नापुत्राय नाशिष्याय नाशान्ताय"

इससे मालूम होता है कि पूर्वकाल के ऋषियों की कदापि यह आज्ञा नथी कि कुपात्रों को यह महाविद्या बताई जाय जब तक वे इसके योग्य न समझे जांय—ये उपनिषद् समस्तभूमण्डल के भूत भविष्य वर्तमान धर्मों का आदि कारण हैं—योग और वेदान्त इसी की शाखा हैं जिस योगाभ्यास के विना शुष्कवेदान्त सत्यानाश हो जाने का एक लटका होता है—प्रच्छन्न बौद्ध वे ही वेदान्ती हैं जिन का योग के साथ कोई लगाव नहीं है और न उन्में शान्ति का लेश भी पाया जाता है—ब्रह्मसमाज आर्यसमाज सन्तसमाज इन्ही उपनिषदों के नुसखे हैं—अन्त में यह कहना आवश्यक है कि उपनिषद् में जो ज्ञान हैं वह यदि मनुष्यकृत है तो इस १९ वीं सदी तक जो ईश्वर का ज्ञान किसी देश या किसी मजहब में हुआ वह सब असत्य है न ईश्वर की ओर से किसी को अब तक ज्ञान दिया गया है और न कभी किसी को दिया जासक्ता है—नास्तिकों को चाहिये खूब ढोल बजाय तान गावें उन की विजय हुई ॥

एक सत्यधर्म का निर्णेता—

बंकों का दिवाला—

आज कल इधर वर्ष दो वर्ष के बीच बंकों के दिवाले की कुछ ऐसी धूम मच गई है कि कुछ समझ में नहीं आता कि हिन्दुस्तान की क्या दुर्गति होन हार है ऐसे समय जब सर्कारी टैक्स ओर छोर को पहुंचा हुआ है गिरानी की ओर खयाल करो तो यही मालूम होता है कि यह दुर्भिक्ष हिन्दुस्तान की नस २ ढीला तो करी दिया है अब कदाचित् हम सबों को जीता छोड़ै या जल्द काम तमाम करै—ऐसे समय यदि कोई भलामानुस ने रोजमर्रे के खर्च में किफायत कर सख्त मेहनत के बाद दो चार वर्ष में कुछ रुपया जोड़कर सूद के लालच

किसी बंक में जमाकर दिया पीछे से बंक का दिवाला पिटगया तो अब उस बेचारे के लिये इस बेमौत मरने का कोई इलाज नहीं रहता—सैकड़ों घराने इस समय यूरोपियन और हिन्दुस्तानियों के भी बड़ा हाहाकार मचाये हुये हैं इधर देखते हैं तो कोई महीना खाली नहीं जाता कि अखबारों में न छपता हो कि कोई न कोई बंक टूटा—पहले किसी को सपने में भी यह खयाल नहीं होता थाकि बंकों के भी दिवाले निकलते हैं इसी से रुपया गाड़ रखने का पुराना क्रम यहां के लोग गछोड़ बंकों में जमाकरने लगे और यही समझा कि घरमे रखने से बंक में विशेष सुरक्षित रहेगा और ब्याज भी मिलेगा—पर यूरोप के लोग जैसा सब बात में हमे बेवकूफ बनाते आये इस "बांकिंग सिसटेम„ में भी वैसा ही किया—थोड़े से ऐसे लोग जो विलाइत में सिविलसरविस या बैरिस्टरी न पास कर सके और कोई वसीला रोज़गार का न मिला तो हिन्दुस्तान को अपने किस्मत के सुधारने का एक उत्तम क्षेत्र समझ यहां किसी बड़े शहर में पहुंच अपने दो चार मित्रों से कुछ मदत और सहारा पाय लम्बे २ विज्ञापन छपवाय शहर २ विदित कर दिया अमुक २ बड़े २ लोग शरीक हैं रुपये को हर तरह पर हिफाज़त और ब्याज का फाइदा है—इन बंकों के लिये "रिज़र्व फंड„ एक ऐसा फुसलाने वाला लफ्ज़ है कि लोग धोखे में आय जिन्हों ने सिवा उस छपे हुये विज्ञापन के और कुछ भीतरी हाल नहीं जाना हिस्सेदार और "डिपाज़िटर„ अर्थात् जमा करने वालों के नाम से रुपया भेजने लगे—कुछ रोज तो बंक राम खूब चले चालाकों की चालाकी खूब कारगर हुई रुपैया खातिरखाह जमा हो गया तब एक नई कारवाई शुरू कर दीगई कि कर्जदारों के नाम से बंक वाले खुद अपने दोस्त और रिश्तेदारों में वह पराया धन कर्ज़ देने लगे जिसकी बाज़ार में एक पैसे की भी मातबरी नहीं है उसे किसी २ बंक ने ५० हजार तक दे दिया है—कोई २ बंक के मेनेजर ने यह भी अपना दस्तूर बांध रक्खा है कि कुछ कमीशन देने पर कर्जा दिया जायगा और कमीशन को लालच से मेनेजर साहब बिना खूब ठोंके बजाये भी रुपया दे दिया करते हैं—परिणाम इसका यही होता है कि जबतक हिस्सेदारों का रुपया बना रहा बंक चलता रहा जिस दिन कुल रुपया कर्ज़ में फंस गया चिराग गुल पगड़ी गायब—हिस्सेदार बेचारे आधे तिहाई पर मामिला करने लगे—गवर्नमेंट ने बड़ा काम किया

तो किसी दूसरे बंक को उस दिवाला निकले हुये बंक का "लिक्वीडेटर" ऋण-शोधक नियत कर दिया अब यह ऋणशोधक बंक अपने बचाव के लिये और उस दिवालिया बंक का भेद जिसमे न खुले उस की खराब हालतों पर धूर डाला चाहते हैं—इस ढंग पर देखते ही देखते पंजाबबंक अनकवनेंटेड सरविस बंक आगरा सेविंगबंक रूहेलखंड कमार्शलबंक हिमालाबंक और अभी हाल में मंसूरीबंक के दरवाज़े बंद हो गये—गवर्नमेंट ने ऐसे सहल और सीधे कानून इन बंको के संबन्ध में बनाये हैं कि कोई इनका कुछ नहीं करसक्ता जब कि यूरोप या आस्ट्रेलिया और अमरिका में यह एक अत्यन्त दुर्घट है कि इस तरह पर दिवाला निकल जाय और बंक के अधिकारी जेल का मुह न देख यहां वालों के समान मोछे पर ताव देते बैठे ही रहैं—हमारे भूतपूर्व लाट साहेब सर आकलेंड कालविन जिन्हो ने डफरिन फंड और वाटरवर्क्स से कभी छुटकारा ही न पाया तब इन दिवालिये बंकों के अधिकारियों की कुछ खबर लेना तो उनके लिये दुर्घटही था—नये लाट साहब को हम फिर भी धन्यवाद देते हैं कि हाल में हिमाला बंक के अधिकारी को फौज़दारी सिपुर्द किया और मेनेजर मिसटर मास के गिरफतारी के लिये वारेन्ट आस्ट्रेलिया भेजा गया है—

ईश्वर भी क्या ही ठठोल है—

लोग कहेंगे इसे कुछ खफगान हो गया है या इस उन्नीसवीं सदी के फेशन के अनुसार नास्तिक बनने का हौंसिला चर्राया है जो उस अगम अपार अणोरणीयान् महतो महीयान् के शान में भी ऐसी बेअदबी और ढिठाई के साथ कुफ्र का कलमा कह रहा है—जो हो पर मुझे तो बहुत से अस्तव्यस्त कारखाने देख कुछ ऐसा ही जी में भ्यासती है कि वह यातो कुंभकरण का जेठा भाई बनने की हवस बुझाय रहा है या यदि यही सब अस्त व्यस्त कारखाने ईश्वरता के निदर्शन हैं तो वह घनघोर नींद में सो रहा है—या जागता है तो कोई बड़ा ही ठठोल दिल्लगीबाज मसखरा है नहीं तो बेफिक्र और असावधान होने में तो कोई शक्कही नहीं है—जिस कसौटी परिभाषा और सूत्र के अनुसार हमलोग आपस में एक दूसरे को जांचते और परखते हैं वही परिभाषा यदि वहां भी लगाय उसे परखें तो उन के ईश्वरता की सब कलई खुल जाय

और दुनिया के हालात देख अवश्य चित्त में यही समाय कि वह कोई बड़ा ही अनोखा खेलबाड़ी है—सब भांत स्वतन्त्र आप एक बड़ा नट नागर बना बैठा है और इस संसार को एक नाट्यशाला की रंगभूमि बनाय जैसा चाहता है वैसा खेल खेला करता है—भलायह मसखरापन नहीं तो और क्या है कि—मनुष्य एक तो निपट परतन्त्र उस्में भी उसका मन ऐसा नाज़ुक और कमज़ोर करदिया गया पर मुकाबिले के लिये लड़ाई इसकी उन दुर्घट अजेय विषयवासना के साथ ठान दीगई जो शिकारी जानवरों की तरह सबी इसे अपने कब्ज़े में लाय नष्ट भ्रष्ट किया चाहते हैं और इन लुटेरों से बचने के लिये जो सिपाही विवेक इसके साथ कर दिया गया है वह न जानिये किस अन्धे ताखाने में पड़ा २ सोरहा है कि प्रतिक्षण मन बेचारे पर क्या २ आफतें आती रहती हैं विवेक अलमस्त बेपरवाह को खबर तक नहीं होती—इसपर तुर्रा यह कि सब तरह कैद में पड़े हमारे मन को कोई इखतियार हासिल नहीं कि विवेक से कुछ कह सके जिसका चेतना और जग उठना कभी को आकस्मिक घटना कभी को निरन्तर के अभ्यास सत्संग या सत् शिक्षा पर निर्भर है—कभी को ऐसा भी होते देखा गया है कि मन सब ओर से लाचार और शोक मोह के शिकंजे में अत्यन्त ही कसा हुआ होकर विवेक का शरण ढूंढने लगता है—तात्पर्य यह कि ये जितनी बातें हैं वे सब मनुष्य की शक्ति के बाहर हैं जिसपर उस बड़े नटनागर की कृपा हुई या जिसे उसने चाहा कि अपने खेल खेलौने से बरी करैं उसके चित्त में विवेकभानु का प्रकाश कर दिया गया नहीं तो निर्विवेकियों को पद २ में गिरते पड़ते लड़खड़ाते देख आप बैठे २ खिल खिलाया करता है और अपनी ठठोलबाज़ी को खूब तरक्की देता जाता है—और आगे बढ़िये कितने गरीब भुक्खड़ कुटुम्बी दाने दाने को तरसते हुये सबेरे से सांझ तक गाढ़ी मेहनत के उपरान्त इतना भी नहीं पाते कि कुटुम्ब को मन मानता पालसकैं आज घी है तो तेल चुक गया लकड़ी है तो नोन का टोटा है—इधर एक लड़का पड़ा २ भूख २ चिल्ला रहा है उधर दूसरा दूध बताशे के लिये मचलाया हुआ है—घट २ की सब बात जानने वाला विश्वव्यापी विश्वंभर कहला कर भी ज़रा नहीं शरमाता बरन पड़ा २ ताकता हुआ मनीमन प्रसन्न फुटेरा होता जाता है—उधर एक वज्र मूम के पास एकबारगी मनमाना असंख्य धन कुबेर दिया गया

जिस्का विलसने वाला भी ठूंठे पेड़ के माफिक "स्तम्बेन नीवार इवावशिष्टः" सिवा उस सूम के दूसरा कोई नहीं है कि इस्के मरने बाद उस धन को काम में लावेगा जब तक जिया अत्यन्त कदर्यता के साथ जिन्दगी काटा किसी को कुछ देना तो सीखा ही नहीं अपने खाने पहनने में भी किफायत करता रहा—यहां तक कि चन्द्रा लगने का समय आगया प्राण शरीर से प्रयाण किया चाहते हैं पर रुपया जमा करने का खयाल दूर न हुआ—उस समय भी रामराम कहने के पलटे हाय रुपया हाय रुपया कह कर तन त्यागा—यह बैठा २ उस कृपण की सब लीला देख २ हंसा किया जिस्के लिये गरीब कुटुम्बी जन्म भर तरसा किया वह धन यहां दान भोग के विना व्यर्थ और निष्फल पड़ा है क्या इसी को सावधानी और न्याय कहेंगे—

मसल है "जबरा मारै रोवै न दे" हाड़ वही मास वही चाम वही लहू वही "तुम कत बाह्मन हम कत सूद—हमरे लहू तो तुम्हरे दूध"—तब यह जित और जेता का भेद कैसा तुम्हे जेता किया हमें जित क्यों कर दिया—हमने ऐसा क्या अपराध किया कि सैकड़ों वर्ष से भुगतमान भुगतते चले आते हैं और अब तो वह दशा आलगी है कि जीवन उभारू हो रहा है तब भी उस ठठोल के मन में ज़रा दया और इनसाफ जगह नहीं पाता—हमारे किसान मर २ पच २ करोड़ों मन गेहूं पैदा करैं वह यदि सब का सब हमारे काम में आवै तो चुकाये न चुकै पर गेहूं खेत में रहता है तभी रेलीब्रदर के कारिन्दे गांव २ घूम खेत का खेत चुकता कर लेते हैं हम मुह ताकते रह जाते हैं फसल पर भी बारह सेर तेरह सेर से आगे नहीं पा सक्ते इसी को दया और इन्साफ कहैंगे—काबिल की पहाड़ी धरती में मेवा पैदा कर देना और ब्रज की उर्वरा भूमि में कटैली करील का जन्म—पढ़े लिखे विद्वानों को निर्धनी मूर्ख निर्बुद्धी को धनीपात्र गुलाब के फूल में कांटा—सुपात्र सुयोग्य को एक कुकाला भूतिन—सर्वांगसुन्दर स्वच्छ हिन्दी को जलावतन—परेतिन की शकल जाल और फरेब से भरी उर्दू को पश्चिमोत्तर की अदालत में स्थान दान—इत्यादि सब उस्का ठठोलपन नहीं तो और क्या है—

दमयन्ती-स्वयंवर-नाटक ॥

५ अङ्क-

स्थान

स्वयम्बरकी रंगभूमि—

एक ओर से सुलक्षणा दूसरी ओर से विचक्षणा दमयन्ती की दो सखियों का प्रवेश-

सुलक्षणा—सखी! आज तो तू ऐसी प्रसन्न है कि फूली नहीं समाती कह प्रिय सखी दमयन्ती का मनोरथ सफल भया—भगवान् करे जैसा हमारी प्यारी सहेली दमयन्ती की मनकामना पूरी भई वैसा सब को हो—भला यह तो बता इन देश २ के राजाओं में हमारी प्रिय सखी के प्राणधन भी तो आये होंगे-

विचक्षणा—यही देखने को मैं उस्के विना कहे यहां आई हूं कि चल कर पहले से उस्को सुसमाचार सुनाऊं और मन माफिक पारितोषिक पाऊं-

नेपथ्यमे—हमारे महाराज भीम को बड़ी शङ्का थी कि ऐसा एक सर्वज्ञ कहां से लाऊं जो इन दूर २ देश के आये राजे महाराजाओं का सब हाल जानता हो और जो स्वयम्बर में आई हुई दमयन्ती को उन २ महापुरुषों के सब चरित्र सुनाय उसे अलग २ एक २ के वृत्तान्त से जानकार कर दे-इस लिये ब्रह्मा जी ने वाग्देवी सरस्वती को आज्ञा दी है कि पृथक् २ एक २ के कुल शील बल और प्रभाव को देवी जैसा तुम जानती हो वैसा दूसरा कोई कहीं जान सक्ता है?—इस लिये दूसरा अवसर तुम्हें बावदूक बनने का अब और कहां मिलसक्ता है?—पण्डितों से मण्डित तीनो जगत् में न ऐसा समाज कभी हुआ है न फिर आगे को होनहार है इस लिये स्वयम्बर में प्राप्त सज्जन शिरोमणि सत्पुरुषों के चरिताख्यान के द्वारा अपनी वाक्पटुता को सफल क्यों नहीं करती यह समय तेरे मूक बने रहने का नहीं है—सो ब्रह्मा की आज्ञा शिर से धारण कर आप सर्व लोगों को अपने पवित्र दर्शन से कृतार्थ करती हुई सरस्वतीदेवी यहां आ रही हैं सब लोग सावधान हो जाओ—सच है जो भाग्यवान् हैं और सत्पथ पर चलते हैं उनकी सहायता देवता भी करते हैं—महाराज भीम को सुमार्ग में आरुढ़ देख ब्रह्मा भी उनके सहायक हुये—

(सरस्वती का प्रवेश—नेपथ्य में जयध्वनि)

सुलक्षणा—(विचक्षणा को रोक)

प्यारी ! ठहर सरस्वती के दर्शन सुख से लोचनों को पवित्र कर मैं भी तेरे साथ चल प्रिय सखी को सुसंवाद सुनाय मन माना पारितोषिक के लिये आज झगड़ूंगी—प्यारी देख हाथ में वीणा पुस्तक लिये सकलविद्यामयी सरस्वती देवी इस पण्डितमण्डिता सभा को अपने दर्शन से कृतार्थ करने को आरही हैं—मैं अपढ़ अबला इस के नखसिख का वर्णन भला क्या कर सकूंगी—ऐसा मालूम होता है कि अक्षपाद और कणाद दोनों इसके पादपद्म कीसेवा में लगे हैं—इन्हीं चरण कमलों की सेवा से व्यास बिन प्रयास अठारहो पुराण को गढ़ डाला—गुणाढ्य कवि भी गुणो में आढ्य यथा नामस्तथागुणः इसीसे हुये—भवभूति को कवित्वविभूति का लाभ इसी की सेवा का फल है—इन्हीं श्रीचरणों की कृपा से श्रीहर्ष विद्वन्मण्डली को अपनी कविता से हर्ष देने वाले हुये—इन चरणों में मत्स्य कूर्म पद्म आदि रेखा के चिन्ह पुराणों का स्मरण दिलाते हैं—ज्ञानकाण्ड और कर्मकाण्ड में बढी हुई श्रुतियों के दो भाग के विचार में तत्पर मीमांसा शास्त्र पूर्व और उत्तर दो तरह का होता हुआ मानो इसके दोनो ऊरू हैं—इसकी पतली कमर वल्लभ के अणुवाद या बौद्धों के शून्यवाद कीयाद दिलाती है—इस कृशोदरी के उदर में त्रिवली की ३ रेखा ऋग् यजु साम के भेद से वेदत्रयी होगई उसी त्रिवली से लगी हुई रोमावली नीचे को उतरती हुई मानो अथर्ववेद की अभिचारकी क्रिया के रूप से फैली हुई है—गद्य पद्य की दो रचना उसके दोनों उरोज हैं—मृडालकमनीय भुजा छन्दःशास्त्र के दो भेद हैं जिसका एक भेद मात्रावृत्त जिसमें लघु और गुरु की गिनती से मात्रा रक्खे जाते हैं दूसरा वर्णवृत्त जिसमें लघु और गुरु से कुछ प्रयोजन नहीं केवल उतने अक्षरों ही से यति पूरी कर दी जाती है—दोनो तरह के छन्द में आधे श्लोक पर जो विश्राम होता है वही इसकी केहुनियां हैं श्लोकार्द्ध के विश्रामरूप से गांठ सी देखाई देती हैं—पाणिनि पाणिपल्लव और पतञ्जलि हांथ की अंजुली पर न्यौछावर हैं—कला और विज्ञान जो अब लों नये २ नाम और रूप में प्रगट होते जाते हैं इसके असंख्य रोमकूप हैं—कम्बुकण्ठ में राग रागनियों का झुंड साथ लिये सातों स्वर प्रत्यक्ष हो रहे हैं—भूगोल और खगो-

लविद्या इसके दोनों गोल कपोल हैं—भालपट्ट की ३ रेखा कैयट और विवरण सहित मानो त्रिवली भाष्य हैं—रूपक और उपमा में तुल्ययोगिता प्रगट करते हुये कटाक्षपात मानो समस्त साहित्य की उत्प्रेक्षा दे रहे हैं—परस्पर सवर्ण दीर्घ कान तक फैले विशाल नेत्रों में चिकने और कोमल रेशम के गुण वाले वृद्धिंगत केशों में शब्दशास्त्र की समग्र सामग्री झलक रही है उन बालों में जो ठौर २ फूल गुथे हैं सो मानो जलतुम्बिकान्याय से रेफ का ऊर्द्धगमन किया गया है—धनुष के आकार दोनों भौं वाद में एक दूसरे को परास्त करने की इच्छा रखते हुये वादी प्रतिवादी हैं बिम्ब से लाल होंठ उन वादी प्रतिवादियों के पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष हैं—ज्योतिर्विद्या के आश्रय अश्विनी आदि नक्षत्र मोती-रूप में हो इसका हार हैं सूर्य ग्रह और तारागण के अधिपति हैं सोई मानो उस हार में लाल मानिक का सुमेर जड़ दिया गया है—जगत् को शिक्षा देने वाला जो इसका शुद्ध चरित्र सोई शिक्षा है प्रसाधनसामग्री जिससे इसके एक २ अंग की शोभा में सौन्दर्य मानो चुआ सा पड़ता है सोई कल्प है जो ऋषियों के बनाये अनेक गृह्यरूप से ग्रहण किये जाते हैं इस लिये इसके एक २ अङ्ग में अलग २ वेद के षडङ्ग प्रकाश दे रहे हैं—षोडश दांतों की पंक्ति षोडश पदार्थवादी न्यायशास्त्र के १६ पदार्थ हैं उद्देश्य और लक्षण के भेद से दो प्रकार के हैं इसलिये उन सोलह सोलह दांतों की दो पंक्ति होगई हैं—रोरी का गोल बेंदा के समान ओंकार लिलार पर शोभा दे रहा है ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं इत्यादि बीजमंत्र पत्रावली के भांत कान के आभूषण हो रहे हैं—घूंघुर वाले केशों में अलकावली सन्धि विग्रहरूप से राजनीति की कुटिल नीति सब ओर मानो बिखर रही है—सुलक्षणा! मैं कहां तक इसके रूप और गुणों का बखान करती रहूं सौ वर्ष की पूरी आयु में भी नहीं चुक सक्ते—

(नेपथ्य में नकीब की आवाज़) महाराज भीम नरेन्द्र के सुकृत का पुंज ललाम ललनाओं की मुकुटमणि राजदुलारी दमयन्ती स्वयम्बर के लिये जारही है हटो २ बचो—

विचक्षणा—(सुनकर) प्यारी हो राजदुलारी तो आ गई चल आगे से उन से चल कर मिलें—(दोनों गईं)—

दमयन्ती का प्रवेश—दाहिनी ओर सरस्वती बांई ओर दोनों सखी—बीच सभा में आकर—

सरस्वती—राजकुमारी ! देख यह देवताओं की पंक्ति बैठी हुई है जिसमें एक से एक सुयोग्य रूपवान् गुणवान् सुजान विद्यमान हैं जिनका पूरा वर्णन सौवर्ष लौं करती रहूं तो भी पूरा न पड़े—इन्में किसी एक को वरले जिसपर तेरा चित्त चला हो—इन देवताओं के घर २ में कल्पवृक्ष लगा हुआ है इन्में से किसी एक को भी वरलेगी तो कल्पवृक्ष सदा तेरे आधीन रहेगा और तेरे लिये कोई वस्तु अलभ्य और अप्राप्य न रहेगी—

(दमयन्ती सिर से प्रणामपूर्वक अवज्ञा की क्षमा प्रार्थना करती हुई आगे चली)

सर०—(स्वगत) आगे यह गन्धर्वों का समाज बैठा है इन्में इसके मधुरस्वर की कहीं गन्धि भी नहीं आई तब यह इन्हें क्या वरैगी जो मैं इन के वर्णन से वृथा समय नष्ट करूं (और आगे देख) यह यक्षों का समाज एकत्र है—अनेक दीन अकिंचनों के रहते भी ये लोग अपरिमित धन का सञ्चय किये हुये उसकी रखवाली कर रहे हैं इसलिये संसार में यक्षधन की कहावत का खयाल कर ये लोग लाज के मारे अपना मुख भी राजकुमारी के सामने नहीं करते तब इन का वर्णन मैं क्या करूं—(आगे चल)—

यह नागराजवासुकी हैं जो सदाशिव के यज्ञोपवीत होने की पदवी पाये हुये हैं—सर्प की जाति दो जीभ वाली होती है एक जीभ से महादेव के मस्तक पर चन्द्रमा में जो अमृत है उसका स्वाद ले दूसरी से तेरे अधर में जो अमृत है उसका स्वाद लै बतला सकेंगे कि उस अमृत और तेरे अधरामृत में क्या अन्तर है—इस बात की भय मत कर कि यह विषधर है क्योंकि वहां विष है तो तेरे होठों में उसका प्रतिविष अमृत भी तो है—(स्वगत) इसके फणों को देख जान पड़ता है डर गई क्योंकि कांप रही है और पसीना इसके सर्वाङ्ग में हो आया है—(आगे चल) दमयन्ति ! यह शाकद्वीप की धरणी के मण्डन हैं—इसके चलने के समय वन्दीजन जो कुछ शब्द इसकी प्रशंसा में प्रयोग करते हैं वे यहां तक चुक गये हैं कि अब मैं नया शब्द इस के लिये कहां से लाऊं जो कुछ कह सकूं किन्तु जो कुछ कहा जायगा वह सब पुनरुक्ति की भांत पिष्टपेषण

मात्र होगा—मान्य और वदान्य होने के लिये जितने असामान्य गुण होने चाहिये किसी की कमी यहां नहीं है कमी है तो केवल इतनी ही (धीरेसे हंसकर) कि नल ये दो अक्षर इसके नाम को सुशोभित नहीं करते (आगे चल) देख यह क्रौंचद्वीप के नरेश हैं इसके राज्य में एक क्रौंच नाम का विख्यात पर्वत है जिस क्रौंच पर्वत को तेरे पादसंचार से अपनेको कृतार्थ करने की बड़ी आकांक्षा है—जहां के उपवनों में विहार करती हुई क्रौंच पक्षियों का मधुर कूजित सुन तू बड़ी प्रसन्न होगी वहां क्रौंचेश्वर महादेव के पूजन से तुझे यह लाभ होगा कि फिर गर्भवास का क्लेश न सहना पड़ेगा—(इसपर दमयन्ती का अनुराग न देख स्वगत) सच है जिसके अभीष्ट साधन में दैव प्रतिकूल है उसके लिये कितनी ही चेष्टा करो कुछ उपकार नहीं होता (आगे चल) (स्वगत) ये सब प्लक्ष कुश शाल्मली इत्यादि द्वीपों के राजा तथा और २ द्वीप द्वीपान्तर के भी नरपति अपने वित्त अनुसार सजे बजे बैठे हैं इन सभों को यह काहे को बरैगी—(आगे चल) राजकुमारी ये उसी जम्बूद्वीप के राजा हैं जिस द्वीप की रत्नभूता होकर तुम जन्मी हो—ये सब उसी जम्बूद्वीप के राजा लोग सुशोभित हैं बतला इनमें तू किसे अपने लिये चुना चाहती है उन्हीं के वर्णन को मैं विशेष पल्लवित करूं—यह देख समस्त गुण गणों के विश्रामस्थान अवन्तिनाथ हैं इसके वरने को तेरा चित्त चाहता है ?—इसकी पट्टरानी हो जब तू सिप्रा नदी में जलविहार करेगी तो सिप्रा तुझे लहररूपी हाथ से रहस्य सखी के समान आलिंगन करेगी—महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दरस परस से तू कृतार्थ हो जायगी और महाकालेश्वर के शिर पर चन्द्रमा है इस लिये अंधेरी रात में भी तुझे उंजाले की कमी न रहेगी—(स्वगत) इसकी ओर तो इसने देखा भी नहीं (आगे चल) देख यह काशी नरेश हैं जिस काशी में बड़े २ पापी भी मरणसमय आकर सम्पूर्ण पाप से मुक्त हो मुक्ति के अधिकारी होते हैं—रूप और लावण्य में कन्दर्प का दर्प हरने वाले इसमें यदि तेरी श्रद्धा न हो तो मैं क्यों वागाडम्बर से व्यर्थ समय नष्ट करूं—

युद्धयात्रा के समय जब इसके सवार चलते हैं तो उन के घोड़ों की टाप से जो धूल उड़ती है वह आकाश में ऐसा छाजाती है मानो निरावलम्ब चलते हुये सूर्य के घोड़ों का सहारा देने को एक दूसरी पृथ्वी बन गई है—(इसकी

ओर दमयन्ती को उदासीन मुद्रा देख आगे चली) शरण चाहने वालों को शरण देने वाला महाबली प्रजा को पुत्रवत् लालन पालन से प्रसिद्ध परन्तप नाम का यह मगध का राजा है—यद्यपि अनेक राजा महाराजा इस भूमण्डल में हैं पर पृथ्वी अपने को रत्नवती इसी से मानती है अनेक ग्रह उपग्रह और तारागण रात को जुगनू से चमका करते हैं पर उंजाली रात चन्द्रमा ही से कहलाती है—इन्हों ने इतने यज्ञ किये हैं कि बार २ इन्द्र के यज्ञ में आने से इन्द्राणी सदा प्रोषितपतिका बनी रहीं और पति परदेस रहने के कारण जो केश का शृङ्गार न कर सकीं इससे कल्पवृक्ष में जो फूल फूलते रहे वे सब व्यर्थ ही पड़े रहे—युद्ध में वीरता इसकी यहां तक प्रसिद्ध है कि शत्रुओं की स्त्रियों को इसने आसुओं के बूंद के बहाने से मानो बेगुन का मोतियों का हार पहिना दिया—लक्ष्मी और सरस्वती का परस्पर विरोध है जहां एक रहती है वहां दूसरी पांव नहीं रखती पर इसमें दोनों एक साथ बहुत ही हिल मिल के रहती हैं आशा है तू पटरानी हो उन दोनों पर प्रभुता करेगी (स्वगत) इसमें तो किसी बात की कसर नहीं है तब यह इसे क्यों नहीं बरती क्या किया जाय मनुष्य की भिन्न २ रुचि पर किसी का अधिकार नहीं है (आगे चल) देख यह मथुरा के राजा हैं इसके अन्तःपुर की स्त्रियां जब यमुना में स्नान करती हैं तो उन के स्तन में चन्दन के धोजाने से यमुना गङ्गा कीसी आभा धारण कर लेती हैं और मथुरा ही में प्रयाग होजाता है—

कालीनाग गरुड़ की डर से यहां आय बसा था सो भगवान् कृष्णचन्द्र ने जब उसका दमन कर उसे यहां से अलग किया था तब वह अपना मणि यहीं छोड़ गया था उसी मणि को धारण किये यह कौस्तुभमणि पहिने विष्णु को भी लज्जित करता है—इसे यदि तू बरैगी तो कुबेर का बगीचा चैत्ररथ से कुछ थोड़ा ही कम वृन्दावन में फूल के हिंडोले पर झूलती हुई बन की शोभा निरखती अपने नवयौवन को सफल करैगी—ठौर २ स्वच्छ झरने के जल से धोई हुई गोवर्द्धन की शिलाओं पर बैठी मोरों का नृत्य देख अत्यन्त प्रसन्न होगी (स्वगत) इसकी चेष्टा से मालूम होता है मेरा यह सब कहना इसके चित्त में सर्वथा स्थान नहीं पाता जैसा सूर्य का दर्शन न पाय सोलहो कला पूर्ण चन्द्रमा के उदित होने पर भी कमलिनी विकसित नहीं होती—

कण्ठ से चरण तक लटकती हुई माला पहिने यह पाण्ड्य देश का राजा है इसके साथ विधिवत् पाणिग्रहण होने से समुद्र को कर्धनी की जगह धारण किये हुये दक्षिण दिशा की तू सपत्नी होगी इसने शिव जी से शस्त्रविद्या सीखी है इसलिये मानो रावण को भी इसके साथ मेल कर तब दिग्विजय के लिये प्रस्थान करना पड़ा—लाइची की लता जिस्में लिपटी हुई हैं ऐसे चन्दनवृक्षों की छायायुक्त मलयाचल की पर्वतस्थली पर विहार करने का तेरा जी चाहता है?—इन्दीवर सदृश श्याम इसका शरीर है और तुम्हारे अंग प्रत्यंग गोरोचन सदृश गौर हैं इसलिये तुम दोनों का योग परस्पर एक दूसरे की शोभा को वैसा ही बढ़ा देगा जैसा बिजली से बादल और बादल से बिजली की शोभा होती है—

विचक्षणा—(सरस्वती को रोक कर) बकते २ थकगई होगी एक बीड़ा पान खा कुछ आराम करले तब आगे बढना अभी तुझे बहुत कहना है (पान की बीड़ी देती है— (शेष आगे)

लोकोक्ति कथासरित्सागर से—

अकालमेघवद्वित्तमकस्मादेति याति च ।

कुसमय के मेघ के समान धन आता है और चला भी जाता है—

अक्षोभ्यतैव महतां महत्वस्य विभूषणम्—

काम पड़ने पर क्षोभ का न होना ही बड़े लोगों में बड़प्पन का ज़ेवर है—

अचिन्त्यं शीलगुप्तानां चरितं कुलयोषिताम् ।

शील से सुरक्षित कुलाङ्गनाओं के चरित्र को कौन जान सक्ता है ?—

अचिन्त्यं हि फलं सूते सद्यः सुकृतपादपः ।

सुकृतवृक्ष में जल्दी ऐसा फल फलता है जिस्का कभी खयाल भी नहीं रहता—

अचिन्त्यो वत दैवेनाप्यापातः सुखदुःखयोः ।

सुख या दुःख का सहसा आजाना दैव से भी नहीं जाना जासक्ता—

अजानतो हठात्कुर्वन् प्राज्ञमानी विनश्यति ।

जो बुद्धिमान् नहीं हैं पर अपने को बुद्धिमान् मानता है वह जल्दी में आय यदि कोई काम कर गुज़रता है तो उस का विनाश हो जाता है ॥

अतर्क्या कूट्टिनीकूटरचना हि विधेरपि—

कुट्टिनी की कूट रचना को ब्रह्मा भी नहीं जान सक्ते—

अज्ञता कस्य नामेह नोपहासाय जायते ।

अज्ञता किसको उपहास के लिये नहीं होती—

अधर्मयुद्धेन जयं कोहीच्छेत्क्षत्रियो भवन् ।

क्षत्री होकर अधर्मयुद्ध से कौन विजय चाहेगा?—

अधर्मविषवृक्षस्य पच्यते स्वादु किं फलम् ।

अधर्मरूप विष के वृक्ष का स्वादिष्ट फल भी क्या खालेने पर पच सक्ता है?—

अनार्यजुष्टेन पथा प्रवृत्तानां शिवं कुतः ।

जिस मार्ग पर दुष्ट लोग चलते हैं उस रास्ते पर चलने वाले को कब सुख मिला है?—

अनियुक्तोपि हि ब्रूयाद्यदीच्छेत्स्वामिनो हितम् ।

स्वामी का हित चाहता हो तो बिना पूछे भी उसके हित की कहे—

अनिश्चितावधिं धीराः सहन्ते विरहं चिरं ।

जिसकी अवधि नहीं निश्चय की गई ऐसी विरह की व्यथा धीर जन सह-लेते हैं—

अनुरागपरायत्ताः कुर्वते किन्न योषितः ।

किसी के साथ गुप्त प्रेम में फस स्त्रियां क्या नहीं करतीं—

अनुरागान्धमनसां विचारसहता कुतः ।

प्रेमासक्त हो जो अन्धे हैं उन को विचार नहीं रहता—

अशीलं कस्य भूतये—

शील विमुख होना किसके उपकार के लिये होता है—

अश्रेयसे न वा कस्य विश्वासो दुर्जने जने—

दुर्जन में विश्वास किसको क्लेश के लिये नहीं होता—

असिद्धार्था निवर्त्तन्ते नहि धीराः कृतोद्यमाः—

धैर्य के साथ उद्यम करने वाले अपना काम बिना सिद्ध किये नहीं रहते—

अहो दैवाभिशप्तानां प्राप्तोऽप्यर्थः पलायते—

जिन पर दैव प्रतिकूल है प्राप्त वस्तु भी उन से जुदा हो जाती है—

अहो नवनवाश्चर्यनिर्माणे रसिको विधिः—

आश्चर्य की नई २ वस्तु के बनाने में विधाता बड़ा रसिक है—

अहो विधौ विपर्यस्ते न विपर्यस्यतीह किम्—

दैव के विमुख होने पर संसार की कौनसी बात उलटी नहीं हो जाती?—

अहो विश्वास्य वञ्च्यन्ते धूर्तैश्छद्मभिरीश्वराः—

धूर्त लोग कपट से विश्वास दिलाय बड़े लोगों को भी ठग लेते हैं—

आपत्काले च कष्टेपि नोत्साहस्त्यज्यते बुधैः—

आपत्काल में कष्ट पड़ने पर भी बुद्धिमान् उत्साह नहीं छोड़ते—

आपत्सु धीरान्पुरुषान्स्वयमायान्ति सम्पदः—

विपत् के समय धीरज वाले पुरुषों को सम्पदा आप से आप आकर मिलती हैं—

आपन्नत्राणविकलैः किं प्राणैः पौरुषेण वा—

शरणागत की रक्षा जो न करसका उसके जीवन और पौरुष से क्या ?—

आमुखादपि कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति—

किसी कार्य के आरंभही में जो कोई मंगल की बात हो तो उससे कार्य की सिद्धि सूचित होती है—

आरब्धा ह्यसमाप्तैव किं धीरैस्त्यज्यते क्रिया ।

धीरज वाले काम को आरम्भ कर बिना समाप्त किये क्या उसे छोड़ देते हैं—

आरब्धे हि सुदुष्करेपि महतां मध्ये विरामः कुतः—

दुष्कर काम को भी आरम्भ कर बिना पूरा किये बड़े लोगों को विश्राम कहां ?—

इहामुत्र च नारीणां परमा हि गतिः पतिः—

यह लोक और परलोक दोनों के लिये स्त्रियों को पति ही शरण है—

ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः ।

प्रभू लोगों का मन जी को रमाने वाली बात को बहुत पसन्द करता है–

उत्साहैकघने हि वीरहृदये नाप्नोति खेदोऽन्तरम्–

जिनके मन में घना उत्साह है ऐसे बीर पुरुषों में खेद स्थान नहीं पाता–

उदारसत्त्वं वृणुते स्वयं हि श्रीरिवाङ्गना–

उदार पुरुष को अङ्गना के समान लक्ष्मी स्वयं आकर बर लेती है—

उप्तं सुकृतबीजं हि सुक्षेत्रेषु महत्फलम्–

सुकृत का बीज अच्छे खेत में बोया जाय तो बहुत फलता है—

एकाग्रो हि बहिर्वृत्तिनिवृत्तस्तत्त्वमीक्षते–

जिसकी एकाग्र वृत्ति बाहरी पदार्थों से निवृत्त है वह तत्त्व को देखलेता है–

कन्या नाम महद्दुखं धिगहोमहतामपि–

कन्या बड़े लोग जो समर्थ हैं उनको भी दुःख पैदा करती है—

कर्तव्यं हि सतां वचः–

अच्छे लोगों का वचन मानने योग्य है—

करुणार्द्रा हि सर्वेषां सन्तोऽकारणबान्धवाः–

करुणा से आर्द्र सुजन सबों के निष्कारण बन्धु होते हैं—

कल्पवृक्षोप्यभव्यानां प्रायो याति पलाशताम्–

दुराचारी के लिये कल्पवृक्ष भी पलास के समान निष्फल है—

कष्टाः कुलखलीकारहेतवो वत कुस्त्रियः–

कुलीनता का सत्यानाश करने वाली बुरी स्त्रियां होती हैं—

कष्टा हि कुटिलश्वश्रूपरतन्त्रा बधूस्थितिः–

कुटिल सास के आधीन बहू का रहना महाकठिन होता है–

कस्य नेष्टं हि यौवनम्–

यौवन किसे प्रिय नहीं है ?–

कस्य नाभ्युदये हेतुर्भवेत्साधुसमागमः–

साधुसमागम किसके कल्याण के लिये नहीं हैं?—

कस्य सत्संगो न भवेच्छुभः—

सत्संग किसको शुभ का कारण नहीं होता?—

काकाः किमपराध्यन्ति हंसैर्जग्धेषु शालिषु—

हंसों ने जो चावल का खेत चुग लिया तो कौवों का क्या अपराध—

का नाम कुलजा हि स्त्री भर्तृद्रोहं करिष्यति—

कुलीन घराने की स्त्री कैसी जो पति से द्रोह करै?—

कामक्रोधौ हि विप्राणां मोक्षद्वारार्गलावुभौ—

ब्राह्मण के लिये काम और क्रोध ये दोनों मोक्ष के द्वारा का बेड़ा हैं—

कामं न श्रेयसे कस्य संगमः पुण्यकर्मभिः—

पुण्य का काम करने वालों का साथ किसके कल्याण के लिये नहीं होता?—

कामं व्यसनवृक्षस्य मूलं दुर्जनसंगतिः—

दुर्जन का साथ दुःख के वृक्ष का मूल है—

काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनापि किम्—

ज़रूरत में थोड़ा देना भी बहुत है बेज़रूरत में बहुत भी थोड़ा है—

किं नाम न सहन्ते हि भर्तृभक्ताः कुलाङ्गनाः—

पतिभक्त कुलाङ्गना क्या नहीं सहतीं?—

किमज्ञेयं हि धीमताम्—

बुद्धिमान् के लिये कौन सी बात जानने योग्य नहीं है?—

कुदेशेष्वपि जायन्ते क्वचित्केचिन्महाशयाः—

कुदेश में भी कोई २ महाशय उपजखड़े होते हैं—

कृतघ्नानां शिवं कुतः—

कृतघ्नों का कहां कल्याण?—

कृतघ्नाश्चिरसिद्धार्था अपि भ्रश्यन्ति हि ध्रुवम्—

कृतघ्न अपने प्रयोजन की सिद्धि को पहुंचे हुये भी निश्चय एक दिन गिर जाते हैं—

कृतज्ञे सत्परीवारे प्रभौ सेवाफला कुतः—

किये उपकार को समझने वाले कुटुम्बी मालिक की सेवा निष्फल नहीं होती—

केषां हि नापदां हेतुरतिलोभान्धबुद्धिता—

अत्यन्त लोभान्ध होना किसको विपत्ति का हेतु नहीं होता?—

को हि मार्गममार्गं वा व्यसनान्धो निरीक्षते—

दुर्व्यसन में अन्धा हो कौन ऐसा है जो सुमार्ग या कुमार्ग का विचार कर सक्ता है?—

क्वचिद्दै नास्ति विश्वासः क्षुद्रकर्मणि दुर्जने—

नीचा काम करने वाले दुर्जन में कभी विश्वास नहीं होता—

गृहे या पुण्यनिष्पत्तिः साध्वनि भ्रमतः कुतः—

घरमें रहकर जो पुण्य का काम बन पड़ता है वह मार्ग में घूमते हुये को कहां—

ग्रावाणोप्यार्द्रतां सम्यग्भजत्यभिमुखे विधौ—

दैव के अनुकूल होने पर पत्थर भी पसीजकर पानी होजाता है—

चपलौ किल शूराणां रणे जयपराजयौ—

शूर वीर के लिये युद्ध में जय पराजय अनिश्चित है—

जनो बहु क्षपयति स्वल्पस्यार्थे धनान्धधीः—

धन बटोरने के लोभ में अन्धा थोड़े के लिये बहुत खोबैठता है—

जायन्ते वत मूढानां संवादा अपि तादृशाः—

मूर्खों की बातचीत भी वैसी ही मूर्खता की होती है—

जितक्रोधेन सर्वं हि जगदेतद्विजीयते—

जिस ने क्रोध को जीत लिया उसने सम्पूर्ण जगत् वश में कर लिया—

जीवन् हि धीरोभिमतं किं नाम न यदाप्नुयात्—

धीरज वाला जीतेजी कौनसा ऐसा अभिलाष है जिसे वह नहीं पाता—

जितक्रोधो न दुःखस्यास्पदी भवेत्—

क्रोध जिस ने जीत लिया है उसे दुख नहीं होता—

ददाति तीव्रसत्त्वानामिष्टमीश्वर एव हि—

जो पुरुषार्थ करने में प्रबल हैं उन के अभीष्ट को ईश्वर पुरे देता है—

त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणानपि न सत्पथम्—

पुरुषार्थी बलवान् प्राण त्याग देते हैं पर सन्मार्ग नहीं—

दुष्टं हि जन्तुमुत्थाप्य कस्यात्मनि सुखं भवेत्—

दुष्टजन्तु सर्प सिंह आदि को भड़काय शरीर को सुख कहां?—

दुष्टेपि पत्यौ साध्वीनां नान्यथावृत्ति मानसम्—

पतिव्रताओं का मन, दुष्टपति को भी पाय उस्की ओर से विकृत नहीं होता—

न स्त्री चलितचारित्रा निम्नोन्नतमवेक्षते ।

स्त्री जिस्की चरित्र बिगड़ा है ऊंचा नीचा काम करने में नहीं सङ्कुचाती—

नाधर्मश्चिरमृद्धये ।

अधर्म चिरकाल तक समृद्धि के लिये नहीं होता—

नास्ति व्यसनिनां किञ्चिद्भुवि पर्याप्तये धनम् ।

व्यसनी के लिये संसार में जितना धन है वह काफी नहीं है—

निर्विमर्शा हि भीरवः ।

डरे हुये को विचार नहीं रहता—

निवृतपापसम्पर्काः सन्तो यान्ति हि निर्वृतिम् ।

सज्जन पुरुष जो पापकर्म के सम्पर्क से निवृत्त हैं प्रसन्न रहते हैं—

निष्प्रज्ञास्त्ववसीदन्ति लोकोपहसिताः सदा ।

निर्बुद्धी सदा दूसरों से हंसे जाकर दुखी होते हैं—

निष्प्रज्ञो नाशयत्येव प्रभोरर्थमथात्मनः ।

निर्बुद्धी मालिक का काम बिगाड़ता है और आप भी सत्यानाश जाताहै—

निसर्गसिद्धो नारीणां सपत्नीषु हि मत्सरः ।

स्त्रियों को सबत से डाह का होना स्वाभाविक है—

पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्द्धनि ।

आकाश की ओर फेंका हुआ कीचड़ फेंकने वाले ही के मूड़ पर आ गिरता है—

परमार्थमविज्ञाय न भेतव्यं क्वचिन्नृभिः ।

भय की बात की असलियत बिना जाने मनुष्यों को डरना नहीं चाहिये—

परार्थप्रतिपन्ना हि नेच्छन्ते स्वार्थमुत्तमाः ।

दूसरे के उपकार में लगे हुये उत्तम जन अपना फाइदा नहीं देखते—भर्तृहरि का भी वाक्य है—

"एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये ।"

पुण्यवन्तो हि सन्तानं पश्यन्त्युच्चैः कृतान्वयम् ।

सुकृती जन अपने सन्तान को फूलते फलते देखते हैं—

प्रज्ञा नाम बलं ह्येवं निष्प्रज्ञस्य बलेन किम् ।

बुद्धि जिसके हो वही बलवान् है बुद्धिरहित को बल कहां ?—

"बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेश्च कुतो बलम् ।"

प्रज्ञाबलं च सर्वेषु मुख्यं कार्येषु साधनम् ।

कार्यसाधन की जितनी उपाय हैं उनमें बुद्धिबल सब में मुख्य साधन है—

प्रतिभातश्च पश्यन्ति सर्वं प्रज्ञावतां धियः ।

बुद्धिमान् में प्रतिभा एक ऐसी सूक्ष्म वस्तु है कि उसके द्वारा वे सब देख लेते हैं—

प्रतीयन्ते न नीतिज्ञाः कृतावज्ञस्य वैरिणः ।

नीतिज्ञ अपकार किये गये शत्रु का विश्वास नहीं करते—

प्रभुश्च निर्विचारश्च नीतिज्ञैर्न प्रशस्यते ।

विचारशून्य प्रभु को नीति जानने वाले नहीं सराहते—

प्राणानुदारा विसृजन्त्यर्थिनो न पराङ्मुखाः ।

उदार लोग प्राण तक दे डालते हैं पर याचक से विमुख नहीं होते—

प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया ।

निकृष्ट भी जन्मभूमि प्राणियों को अत्यन्त प्रिय होती है—

प्राणव्ययाय जायन्ते शूराणां हि रणोत्सवाः ।

वीर पुरुषों को युद्धोत्साह प्राण दान के साथ रहता है—

प्राणेभ्योप्यर्थमात्रा हि कृपणस्य गरीयसी ।

कृपण धन को प्राण से भी अधिक विशेष मानता है—

प्राप्यते किं यशः शुभ्रमनङ्गीकृत्य साहसम् ।

विना साहस किये उज्वल यश कभी मिल सक्ता है ?—

प्रायोऽशुभस्य कार्यस्य कालहारः प्रतिक्रिया ।

प्रायः अशुभ काम के लिये देर करना ही उसकी उपाय है और भी कहावत है " शुभस्य शीघ्रं अशुभस्य कालहरणम् "

प्रियबन्धुविनाशोत्थः शोकाग्निः कं न तापयेत् ।

प्रिय बन्धु के विनाश से उत्पन्न शोकाग्नि किसे नहीं ताप देती—

भर्तृमार्गानुसरणं स्त्रीणां च परमं व्रतम् ।

पति के अनुसार चलना स्त्रियों के लिये उत्तम व्रत है—

भवेन्न यस्य यत्कर्म स तत्कुर्वन्विनश्यति ।

जिसका जो काम नहीं है उसे करता हुआ मनुष्य विनाश को प्राप्त होता है—

हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये ।

हित का उपदेश मूर्ख को क्रोध के लिये है शान्ति के लिये नहीं —

हितः परोपि स्वीकार्यो हेयः स्वोप्यहितः पुनः ।

नेहसगो सोई सगो देहसगो सो नाहिं—"परोपि हितवान् बन्धुर्बन्धुरप्यहितः परः"

हास्यादृते किमन्यत्स्यादतिलौल्यवतां फलम् !

अत्यन्त चंचल को उपहास के सिवा उसकी चंचलता का फल और क्या हो सक्ता है ?—

स्वामिन्यसाध्यव्यसने सुखं सन्मन्त्रिणां कुतः ।

स्वामी को किसी असाध्य दुर्व्यसन में फंसा हुआ देख अच्छे मन्त्री को कहां सुख ?–

स्वसुखं नास्ति साध्वीनां तासां भर्तृसुखं सुखम् ।

पतिव्रताओं को अपना सुख सुख नहीं है जिस्में स्वामी को सुख मिले उसी को सुख मानती हैं–

स्वपदाच्यवमानस्य कस्याज्ञां को हि मन्यते ।

अपने अधिकार से गिरे हुये किस पुरुष की आज्ञा कौन मानता है ?–

स्त्रीष्वनर्गलचेष्टासु कस्येच्छा नोपजायते ।

ऐसी स्त्री को देख जिस्की सब चेष्टायें जारिणी की हैं किस्का मन नहीं चलता ?–

सुकृती चानुभूयैव दुःखमप्यश्नुते सुखम् ।

अच्छा काम करने वाले पहले दुःख सह कर फिर सुख भोगते हैं–

साहसन्नैरपेक्ष्यं च कितवानां स्वभावजम् ।

साहस अर्थात् विना बिचारे कर गुज़रना और बेपरवाही धूर्तों में स्वभाव ही से होती है–

सर्वं जीवन्निराप्यते–"जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति" वाल्मीकि ॥

सङ्कटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञाः शूराश्च सङ्गरे ।

सङ्कट में बुद्धिमान् की परख और लड़ाई में शूर की–

शुभाचारस्य कः कुर्यादशुभं हि सचेतनः ।

कौन ऐसा समझदार होगा जो अच्छा काम करने वाले की बुराई चेतेगा–

शुभकृन्न हि सीदति ।

भला काम करने वाला दुख नहीं सहता–

शक्या हि केन निश्चेतुं दुर्ज्ञाना नियतेर्गतिः ।

होनहार का निश्चय कौन कर सक्ता है–

विषयाकृष्टमाणा हि तिष्ठन्ति सुपथे कथम् ।

जिन का मन विषय वासना की ओर खिचा हुआ है वे क्यों कर सुमार्ग में रह सक्ते हैं ?–

विदेशे बन्धुलाभो हि मरावमृतनिर्झरः ।

विदेश में बन्धु का मिलना मानो मरुभूमि में अमृत की वृष्टि है—

विधेर्विलासानब्धेश्च तरङ्गान्को हि तर्कयेत् ।

होनहार क्या किया चाहती है और समुद्र की लहरों को कौन समझ सक्ता है—

विधिर्हि घटयत्यर्थानचिन्त्यानपि सम्मुखः ।

अनुकूल विधाता इन बातों को भी सुघटित कर देता है जिन का कभी सोच विचार भी न था—

रत्नव्ययेन पाषाणं को हि रक्षितुमर्हति ।

रत्न के व्यय से पाषाण को कौन बचावेगा—

यो यद्वपति बीजं हि लभते सोपि तत्फलम् ।

जो जैसा बीज बोता है वैसा फल चखता है—फिर कभी—

क्या करें हमारा बस न चला—

हमारा बस चलता तो हिन्दुस्तान का कायाकल्प कर देते जितनी ऊट-पटांग बातें हैं जिस्के बोझ से यह जीर्ण जराग्रस्त बुड्ढा कांख रहा है दमघुटा जाता है सांस लेते जी सरकता है सब साफ कर एक बार इसे फिर से जवान गभरू बना देते—तद्यथा सब के पहले जितने बाल्यविवाह करने वाले हैं जिन को ८–१० या १२ वर्ष के दूधमुहे बालक बालिकाओं के विवाह में बड़ी उमङ्ग रहती है और जो अपने जीवन की सार्थकता इसी में मानते हैं कि छोटे २ बिलौटों का ब्याह गौना धौना फौना सब जल्दी २ कर डालें नाती पोतों से घर भर जाय पचीस ही तीस वर्ष में बाबा बन बैठें—हमारा बस चलता तो इन आंख के अन्धे महापापिष्ठ जघन्यों का काला मुंह कर सिन्धुपार काले पानी भेजवा देते—क्या करैं समझाय थके बुझाय थके ऊंची नीची कोई बात न बच रही जो नहीं सुझाया तब भी ये अपनी हरकत से बाज़ नहीं रहते तो अब कौन दूसरी ततबीर हो सक्ती है जिस्में इस दीन दुखिया भारत का कायाकल्प हो सके—

दूसरी बात कि ये जितने टट्टी के आड़ में शिकार की भांत धर्म या मज़हब की आड़ से नासमझ बेअकिलों को फांसा दै अपना मतलब गांठते हैं

सांड़ के माफिक डकरते हुये माला माल हो रहे हैं और इसी फिकिर में रहते हैं कि कहीं से प्रकाश की झलक न आने पावे लोगों की गोठिल अकिल खराद पर चढ़ी और इनकी समझ बढ़ गई तो हमारा सब परदा फाश हो जायगा और कौड़ी का तीन २ भी हमें कोई न पूछेगा—इन स्वार्थलोलुप बंचकों को ले जाकर कलकत्ते के ब्लैकहोल में बन्द कर देते नहीं तो पकड़ २ सहारा के रेगिस्तानी जंगल में छुड़वाय देते—तात्पर्य यह कि प्रजा के बीच से मज़हबी जोश जिस तरह पर कम होता सेई करते जिस्से किसी तरह इस बूढ़े का कायाकल्प तो होता पर क्या करें हमारा बस न चला—मुहूर्त बतलाने वाले निपट लंठ ज्योतिषियों को ले जाकर ककहा दीवाल के ऊपर से फेंकते नीचे गिरा देते चकना चूर होजाते और ब्रह्मास्मि बनने वाले दंभ के रूप मक्कार वेदान्तियों को जहाज में बोझ बंगाल की खाड़ी में ले जाय नीचे से जहाज का पैंदा तोड़ देते पर क्या करें कुछ बस न चला—

और भी संस्कृत जो वास्तव में सब भाषाओं की सिरमौर है समस्त संसार की राजभाषा बना देते—हिन्दी को बिहार के माफिक पश्चिमोत्तर की कचहरियों में भी जारी करा देते और मौलवी साहबों को पेनशन दे शहर २ और गांव २ उर्दू के नाम का सियापा बैठा देते—भारत की सहनशील सती ललनाओं का अनुकरण यूरोप की चंचल चिबिल्ली लेडियों से कराते—हिन्दुस्तानियों को हैवान से इनसान बनाय सच्चे सीधे पुराने ऋषियों के बनाये काइदे पर चलाते और इन दिनों के मूर्ख और स्वार्थी ब्राह्मणों के चंगुल से छुटवा देते—और एक बात करते कि गेहूं का एक बिया भी न छोड़ते जितनी पैदावारी होती रेलीब्रादर से कहते जरूद विलायत पहुंचा दो कहीं ऐसा न हो कि मोटा कदन्न ज्वार बाजरा चूनी चोकर के खाने वाले यहां के लोगों को भी गेहूं खाने की आदत पड़जाय तो ये भी बिलाइत वालों की भांत देवतुल्य हो उनकी बराबरी करने लग जायं—

म्युनिसिपलटी को धन्यवाद देते हुये चुंगी और पानी का टैक्स बीस गुना कर गरमी में जमुना सूख जाती हैं इसलिये बंबई के पास वाले समुद्र से नल लाते और इलाहाबाद को जलमग्न कर देते—एक ऐसा मंत्र पढ़ते कि हमारे कर्मचारियों की विषमबुद्धि बदल जाती केवल अपने ही लोगों के फाइदे का ख्याल मन से ढीला कर सर्वसाधारण प्रजा के लाभ पर विशेष दृष्टि देते

गिरानी और अनेक रूप रंग में टैक्स का बांक उठाते २ जो लोगों का जी फटा २ सा हो रहा है सो न होता एक साथ वे और हम दोनों मिलकर गवर्नमेंट का तन मन से धन्यवाद करते और राजभक्ति की बेलको बढ़ाते ही जाते पर क्या करें हमारा बस चलता तब न—

टिट्टिभज् की बुकनी फांकने वाले पण्डितों को पकड़ २ उन्हें अंगरेज़ी पढ़वाते—या रोज़ एक सभा कराते जिस्में तीतर बटेर की भांत पण्डित सब लड़ते और अन्त में ५ सेर सुंघनी एक २ को दक्षिणा दै धता बुलाते—बड़े नामी गिरामी महाजन और तअल्लुकेदारों में जिन्हें निपट यक्षवित्त देखते उन से साम दाम दण्ड भेद जिस उपाय से बनता उन के दानभोगशून्य धन को लेकर शहर २ कालेज और पुस्तकालय स्थापित कर विद्या की नदी बहा कर देश से मूर्खता पिशाची को खदेर समुद्र पार कर देते—और एक बात है हमारा बस चलता तो बिलाइती मेमों को थोड़े दिन के लिये परदे में रखते जिस्में उन का यह भ्रम दूर हो जाता कि हिन्दुस्तान में औरतें कैदियों के माफिक रह कर बड़ी २ तकलीफ उठाती हैं बल्कि स्त्रियों को स्वतंत्र न करने से कौन २ बड़े लाभ हैं और हम लोग उन्हें कैसे आराम और इज्ज़त के साथ रखते हैं बाहर के बुरे लोगों की बुरी नीयत से उन्हें किस तरह पर बचाये रहते हैं सब का मर्म सहज में खुल जाता—इङ्गलैंड में जो ये उमदा २ हर तरह की कलें जारी हैं उन्हें छीन लेते तब कहते आप फीट्रेड जारी रख बाहर वालों के साथ हाथ की बनी चीज़ों में "कम्पिटीशन" स्पर्द्धा करिये और तिजारत में वैसी ही कामयाबी हासिल करिये जैसा अब कर रहे हैं—जेठ की तपिश में हिमालय की घाटी का एक टुकड़ा लाके इलाहाबाद में रख देते और साहबान् अंगरेज़ों को नैनीताल के बर्फिस्तान की कैफियत यहीं केनिङ्गटन में हासिल करादेते—लाट साहब के आने जाने में जो दो तीन लाख रुपया प्रतिवर्ष खर्च बैठता है उस्की बचत होजाती पर क्या करें अपना कुछ काबू न चला—तमाम दुनिया को हिन्दुस्तान की सफाई सिखला देते जो बात दिन भर देह में साबुन रगड़ने से भी मयस्सर नहीं होसक्ती सो यहां सफाई को हिन्दूधर्म का एक हिस्सा रख देने से स्वाभाविक होगई है आचारपालन धर्म का एक श्रेष्ठ अंग समझा गया है—

यहां कई बड़े शहरों में सरकार की ओर से गिरजाघर बने हैं जो "स्टे-टचर्च" कहलाते हैं उन्में जो पादरी साहब मुकर्रर रहते हैं उन की तनखाह यहीं के खज़ाने से दी जाती है—हमारा वश चलता तो विलाइत में जो थोड़े से हिन्दुस्तानी हैं उन के लिये यहां से पाधा पुरोहित मुल्ला काजी मुकर्रर कर विलाइत भेज देते और उन की तलब टैक्स के द्वारा वसूल कर साहब लोगों की तनखाह से दिलवाते--सिविल सरविस की परीक्षा हिन्दुस्तान में मुकर्रर कर देते और हिन्दुस्तान की जितनी जुदी २ भाषा हैं बल्कि काबुल की बोली पस्तो तक उस में रख देते और हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि चीन और जापान में जो कानून वर्त्ता जाता है उस्की भी किताबें कोर्स में रख देते—और भी यहां के तनहा से तनहा मुनसिफी के वकील को जो अंगरेज़ी का एक अक्षर न जानता होता और न विलाइत के चाल चलन रीति वर्त्ताव से कुछ वाकफीयत रखता उसे इङ्गलेण्ड की हाईकोर्ट या जिलह कोर्ट का जज मुकर्रर कर भेज देते पर क्या कहैं बैठे २ पछताया करते हैं कि अपना कुछ बस न चला—

अपने लोगों के सुधार के लिये ब्राह्मणमात्र की एक पङ्क्ति कर देते जिस्में सहभोजन की प्रथा में आसानी होती—विलाइत से लौटे हुये या होटलभो-जियों के लिलार में लील में बोर तप्तमुद्रा का एक चिह्न कर देते जिस्में ऐसों की सूरत देखते ही मालूम पड़जाता कि यह भारतसन्तान के कुलका कलङ्क है—और भी जितने बाबा आदम के समय के पुराने खूसट हैं सबों को एक बड़े भारी ज़िन्दान में कैद कर देते और तब एकान्न भोजन "ज्वाइएट फैमिली" की प्रथा को तोड़ फोड़ कर सत्यानाश में मिला देते इत्यादि कितनी बाते हैं जिसे हम हिन्दुस्तान के कायाकल्प के लिये बहुत ही मुफीद मानते हैं पर क्या करैं अपना कुछ बस नहीं चलता इस्से जी की जी ही में रही जाती है—एक तो यों ही यह बूढ़ा भारत जर्जरितकलेवर है उस्पर उसे अनेक असाध्य रोग सब ओर से घेरे हैं देखा चाहिये इस्की क्या दशा होनहार है—

नीयत—

नीयत अजीब चीज़ है और आदमियों के तमाम कामों में अच्छा या बुरा करार दिये जाने की एक ही कसौटी है—कोई काम जिस्का परिणाम बुरा से बुरा है बुरा नहीं कहा जायगा अगर उस काम के करने वाले ने बुरी नीयत से

नीयत से नहीं किया गया तो उसका यश करने वाले को नहीं मिल सक्ता—जितने काम संसार में किये जाते हैं जान बूझ किये गये हों या भूल से किये गये हों या उस हालत में किये गये हों जब कि आदमी अपने होश या काबू में नहीं है सब अवस्था में गुण या दोष की डिगरी की नियामक नीयत ही है—घिनौने से घिनौना काम बन पड़ा हो पर नीयत उसके करने की न पाई जाती हो तो उस काम के करने वाले को दोषी न कहैंगे-इसी तरह पर भले काम का करने वाला भी नीयत ही से भला कहा जासक्ता है—इसी लिये सीधे सच्चे मनुष्य का काम सदा अच्छा और प्रशंसा के लायक होता है अच्छे इरादे अच्छी नीयत से जो उसने किया है तो उसको अपने काम में सरसब्ज़ी भी भरपूर होते देखी गई है—इसी तरह कुटिल मनुष्य जिसका काम कुटिल इरादे से किया गया है उसमें कामयाबी बहुत कम होते देखी जाती है—इस कारण नीयत मनुष्य के मनरूप तख्ततानस पर सुशोभित उसके बाहरी कामों में जगमगाती ज्योति के साथ प्रकाशमान रहती है—

नीयत फलती है—नीयत की बरकत—सत्य की बान्धी लक्ष्मी फेर मिलैंगी आय—इत्यादि कहावतें मालूम होता है उन अगाधबुद्धि गम्भीराशय लोगों के सिद्धान्त हैं जिन्हों ने संसार में मनुष्य के चित्तों को खूब थहाया या समझा है—लाखों का काम चल रहा था दैवदुर्विपाक से कोई ऐसी दुर्घटना आपड़ी कि सब डिगमिग होगया कहीं कोई शरण देने वाला न रहा व्यौपारियों में एक पैसे की साखबरी न रही बुरे दिन नेअन्धड़ के समान सब ओर से आ घेरा जितना कारखाना सब डिगमिगा गया पर नीयत में डिगमिगाहट न आई शुद्ध बनी रही—मालमताल ज़र ज़ेवर जो कुछ पास था सब का निकास कर यह पुरुषसिंह धीरज न छोड़ नीयत का शुद्ध रह उस अन्धड़ का मुकाबिला बराबर करता गया थोड़े ही समय में कौड़ी २ सब का चुकता कर दिया बात बनी रही मुह उजागर रहा "सत्य की बान्धी लक्ष्मी बहुर मिलैंगी आय" इस सिद्धान्त को पुष्ट करते हुये दयालु परमेश्वर ने इसके नीयत की कसौटी के उपरान्त फिर सब बात पहले के समान कर दिया—जो उस बिगड़े समय इसकी हवा बरकाते थे इससे बात करना महापाप समझते थे वे ही अब आ कर खुशामद बजाने लगे—कवि की इस उक्ति का "नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण" पूरा दृष्टान्त मिल गया—

यह अद्भुत बात है कि यद्यपि नीयत एक ऐसी बात है जिस्का पता लगना बड़ा कठिन है पर जिस तरह कस्तूरी की महक छिपाये नहीं छिपती उसी तरह आदमी के छिपे से छिपे गुण ऐगुण भी बिना प्रकाश हुये नहीं रहसक्ते—जिस्की नीयत शुद्ध है उस्पर न समाज अंगुश्तनुमाई कर सक्ती है न अदालत सख्ती करेगी इतनाही नहीं बरन समाज और अदालत दोनों की ओर से उस्पर रहम की जाती है—बल्कि अदालत में "क्रिमिनल ला" फौजदारी के कानून इस नीयत ही की बुनियाद पर गढ़े गये हैं—सख्त से सख्त जुर्म खूनके मुकद्दमे में भी बहुधा नीयत ही पर फैसला होता है—किसी को थोड़े में बहुत यश मिलता है किसी को बहुत में भी थोड़ा सो यह सब नीयत ही का फल है—जिनकी नीयत बुराई करने की होती है उन्हें बिना किये ही उस्का अयश मिल जाता है—बुद्धिमान् लोग जिन्हें हरतरह की सोहबत में रहने का मौका मिला है और जो हरतरह की बातों के अनुभव में एकता हैं सूरत देख कर या संभाषणमात्र से नीयत को परख लेते हैं—व्यौपार में केवल नीयत की बरकत रहती है जिस्से सूत का बान्धा हाथी चलता है हमारे देश की महाजनी में साख और है क्या यही नीयत—जो ज़रा भी डिगमिगानी कि साख कोसों दूर हटी हुंडी पुरजा बन्द कर दिया गया दीवालिये हो बैठे २ सिर खुजलाय करें और मक्खी मारते रहैं—यद्यपि अंगरेज़ी राज्य की कृपा से हमारे देश का अब वह व्यौपार न रहा जो कुछ बच रहा था उस्में कानूनने ऐसी बेइमानी फैला रक्खा है कि लोगों को नीयत खाम करने के सैकड़ों द्वार खुले हुये हैं—फिर भी उन पुराने ढंग के सीधे महाजन जिन्में अंगरेज़ी कानून की चालाकी ने अभी अच्छी तरह जगह नहीं पाया उनकी नीयत और व्यौपार में उन की साख तथा उन का व्यौपार अब भी यूरोप के बड़े २ नामी रोज़गारियों के टक्कर का चल रहा है—व्यौपार में जो हम नीयत के चरखे को बार २ ओटते हैं उस्का कारण यही है कि इस्में जैसा जल्द नीयत फलती है वैसा और किसी काम में नहीं—बाप दादा आदि मूरिसआला की नीयत यद्यपि औलाद पर उतरती है पर वैसी जल्द नहीं जैसा व्यौपार में—मनु का वाक्य भी है—

"यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत् पुत्रेषु नप्तृषु ।
नत्वेवं तु कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति चान्यथा-

विलाइत में गवर्नमेंट के कर्मचारियों की नीयत रहती है कि गबुच्चर से गबुच्चर अपने साथी को यहां के बड़े से बड़े ओहदे पर भेज दें उस्से प्रजा को चाहो हानि पहुंचे चाहो लाभ—मेनचेस्टर और लंकेशयर के कारखाने वालों की यही नीयत रहती है कि बंबई वाले किसी तरह न बढ़ने पावें—फेक्टरी ऐक्ट में जो कुलियों पर दया प्रकाश करने के लिये गवर्नमेंट को इन्हों ने अत्यन्त बाधित किया सो भी इसी नीयत से—दयालु गवर्नमेंट भी अपनी दया का सर्वस्व निचोड़कर रख दिया गेहूं जो यहां से ढोया जाता है और हम लोग सारे गिरानी के पिस रहे हैं इस्पर अंगरेज़ी सर्कार को कभी दया न आई धन्य दया—कुलियों पर जो दया आई उस्का यह कारण है कि विलाइत में मज़दूरी बहुत मंहगी है जिस्की अपेक्षा हिन्दुस्तान में बहुत सस्ती है—ऐक्ट पास होजायगा तो कुलियों से देर तक काम न लिया जायगा-और परता फैलाने से मेनचेष्टर तथा बंबई की कलका बना कपड़ा एक ही भाव पड़ेगा बल्कि बंबई का कपड़ा मैनचेष्टर से मंहगा पड़ जाय तो अधिक अच्छा—सरआलफ्रेड लायल ने जो कुछ काम किये उस्में उन की नीयत हिन्दुस्तान के वास्तविक उपकार की थी इसी लिये लोग उन से प्रसन्न रहे और जो दो एक ग़लती भी उन से बन पड़ी उस्को किसी ने अत्यन्त क्रूरदृष्टि से न देखा—सर आकलैंड कालविन ने जो कुछ किया उस्में उन की नीयत शुद्ध प्रजा के हित की न थी नहीं तो बनारस इलाहाबाद कानपूर आदि शहरों के रहने वालों की गरीबी दशा को वाटरवर्क्स जारी करने के पहले अवश्य विचारलेते और जारी भी किया था तो इतना कस के पानी का टिक्कस न लगाते किन्तु उन को मंजूर था कि जैसे हो तैसे विलायत का लोहा काम में आवे-इसीलिये उन से कोई प्रसन्न न रहा और नेकनाम होकर न गये—इसी तरह पर लार्डरिपन लार्डनार्थब्रूक का नाम सुनते ही हम लोग जो गद्गद हो जाते हैं सो उन की शुद्ध नीयत ही के कारण-लार्डडालहौसी लार्डलिटन और लार्डडफरिन का नाम कान में पड़ते मुह बिचकाते हैं सो इसीलिये कि उन का आभ्यन्तरिक हम लोगों के हितके लिये न था-ऐसाही शिक्षा विभाग के भूतपूर्व डइरेक्टर मिस्टर ह्वाइट का आभ्यन्तरिक अपने निजके लाभ का न था पर उन की नीयत यही थी कि शिक्षा सर्वसाधारण के लिये महा महगी होजाय और शिक्षाविभाग भी सर्कारी और २ महकमों की भांत कायदे और कानूनों से जकड़ दिया जाय—

नेसफील्ड साहब का भीतरी अभिप्राय केवल अपना स्वार्थ है उन की किताबें खूब जारी हों शिक्षाविभाग को चाहे हानि पहुंचे अ लाभ—

कानग्रेस का शुद्ध और विमलभाव इसी पर है कि प्रजा की दोहाई सरकार के कान तक पहुंचे जिस में बेइनसाफी का धब्बा उस में न लगे और प्रजा सब प्रसन्न रहैं—चिर जीविनी प्रतापशालिनी हमारी महाराणी का शुद्ध आशय यही रहता है कि उदय से अस्त तक जहां कहीं उन की आश्रित प्रजा का एक तुच्छ से तुच्छ मनुष्य हो उसे भी किसी तरह का दुःख न हो—लोग कहेंगे यहभी एक अजीब ढंग का जानवर है कि बैठे २ सब का ऐब ढूंढा करता है और अपनी नीयत का कुछ हाल नहीं बतलाता कि इस के कुटिल मन में क्या बात धंसी है इसलिये हमें भी अपनी नीयत का हाल खोलना ही पड़ा—हमारी नीयत यही रहती है कि उमदा से उमदा मसालेदार चरपरी मिरचौनी तैयार कर अपने पढ़ने वालों को सदा चिखाया करें इस से हमें कुछ प्रयोजन नहींकि हमारे लिखने का कुछ असर होता है वा नहीं——देश सुमेर के शिखर पर चढ़जाय या रसातल में डूब तहसनहस होजाय हम को इस से कुछ सरोकार नहीं हमें अपने काम से काम "सर्वः स्वार्थं समीहते"—

तख़फ़ीफ़—

सब के पहिले दाम देकर नकदहू हुरमतहू हमारे पढ़ने वालों में तख़फ़ीफ़—हिन्दी के रद्दी पत्रों में उमदा मज़मून की तखफीफ—ब्राह्मणों में विद्या की तखफीफ—क्षत्रियों में बीरता की तखफीफ—व्यौपार में ईमानदारी की तखफीफ—नई रोशनी की झलक फैल जाने से देवमन्दिरों में सच्चे श्रद्धालु भक्त दरसन करने वालों की तखफीफ—अंगरेज़ी तालीम और अंगरेज़ी सभ्यता में पुरानी टइप की तहज़ीब में तखफीफ—कोट पतलूनधारी बन्दरों में दुम की तखफीफ—विलाइत गये हुये मुछन्दरों में हिन्दूधरम की तखफीफ—हिन्दुस्तानियों में साहस और उद्यम की तकफीफ—अदालत का खरचा बढ़जाने से मुकद्दमा लड़ने वालों की तखफीफ—एक्सचेंज दोगुना हो जाने से विलाइती माल में मुनाफे की तखफीफ—पुराने ढर्रे पर चलने वालों में अकिल की तखफीफ—देशी कारीगरी में नफासत और सबुकपन की तखफीफ—ज़मीन में ज़रखेज़ी की तखफीफ—मौसिमों में वर्षा की तखफीफ—इलाहाबाद युनिवरसिटी में हिन्दी की तखफीफ—देशी कारीगरी में बिक्री की तखफीफ—इत्यादि—

इज़ाफ़ा

तखफीफ सुना चुके अब ज़रा इज़ाफ़ा भी सुनते चलिये—चुंगी में इज़ाफा—टिक्कस में इज़ाफा—हर एक छत्तिस वर्ष पर मालगुज़ारी में इज़ाफा—अदालतों में वकील बैरिस्टरों का इज़ाफा—विलाइत से लौटे नौजवानों के साथ एक अंगरेज़ी मेम का इज़ाफा—यूरोपकी पढ़ी लिखी लेडियों में नज़ाकत के नये २ नखरों का इज़ाफा—सण्ड मुसण्ड पण्डों में तथा पुजेरियों में लम्पट लबार दुराचार आवारों का इज़ाफा—टैक्स के बोझ से पिसी प्रजा में दुर्भिक्ष का इज़ाफा—कभी कयामत तक एक न होने वाली हिन्दुस्तान की जुदी २ कौमों में नाइत्तिफाकी का इज़ाफा—इलाहाबाद में बदमाशों का इज़ाफा है—कल के पानी का इज़ाफा है—दङ्गालों का इज़ाफा है—पुलिस के अंधाधुंध का इज़ाफा इत्यादि तखफीफ और इज़ाफा दोनों हम ने कह सुनाया यह कहां तक सहीहै इस्का फैसला आप करलें—

ज़रूरत ॥

ज़रूरत एक ऐसी बात है जो आदमी को हमेशा लाचार करती है कि वह अपने में जो कमी हो उसे किसी न किसी तरह पूरा करे—जैसा एडिटरों को ज़रूरत है कि पत्थर पर दूब जमै आकाश से दूध की धारा बरसै बालू से तेल उपजै—उन के लिखने का चाहो कुछ भी असर न हो गवर्नमेण्ट या प्रजा चाहो उन की एक बात भी न मानै पर ये आरटिकिलों की झड़ी बांध देंगे दिमाग चाट डालेंगे यही चाहेंगे कि कल होना हो सो आज ही हो जाय पत्थर पर दूब जमै बालू से तेल निकलै उन का कहा ज़रूर किया जाय—पायोनियर साहब को ज़रूरत है कि हम लोगों की गहरी चुटकी लिया करें जो कुछ बुराई हमारी देखें उसे सौगुना बढ़ादें भलाई की ओर से गूंगा अन्धा बहरा तीनों एक साथ बन जांय—गवर्नमेण्ट को ज़रूरत है कि उस्के इन्तिज़ाम का पूरा २ अंजाम हो बिना इस बात के लिहाज़ के कि इस इन्तिज़ाम के बोझ को रियाया सम्हाल सक्ती है कि नहीं—कौड़ी के लिये मसजिद ढहाने की भांत बेज़रूर की ज़रूरत पैदा कर अपने मुल्की आदमियों के लिये नई २ जगह निकालती जाती है—हिन्दुस्तानियों को अपनी और अपने लड़के बालों को ज़िन्दगी तल्ख और बेमज़ा करने की ज़रूरतहै—बेहतरी के दरवाज़े को बन्दकर जैसे हो तैसे निर्वाण

पद की प्राप्ति कर संसार के बन्धन से मुक्ति पावें जो बन्धन तभी तक है जब तक जीवन किसी न किसी तरह किसी रूप में विद्यमान है—मन का नाश कर देना हमारे वेदान्तियों का परमसिद्धान्त है जिसके यही माने हुये कि हिन्दू या आर्य जाति की सत्ता का भी उच्छेद कर डालें जब तक किसी तरह की सत्ता इन्में बाकी रहेगी तब तक अहंभाव लगा ही रहेगा और जब तक स्वत्वाभिमान है तब तक निर्वाण कहां ? इसीलिये पुराने ऋषियोंने तामसी भावों को अपने में से दूर करने ही को मोक्ष माना और सांसारिक बातों में अपनी हीनता और अवनति को नरकपात और कुगति ठहराया पर आधुनिक वेदान्तियों ने भला बुरा उन्नति अवनति सब को एक ही दर्रे में ढुलकाया और यही चाहा कि हम सब लोग नेस्तनाबूद होजांय जिस्में निर्वाण जिसके माने बुझजाने के हैं जल्द हासिल हो—

सिविलियन लोगों ने इसकी बड़ी ज़रूरत अपने लिये समझा है कि जितने बड़े २ ओहदे हैं सब पर हमी हम रहैं जिस्में हमारी एक जथा कायम रहे ताकि इन्तिज़ाम में अपने मनमाफिक जैसा चाहें वैसा करें कोई रोकटोक करने वाला न रहे—हमारे लण्ठराज धूर्तशिरोमणि को ज़रूरत है कि यजमानों की चूंदी अपने हाथ में रहे जिस्में हिन्दूधर्म में जो २ कमज़ोरी है उसका भेद न खुलने पावे—राजकीय मामिलों में गवर्नमेण्ट बड़ी पैनीदृष्टि से ताक रही है तो सामाजिक और धर्मसम्बन्ध में हम उन्हें जकड़े रहें जिस्में कहीं पर किसी अंश में इन्हें स्वच्छन्दता न मिल सके भारत की भोली अपढ़ स्त्रियों में नये खयालात स्थान नहीं पासके इसलिये इन्हें अपनी मूठी में किये रहैं मर्द बहुधा पढ़ २ हमारे जाल से निकलते जाते हैं तो स्त्रियां तो बनी रहें—पुराने स्कूल के पैरोकारों को ज़रूरत है कि अपनी ज़रूरत को बढ़ाते रहैं इसी से बाल्यविवाह की प्रथा को नहीं तोड़ा चाहते—लड़कों को विना किसी लायक किये व्याह देंगे तो सृष्टि किसी तरह रुकेगी ही नहीं सृष्टिकर्ता किसी लायक न ठहरे तब पग २ में ज़रूरत का क्या ओर छोर हो सक्ता है उस्में भी साढ़ेतीन बीता की नाक बढ़ी रहे नहीं तो समाज में क्या मुह दिखावें तब स्वतन्त्रताअपहारक इस ज़रूरत राक्षसी का विस्तार बढ़ता ही जायगा हमारे लिये जो ज़रूरत राक्षसी हुई वही औरों के लिये कल्पवृक्ष सी फलती जाती है—

मनुष्य जाति जहां तक तरक्की कर सक्ती है ज़रूरत उस्की मूल कारण है ज्यों २ ज़रूरत पड़ती गई आदमी सृष्टि के आदि से अब तक बराबर तरक्की करते ही गये—इंगलैंड में जो इस समय हर तरह का शिल्प और दस्तकारी अत्यन्त उन्नति को पहुंच रही है सो इसी लिये कि वहां के लोगों को ज़रूरत शुरूही से मेहनत करने के लिये लाचार करती गई—अत्यन्त शीत देश पृथ्वी में हिन्दुस्थान के माफिक उपजाऊ शक्ति न ठहरी वहां के लोग कड़ी से कड़ी मेहनत न करते तो पेट क्यों कर पालते इस मेहनत के निरन्तर अभ्यास ने अब इस तरक्की तक उन्हें पहुंचा दिया और अब तो इनको मेहनत खुद आप दूसरे तरह के मेहनत की ज़रूरत पैदा करती जाती है—हमारे हिन्दुस्तान में शुरू ही से धरती की उपजाऊ शक्ति लोगों को खाने पीने की ज़रूरियात् को भरपूर मुहैया करती गई थोड़ी मेहनत में भी काफी से ज़ियादह बराबर मिलता गया करोड़ हा करोड रुपये का धन हर साल धरती बराबर अबतक उगलती जाती है तब क्यों इन को मेहनत करने की ज़रूरत पड़े—यह पेशबीनी किसी के मन में न समाई कि कोई ऐसा भी ज़माना आवेगा कि बड़ी २ जोंक सब यहां का सत्त अपनी ओर खींच लेजांयगी और हम लोग सब भांत असमर्थ हो दाने २ के लिये बिललाते फिरैं गे—यही कारण है हमारे शास्त्रों में तथा और २ ग्रन्थों में जो कुछ है सब "थियरी„ खयाल मात्र है करके देखलाना "प्राक्टिकल„ कुछ हुई नहीं और न अब भी हम कर के कुछ देखला सक्ते हैं—दूसरा कोई एक ढर्रा निकालदे तो उस्पर अलबत्ता गिरते पड़ते लड़खड़ाते कदाचित् चले जांय सो भी मेहनत का अभ्यास शुरू ही से जो न रहा तो उस्में एकता होना तो महाकठिन है " सतु तत्र विशेषदुर्लभः सदुपन्यस्पति कृत्यवर्त्मपः„ ये लोग जैसे परिश्रमी हैं उस्के इनाम में केवल हमी पर प्रभुता क्या चौदहो भुवन का एकाधिपत्य साम्राज्य इन के लिये उपयुक्त है—हम ऐसे जानवरों को आदमी बनाते जाते हैं और अपना लाभ भी भर पूर कर रहे हैं—इतने दिनों तक यवनों ने हमारा शासन किया सिवा दलन करने के कौनसा उपकार उनसे हमारा बन पड़ा—ईश्वर जो योग्य के लिये योग्य वस्तु मिला देने का बड़ा रसिक है जैसा ये परिश्रमी उद्यमी साहसी दूरदर्शी विद्वान् थे वैसा ही हिन्दुस्तान ऐसा देश इन के आधीन कर दिया जो एक ऐसा वृहत् क्षेत्र इन्हें मिल गया है जहां ये अपने परिश्रमका बीज सन माना बोते हुये सब भांत फाइदा

उठा रहे हैं और गेहूं सीचने में बथुआ के सिचजाने के समान हमभी यत्किञ्चित् अपना भाग जिस लायक हम हैं उतना पाते हुये येन केन जीवन पार करते जाते हैं–मेरी समझ में यह भी इन की उदारता है कि हम ऐसे अपाहिजों की भी ये खबर लेते ही हैं नहीं तो हम तो इस लायक थे कि यवन हमारा बराबर दलन करते रहते और अन्त में एकपुतला भी इस जघन्य जाति का न बच रहता–हा ! इस भूमण्डल में हम ऐसे जघन्य कोई दूसरे होंगे जिन की कोई ऐसी बात नहीं जिसे देख समझकर घिन न उपजती हो–

तो निश्चय हुआ कि यह ज़रूरत जो हमारे इन गाढ़ेदिनों में ज़िन्दगी उभारू कर रही है वहां नित्य नई टटकी तरक्की और सकल सम्पत्ति के पैदा करने का द्वार है—सच है "किसी को वैंगन बावला किसी को वैंगन पत्थ"–ईश्वर के सृजित पदार्थों में कोई वस्तु बेकाम नहीं है यदि हम्मे उन से अपना फाइदा निकालने का ढंग हो और वह ढंग उन्हीं में एक स्वाभाविक धर्म हो जाता है जिन का होनहार शुभ और सौभाग्य के लिये है–उन के लिये मिट्टी सोना होजाती है वही जो हम सरीखे कमबख्त और अभव्य हैं उन को सोना भी मिट्टी है–किम्बहु–

प्रश्नोत्तर ॥

प्र०—कौन ऐसी बीमारी है जो किसी तरह साध्य नहीं है ?—

उ०—हठी का हठ और घमण्डी का अभिमान ।

प्र०—कौनसी ऐसी चौड़ी खाड़ी है जो नहीं पट सक्ती ?—

उ०—कृपण लालची की लालच–

प्र०–आदमी में कौनसी बात है जो सबों के लिये हंसी का बाइस होती है ?–

उ०—बुढ़ापे में आशिकतनी–

प्र०—मर्द के लिये जन्मरोग क्या है ?–

उ०—दूसरे के प्रेम में फंसी कुलटा स्त्री–

प्र०–रेल और तार से भी अधिक वेगगामी कौन है ?—

उ०—आदमी का खयाल—

प्र०—नौजवान में सब से अधिक घिन के लायक क्या है ?—

उ०—बड़ों के आगे धृष्टता—

प्र०—आदमी को अपने घर में सब से बढ़ कर ज़िन्दगी को बेमज़ा करने का लटका कौन है ?—

उ०—कर्कशा स्त्री और जवाब देने वाला नौकर—

प्र०—रोज़गारी में कौन सी प्रबल बुराई है ?—

उ०—झूठ का बोलना—

प्र०—संसार में बेक़दरी का जौहर या सत्त क्या है ?—

उ०—ससुरार में जाकर टिकना—

प्र०—सदा के लिये सच्चा सुख क्या है ?—

उ०—सन्तोष उपरान्त उद्यम के—

प्र०—बेफिकिरी की गहरी नींद कौन सोता है ?—

उ०—जिस्को ऋण का लेश भी न हो—

प्र०—आदमी को लाचार कब हो जाना पड़ता है—

उ०—उम्मैद के टूट जाने पर—

प्र०—न्यूटन की आकर्षण शक्ति से भी बढ़कर आकर्षण किस्में है ?—

उ०—इश्क़ में—

प्र०—बिन मौत की मौत क्या है ?—

उ०—मांगना—"तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः ॥ "त्यजन्त्य सून् शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति नत्वेकमयाचितव्रतम्"—

प्र०—आदमी की शकल में पिशाच कौन ?—

उ०—सूम जो अपना धन न खाता है खरचता है—

प्र०—कौन सी बला है ? जो टोटका टनमन मंत्र यंत्र किसी भांत नहीं टल सक्ती—

प्र०—सरकारी टिक्कस—"बिना दिये नहिं बचिहैं प्राण"—

प्र०—सब धर्म का निचोड़ क्या है ?—

उ०—कुटम्बपालन—

हमारे आने में विलम्ब की क्षमाप्रार्थना–

यद्यपि विलम्ब में आप लोगों से मिलना हमारे लिये कोई नई बात नहीं है किन्तु अब की बार अत्यन्त विलम्ब हो जाने से क्षमा की प्रार्थना करना पड़ा—आंख में ऐसा विकार हो गया था कि तीन महीने तक हमारे लेखे सकल संसार में मानों घना अन्धकार छाया हुआ था—यही मन में आता था कि ५ तत्त्व में प्रकाश देने वाला तेज तत्त्व का क्या लोप हो गया है क्या? या सृष्टि-कर्त्ता ने चारही तत्व सृजे हैं! या सूर्य्य चन्द्रमा बिजली आदि प्रकाश के पुंज सब कहीं बिलाय गये क्या? इस दशा में महा धृतराष्ट्र बन सिवा पड़े रहने के और कुछ हम से हो नहीं सका—ईश्वर का धन्यवाद है कि अब नेत्रों की वह दशा नहीं है पहले कीसी बीनाई तो सपने के ख़याल हो गये ताहम् जो कुछ बच रही है उतनी भी बनी रहती तो हम अपना अहो भाग्य मानते—हमारे पढ़ने वाले जो सदा हमपर अनुग्रह करते आये हैं उनसे प्रार्थना है कि हमारे लिये कोई ऐसा आशीर्वाद का मंत्र पढ़ें कि नेत्र की जो कुछ ज्योति शेष है बनी रहे जिस्में हम इस लायक तो रहें कि इस चर्खे को ओटते चले जांय नहीं अब इतिश्री तो हुई है–दूसरी प्रार्थना और भी है कि जिनसे हमारा जो कुछ पावना हो कृपा कर भेजदें विशेष उदारता प्रकाश करने का जी चाहता हो तो जीवनदान के समान इस अपाहिजदशा में हमारी कुछ और भी सहायता करें––किमधिकम्–

प्राप्ति ॥

परमेश्वरशतक ॥

श्रीमहाराव राजा बून्दीनरेश श्रीरघुवीरसिंहाश्रित पं०–गङ्गासहाय शर्म–विरचित––ग्रन्थकर्त्ता की कवित्वशक्ति देख बड़ा हर्ष होता है कि अभी संस्कृत सर्वथा अस्तप्राय नहीं हुई न प्राचीन कवियों की कवित्वप्रतिभा ही का सब भांत लोप हो गया है—हम दो एक श्लोक इस छोटीसी पुस्तक से उद्धृत कर यहां पर लिखते हैं जिस्से संस्कृतकवितारसिकों को इस्की पूरी २ टटोल हो जायगी–विशेष प्रशंसा व्यर्थ है "करतूती कहि देत आप नहिं कहिये साईं"–

नट इव कविवेशमाददानस्तव पुरतो नटयामि वाचमेताम्।
यदि न वितरितासि मे विभो स्वं ननु तदकिंचनतापि ते प्रसादः॥
स्वदितधिषणवाक् सुधारसस्य क्व तव मुदे मम नीरसोक्तिरेषा।
अपि मम करुणोक्तिभिर्दयेथा इति कलया कलयामि कांचिदाशाम्॥
अपि परममहो महाविभूते! त्वदभिमुखीभवने क्व मेऽधिकारः।
किमपि मनसि कृत्य सर्वगं त्वां भयगलिताक्षरमुल्लपामि किंचित्॥
अपरिकलितसंस्कृतिं विरूपां मम निखिलाः कवयो हसन्ति वाचम्।
त्वमपि यदि हसेः कवीश्वराणामहमियतापि कृतार्थतां लभेय॥
अतिबृहदतिसूक्ष्ममुज्ज्वलं यद् व्यवहृतिमेति विशेषकल्पनाभिः।
परिवृतनिखिलं गुणप्रतीतं किमपि महाम्बरमाश्रयामहे तत्॥ इत्यादि-

भारतीभवन के तीसरे साल की रिपोर्ट—

हम बलिहारी जाते हैं उस शुभ मुहूर्त की जिस्में इस भवन का जन्म हुआ है और धन्यवाद देतेहैं इसके प्रवर्त्तक महानुभावों को जिन के विमल अन्तःकरण में शुद्ध परोपकार की दृष्टि से भवन के स्थापन करने का भाव उदय हो प्रयाग से सरस्वती के अभाव को दूर हटाय दिया—इसकी प्रशंसा में विशेष कुछ लिखेंगे तो पढ़ने वालों को शक्क पैदा होगा कि अवश्य कुछ दाल में काला है नहीं तो यह निपट धूर्त जो कभी किसी के लिये भलाई का कोई शब्द लिखना जानता ही नहीं क्यों भाटों की तरह बार २ रट लगाये हुये है—अस्तु तौ भी इतना तो अवश्य अपने मन का मनोरथ प्रगट करते हैं कि हम मन वच कर्म से असीस देते हैं कि इसके स्थापकों के यावत् कल्याणपरंपरा की वृद्धि होती रहै और ऐसे काम के लिये उन का उत्साह शतगुण अधिक होता रहे—

बैपार सिन्धु—

इस साप्ताहिक पत्र की समालोचना की आवश्यकता हमें इस लिये हुई कि एक तो यह बंबई ऐसे दूर देश से प्रगट हो हिन्दी के व्यापकता की सूचना

देता है अब भी पश्चिनोत्तर की गवर्नमेंट के नेत्र खुलते और हिन्दी के मुकाबिले उर्दू की हीनता मान लेती–दूसरे यह कि इसमे लेख की वह छटा पाई जाती है जिसे हम हिन्दी कहेंगे जो कई एक और २ हिन्दी के रद्दी पत्रों में कहीं नाम को भी नहीं है—इस साप्ताहिक पत्र का वार्षिक मूल्य २) है व्योपारियों को यह विशेष लाभदायक है क्योंकि इसमें बंबई के बाज़ार का भाव दिया रहता है

आंख की शील ॥

सरासर देखते हैं नुकसान हो रहा है चित्त चाहता है कि उस नुकसान को रोकें बात मुह पर बार २ आती है तबियत भीतर से झुंझलाती है नुकसान के रोकने का वक्त निकला जाता है पर मारे आंख की शील के मुह से कुछ नहीं कहते–रूखाई का जामा पहिने हैं कड़ाई के लिये बदनाम हैं अपने सगे बाप का भी मुलाहिज़ा नहीं करते तो और कोई किस गिनती में—ऐसे लोग भी आंख चार होने पर शील के कारण कभी को ऐसे चबकुलिस में पड़ जाते हैं कि नांह करना खिलाफ तहज़ीब मानते हैं–तो अब सोचने की बात है कि इस आंख की शील में कौनसा ऐसा जादू है जो कड़े से कड़े रूखे से रूखे लोगों पर भी अपना असर पहुंचाती है–न जानिये यह कौन सा एक अनोखा तेज़ाब है जो पत्थर को भी मानों पिघला पानी कर देता है–कहां से इसकी बुनियाद है और यह क्योंकर प्रगट होती है यह अब तक स्पष्ट न मालूम हुआ–लोग कहते हैं क्या करैं आंख की शील नहीं तोड़ी जाती कैसे बेमुलाहज़े हों–उदारदानियों में आंख की शील का विशेष उद्गार पाया जाता है–कृपण कञ्जूस स्वार्थरत आंख की शील को लात मार अपनी हानि नहीं चाहता शरीफ लोग अपनी शिराफत और आभिजात्य के कारण दब निकलते हैं–कृष्णचन्द्र जानते थे कि दुर्योधन खल है किन्तु महाभारत के युद्ध में आंख की शील में आय थोड़ी सीसेना देना मंज़ूर ही कर लिया इत्यादि कितने इसके उदाहरण हैं–आंख की शील के कारण भले लोग भलमनसाहत पर जाते है बुरों को अपना मतलब निकालने के लिये मौका मिल जाता है इसलिये जो नीतिज्ञ हैं वे समय २ पर शील को भी काम में लाते हैं और मौके से रुखाई भी दर्साते हैं और ऐसे ही लोग संसार में सुख उठाते हैं–

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि०१६ सं०८,९,१० } प्रयाग { एप्रिल-मे०जून १८९३

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १६ संख्या ८–९–१० } प्रयाग { एप्रिल, मे, जून सन् १८९३ ई०

टकसाल ।

अब तक तो यह क्रम प्रचलित था कि टकसालघर में चांदी दे जो कोई चाहता था रुपये बनवा सक्ता था अब यह नियम हो गया है कि आगे से टकसाल घर में इस तरह रुपया न बनैगा—अब इस नये नियम के चलने से देश को लाभ है या हानि इसका विचार तो पीछे करैंगे पहले यह दिखाना चाहते हैं कि यह नियम किस तरह पर बनाया गया है—यह क़ानून एकही बैठक में बना और पास भी हो गया कौंसिल के मेंबरों में किसी ने यह न पूछा कि इस क़ानून के बनने में इतनी शीघ्रता की आवश्यकता ही क्या थी—यह मानो एक दूसरा प्रेस एक्ट हो गया कानून बनने का जो कुछ अब तक क्रम था वह यही रहा कि पहिले बिल बनने की आज्ञा कौंसिल से होती थी उपरान्त बिल पेश किया जाता था तब उस पर विचार किया जाता था और विचार में जो स्थिर होता था वही कानून कर दिया जाता था—बिल सर्कारी गज़ट में छपती है कि जो लोग उस विषय में कुछ सम्मति प्रगट करना चाहें उन्हें अवकाश मिले सो एक बात भी न हुई जैसा लार्डलिटन के समय एकही दिन की बैठक में प्रेस ऐक्ट बन कर पास हो गया उसी तरह यह करेन्सी ऐक्ट भी पास कर दिया गया और किसी को कानोकान खबर न हुई—यह खटका तो हम सबों को बहुत दिनों से था कि विलायत का बट्टा बहुत चढ़ रहा है कुछ होने वाला है परन्तु क्या होगा सो किसी को मालूम न था—जो लोग और विलायतों से चांदी ख़रीद यहां भेजते थे उन के बोझे जहाज़ खड़े हैं अब यहां टकसाल बन्द हो जाने से उस चांदी का रुपया बन नहीं

सकेगा रुपये का भाव बढ़ जाने से अब चांदी के व्यौपारियों को बहुत नुकसान है—उन्हों ने सर्कार से प्रार्थना की है कि जो चांदी वे अब के लाये हैं ले ली जाय उन को यह भरोसा भी दिया गया कि सर्कार इस पर विचार करेगी—हम नहीं समझते इस में क्या विचार किया जायगा रुपये तो अब इस चांदी के बन नहीं सक्ते क्योंकि कानून के विरुद्ध होगा यदि चांदी ले ली जाय तब भी एक रुपया एक शिलिङ्ग चार पेन्स की बराबर समझा जायगा और इस हिसाब से चांदी का दाम देना उचित है और इस भाव से चांदी उन से ली गई तो उन को नुकसान रहेगा यदि उस्से अधिक दिया गया तो इस अपव्यय का उत्तरदाता कौन होगा—यह सब कठिनाई इसी लिये आ पड़ी जो जल्दी में यह कानून पास कर दिया गया अब हम यह दिखाते हैं कि इस कानून का फल क्या होगा—

एक फल इस का प्रत्यक्ष तो यह है कि ज़मीदारों के पास जब तक रुपया रहेगा तब तक तो वे सर्कारी मालगुज़ारी देते जायंगे जब न रहेगा तो मालगुज़ारी देकर बचेखुचाये अन्न को औने पौने बेंच किसी तरह जमाबन्दी पूरी करेंगे जो विलायत वालों के हाथ अन्न बेचेंगे तो वे उतना दाम अब काहेको देंगे जितना अब देते हैं क्योंकि उस में उन का परता न पड़ेगा अर्थात् एक शिलिङ्ग दो पेन्स के हिसाब से जितना गेहूं वे लेंगे वह रुपये का साढ़े पन्द्रह सेर से कम न पड़ेगा बल्कि ऊपर हो जा सकता है—और जैसा कि गवर्नमेंट का अभिप्राय समझ पड़ता है कि आगे को रुपये का भाव १८ पेन्स का कर देवैं तो गेहूं रुपये का १८ सेर से ऊपर हो जायगा इस दशा में जब तक सर्कारी लगान कम न किया जायगा तब तक किसानों के लिये यह सख्त लगान क्यों कर दिया जा सक्ता है—सर्कार को ज़मीन का लगान अवश्य कम करना पड़ेगा नहीं तो ज़मीदारों की ज़मीन बिक जायगी तबाह हो जायंगे—उधर विलायत वाले जुदाही चिल्ला रहे हैं कि उन की तनखाह बढ़नी चाहिये और यह पुकार अंगरेज़ों की है हिन्दुस्तानियों की नहीं कि सर्कार उसे सुनी अनसुनी कर दे इस पर अवश्य ध्यान देना ही होगा—इतना सब करने पर भी विना कोई नया टैक्स लगे जी न बचेगा इस लिये हम यही कहें गे कि इस नये कानून से हमें कुछ लाभ नहीं है जितना हमे अन्न सस्ता मिलेगा उतना सब टैक्स में चला

जायगा अन्त को हम वही मोची के मोची रहे आवेंगे—अलबत्ता लाभ इससे अँगरेज़ी सौदागरों को और विलाइत के कारखाने वालों को है जो चीज़ अब तक १।) को देते थे वह अब १) की दे सकेंगे इस से उन की बिक्री अधिक होगी अब तो देशी माल को कोई हाथ से भी न छुयेगा —

आप को याद होगा हमने पहिले के किसी अङ्क में एक रूपक लिखा था जिस्मे दिखाया था कि विलाइत के मज़दूर और व्यौपारी सब सेक्रेटरी आफ-स्टेट के पास फरयादी गये कि हम को बट्टे की दरके बढ़ने से बड़ा नुकसान है उसी का मानो यह उपाय किया गया है—यह रुपये का दाम बढ़ा देना क्या है मानो सर्कार यह कहती है कि तुम १) बदले १।) हमको दो वास्तव में यह उपाय तो सर्कारी खज़ाने की कमी पूरा करने का था कि जो चीज़ बाहर से यहां आती है उस्पर टिक्कस लगाया जाता पर यह कौन करे—पार्लियामेण्ट के मेम्बर विलाइत के व्यौपारी और विलाइत की प्रजा से डरते हैं तब उनकी चीज़ें जो बाहर से आती हैं उन पर टिक्कस कौन लगावे सिवाय इसके ये सब व्यौपारी और कारखाने वाले हैं कौन बहुधा वे ही सब पार्लियामेण्टके मेम्बर—तब ऐसा कौन बेवकूफ होगा जो अपना नुकसान अपने आप करे—इन सब कारणों से चांदी की दर का घटना भी हमारे लिये एक विपत्ति का कारण हुआ है और दुर्दशाग्रस्त भारत के लिये गण्डस्योपरि पिण्डं की भांत है—

हमारे धर्मसम्बन्धी खर्च ॥

इस टूटी दशा में भी हम लोगों का जितना खर्च धर्मसम्बन्धी कामों में होता है उतना और २ बातों से नहीं बल्कि हम तो यही कहेंगे कि जितना हम लोग धर्म के सम्बन्ध में खर्च करते हैं उसका चौथाई भी और २ देश वाले नहीं करते पर यहां का धर्मसम्बन्धी खर्च बहुत कुछ ऊटपटांग होने से किसी तरह का उपकार या देशकी भलाई में उसे नहीं गिन सक्ते—बड़े २ दान तीर्थ-यात्रा मन्दिर शिवाले धर्मशालों का बनाना बस ऐसी ही ऐसी पांच चार बातें हैं जिस्में हमारे देश का करोड़ों रुपया उठा जाता है और ये सब बातें ऐसी हैं कि इन से उपकार और भलाई होना एक ओर रहा हानि और नित्य २ हमारी हीनता और अवनति अलबत्ता होती जाती है—कारण इसका विचार

कर देखते हैं तो यही समझ में आता है कि एक तो हमारी हिन्दू की कौम अत्यन्त "कनसरवेटिव" लकीर पर फकीर जितना बाप दादों के समयसे होता आया है उससे बार बराबर इधर उधर न हटैंगे किसी नई बात का करना मनहूस असगुन और पाप समझा जाता है—दूसरे परोक्षसाधन और परलोक बनाना इन के जीवन का उद्देश्य है कौआ कान लिये जाता है कान न टोयें पीछे दौड़ उठैंगे कोई इनसे कहभरदे कि इस बात के करने से परलोक सुधरता है स्वर्ग की सीढ़ी लगजायगी बस खट खट चढ़ते चले जाओगे तो आगा पीछा कुछ न देख इसका खयाल कभी न करैंगे कि परलोक और परमार्थ भार में जाय यह लोक तो बनावें—हमारी हिन्दू कौम की ऐसी ही ऐसी दो चार बातों ने इस समय के धूर्त्त लालची स्वार्थपरायण ब्राह्मणों को अपना मतलब साधने के लिये मौका दे दिया—परलोक की रास्ता देखाने के बहाने मूर्ख अपढ़ गवारों को जिस ढंगपर चाहा ढुलका लिया और ऐसी २ बातें निकाला कि अपने चंगुल के बाहर किसी को रक्खा ही नहीं—यहां तक कि संस्कृत तथा हमारे वेदादिशास्त्रों में परलोक साधन वाली बातों को छोड़ ऐहिक इस लोक के उपकाराय बड़े २ आधुनिक विज्ञान तथा अन्य समस्त विद्यायें जिन से और २ देश वाले हम पर प्रभुता कर रहे हैं उन का पता भी संस्कृत के ग्रन्थों में नहीं लगता—धन्यवाद है श्रीस्वामी दयानन्द को कि उन्हों ने लोकोपकारी बातें वेदों में से बहुत कुछ छांटकर अलग कर लिया और जितनी दूकानदारी या धूर्त्तों की कल्पना संस्कृतमें समझी गई सब को अलग कर दिया—मैं दयानन्द के मतका नहीं हूं किन्तु केवल धूर्त्तों कीसी महज़ कलेदराज़ी के बल उन का गुण भी नहीं मेंटा चाहता—स्वामी दयानन्द के इरादे के माफिक़ ऊटपटांग बातों में इतना धन हम लोगों का अपव्यय और फजूल खर्ची में न लग विद्यावृद्धि अनाथालय आदि उत्तम कामों में लगाया जाय तो देश का कितना कल्याण हो—पर कौन करे इतना ही मुंह से निकाल डालना समाज में हमारी जीट उड़ाने के लिये काफी हुआ है—इससे हम कहते हैं हिन्दुस्तान के कायाकल्पके लिये मज़हबी जोश का कम होना बहुत उचित और पहिली बात है—इन दिनों की सभ्यजाति में यद्यपि कुश और जल से सङ्कल्प कर दान नहीं दिया जाता पर एक ही को असंख्य धन ठूस देने की अपेक्षा भरे को भरने के

माफिक व्यर्थ काम से जिस में सर्व साधारण का हित हो वैसे काम में रुपया देना यथोचित दान कहला सकता है–यों तो अपना धन है मन मानता जितना चाहो लुटाओ कोई मना करता है ? परन्तु दान देना जिस प्रयोजन से रक्खा गया है वह मतलब इस प्रकार के दान से जो हम लोगों में प्रचलित है नहीं निकलता ॥

मुसल्मानों की शरा में आमदनी का चालीसवां हिस्सा खैरात करना लिखा है पर हम लोगों के धर्मशास्त्र में आमदनी का दसवां हिस्सा लिख दिया गया है–क्या कहना हम लोगों का सा दानशूर दूसरा कौन होगा देना ही तो हम ने सीखा लेना तो जानते ही नहीं–दूसरा ऐसा कौन दानशूर होगा देने में शूर हम और लेनशूर विलाइत वाले जब देने को अब और कुछ न रहा तो मास चाम शरीर से निकाल२ दे रहे हैं और वे लेने में ऐसे जमामर्द्द कि जो कुछ पाते हैं ढोये लिये जाते हैं–खैर जो कुछ बच रहा है उसी को बचाये रहते और सौत के रखते सो परलोक बनाने और धर्मधुरन्धर बनने की श्रद्धा ऐसी चर्राई हुई है कि कलियुग के कर्ण बन कुपात्रों में अपने संचितधन को खूब लुटाये देते हैं–धर्म के खयाल से जो अपव्यय हम करते हैं उसका आधा भी लकीर पर न चल अकिल को काम में लाय देशकाल के अनुसार प्रचलित रीति के अनुसार सर्वसाधारण के उपकारी कामों में लगावें तो जिस दुर्दशा में हम पड़े अनेक कष्ट भोग रहे हैं सब हम से दूर हो जाती–मन्दिर शिवाला घाट में लाखों बिलट जाय स्कूल कायम करने में विद्यावृद्धि के लिये कुछ देना फजूल मानते हैं–सर्कार साधारण शिक्षा कम किया चाहती है इसीलिये फीस हद्द से ज़ियादह बढ़ा दी गई अब गरीबों के बालकों को उत्तम शिक्षा तो एक ओर रहे साधारण शिक्षा भी दुर्घट हो गई है यदि हमारे धनीजन अपने बहुत से धर्म सम्बन्धी अपव्यय तोड़ कर या उस अपनी बेवकूफी को कुछ कम कर उस धन को साधारण शिक्षा में लगा दें तो कितना उपकार हो और धर्म तो इतना हो कि सात स्वर्ग और अपवर्ग की प्राप्ति भी इस धर्म के आगे झख मारती रहे–हां हानि इस में इतनी अलबत्ता है कि उन के कूढ़दिमाग हमजिन्स हमनशीं गिर्दनवाह वाले उन की तारीफ इसमें नहीं करैंगे भाट भगतिये कत्थक भड़ुये सिखमंगे आह्मन बाह्मन सण्ड मुसंडे पण्डे उनका यश इसमें न गावैंगे–उन का

धन तो हराम का बेमेहनत खाने वाले मुफ्तखोरे वैरागी कनफटे उदासी संन्यासी आदि कुपात्रों को खाना बदा है तब हमारे बताये हुये क्रम के अनुसार क्यों खर्च किया जाय

"तदभाग्यं धनस्यैव यन्नाश्रयति सज्जनम्"—

चन्दरोज़ा नाम के लिये गंजिया की गंजिया खाली कर डालें पर सामयिक सभ्यता की रीति पर अपने मन से कुछ खर्च करना व्यर्थ मानेंगे—दूसरे तीसरे वर्ष जो ठौर २ तीर्थों में मेले हुआ करते हैं वह हमारे देश में मज़हबी जोश का नमूना हैं प्रतिवर्ष कानग्रेस होता है किसी को कुछ मालूम भी नहीं होता कि यह क्यों किया जाता है इसका क्या उद्देश्य है और कहां तक राजनैतिक भलाई इसके द्वारा संभव है—वही इन मेलों में हज़ारों कोस के आदमी टूट पड़ते हैं—तमाम दुनियाभर के मैले कुचैले कसीफ लोग इकट्ठे हो हैज़ा पैदा कर रफूचक्कर होते हैं—

हैज़ा जो शुरू हो गया तो एक छोर से दूसरे छोर तक बरसों के लिये उसकी लर नहीं टूटती—धन्यवाद है गवर्नमेंट को जो इन मेलों का इतना प्रबन्ध करती है कहीं यदि इन का ठीक प्रबन्ध न किया जाय तो न जानिये क्या आफत मचजाय अभी हाल में जगन्नाथपुरी के मेले में इतने लोग मरमारे कि सुनते हैं रुपये का चार सेर उसना चावल बिक गया—पारसाल हमारे यहां प्रयाग में कुम्भ का मेला होने वाला है विन्ध्य पहाड़ के कँगूरे समान चूतर वाले आवारा खाकी बैरागी और नागे न जानिये कहां २ से आकर जमा हों गे और कई लाख आदमी एकबारगी आकर टूट पड़ेंगे स्वर्ग की सीढ़ी लग जायगी गङ्गा जी में स्नान के लिये सिर बोरा कि विष्णुदूत खड़े रहें गे हाथ पकड़ वैकुण्ठ में उन्हें लुकावते जांय गे—

धन्य विश्वास हज़ार लानत है इस मज़हबी जोश पर—विलायत की भांति किसी राजनैतिक आन्दोलन में इस के सौ हिस्से में एक हिस्सा भी जमा होते तो न जानिये क्या हो सकता था—अँगरेज़ी राज्य के स्वास्थ्य से ज्यों २ हमारी आशाइस और आराम बढ़ता जाता है त्यों २ हम अपनी बेअकली और बेवकूफी को पसारते जाते हैं—पहले इसके जब रेल न थी तब इन मेलों में न तो इतनी भीर होती थी और न इस अपव्यय का तीन तिहाई गवर्नमेंट

के पेट में जाता था प्रजा का धन प्रजा ही में बंट जाता था देश के अच्छे २ महामान्य गंभीर विचारशक्ति वाले भव्य जन जमा हो प्रजा के कल्याण की बात सोंचते थे और यही इन मेलों की बुनियाद का बाइस हुआ—अब तो श्रद्धालु यात्री कम आते हैं पर चोर ठग उचक्के लुच्चे पेटारथू तीरथ करने वाले विशेष आते हैं और जो २ बिपतें इन मेलों में होती हैं वे कही नहीं जा सक्तीं अपव्यय के अतिरिक्त शारिरीक क्लेश कितना सहना पड़ता है पर तौ भी हमारे धर्मशीलों की श्रद्धाजाड्य तो है कौन कहे यह इन से दूर हो—

वही मेला इस समय अमरिका में चिकागो प्रदर्शनी का होरहा है दुनियां भरके सभ्य मनुष्य चुन २ कर वहां इकट्ठे होंगे जो जायंगे उन का जन्म सफल हो जायगा कुछ न कुछ ले ही कर वहां से आवेंगे इस लेने से हमारा यह प्रयोजन नहीं कि वहां रुपयों की खोदान है जो जायंगे मनमानता बटोर लावेंगे किन्तु कुछ ऐसा ज्ञान प्राप्त कर या कोई ऐसी नई बात सीख के वहां से लौटेंगे जो जन्मभर उन को काम देगी कसर सिर्फ इतनी है कि वहां इस मेले में अज्ञ अपाहिज निष्पुरुषार्थियों के लिये स्वर्ग की सीढ़ी नहीं लगती—समस्त संसार भरके जुदे २ देशों की पैदावरी हुनर कारीगरी और विज्ञान वहां दिखलाया जायगा ऐसी अभूतपूर्व प्रदर्शनी अब तक कहीं किसी देश में नहीं हुई—वहां का सब हाल सुन २ कागजों में वहां का बयान पढ़ २ जी में टूट होती है कि ये भी हमारे ही हमजिन्स आदमी ही हैं जिन्हों ने कहां तक अपनी तरक्की किया है वही हम हैं कि लड़की लड़कों के ब्याह गौने से तथा बिगड़ी हुई समाज की बेहूदा अड़चन से फुरसत नहीं कि सिवाय खाने और हगने तथा येन केन अपने इस जले पेट को किसी तरह भरने के और कोई विशेष काम कर सकें—फुरसत मिली भी तो दिन रात इस फिकिर में चूरंचूर रहते हैं कि क्योंकर बिहिश्तकी राह पावें जिस्में आवागवन से छुटकारा पाय निर्वाणपद की प्राप्ति करें—अस्तु हमे इन का निर्वाणपद भी स्वीकार है यदि सच २ उस्से निर्वाणपद मिलता हो बरन जैसा ढंग हमारा है उस्से निर्वाणपद तो नहीं रसातल का मार्ग अलबत्ता सीधा होता जाता है—पर कौन कहे इन के कुलच्छन देख २ अपना जी कुढ़ाना है कुढ़ाते रहो—कोई गाढ़ी बुरी कमाई कमा रक्खा है जिस्का भोगमान भुगतने को हिन्दुस्तान ऐसे सत्यानाशी देश में

इस बिगड़ी पतित समाज के बीच जन्म पाया–ईश्वर से प्रार्थना है कि यदि पुण्य पाप का फलरूप पुनर्जन्म सच २ होता है तो अब के बार सहारा के रेगिस्तान में जन्म हो पर हिन्दुस्तान ऐसे हतक देश में नहीं किम्बहु—

नासमझी ।

विदेशी शासन कैसाही उदार शासन हो उस के अधीन रह कर हम को अपनी राजनैतिक तरक्की में उन की बराबरी का दावा करना नासमझी है–बाल्यविवाह तथा एकान्त भोजन उथाइन्ट फेमिली की प्रथा के रहते हिन्दुस्तान की सामाजिक उन्नति मानना नासमझी है--स्त्रियों को सुशिक्षिता बिना किये गृहस्थी में रह सुखी मानना ना समझी है–हिन्दूसमाज की बे अकली और हिन्दुओं में इस कदर परोक्ष और परमार्थ साधने की फिकिर के रहते हिंदुस्तानियों में कौमीपन का जोश आना नासमझी है–अंगरेज़ी सलतनत का कोढ़ पुलिस को जान माल की रखवाली का मुहकमा कहना ना समझी है—म्युनिसिपल कमिशनर जो इन्तिखाब के समय बेहद्द सिर धुनते हैं उन्हें अपना उपकारी मानना ना समझी है–इस तालीम के ज़माने में ६० बरस के बुड्ढों को समझाय बुझाय अपने ढङ्ग पर ढुलकाय लाना ना समझी है–बिलायत गयेहुये नई रोशनी वालों की अबतक जैसी बानगी देखने में आई उससे यह नतीजा निकालना कि बिलायत का जाना हिन्दुस्तान की भलाई और तरक्की के लिये है नासमझी है–प्रतिमापूजन को पाप तथा इसके उठजाने से देश के उन्नति की आशा नासमझी है—बाल्यविवाह बिना रुके विधवाविवाह प्रचलित होने से देश का कल्याण ना समझी है–तालीम मंहगी कर देने से सर्व साधारण तालीमयाफ्ता न हो सकेंगे हमारे शासनकर्त्ताओं की ना समझी है—कहां तक गिनाते जांय यह ना समझी भी एक अजब चीज़ है कितनाही समझाओ नहीं समझती सौ बही एक मैं नहीं मन में धँसती कितना ही शुद्धचित्त से कहो कि न समझने से क्या बुरे नतीजे हुये इसके सौ २ उदाहरण दिखलाओ पर वाहरे नासमझी कोई बात का रंगर नहीं होती अपना मतलब गाये जाती है–बार २ कहते गये औकात से बाहर काम न कर न माना किया करज़दार हो गया तकाज़े पर तकाज़ा सह रहा है चाहिये कि अब भी सम्हलकर चले रुपया दो रुपया चार रुपया महीने में देता जा पर वाह रे नासमझी न माना पर न माना–रंग २

ढीली हो गई नई जवानी की ताक़त अब बाक़ी न रही लेकिन तबियत का अल्हड़पन न गया। ख़ाहिशें पूरी न हुईं—"यह तन हरिअर खेत तरुनी हरनी चर गई—अजहूं चेत अचेत अब अधचरा बचाय ले,"—क्या किया जाय जब इस अहमक की नासमझी समझे तब न—ज़माना तबदील होगया लोगों के रहन सहन रीत बर्ताव आमदनी खर्च खयाल और काम में ज़मीन और आसमान का फर्क होगया फिर भी अस्सी वर्ष को तै किये हुये इस बुड्ढे को जो चढ़ी है सो चढ़ी है कितना ही सिर पचाओ यह अपनी नासमझी को नहीं हटाया चाहता—जिस समय का यह है उस समय के रूख भी अब नहीं हैं तो क्योंकर सम्भव है कि उस वक्त की बातें सब वैसी ही बनी रहैं—खोड़हे दांत वाले मुंह को बगार २ जब यह अपने लड़कपन की गप्प हांकने लगता है तो सुनते ही बनता है कुछ बोलते हैं तो अविनीत गुस्ताख और ढिठाई करने वालों की लिस्ट में नाम दर्ज किया जाता है लाचार विषका घूंट पीकर रहजाना पड़ता है—देखते हैं तो और २ देश वाले थोड़ी पूंजी में बड़े २ रोज़गार कर लाखों कमाते हैं हमारे देशके धनी लाखों रक्खे हैं पर पांच आना चार पाई के ब्याज के सिवाय उनकी हिम्मत होती ही नहीं कि रुपये से बड़े २ कारख़ाने खोल अनगिनत फ़ाइदा उठावें और सैकड़ों आदमियों की रोज़ी खोल देश से दुख दरिद्र को दूर बहावें कौन चारा है उन की नासमझी जब समझै तब न—दूसरों को क्या कहें हम भी तो इसी नासमझी के पेच में पड़े हुये हैं—आखें कमज़ोर होगईं डाक्टर वैद्य मित्रगण सब मना करते हैं समझाते हैं कि पढ़ना लिखना बन्द करो हम भी सोचते हैं अगर आंखें बिलकुल पट्ट होगईं तो छोटे २ बच्चे किस्की हार लगेंगे अगर चलते फिरते रहें तो उन के लिये किसी तरह कहीं से कुछ चारा चुग लायेंगे निरावलम्ब कहीं से किसी तरह का सहारा नहीं पर फिर भी तबियत नहीं मानती और यही सोचते हैं कि जब तक आंख ज़रा भी काम देती जांय तब तक जिन पुस्तकों से बराबर इतने दिनों तक प्रीति की बेल को सींचते आये जिन से हम सुख में दुःख में सम्पत् में विपत् में किसी समय जुदा नहीं हुये उन से कैसे एकबारगी मुंह मोड़ लें—रसिक पढ़ने वालों से १६ वर्ष से बराबर प्रीति निभती आई न जानिये कितने २ शारीरिक धनसम्बन्धी तथा राजकीय क्लेश सहकर भी इसे न छोड़ा प्रतिमास में एक बार•

अपनी चाह रखनेवाले सुजनों से मिल भेंट प्रीति संलाप के द्वारा महीने भर का वियोग जनित क्लेश के बोझ को हलका कर लेते थे और मानसिक भोजन की भेंट उन्हें अर्पण कर उन का कृपापात्र बन अपने को कृतकृत्य मान लेते हैं सो इस निगोड़ी आंख ने सब खोदिया नासमझ भी बनते हैं और इतने दिनों का किया कराया सब नष्ट होता है—जानते हैं यहां इस फ़ानी दुनिया में बहुत दिन रहना नहीं है ऐसा काम कर चलें कि पीछे लोग हमें पछतांय, सब से हिल मिल कर चलें किस ज़िन्दगी के लिये किसी से बैर विरोध मोल ले रहे हैं किसी को कड़ुआ बचन न कहें कपट कुटिलाई चुगली चपारी इधर की उधर लगाना सब छोड़ बैठें अपने थोड़े से फ़ाइदे के लिये किसी का बड़ा नुक़सान अपने चलत न करें पर नासमझी नहीं समझती—इसी नासमझी के दूर हटाने को भगवान् कृष्णचन्द्र ने १८ अध्याय गीता गाय डाला सुकरात अरस्तू अफलातूं कपिल करणाद गौतम आदि न जानिये कितने बड़े २ दार्शनिक और फिलासोफरों ने बहुत कुछ सिर धुना बुद्ध आये ईसा आये महम्मद आये शङ्कर आये कबीर आये नास्तिक आये अन्त को नये नबी राजा राय मोहन और स्वामी दयानन्द भी आये पर नासमझी की जड़ काटने में कोई कृतकार्य न हुये तब यह निरी हिमाकत है कि हमारे कहने से आप उसे दूर कर देंगे—महात्मा भर्तृहरि का वाक्य है—

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापिविषया,
वियोगे को लाभस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून्।
त्यजन्तः स्वातन्त्र्यादतुलपरितापाय मनसो,
स्वयं त्यक्ता ह्येते शमसुखमनन्तं विदधतु—

सप्तशती स्तोत्र और भगवद्गीता—

हमारे संस्कृत के साहित्य में ये दो ग्रन्थ ऐसे सर्वाङ्गसुन्दर और अतिगम्भीर भाव के प्रकाशक हैं कि जिन की गहराई की थाह जो जैसे पण्डित और विद्वान् हों उसके लिये उतना ही दुरूह है—परमार्थ की ओर चित्त झुकता हो तो गीता का अनुशीलन जन्म भर करता रहे नये २ भाव इसके अक्षरों से ऐसे निकलते आवैं कि जै बार इसे पढ़ो और बिचरो तै बार अब पैदा होने के

पलटे नये से नये टटके विचार उस में से निकलते आवें और एक ऐसी अद्भुत शान्ति जीमें जगह करती जाय कि जिस सुख का लव भी कहीं किसी दृश्य अदृश्य जगत् में मिलना संभव नहीं है—गीता उपनिषदों का सार भूत वेदान्त दर्शन का सर्वस्व है शान्ति के अनुपम खज़ाने की सन्दूक है—न केवल इतना ही बरन इसमें वह रत्न ठौर २ जड़ दिये गये हैं जो किसी दूसरी भाषा के ग्रन्थों में खोजने से भी न पाओगे—समाजनीति तथा धर्मनीति का सूत्रपात जो गीता में है उसी को बीजरूप मान धर्मशास्त्रप्रवर्त्तक ऋषियों ने शाखा प्रशाखा में पल्लवित किया है इसीलिये गीता का थोड़ा भी अनुशीलन और अभ्यास समस्त श्रेय का हेतु है—

"भगवद्गीता किञ्चिदधीता गङ्गाजललवकणिका पीता।
येनाकारि मुरारेरर्चा तस्य यमोऽपि न कुरुते चर्चा,,

इसमें स्वभाववाद अर्थात् सब स्वभाव से होता है जो नेचरियों की तालीम का एक हिस्सा है बड़ा नाज़ुक और भयङ्कर भी है—कितने लोग इस स्वभाव वाद के कट्टर पैरवी करने वाले दहरिये नास्तिकों की भी नाक काटने को तैयार हैं—भगवद्गीता में जो प्रकृतिवाद या स्वभाववाद का श्लोक है वह यह है

"प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः
अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते,,—
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति,,—

अर्थात् स्वभाव ही से सब काम करता हुआ किन्तु मैं करता हूं इस अहं-भाव से विमूढ़ अपने को कर्ता मानता है—इसका यही तात्पर्य है कि मनुष्य कर्तृत्व भोक्तृत्व का अभिमान छोड़ शान्ति धारण करे अपने को दयासागर परमेश्वर की इच्छा पर छोड़ रक्खे न कि स्वभाव की प्रबलता यहां तक मानले कि वह ईश्वर को भी दबाये हुये है सबों का कर्ता धर्ता कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ होकर भी अपने ही बनाये पदार्थ के आधीन रह एक ढर्रे पर बन्धे हुए के माफिक जकड़ा हुआ है प्राकृतिक पदार्थों के गुण या स्वभाव के बाहर ज़रा भी हिल डोल नहीं सक्ता—जो प्रकृतिके विकार ने उस पर अपनी प्रभुता जमाय उसे अपने आधीन कर रक्खा तो वह ईश्वर काहे को रहा—

ईश्वर स्वभाव के परवश हो काम नहीं करता किन्तु वह स्वच्छन्द अपनी इच्छा से सबों के सिखाने को सब काम किया करता है नहीं तो हम लोग साधारण जीवकोटि वाले और परात्पर परमात्मा में अन्तर ही फिर क्या रहा जैसा कि— "प्रकृतेः क्रियमाणानि" इसी के अवतरण में ये श्लोक वहां पर लिखे हैं:—

"न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि"—
"उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यात्कर्म चेदहम्।
संकरस्य च कर्तारमुपहन्यामिमाः प्रजाः"—

भगवान् कृष्णचन्द्र कहते हैं हे अर्जुन मैं सब भांत पूर्ण हूं मुझे किसी काम के करने की अपेक्षा नहीं है न मुझे कुछ अप्राप्य है जिसके मिलने की मुझे इच्छा हो तौ भी मैं प्राकृतिक मनुष्यों के समान जो सब काम करता हूं सो इसलिये कि यदि मैं सिखाने के लिये नमूना दिखलाने की भांत सब काम न करूं तो ये सब सांसारिक लोग अस्तव्यस्त काम कर संकर जाति होजांय—संसार का क्रम है जैसा बड़े लोग करते हैं उसी के अनुसार छोटे लोग भी इत्यादि—समाज बन्धन के लिये ऐसी उत्तम शिक्षा जैसा यहांपर गीता के इन श्लोकों से निकलती है दूसरे नीतिशिक्षा के ग्रन्थ में कम पाइयेगा —

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते"—

सच है बड़े लोग जो छोटों को राह दिखलाने का बीड़ा उठाये हुये हैं यदि सम्हल कर चलैं तो छोटे लोग जो बड़ों का अनुहार अपने लौकिक बर्ताव में किया करते हैं कभी कुढंग न हों—

सिवा परमार्थ और दार्शनिक विषय के राजनीति बड़ी गूढ इसमें पाई जाती है इसका आरम्भ ही महागूढ़ नीति के साथ हुआ है—अर्जुन को विषाद और कायरपन ने कैसे नाज़ुक समय में आ घेरा था कि जब दोनों दल युद्ध के लिये सब तरह पर अस्त्र शस्त्र लिये सन्नद्ध हो रहे थे शत्रु के मुकाबिले एक पांव पीछे हटना भी हार और पराजय को जान बूझ के बुलाना था युद्ध के लिये इतना भारी उद्योग सब व्यर्थ हो रहा था युद्धोत्साही वीरों का उत्साह

सब मिट्टी में मिलता मदान्ध अविनीत अन्यायी कौरवों को बिना प्रयास विजय श्री आप से आप आकर हस्तगत होने पर थी—ऐसे समय यह कृष्ण ही की अथाह बुद्धि और पालिसी थी कि उलटी सीधी सब तरह की बातें गीता के ज्ञान के द्वारा अर्जुन को समझाय उन्हें अपने ढंग पर ढुलकाय लाये और सब कायरपन दूर कर उन्हें महाभारत के युद्ध का प्रधान नायक बनाया—आदि से अन्त तक शान्तरस प्रधान गीता की ग्यारहवीं अध्याय में अर्जुन को विश्वरूप का दर्शन मानो शान्त में अद्भुत रस नगीनासा जड़ दिया गया है—दसवें अध्याय में भगवद्विभूति के वर्णन से यह दिखलाया कि उस चिदानन्द घन की सर्वव्यापिनी शक्ति की प्रबलता जिसमें विशेष रहती है वह उसी का रूप है—

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥

सच है इन्द्रियां ऐसी ही प्रबल हैं उन को वश में विना किये अस्थिर और चंचलमन क्योंकर काबू में रह सक्ता है जिस्को काबू में लाने का सहज उपाय जैसा भगवद्गीता का अभ्यास और विचार है वैसा जगत् में दूसरा कोई नहीं है—अठारहवें अध्याय में जो सत्वरज तम के भेद से त्रिगुण विभाग दिखलाया गया है उस्का अच्छी तरह अभ्यास किये रहे तो उत्तम मध्यम अधम प्रकृति के लोगों को जल्द पहचान लेने में कभी न चूकै—तात्पर्य यह कि गीता जैसा परमार्थ साधन का एकमात्र सर्वोत्तम उपाय है वैसाही यह लोक भी इस्के द्वारा बड़ी खूबसूरती और उमदगी के साथ सिद्ध होता है यदि इस्के उलटे सीधे वाक्यों पर न बहक उन के गूढ़ मर्म को अच्छी तरह समझता रहे—

इस्में जो ठौर २ संसार के दोष दर्साय उस्से विरक्ति दिखलाई है सो इसीलिये कि हम सदा अपनी चौकसी करते रहैं विषयवासना में न फंस बुरे काम की ओर से मुह मोड़ैं भलाई के काम में तन मन से तत्पर रहैं न कि आधुनिक वेदान्तियों की भांत भलाई बुराई दोनों को एकही मान बैठैं—इसी लिये आधुनिकवेदान्तियों के मत के अनुसार भला काम करने से भी वैसा ही बन्धन में फसजाना पड़ता है जैसा बुराई करने से—हवाई बुर्ज गन्धर्वनगर के समान परमार्थ के पीछे पड़ इस लोकको छारमें मिलाते हुये जैसा आधुनिक वेदान्तियों ने लोगोंकी उलटी सीधी बातें सुझाय देशमें निष्पुरुषार्थ और अनुत्साह की जड़

पुष्ट किया वैसा किसी दूसरे ने नहीं—संसार जो मनुष्य के जीवन का सार है उसे नाशवान् क्षणिक और अनित्य मान इसपर सब लोगों की हेयबुद्धि दृढ़ किया और परमार्थ सो इन कुलच्छनों का बनाया न बना तब इतो भ्रष्टस्ततो-भ्रष्टः हो त्रिशङ्कु के समान बीच में लटके रहे धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का—हम इन वेदान्तियों को देखते हैं तो कसौटी के समय ऐसा भरे मुंह गिरते हैं कि संसार अनित्य और निस्सार है यह उन की शिक्षा न जानिये किस भड़भूंजे के भार में झोंक दी जाती है—अपना फूटी झंझी का भी नुकसान उन का अनुदार चित्त नहीं गंवारा करता ज़बानी जमाखर्च की भांत संसार की अनित्यता और असारता न जानिये कहां चली जाती है—ये मुंह से चाहो जो कहें पर संसार को ऐसा गहिके पकड़े हुये हैं कि इन की करतूत देख शरम आती है—गीता में ऐसे ही लोगों को मिथ्याचार की उपाधि दी गई है—

"कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढांस्तान्मिथ्याचारः स उच्यते"—

ये सब मिथ्याचारी दाम्भिक आप तो खराब गये ही अपने इर्द गिर्द के रहने वाले सहवासियों को भी अपने साथ ही ऐसा डुबोया कि अनुपम रत्न गीता के ज्ञान को बदनाम कर डाला वास्तव में गीता संस्कृत साहित्य का परमोत्तम आभूषण स्वरूप है—

जैसा गीता शान्तरस की पोषक और परमार्थसाधन का एकमात्र प्रधान अंग है वैसाही सप्तशती वीर रस की नितान्त पोषक और यह लोक के सिद्ध करने का उत्कृष्ट साधन है—तान्त्रिक और शाक्त सम्प्रदायका तो यह दुर्गास्तोत्र आदि कारण है और बुनियाद में इसी को कायम कर कई लाख तन्त्र के ग्रन्थ और कालिका आदि कई एक पुराण बने हैं—पर हम को इस मत मतान्तर के झगड़े से कोई प्रयोजन नहीं हम यहां पर केवल यह दिखलाया चाहते हैं कि दुर्गास्तोत्र कितना लोक उपकारी और अतिशय पाण्डित्य का ग्रन्थ है—जिस समय संसार की जड़ उखाड़ने वाला गीता का ज्ञान फैल रहा था यदि चण्डी पाठ का प्रचार न हुआ होता तो हिन्दुस्तान का उच्छेद होजाने में कौनसी कसर बाकी रह गई थी—हम तो यही कहेंगे कि एक ओर बौद्ध और जैनियों से दूसरी ओर आलसी निष्पुरुषार्थी रूखे वेदान्तियों से देश का उद्धार दुर्गाही

की कृपा है जिस ने फिर से हिन्दुस्तान में पुरुषार्थ की जड़ कायम कर दिया—हमे ऐसा मालूम होता है कि वेदान्त जिसने पुरुष को प्रधान रक्खा है उसी के जोड़ पर सांख्य वाले ने प्रकृति की प्रधानता का यह ग्रन्थ रचा जिसमें प्रकृति को सर्वोपरि स्थापित करने में कहीं से त्रुटि नहीं की गई—शान्ति क्षान्ति धृति लज्जा श्रद्धा दया तितिक्षा निद्रा तन्द्रा क्षुधा तृषा श्री ह्री तुष्टि पुष्टि कान्ति मति चेतना इत्यादि जितनी "ऐब्सट्रैक्ट्स लिटी" सत्वरजतमरूप त्रिगुण विभाग में हैं जिनसे यह संसार चल रहा है सब उसी सर्वव्यापिनी प्रकृति शक्ति का भेद है जिसे गिनाते २ अन्त में यहां तक कहडाला है—

"विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु,,

जितनी विद्या सब तुम्हाराही भेद हैं और संसार में जितनी स्त्रियां हैं सब आपही हैं—स्त्रीमात्र को आद्याशक्ति भगवती का रूप समझने का पूरा २ बोध हो जाय तो उस मनुष्य के सिद्ध हो जाने में फिर कसर ही क्या रही—दूसरे यह कि गीता में जो भगवद्विभूति दिखलाया उसी के जोड़पर दुर्गा में प्रकृति शक्ति की विभूति दिखलाई गई है—पढ़ते २ चित्त में बीररस स्थानकर ले रग २ और रोम २ में बीरता छाजाय; यह एक अद्भुत शक्ति दुर्गापाठ ही में है—योंतो दुर्गापाठ ब्राह्मणमात्र की एक साधारण जीविका हो गई है और दो दो पैसे पर ब्राह्मण लोग चण्डी पाठ किया करते हैं पर इस के अनोखे अक्षरों का मर्म समझकर इस्के अर्थ और मज़मूनपर ध्यान दै पाठ करने वाले विरले कोई सौ में एक होंगे ऐसे एक पाठ से भी जो काम सिद्ध हो सक्ता है वह दो पैसे वाले सौ पाठ से भी नहीं—दूसरे यह कि अक्षर और शब्दों में कितना असर है चण्डीपाठ इस्का नमूना है—

प्राणीमात्र में साधारण ज्ञान की फिलासोफी का थोड़े में विवरण जैसा दुर्गा में मिलता है कदाचित् दर्शन के और २ ग्रन्थों में भी न पाओगे—साधारण ज्ञान के होने पर भी प्राणीमात्र में ममता के कारण विवेकान्ध मूढ़ता का उदाहरण जो पक्षी और उन के बच्चों में दिखलाया गया उसे पढ़ कौन न कहेगा कि यह बिल्कुल नया है किसी दार्शनिक को अब तक नहीं सूझा था—चिड़ियें दिनभर चुग कर सांझ को बड़े प्यार और वात्सल्य से सब चुगे हुये अन्न

को अपने बच्चों के चोंच में आ कर छोड़ देती हैं और आप भूखी रह जाती हैं-इस्से प्रगट होता है कि इन पक्षियों में यह स्वाभाविक ममता केवल उसी सर्वव्यापिनी प्रकृति की महिमा है जिस ने प्राणीमात्र को ममता के भंवरजाल में छोड़ रक्खा है—विष्णु मधुकैटभ दैत्यों के वध करने में समर्थ थे पर योग-निद्रा से आक्रान्त उन को कुछ होश न रहा-ब्रह्मा की स्तुति से प्रसन्न हो वही योगनिद्रा विष्णु से जुदा हो मोहमयी हो उन दोनों दैत्यों को आय घेरा—इस्से प्रगट हुआ कि वही प्रकृति जब जिस के लिये शुभ अशुभ होने वाला होता है तब तैसा सौम्य या भयङ्कर रूप धर उस मनुष्य के हृदय में वैसी प्रेरणा करती है-इसी बात को इस श्लोक में और भी स्पष्ट कर दिखाया है-

या श्रीः स्वयं स्वकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परि पालय देवि विश्वम् ।

जो तुम सुकृत करनेवालों के घर में सकल संपत्तिरूप हो और पाप कर्म करनेवालों के घर में दुःख दरिद्ररूप से रहती हो अर्थात् सुकृती सदा सुखी रहते हैं और पापी दुःख भोगते हैं सो यह सुख दुख दोनों तुम्हारा ही रूप है-और भी जो कृतधी विद्वान् हैं उन के हृदय में जो बुद्धितत्व है वह भी तुम्ही हो आस्तिक श्रद्धालु सज्जनों में श्रद्धारूप भी तुम्ही हो कुलीनों के लिये लाज जो ऐसी नाज़ुक बात है कि ज़रा में धूर में मिल जा सकती है वह भी तुम्ही हो-

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्नज्ञायते हरिहरादिभिरप्यपारा । सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृताहि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥

थोड़े ही में सांख्यदर्शन का सारांश इसमें रख दिया गया है—

आदि से अन्त तक वीररस में जो ठौर२ भगवती के स्वरूप वर्णन में वीर रस का विरोधी शृङ्गाररस का वर्णन किया गया है उस से इस की कविता विरुद्धरस के वर्णन से बिगड़ने के पलटे बड़ी मनोहर और उत्कृष्ट होगई जैसा-

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रविम्बानुकारि कनकोत्तमकान्ति कान्तम्। अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।

ईषतहास्ययुक्त विमल कुन्दन की सी उत्तम कान्ति वाला पूर्णचन्द्रमा का अनुहार करता हुआ तुम्हारे मुख को देख क्रोध से पूर्ण हो फिर भी महिषासुर ने तुम पर क्योंकर प्रहार किया यह बड़ा ही अद्भुत है—जो जिस वस्तु का अनुहार करता है वह अनुहार करने वाली वस्तु से कम होता है तुम्हारा मुख अनुहार करने में भी बढ़ा हुआ है क्योंकि यह विमल और निष्कलंक है और चन्द्रमा कलंकी है—दूसरे यह भाव इस्से प्रगट किया कि वह दैत्य कहां तक निठुर और नीरसहृदय था कि ऐसे सरस मुखचन्द्र पर प्रहार करते उसे ज़रा भी दया न आई न रस का स्वाद उस्के मन में समाना—

दृष्ट्वैव किन्न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रम्। लोकान् प्रयान्तु रिपवोपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वहिषु साध्वि—

ऊपर का यह श्लोक प्रबल प्रौढोक्ति का एक ही उदाहरण है आधुनिक कवियों को कभी सूझे ही गी नहीं—"आप जब देखने ही मात्र से शत्रुओं का संहार कर सक्ती हैं तब उन के साथ युद्ध कर उन पर ये प्रचण्ड अस्त्र शस्त्र का प्रयोग आपने जो किया इस्का मर्म यही है कि इन दुष्टों ने बड़े २ पाप किये हैं यदि देखने ही मात्र से इन्हें भस्म कर देंगी तो इन की गति न बनैगी इस लिये इन्हें शस्त्र से पवित्र करदें जिस्में इन का सब पाप धोजाय और संग्राम में शत्रु के सन्मुख प्राणत्याग कर सूर्यमण्डल को भेद वीरगति पावें इस तरह हे साध्वी जो तुम्हारे सरलचित्त भक्त हैं उन का तो कहना ही क्या कुटिल शत्रुओं पर भी तुम्हारी साधुबुद्धि रहती है"—ज़बरदस्ती का एहसान इसी का नाम है इसी से हम इसे प्रबल प्रौढोक्ति कहते हैं—शक्रादिस्तुति और नारायणी स्तुति दुर्गा के इन दो भाग में ऐसी २ न जानिये कितनी भक्ति रस में सनी उक्ति युक्ति हैं जिन के पढ़ने से काव्यरसिक को एक अनूठा स्वाद मिलता है—दो एक उदाहरण जो यहां पर दिये गये वह केवल दिग्दर्शन मात्र के लिये—

विश्वेश्वरी त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्। विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।

अर्थ इसका स्पष्ट है—किन्तु जो भाव इसमें दिखलाया वह अभिप्रायसहित विशेषण के कारण परिकरांकुर और काव्यलिंग अलङ्कार का एक उत्तम उदाहरण हो सक्ता है इसकी ध्वन्यात्मक सरस कविता इसके भावार्थ को अतिगम्भीर करती है—इस समय के नई सभ्यता वाले अविश्वासी और श्रद्धाबुद्धि पर कुल्हाड़ा चलाने वालों की तो बात ही निराली है नहीं तो इसके एक २ श्लोक एक २ मन्त्र के समान हैं जिन का शुद्ध चित्त और सरलभाव से जप या पाठ इष्ट साधन के लिये कल्पवृक्ष के समान है—

पांचवीं अध्याय में शुम्भ दैत्य का भेजा हुआ दूत सुग्रीव और महाकाली का संवाद पढ़ कौन न कहेगा कि बड़ी गूढ़ पालिटिक्स दरसाई गई है—आठवें अध्याय रक्तबीज के युद्ध में तथा चण्डमुण्ड के युद्ध में जो अद्भुत और वीभत्स रस दरसाया गया है सो वीररसप्रधान सप्तशतीचरित्र में सोने में सुगन्ध के तुल्य हो गया है—अन्त को इतना और कह हम इस लेख को समाप्त करते हैं कि भगवद्गीता जैसा दार्शनिकतबीयत वालेको परमार्थसाधन का एक अद्भुत लटका है वैसा ही सप्तशती भुक्ति मुक्ति दोनों को सम्पादन करती हुई काव्यवासनाविदग्ध रसीली तबियत वाले के लिये एकमात्र मनोरञ्जक प्रबन्ध है—

। प्राप्त ।

मनुष्य और उसमें अहम्बुद्धि

मनुष्य भी घट पट के समान संकेतित अर्थ का बोध करता हुआ एक संज्ञा शब्द है—प्रत्यक्ष में तो मनुष्य शब्द दो हाथ दो पांव एक सिर और धड़ आदि अवयवयुक्त संज्ञा का बोधक है किन्तु इसके अतिरिक्त कई एक शक्तियां भी इसके साथ लगी हैं जिन्हें हम सुनने सूंघने छूने चखने की शक्ति कहते हैं और जिन का होना सिद्ध करने को न केवल प्रत्यक्ष प्रमाण बल्कि अनुमान को भी काम में लाना पड़ता है जैसा किसी ने सूंघने की शक्ति को प्रत्यक्ष नहीं देखा पर जब एक ने फूल को ले नाक के पास लाय उसकी सुगन्धि या दुर्गन्धि से प्रसन्नता या विषाद प्रगट किया तब दूसरे को अनुमान हुआ कि फूल में एक प्रकार की सुगन्धि

या दुर्गन्धि होती है जिसे हम नासिका द्वारा जान सक्ते हैं-तो निश्चय हुआ कि हाथ पांव आदि अवयव और सूंघना सुनना आदि शक्तिविशिष्ट ससष्टिं का नाम मनुष्य है-अब देखना चाहिये यह समूह मनुष्यसंज्ञा का पूरा २ बोधक हुआ या नहीं—यदि नहीं हुआ तो क्यों फूल को देख उस के सूंघने का मन सूंघने वाली शक्ति में है या किसी दूसरे में यदि सूंघने की शक्ति ही में यह गुण है तो हाथ उस्के सूंघने के लिये क्यों उठता है—क्योंकि हाथ घ्राण शक्ति के आधीन नहीं है न यह शरीरस्थ दूसरी २ शक्तियों के आधीन है तो मालूम हुआ कि मनुष्य इस समष्टि में सिवा उन २ शक्तियों के एक मन शक्ति भी है—अब देखना चाहिये यह मन शक्ति स्वतः है या यह भी किसी दूसरी शक्ति के परतंत्र है—भौंरे को फूल पर बैठा देख मन सोचता है कि भौंरा डंस लेगा इस लिये इस्से बचना चाहिये तो मन क्योंकर घ्राण इन्द्री के परतंत्र ठहरा बल्कि मन और घ्राणशक्ति दोनों किसी दूसरी शक्ति के आधीन हैं जिसे बुद्धि या विवेचनाशक्ति कहते हैं—तो अब सोचना चाहिये कि फूल के सूंघने का मन करना मनशक्ति हुई और भ्रमर उस्पर बैठा देख उस के काटने से बचने का उपाय करना बुद्धिशक्ति है तो फूल के सूंघने से जो सुख प्राप्त हुआ वह किसे हुआ ? क्योंकि मन और बुद्धि इन दोनों शक्तियों के जुदे २ काम हैं तो यह कौन है जो कहता है कि इस फूल की महक भली है इस्के सुख का अनुभव आज मुझे हुआ—मन और बुद्धि तथा बाह्य इन्द्रियों से परे भी कोई है जो इस सुख का अनुभव करता है और इस्का नाम अहंशक्ति या अहंभाव है—इस्से निश्चय हुआ कि पुरुष संज्ञा हाथ पांव आदि बाह्य इन्द्रियां सुनना सूंघना आदि आभ्यन्तरिकशक्ति मन बुद्धि और अहंकारशक्तिविशिष्ट समूह की संज्ञा है—पर यह सब शक्तियां मन बुद्धि अहंकार की जागृत और स्वप्नदशा में एकही सी हालत नहीं रहती जिस्को इसकी समष्टि जागृत अवस्था में नित्य और अपना कर मानती है उस्को स्वप्नदशा में बिल्कुल भूल जाती है इसी तरह सोने की दशा में जो कुछ देखा था वह सब जागने पर मिथ्या हो जाता है-अब भेद खुल गया कि पुरुष संज्ञा कोई एक सत्ता है जो सब से पृथक् है जिस्का पूर्ण ज्ञान केवल आप्त वचन के द्वारा हो सक्ता है—इसी पुरुष का अविद्या से संयोग होना ही ऊपर कही हुई सब शक्तियां पैदा कर

देता है और आवागमन की जंज़ीर से इसे कसे हुए है—अविद्या तिमिर को नाश करते ज्ञान रूपी भानु का प्रकाश होते ही सब इसे मिथ्या और असत् देख पड़ने लगता है और तब मनुष्य अपनी पूर्णशक्ति पहचान लेता है—

"यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते—
हत्वापि स इमांल्लोकान् नायं हन्ति न बध्यते,,—

अर्थात् जो अहंकार से लिप्त नहीं हुआ मैं कोई नहीं न मैं कुछ करता हूं इस तरह की बुद्धि जिस में नहीं जगह पाती और कर्म के बन्धन से छुटकारा पाये स्वतः ज्योति में प्रवेश कियेहुये है वह इस जगत् के मनुष्यमात्र को मार डाले तो न उसने किसी को मारा है न उसे किसी तरह का पाप लगा है—

सम्पादक—हिं०—प्र०—आधुनिक वेदान्तियों ने ऐसी बे सिर पैर की गढ़न्तों से हिन्दुस्तान को धूर में मिला दिया—हम तो यही कहेंगे कि ऐसी ऐसी गढ़न्त न जानिये कितनी आधुनिक वेदान्तियों ने गीता में पीछे से मिला दी हैं और कदाचित् न भी मिलाई हों तो कृष्णचन्द्र महाराज ने साथ हिकमत के ऐसी २ शिक्षा अर्जुन को दी, जिस में अर्जुन अपना कायरपन दूर कर युद्ध के लिये सनद्ध हों—ये सब सिद्धान्तवाक्य नहीं हैं अथवा इस का यह प्रयोजन है कि मनुष्य हमता ममता में फसाहुआ जो अनर्गल काम करने लगता है और अपनी उलटी समझ को सत्य और उचित मानता है सो न कर चित्त में शान्ति धारण करे जो इस लोक और परलोक दोनों के सुधारने का एक अनोखा साधन है—क्योंकि बिना शान्ति आये अहङ्कारयुक्त मनुष्य का जैसा हाल होता है वह गीता में कई जगह कई तरह पर दिखाया है जैसा—

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥
इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये वा परानपि ।
ईश्वरोहमहं भोगी सिद्धोहं बलवान्सुखी ॥

आढ्योभिजनवानस्मि कोन्योस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ । इत्या० ॥

इस तरह के कुफ़ल न प्राप्त हों इस लिये अहम्भाव से मुक्त होना कहा गया है न कि संसार भर को मारडालै और उसे पाप न लगे—

इलाहाबाद में तालीम पर गिरानी ॥

इलाहाबाद वालों के न जानिये कैसे अभाग हैं कि यहां अंगरेज़ी तालीम निहायत गिरां कर दी गई है—पहिले तो यही एक खयाल करने की बात है कि पश्चिमोत्तर और अवध में कई कालेज हैं इतनी ज़ियादह फीस किसी कालेज में नहीं रक्खी गई जितनी यहां म्योरसेंट्रलकालेज में ली जाती है और यह फीस समझ बूझ के रक्खी गई है जिस्में साधारणलोग अपने लड़के को उत्तम शिक्षा न दे सकें—अस्तु पराधीन हैं जैसे रक्खोगे वैसे रहेंगे हमारे बालकों को उत्तमशिक्षा देने से आप की हानि है मुकाबिला करने को सन्नद्ध होते हैं तो हम अब उतनाही उन्हें पढ़ावेंगे जिस में तालीम का नतीजा जोश और सर गरमी न आने पावे—थोड़ा पढ़ना लिखना सिखा किसी तरह अपना पेट पाल लें जन्मभर लद्दू जानवर बने रहेंगे जोश तबियत में न आवेगा नहीं सही इस महामंहगी के समय किसी तरह पेट तो पलेगा—सो न जानिये किस कुटिल-मति हमलोगों की बुराई चाहनेवाले की राय शिक्षाविभाग के महामहन्त को पसन्द आई कि कालेज में लड़कों को पढ़ाना दूर रहा ज़िलअ स्कूल में भी फीस हद्द से ज़ियादह बढ़ा दी गई न केवल इतनाही बरन पैसा वसूल करने के ऐसे २ नियम गढ़ दिये हैं कि हर एक बहाने जैसे हो पैसा वसूल हो—अलावे फीस के बात २ में फाइन का पैसा दो, क्रिकेट का दो, पंखे का दो, किताब हरसाल नई २ बदली जाती हैं उसे खरीदो, तात्पर्य यह कि बाप मा को लड़कों को स्कूल में पढ़ाना एक बड़ा भारी बोझा होगया है जिस बोझ को कम आमदनीवाले साधारण लोग नहीं उठा सक्ते—अन्त में इस सब का खुलासा यही मालूम होता है कि जब कर अपने लड़कों को सब लोग न पढ़ा सकें—जितनी

अधिक फीस यहां के ज़िलहस्कूल में रक्खी गई है उतनी पश्चिमोत्तर के किसी स्कूल में नहीं है बरन बंगाल और बिहार ऐसे मालदार ज़रखेज़ सूबे में भी नहीं है जहां इस्तिमिरारी बन्दोबस्त की बरकत से सब लोग निहायत खुश खुर्रम हैं—इन्ट्रेन्सक्लास में ३॥) रुपया फीस =) पंखा और क्रिकेट का—नियम के विरुद्ध कुछ होजाने से फाइन—छोटी २ किताबों का चौगुना पचगुना दाम—सब मिलाकर ५) महीना एक लड़के की पढ़ाई का खर्च औसत से पड़ता है—साधारण आदमी जिसे १५ या बीस रुपया महीने में किसी तरह मिलता है उसका पांच रुपया महीने में फीस आदि का निकल गया तो बाकी में वह अपनी गृहस्थी क्यों कर चला सकता है—पहले आदि में हम लोगों को बहुत थोड़े खर्च में गवर्नमेन्ट उत्तम से उत्तम शिक्षा का चस्का दिलाय अब जो तालीम को बड़ी मंहगी करती जाती है और चाहती है कि लोग अब कम पढ़ें सो यह अंगरेजी गवर्नमेंट को शोभा नहीं देता कि आदि में इतनी उदारता प्रगट कर अब संकीर्णता का भाव धारण करती जाती है—यदि पीछे से कठोरता ग्रहण करना था तो पहिले ही से क्यों उदार बनी हम लोगों की जो कहो तो हम तो मुसलमानी राज्य के शासन में बड़े २ अन्याय बरदाश्त कर चुके थे क्यों हमें अन्याय से उबार थोड़े दिनों के लिये ऐसा सुख दिया कि कड़ाई सहने की हमारी पहली आदत अब बाकी न रही—यह वही नेसफील्ड साहब हैं जिन्हों ने बनारस कालेज के नीचे के दरजे टूट जाने पर बहुत ही थोड़ी फीस पर एक ब्रैंचस्कूल कायम कर वहां के लोगों को तालीम बहुत आसान और सस्ती कर दिया था—मिस्टर नेसफील्ड वही उदारता यहां इलाहाबाद में प्रगट कर दिखाते तो हम लोग निहाल हो उक्त साहब को रोम २ से असीसते—दूसरे यह कि मिस्टर हूइट का ज़माना अब न रहा जिन्हों ने शिक्षा विभाग को जहां तक कड़ा करना मुमकिन था न चूके और तालीम हद्द से ज़ियादह मंहगी कर गये न अब सर आकलैण्ड कालविन का ज़माना है अब श्रीमान् सरचार्ल्सक्रासवेट का समय है जिन के न्यायशील होने के सुयश की महक सब ओर छा रही है—ऐसे समय में भी यदि तालीम पर कुछ रियायत न की गई तो निश्चय हम लोग बड़ेही अभागे हैं और न कोई उम्मेद है कि शिक्षाविभाग में पहिले का सा उदार भाव फिर बहाल हो मूर्खता पिशाची से हमारा गला छुटा रहेगा—हम अपने यहां के धनी सामर्थिवालों को

बारः इसी लिये चिताते हैं कि गवर्नमेन्ट उदारभाव नहीं ग्रहण किया चाहती तो आपही अपनी उदारता को ज़रा सा सिकोड़ लेते और कलियुग के करण बनने को जो अनेक तरह की बेहूदगी कर रहे हो उसे छोड़ देते–जो कुछ धरम के खाते में आप की वहियों में लिखा जाता है उसे रोक विद्यादान महादान में लगाते जिस में वह लोक परलोक दोनों बनता अपने निज का स्कूल और कालेज कायम होजाता तो सस्ती से सस्ती तालीम हमारे युवकजन पासकते और तब हम गवर्नमेन्ट का मुह क्यों जोहते और इतना गिड़गिड़ाय दीन बनते—पर क्या करैं इधर से सर्बथा निरास हैं इस लिये गवर्नमेन्ट से विनय करते हैं और चिताते हैं कि यह क्रम उस के उत्तम प्रबन्ध और उदार राजनीति में बड़ा धब्बा है तस्मात् हम लोगों की शिक्षा के लिये जो पहिले क्रम था वही होना चाहिये। किमधिकम्–

हिन्दू और मुसल्मानों में आपस का विरोध।

आज कल यह सब क्या होरहा है कि हिन्दू और मुसल्मान आपस में कटे मरते हैं–आजिमगढ़ बलिया ऐसे छोटे शहरों की कौन कहे बम्बई सरीखे बड़े शहरों में भी जहां के लोग अत्यन्त सीधे और रोज़गारी प्रसिद्ध हैं वहां भी यह आग भड़की—सैकड़ों की जान इस महा विभ्राट में नष्ट हुई लाखों रुपये का नुकसान लोगों का होगया मन्दिर और मूर्तियों का तोड़ना जो औरंगज़ेब के उपरान्त कभी नहीं सुनागया था फिर होने लगा हिन्दुओं ने भी इसके बदले में कई मसजिदें ढहाय डालीं–यें सब उपद्रव क्यों हुये अंगरेज़ी राज्य की शान्ति में क्यों बड़ी बाधा पहुंची इस सब का कारण क्या है–हिन्दू और मुसल्मान दोनों में ऐसी खिल्त मिल्त होगई थी कि दोनों में दामन चोली का अन्तर रह गया था हिन्दुओं के तेहवार और जलसों में मुसल्मान बे उज़ुर शरीक होते थे और मुसल्मानों के तेहवार में हिन्दू–भाईचारे के मेल से मुसल्मान भी जो बात हिन्दुओं को ना पसन्द और उन के चित्त को दुखदायी थी उसे छोड़ बैठे थे सब भांत आरामचैन और शेर बकरी एक घाट पानी पीते थे–पर अब इधर पांच सात वर्ष से न जानिये क्या विष घोल दिया गया कि दोनों के दिलों में जो कद और द्रोह पैदा हो गया है वह पहले कभी न था–सरकारी कर्मचारी पहले से

इस्का कुछ ऐसा इन्तिज़ाम क्यो नहीं करते कि इस तरह का बलवा न होने पावे और लोगों के जान माल की भी रक्षा रहे—जो यह कहा जाय कि उन को इस्की खबर नहीं होती तो विश्वास नहीं पड़ता—हां कदाचित् सुन कर भी इसे खफीफ बात समझ ध्यान न देते हों पीछे से बढ़ कर जब महाविभ्राट हो जाता है तब आग लगने पर पानी के लिये दौड़ते हैं—स्वास्थ्य होने पर लोगों को पकड़ २ सज़ा देना या वहां अडिशनल पुलिस तैनात कर ठिक्कस के बोझ से पिसे हुओं को और पीसना यही सब इस्का परिणाम होता है—हमें तो ऐसा मालूम होता कि असल में इस झगड़े की बुनियाद कानून के विस्तार का फल है—जब मुसल्मानों को यह मालूम होता है कि गोबध कानून की मनशा से कोई जुर्म नहीं है तब उन को इस काम के करने का साहस होता है और इस बात का कुछ खयाल नहीं रहता कि इस्से हिन्दुओं का कितना जी दुखता है—दूसरे यह कि सर्कार को खुद इसे करते देख मुसल्मानों को भी हौसिला और हिम्मत होती है कि हम भी क्यों न ऐसा ही करें हमारे तो मज़हब में इस का करना रवा है—माना कि यह मज़हब से दुरुस्त है तो इस धूमधाम और हिन्दुओं को दिखा २ के क्यों किया जाता है—कौन नहीं जानता सर्कारी छावनियों के लिये नित्य यह काम किया जाता है कभी किसी को इस्का कुछ खयाल भी नहीं होता किन्तु जानबूझ कर जब एक दल के लोग दूसरे का दिल दुखाने के लिये कोई बात करें तब दूसरे दलवाले कैसे ही हीन दीन और शान्त सुभाव के हों उनको अपना शान्त सुभाव स्थिर रखना बड़ा कठिन होता है—हिन्दू वा मुसल्मानों की समाज में जो पढ़े लिखे हैं वे कहीं नहीं सुनने में आये कि ऐसे २ उपद्रवों में शरीक हुए हों इसमें बहुधा देहाती और के रज़ील शरीक होते हैं और निरे मज़हबी जोश के सबब इस तरह के फसाद बरपा करते हों सो नहीं बल्कि उन की विशेष इच्छा लूटमार की रहती है—पीछे से इन रज़ीलों का कुछ नहीं बिगड़ता इज्जतदार भले आदमियों पर बिसाती है—इसलिये गवर्नमेंट को चाहिये इस तरह के उपद्रवों की जहां कुछ टोह लगे वहां इन रज़ीलों का पहिले ही से कोई प्रबन्ध करे तो ये उपद्रव इतने तूल और विस्तार को न पहुंचें—दूसरी बात यह कि महाराजा अक्बर के समान इस्की कतई मुमानियत क्यों न कर दी जाय सर्कार

अपनी फौज से भी इसे बिलकुल उठादे और इसके उठादेने से जो नुकसान होता हो वह हम लोग बड़ी खुशी के साथ देने को समुद्यत हैं—जब तक इसकी कतई मनाही न करदी जायगी हम नहीं समझते इस तरह के उपद्रवों की सदा के लिये जड़ कटी रहेगी झगड़ा तै करने का सहज उपाय यही है आगे जैसा गवर्नमेण्ट की इच्छा—ऐसा होने से न केवल देश में सब भांति शान्ति रहैगी वरन गोधन के क्षीण न होने से कृषिप्रधान देश भारत को बड़े लाभ होने की सम्भावना है—यह हिन्दुस्तान ही है जहां गौयें एक प्रकार का धन समझी गई हैं अपना धन नष्ट होते देख उसके बचाने की इच्छा किसे न होगी—हमारे देश का यदि गोधन बचा रहे तो यह अकाल और महंगी के क्लेश से हम जो अत्यन्त दुखी हो रहे हैं सब मिटजाय ब्रिटिशशासन यहां अटल होजाय और हम सबों के चित्त में राजभक्ति का चिरस्थायी बीज बोजाय—

हिन्दुस्तान में सिविल सरविस का इमतिहान।

कोई जाति चाहो कैसी ही असभ्य हो जब तक जित हो पराधीन नहीं हुई तब तक उसके शासकतागुण में कभी किसी को कोई प्रश्न हो ही नहीं सक्ता—जैसा—

"दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी"

मनुष्य में कितना ही गुण हो दरिद्रता एक ऐसा दोष है कि वह समस्तगुण के पुंज को मिट्टी में मिला देता है उसी तरह जित या पराधीन हो जाना भी सब गुण को नाश कर देता है—हम लोग कितना ही गुणगणालङ्कृत हों हर तरह पर अपने को योग्य और कुशल प्रकट कर दिखावें पर अपने शासनकर्त्ता की दृष्टि में हेच नाचीज़ और तुच्छ ही जंचते रहैंगे—हां जित और आधीन में दोष उस अवस्था में अलबत्ता नहीं बाकी रहता जब जेता मुल्क फतेह करने के बाद उसी देश में जम जाता है जैसा मुगलों का खान दान यहीं बसगया और अपने को यहां का निवासी माना—देश में जेता की स्थिरता का दूसरा नियम जित की सहायता है जेता की आज्ञा का यथोचित प्रतिपालन राज्य में अमनचैन कायम रहना सब तभी होता है जब जेता जितों की सब तरह पर खातिर करता है और हम इन से पृथक् हैं इस भाव को छोड़ देता है—यही

सब सोच समझ विलाइत के बड़े बुद्धिमान् पटुबुद्धि राजनीतिज्ञों ने ब्रिटिश-शासन के आरम्भ ही से यह नियम करदिया कि जित और जेता में समभाव रहे और इस भाव को श्रीमती महाराणी का सन् ५८ के आज्ञापत्र ने और पुष्ट कर दिया—जिसके यही माने हुए कि हुकूमत करने वालों की कोई जात पांत नहीं है चाहो रङ्ग का गोरा हो या काला अंगरेज़ हो या नेटिव क्रिश्चन हिन्दू हो या मुसल्मान पारसी हो या यहूदी जो कोई इस लायक हो उसी को सर्कारी सब ओहदे विना फ़र्क के दिये जांय—फिर भी सिविल सरविस के लिये जो समय २ क़ाइदे बनते आये उसमें ऐसी २ कड़ी शर्तें लगा दी गईं कि ४० वर्ष के बीच अंगरेज़ १३०० इसमें किये गये जब कि हिन्दुस्तान के रहने वालों में से कुल २५ सिविलसरवेंट अब तक हो सके प्रतिवर्ष में भी एक न पड़े—इसी कड़ाई के दूर करने को अब यह प्रश्न उपस्थित है कि सिविलसरविस का इम-तिहान हिन्दुस्तान और विलाइत में एकसा हुआ करै तो यहां वालों को तीन हज़ार मील विलाइत जाने में जो बहुतसी दिक़तें और बहुतसा खर्च उठाना पड़ता है सो न पड़े—विलाइत के बहुत से उदारचित्त और इनसाफ पसन्द लोगों की भी यही राय है कि यह इमतिहान एकसां दोनों जगह हुआ करे—हाल में मिस्टर हरबर्टपाल दादाभाई नोरो जी ने हौसआफ कामन्स में इस विषय पर आन्दोलन भी करना आरम्भ किया है—इसपर अंगरेज़ सिविलियनों के दोस्त पायोनियर राय देते हैं कि यह इमतिहान यहां ही होने लगेगा तो सिविल-सरविस में सब बंगाली ही बंगाली भर जांयगे—भर जांयगे तो हर्ज क्या होगा आप बंगालियों से इतना डरते क्यों हैं तरक्की के मैदान में उन को आने दी-जिये और हमें भी आज्ञा दे दीजिये ताल ठोंक खड़े होजांय देखिये कौन बाज़ीमार ले जाता है—गवर्नमेंट का जैसा उदारशासन है उसमें यह एक धब्बा लगाना है कि अमुक जाति वाले आगे न बढ़ने पावें—इन बंगालियों को क्यों सन साफ़िक मौका न दिया जाय देखिये ये कहां तक आगे बढ़ते हैं—दूसरे यह कि ये बंगाली कब हिन्दुस्तान की विविधजाति में सब के शिरोमणि रहे हैं अंगरेज़ी ही राज्य के आरम्भ से इन का उद्भव होने लगा है पहिले इसके तो हिन्दुस्तान में बंगदेशी किसी गिनती में न थे—फिर आप के रोके अब बंगाली रुक कहां सक्ते हैं सिविलसरविस में बंगालियों का नम्बर कम करने की यदि

कोई तदबीर है तो यही कि यहीं यह इमतिहान हुआ करै तब अलबत्ता और २ लोग भी सिविलियन होने लगेंगे और इन बंगालियों का नम्बर घट जा सक्ता है—फिर बंगालियों का भर जाना कौनसी बुराई है यै फिर भी हिन्दुस्तानी ही तो हैं कहां तक इन को हमारे साथ हमदर्दी न आवेगी—बे अदबी माफ़ की जाय क्या ये बंगाली बिलाइत के नौजवान अपरिपक्कबुद्धि छोकड़ों से भी गये बातें हैं जिन को ज़िले का ज़िलह सिपुर्द कर दिया जाता है और कभी २ ऐसी ऊटपटांग कारगुज़ारी कर उठते हैं कि उस्से गवर्नमेंट और प्रजा दोनों को बड़ा भारी नुकसान उठाना पड़ता है—कौन ऐसा कृतघ्न होगा कि अंगरेज़ी राज्य के उपकार को भूल जायगा इन्हों ने हमें कौनसी बात नहीं सिखलाई ठौर २ देश में सब तरह के स्कूल और कालेज खोल हमारे हृदय का अन्धकार दूर हं-काया सब तरह की सभ्यता सिखलाय अपने बराबर के सभ्य और विद्वान् हमें करते जाते हैं एक इसी सिविलसरविस में हमें भरती करते न जानिये क्यों संकुचा रहे है और अब तक टालमटोल कर रहे हैं—इस्में सन्देह नहीं हम लोग शासन करना इलम हुकूमत बहुत दिनों से भूल गये इस विषय में अपनी बुद्धि की पटुता प्रकट करने का हमें मौका ही नहीं दिया गया इस्से लाचार होगये—अकबर ऐसे उदारशासन कर्ताओं के समय जब हमें मौका दिया गया तो चूके भी नहीं टोडरलम बीरबल सरीखे कितने राजनीतिज्ञ तो ऐसे भी हो गये हैं जिन के उत्तम प्रबन्ध और "स्टेटमेनशिप" की इस देश के इतिहासों में धूम है किन्तु करोड़ों मनुष्यों में दो एक इस तरह के हुए तो उस्से हम यह घमण्ड नहीं कर सक्ते कि इस देश के लोग बड़े राजनीति कुशल हैं—और २ बातों के तरह हुकूमत और देश के शासन करने का शऊर भी हमे तभी आवेगा जब ये शुद्ध मन से हमें सिखलाना चाहेंगे—यह कहदेना कि जब तक तुम्हें तैरना न आवे तुम पानी के पास भी मत जाओ तो काहे कभी तैरना आसक्ता है—नहीं बल्कि हमे तैरने की आज्ञा दीजिये और जहां कहीं हम डूबने लगें हमें सहारा देते जाइये देखिये थोड़े ही दिन में हम कैसे चतुर हो जा सक्ते हैं—अपनी जितनी बातें हैं वे सब आप हमे यहीं सिखलाते जाते हैं इस्के लिये आप यह क्यों कह रहे हैं कि यहां आओ तो बतलावें—बहाना हो या फुसलाने के लिये हो जो २ बादे आपने कईबार और कई तरह पर किये उनके पूरा करने

का अब ठीक समय आया है—अंगरेज क्या उन बादा करने वालों को शायद यह खयाल न रहा हो कि हिन्दुस्तान कभी को इस लायक होगा—जो २० वर्ष पहले आपने कह रक्खा था आजसन् १८९३ में अब उसके पूरा करने का समय आया है उचित है कि अब आप उस उदारता के गुण को कहीं से खण्डित न करेंगे जिसके लिये आप सदा से प्रसिद्ध हैं—

हम लोगों के सन्तोष के लिये एकबार बीच में आपने "नामिनेशन" के द्वारा स्टेचुअरी सिविलसरविस का क्रम निकाल यह कहा कि बस अब घर बैठे बिना किसी तरह का इमतिहान दिये तुम सिविलसरविस में भरती हुआ करोगे—किन्तु पीछे से जिन्हों ने इस क्रम को नामिनेशन के द्वारा निकाला था उसमें नाकामयाबी देख पछताना पड़ा तो अब सिवाय इमतिहान के कोई क्रम बाकी न रहा जिससे हम सिविलसरविस में भरती हो सकें—पर अब यह इमतिहान विलाइत में हो यह कैद क्यों लगी है।

"विक्रीते करिणि किमंकुशे विवादः,,

यह आप का हठ वैसा ही है जैसा कोई हाथी देकर आंकुस के लिये झगड़ा करे—आप के उदारशासन का जैसा क्रम है उससे हमें विश्वास है कि हम लोगों की यह प्रार्थना एक न एक दिन अवश्य गवर्नमेंट के चित्त में स्थान पावेगी जल्दी स्थान पाती तो हम लोग रगड़ करने की मेहनतसे छुटकारा पाते और विश्वविख्यात आप की उदारता को तन मन से धन्यवाद देते—किंबहु—

भविष्यभारत

बीस वर्ष हुये जब हमारी कोमल और सुकुमारमति शास्त्रों के गूढ़तम विषयों के ग्रहण करने में पूरी २ समर्थ न थी मूसा के मतावलम्बी हीब्रूजाति के ग्रन्थ में पढ़ा था कि मूसा को सघन वन में एक ज्योति का प्रकाश हुआ और भविष्यवाणी के समान उनसे कुछ कहा गया—इस समय तक हम आधुनिक कट्टर अविश्वासी "अनविलीवरों,, के फिरकों में अपना नाम लिखा खून लगाय शहीदों मे नहीं दाखिल हुये थे—उपरान्त हमने अपने हिन्दूशास्त्रों को भी पढ़ा और धर्मग्रन्थ परलोक प्राक्तन तथा परमेश्वर में बड़ा विश्वास रखते थे—

इसी विश्वास ने जी में ऐसा सिड़ीपन पैदा करदिया कि सिद्धि प्राप्त होने से मनुष्य सब कुछ कर सक्ता है जो बात देवताओं को भी अप्राप्य वह उसे बे प्रयास मिल सक्ती है—मनुष्य त्रिकालज्ञ हो सक्ता है भूत भविष्य वर्त्तमान का ज्ञान उसके लिये बालक्रीड़ा के समान साधारण बात हो जाती है—सिद्ध लोग शापानुग्रहीत होते हैं कोई ऐसा अगम्यस्थान नहीं बचा रहता जहां वे न जा सकें पर काय प्रवेश तक सिद्धों के लिये सुलभ है—बहुतसा संकल्प विकल्प के उपरान्त मन में आई कि भविष्य का ज्ञान जैसा मूसा को था वैसा हम को भी हो जाय इसलिये हमने उपासना आरम्भ की ब्रह्मचर्य से रहने लगे दिन रात में एकबार रूखा सूखा जिसमे प्राण रक्षा रहे कुछ थोड़ा सा आहार करलेते थे रातो दिन दृढ़ासन बैठे २ जप किया करते थे नींद आती थी तो उसी आसन पर सो रहते थे—हमे इस तरह की कड़ी उपासना में तत्पर देख कोई हमे दम्भी और मक्कार कहते थे कोई समझाते थे कि कलियुग में सिद्धियां सब अलोप हो गई हैं किसी तरह न मिलैंगी तुम चाहो जितना क्लेश उठाओ—कोई मुझे विक्षिप्त और सिड़ी समझने लगे हितू और मित्रों ने यहां तक यत्न किया कि उपासना के सब साधन इन से दूर कर दें जिसमें किसी तरह इन की साधना का उच्चाटन होजाय—पर हम ऐसे दृढ़ बने रहे कि किसी की न माना मन और इन्द्रियों को सब ओर से रोक स्थिर चित्त और दृढ़ासन बने रहे जैसा कछुआ अपने अंगों को सिकोड़ चुपचाप बैठा रहे उसी तरह हम प्रबल इन्द्रियों के वेग को रोक उस चैतन्यज्योति की ओर लगाये रहे अन्त को ७ वर्ष और ७ दिन के उपरान्त बड़े प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व अकस्मात् एक ज्योति चार पांच सेकण्ड तक मेरे नेत्र के सामने चमकती रही ऐसा कि मैं कई मिनट तक आपे में न रहा बेहोश होगया उपरान्त आकाश से एक आवाज़ आई—"वत्स! तुमने बड़ा क्लेश सहा अब तुम्हारी तपस्या सफल हुई उठो जो तुम चाहते हो सो होगा तुम एक बात करो एक बार जाकर द्वीप द्वीपान्तर समस्त धरामण्डल की परिक्रमा कर आओ"—इतना कह वह अमनुष्यवाक् न जानिये फिर कहां गुप्त हो गई मैं तथास्तु ऐसा कह उठ खड़ा हुआ और देशाटन के लिये तैय्यार हुआ—एक बड़ा लम्बा चौड़ा कंबल ओढ़ने को और कौपीनमात्र परिधान अधोवस्त्र के लिये रक्खा और एक कमण्डलु ले लिया

मौन हो गया सुलभ आहार कन्द मूल फल जो कुछ मिलता था भोजन कर लेता था किसी से कुछ कहने सुनने का कोई प्रयोजन न रक्खा—देश देशान्तर में घूमते हुए तहां २ के लोगों की चाल ढाल रंग ढङ्ग देखा किया—एक छोटी सी पाकट बुक भी अपनी झोली में रखलिया जहां जो कुछ अद्भुत देखा उसे नोट करलेता था जो कुछ हमने नोट कर रक्खा उसे आज इस अवसर पर प्रकाश करते हैं—

पहले हम दक्षिण और उत्तर के देशों को तथा राजस्थान की मरुभूमि सिन्ध गुजरात आदि देशोंको तै करते पञ्चनद प्रान्तवर्ती देश पञ्जाब में जा पहुंचे तहां बीर बांकुरे सिक्खों से मिले और नाज़ुक बङ्गालियों की अपेक्षा इनमें बड़ा अन्तर पाया मन में आई की यदि पञ्जाब के समान वीर प्रसविनी पृथ्वी बङ्गाल तथा और प्रान्तों की भी होती तो भारत की वर्तमान आरतदशा न आती—वहां से हम काश्मीर की ओर झुक पड़े हमने अपनी पोथियों में पढ़ रक्खा था कि काश्मीर शारदादेवी का निवासस्थान है और विद्या का सदावर्त सदा रहता है महाभाष्य के तिलककार कैय्यट और साहित्य के परमाचार्य मम्मट यहीं हुये महाकवि क्षेमीन्द्र विल्हण सोमदेव जिन्हों ने कथा सरित्सागर ऐसे २ न जानिये कितने विद्वान् पण्डित और कवि यहीं हुये राजतरङ्गिणी में काश्मीर का हाल पढ़ बड़ी लालच थी कि यहां उन सब बातों के नेत्रगोचर से अपना जन्म सफल करेंगे—पर सोतो वहां न पाया पर हां लोकान्तर सौन्दर्य्य काश्मीरियों में देख मन में आई कि विहिश्त की हूरें और स्वर्ग की अप्सराओं का खयाल कवियों को इन्हीं काश्मीरिओं की खूब सूरती पर सूझा हों तो क्या अचरज है—दूसरे इनमें लम्पटता और विषयवासना परवस इन्हें देख मन में घिन पैदा हुई और सोचने लगे कि सीमा को अतिक्रम किये रूप और सौन्दर्य्य का सिवा इसके और क्या परिणाम होसक्ता है—अस्तु हम हिन्दूकुश की पर्वत स्थली को नांघते डांकते और महा असह्य शीत के कारण सीसी करते किसी तरह अफगानिस्तान प्राचीन गन्धार देश में जा पहुंचे हमारे मन में उमङ्ग थी कि यह गन्धर्वों के रहने की जगह है पुराण वालों ने गन्धर्वों की बड़ी प्रसंशा की है अवश्य इनमें कोई लोकोत्तर चमत्कार देखेंगे पर वहां पहुंच सब भांत निराश हुए—निस्सन्देह अफगानियों को दृढ़ाङ्ग तो

बहुत ही तपाया कदाचित् इन के समान बलिष्ठ दूसरे देश के लोग न होंगे किन्तु सभ्यता का इन्में किंचित् संपर्क न पाय मन में कवि की इस उक्ति की सचावट का खयाल आया—

"प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखो विश्वसृजः प्रवृत्तिः"

गेहूं आदि अन्न तथा यहां की सी धान की क्यारियां वहां कहीं न देखीं पर प्रकृति ने दाख अंगूर आदि स्वादिष्ठ और मधुर मेवों के कोसों तक के बाग ऐसे लगा रक्खे हैं कि इस पर्वतस्थली को स्वर्ग भूमि का नन्दनवन बना दिया—अचरज क्या इन्हीं मेवों का स्वाद चीख देवताओं का भोजन अमृत की कल्पना कर ली गई हो—रूई यहां कहीं पैदा होती न देखी गई पर एक प्रकार के मेष विशेष यहां इतनी अधिकाई के साथ देखने में आये कि उन का रोआं और खाल यहां की प्रबलशीत के निवारण करने को सब तरह समर्थ हैं—वहां से मैं आगे बढ़ा तो ईरान में पहुंचा मैंने इतिहासों के ग्रन्थों में पढ़ रक्खा था कि आर्यजाति की उत्पत्ति की यह साधारण भूमि है जहां से कई बार समय २ आर्यजाति के लोगों का प्रवाह निकल २ भिन्न २ देशों में बसता गया इस लिये इस देश के देखने और वहां की सब बात जानने का मुझे बड़ा ही चाव था—आर्य और ईरान इन दों शब्दों में बहुत कुछ मेल भी मिलता है इस्से मुझे इतिहास लेखकों की बात का बड़ा विश्वास था पर वहां उन के लिखने के अनुसार किसी बात का पता न लगा—प्राचीन आर्यों की भाषा वेद तथा ज़िन्दवस्ता ईश्वर जाने वहां कब बोली जाती थी अब तो वहां बुलबुलबोस्तां की बोलके माफिक कान को सोहावनी कन्द और मिसरी की मिठास को भी दबाती हुई पारसी भाषा बोली जाती है—सादी सरीखे शायरों की पैदाइश की जगह इस भूमि में पहुंच मेरे चित्त को बड़ा ही हुलास हुआ—पारसी की मिठास और कोमलता का खयाल कर अचरज हुआ कि यह कैसा—

"मा पिलंगिनी बाप पिलङ्ग, जिन के बच्चे रंग बरङ्ग"

उर्दू ऐसी रूखी कड़ी और कान को खेद पहुंचाने वाली भाषा क्योंकर पारसी से निकली पीछे सोचते २ खयाल आया कि उर्दू तो पैदाइस ही की हरजाई और न जानिये कै भाषाओं का जूठा खाय २ इतनी बड़ी हुई है—

फारस के लोगों की शाइस्तगी और नुमाइस मे सनी मेहमानदारी देख पहले तो मेरा जी बहुत ललक उठा पर पीछे कश्मीरियों की सी विलासिता और कच खपटी इन में भी देखें घिन पैदा होगई और वहां अधिक समय तक न ठहर सका—नइनवह और बाबिलन आदि कई पुराने शहरों की बरबादी के ढूहों को देखता बसरा और दमिश्क के गुलाब की खुशबू से दिमाग मोअत्तर करता हुआ केनान देश में जा पहुंचा—मूसा की धर्मपुस्तक में बनी इसराइलों का बहुत कुछ हाल पढ़ चुका था कि ये खुदा के चुने हुये लोग हैं इस लिये इन से मिलने का बड़ा हौसिला धरोया हुआ था—पर दूर की ढोल सोहावनी के माफिक इन यहूदियों में हिन्दुस्तान के सराओगियों कीसी कृपणता और कंजूस मिज़ाजी देख मैं जी में बहुत ही बहुत पछताया—सौन्दर्य्य तथा धन की कमती इनमें कहीं न पाया महालक्ष्मी के पूर्णकृपापात्र होने में कोई सन्देह नहीं पर व्यौहार में शुचि और दियानदारी में पक्के एक भी न पायेंगे—उद्यम और व्यवसाय में यहां के माड़वारियों से बहुत आगे बढ़े हुये तथा माड़वारियों के से इन के सब लच्छन देख मेरे मन में यही आई कि ये पश्चिम एशिया के माड़वारी हैं—किस्से कहानियों में पढ़ा है कि ये धन के कारण बहुधा मारे भी गये हैं सो सब ठीक है इन के आचरण और बर्त्ताव इसी लायक देखने में आये—वहां से आगे बढ़ अरब की मरूभूमि में जा पहुंचे मैंने राजा शिवप्रसाद की किताबों में पढ़ रक्खा था कि अरब की भाषा बिहिश्त की भाषा है इसलिये विश्वास था कि इसमें कोई अनोखी मिठास और कारीगरी होगी पर वह कोई बात मुझे इसमें न मिली ऊंट और कौओं की बोली की नकल अरबी मुझे मालूम हुई—अच्छा हुआ मैं मौन साधे था कहीं चार मिनट भी इन के साथ बातचीत करने का काम पड़ता तो या तो दमान्त हो जाती या गले में ऐसी खराश पैदा होती कि महीनों तक मुलेठी का अवलेह चाटता तो खराश दूर होती—लुटेरे अरबियों की जङ्गली आदत और मज़हब की ओर से उन्हें बेपरवाह देख मुझे तअज्जुब हुआ कि हिन्द के मुसलमानों में यह तराश खराश और मज़हबी तअस्सुब कहां से आया—अस्तु वहां मक्का मदीना आदि प्रधान शहरों में घूमता हुआ अदन में पहुंचा और अग्निबोट पर सवार हो लालसागर "रेडसी„ को पारकर मिस्र देश में जा पहुंचा—

वहां पहुंच मुझे बड़ा हर्ष हुआ कि आज मैं उस देश में आया हूं जो बूढ़े भारत का लड़कपन का साथी है और किसी समय भारत की पुरानी सभ्यता का पूरा साथ देने वाला था—यहां के प्राचीन पिरामिड़ स्तूप और जयस्तम्ब देख हिन्दुस्तान की बम्बई के पास वाली इल्लोरा की गुफा याद पड़ी किन्तु अब भारत के समान मिस्र भी गैतलदशा में आगया है वहां का राजा खदेव शतरञ्ज के मुहरे के समान खेलाड़ियों की चाल के आधीन पाया गया—यहां अलिकजैंडरिया का विश्वविख्यात पुस्तकालय था जो मुसल्मानों के भयङ्कर अत्याचार के कारण जलाकर भस्मसात् कर दिया गया इन सब बातों की याद आने से रोंघटे खड़े हो गये—मैंने चाहा कि अफरिका महाद्वीप के आगे बढ़ूं पर सहारा के रेगिस्तान की गरम हवा से तन झुलसने लगा आगे जाने की हिम्मत न पड़ी—दूसरे पिशाच से काले २ कूरूप हबशियों को देखते २ ग्लानि हो गई जी ऊब गया यह भी सुनने में आया कि आगे वाले हबशी और अधिक असभ्य हैं मनुष्य को मार कर खाजाते हैं इससे पीछे को कदम रक्खा और आधुनिक सभ्यता की जगमगाती ज्योति के प्रकाश की पूज्य पृथ्वी यूरोप की ओर झुके—भूमध्यस्थमहासागर "मेडिटरेनियनसी" को नाघ यूनान देशमें जा उतरे—यहां पहुंच मुझे स्मरण हुआ कि यह वही धरती है जहां फिलासोफी का पहिलेपहल प्रादुर्भाव हुआ और यहां की पुरानी सभ्यता रोम ऐसे पुराने सभ्य देश को शिक्षा देनेवाली थी—अफलातू अरस्तू सुकरात प्रभृति दार्शनिकों के शिरोमणि यहां ही जन्मे जो यूनान के सात बुद्धिमान् या ऋषि "सेवित व इज़मेन आफदि ग्रीक्स" के नाम से अब तक प्रसिद्ध हैं—

वाल्मीकि की बुद्धिवैभव का प्रकाश रामायण का एक दूसरा चित्र होमर-इलियडनामक महाकाव्य के अभिनय की रङ्गभूमि यही ग्रीस देश है—रामायण और इलियड का कथा भाग ऐसा मिल जाता है कि यह अब तक संदिग्ध रहा कि वाल्मीकि ने होमर की नकल की है कि होमर ने वाल्मीकि की—न जानिये इस धरती का क्या माहात्म्य है कि यहां जो बातें हुईं वह ओर छोर तक पहुंचाई गईं और उस के सानी की दूसरी ठौर कहीं नहीं पाई जाती—सिकन्दर सरीखा विजेता ऐसा हुआ जिस के सानी का दूसरा आज तक न हुआ—डिमासथनीज़ ऐसे कई एक वावदूक वक्ता भी यहां ही ऐसे हो चुके हैं कि जिन के समान वक्तृत्वशक्ति में प्रवीण ऐसा वक्ता आज तक कहीं किसी

देश और किसी जाति के बीच न जन्मा—भाषा के यावत् गुण संपन्न संस्कृत के उपरान्त फिर यूनानी ही भाषा है ऐसी मिठास कोमलता और ओज गुण किसी दूसरी भाषा में हुई नहीं—काव्य नाटक संगीत गणित आदि में यूनान भारत की अपेक्षा किसी अंश में कम न था यूनानी हिकमत के नाम से इस देश की चिकित्सा हमारे यहां की वैद्यविद्या से कम नहीं है—ऋषितुल्य दूरदर्शी देशहितैषी जैसे यूनान में हुए कहीं नहीं जन्मे—भारत के समकालीन पुराने देशों में अधःपात के उपरान्त गिर कर फिर उठते देखा तो इसी यूनान को महा कविबैरन के लेख ने इन यूनानियों को ऐसी उत्तेजना दी कि यूनान अपनी सब शिथिलता और सुस्ती को दूर हटाय स्वच्छन्द हो अब इस समय यूरोप के तेजीयान् सभ्य स्वछन्द और २ देशों में ग्रीस भी समझा जाता है—अस्तु यूनानियों से मिल मैं अति प्रसन्न हुआ और उन से विदा हो कुस्तन्तूनिया होते हुये इटली में पहुंचा वहां टइबरनदी के तटपर रोमनगर की पुरानी बरबादी का पता लगा जो किसी समय ४० मील के गिर्द में बसा था और लण्डन तथा पेरिस आदि बड़े से बड़े शहरों को रौनक और शहरीयत सिखलाने की बड़ी भारी पटशाला थी—जो कानून जो सभ्यता और शाइस्तगी समाजिक तथा राजनैतिक रीति नीति का रोमवालों में चलन था उस की नकल आज दिन समस्त यूरोप कर रहा है—जो सभ्यताप्रसाद की भांत आदि में इस ने यूनान से सीखा उसे सत्शिष्य संपादित गुरू की महिमा के माफिक दशगुन अधिक कर दिखाया—लाटिनी भाषा का उत्पत्तिस्थान भी यही रोम था जो भाषा ओज माधुर्य आदि भाषा के गुण और गौरव में संस्कृत तथा ग्रीस से कुछ ही कम है—फेशन की तराश खराश नज़ाकत तथा वे सब बातें जो ज़िन्दगी को मज़ेदार करनेवाली समझी गई हैं जिन्हें इस समय की सभ्यता के अनुसार "रिफइनमेंट" और "सिविलिज़ेशन" कहते हैं उस में जिस ओर छोर तक रोक पहुंच चुका था इङ्गलैण्ड और फ्रान्स अभी उस के चौथाई हिस्से को नहीं पहुंचे—बिजली और भाफ का गुण अलबत्ता उस समय रूमियों को नहीं प्रगट हुआ था और यही दो पदार्थ विज्ञानसम्बन्धी आधुनिक यूरोप की ऐसी भारी प्रगट हुई जिस से प्राचीन सभ्यता सर्वथा दब गई तरह २ की इनजिनें रेल तार टेलीफोन इत्यादि अचरज पैदा करनेवाले काम उसी भाफ और बिजली के गुण हैं—रोम का साम्राज्य किसी समय करीब२ तमाम यूरोप को बड़ा हिस्सा ऐशिया और अफ्रिका का

निगले हुये था एक हिन्दुस्तान को छोड़ कौनसा सभ्य देश बच गया था जिसे रोम ने अपना ज़ेर साया नहीं कर डाला तमाम दुनिया को लूट पाट. रोमवाले मालदार बने थे—जब तक दुनिया कायम है इतिहास और तवारीखों का पढ़ना जारी है १२ सीजरों के नाम से प्रसिद्ध रोम के महासम्राजों को कौन भूल सक्ता है जिन में अगस्टस सीज़र एक दूसरा विक्रमादित्य हुआ और अगस्तस सीज़र का समय रोम की परमोन्नति का था—आधुनिक योरोप के जिस देश में जाओ रोम की पुरानी सभ्यता का अनुकरण वहां की यावत् बातों में पाओगे—किन्तु भगवान् बढ़ा कर किसी को न गिरावे जब इस के घटती के दिन आये तब रोम की वह नज़ाकत और सभ्यता ही इस के लिये विष हो गई और यही सब फ्रांस जरमनी प्रूशिया हंगरी के जंगली फिरके जो अब हमे सभ्यता सिखाने का दावा बांधते हैं समय २ सैकड़ों वर्ष तक सावन भादों की नदी की बाढ़ के माफिक ऐसा वारी २ टूटा किये कि रोम की रौनक को तहस नहस कर डाला और अब वहां उन पुराने ढूहों के सिवाय कुछ बाकी न रहा—वहां से मै सिसिली के टापू में होता हुआ और वहां के ज्वालामुखी पर्वतों की लवर से पांपाई सैराक्यूस आदि कई एक नगरों की बरबादी का दृश्य देखता भालता प्राचीन व्योपार का केन्द्र भाग बीनिस नगर में जा निकला जेनोआ पास होने से यहां सब तरह की घड़ियों की बहुत सी दुकाने पाइ गईं इसे मैंने हिन्दुस्तान का छोटा बंबई पाया सौदागर यहां बहुत देखने में आये जिन में अधिकतर यहूदी थे-यहूदियों से मुझे पहले ही से एक तरह की घिन थी उन से घिष्ट बिष्ट जिस में न हो इस लिये मैं वहां से चलदिया और समुद्र के तट ही तट होता पोर्टुगाल देश में जा निकला——मैं यहां गोआ नगर में पोर्चुगीज़ लोगों से पहले भी मिल चुका था—ये बड़े मैले और कसीफ होते हैं और सभ्यता में बहुत पीछे हटे देख मेरा मन वहां न लगा—स्पेन में आया तो वहां भी कोई अद्भुत बात न पाय आलपइन पर्वत के नीचे २ होताहुआ स्विट-ज़रलैण्ड में जा निकला इस और प्रसविनी भूमि में सबों को निष्कपट प्रसन्न दिया-नतदारी में भरे पुरे देख मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ—दूसरे यह कि यहां चिर-काल से प्रजाप्रभुत्व रहने से पराधीनता में क्या२ दुख सहने पड़ते हैं किसी को इसका कुछ खयाल भी नहीहैं—देश का देश हृष्टपुष्ट और रंजापुंज पायागया पुराण बाचने वालों की कथा और आख्यायिकाओं में सुन रक्खा था कि सतयुग में

लोग इस तरह के थे सो वहां आखों देखा—यह देश ऐल्प पर्वत की सब से ऊंची चोटी पर स्थित है इस कारण मैं वहां की शीत बरदाश्त न कर सका और वहां से यात्रा कर आल्पाइन पर्वत स्थलीं के अनेक अद्भुत दृश्य देखता हुआ फ्रान्स देश में जा निकला प्राचीन रहने वाले यहां के गाल्स कहलाते थे और नितान्त असभ्य जंगली थे—गाल्स लोगों ने रोम को कई बार लूटा और बार २ यहां आने जाने से थोड़ी २ इनसानियत उन्में आने लगी और तरक्की के मैदान में कदम बढ़ाते हुये सभ्यता के इस छोर को पहुंचे हुये हैं कि फ्रान्स की तरहदारी और पेरिश का फेशन सब के सिरे पर समझा जाता है—फरासीसियों के सब रंग ढंग देख मैंने निश्चय किया कि ये लोग नाज़ुक मिज़ाज बिलासी और कचलपट तो ज़रूर हैं पर परिश्रम और सब तरह के हुनर और विज्ञान में इतना आगे बढ़े हैं कि नज़ाकत और बिलासिता का दोष अभी इन्में व्यापा नही पर हां घुन अलबत्ता लगचला है—साथ ही इसके यह भी कहेंगे कि ये बड़े उदार स्वभाव के हैं इन्में वह संकीर्णता स्थान नहीं पासकी जैसी हमारे बहुत से कर्मचारियों में पाई जाती है—प्रूशिया से पराजित हो फ्रान्स का पहले का गौरव यद्यपि अब कुछ कम हो गया है किन्तु यूरोप के और देशों से किसी बात में पीछे हटा हुआ हमने इसे न पाया और अब तो यहां प्रजाप्रभुत्व ने स्थान पाया है—कोसों तक अंगूर का बन यहां मैंने देखा और कई दिनों तक केवल अंगूर अघाकर खाता रहा—पोर्टवइन अंगूरी शराब के अनेक कारखाने यहां देख मुझे जीमें खेद हुआ और खयाल आया कि टेंपरेन्स सादक निवारिणी सभा यहां क्यों नहीं अपना कुछ ज़ोर पहुंचाती कहां हैं केन साहब—अस्तु वहां से चल मैं प्रूशिया देश में आया और वहां के लोगों में यह एक आम दस्तूर देख मैं बड़ा खुश हुआ कि स्कूल में भरती होने के ढंग पर सब लोग थोड़े दिन के लिये फौज में नाम लिखाय कवायद सीखते हैं—यही का कारण है कि युद्धोत्साह और बीरता में प्रूसियों की बराबरी यूरोप की कोई जाति नहीं कर सक्ती यह बात इन की हमारे प्राचीन आर्यों की ब्रह्मचर्याश्रम से भी अधिक चढ़ बढ़ के है—यहां मैंने चाहा कि प्रिन्सबिस्मार्क से मिलूं किन्तु अतिवृद्ध होने से उन्हे अस्वस्थ शरीर सुनन मिल सका—वहां से मैं जरमन देश मेंगया और महामहोपाध्याय समग्र वेदवेदाङ्गपाठी छहो दर्षन में पारंगत वहां के महामहा पण्डितों से मिल मारे आनन्दके पुलकितशरीर हो गया—सुनते थे

संस्कृत किसी समय बोल चाल की भाषा थी सो वहां देखने में आया—सिवाय इस्के फरासीसियों के रंग ढंग के विरुद्ध जरमनो को 'ऋषितुल्य शान्त दान्त देख मुझे खयाल हुआ कि यह उन के संस्कृत के विशेष पढ़ने का बाइस है—दस्तकारी कला और विज्ञान में भी इन्हें बहुत आगे बढ़े हुये पाया—वहां से मैं आसट्रिया देश में गया और भांत २ की खानै जैसी यहां पायां वैसी यूरोप के किसी खण्ड में न देखा—यहां से रूसदेश की बड़ी २ नदियां और सैकड़ों कोस के भारी २ ऊसर मैदान और जंगल तैकरते रूसियों की राजधांनी सेंटपीटरबर्ग में जा पहुंचे—सभ्यता में पीछे हटे हुये अर्द्धशिक्षित इन रूसियों की रीछ की सी जङ्गली आदत देख मेरा जी कांप उठा और यही मन में समाई कि किसी तरह यहां से भागैं अस्तु पोलैंड आदि कई देशों में घूमता नारवे और स्वीडन के किनारे २ होता हुआ हालैंडबेलजियम और डेनमार्क प्रभृति छोटे २ देशों में होता हुआ केउे और डोवर के मुहाने में गुजर इङ्गलैंड की स्वर्गभूमि में जा पहुंचा—समुद्र कोसों तक जहाजों से तुपा हुआ देख दंग होगया मन में आई कि क्या विलाइत बिल्कुल जहाज ही पर बसी हुई है—यहां पहुंच दो बात मुझे विशेष लखने लायक मालूम हुई एक तो यह कि इंगलैण्ड भी उन्नति के शिखर पर उतनाही चढ़ा है जितना यूरोप के और २ देश—किन्तु हिन्दुस्तान ऐसा भारी मुल्क जो विस्तार में करीब २ तमाम यूरोप के बराबर है इन के हाथ में रहने से इन्हें तिजारत कारीगरी भांत २ के विज्ञान और कलाओं के फैलाने का भरपूर मोका मिलता जाता है—इस्से इन की श्रीवृद्धि औरों की अपेक्षा विशेष मालूम होती है—दूसरे यह कि इन को धाये के भोजन हैं यहां की पृथ्वी में उपजाऊ शक्ति हुई नहीं यह गुण शस्यसम्पन्ना भारत की उर्वरा भूमिका है कि हर साल करोड़ों का धन उगल देती है तब ये लोग साहसी उद्यमी और विविधकला में कुशल न होते तो प्राणयात्रा भी कठिन होती यही कारण है कि भारत को भरपूर उन्नति करने का मौका देते ये जी में संकुचाते हैं कि हिन्दुस्तान भी विज्ञान और कला में हमारे बराबर का होजायगा तो हमारा निबाह क्योंकर होगा—

यहां पालिटिक्स राजनीति के मर्म का गूढ़ अर्थ समझने का लोगों में एक तरह का नशा पाया गया जैसा हिन्दुस्तान के लोग मज़हब और परलोक के पीछे प्राण दिये डालते हैं संसार और यहां की तरक्की को परलोक के लिये

नष्ट करडाला उसी के विरुद्ध यहां देखने में आया कि विलाइत का एक पुतला भी स्वत्वाभिमान और राजनैतिक जोश में अपने को एकता समझता है—दूसरे यह कि यहां स्त्री और पुरुष में कोई फर्क नहीं है यहां तक कि मेम लोग बेरिस्टर देखने में आईं और फौज में भरती होने की चेष्टा कर रही हैं—मुझे अचरज हुआ जब मैंने देखा कि विलाइत में भी लोग भूखों मर रहे हैं हिन्दुस्तान में तो लोग येन केन सुबह से सांझ तक में किसी न किसी तरह पेट भरलेते हैं पर यहां खास लण्डन में जाड़े के दिनों में भूखे हो मारे जाड़े के कितने आदमी ठिठर के रह जाते हैं—कोइलों पर मुहर की मसल थी यहां आंखों देखा यावत् वस्तु यहां इतनी मंहगी है कि गरीबों को अन्न और कोइला दोनों बड़ी कठिनाई से मिलता है—अस्तु मारे जाड़े के हम भी ठिठरने लगे और देर तक ठहरने की हिम्मत न पड़ी बहुत चाहा कि स्काच और ऐरिश लोगों से भी मिलते चलें पर वहां न जा सके—अयरलैंड वाले और स्काटलैण्ड के लोग भी जो वहां ही मुझे मिले उन्हें उतना अभिमान पूर्ण न पाया जैसे इंगलैण्ड के लोग देखे गये बल्कि ऐरिश तो चित्त के बड़े उदार और मिलनसार पाये गये और स्काटलैण्ड वाले बड़े विद्वान् परिश्रमी और सच्चे लोग देखने में आये—यहां से अमरिका का रास्ता सीधा है इसलिये मैंने इरादा किया कि यहीं से अमरिका को सिधारूं और वहां वालों के नवाभ्युत्थान को देख भाल बहुत दिनों का हौसिला पूरा करूं—यह वही अमरिका है जिसे हमारे आर्यों ने रसातल या पाताल माना है—किन्तु उस ज्योति का मुझे फिर प्रकाश हुआ और अशरीरिणी वाणी मेरे कान में आई—बस अब होगया और अधिक परिश्रम मतकरो तुम्हारा प्रयोजन सिद्ध होगया अब घर लौट चलो—यह आदेश पाय मैंने अपने घर की राह ली और जिस समय ५ वर्ष और ५ महीने के उपरान्त घर आने के लिये जहाज़ पर पांव रक्खा उस समय मुझे जो हर्ष हुआ उसे किस तरह पर प्रगट करूं मेरे मन में आई सच है अपना घर यावत् सुख का केन्द्रभाग है इसी से साहब लोग घरजाने के बड़े २ उत्सुक होते हैं और होम होम चिल्लाया करते हैं—

हिन्दुस्तान में पहुंचते ही मुझे ऐसा मालूम हुआ कि जैसा किसी का नया जन्म हुआ हो; भूत भविष्य वर्त्तमान सब मेरे आंख के आगे मानो नाचनेसा

लगा–यहां की पृथ्वी जल वायु इत्यादि प्राकृतिक पदार्थों में बड़ा अन्तर देख पड़ा एक २ आदमी की अद्भुत मुखच्छबि देख मुझे अचरज हुआ कि क्या मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूं––क्या यह भारत की वही पृथ्वी नहीं है जिसे मैं नरकभूमि मानता था और ये सब हिन्दुस्तानी जो नरककीड़े के समान पड़े २ बिलला रहेथे इन्हें क्या होगया जो अब यूरोप और अमरिका वालों की भांत स्वर्गीय जीव मालूम होने लगे इन की पहिले कीसी हीन दीन दशा अब कहां बिलाय गई—नया जन्म होनेके पहिले मेरा जो अनुभव था वह सब किस्से कहानी की बातें होगईं—समाजसम्बन्धी तथा हिन्दूमत की बड़ी २ कैद जो इन्हें सकड़े के समान जकड़े हुई थी किसी को मालूम न हुआ कब टूट गई–पृथ्वी के सब प्रान्तों में आने जाने लगे किसी तरह की रोक टोक न रही यूरोप की कौन कहे अफ्रिका और अमरिका के अगम्य स्थानों में जाकर ये लोग अपने पुरुषार्थ की बानगी देखाने में किसी देश या जाति के पीछे नहीं रहते—वर्ण और आश्रम का तो यहांलौ तहस नहस होगया कि भाड़ों की नकल में पुराने हिन्दुस्तानियों की मैली धोती और भट्टी बेहूदा खड्डदार पगड़ी सिर पर धरे जब वह नकल करने वाला सेठ बन आबैठता है तो लोग मारे हंसी के लोटने लगते हैं––सिर्फ किस्से कहानियों में सुनाई देने लगे कि यहां पहिले एक जाति ब्राह्मण की होती थी जो नंगे पांव और नंगे सिर मैलासा अंगोछा और जनेऊ कन्धे पर धरे माथा लाल पीला रंगे पोथी बगल में दबाये सीधा मांगते फिरते थे–सीधा क्या चीज़ है यह जब बड़ी देर तक बयान किया जाता है तब लोगों की समझ में आता है–लोगों को सब भांत स्वच्छन्द और उन्में हर तरह की आज़ादगी देख मेरे मन में आई सनातनधर्म के लिये सिर टकराने वाले अब कहां मर बिलाने भारतमहामण्डल किस कोने में जा छिपा––संस्कृत का इतना अधिक प्रचार होगया कि मुसल्मानों के मोलवी लोग संस्कृत के बड़े पण्डित देखने में आये––असभ्यता की महाप्रदर्शनी स्वरूप कानफोड़ने वाली मुहर्रम की बड़ी २ ढोल न जानिये कहां गुम होगईं घर २ ललना जन प्रत्यक्ष लक्ष्मी और सरस्वती का रूप देखने में आईं––मुझे खयाल आया कि क्या ये वही स्त्रियां नहीं हैं जो लम्बी २ दीवालों के भीतर कैदखाने के माफिक बन्द रहा करती थीं सेरों सोनें से लदी हुई फिर भी अशिक्षिता होने से शऊर और

सुढङ्ग की दुशमन भूतिनसी मालूम होती थीं—परदे के भीतर जो २ बेपरदगी होती थी उसे खोल के कहें तो परदाफाश होता है—सादी सुथरी लिबास से जैसी अब उन के अंग प्रत्यङ्ग की निराली शोभा मालूम होती है वैसी लदाव के कपड़े और हज़ारों के जेवर से कहां थी—सतीत्व और सुचाल से साक्षात् देवाङ्गना चरण विन्यास से घर २ को पवित्र कर रही है सच है

"स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्"—अन्यच्च—

"प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणाः ।
भवन्ति कस्यचित्पुण्यैर्मुखे वाचो गृहे स्त्रियः"—

छोटे २ शहर और कस्बों में गेस और बिजली की रोशनी ने रात को दिन बना दिया, दो मित्र घर बैठे टेलीफोन के द्वारा प्रेमालाप का सुख वैसा ही करते हैं जैसा प्रत्यक्ष मिल भेट कर सक्ते—धर्मशील दानियों के सद्व्यय का परिणाम गांव २ पाठशाला और स्कूल हो जाने से गरीब और मोहताजों के लिये भी वैसा ही उत्तम शिक्षा का प्रवाह प्रबल बेग के साथ बह निकला जैसा संपन्न धनी जन के बीच था—एक २ तअल्लुकेदार और रईस विद्यावृद्धि में भोज और विक्रम हो विद्याभानु के प्रकाश को एक साथ सहस्र किरनो से उगने के लिये सहकारी हुये मेरे मन में आया कि वे सब घुग्घू अब कहां गये जो बेअ-किली और नासमझी महानिशा के अंधियारे का अब तक मन मानता फाइदा उठाते रहे सैकड़ों वर्ष तक भारत का दलन करते सोने का घर मिट्टी में मिला दिया—ये वेही सब प्रसिद्ध देवस्थान और तीर्थ स्थल हैं जो आदि में आर्य महापुरुषों के महत्व के प्रकाशक थे पर पीछे तो ज्यों २ भारती का वैभव भारत में कम होता गया और इस्का अभ्युदय घटता गया त्यों २ इन घुग्घुओं की बनपड़ी अब वे सब पवित्रस्थान केवल "ऐंठीक्वेरियन" के प्रयोजन के रह गये हैं—जहां जाकर पुरानी बातों का पता लगानेवाला वह बात खोज लेगा है जो भूगोल के किसी भाग में उसे नहीं मिल सक्ती जिनकी प्राचीनता के मुकाबिले मिस्र देश के "पिरामिड" बाबिलन के "हैंगिंगगारडेन" लटकते हुये बाग; और चीनियों के महत्व की प्रकाशक कहकहा दीवाल मानों कलकी बात है—पुरानी चाल पुराने खयाल पुराने ढंग की लोगों को चिढ़ पैदा होगई है—हिन्दुस्तान में पहले स्वयम्बर की प्रथा सुन पड़ती थी अब प्रत्यक्ष देखने में आई बाप मा

को कोई अधिकार न रहा कि पहिले के समान गुड़िया गुड़वा का व्याह नाटक की नकल किया करें—एक छोर से दूसरे तक गांव २ हरकिस्म के पुतलीघर तैयार हैं हिन्दुस्तान कुल दुनियां को अपने यहां की बनी चीज़ें संपादन कर रहा है—झन्ना कसेरा औवल दरज़े की तालीम हासिल कर अमरिका के न्यूयार्क नगर में झन्ना ऐण्डको के नाम से कसरट्टी का बड़ा भारी कारखाना खोल रक्खा है—देश २ में उसके एजेंट मौजूद हैं और न सिर्फ अमरिका के यूनइटेडस्टेट को बल्कि तमाम दुनिया को धात बाने की चीजें मुहैया कर रहा है—पन्ना सुनार प्रुशिया के बरलिन नगर में सोनारी का कारखाना ऐसा खोल रक्खा है कि तमाम यूरोप के सुनार उसके चेले बनते जाते हैं—दिल्ली की कलईगीरी की एक शाखा सिर्ज़ा कम्पनी के नाम से खास लण्डन में मौज़ूद है जो यूरोप और अमरिका बल्कि जापान और चीन तक को अपने हौस के मालकी बानगी भेज रहा है—बुद्धू रंगसाज़ रंगसाज़ी का बड़ा भारी कारखाना इटली में जा खोल रक्खा है इटली के लोग अब तक रंगसाज़ी में प्रसिद्ध थे पर इस ने उन सबों को जा कर दबा दिया—इसी ने हज़ारों रुपये महीने का खर्च बांध अपने दो लड़कों को चीन और जापान में रंगसाज़ी का काम सीखने को भेज रक्खा है इस तरह पर जितने हुनर दस्तकारी और कला चाहो हाथ की बनी हो चाहो कल से बनाई जाती हों हिन्दुस्तान इस समय किसी से किसी बात में कम न रहा—आर्यजाति के पहिले गौरव और प्रतिष्ठा का इस तरह पर उद्धार होते देख मेरा हृदय गद्गद होगया ब्रिटिश जाति के उदार शासन को धन्यवाद देने लगा और अंगरेज़ी शिक्षा के अद्भुत प्रकाश का ध्यान कर जी में हैरान हुआ जिसने बाहिरी अन्धकार का हटाना तो कोई बात ही नहीं बरन प्रजामात्र में आभ्यन्तरिक तिमिर को न रहने दिया—बड़े से बड़े इमतिहान में कामयाब होते और ऊंचे से ऊंचे पद पर हिन्दुस्तानियों को कायम देख मेरे जी में आई कि ये वे ही सब दीन हीन भारत के सन्तान हैं जिन का साहब लोगों की खुशामद करते मुह सूखता था और कोई एक छोटासा उहदा तहसीलदारी या मुनसिफी मिल जाने से अपना जन्म सफल समझते थे उन्ही को आज देखते हैं कि गवर्नमेंट की ओर से हिन्दुस्तान ही में नहीं बरन और देशों में बड़े २ पद पर नियत हो कर भेजे जाते हैं—बाबू मोतीचन्द जमइका के गवर्नर नियत हो वहां भेजे गये हैं ईश्वर ऐसा ही सानुकूल रहा तो—इतने में वह ज्योति फिर मेरे सामने चमकी और

उसी अगोचर वाणी की ओर से आदेश हुआ बस बहुत हो चुका अब और आगे मत बढ़ो अभी समय नहीं है अब मौन साधो—इतनी भविष्यवाणी को इडिटर हि० प्र० को दो पत्र में प्रकाश कर सबों को विदित कर दें फिर कभी देखा जायगा—मैं तथास्तु कह आदेश के अनुसार करने को प्रस्तुत हुआ—

हिन्दू और मुसल्मानों के विद्रोह पर लोगों की नई २ उपज ॥

पायोनियर तथा दूसरे २ ऐङ्गलोइण्डियन समाचार पत्रों की उपज है कि यह झगड़ा नेशनल कानग्रेस के कारण पैदा हुआ है—ये ऐङ्गलोइण्डियन जो शुरू ही से कानग्रेस का विरोध करते आये हैं और यही चाहते हैं कि किसी तरह इसे रोक सक्तें इसके रोकने की सौ २ उपाय किया किसी में कृतकार्य न हुये तो अब यही एक उन्हे सूझ गई—कानग्रेस जो आज तक मुसल्मानों की खुशामद करता रहा कि किसी तरह इन्हे भी अपना साथी बनावें और हरतरह इन्हे मिलाया चाहता है तब क्योंकर संभव है कि कानग्रेस इस झगड़े का कारण हुआ—दूसरे यह कि कानग्रेस सब भांत शान्ति चाहता है केवल खुशामद बरामद से अपना काम निकाला चाहता है और कर्मचारी जन जो इसे यों ही राजविद्रोही सिद्ध कर रहे हैं कहीं ऐसा न हो कि इन्हे अपनी बात पुष्ट करने का भरपूर मौका मिल जाय इस लिये फूंक २ पांव रखता हुआ हर एक पहलू को बचाता हुआ अपना काम निकाला चाहता है—इस तरह पर सावधानी रखने वाले कानग्रेस को इसकाकारण बनाना ऐंग्लो इण्डियन की बुद्धिवैभव का प्रकाश कहां तक पहुंच सक्ता है इसका परिचय मिल गया—पहले तो हमारे मुसल्मान भाइयों को इतनी अकिल नहीं है कि अपने विरोध को उचित रीति से प्रकट करना जानते हों न उनमें हिन्दुओं के माफिक अभी इतनी योग्यता आई है कि तअस्सुब को दूर कर इसके गुण को समझें कि देश में शान्ति रहने से क्या २ लाभ हैं—दूसरे यह कि जो उनमें बिलकुल अपढ़ इस तरह के उपद्रवों में सिर उठाते हैं वे जानते ही नहीं कि कानग्रेस क्या चीज़ है और क्या किया चाहता है—कानग्रेस उचित रीति पर अपने मन्तव्यों को राजा से निवेदन कर रहा है जैसा कोई दुखिया अपने दुःख को मालिक से निवेदन करे या कोई फरयादी अदालत में

अपनी फरयाद करे—तब जो लोग कानग्रेस से विरोध ठान इसे बदनाम कर रहे हैं वे प्रजा को अपने राजा से उचित रीति पर अपना दुःख निवेदन करने से रोकते हैं और यही चाहते हैं कि देश में शान्ति चिरस्थायी न रहे और इसी तरह पर एक न एक गड़बड़ी बनी चली आवे इसलिये ये सब भांत दण्डनीय हैं और उन का पक्ष गवर्नमेंट को किसी तरह लेना उचित नहीं है—कानग्रेस वालों का दल सभ्यता और उत्तम शिक्षा के आभूषण से सर्वाङ्ग आभूषित राजभक्ति में अग्रगण्य है इस पर इस तरह का दोष आरोपण करना भूल है ॥

किसी २ की यह भी उपज है कि ठौर २ गोशाला और गोरक्षिणी सभाओं के स्थापित होने का यह सबब है—यह केवल उन लोगों के समझ का फेर है—गोवध निस्सन्देह एक ऐसी बात है कि हिन्दूमात्र को असह्य है और इसके नाम से हिन्दूजाति के रुधिर में एक ऐसा परिवर्तन हो जाता है कि वे आपे के बाहर हो जाते हैं—जब तक उन में हिन्दूपन है तब तक उन से यह बात नहीं मिटने वाली है यदि गवर्नमेंट किसी तरह इन का हिन्दूपन इन्से दूर कर सके तो अलबत्ता गोवध के कारण जो मर्मताड़न इन का होता है उसे इन के जी से हटा सकेगी—मुसल्मान बादशाहों ने सब २ उपाय इन से हिन्दूपन हटाने की किया परन्तु हिन्दूजाति का बीज बना ही रहा—पुराने ग्रीस और पुराने रोम का कहीं अब नाम निशान बाकी नहीं परन्तु हिन्दूपन सब २ दुर्गति सहने पर भी रहा चला आया इन्में जो एक प्रकार की सहनशीलता है उस्से इन का बीज इस देश से नहीं हटाये हटता—राजा की ओर से यदि यह आज्ञा हो जाय कि खुले मैदान यह काम हुआ करे तो भी उन्हे सहना ही पड़ेगा परन्तु इस्से उन के चित्त को खेद न हो यह कभी हो ही नहीं सक्ता—सरचार्ल्सक्रासवेट साहब ने अपनी स्पीच में प्रतिष्ठित हिन्दू रईस और राजा के सामने उन्हे राजद्रोही ठहराया किसे अधिकार है कि उन्हे ऐसा कहने से रोकता—हिन्दुओं में दूरदर्शी बुद्धिमानों ने इन्ही सब उपद्रवों के दूर करने को स्थान२ में गोशाला और सभायें स्थापन कीं और जहां तक हो सका मुसल्मानों को भी कहीं २ इस्में शरीक किया तो अब विचार करने की बात है कि ये सभायें तथा गोशाला विद्रोह मिटाने के लिये की गई हैं कि उसे उभाड़ने को—हिन्दूलोग गोवध का शब्द भी सुन आपे के बाहर हो जाते हैं तो यह दोष उन्में हिन्दूपन का है न कि गोरक्षणी

सभाओं का—हां! हिन्दुओं ही को सब भांत दबाना और उन्ही पर इन उपद्रवों का कुल दारमदार रखना अभीष्ट है तो लाचारी की बात है नहीं तो इस्में न तो हिन्दुओं का किञ्चित् दोष है न गोरक्षणी सभायें इसके लिये कारणहो सक्ती हैं इसका कारण अंगरेज़ी तालीम है जिसने उन्हे यह क्रम सुझाया कि हम लोगों में गोधन क्षीण न होने की सुगम उपाय गोरक्षणी सभाओं का कायम होना है दूसरे हिन्दूपन का यह दोष है जो किसी तरह इन्में से दूर होता ही नहीं—यदि एक फरीक को दबाना मंजूर नहीं है तो उचित है कि मोलवियों का एक कमिशन कराया जाय जिस्में वे अपने शरा के रू से ठीक २ निर्णय कर बतलावें कि उन के मज़हब में यह वैसा ही कर्तव्य कर्म है जैसा रोज़ा नमाज़ इत्यादि कि विना जिसके उन के मुसल्मान होने में बाधा पहुंचती है—या विना किसी तरह पर उन के दीन में बाधा पहुंचे वे इसे छोड़ सक्ते हैं—यदि बाधा पहुंचती थी तो अक्बर के समय इसका होना क्यों बंद कर दिया गया दूसरे यह कि दरियाफ्त किया जाय कि अरब रूम फारस आदि मुसल्मानी देशों में यह किस तरह पर किया जाता है—यदि कमिशन इस बात को सिद्ध कर दे कि यह रोज़ा निमाज़ की भांत आवश्यक है तो ऐसे ढंग से हुआ करे कि हिन्दुओं को इसकी खबर न हो—किसी समाज या मज़हब की उस रीति को जिस्से दूसरे को दुःख पहुंचे गवर्नमेंट के लिये उसका बन्द करा देना उचित काम है—निश्चय जानिये यदि सर्कार गोवध इस देश से उठा दे तो इस तरह के उपद्रव आप से आप बन्द हो जांय—एक तो हिन्दुओं को इस्से अत्यन्त दुःख पहुंचता है दूसरे कर्मचारी लोग भी पीछे उन्ही को अधिक दबाते हैं यह और भी हिन्दुओं के पक्ष में उन का जी तोड़ने के लिये होता है—यदि दोनों फरीक मिला दिये जांय और उन्में मेल और इत्तिफाक करा दिया जाय जैसा बंबई के गवर्नर ने किया तौ भी ऐसे उपद्रवों के सदा के लिये दबजाने की संभावना हो सक्ती है पर जो क्रम इन प्रदेशों में किया जाता है कि कभी एक फरीक पर दोषारोपण किया गया और सब तरह पर दबाये गये कभी दूसरे दल वाले कसूरवार ठहरे और उन पर डाट डपट कीगई यह किसी तरह उत्तम न कहा जायगा इन दोनों में सदा के लिये मेल पैदा करा देने की कोई फिकिर सर्कार की ओर से क्यों न की जाय—यह क्या कि जो इत्तिफाक है उस्में भी बाधा पहुंचाई जाती है और खुले दर्बार में गवर्नमेंट की ओर से वह बात कही जाती है जिस्में दोनों में अधिक

शत्रुता का भाव बढ़ता जाता है—दो दल वाले जब आपस में लड़ रहे हैं तो उसमें यदि एक अजहद्द दबाया जाय और ऐसे ढंग से दबाया जाय कि पक्षपात मालूम हो तो दूसरे दल वाले कुढ़ कर बुराई करने की हिम्मत कदाचित् फिर बांधे बम्बई के गवर्नर इस पलिसी को काम में न लाये तो उन से सब खुश रहे और दोनों फरीक में आपस का मेल भी कायम हो गया—

आधुनिक वैज्ञानियों से प्राचीन आर्यों का सहमत ।

ओम्-पूर्णमदः पूर्णमिदम्पूर्णात्पूर्णमुदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते ।

इस बात की जिज्ञासा मनुष्यमात्र को होगी कि स्थूलरूप में विस्तृत वस्तु जिसे पृथ्वी कहते हैं कैसे इस दशा में परिणत हुई—हमारे यहां के पुराणों ने तो इसपर वह गप्य हांका है कि यदि उस सब को यहां हम लिखें और अलग २ एक २ पुराणों का मत दिखलावें तो एक नया पुराण तैयार हो जाय—अस्तु किसी २ पुराण में यह कथानक है कि सृष्टि के आदि में मधुकैटभ दैत्य को भगवान् विष्णु ने मारकर फेंक दिया उसी की हड्डियां पर्वत हुईं लोहू समुद्र और नदियां हुईं मज्जा मांस आदि पृथ्वी हुई उसके बाल तथा रोम बड़े या छोटे तरह २ के वृक्ष और औषधियां हुईं—इस क्रम के अनुसार उन दैत्यों के शरीर के पृथक् २ हिस्से पृथक् २ वस्तु बन समुदायरूप में पृथ्वी इस नाम से कहलाये—ऐसे २ किस्से कहानियों से मूर्ख का चंचल चित्त अलबत्ता स्थिरता ग्रहण कर सक्ता है यह दृश्य जगत् क्या वस्तु है इस जिज्ञासा का उत्तर भी उसे मिल जाता है और अचरज पैदा करने वाली रोचक कहानियों से उसके मन का विनोद भी हो सक्ता है—किन्तु जो मूर्ख नहीं हैं जिन्हे परमेश्वर ने किंचित् ज्ञान का लेशमात्र भी दिया है वे ऐसी २ कहानियों पर किसी तरह विश्वास नहीं ला सक्ते चाहो वे इसको रूपकालङ्कार मान इसका कोई दूसरा अभिप्राय भले ही निकालें—ऐसों के चंचल चित्त को यत्किंचित् स्थिरता सम्पादन करने वाला केवल श्रुतिवाक्य है सो श्रुतिवाक्य भी तभी तक प्रामाणिक समझा जायगा जब तक संसारिक व्यौहारों के सम्बन्ध में यह साधारण बुद्धि के अनुकूल हो—श्रुतिवाक्य है ॥

"आत्मन आकाशः सम्भूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी"—

जिस का सीधासादा पक्षपात रहित अर्थ है कि आत्मा से आकाश हुआ आकाश से वायु वायु से अग्नि अग्नि से जल जल से पृथिवी हुई—ऐसे अवसर पर यह स्मरण रहे कि इन पांच शब्दों से पृथ्वी आदि पांच स्थूल तत्त्व का ग्रहण नहीं किया गया वरन उन के वे सूक्ष्म भाग जिन का ग्रहण हम इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष नहीं कर सक्ते—

अब सोचना चाहिये कि श्रुतियां इन पांच पदार्थों को गिनाय मौन हो गईं पर सुबूत इस का कुछ भी न दिया गया—श्रुतियां क्यों सुबूत देने लगें यह तो उन का प्रयोजन ही नहीं है—श्रुतियों का काम केवल ईश्वर के स्वयं सिद्ध ज्ञान को प्रगट कर देना है—अब इस का सबूत कहीं ढूंढना चाहिये पहिले अपना घर टटोल तब दूसरे का घर तलाशेंगे—जिन लोगों ने शास्त्रों को एक बार भी दृष्टिगोचर किया होगा उन को विदित होगा कि वेदान्त और सांख्य इन दो शास्त्रों ने इस का निर्णय किया है परन्तु इन दोनों शास्त्रों का नाम लेते सन्देह होता है कि लोग यह कहेंगे कि ये तो साधारण ज्ञान के उदाहरण नहीं है बल्कि श्रुतिवाक्यों का गूढ़ार्थ समझाना ही केवल उन का प्रयोजन है—तब उचित हुआ कि श्रुतिवाक्यों का तात्पर्य जानने के लिये दूसरे का घर भी टटोलें इसलिये इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता डारविन हैक्सली टिंडल तथा स्पेन्सर आदि महान् पुरुषों के सिद्धान्तों को भी जांचते हैं—इन महान् पुरुषों के वाक्य केवल विज्ञानविद समझ सक्ते हैं इन लोगों ने किसी तरहके पक्षपात से अपना सिद्धान्त प्रामाणिक नहीं माना किन्तु उन के सिद्धान्त ऐसे ही हैं जो प्रकृति के नियम से किसी अंश में विरुद्ध नहीं हैं और जिन सिद्धान्तों के द्वारा भौतिक कार्य जिसे "नेचुरल फिनामिना" कहेंगे अच्छी तरह सिद्ध हो जाते हैं—तब जो ऐसों के दृढ़ सिद्धान्त के अनुकूल श्रुतिवाक्य हों तो क्यों न माननीय होंगे—अब देखना चाहिये पृथिवी इस दशा में कैसे आई इस बारे में ये लोग क्या मानते हैं—ये चारो विद्वान् पृथ्वी की बनावट के सम्बन्ध में चारो वेद के समान एक ही तरह की सम्मति देते हैं—ये लोग समस्त अखण्ड ब्रह्माण्ड की रचना का भेद बतलाना अपने ऊपर नहीं लेते किन्तु केवल

उस सौर जगत् "सोलरसिसटेम" का जिस्का हमारी पृथ्वी एक भाग है और इन लोगों ने अपना सब सिद्धान्त केवल अनुभव पर स्थिर किया है—ऐसी कोई अद्भुत दूरबीन या कोई दूसरे प्रकार के यंत्र इन को अब तक न मिले जिस्के द्वारा श्रुति के प्रथम भाग "आत्मनः आकाशः सम्भूतः" की सत्यता का पता लगा सक्ते—उस परिमात्मा की गति अनोखी है जो अपना अंश रखने वाले जीवों से क्या २ अद्भुत चरित्र कराता है—संभव है कोई यंत्र ऐसा भी प्रगट होजाय जिस्से यह जीव जो अपने स्वरूप को भूला हुआ है उसे पहचान परमात्मा से अपनी भेद बुद्धि दूर हटा सके तब श्रुति के इस प्रथम खण्ड का भी ठीक पता लगजाय—अभी तो उन यंत्रों को देखना चाहिये जिन से उस परमात्मा की और शक्तियां प्रगट हुई हैं—यह वह तीक्ष्ण यंत्र है जिस्के द्वारा हमारा सौर जगत् अर्थात् वे ग्रह उपग्रह जिन के साथ हमारी पृथ्वी परमात्मा की अपरिमित शक्ति से बीच में लटकी हुई अपनी कक्षा में घूम रही है जिस्का ज्ञान हमे उसी यंत्र के द्वारा हुआ है—इन बुद्धिमानों ने बहुत से तजरबे के बाद सिद्ध किया कि यह भचक्र का वह सम्पूर्ण स्थान जिसे वे लोग अपनी भाषा में नेबुला कहते हैं व्याप्त था श्रुति में जो शब्द आकाश का बोधक हो सक्ता है—इस महासूक्ष्म पदार्थ के उत्पन्न होने के उपरान्त लाखों वर्ष बाद ज्यों ही यह किंचित् स्थूल हुआ त्योंही अपने केन्द्र पर घूमने लगा और ज्यों २ इस्का परिमाण बढ़ता गया त्यों २ इस्की गति अत्यन्त शीघ्र होती गई यहां तक कि केन्द्र शेष बाह्य भाग से पृथक् होकर आप अलग घूमने लगा उपरान्त केन्द्र के शेष भाग के जो नेबुला थे उन में से फिर छल्ला के आकार का एक दूसरा परिमाणु पिण्ड अलग हो अपने निज के केन्द्र पर उस बड़े केन्द्र की परिक्रमा करता हुआ घूमने लगा इसी तरह अपने निकट के परिमाणु पिण्ड अलग हो अलग २ सब उस बड़े केन्द्र की परिक्रमा देने लगे—इस तरह पर उस बड़े केन्द्र के चारो ओर अंगूठियों के शकल के सात बड़े २ गोले एक के पश्चात् दूसरे घूमने लगे इस को ये विद्वान् न्यूक्लियस कहते हैं—यह शब्द श्रुति के वायु शब्द का बोधक हो सक्ता है—तब आकाश से वायु हुआ श्रुति का यह कहना सिद्ध हुआ—इन्ही सातों बड़े लोगों में से छोटे २ टुकड़े अलग हो उन २ बड़े गोलों के उपग्रह बने जैसा पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा है बृहस्पति के साथ ४ चन्द्रमा मङ्गल के साथ तीन और शनि

के साथ सात और ये उपग्रह अपने २ ग्रह के चारो ओर घूमते हुये उस बड़े केन्द्र की परिक्रमा देने लगे—अब ये विद्वान् कहते हैं कि ये सातो न्यूक्लियस बहुत वर्षों के उपरान्त घूमते २ और भी कड़े और ठोस गोले होते गये और सातों गोले में अपने उपग्रहों के इस केन्द्र वाले सब से बड़े न्यूक्लियस नामक गोले के जो सूर्य कहलाता है एक ही ओर घूमने लगे और यह दशा इन की स्टारी अर्थात् ज्योति वाली दशा कहलाई—जिस दशा में केन्द्र वाला बड़ा न्यूक्लियस जिसे सूर्य कहते हैं अब तक है इसको श्रुति का अग्नि शब्द समझना चाहिये—तो अब वायु से अग्नि हुई श्रुति के इस खण्ड की सत्यता सिद्ध हुई—उपरान्त बहुत वर्षों के बीत जाने पर इन में कई एक गोले पिघली दशा में प्राप्त हुये जिन्में एक हमारी पृथ्वी भी है पृथ्वी को पिघलीदशा में होने का ये लोग सबूत देते हैं कि इसके आभ्यन्तर निस्सन्देह आग है और यह आग ज्वालामुखी पर्वत या भूकंप में प्रत्यक्ष हो जाती है—अब इस अग्नि का पृथ्वी के अन्तर गर्भ में होने का कोई दूसरा सबूत नहीं ही है सिवाय इसके कि यह कहा जाय कि बहुत समय बीता पृथ्वी मोलटनस्टेट याने पिघलीदशा में थी और भीतरी हिस्से उसके अभी तक उसी दशा में हैं—और यह दशा जिसे विज्ञानवेत्ता मोलटन कहते हैं श्रुति के आप्शब्द का पर्याय है—अब रही पांचवीं दशा उसके लिये क्या कहना "प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्" तो यह दशा जिस्में पृथ्वी अब विद्यमान है उसे ये वैज्ञानिक ईथर कहते हैं जो श्रुति में पृथिवी शब्द से प्रतिपादित है—सौर जगत् के ये सब ग्रह उपग्रह सूर्यमण्डल के एक ही ओर और एक ही धरातल में घूमते हैं—सूर्यमण्डल में जो अब तक वैसी ही गरमी कायम है इसका कारण ये विद्वान् यह कहते हैं कि सूर्यमण्डल नित्य २ सिकुड़ता जाता है जिस्से "किमिकल कंबश्चन" रसायनिक दाहक शक्ति उस्में जैसी की तैसी कायम है पिघलाहट को स्थान नहीं मिला—अब देखना चाहिये कि जो कुछ श्रुति में जगत् की उत्पत्ति के सम्बन्ध में बतलाया गया जिसे आर्यजाति के लोग अब तक विश्वास करते चले आये इस उन्नीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिकों के स्वाभाविक ज्ञान से भी वही बात सिद्ध होगई—कोई कैसा ही मनुष्य हो पक्षपात छोड़ दे तो अवश्य ही अन्त में सब बातों को वैसा ही कहेगा जैसा श्रुति ने माना है—भला यह कैसे हो सक्ता है कि श्रुति जो ईश्वर वाक्य है मिथ्या कहे हमारे

वेदों में अभी बहुतसी ऐसी बातें हैं जिस्के मर्म भी वैसे ही खुलते जायंगे जैसा सृष्टि के सम्बन्ध में यह एक बात आज स्पष्ट हुई—एक सत्य का निर्णय करने वाला—

घर का परसवैया अन्धेरी रात।

वे लोग कहां हैं जो समझते हैं कि कौंसिलों के सुधार से देश का सुधार होगा टिक्कस उठा दिया जायगा हम लोग फिर दुःखी न रह जायंगे—कहां हैं दादाभाई नोरोजी जो विलाइत में सेक्रेटरी आफस्टेट की कौंसिल का खर्च घटाने के उद्योग में हैं हम आज उन्हे धन्यवाद देते हैं कि एक करोड़ रुपये हरसाल का खर्च हमारे सिर पर और लाद दिया गया—ब्रिटिशवार्न सबजेक्ट अंगरेज़ सब खर्च के बोझ से पिसे जाते थे छुट्टी ले विलाइत जाने पर अथवा पेनशन लेने पर तो उनको सवाई मिलती ही थी परन्तु हिन्दुस्तान ही में रहते हुये उन को जो बट्टे के कारन विलाइत में खर्च पड़ता था उस्के पूरा करने को सर्कार ने उन की तनखाह में रुपया पीछे एक आना और बढ़ा दिया—हमारे राज्यकोश की कैसी शोचनीय दशा है यह कौन नहीं जानता जब से विलाइती माल का महसूल उठादिया गाया है कोई वर्ष ऐसा नहीं जाता है कि राज्य-कोश में कमी न पड़ती हो और हरसाल नया ऋण न लिया जाता हो—इस ऋण का जो व्याज बढ़ता है वह मानो प्रति वर्ष खर्च की बढ़ती है आमदनी का यह हाल है कि बिलाइती माल का महसूल उठा देने से बहुत कुछ घाटा था ही अब अफीम की आमदनी घटाने का भी विचार हो रहा है इस्से भी कई करोड़ का घाटा राजकोश में होना संभव है—आमदनी का द्वार यों बन्द होता जाता है खर्च देखो तो रोज़ बढ़ता ही जाता है—अंगरेज़ सर्कारी नौ-करों को जितनी लम्बी तनखाह यहां दी जाती है उतनी पृथ्वी भर के किसी देश में नहीं दी जाती—यहां के सिविल और सैनिक खर्च के सम्बन्ध में लोग बहुत कुछ कह चुके हैं नेशनल कानग्रेस प्रति वर्ष इस्की उधरनी किया करता है तब इस विषय पर हमे कुछ विशेष लिखना व्यर्थ है—हम केवल उन खर्चों को दिखलाते हैं जो लार्ड रिपन के समय से अब तक बढ़ाये गये—लार्डरिपन महोदय ने आज्ञा दी थी कि सर्कारी काम में जो चीज़ें आवें वह सब जहां तक

हो सके इसी देश की बनी हुई ली जावें जो चीज़ें यहां न मिल सकैं केवल वही विलाइत से मंगाई जांय और जो चीजें विलाइत से मंगाई जांय उस्के लिये विलाइत में एक मुहकमा एजेन्सी के नाम से कायम किया गया जिस्में सब चीजें सस्ती मिलैं--इस एजेन्सी के कायम होने से विलाइत के माल की आमदनी सौगुनी अधिक हो गई यहां तक कि जितना काम पहले यहां पत्थर और लकड़ी से निकलता था उस्की जगह विलाइती लोहा काम में आता है-इस्का परिणाम यह हुआ कि रुपया सस्ता होता चला गया और उस्के दाम यहां तक घटे कि जहां किसी समय एक रुपये की कीमत २ शिलिंग थी वहां सिर्फ सवा शिलिंग रह गई—यद्यपि नुकसान इस्में हिन्दुस्तानियों ही का था कि उन को विलाइत की चीज़ें पहले से अब मंहगी पड़ने लगीं तौ भी अंगरेज कर्मचारी चिल्लाने लगे और विलाइत वालों ने जिन को अपनी जाति वालों के साथ उदारता प्रगट करने का अभ्यास पड़ गया है यद्यपि यहां के राज्यकोश में समाई न थी तौ भी उन के चिल्लाने पर ध्यान दे रुपये में एक आना अधिक उन की तनखाह बढ़ाय ही तो दिया—हम लोग बहुत चाहते हैं कि कलट्टर और मजस्टर के ओहदे अलग २ दो आदमियों को दिये जांय तो एक ही हाकिम को बेहद्द इखतियार सिपुर्द रहने से बहुधा हाकिम लोग अपने इखतियार के घमण्ड में अण्ड बण्ड कर गुज़रते हैं सो न किया करैं भरपूर इनसाफ हो पर इस्के लिये सर्कार के खज़ाने में रुपया नहीं है इसलिये किफाइत के खयाल से दोनों काम एक ही को सिपुर्द हैं सियाह सुफैद कुल का मालिक वही है जो चाहे सो कर गुज़रै--वही थोड़े दिन हुये सैकड़ों इंजीनियर लाखों रुपये पेनशन और बोनस दे नौकारी से बर तरफ किये गये इसलिये कि विलाइत में कूपरहिल नाम की एक जगह है वहां इंजीनियरों का इमतिहान होता है हरसाल ढेर के ढेर इमतिहान पास कर यहां भेजे जाते हैं जिस्में उन को यहां हिन्दुस्तान में जगह मिलती रहे इसलिये यह उपाय किया गया था--अब फिर उतने ही इन्जीनियर भर गये जितने निकाले गये थे गवर्नमेंट फिर इस विचार में है कि कोई ऐसी ततबीर सोचें कि उन को यहां जगह मिलती जाय--हिन्दुस्तान का चाहो जो नुकसान हो कुछ सोच नहीं विलाइत वालों को घाटा न होने पावे इसी से हम ने कहा--"घर का परसवैया अंधेरी रात"--

सिखापन

गुरू और चेला

गुरू—किफायत शारी अजब चीज़ है खास कर इस अंगरेज़ी राज्य में जब कि आमदनी कुछ रह न गई खर्च का कहीं ओर छोर नहीं—कहा है—

कः कालः कानि मित्राणि को देशः कौ व्ययागमौ ।
को वाहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः—

समय कैसा है? कौन दोस्त हैं? कौन दुश्मन हैं? देश की क्या दशा है? हमारी क्या आमदनी है क्या खर्च है? हम कौन हैं? हमारी ताकत कितनी है? इन सब बातों को बार २ सोचता रहे—

चेला—गुरू जी मैं आप की बताई हुई बातों में बिना आप के कहे ही अच्छी तरह सचेत हूं—किफाइत में तो मैं यहां तक प्रवीण हूं कि मेरा नाम लेकर कोई किफाइत करे चमड़ी जाय दमड़ी न जाय इस संविधानक को हमी जानते हैं—"देत जो देखा आन को तासों बदन मलीन„ क्या कहूं बड़े लोग बेतरह बहुत से ऐसे फजूल खर्च बांध गये हैं कि मैं निहायत परेशान हूं बड़ी फिकिर में हूं कि किसी तरह उसे तोड़ूं—समय के बारे में आपने कहा सो वह विद्या भी मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं—"जहां देखूं हंडा परात, तहां गाऊं सारी रात„—यह उसी वक्त की खिदमत का नतीजा है कि मैं इस दरजे को पहुंचा हूं—दोस्त की जो आपने कहा सो अपना मतलब ही मेरा दोस्त है मतलब की दोस्ती तो मेरा कुलधर्म है भला मैं कभी चूक सक्ता हूं—

"स्वार्थं समुद्धरेत् प्राज्ञः स्वार्थभ्रंशो हि मूर्खता„—

देश की दशा के सम्बन्ध में मैं खूब जानता हूं कि नई रोशनी का प्रकाश चारो ओर फैल रहा है पुरानी चाल पुराने खयाल सब अस्तव्यस्त हो गये देशहित के नशेबाज़ नित्य आय २ मेरा दिमाग चाटा करते हैं देशकी दुर्भिक्ष कर पीड़ित दशा का हाल अकसर सुनाय २ मेरा कान फोड़ते रहते हैं—पर मैं उन के जुल में नहीं आता—क्यों आऊं जो बात मेरे घर में आज तक नहीं हुई उसे मैं कैसे कर सकता हूं—आमदनी और खर्च की आपने सुनाया सो यहां सिवाय आमदनी के खर्च हई नहीं तब आप को आयव्यय का खटका जीमें

लाना ही फज़ूल है—आपने कहा हम कौन हैं—सब जानते हैं हम कौन हैं क्या हैं—सुकरात और अरस्तू की हिकमत की कुंजी मेरे ही पास है—बज़ेदारी तरहदारी फेशन और अन्दाज़ में हमारा निराला ही ढंग है—"हमारे सजधज की दुनिया नक़ल करती है—„ संपतसुमेर की कुबेर की हमारे घर में गिरों है तब हम अलावे ऊपर देखने के नीचे क्यों ताकैं—गुरु महाराज हम सब सीखे सिखाये हैं हमैं अब और अधिक आप क्या सिखाया चाहते हैं—

गुरू—सिखावैं गे क्या—हमी सब सीख गये—

चेला—बस तो अब धता—

चण्डूबाज़ों की बातचीत ॥

हीरा—क्यों जी हमने सुना है चंडूखानें सब बन्द हो जांयगे—

जवाहर—हां भाई सुनते तो ऐसा ही हैं—एक कोई केन साहब नाम का अंगरेज़ है उसी ने यह सब उधम मचा रक्खा है उसके मारे लाट साहब भी बड़े तंग हो रहे हैं—वह हमेशा ऐसी २ एक न एक उखाड़ पछाड़ लगाये रहता है—पहिले पहल उस ने शराब के बारे में बहुत कुछ झगड़ा उठाया अब अफीम मदक और चंडू की ओर झुक पड़ा है और गांजा भांग की भी खबर लेरहा है—

मोती—हां २ हमने भी ऐसाही सुना है पर यह केन साहब कौन है यह तो लाट साहब से भी बड़ा मालूम होता है—हम तो अब तक यही समझते थे कि इन अंगरेज़ों में लाट साहब से बड़ा कोई नहीं है—विलाइत में विक्टोरिया रानी हैं उन्हीं के मुखतार आम यहां सलतनत का कुलदार मदार अपने ऊपर लियेलाट साहब रहते हैं—इरादा था उन्हीं को अरज़ी भेजते कि अफीम और चंडू हम लोगों के खाने पीने की चीज़ें हैं यह बन्द न होनी चाहिये पर अब मालूम हुआ केन साहब लाट साहब से भी बड़े हैं अच्छा तो बेहतर होगा कि हिन्दुस्तान भरके चंडूबाज़ सब मिलकर उन्हीं को अरज़ी दें कि हुजूर ऐसा गज़ब न कीजिये चंडूखाने टूट जांयगे तो हम लोगों का जीना दुशवार हो जायगा—

मानिक—केन साहब कोई मुसलमान तो नहीं है क्योंकि दीन इसलाम में अलबत्ता नशे की चीज़ें हराम समझी गई हैं—क्यों जी मियां गौहरअली तुम क्या समझते हो—

गौहर—माशा अल्लाह तुम भी क्या ही घनचक्कर हो मालूम होता है आप अकिल को खानापकाने की हांडी में बन्द कर रख आये हैं दीन इसलाम विलाइत में कहां—हकीकत यों है कि आदमियों में यह एक अमूमन खासीयत है कि जो चीज़ अपने को पसन्द नहीं आती उसे हर एक शख्स बुरा समझता है—बस यही सबब है कि केन साहब को मंजूर हुआ कि हिन्दुस्तान में चंडू-खाने तोड़ दिये जांय—

याकूत—वल्लाह मियां गौहर आप की अकिल ने भी खूब ज़ोर पकड़ा भला यह भी कोई इनसाफ है कि जो बात अपने को नापसन्द हो वह दुनिया में किसी को पसन्द होगी—गवर्नमेंट इंगलीशिया निहायत इनसाफ पसन्द मशहूर है ऐसा कभी न होगा—

जवाहर—नहीं २ तुम समझते नहीं जो सहज़ोर होता है वह जिसे इन्साफ और न्याय मानता है वही करता है—मसल मशहूर है—जिस की लाठी उस की भैंस—चंडूबाज़ अंगरेज़ तो होते नहीं तब वे क्यों हमारे लिये इसे जारी रक्खें इस का कायम रहना ज़रूर उन को नापसन्द हो रहा है—गोवध उठा देने के लिये हम कितना चिल्लाया करते हैं अखबारवाले इस्पर सैकड़ों मज़मून लिख चुके और साबित कर दिया कि इस्से सिवाय नुकसान के फाइदा नहीं है पर उन्हें पसन्द है नहीं बन्द किया चाहते—

हीरा—तो शराब के लिये भी केन साहब कोशिश कर रहे हैं सो क्यों ? शराब तो विलाइत के लोग भी पीते हैं तब क्यों उसे यहां बन्द करने का यत्न किया जाता है—

जवाहर—हां २ पर शराब में देशी शराब जो उन के पीने के काम में नहीं आती विलायती शराब जिसे वे पीते हैं नहीं बन्द हो सक्ती केनसाहब चाहो कितना ही यत्न करैं—ऐसा ही जुआ जो हिन्दुस्तानी खेलैं वह मजमेनाजाइज़ में करार दिया जाता है और उस्के लिये कानून में सज़ा है—पर अंगरेज़ी जुआ के लिये बड़े २ शहरों में क्लबघर मुकर्रर हैं जिन में खुलाखुली जुआ होता है कोई नहीं पूछता—सेंट लेज़र और डरबीस्वीय में लाखों का जुआ होता है बड़े २ लार्ड और डूक खेलते हैं कोई बन्द तो करै—कितनी बातें हैं जिसे हम चाहतेहैं कि बन्द हो क्योंकि उस्में हमारा नुकसान है—हम बहुत चाहते हैं कि गेहूं विलाइत जाना बन्द हो पर हमारे चाहने से होता क्या है—सर्कार हमेशा

चिल्लाया करती है कि खज़ाने में रुपया नहींहै किन्तु बट्टे का घाटा पुरे देने को साहब लोगों की लंबी २ तनखाहें बढ़ा देने को न जानिये कहां से रुपया निकल आया—चांदी की दर घटाने का जो हाल में कानून बना उस्से हिन्दुस्तान में करोड़ों की चांदी भरी पड़ी है लोगों को घाटा हो रहा है पर विलाइत के सौदागर जो चांदी यहां लाद लाये उसे गवर्नमेंट को लेना ही पड़ा उस में जो घाटा हुआ सो हिन्दुस्तान के माथे बिसाना ऐसी २ कितनी बातें हैं—इसी से हम कहते हैं "जिस की लाठी उस की भैंस"—

हीरा—भाई तुमने तो आज वे बातें बतलाईं जिस का ठीक २ भेद आज तक किसी ने न बतलाया था क्या इस की कोई उपाय नहीं है कि इन की यह खुदगर्ज़ी जाती रहे और इन सब बातों को आंख खोल देखें कि हिन्दुस्तान नित्य २ धन से छीन होता जाता है—कर्ज़ पर कर्ज़ लदता जाता है बालू की भीत कब तक चलैगी विलाइत में बड़े २ अकिलमन्द लोग हैं कोई अच्छा प्रबन्ध इस्के लिये क्यों नहीं सोचते केनसाहब ही इस की कोई तदबीर सोचैं हम गरीब चंडूबाजों को सताने से उन्हें क्या मिलैगा—

जवाहिर—भाई वे लोग मूर्ख नहीं हैं सब समझते हैं केवल स्वार्थपरता के कारण आंख बन्द हो रही है फिर हम चंडूबाजों की बात कौन सुनता है कोई बड़ाभारी आदमी कहता तो वे सुनते भी—पर अपना धर्म समझ उन्हें चिताना तो अवश्य है इस लिये लाओ आज की यह सब बात चीत हिं०प्र० को भेज दें यदि वह छाप दें तो मतलब निकल सक्ता है—और जो आप लोगों की राय होतो जब कभी यहां हम मिला करैं और आपस की बातचीत हुआ करे सदा हिं०प्र० में छापने को भेज दिया करें परन्तु यह नियम रहै कि तीन आदमी से अधिक इस बात चीत में शरीक न रहा करैं नहीं तो मजमेनाजाइज़ समझा जायगा—आज की कमेटी के लिये इतना ही बस है—(सब गये)—

पुस्तक प्राप्ति—

नूतनचरित्र

बी—ए—उपाधिधारी बाबू रतनचन्द वकील हाईकोर्टकृत—उत्तम उपदेश से भरा हुआ यह उपन्यास कई कारणों से प्रशंसा योग्य है—एक तो यह कि "प्लाट" बन्दिश इस्की बिल्कुल नये ढंग की है दूसरे यह कि भाषा इस्की पण्डितों

कीसी न तो निरीगूढ़ संस्कृत है न मोलवियों की गलाकल्पनी अरबी इस्में है—पढ़ने वाला बिना किसी कोश या डिक्शनरी की सहायता पढ़ता चला जाय कहीं पर किसी तरह की कठिनाई मतलब के समझने में उसे न आ पड़ेगी—दोष इस्में एकही है कि एक बात को फिर २ गाय पुनरुक्ति की अधिकाई है उपन्यास यह बहुत ही उत्तम है और पढ़ने योग्य है मूल्य १) पुस्तक ग्रन्थकर्ता को लिखने से मिलैगी—

साहित्यसुधानिधि ।

बाबू देवकीनन्दन द्वारा मुज़फ्फरपुर से प्रकाशित होता है—यह मासिकपत्र हकीकत में साहित्यसुधानिधि है—इस की सबी बात उत्तम है ऐसे पत्रों से अलबत्ता हिन्दी का भंडार भर सक्ता है—लोगों को चाहिये रद्दीपत्रों का पढ़ना बन्द कर ऐसे पत्रों को पढ़ैं तो हिन्दी का बड़ा उपकार हो—वार्षिक मूल्य २)

प्रिंस अल्बर्टविक्टर का संक्षिप्त जीवनचरित्र ।

यह छोटीसी पुस्तक शाहाबाद ज़िलह हरदोई निवासी पं०—रामबिलास शर्माकृत—यह ग्रन्थ १०० दोहाओं में जीवनचरित्र के ढंग पर लिखा गया है मूल्य =)

भाषाभूषण

सर्वाङ्ग सुन्दर हिन्दी भाषा का साप्ताहिक पत्र जो बंबई से प्रकाशित होने लगा है इस्का ढंग सब अच्छा है यदि व्यौपारसिन्धु के समान थोड़े दिन के लिये जुकनूसा चमक छिप न जाय—"आरंभ शूराः खलुदाक्षिणात्याः—" हाल के एक नम्बर में इस्के संपादक को क्या सूझा जो संस्कृत के थोड़े से श्लोक छाप संस्कृतज्ञ बनने के लिये टांग अड़ाया—

संस्कृतचन्द्रिका

संस्कृतमासिकपत्रिका—वास्तव में यह संस्कृतचन्द्रिका है—इस्की लेखप्रणाली; विषय; शुद्ध सरल कोमल शब्दों में पद योजना; सभी बात इस्की सराहने योग्य है छात्रों के लिये बड़ा उपयोगी है विशेष कर ऐसे लोगों को जो कलकत्ता युनिवरसिटी की परीक्षा दिया चाहते हैं—क्योंकि इस्में संस्कृत से अंगरेज़ी अंगरेज़ी से संस्कृत बनाने का ढंग छोटे २ जुमलों में अच्छा दिया गया है—और

युनिवरसिटी के संस्कृत के प्रश्न भी इसमें पीछे से छाप दिये जाते हैं इसका मूल्य विद्यार्थियों से १) औरों से १॥) है—यह पत्रिका कलकत्ता राजधानी से श्री जयचन्द्रसिद्धान्तभूषण द्वारा-सम्पादित होती है—

। हिन्दी बंगवासी की उदारता ।

केवल ॥) महसूल का ले हि-बं-वा-के अध्यक्ष ने अपने पढ़ने वालों को ३ग्रन्थ उपहार दिये हैं-ये तीनों ग्रन्थ ये हैं—दुर्गासप्तसती भाषा अर्थ सहित-भगवद्गीता श्रीधर का तिलक और भाषानुवादयुक्त—अनुवाद दोनों का उत्तम सरल हिन्दी में है—तीसरी पुस्तक विलाइत की चिट्ठी—यह ग्रन्थ साधु सरल हिन्दी भाषा में लिखा गया है—विना विलाइत गये विलाइत की सब सैर घर बैठे ही इस ग्रन्थ के पढ़ने वालों को होजाती है हमे यह ग्रन्थ बहुत पसन्द है॥

दान का एक नया क्रम ॥

लखनऊ निवासी पं० केशवराम विष्णुलाल पण्ड्या हमारे पत्र की दीनदशा देख १०) हमे सहायार्थ दान दिये हैं-हम उक्त पण्ड्या जी को इसके लिये अन्तःकरण से धन्यवाद देते हैं और उन के अत्यन्त बाधित हैं-अचरज केवल इतना ही है कि दान-कर्त्ता महाशय ने इस तरह के दान का विधान कहां पाया-क्योंकि ब्राह्मनों की पोथियों में तो ऐसे दान कहीं पर लिखे नहीं हैं-अस्तु पण्ड्या जी के दिखलाये हुये क्रम के अनुसार हमारे और२ रसिक पढ़ने वाले यदि हमारे साथ ऐसी ही दया और सहानुभूति प्रकाश करैं तो रुपये के घाटे के कारन पत्र निकालने में जो अति विलम्ब होता है क्यों हो-दूसरे यह कि हम भी नगावड़ी बैल की तरह माघ मेले के बैरागी और पंडों की भांत बैठे २ पागुर किया करैं और आरटिकिलों पर आरटिकिल की लर बांध दें ऐसा कि पढ़ने वाले ऊब उठते किन्तु हमारी लेखनी न थकती-

हिन्दी-प्रदीप

Radha Lal Goswami
Gulzar Bagh
Patna

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरितन प्रगट ह्वै आन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि०१६ सं०११,१२ } प्रयाग { जुलाई अगस्त १८९३

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १६ संख्या ११-१२ | प्रयाग | जुलाई, अगस्त सन् १८९३ ई०

नये लाटसाहब।

हम सब लोगों को बड़ा अचरज था कि क्यों इस पद पर नियत हो यहां आने के लिये कोई हामी नहीं भरता था अंगरेज़ी राज्य में तो इससे बढ़ कर बाद सेक्रेटरी आफ स्टेट के कोई दूसरा पद हई नहीं—३० करोड़ मनुष्यों का आधिपत्य बड़े से बड़े राजाओं को जिन के राज्य की सीमा यूरोप के एक २ स्वच्छन्ददेशों से कहां बढ़कर है एक बार के कटाक्षपात में बनाने बिगाड़ने वाले तब क्यों ऐसे उच्चपद को स्वीकार करने से विलाइत के लोग हिचकिचाते थे—इसपर जुदे २ लोगों की जुदी २ उपज सुनने में आ रही है—कोई २ कहते हैं रूस डांडे से आ लगा है कौन कह सकता है कब युद्ध छिड़ जाय—हमारी समझ में ऐसा खयाल करनेवालों की भूल है यह बात किसी तरह मन में नहीं आती कि ब्रिटिशसिंह में इतनी कमहिम्मती और बोदापन आ गया है कि वह रूस के जंगली भालू के मुकाबिले आनेवाली कठिनाइयों की डर से अपने कर्तव्य कर्म को छोड़ बैठेगा—जहां तक हम समझते हैं अभी भी इङ्गलैण्ड का एक छोटा सा बालक लड़ाई के मैदान में अपनी मर्य्याद रक्षा और ब्रिटिश जाति का गौरव स्थिर रखने को युद्ध में अपना शरीर समर्पण करना अहो भाग्य मानेगा—क्या भया जो हिन्दुस्तान की दौलत इङ्गलैण्ड के रग २ में असरकर वहां के रहने वालों को नाज़ुक और अत्यन्त विलासी करती जाती है—किसी २ की यह भी कल्पना है कि हिन्दू और मुसलमानों में नित्य का झगड़ा ऐसी बुरी बला है कि इसी से यहां की लाटगीरी कबूल करते लोग आगा पीछा कर रहे थे और ये झगड़े अब बढ़ते ही जाते हैं शान्त होने की कोई दृढ़ उपाय नहीं देख पड़ती—किन्तु यह शंका भी निर्मूलसी जान पड़ती है यदि हिन्दू और मुसलमान के साथ विषम

भाव छोड़ दिया जाय कभी को एक का कभी को दूसरे का पक्षपात न किया जाय दोनो को आपस में लड़ाने की पालसी काम में न लाई जाय तो निश्चय हिन्दू तथा मुसलमान प्यारे लाटसाहब की दुआत करने को सब भांत मुस्तैद रहैं ॥

तीसरे लोग इस का एक कारण और भी बतलाते हैं कि हिन्दुस्तान की कोशसंबन्धी दशा आज कल ऐसी बिगड़ी है कि जिस से सब के छक्के छूट रहे हैं किसी की हिम्मत नहीं पड़ती कि ऐसे दिवालिये देश के कोश का भार अपने ऊपर ले और सो भी ऐसे समय जब कि रूस सा प्रबल शत्रु हिन्दुस्तान के द्वार पर खड़ा गाज रहा है—माना कि हिम्मत और बहादुरी में अंगरेजी गवर्नमेंट किसी से कम नहीं है पर रुपये का काम रुपये से निकलता है जबानी जमा खर्च से कुछ नहीं होता—यद्यपि लड़ने भिड़ने को फौज बहुत है बहुत से गोरे सिक्ख रुहिल्ले भोटिये पठान बात की बात में मिल सकते हैं पर उन की फौज़ का खर्च भी तो चाहिये गोला बारूद हथियार रसद रह सब तो रुपये ही से होगा—हमारी बदौलत बिलाइत के लोग बड़े गुलछर्रे उड़ा चुके हैं उन का आमोद प्रमोद भोग विलास यहीं के रुपये की बदौलत बढ़ता ही जाता है उचित था कि दया और सहानुभूतिके भाव से हमारी इस दीन दुखिया निष्किञ्चन दशा में अब हमारी सहायता करते बिलाइत के लोग आपस में चन्दा कर हिन्दुस्तान के खज़ाने में जो दिवाला होरहा है उस घाटे को बिलाइत से रुपया भेज पूरा कर देते नहीं तो हर एक बहाने जो यहां का रुपया खींचे लेते हैं वही अब कम खींचते—हिन्दुस्तान महावृक्ष जिस की छाया में इङ्गलैण्ड चिरकाल तक सुख करता रहा अब यह कुम्हला रहा है इस की सूखी जड़ पर कुल्हाड़ा न चलाय इसे छिन्न भूल करने के बदले सींचते जिस में आगे के लिये अमृतफल चखने की आशा बनी रहती—सो सब एक ओर रहा यहां के कोश की इस दिवालिया दशा पर ज़रा भी दया और हमदर्दी का भाव मन में न लाय जो कंपेनसेशन अर्थात् बट्टे की कसर अंगरेजों को दी गई है उस से उन का मुह सीधा नहीं हुआ—एक शिलिङ्ग ६ पेन्समें पूरा नहीं पड़ता चाहते हैंकि उनको दोशिलिङ्ग के हिसाब से बट्टे की कसर मिले और इतने पर भी राज़ी नहीं है कि आगे को ही मिले वरन वह कहते हैं जब गवर्नमेन्ट ने यह मान लिया कि हम लोगों को नुकशान है तब हमे बट्टे की पिछली कसर भी सब

मिलनी चाहिये और जब से हम नौकर हो विलाइत से आये हैं तब से लेकर आज तक का लेखा चुकता कर दिया जाय–धिक् स्वार्थपरता मानुष का मानुष धरखैहैं वही को कहते हैं ॥

नित्य नई कमेटियां हुआ करती हैं उन के खर्च का भार भी हिन्दुस्तान ही पर पड़ता है अफीम भांग गांजा इत्यादि बीसों किस्म के कमीशन विलाइत से चले हैं–हम पूछते हैं बिलाइत की हद्द दरजे को पहुंची हुई शराबखोरी से ज़ियादह नुकसान अफीम गांजा कर सक्ता है—सच तो यों है कि अंगरेज़ी राज्य की ईजाद शराबखोरी का नया सबक सीख हिन्दुस्तान की प्रजा जैसी बिगड़ गई और उन की "मुरालिटी" में जैसा अन्तर पड़ गया वैसा अफीम चरस और भांग गांजा की बदौलत नहीं हुआ था–मुसल्मानों के शरा में शराबखोरी की अज़हद्द मनाही है हिन्दुओं के शास्त्र में यह पंच महापातक में एक महापाप समझा गया है—जिन ब्राह्मणों के लिये धर्मशास्त्र में यह लिखा है कि शराब में भींजी ठिकरी रास्ते में भूल से कुचल जाय तो सचैल स्नान करै उन्ही के सन्तान अब इस नई रोशनी के प्रकाश में प्याले पर प्याला ढर काया करते हैं तो अब बतलाइये यह बुराई उन्हे किसने सिखलाया–गवर्नमेंट भांग गांजा को रोकने की इतनी व्यर्थ फिकिर कर रही है जिस्से हमारा कोई बड़ा फाइदा नहीं है गोवध रोकने के लिये चिल्लाते २ गला फटा जाता है आज तक इस ओर कभी सपने में भी किसी का ध्यान न गया जिस्में भांग गांजा की आपेक्षा हमारा सौगुना अधिक फाइदा है—अस्तु यह सब ढकोसला भी हम खुशी से मंजूर करते यदि भांग गांजा या अफीम के उठा देने से जो सर्कार को घाटा होने वाला है वह किसी दूसरे बहाने हम से न वसूल किया जाता–

सब जानते हैं बट्टे की कसर केवल विलाइती अंगरेज़ों के लिये रक्खी गई है किन्तु इस्का दांवा करने के हक़्क़दार न जानिये कितने हिन्दुस्तानी अंगरेज़ भी बिलाइती बन जांयगे यहां तक कि काले कोइला से मिस्टर चमरू तक ठेठ बिलाइती बन जांयगे–फिर ये हिन्दुस्तानी अंगरेज़ ऐसे उद्यमी हैं कि जो इन की सी न करे तो तुरन्त बिगड़ जाते हैं–लार्डरिपन के समय ये ही महात्मा लोग धमकाते थे कि जो हिन्दुस्तानियों को हमारे मुकद्दमों के फैसला करने का अधिकार दिया गया तो हम राज्य ही उलट देंगे इलबर्ट बिल के आन्दोलन को कौन भूल सक्ता है—बस तब से जो कोई नया लाट आता है वह सदा

इन से डरता ही रहता है और जो ये चाहते हैं उसे करना ही पड़ता है—किसी २ समाचारपत्रों ने बतौर अफवाह के यह भी छाप दिया कि जो कोई लाट होकर जाय उसे चाहिये कि कानग्रेस वालों से मेल पैदा करे फौज का खर्च घटावे इत्यादि इत्यादि—अब आप समझ सक्ते हैं ऐसे नाज़ुक वख्त में हिन्दुस्तान की लाटागीरी पर आना साधारण बुद्धि वालेका काम नहीं है जहां खर्च आमदनी से बढ़ा हुआ है और आगे को भी आमदनी में घटती और खर्च की बढ़ती ही देख पड़ती है तिसपर ऐसी भारी लड़ाई का डर सिर पर सदा सवार रहता है—यदि कोई नया टैक्स लगाया जाता है तो बिलाइती माल पर टैक्स लगी नहीं सक्ता हिन्दुस्तान के लोगों में अब इतनी समाई न रह गई कि नया टिक्कस लग सके—अस्तु लार्ड एलगिन इस पद पर नियत हुये हैं आशा है उक्त महोदय इस पद के लिये सब भांत उपयुक्त हो सकैंगे और इन से हिन्दुस्तान को चाहिये तो अवश्य लाभ पहुंचे क्योंकि एक तो यह लिबरल दल के हैं दूसरे पायोनियर इन के कुछ प्रतिकूल मालूम होता है. और पायोनियर का प्रतिकूल होना इस बात का पक्का सबूत है कि यह अपने उदारभावके कारण बिलाइत वालों का पक्षपात न करैंगे और पक्षपात का न होना ही हिन्दुस्तान की सच्ची भलाई का बाइस हो सक्ता है—अस्तु—"किन्नः खिन्नं गवां प्रहरणे यः प्रभवति स एव धनंजयः"—कोई तो इस देश की आतुरदशा में शरण देने वाला भाई का लाल उठ खड़ाहो—आशा है इन का शुभागमन इंडिया के लिये हिमनिर्मुक्त चैत्र की पूर्णिमा के चन्द्रमा का चित्रानक्षत्र के योग के समान शोभा का बढ़ाने वाला होगा—

काप्यभिख्यातयोरासीद्व्रजतः शुद्धवेषयोः ।
हिमनिर्मुक्तयोर्योगे चित्राचन्द्रमसोरिव ॥

समझदारी बेइलाज मर्ज़ है ॥

बड़े २ हकीम वैद्य और डाक्टरोंने अपने २ क्रमके अनुसार कोई ऐसा रोग नहीं है जिस्की दवा उन्हों ने न निकाला हो पर समझदारी यह एक ऐसा असाध्यरोग है कि इस्की दवा कहीं किसी तिब्ब में हुई नहीं कदाचित् नये लुकमान फिर से पैदा हो इस्की कोई दवा निकालैं भी तो यह अपने मरीज़ों

पर ऐसी मज़बूती के साथ जगह किये हुये है कि किसी तरह दूर होने वाली नहीं है—इस असाध्यरोग के बहुत से आदि कारण हैं जिन्में दो चार यहां पर हम आप को बतलाये देते हैं—बहुत पढ़ने से; जो समझदारी की बीमारी में मुबतिला हैं उन का साथ करने से; उन की बात सुनने से; देश विदेश घूमने, हर एक मज़हब और किस्म के आदमियों का साथ करने से, पढ़े लिखे लोगों के साथ अत्यन्त घिटपिट होने से—कितने संक्रामक रोग हैं कि सम्पर्क से बढ़ते हैं पर इस समझदारी के असाध्य रोग में यह असर नहीं पाया जाता—नासमझ जो इस महाव्याधि से बचे हुये हैं उनका सम्पर्क कर हम बहुत चाहते हैं कि यह भूत उन पर भी सवार होजाता किन्तु "यत्पठितं तद्गुरवे समर्पितं" की भांत अन्त को यह समूची की समूची फिर हमारे पास लौट आती है क्या इसकानकी एक ज़र्रा भी समझदारी का उन में बाक़ी रहता—यह बीमारी पहिले भी किसी को होती रही हो ठीक पता नहीं लगता विशेष फैलाव इसका अंगरेज़ी तालीम के ज़माने में हुआ है और अब तो इसका ज़ोर नित्य २ बढ़ता ही जाता है—हे भगवान् देश का देश जब इस रोग का रोगी हो जायगा तो क्या हाल होगा—बड़ी बात है कि हमी अकेले इस व्याधि से पीड़ित नहीं हैं बरन कई लाख मनुष्य इस मर्ज़ में मुबतिला पड़े २ कराह रहे हैं—उचित था कि जो इस बीमारी के हमले से बचे हैं वे रोगग्रस्त हम सबों पर हमदर्दी के खयाल से दया मन में लाते और हमारा इलाज करते सो न जानिये कहां का बैर ठान रक्खा है कि इलाज की कौन कहे हमारी हवा बरकाते हैं हम से घिनाते हैं—अस्तु हम कह चुके हैं कि यह बेइलाज मर्ज़ है इलाज तो इस का कुछ हई नहीं तो अब केवल पथ्य से रहना ही इस रोग से बचने का उपाय है—"पथ्ये सति दार्तस्यगकिमौषधि निवेषणैः"—लो पथ्य सुनो—काहिली और कमहिम्मती को गठरी में बांध सिर पर धर लो, उजड्डपन और जेहालत का जुआ सदा कन्धे पर धरे रहा करो, खबरदार उकता कर इस बोझ को कन्धे से उतार फेंक न देना नहीं तो हमारी सी बीमारी में तुम भी चट फंस जाओगे तब आवनूस का कुन्देसा तुम्हारा यह डील डौल फिर किसी काम का न रहेगा—बड़ी भारी बात पथ्य की तुम्हे यह बतलाते हैं कि पुरानी अकिलवाले सत्तर बरस के बुड्ढों के कहने के बार बराबर इधर उधर न टसको नहीं तो तुम्हारी सब तनदुरुस्ती

सटक देगी—पहले हम क्या थे और अब क्यों ऐसे होगये ऐसी २ न जानिये कितनी फिकिर और चिन्ता तुम्हें घर दाबेगी जिस्के बोझ से चूर २ हो किसी काम के न रहोगे—और सुनो घर में बैठे २ चीत्कारध्वनिपूर्वक खुरखुन्द किया करो देहली के बाहर पांव निकला कि धरम गया—धन सब समुद्रपार ढोया चला जाता है कुछ परवाह नहीं संसार भर के गुरु उपदेष्टा परमाचार्य बने बैठे २ गद्दी पुजवाते थे अब ज़रा २ सी बात के लिये चेले दरचेले बनते हो कोई शरम और हिजाब मन में लाने का काम नहीं है—सभ्यता के शिरमौर मनुष्यमात्र को सभ्यता सिखलाने के घमण्ड में फूले नहीं समाते थे अब नितान्त असभ्य अर्द्धशिक्षित दुनियां की सब कौम में तुम्हारा नम्बर आखिरी समझा जाता है तो इस में दुःख और विषाद करने का क्या काम धरम तो बचा है बिहिश्त जाने की सीढ़ी तो कहीं से नहीं सिकश्त होने पाई—इत्यादि अनेक पश्चाचार की बात हैं आज थोड़ी सी इस लिये बतलाया कि निरापथ्य भी बिना रोग का रोग हो जाता है—

यहां के छोटे लाटसाहब की कौंसिल का इन्तिखाब ॥

इलाहाबाद ग्रूप की म्युनिसिपलिटी जिस्में इलाहाबाद बनारस कानपूर गोरखपूर मथुरा इन ५ शहरों की म्युनिसिपलिटी शामिल है उस्में बनारस के बाबूराम काली चौधरी के इस्तीफा देने से एक जगह खाली हुई थी इस जगह के लिये न सिर्फ म्युनिसिपल मेम्बर ही कोशिश कर रहे थे बल्कि बाहर के लोग भी—पहले इस्के कि हम इस इन्तिखाब के बारे में कुछ अपनी राय ज़ाहिर करें हमें यह कहना अवश्य है कि यह म्युनिसिपल एलेक्शन है इसलिये इस्में उसी का होना उचित था जो म्युनिसिपल मेम्बर हो और उस्का काम शुद्ध चित्त से करता हो किसी तरह की खुदगरज़ीन रखता हो—ऐसे मनुष्य के लिये इस तरह के ऊंचे पद पाने का प्रोत्सहन जब तक न दिया जायगा तब तक गवर्नमेंट का वह मतलब सिद्ध न होगा कि इस्में लायक से लायक आदमी किये जांय—इस पद के पाने की प्रतिष्ठा सर्कार ने म्युनिसिपल मेम्बरों को इसी लिये दिया है कि जिस में सच्चे ईमानदार लोग म्युनिसिपलिटी के

मेम्बर होसकैं और यह म्युनिसिपल इन्तिखाब जो अभी तक एक प्रकार फार्स या तमाशा प्रतिवर्ष हर एक शहरों में किया जाता है उसमें कुछ बेहतरी और तरक्की हो—इसमें कोई सन्देह नहीं "लेजिसलेटिवकौंसिल" कानून बनाने वाली सभा में सर्वसाधारण के हित के बहुत से ज़रूरी काम करना पड़ता है तो समाज में ज़ोर रखने वाला सर्वसंमत वही हो सक्ता है जिसने म्युनिसिपल मेम्बरी में अपना बहुतसा समय नष्ट किया हो और अपने परिश्रम से सबों को निश्चय करा दिया हो कि यह अवश्यमेव हमारे हित की बात सोचैगा—हमारे देश के विद्वान् और सुयोग्य लोग यदि कौंसिल में कुरसी पाने का हौसिला रखते हों तो म्युनिसिपलिटी में जहां ऐसों की बड़ी आवश्यकता है क्यों न उसमें शरीक होने के लिये अग्रसर हों—लार्डरिपन महोदय जिन्होंने आत्मशासनप्रणाली की जड़ यहां कायम करना चाहा और म्युनिसिपलिटी को इसकी पहिली सीढ़ी समझा उनका यही प्रयोजन था कि इसमें सब से अधिक सुयोग्य लोग हुआ करें—अस्तु हम बड़े हर्ष के साथ प्रकाश करते हैं कि बाबू चारुचन्द्र मित्र जो इलाहाबाद म्युनिसिपलिटी में पक्षपातरहित और स्वच्छन्दता के साथ काम करते हैं कान-ग्रेस तथा सर्वसाधारण की भलाई के दूसरे २ काम में बहुत तत्पर रहते हैं इस पद के लिये चुन दिये गये—इस अधिकारके पाने के लिये हौसिला रखने वालों को उचित है कि वे भी उक्त बाबू साहब के समान सर्वहित के काम में तत्पर रहैं केवल रुपया जमा करना अपने जीवन का सारांश न समझैं जिसमें ऐसे मौकों पर उन के लिये भी सब लोग वैसा ही हर्ष प्रकाश करैं—सच है सब लोगों में पूज्य और महत्तर मनुष्य केवल रुपये से नहीं होता बरन वह जिसके चित्त में आत्मत्याग का वसूल जगह किये हुये हैं और जो दूसरे के लाभके मु-काबिले निजके लाभ को अधिक आदर न देता हो—"एके सत्पुरुषाः परार्थघ-टकाः स्वार्थं परित्यज्यये„ अपना महत्व सबी चाहते हैं पर दूसरे के महत्व से अपना महत्व संपादन करने वाले विरले हैं —

सरसैयद और उन के अनुयायी ॥

हम लोग समझते थे कि सरआकलैंड कालविन के बाद सैयद साहब अपनी नासमझी पर पछताय अब सदा के लिये चुप रहैंगे और पेट्रियाटिक एसो-सियेशन जिसे ऐंटीपेट्रियाटिक एसोसियेशन कहने में कोई पाप नहीं है उसके

टूटफूट जाने से वे और उन के अनुयायी शरमांयगे और कानग्रेस जिस्की पताका इतना विरोध करने पर भी फहरा रही है उस्के विरुद्ध कुछ कहने का साहस न करैंगे—हाल में मन्दराज का हिन्दूनामक समचारपत्र जिसने भूल से यह लिख दिया था कि सैयद साहब के खयाल अब बदल गये हैं और कानग्रेस के अनुकूल होगये हैं इस्के खण्डन का जवाब उन्हैं उचित था उसी पत्र में छपवा देते न कि उस पत्र में जो हिन्दुस्तानियों से बराबर बैरभाव रखता चला आया है और उन के सुयोग्य पुत्र मिस्टर महमूद पर भी आक्षेप करने से नहीं चूका—पायोनियर में उन का यह लिखना कि बजरिये इन्तिखाब के कौंसिल के मेम्बरों का चुने जाना और सिविलसरबिस का इमतिहान हिन्दुस्तान में होना मुसल्मानों को तलवार मियान के बाहर कर लेने का बाइस होगा—यह लिखना न तो उन के अनुयायिओं के प्रति उनका शुद्धभाव प्रकट करता है न गवर्नमेंट की ओर राजभक्ति इस्से झलकती है—उस समय यह तलवार कहां चली गई थी जब कि मरहठों ने दिल्ली के बादशाहको तखतसे उतार दिया था हम हिन्दु बिचारे तो तब भी वशंवद प्रजा थे अब भी हैं—सैयद साहब की इस झूठी बनावटी राजभक्ति से और बरन के हाकिमों के खुश करने से मुसल्मानों को साधारण तौर पर कोई लाभ नहीं है हां! उन के खानदान वालों को दो एक ओहदे अलबत्ता चाहो मिल जांय—सैयद साहब स्वयं बड़े विद्वान् और राजनीति में कुशल हैं बहुत से राजनैतिक इतिहास पढ़ा होगा यह तो उन्हें अवश्य मालूम रहना चाहिये कि अंगरेज़ी गवर्नमेंट की नसर में आज़ादी भरी हुई है वह प्रतिनिधि शासन को जैसा पसन्द करती है वैसा "मानरकी" एकाधिपत्य को नहीं—सैयद साहब ने मेकाले की स्पीचों को अवश्य पढ़ा होगा जिस्में मेकाले ने यह साफ काहा है कि हम हिन्दुस्तान में इसलिये नहीं आये कि खुद इस्की हुकूमत करैं बरन यहां वालों को यह सिखलावें कि वे अपने मुल्क का इन्तिज़ाम आप करने लायक हो जांय—वह समय गवर्नमेंट को बड़े हर्ष का होगा जब कि हिन्दुस्तान की गिरी हुई कौंम में वह फिर से कौमीयत और प्रभुत्वशक्ति कायम कर सकेगी—क्या अकबर को सैयद कीसी लियाकत न थी हिन्दुओं को उन्हीं ने बड़े से बड़े सब तरह के ओहदे दिये और कई पुश्त तक यहां मुगलानी सलतनत हिन्दूराजाओं ही की बदौलत कायम रही इनकेसे सलाहकार अकबर के उस समय एक भी होते तो वह सुयश जो

उन्हों ने हिन्दू तथा मुसल्मानों पर समभाव रखने से पाया काहे को कभी पासक्ते—यह कहना कि मुसल्मान अभी लायक नहीं हुये जब तक ये लायक न होजांय तब तक गवर्नमेंट इन्तिखाब के ज़रिये कौंसिल के मेम्बरी का दस्तूर या सिविल सरविस की परीक्षा यहां न जारी करे सैयद सरीखे दूरदर्शी को शोभा नहीं देता—गवर्नमेंट हिन्दू और मुसल्मान दोनों को एकसी तालीम दे रही है बल्कि मुसल्मानों के साथ कभी २ बहुत बातों में रियायत भी कर देती है और दोनों के लिये तालीम का ज़माना एक साथ शुरू हुआ है तब मुसल्मान तअस्सुब मज़हबी कैद और काहिली के कारण पीछे हटे रहें और लायक न बनें तो इस्में किस्का कुसूर है—मुसल्मान यहां जिस लायक और जितने हैं गवर्नमेंट उस्से बहुत अधिक उन के लिये कर रही है तब सैयद साहब को गवर्नमेंट के पक्ष में किसी तरह की त्रुटि निकालना सब तरह पर नासमझी है—ब्रिटिशशासन की कृपा से जब कि हम और वे दोनों एक से कर दिये गये हैं ऐसे समय शस्त्र का ज़ोर दिखलाना निरी हिमाकत है—सैयद सरीखे बुद्धिमानों को किसी तरह शोभा नहीं देता न इस्में उन की कौम का कुछ हित है—अंगरेज़ी राज्य के उदारशासन में जब केवल योग्यता और लियाकत प्रतिष्ठा और उच्चपद पर पहुंचने का द्वार सब के लिये एकसा खोल दिया गया है ऐसे समय निरी खुशामद के लेख लिखने से कोई बड़ा लाभ नहीं है—"गुणाः प्रियत्वेधिकृता न संस्तवः„

तपसीधनवन्तदरिद्रगृही

तपसियों का धनवन्त होना अचरज क्या है यह तो प्रसिद्ध ही है "व्यापारे वसते लक्ष्मी„ व्यापार में लक्ष्मी जी रहती हैं—केवल व्यापर ही पर क्या चली है—आदमी जिस काम को मुस्तैदी से करेगा उसी में फाइदा उठाय धनीपात्र होगा चाहो वह काम या व्यापार किसी किस्म का हो—शास्त्रकारों ने धीरवीर पुरुषों के लिये चार काम बतलाये हैं—

बोहितं चाश्ववाणिज्यं राजसेवा तपस्तथा ।
धीराश्चत्वारि कुर्वन्ति कृषिं कुर्वन्ति कातराः ॥

बोहित अर्थात् जहाज चलाना घोड़े आदि पदार्थों की सौदागरी राजकाज की नौकरी किसी अच्छे स्थान में बैठ तप करना यही चार काम धीर बीर चतुर

सयाने करते हैं—और इन चारों काम के करने वाले पुरुषों में जिनका दरजा नीचा हुआ वे बेचारे खेती करते हैं—और उन से भी गये बीते लोग प्रकारान्तर से भीख मांगते फिरते हैं—कितने लोग झोरी बांध साधारण जनों में याचना किया करते हैं कोई यजमानों के घर २ " तैं दै देतं मैं लै लेतं तोर कल्याण होतं " इत्यादि शुद्ध संकल्पों के द्वारा दूसरों के हाथ के नीचे अपना हाथ किया करते हैं जिस्की जघन्यता इस विश्वविख्यात शिक्षा से प्रकट है—

तुलसी करपर करकरो करतल कर न करो !
जादिन करतल कर करो तादिन मरन करो ॥

तुलसीदास के इस कथन से स्पष्ट है कि दान लेने से मरना अच्छा है दाता का दहिना हाथ सदैव ऊचा और प्रतिग्रहीता का दहिना हाथ सदा नीचे रहता है—पूर्वकाल में उच्चश्रेणी के श्रेष्ठ कुलीन ब्राह्मण दान नहीं लेते थे इसी लिये वे विप्रवर या श्रेष्ठ नामधारी द्विजमुख्य या प्रधान विप्र कहलाये—दान लेने की जघन्यता हम कई बार कई तरह पर दिखला चुके हैं इस्में कोई सन्देह नहीं जो ब्राह्मण दान लेने की अधम वृत्ति से बच कोई दूसरी वृत्ति से अपना काल-क्षेप करता हो ब्राह्मणों में उस्के बराबर धन्य दूसरा नहीं है—

हमारे देश में इन कदर्य मंगताओं के जुदे २ ढंग और उन के अनेक भेद हैं सच तो यों है कि यहां कुल आबादी का चौथाई हिस्सा ऐसा है जो कुछ उद्यम या व्यवसाय नहीं करते बिना मेहनत केवल दूसरे का धन खाकर जीवन पार करते हैं—मरने से भी अधिक निकृष्ट मांगने को अपनी बपौती और मीरास मान रक्खा है ॥

गात्रभंगस्वरो दीनो गात्रस्वेदो महद्भयम् ।
मरणे यानि चिह्नानि तानि चिह्नानि याचके ॥

यह मंगतावृत्ति जो समझदार के लिये मरण से भी अधिक कष्टदायक है उसी की बदौलत यहां कई एक फिरके के लोग ऐसे हैं जो लखपती करोड़पती बने बैठे हैं—सम्पत्ति और वैभव में छोटे मोटे राजा और तअल्लुकेदारों को मात किये हैं जो विद्या गुणके शत्रु हैं और देशमें जितनी किस्मकी आवारगी बुराई और कुसंस्कार फैल रहे हैं सब के सिखलाने वाले महामहोपाध्याय और

बानी मुबानी हैं—जैसे गृहस्थों में गोसाईं मन्दिरों के पुजेरी और तीर्थ के संडमुसंड पगडे—विरक्तों में मठधारी महन्त निर्मले उदासी वैरागी बाबा लोग-कातरातिकातर ब्राह्मण और बीरातिबीर इन महात्मा बाबाओं की वृत्ति को मिला के देखते हैं तो इन दोनों में बड़ा अन्तर पाया जात है—ब्राह्मण लोग कहां तक कदर्य और पराधीन होगये हैं वहीं बाबा लोग कहां तक परम स्वाधीन और शीनेज़ोरी से दूसरे का धन पुजा रहे हैं—बाबा जी महाराज आनन्द से गद्दी लगाये पान की बीड़ी मुह में दबाये माला फेरते बैठे रहते हैं जिस्का जी चाहे जाय दंडवत करे प्रार्थना पूर्वक कहे महाराज अमुक पदार्थ लायाहूं मंजूर कर लिया जाय—बाबा जी पहले तो थोड़ी देर तक उस्की ओर ताकैं गे फिर मुसकिरा कर बोलैं गे अच्छा लाया हो तो तेरी खुशी रूघुणाथ जी के आगे रख दे जैसा कि राजाओं के सामने प्रजा का नजराना और भेट रक्खी जाती है—अब ब्राह्मणों के कदर्य ढंग को देखिये रर्राओं की भीर में बड़े कुलीन भी दो२ पैसे के लिये धक्के खाना देने वाले की डांट डपट सहना मानो उन के लिये ब्राह्मणता की शोभा और कुलाभिमान की सीमा है—किसी ने पसर भर अन्न या एक सीधा देने कहा आप अंगोछा या चादर बिछाय काक चेष्टा से उस ओर ताकने लगैं गे बार २ इसलिये देखैं गे कि दक्षिणा समेत सीधा लाया है या विना दक्षिणा के—कहीं सांगोपांग सीधा और उचित दक्षिणा भी उस्के साथ हुई तो देवता जी का जी गल गल होगया मारे आनन्द के सीधा बान्धते नहीं बनता सीधा लाभ के ब्रह्मानन्द में बार २ गाठ देते हैं छुट २ जाती है यदि कहीं उस सीधा में चूनकी जगह चोकर कदन्न मिलाहुआ सड़ागला अन्न विना दक्षिणा के लाया तो देखते ही मुह सूख गया—जी तो कुढ़ गया पर ऊपर से जिजमान की खुशामद नहीं करते तो आगे को उतने से भी हाथ धो बैठते हैं बोले—"अन्नदाता आप हमारे माई बाप अहन् यह तन आप ही के अन्न का पोखा है,,—मन में दुष्ट अधम कृपिण कहते हुये बाहर निकले सीधा लेतेही मानो सम्पूर्ण शरीर का तेज हत होगया जी में कुछ ग्लानि भी आई कि यह अधम वृत्ति छूट जाती तो अच्छा था किन्तु आतुर अवस्था के ज्ञान के समान सच्चा वैराग्य न आया नित्य का यही रामरसरा ठहरा चिरस्थायी वैराग्य को मन में स्थानदें तो गुजारा कैसे हो विद्या या किसी उत्कृष्ट गुण का लेश नहीं

न किसी तरह का पुरुषार्थ करने लायक हैं विरक्त बन बैठें तो पेट भी न पलै किसी कवि की उक्ति है—

वयं नो ते विप्राः प्रतिसादनमासाद्य कृपणाः ।
कणान्ये याचन्ते गतिभणितनक्षत्रतिथयः ॥

इसमें सन्देह नहीं ब्राह्मणों ने अपनी स्वच्छन्द निस्पृह गौरवास्पदवृत्ति को लात मार निपट लोभी हो जघन्याचार वाली निकृष्टतर भिक्षुकीवृत्ति को शिर-की कलंगी बनाय निपट गये बीते किसी काम ही के न रहे—

नित्यं प्रसारितकरो दक्षिणाशाप्रसादकः ।
न केवलमनेनैव दिवसोपि तनूकृतः ॥

और अब यह भिक्षुकीवृत्ति जिस में बिना हाथ पांव हिलाये खातिरखाह गुलछर्रे उड़ाने को उन्हे काफी से ज़ियादह मिलता है उसे छोड़ क्यों विद्या गुण के लिये व्यर्थ माथा दुखायें और मेहनत की आदत के फन्दे में पड़ शरीर को क्लेश दें-तुम अपने घर बैठे इन्हे कदर्य कह दांत किरते हुये पछताया करो-"कृपा भई भगवान् की भर२ लोटे भङ्ग-

हमारे लिये यही जितनी योग्यता और लियाकत सबका निचोड़है हमारी भीख हमे मिलती रहेगी तब हमे परवाह क्या है एक भिक्षा भवानी हाथ पकड़े रहैं बस हो गया—इसी से हम कहते हैं—"तपसी धनवन्त दरिद्र गृही"—

चलन ।

चलन—बाज़ार—न पैसा घाट न पैसा बाढ—चोखा माल चोखा दाम—मोल तोल का क्या काम—चलन—सिक्के की—बादशाह हुमायूं के वक्त में सक्के ने चाम की चकती चला दिया था—

चलन—हुण्डी की—दरसनी देखते ही रुपया गिन दो नहीं दिवाला—जिन की हुण्डी में बट्टा उन की बात में बट्टा—मुद्दती है मिती पुजने पर चुकती न हुई डिगमिगाने—तकाज़े पर तकाज़ा एक, दो, तीन—ब बोल गये साख गई टके को कोई नहीं पूछता कौड़ी के तीन तीन—

चलन—भलमनसाहत की—बात के धनी—"प्राण जाहिं बरु वचन न जाहीं"—

"विदुषां वचनाद्वाचः सहसा यान्ति नो बहिः ।
याता अपि न यान्ति द्विरदानां रदाइव"—

चलन—टुच्चों की—तुम से तुम्हारी सी उन से उन की सी—मुह में राम राम पेट में कमाई का काम—ऐसा काटैं कि लहर न आवै—

"अहो खलभुजङ्गस्य विचित्रोयं वधक्रमः ।
अन्यस्य दशति श्रात्रमन्यः प्राणैर्वियुज्यते" ॥

चलन—कुलाङ्गनाओं की—

गतागतैकुतूहलं नयनयोरपांगावधिस्मितं—
कुलनतभ्रुवामधर एव विश्राम्यति ।
वचः प्रियतमश्रुतेरतिथिरेव कोपक्रमः—
कदाचिदपि चेतदा मनसि केवलं मज्जति ।

गङ्गा भी चाहती हैं कि सती, सावित्री, कुलवती कब आकर हमारे में न्हाय, हमें पवित्र करेगी—"अपि मां पावयेत् साध्वी स्नात्वेतीच्छति जाह्नवी"—भारत में अभी बहुत ऐसी पड़ी हैं उन्ही के पुण्य से देश थमा है—

चलन—व्यभिचारिणी कुलटाओं की—"मैं व्यभिचारिन जनम की, जरा अवस्था लीन । तू दुलही कलिकाल की सुरसरि दूती कीन ॥

अतिविनयवामनतनुर्विलंघ्यते गेहदेहलीनवधूः ।
अस्याः पुनरारभटी कुसुम्भवाटी विजानाति ॥
एते वारिकणान् किरन्ति पुरुषान् वर्षन्ति नाम्भोधराः ।
शैलाः शाद्वलमुद्वहन्ति न सृजन्त्येते पुनर्नायकान् ॥
त्रैलोक्ये तरवः फलानि सुवते नैवारभन्ते जनान् ।
धातः कातर मालपामि कुलटा हेतोस्त्वया किं कृतम् ॥
"सुखशय्यास्ताम्बूलं विश्रब्धालापचुम्बना—
दीनि । गणयन्ति न लक्षाशं त्वरितक्षणचौर्यसुरतस्य"

ईश्वर इन के फन्दे से बचावे—

चलन—हिन्दुस्तान के वीर बांकुरे क्षत्रियों की—"क्षात्रधर्म की थाप—रखना अपना परताप—बाहों आगे आवै बाप—तबहू चाप खैंचना—"

चलन–पुराने समय की महाजनी और पुराने समय के लेन देन की–केवल बात पर हज़ारों का लेन देन होता था न स्टैम्प का कुछ काम था न अदालत में कोई जाता था हाथ को हाथ पहचानता था–बाप करज़ा छोड़ जाता था तो बेटा उसको पहिले ऋण से उद्धार कर तब गया करता था–अब कानून ने कितनी हिन्दी की चिन्दी निकाल रक्खा है कि बिना अदालत गये करज़ा वसूल होता ही नहीं न लेने वाले की नीयत दुरुस्त न देने वाले की–

चलन–आज कल के अंगरेज़ी पढ़ों का–चाहो दस रुपये पर भी उन्हें कोई न पूछे पर ठाठ बास कमती न रहे–मसल है–सोवैं भुसौले में सपना देखैं लाख टके का–

चलन–केरानी गीरी की–पिसना पीसते २ सुबह से सांझ तक में दम मारने की फुरसत नहीं फिर भी काम की कसरत न मिटी–इञ्जिनड्राइवर तो इञ्जिन ठिकाने से पहुंचा निश्चिन्त हो जाता है कुलडड्राइवर को वे फिकिरी कहां जबाब दिही प्रतिक्षण सिर पर सवार–"सेवा धर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः"–

चलन–हमारे हिन्दुस्तानी साहब लोगों की दिमाग परियों का शकल चुड़ैलों की–"दासस्य दासस्य च दासदासः„–"कूकर के चूकर चूकर के पेशकार„ शकल तमाखू के पिंडे की सी–ऐठन आतशबाजियों में जैसा मुर्रा––रहन सहन बोल चाल में मानो टटके अहल विलाइती अभी जहाज से उतरे हैं–काली सूरत पर काला कोट काला बूट काला पतलून मुह में फलीता सिर पर हैट–मानो सिर पर फ्रौआ औंधाये राजा इन्दर की सभा का कालादेव––रूप माधुरी पर कोटि कन्दर्प न्यौछावर हैं–लियाकत में दूसरे लाटसाहब कुलीनता में सूर्य और चन्द्रमा के सदृश विमल और उज्ज्वल–

"सन्ततिः शुद्धवश्या हि परत्रेह च शर्मणे"

चलन–हमारे नादिहन्द मुत्फखोरों की–बरसों तक पत्र पढ़ते रहे दाम देने के समय निबुआ नोन–ऐसे नराधम किस लिये जन्में खेद है–

चलन––कुटिल कुढंग खलों में सरल सुपात्र सज्जन की–"जिमि दशनन बिच जीभ बिचारी"

चलन–हमारी–नख से सिख तक रुखाई का जामा पहने हुये–बहुत चाहते हैं लोकरंजन में प्रवीण हों–"घी खाहिये शक्कर से दुनियां ठगिये शक्कर

से"—बिना कुछ नोन मिर्च मिलाये जायका नहीं आता पर क्या करें बुरी आदत छुटाये नहीं छुटती—"जाको जौन सुभाव जाय नहिं जी से—नीम न मीठी होय सींच गुड़ घीसे"—देखते हैं तुम सरासर अन्याय और अनुचित कर रहे हो चाहिये कि हम भी तुम्हारी हां में हां मिलाय अपना मतलब गाठैं तुम्हें यदि टोंक देंगे या तुम्हें रूखी सुनावैं गे तो तुम क्यों हम से खुश होगे "अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः"—

चलन—हमारे देश की अन्धी गूंगी बहिरी प्रजा का—वे मुह बोलना जानते ही नहीं चाहो इन्हें जितना दबाओ दबते जांयगे अधिक सताओगे भीतर ही भीतर मसोस के रह जांयगे आह भरना या काखना गुनह है—किसी ने इन पर कुछ थोड़ी दया कर दिया निहाल हो गये फूले नहीं समाते—इन का हक़ इन्हें समूचे का समूचा मिल जाता सो तो कभी सम्भव नहीं है एक की जगह आधा और तिहाई भी मिल जाय तो ये उतने ही से प्रसन्न हैं—आधे पेट भी खाने को मिलता रहे तो उतने ही से सन्तुष्ट पेट भर खाने को कभी न मागेंगे—सबर इतना कि गम खाकर पेट भर लेते हैं अन्न की परवाह नहीं करते—क्षमाशील ऐसे कि बदला चुकाना सीखा ही नहीं कितना ही कहो कितना ही जगाओ तबियत में जोश कभी जगह करे ही गा नहीं—

चलन—प्रेम की—"है इतलाल कपोत व्रत कठिन प्रेम की चाल। मुखसों आह न भाखि हैं निज सुख करो हलाल"—

चलन—हमारी अन्धी समाज की—सब तरह पर यह निश्चय करा दिया गया है कि जो चलन हमारी समाज का इस समय है हर तरह पर आर्य जाति की कमजोरी को दिन २ बढ़ा रहा है इसे छोड़ो और अब आगे को समझ के चलो जिसमें भला हो बहुत सो चुके अब जागो आंख खोलो अन्धे बने रहने से काम न चलेगा—एक बात भी मन में नहीं धसती—

चलन—कृतघ्न नाशुकरों की—

"यश्च निम्बं परशुना यश्चैनं मधुसर्पिषा।
यश्चैनं गन्धमालाभ्यां सर्वस्य कटुरेव सः"—

चाहो अपना सिर काट के रख दो पर एहसान फरामोश कभी खयाल न करेगा—"कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः"—भले मानुष सिर से तिन का टार देने के भी

इतने एहसानमन्द होते हैं मानो लाखों रुपया उन्हें दिया गया—किन्तु अपना स्वार्थमात्र का मित्र कृतघ्न दबाने पर चाहो जितना गिड़गिड़ाय और चारदासी करे पर पीछे से दुश्मनी ही करेगा—

सन्तस्तृणोत्तारणमुत्तमाङ्गात्सुवर्णकोट्यर्पणमामनन्ति ।
प्राणव्ययेनापि कृतोपकाराः खलाः परं वैरमिवोद्वहन्ति ॥

अचरज है ऐसे विश्वासघातक का बोझ पृथ्वी क्योंकर सहारे हुये है—

"उपकारिणि विश्वस्ते शुद्धमतौ यः संचरति पापम्—
तं जनमसत्यसन्धं वसुधे देवि कथं वहसि" ।

चलन—कृपणकदर्य लोभियों की—"चमड़ी जाय दमड़ी न जाय"—बात जाय पत जाय निन्दा हो कहां तक कहैं जान तक चली जाय बला से धन पास का न जाय "अर्थोस्तु नः केवलम्" किं बहुना ऐसे बद्धमुष्टि अर्थ पिशाचों के ढंग और सिद्धान्त ही निराले हैं समझ निराली है सारांश यह कि ये एक निराली दुनियां के जानवर हैं—हम ने एक रास्ता दिखला दिया जो बच गये हों उन के भी चलन का पता लगालो—

चलन की गुलामी ।

चलन भी क्या ही एक अजीब ढर्रा है चाल जो चल पड़ी सो चल पड़ी किस्की सामर्थि जो चलन के प्रवाह को रोक सकै एक नहीं लाख२ वेद की ऋचायें हज़ार२ पुराण के उपदेश सौ२ कुरान की आयतें चलन के विरोध में प्रमाण दिये जांय पुराने इतिहास और तवारीखों में से छांट २ दृष्टान्त और नज़ीरें इस के लिये दिखलाई जांय कि यह चलन या रिवाज जिस की गुलामी में तुम फसे हो हर तरह पर बेजां और तुम्हारी भूल है इस तरह की गुलामी में सिवाय हानि के लाभ कोई नहीं है पर चलन के प्रबलप्रवाह में बहे सो बहे काहे को रोके रुक सकते हैं—यद्यपि इस चलन की गुलामी से कोई देश और कोई जाति बची नहीं है किन्तु जो देश अपनी उन्नति की दशा में है और जो जाति नित्य२ तरक्की कर रही है वहां यह चलन फेशन में दाखिल कर ली गई है खूबसूरती नफासत और सभ्यता का श्रेष्ठ अंग समझी जाती है—बड़े से बड़े ओहदेदार प्रतिष्ठित खानदानी लार्ड और डूक तक की मेम भरी

मजलिस में बंदरिया के समान परप्रति के साथ उछलती कूदती हैं हम लोगों के नेत्रों को महाअसह्य और अप्रिय मालूम होता है पर वहां यह सभ्यता की एक उमदा बानगी है और ताण्डव नृत्य के लालित्य को भी मात करता है—किसी की मेम कोई अपने साथ बग्घी पर बैठाये घूमता फिरे किसी तरह का अन्देशा या खटका मन में लाना शाइस्तगी और शिराफत के खिलाफ है हमारे यहां कुलांगना ललनाओं को परपुरुष से बोलना और मिलना कैसा एक बार किसी अन्य पुरुष की ओर नज़र उठा देखना भी सतीत्व का जड़ पेड़ से छिन्न भिन्न और निर्मूल होना है—यहां घूंघट तीन हाथ का लम्बा लटकता हो नख से सिख तक सोने से लसी हों पर पांव नङ्गा रहेगा और बेड़ी की तरह एक२ पांव में पांच२ सेर का बोझ बिना डाले सन्तोष और प्रसन्नता नहीं—वहां पांव का देख लेना ही मानों लाज और शरम की बिदाई करना है—चीनियों में स्त्रियों का पांव छोटा होना खूबसूरती और नज़ाकत है लड़कपन से एक प्रकार का लोहे का जूता लड़कियों को पहना देते हैं जिसमें पांव बढ़ने न पावे—ईरान देश की स्त्रियों का शरीर नख से शिख तक नकाब से ढंका होता है केवल दो छिद्र आंखी के आगे देखने के लिये खुले रहते हैं पर नकाब के भीतर से ऐसा टांय२ बोलती हैं कि कान की चैली उड़ती है—इस तरह पर भिन्न२ जाति के नर तथा नरियों में कितनी ऐसी चलन दृढ़ होगई हैं कि अब उन का दूर होना किसी तरह सम्भव नहीं—अंगरेज़ों में बीबी के गुजर जाने पर उस्की बहन के साथ दूसरी शादी न करने की चलन पड़ गई है विलाइत के लोग बहुत चाहते हैं कि इस रिवाज को तोड़ दें कईबार इसके लिये पार्लियामेंट में बिल पेश हो चुकी है पर मंजूर नहीं होती—हमारे यहां दक्षिणियों में मातुल कन्या परिणयन मामा की लड़की के साथ व्याह करना सर्वथा शास्त्रविरुद्ध है दक्षिणी ब्राह्मणों को इस अंश में सब लोग निन्दते हैं किन्तु चलन जो चलपड़ी सो चलपड़ी किसी के दूर किये नहीं दूर होती—बंगाल के कुलीन ब्राह्मणों में बहुत विवाह कीचलन है एक आदमी अठारह व्याह तक कर लेता है सब लोग चाहते भी हैं कि इस निन्दित चाल को उठा दें पर नहीं उठाये उठती—वहां इस उन्नीसवीं शताब्दी के सभ्यता के प्रकाश में भी उपयुक्त वर का मोल होता है कन्या के लिये जैसा अधिक पढ़ा लिखा सुयोग्य वर चाहो वैसा अधिक दाम खरचो—(बी ए) पास किया हुआ ग्रेजुएट का सब से अधिक मोल अंडर ग्राजुएट का

उस्से कम खाली इन्ट्रेंस पास हो उस्का सब से कम—हमारे यहां सर्वथा निर्मूल नाड़ी वर्ग विचारने की चलन है घर अच्छा है वर अच्छा है कुल अच्छा है वर कन्या दोनों की कुण्डली के ग्रह उपयुक्त स्थान में बैठे हैं—लग्नाधिराज पुरोहित जी ने आंय बांय शांय गिन गुथ कह दिया नाड़ी एक होती है कन्या राक्षसी है सातवें महीने पति को भख लेगी नाड़ी वर्ग नहीं बनता कन्या तथा वर के बाप मां मुंह ताक हाथ मल रह गये शादी फिरक—पंजाब के खत्रियों में स्यापे की कुचलन है रांड़ और एहवातियों में कोई फर्क ही नहीं है स्यापे के गम से कभी खाली नहीं सधवा भी विधवा मालूम होती हैं जीते जी मृत प्राणी का कभी नाम भी न लेंगी मरने पर उस्के नाम इतना छाती पीटेंगी मानो मुहर्रम की ढोल या बारात के आगे पैंसा पिटना हो—दंभ के सहामहोपाध्याय कनोजियों में तथा कायस्थों में या इस प्रान्त के सरवरियों में करार की कुप्रथा चलपड़ी है कितनी बिना व्याही रह जाती हैं करार के माफिक धन देने को रुपया पास न हो व्याह न होसकेगा—सरवारियों में एक प्रथा और भी है कि इन्में यज्ञोपवीत जो ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार है विवाह का एक अंग हो गया है इधर जनेऊ लड़के के कन्धे में लोड़ा गया उधर चट मंगनी पट ब्याह बाल्यविवाह की कुरीति को ऐसा गहके पकड़े हुये हैं कि काहे को कभी उस्से गला छुट सक्ता है—विवाह में गाली गाने की कुप्रथा भी एक जघन्य चलन में है असूर्यं पश्या सूर्य चद्रमा भी जिन का मुख देखने को तरसते हैं सो सब परदेदारी को लात मार ऐसा फोश बकती हैं कि भाड़ों को भी इतना फोश बकने की हिम्मत न होगी—बाल्यविवाह स्त्रियों का मूर्ख रहना कुल कुटुम्ब का एकान्न भोजन एक २ जाति का अलग २ चौका इत्यादि कुसंस्कार ऐसे दृढ़ हो गये हैं कि सब चलन में दाखिल कर लिये गये हैं—कितना ही समझाओ कि हमारी वर्तमान हीन दशा का यही सब बुरी रिवाज कारण है पेज के पेज रंग डालो कौन सुनता है वरन इसे अपनी आर्यता का प्रधान और श्रेष्ठ अंग मान लोग लिखने वाले की जीट उड़ाते हैं भ्रष्ट बेदीन नास्तिक इत्यादि उपाधि का खिताब उस को समाज से मिलना सहज होजाता है ॥

हम कह चुके हैं कि जो जाति या देश स्वच्छन्द और तरक्की पर हैं वहां की कुचलन भी न तो आंख को अशोभित मालूम होती है न इस लिये उन्हे कोई निन्दता या निदृता है और न उन से उन की किसी अंश में कोई हानि

है—किन्तु हिन्दुस्तान ऐसे गिरे देश में कुसंस्कार के रूप में वे ही सब चलन बहु मूल हो कोढ़ में खाज हो गई हैं दिन २ हमारी घटती और ह्रास की सहकारी हैं—

गृहस्थ गृहमेधी आदि शब्दों के अर्थ पर ध्यान देने से बोध होता है कि गृहस्थी मनुष्य के लिये सब सुख की खान है—अंगरेज़ी में भी कहावत है—"अपना घर यावत सुख का केन्द्र भाग है" इसी से सांसारिक जीव हम सबों के लिये पुराने समय के बुद्धिमानों ने गृहस्थी बांध कर रहने का नियम किया है सो गृहस्थी आधीन स्त्रियों के है "गृहैदारैर्मेधन्ते वर्द्धन्ते गृहमेधिनः" फारसी की दो लफ्ज़ जनाना और मर्दाना गृहस्थी ही से संबन्ध रखती हैं किन्तु घर के सम्बन्ध में मरदाने की कोई इज्जत नहीं है जैसा ज़नाने की—घर के मरदाने हिस्से में हम चाहो जैसे रहते हों ज़नाने के भीतर पांव रखते ही हमें सब तरह पर सावधान विनीत शालीन और बुर्दबार बन जाना पड़ता है—बाहर हम जगत् भर के शिक्षा गुरु पूज्य पाद और सकल प्रतिष्ठा की खान हों पर अन्तःपुर में पांव रखते ही अपना सब गौरव सदर दरवाज़े की डेहरी पर छोड़ देते हैं पांच वर्ष के दूध मुहे बालक के समान नादान सरल कोमल और हलीम हो जाते हैं—तो सिद्ध हुआ कि गृहस्थमात्र को अन्तःपुर न केवल सब सुख की खान है बरन उत्तम से उत्तम शिक्षा हमें यहीं से मिलती है—जहां तक हम इस के गौरव और प्रतिष्ठा को चित्त में आदर दें सब उचित है—उस अन्तःपुर की हम लोगों में जो दुर्गति और जो अपमान तथा हीनता है उसे कहते शरम आती है और सुनने से सारे दुःख के हृदय कांप उठता है सो इस सब शरम और दुःख का कारण यही चलन की गुलामी है—इस चलन की गुलामी ने जैसा अपना असर हमारे ज़नाने में पैदा कर रक्खा है उसे कहते शरम आती है—असर क्या बल्कि यह तो उन निरपराधिनी अबलाओं पर ऐसा भारी अत्याचार है कि पत्थर का कलेजा भी दरक उठे तो सभ्यजाति के लोगों को जो हमारी ललनाओं की दीनदशा पर तरस आता है तो कौन अचरज है—भूमण्डल में स्त्रीजातिमात्र की सतीत्वगुण में शिरमौर भारत की ललनाओं में यदि चलन की गुलामी का असर कम हो जाता और उन की दीनदशा का परिवर्त्तन किया जाता तो क्या हम भी इस लायक न होते कि तरक्की की सीढ़ी पर पांव रखते—सच मानिये केवल इसी पाप के कारण हम अधोगति को प्राप्त

होरहे हैं और पढ़ लिख उत्तम शिक्षा इत्यादि बाहरी तरक्की का कोई असर हमारी कौम पर नहीं होता—अच्छा तो इसमें उन निर्दोष अबलाओं का कुछ अपराध है नहीं इस में दोष आरम्भ से पुरुषजाति का है—शुरू से चलिये सब के पहिले आठ ही वर्ष में उन का विवाह कर देना—ऐसा क्रोध आता है कि जिस पामर ने गौरीविवाह की महासत्यानासी चलन निकाला है मिलता तो उस्की तिल २ मांस काट चील और कौओं को लुटाते—हमारे इन दिनों के संशोधक संशोधन का दम भरते हुये ग्यारह अथवा बारहवें वर्ष में कन्याओं को व्याह देने की राय पुष्ट करते हैं हम कहते हैं क्या वह बाल्यविवाह न हुआ ? रजोदर्शन के पूर्व उस्का व्याह कर दिया जाय यह कैद किस लिये रक्खी गई है ? संशोधकों को चाहिये इस कुचलन को सब के पहले उठाने की चेष्टा करें इस बात की कैद करदी जाय कि रजोदर्शन के पहले तो कभी कोई न व्याहे उपरान्त इखतियार है जहां तक देर होसके "अधिकस्य अधिकं फलम्" और जो इसके विरुद्ध करने का साहस करे उस्को समाज से बड़ा भारी दण्ड दिया जाय—जब तक १२ वर्ष के भीतर व्याह देने की चलन रहेगी तब तक लड़कों का ऊंची उमर में व्याहना कहां सम्भव होसक्ता है—माना तुमने लड़के को ऊंची उमर में व्याहने का प्रण भी कर लिया तो अब उपयुक्त पात्री उस्को नहीं मिलती इसी से हम लोगों को लड़कों का व्याह भी लाचार हो छोटी उमर में करना पड़ता है—शास्त्र में ऐसा वचन कहीं नहीं पाते कि बाप के लिये लड़के का व्याह कर देना फर्ज़ है जैसा लड़कियों का व्याहना धर्म समझा गया है—जिस समय १२ वर्ष और २४ वर्ष के ब्रह्मचर्य्य की प्रथा थी क्या उस समय १२ वर्ष के उपरान्त समग्र वेदवेदाङ्ग में पूर्ण हो लोग गुरुकुल से आय गौरी से विवाह कर अपने करम को बैठ कर झींखते थे जहां विवाहोत्तर चतुर्थी कर्म एक प्रकारकी ऊब थी वहां गौरीविवाह की कुप्रथा तो साफ २ असङ्गत और निरी बेअकिली है—चतुर्थीकर्म जो विवाह का एक अङ्ग है और इसी लिये इस नाम से कहलाया कि तब तक नियम पूर्वक संयम के साथ ब्रह्मचर्य्य से रहना उचित कर्म था—इसी कुचलन के कारण बीस ही बाइस वर्ष में गाल चुचक जाता है पिण्डरोगी चेहरा ज़र्द मानो वर्षों से बीमार देह में ताब नहीं उठते बैठते तावर आती है "नई जवानी सांझा ढील" कमर झुक गई ३० या ३५ वर्ष तक पहुंचे कि बुढ़ाने लगे—जब कि और २ मुल्क के लोगों में तीस पैंतीस में नई जवानी का शुरू

होता है यहां बुढ़ाने लगते हैं—चलन की गुलामी के पहले सूत्र की व्याख्या यहां तक हमने आप को कह सुनाया अब आगे चलिये—.

हमारी ललनाओं का मूर्ख रहना दूसरी विपत्ति हमारे लिये है सौ बालकों को पढ़ाने से उतना उपकार गृहस्थी का सुख और जन्म का साफल्य नहीं है जितना एक कुलवती बालिका के पढ़ाने से है—एक तो बरदे के भीतर कैदखाने में बन्द उसमें निरा दासी कर्म में तत्पर उसपर नितान्त अपढ़ तब हम क्योंकर उम्मेद कर सक्ते हैं कि चलन को इस कदर पैरवी से हमें गृहस्थी का सुख मिलै और न मिला तो इसमें कुसूर हमारा है कि उन पराधीन बेवस ललनाओं का है ? क्योंकि हमी तो चलन की गुलामी से जकड़े हुये उन्हें शिक्षिता होने से बरजते हैं—यदि हमारे देश में स्त्रियां विद्यावती होने लगैं तो अनेक कुरीतैं जिस्के दूर करने को हम बाहर कितनी कमेटियां और समाजसंशोधन के नाम से सभायें किया करते हैं ताली पीट २ लेक्चर झाड़ा करते हैं फिर कभी इन बातों की ज़रूरत रह जाय—जब तक हमारे ज़नाने से उन बुराइयों की जड़ न कटैगी जब तक बाहरी कमेटी या सभा समाज पर कोई असर नहीं पैदा कर सक्ती—भले २ घरों में टोटका टनमन के बहाने भूत परेत डाकिनी शाकिनी की पूजा; ऊटपटांग मानमनौती को स्त्रियों की मूर्खता ही ने स्थान दिये हैं—चेचक के उपद्रव के समय प्रतिवर्ष सदहां लड़के जायां जाते हैं किन्तु स्त्रियों की मूर्खता ही के कारण शीतला हैं देवी हैं इस विश्वास पर दृढ़ रह कर गृहस्थ उस रोग का ठीक २ प्रतीकार नहीं करते—मूर्खातिमूर्ख निपट निकम्मे साइत मुहूर्त बताने वाले ब्राह्मणों की प्रभुता घरों के भीतर अपढ़ ललनाओं ही के कारण से है—पुराणों के बेहूदा किस्से कहानियां जो कुछ उपदेश या भलाई पैदा करने के बदले मन और तबियत को बिगाड़ते हैं और बुराई की ओर रग़बत दिलाते हैं उन्में स्त्रियों की रुचि और श्रद्धा भी उन की मूर्खता का कारण है—ऐसी २ कितनी बातें हैं जिन से हमारी समाज ऊपर को उठने की कौन कहे दिन २ गिर रही है इस सब का बाइस स्त्रियों का अपढ़ रहना ही है—पढ़ाने से हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि प्रेमसागर ब्रजविलास खैराशाह की बारहमासी या सीरहसन की मसनवी ऐसी २ नष्ट पुस्तकें उन्हे पढ़ाई जांय किन्तु गणित भूगोल इतिहास दरशन विज्ञान आदि की उत्तम से उत्तम पुस्तकें पढाई जांय जिस्से उन के नेत्र खुलैं हृदय का अन्धकार दूर हो पुराण की झूठी २

गढ़न्त और किस्से का असर जो उन की नस २ में भरा हुआ है दूर हो—उत्तम शिक्षा उन्हें दी जांय और अच्छे क्रम से शिक्षिता की जांय तो उनकी रुचि आप ही इधर से हट जा सक्ती है—वरन उन्हीं पुराणों में वे खुद आप उन विषयों को अपने लिये मनोरंजक चुन लेंगी जिसके लिये पुराणकर्त्ताओं के बुद्धि-वैभव को हम कई बार सराह चुके हैं—पुरानी लीक को पीटते जाना और मज़हबी या धर्मसम्बन्धी जोश का हमारे देश में इसी तरह पर कायम रहना जैसा अब है ये दोनों बातें भी इसी चलन की गुलामी की बड़ी सहायक हैं—इसकी जड़ भी उसदी तरह पर तभी कटैगी जब स्त्रियां पढ़ लिख विद्यावती हो जांयगी—बस हम बहुत बक गये आज़ाद खयाल को हद्द से ज़ियादह जगह दे दिया आप की खातिर के खिलाफ हुआ हो तो माफ कीजिये गा भ्रष्ट नास्तिक बेदीन जो कुछ खयाल हमारे निस्बत आप के मन में जमा हो लाचारी है पर मैं आप का सच्चा सेवक और खादिम हूं—किमधिकम्—

महाकविभवभूति ।

साहित्यमहोदधि कर्णधार मालतीमाधव वीरचरित उत्तरचरित्र संस्कृत के ३ प्रधान नाटक के कर्ता महाकवि भवभूति से काव्यपाठीमात्र अच्छी तरह परचित हैं—हमें तो कुछ ऐसा ही निश्चय है कि भवभूति की सरस्वती का रसा स्वाद बिना किये काव्य का पठनपाठन फीका रह जाता है—मालतीमाधव में शृङ्गाररस वीर-चरित्र में वीर और उत्तरचरित में करुणा इस तरह पर काव्यपाठियों को रस से आप्लावित करते भवभूति का सहारा पाय सरस्वती त्रिस्रोता होकर बही हैं काव्यवासनाविदग्ध विद्वानों ने ध्वनि को काव्य का सब से श्रेष्ठ अङ्ग माना है "काव्यस्यात्माध्वनिः"—सो ध्वनि भवभूति के काव्य में जितनी अधिक है उतनी और कवियों के काव्य में नहीं पाई जाती—यही कारण है कि काव्यप्रकाश सर-स्वतीकण्ठाभरण वाग्भटालङ्कार आदि प्राचीन और कुवलयानन्द चित्रमीमांसा साहित्यदर्पण आदि नवीन साहित्य के ग्रन्थों में भवभूति के श्लोकों को उदाहरण में अवश्य रक्खा है—जैसा आदि से अन्त तक प्रत्यक्षर में व्याप्त प्रसादगुण कालि-दास के काव्य को नहीं छिपा रहने देता वैसा ही ओजगुण विशिष्ट ध्वन्यात्मक अनोखी उक्ति युक्ति भवभूति के काव्य को—मालतीमाधव तथा वीरचरित में इन का पाण्डित्य किसी अंश में कम नहीं है किन्तु उत्तरचरित्र में तो ओर छोर

को पहुंच गया है—इसी से कहा गया है "उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते"—मालतीमाधव की प्रस्तावना में इन्हों ने अपना परिचय इस तरह पर दिया है।

दक्षिणापथ विदर्भदेश में पद्मपुर नाम का नगर है—तहां कृष्ण यजु की तैत्तिरीय शाखा के पढ़ने वाले कश्यपगोत्र में उत्पन्न चरण * गुरु पङ्क्ति पावन "मनु ने पंक्तिपावन का लक्षण लिख कहा है जहां जिस पङ्क्ति में ऐसा ब्राह्मण एक भी हो तो संपूर्ण पंक्ति को पवित्र कर देता है,,—पञ्चाग्नि तापने वाले धृतव्रत अर्थात् चान्द्रायण आदि व्रत के करने वाले सोमयाग में सोम पीने वाले ब्रह्मवादी ब्राह्मण रहते थे—

ते श्रोत्रियास्तत्त्वविनिश्चयाय भूरिश्रुतं शाश्वतमाद्रियन्ते।
इष्टाय पूर्त्ताय च कर्मणेऽर्थान् दारानपत्याय तपोर्थमायुः ॥

वे श्रोत्रिय ब्राह्मण तत्त्वनिश्चय के लिये अधिक वेद पढ़ते थे—धन को इष्टापूर्ति आदि बड़े यज्ञ के निमित्त बटोरते थे—स्त्री का साथ सन्तान के लिये विषयभोग के प्रयोजन से नहीं करते थे आयुष्य अधिक हो इस लिये कि दीर्घजीवी होंगे तो तपस्या विशेष बन पड़ेगी—तात्पर्य यह है, कि अब कैसे कदर्य ब्राह्मण वे न थे—

उन्हीं ब्राह्मणों में सुगृहीत नामधेय भट्ट गोपाल के पौत्र पवित्रकीर्ति नीलकण्ठ के पुत्र श्रीकण्ठपदलाञ्छन भवभूति जातूकर्णी नाम की मा से उत्पन्न हुये—

वल्लालकृत भोजप्रबन्ध में भवभूति का नाम कई जगह पाया जाता है—जहां और २ कवियों के मुकाबिले भवभूति का यह प्रौढवाद है—

हठादाक्षिप्तानां कतिपयपदानां रचयिता,
कविः स्पर्द्धालुश्चेद्भुवनजयिनावश्यवचसा।
वयं तज्जानीमः कतिपयदिनैः पापिनि कलौ—
घटानां निर्मातुस्त्रिभुवनविधातुश्च कलहः ॥

दो चार पद के रचने वाले कवि लोग अपनी कविता के घमण्ड से भुवन विजयी वाणी को वश में किये हुये मेरे साथ हठ के वश हो यदि स्पर्द्धा करैं तो जान पड़ता है कलियुग में थोड़े दिन बाद कुम्हार ब्रह्मा के साथ लड़ाई ठानेगा कि मैं भी तो रोज़ मिट्टी के बर्तन गढ़ा करता हूं तब तुम को मूरत गढ़ने का ऐसा अभिमान क्यों है— और भी मालती माधव में—

* चरण अर्थात् वेद पढ़ने में गुरु महान्।

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां—
जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा-
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥

जो कोई मूढ़मति अल्पज्ञता के करण काव्य के मर्म को न समझ मेरी कविता का निरादर करते हैं वे समझे रहैं कि ऐसे निपट मूर्खों के लिये मेरा यह प्रयत्न नहीं है—किन्तु मुझसा समानधर्मा कहीं पैदा हो जायगा या कदाचित् कहीं कोई हो भी तो क्या अचरज है क्योंकि समय की लम्बाई का ओर छोर नहीं है और यह पृथ्वी कितनी विस्तृत है कौन जानता है—

हम को भी भवभूति के समान अपने लेख के सम्बन्ध में ऐसा ही कहने का हौंसिला होता है कदाचित् हमारे पीछे हमारी चाह करने वाले पैदा हो जांय तो कौनसा बड़ा अचरज है—सम्पादक भारतजीवन सरीखे हमारी अवज्ञा करैं तो हमारी इस्में कोई क्षति नहीं है—"जैसा रोगिया भावै वैसै वैद्य बतावै"—इत्यादि—रोगियों के लिये तो हमारा लेख है भी नहीं—जो हट्टे कट्टे और सब भांत चंगे हैं वे ही हमारी अनूठी लेखिनी की कारीगरी के समझने वाले होसक्के—जो रोगी हों अपने रोग में पड़े २ भुगतमान भुगता करैं—लेख उठा लेना और नाम भी न देना इस अन्याय का फल सिवाय रोग के और क्या होगा—अस्तु प्रकृतमनुसारामः—

भवभूति कवि कब हुये इस्का ठीक पता लगाना तो दुर्घट है किन्तु बाण-मयूर माघप्रभृति भोजदेव धारेश्वर की सभा के प्रधान २ कवि और पण्डितों में यह भी एक थे—धारेश्वर भोजदेव का पता इतिहासों से ईसवी सन् की दसवीं शताब्दी में लगता है—प्रकृति के वर्णन में यद्यपि कालिदास का नम्बर औवल है किन्तु वर्णन के द्वारा किसी वस्तु का रूप खड़ा कर देना भवभूति ही जानते थे उत्तरचरित्र में अवस्थान्तर या बन पर्वत इत्यादि का वर्णन ऐसी पूर्णता और खूबी के साथ किया गया है जिसे पढ़ बोध होता है मानो वह बात नज़र के सामने मौजूद है—मालतीमाधव में श्मशान का वर्णन पढ़ बीभत्सरस का रूप खड़ा हो जाता है बीभत्स के वर्णन में साहित्य वाले जितने ग्रन्थकार हैं सबों ने भवभूति ही के उन श्लोकों को उदाहरण में दिया है—यथा—

उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिं प्रमथमथ पृथूच्छोथ भूयांसि मासा-
न्यंसस्फिक् पृष्ठपिण्डाद्यवयवसुलभान्युग्रपूतीनि जग्ध्वा ।
अन्तःपर्यस्तनेत्रप्रकटितदशनः प्रेतरङ्कः करङ्का-
दङ्कस्थादस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति ॥

ऐसा ही वीर रस के वर्णन में वीरचरित्र के कितने श्लोकों को कवियों ने अपने २ ग्रन्थों में उठाया है—भवभूति को इस समय के कोमल बुद्धि वाले छात्र-क्लिष्टता और बड़ी लम्बी समास के लिये बहुधा बदनाम किये हुये हैं—किन्तु नीचे के इस श्लोक को ध्यान दे के पढ़ो कोमल अक्षरों में प्रसाद गुण निबाहते तपोवन का कैसा अनूठा और प्राकृतिक वर्णन इसमें किया गया है—

एतानि तानि गिरिनिर्झरिणीतटेषु—
वैखानसाश्रिततरूणि तपोवनानि ।
येष्वातिथेय परमाशमिनो भजन्ते—
नीवारमुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि ॥

ये वे ही तपोवन हैं जहां दण्डकारण्य की पहाड़ी नदियों के किनारे २ लगे हुये वृक्षों की छाया में उन शान्त दान्त वानप्रस्थ गृहस्थों की कुटी हैं जो लोग केवल मूठीभर पसई का भात पका कर खा के निर्वाह कर लेते हैं—

अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना—
तथा वृत्तं पापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि ।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै-
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् ॥
अयन्तेवाष्पौघस्त्रुटित इव मुक्ता परिसरो—
विसर्पन्धाराभिर्लुठति धरणीं जर्जरकणः ।
निरुद्धोऽप्यावेगः स्फुरदधरनासापुटतया—
परेषामुन्नेयो भवति विरसाध्मातहृदयः ॥

तत्कालं प्रियजनविप्रयोगजन्मा—
तीव्रोपि प्रतिकृतिवाञ्छया विसोढः ।
दुःखाग्निर्मनसि पुनर्विपच्यमानो—
हृन्मर्मव्रण इव वेदनां करोति ॥

ऊपर के ये सर्वांग सुन्दर ३ पद्य अनोखे करुणारस के उदाहरण हैं—

नीचे के पद्यों में स्पर्श सुख और कर्णेन्द्रिय के सुख का जैसा वर्णन है उससे अधिक उत्तम वर्णन और क्या हो सक्ता है—

विनिश्चेतुं शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा—
प्रमोहो निद्रा वा किमु विषविसर्पः किमु मदः ।
तव स्पर्शे स्पर्शे मम हि परिमूढेन्द्रियगणो—
विकारश्चैतन्यं भ्रमयति च सम्मीलयति च ॥
म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकाशनानि—
सन्तर्पणानि सकलेन्द्रियमोहनानि ।
एतानि ते सुवचनानि सरोरुहाक्षि—
कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि ॥
इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्त्तिर्नयनयो—
रसावस्याः स्पर्शो वपुषि बहुलश्चन्दनरसः ।
अयं कण्ठे बाहुः शिरसि मसृणो मौक्तिसरः—
किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः ॥

उत्तरचरित्र के दूसरे अङ्क में दो तापसी का प्रवेश है उन दोनों में कैसी कोमल वार्तालाप तथा आतिथ्यसत्कार का वर्णन है—बेशक जिसे पढ़ इन दिनों के कपटी निरी चुनीचुना के ढंग पर मेहमानदारी करने वालों को शरम आ सक्ती है—

उसी अङ्क में हिंस्रजीवों से भरे हुये जंगल का ऐसा उत्कृष्ट वर्णन है कि पढ़ने वाले को यही भासित होजाता है मानो हम उसी जनशून्यनिराले जंगल में खड़े हुये हैं—तद्यथा—

पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमभवत्तत्र सरिताम्—
विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम् ।
बहोर्दृष्टं कालादपरमिव मन्ये वनमिदम्—
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढयति ॥ इत्यादि

तृतीय अङ्क में रामचन्द्र ऐसे धीर गंभीर नायक की करुणा की उपमा पुट पाक के साथ बिल्कुल नई है नवीन या प्राचीन किसी कवि को नहीं सूझी ॥

हा हा देवि स्फुटति हृदयं स्रंसते देहबन्धः—
शून्यं मन्ये जगदविरतज्वालमन्तर्ज्वलामि ।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा—
विष्वग्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि ॥

करुणा की अन्तिम सीमा है कवि की सूक्ष्मप्रतिभा इसके आगे और अब क्या वर्णन करेगी छठये अंक में " दृष्टिस्तृणीकृतजगत्तत्र सत्वसारा " इत्यादि पद्य में वीररस का भी अनोखा वर्णन भवभूति की कवित्वशक्ति किस दरजे तक चढ़ी है इसका उमदा नमूना है—यह सब उत्तरचरित्र में कवि की अनूठी उक्ति को दिखलाया इसका भरपूर रसास्वाद उन्ही को मिल सक्ता है जिन्हों ने संस्कृत के काव्यों में अभ्यास किया है भाषा में संस्कृत के अक्षर और पदों की कारीगरी कैसा ही सच्चा अनुवाद किया जाय आना असंभव है—

तीसरे अङ्क को ऐसे ढंग से बांधा है कि उसके अभिनय में यथावत् भाव दरसाना किसी तरह पर सहज नहीं है—खास कर ऐसे ज़माने में भी जब नाटक करने का हुनर बड़ी तरक्की पर पहुंचा हुआ है यदि यह अङ्क अच्छी तरह करते बन पड़े तो पारसियों के नष्ट नाटकों के शौकीन देख कर दंग हो जांय—एक ओर रामचन्द्र और तमासा की बातचीत में रामचन्द्र की हृदयविदारक करुणा दूसरी ओर सीता का अपनी सखी वासन्ती के साथ उन पर अदृष्ट रूप में दयाभाव प्रगट करना—सीता के परित्याग पर भी जानकी को राम से ऐसे ढंग से मिलाया है कि जानकी के गात्रस्पर्श के सुख का तो रामचन्द्र अनुभव कर रहे हैं किन्तु प्रत्यक्ष उन्हे नहीं देखते—करुणा रस के कई पद्य इस अङ्क में भी बड़े ही उत्तम हैं—तद्यथा—

त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं त्वं कौमुदीनयनपोरमृतत्वमंगे ॥ इत्यादि

पूरोद्वाहे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया ।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते ॥

बहुत ही सच है जैसा बरसात में झील या ताल के उमड़ आने पर उसका बांध तोड़ देना ही सुगम उपाय है वैसा ही शोक में संतापित हो विलाप ही दुःख के आवेग को घटाता है–

शृङ्गाररस प्रधान और भी अनेक काव्य और नाटक हैं इसलिये शृङ्गाररस में नई उक्ति युक्ति का निकालना बहुत सहज नहीं हो सक्ता किन्तु भवभूति ने मालतीमाधव में जो उक्ति युक्ति निकाला है वह शृङ्गाररस के सम्बन्ध में दूसरे कवि को सूझना कठिन है–

लीनेव प्रतिविम्बितेव लिखितेवोत्कीर्णरूपेव च प्रत्युप्तेव च वज्रलेपघटितेवान्तर्निखातेव च ।
सा नश्चेतसि कीलितेव विशिखैश्चेतोभुवः पंचभिश्चिन्तासन्ततितन्तुजालनिबिडस्यूतेव लाग्ना प्रिया–इत्यादि

कैसे कोमल और ललित अक्षरों में उत्प्रेक्षा का निबाह किया गया है अस्तु–कवियों की गणना में गोवर्द्धनाचार्य ने कालिदास के उपरान्त भवभूति का नाम लिखा है– भवभूतेः सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति ।
एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा ॥

हमें भी ऐसा ही मालूम होता है कि ललित पदविन्यास के साथ कवित्व में एक अनोखी छटा निकालना या तो कालिदास जानते थे या भवभूति ही ने उसे निबाहा है–माघ भारवि बाण जयदेव श्रीहर्ष दण्डी इत्यादि सभी अपने २ ढंग पर एक २ बात में अनोखापन अपने २ लेख में रख गये हैं किन्तु भवभूति का यह ढंग सब से निराला है–मिथिला देशके किसी आधुनिक कविने अपने राजा की तारीफ में भवभूति का नाम बड़े ढंग से लिखा है–

कलयति करकमले करवालमपैति विभूषणमरिमहिलायाः कवयति भवति भवभूतिरभूतिरसौ वचसोऽपि कलायाः । वितरति वसु वसुधा सुरसद्मनि लसति कला सकलाकमलायाः–त्वयि शुभमस्तु शुभङ्करठक्कुर भवसि विभूषणमिहमिथिलायाः ॥

दमयन्तीस्वयम्वरनाटक

पहले के आगे से

सरस्वती—आगे बढ़ वेशभूषा और आकृति में सब नल के समान मानो ५ नल एक साथ बैठे देख (स्वगत) यदि कहती हूं ये पांचों नल नहीं हो सक्ते हैं तो इन्द्र वरुण अग्नि धर्मराज ये चारो दिक्पाल प्रधान देवता हैं उन का निरादर होता है कहती हूं ये नल ही हैं इन्हीं को तू वर ले तो पहिले यह कहना ही सर्वथा असंगत है क्योंकि ये पांचों नल नहीं हो सक्ते नल तो इन्में एक ही है दूसरे मेरा बचन मिथ्या होता है मेरी वाणी झूठ हो यह सर्वथा असम्भव है—(प्रकाश) दमयन्ती तू बड़ी भागवान है तू एक नल में लव लगाये थी यहां तेरे लिये एक साथ ५ नल विद्यमान हैं इस पङ्गनली में एक को जिसे मन भावे चुन ले—

दम०—(स्वगत) न जानिये विधाता क्यों मुझ से रूठा हुआ है कि महासागर सी इस बृहत् राजसमाज में कहां बड़े २ मल्ल मल्ल केसे बीर योद्धा क्षत्रियों के मध्य में प्राणों की बाजी लगाय किसी तरह उस अनमोल मोती प्राणनाथ को पाया भी तो अब उस्के लेने में महाविघ्न उपस्थित हुआ अब इस सङ्कट से क्योंकर उद्धार पाऊं (अकुलाकर) वे पक्षिराज हंसदेव कहां गये मैं उन का बड़ा गुण गाती हूं यह उन्हीं की कृपा है कि उस मोती के ढूंढने में मेरी लौ लगी—जान पड़ता है यह उन्हीं देवताओं का किया हुआ विघ्न है जिन का संदेशा लेकर प्राणनाथ मेरे पास आये थे उन देवताओं का किया जब कुछ न हो सका तो यही एक बड़ाभारी अड़चन उन लोगों ने छोड़ दिया—तो अब उन का प्रसन्न करना ही इस समय उस मोती के मिलने का उपाय है—यदि ये देवता मेरे भाग से मुझ पर प्रसन्न हो जांय तो अलभ्य से अलभ्य पदार्थ का मिलना कौन दुर्लभ है—यह सब सोच विचार एक २ देवता का अलग २ नाम ले ध्यान कर मन से प्रणाम करने लगी—देवता तो मनुष्य के अन्तःकरण का सब हाल जानते हैं तब जो सिवाय नल के कभी दूसरे के ओर मेरा मन न गया हो तो जो इस समय सचे नल हों क्यों न मुझे प्रगट हों (माला हाथ में लिये आगे को चलती है फिर पीछे हट आती है और एक २ को अलग २ नख से सिख तक देखती है)

इन्द्र०—दमयन्ती मैं तुम्हारे सतीत्व और इस दृढ़ निश्चय पर बड़ा प्रसन्न हुआ मानुषी में मैंने ऐसी स्त्री न पाया कि जिसे देवताओं में भी प्रधान देवता कामना करें और वह अपने दृढ़ निश्चय से टसकाये न टसकै—हम लोगों ने तुम्हारी सब तरह पर जांच कर लिया निस्सन्देह तुझसी सती सावित्री देवरानियों में भी न पाया हम सब लोग तेरी इस दृढ़ता पर प्रसन्न हो नल को हम तुझे वरदान की भांत देते हैं तू अपने पति के साथ अटल सौभाग्य प्राप्त होगी—(नल से) राजन् हम सब लोग तुम्हारे स्वच्छभाव से और सत्य में तुम्हारी पूरी निष्ठा देख सब भांत प्रसन्न हैं सच है " यत्कास्तियोग्येन हि योग्यसङ्गमम् " दमयन्तीसी ललनाललाम के लिये तुम्हीं एक पुरुष रत्न उपयुक्त हो—तुमने जो हमारा दौत्यकर्म निष्कपट और सचाई से किया इससे हम सब लोग प्रसन्न हो तुम्हें दमयन्ती प्रसाद में देते हैं—हमारे आशीर्वाद से तुम एक-पत्नी व्रतधारी हो चिरकाल तक दमयन्ती सहित संसार का सुख भोगो उमा और महादेव के समान तुम्हारा दाम्पत्य अटल रहे (चारो देवता अन्तर्ध्यान हो जाते हैं, दमयन्ती नल के गले में जयमाल छोड़ती है सब लोग जयध्वनि करते हैं फूल की वर्षा होती है परदा गिरता है ॥ इति ॥

यहां की हाईकोर्ट में हिन्दुस्तानी जज्ज ।

हम बड़े हर्ष के साथ प्रकाश करते हैं कि यहां की हाईकोर्ट में जस्टिस-महमूद के पेनशन लेने पर बड़ी २ अड़चन के उपरान्त भी हिन्दुस्तानी एक जज्ज कायम रहा—हम लोग तो सब भांत निराश हो गये थे कि आगे से यह ओहदा हिन्दुस्तानी को अब न मिलेगा और इस बात के यत्न करने में कहीं से त्रुटि नहीं की गई कि यह पदवी आगे के लिये अब हम से छीन ली जाय—किन्तु धन्य है ब्रिटिशशासन के उदारभाव को कि वहां से इसके लिये भरपूर न्याय किया गया—लखनऊ के डिसट्रिक्ट जज्ज बाबू प्रमोदाचरन बनरजी इस पद पर नियत किये गये—उक्त बाबू साहब सबभांत सुयोग्य हैं कानून की बारीकियों को खूब समझते हैं और सब लोग इन से राज़ी हैं—हानि केवल इतनी ही हुई कि यहां के कई एक योग्य वकीलों में से कोई न किया गया जो सब तरह पर उस ओहदे के मुस्तहक थे और उन्हें यह काम सौंपा जाता तो कहीं पर किसी अंश में अंगरेज जज्जों से कम न निकलते—दूसरे यह कि हमारे इसी

पश्चिमोत्तर अवध का कोई आदमी जज्ज होता तो गवर्नमेंट को बड़ा ही धन्यवाद देने का अवसर था अस्तु–यहां हिन्दुस्तानी एक जज्ज रहे यह वसूल तो कायम रहा भगवान एक दिन वह भी दिखलावे गा कि हम निज नेत्रों से अपने ही लोगों में से किसी को इस पद पर सुशोभित देख जी जुड़ावेंगे अब हम उन लोगों को सुचेत करते हैं जो कानग्रेस की ओर से अरुचि रखते हैं और यह समझते हैं कि कानग्रेस हमारी हानि कर रहा है––यह कानग्रेस ही की करतूत है कि यहां एक हिन्दुस्तानी जज्ज अब सदा के लिये चिरस्थायी रहा–यहां वाले अलबत्ता जिद्द में आय कानग्रेस की जड़ उखाड़ने में तत्पर रहते हैं पर विलायत के लोगों में इसका बड़ा असर हो गया है–यह उसी का फल है कि यहां के लोगों को हिन्दुस्तानी जज्ज का होना बिल्कुल नापसन्द था फिर भी विलाइत के लोगों ने इन के कहने का कुछ आदर न किया और जो कुछ न्याय था वही किया गया––हम नहीं समझते हमारे कर्मचारियों को क्यों कानग्रेस से इतना विरोध है–कानग्रेस अंगरेजी के उदारशासन का सच्चा कदरदान है राजभक्ति के यावत् सिद्धान्तों पर आरूढ़ रह भिक्षा की तरह अपना हक़ मांग रहा है–यदि इसमें किसी तरह का कपटभाव होता तो वह छिपाये न छिपता थोड़े ही दिन के उपरान्त सब कलई खुल जाती और विलायत के उच्चे न्यायशील उदार प्रकृति वाले कभी इसे आदर न देते––दूसरे यह कि कानग्रेस का यहां होना बहुत ठीक समय में आरंभ किया गया अब इस समय विलायत के दयाशील सज्जनों के कान तक अपना सच्चा भाव प्रकट करने का यही एक द्वार था कांग्रेस का इतना गहरा आन्दोलन कर डरते२ चुपके हम कितना ही रोया गाया करते कभी सुनाई न होती––ईश्वर कांग्रेस के मूल पुरुष और प्रधान स्थापक को चिरायु करे–

प्रयाग में रामलीला

रामनगर इत्यादि कई स्थानों में रामलीला बड़े जोशके साथ होती है और देशदेशान्तर में बनारस का बुढ़वामंगल और रामनगर की रामलीला प्रसिद्ध है–किन्तु प्रयाग की साङ्गोपाङ्ग रामलीला के मुकाबिले और२ ठौर की लीलायें हेच और तुच्छ हैं–यहां खत्री और दलालों के चन्दे से कई हज़ार रुपया इकट्ठा हो यह मेला किया जाता है–यद्यपि दस दिन तक बराबर लीला होती है पर नौमी

के दिन रामदल और दशमी की रात को बीच बाज़ार में झाड़ फानूस की रोशनी देखने लायक होती है—हज़ारों फानूस और लैम्प की रोशनी तरती बबार गुंचा बांध बहुधा कम देखनेमें आई है—हमें बड़ा हर्ष इस बातके प्रकाश करने में है कि प्रतिवर्ष रोशनी तथा दल इत्यादि में तरक्की ही होती जाती है जो कुछ सामान पारसाल था उससे सवाई डेहुढ़े का फर्क इस साल देखने में आया ईश्वर इस मेले के उत्साहियों को सब तरह खुशहाल और प्रसन्न रक्खे तो यह मेला अभी न जानिये किस ओर छोर को पहुंचेगा—सब से उत्तम बात जो यहां इस रामलीला में अधिक प्रशंसा के लायक है वह लीला का नाटक के आकार में अभिनय के ढंग पर होना है—लीला के प्रधान २ पात्र राम लक्ष्मण हनूमान अंगद आदि और २ स्थान की लीलाओं को भांत गोबर नहीं पाथते कि एक आदमी पोथी हाथ में लिये जो राम रारावण इत्यादि बनते हैं उन के मुंह से वे सब बातें तोते की भांत कहलवा देता है किन्तु यहां पात्र सब अपना पाठ खूब याद किये हुये हैं जहां पर जो लीला होती है वहां तदाकार उसका भरपूर अभिनय करते हैं—यह बात यहां की लीला में बहुत ही सोहावनी और भली मालूम होती है—बाकी और २ बातें जलूस आदि सभी तारीफ के लायक हैं—जलूस नेत्र का विषय है इसे देखने ही से उसका आनन्द मिल सक्ता है लिख कर हम उसे क्योंकर प्रकट करैं बड़े खुशी की बात है कि दूसरे दल वाले भी जिसमें बहुधा अगरवाले और बनिये शरीक हैं कुछ २ बढ़ चले हैं किन्तु लीला को अभिनय के ढंग पर करैं इस ओर उन का बिल्कुल ध्यान नहीं है—जलूस में भी अभी उतना सामान इन के पास नहीं है जैसा दलालों की रामलीला में है—यदि गोबर पाथने का ढंग छोड़ लीला को अभिनय के क्रम पर करैं तो निश्चय इन की लीला भी प्रशंसा के योग्य हो जाय और निरा जलूस हम लोगों को उतना फीका न जचै जैसा अब मालूम होता है—अस्तु रामलीला में नित्यर तरक्की और इस में लोगों का उत्साह इस बात का सबूत है कि इलाहाबाद रौनक में बढ़ता जाता है—

हमारी अपूर्ण अभिलाषायें।

"कालो न यातो वयमेव याताः। भोगानभुक्ता वयमेव भुक्ताः"

"काल ने हमे छलेवा कर लिया पर वह खुद जैसे का तैसा बना रहा—

हम भुगत गये पर संसार के भोग सब भुगतने को पड़े ही रहे"—

सच है सौ वर्ष की पूरी आयुष्य क्या हज़ार और लाख वर्ष की हमारी उमर हो जाय तौ भी यह हवस बनी ही है कि थोड़ा और जीते तो अच्छा था—खाया पिया लिया दिया जो कुछ किया अघाने नहीं पर्याप्तता किसी से न हुई थोड़ी कसर बनी ही रही—"आशावधिं को गतः"—विश्वविजेता सिकन्दर को इस असार संसार से कूंच करते समय यह चाह बनी ही रह गई क्या कहैं हौसिला पूरा न हो सका अभी बहुत से मुल्क फतह करने को बचे हैं—सब तरह पर खुश हाल हैं कमती किसी तरह की नहीं है लड़के लड़कियां नाती पोते बहू बेटियों से घर भरा है आप लंबे गोर हैं पांव पसारे बैठे हैं मौत बाल पकड़ पटका चाहती है पर इतना हौंसिला बाकी रह गया कि मुन्नी के कोई लड़का होता तो सोने की सीढ़ी चढ़ लेते तब सिधारते सो अच्छा होता पर उतना न हुआ आप चल बसे नसीबवरी में इतनी कसर बाकी ही रही—समग्र वेदवेदाङ्ग में पाराङ्गत मंजूषा और शेखर पद २ रटे हुये काव्य कोश अलंकार छन्द प्रबंन्ध में पूर्ण पण्डित फिर भी, जी में यह अरमान लगा ही रहा कि क्या कहैं नवाह्निक भाष्य कण्ठस्थ न किया और चल बसे—

एक साधारण पद से उठते२ जहां तक ऊंचा दरजा और अधिकार मिलना संभव था सब हासिल कर चुके फिर भी यह हौंसिला बाकी ही रह गया कि क्या कहें कौंसिल की मेम्बरी न मिली—चारो खूंट पृथ्वी डांक आये छोटे बड़े कोई तीर्थ न बचे जहां न गये हों बड़ी २ तकलीफ और परेशानी सह यावत् बड़े २ धाम सब कर स्वर्ग की सीढ़ी के सब डण्डे मुकम्मिल कर डाला आंख मुदने भर की कसर है इधर आंख मुंदी उधर खटखट सीढ़ी के सब डण्डों पर चढ़ एक बारगी स्वर्ग के सिंहासन पर जा बैठेंगे पर फिर भी एक बातकी कसर रही गई कि क्या कहें, श्रीजगन्नाथराय के दरसन न किया छत्तीसो जात का जूठा भात खाय जन्म न पवित्र हुआ और यमराज के दूतों ने आ घेरा—हम बड़े संशोधक और उद्धारक हैं यावज्जीवन पर्यन्त कुसंस्कार दूर करने के लिये सिर पचाते रहे अन्तमें चल बसे अपने नेत्रों से समाज को अयुक्त बन्धन से मुक्त और सब भांत प्रफुल्लित न देखा—पर हां! बीज अलबत्ता बो चले जिस का अङ्कुर फूट कभी को बड़ा भारी वृक्ष तैयार होगा जिस के अमृत फल का स्वाद चीख लोग हीन दीन दशा से मुक्त हो दुनियां की तवारीख में देश और जाति के गौरव

में पहिले समझे जांयगे–इत्यादि हम ने अपनी अपूर्ण अभिलाषाओं के दो चार दृष्टान्त दिखलाये इसी तरह हमारी अपूर्णाभिलाषाओं के अनेक उदाहरण हैं–

निम्नस्थ हमें गवर्नमेण्ट से प्राप्त हुआ है–

नम्बर १२१२

हिन्द की गवर्नमेण्ट

होम डिपार्टमेण्ट

पबलिक

स्थान शिमला–३१ अगस्त सन् १८९३ ई०

विज्ञापन ॥

श्रीमतीराजराजेश्वरी महारानी कैसरहिन्द प्रतापवती की नीचे लिखी हुई नृपाज्ञा जो ११ जूलाई सन् १८९३ ई० के लन्दन गज़ट के पूर्त्तिपत्र में प्रकाशित हुई थी सब लोगों के जताने के लिये दुबारा प्रकाशित की जाती है–

स्थान बाइट हाक–१० जूलाई सन् १८९३ ई०

श्रीमतीराजराजेश्वरी महारानी प्रतापवती की नृपाज्ञा जो नीचे लिखी है राइट आनरेबिल सेक्रेटरी आफ़ स्टेट बहादुर होम डिपार्टमेंट के पास प्राप्त हुई–

स्थान विन्डसर कासिल १० जूलाई सन् १८९३ ई०

श्रीमतीमहारानी प्रतापवती की कल्याणमयी इच्छा यह है कि अपनी प्रजा पर पुनर्वार यह बात प्रगट करें कि जो उत्तम प्रकार की राजभक्ति और हेत प्रीति उक्त श्रीमती के गुणगणालंकृत निज डील और उक्त श्रीमती के भाग्यशाली वंश और सम्बन्धियों के मध्ये–श्रीमती के चिरंजीव प्यारे प्रतापी पौत्र श्रीमान् ड्यूक आफ़ याके और उक्त श्रीमान् की प्यारी दुलहिन सौभाग्यमती प्रिंसेस विक्टोरिया मेरी आफ़ ट्यकदेवी प्रतापवती चिरंजीविनी के विवाहोत्सव के समय–अति सुन्दर और मनोरम्य रीति से प्रकाशित की गई उसके कारण उक्त श्रीमती के परमोदार हृदय में अत्यन्त हर्ष और प्रसन्नता हुई और उक्त श्रीमती के करुणाकर चित्त पर अपनी प्रजा के दृढ़ विश्वास और अचल भक्तिका बहुत बड़ा प्रभाव हुआ–

वास्तव में उक्त श्रीमती कृपामयी स्वामिनी के पवित्र गुणगणविभूषित निज डील पर प्रजा का यह मानसिक विश्वास और दृढ़तर प्रेमानुराग का होना कोई नई बात नहीं है–किन्तु सदा सर्वदा हर्ष और शोक दोनों प्रसङ्गों में श्रीमती

दयावती की प्रजा बड़े शुद्ध भाव और हेत प्रीति से सहानुभूति प्रकाश करती रहै—सो उक्त श्रीमती महिमावती के परम उन्नत हृदय पर उस का बहुत बड़ा प्रभाव है—

श्रीमती महारानी प्रतापवती इस बात से अभिज्ञ हैं कि उक्त श्रीमती के अतिविस्तीर्ण और महान् राज्य के प्रत्येक विभाग की प्रजा इस बात से जानकार है कि जब उक्त श्रीमती अपने किसी देश की प्रजा के किसी प्रकार के हर्ष किम्वा शोक का समाचार सुनती हैं तो उक्त श्रीमती महिमावती को सच्ची और मानसिक वात्सल्य और राजसी दयालुता उमड़ आती है—और बेपरिमाण हर्ष किम्वा शोक उक्त श्रीमती के चित्त पर छाजाता है—और उक्त श्रीमती दयावती यह भी जानतीहैं कि राज्य की मूलशक्ति और दृढ़ता ऐसे ही सहानुभूति उक्त श्रीमती और प्रजा के परस्पर विद्यमान होने के आधीन है ॥

श्रीमती महारानी परमैश्वर्य्यशीला अपनी प्रजा के साथ मिलकर शुद्ध भाव से अपने प्रिय पौत्र और प्यारी पौत्र बधू के कल्याण मंगल के लिये आशीर्वाद मनाती हैं ॥

दस्तख़त विक्टोरिया, आर. आई.

दस्तख़त सी, जे, लाइल सेक्रेटरी गवर्नमेंटहिन्द.

उस्र की कश्ती हमारी देखिये किस घाट लगती है।
रहैगी डूब के दरिया में या उस पार लगती है ॥

सच है नंगे लुच्चों की बात ही निराली है कुलीन खानदान वाले के लिये इज्ज़त हुरमत ऐसी ही नाज़ुक बात है—जब अन्त तक बेड़ा पार होकर नाक लाज निभते हुये आंख मुंद जाय तब यह कहना ठीक है कि बड़े खुशनसीब थे बहुत आराम और सुख से कटी—इसी लिये जो समझदार दूरन्देश पेशबीन हैं वे अपने क्षणिकजीवन में थोड़े दिन की भागमानी और धन संपत् पर उन्मत्त हो अपने को भूल नहीं जाते और अन्त तक इज्ज़त आबरू के साथ निभ जाने का बड़ा खयाल रखते हैं—लोग कहते हैं इज्ज़त गये इज्ज़त नहीं मिलती इज्ज़त है तो ज़िन्दगी है नहीं तो मरना भला ; मोतीसी आब उतर गई; पानीभरा ; नाक कट गई बात देनी पड़ी; भगवान् बात सब की बनाये रहै—वास्तव में न कुछ उतरी न चढ़ी न कोई मरा न जिया न कुछ देना पड़ा न लेना पड़ा फिर यह आई गई उतरा चढ़ी लेनी देनी कैसी; यह इज्ज़त है क्या बला ; जूजू है ? हौआ है ? काट लेगा ? काला सांप है ? डंस लेगा ? बीछ है ? भख लेगा ? तो फिर उस्से इतना डर काहे का ? जो सब के सब इस खयाल में पशेमान हैं जगत्

में बात बनी रहे मुह उजागर रहे « अपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना » सब भांत पोले पड़गये हींग निकल गई सड़क बनी है पुरखों का बड़ा नाम था लटूदार की शरम निबाहते दिन काट रहे हैं और दिन रात इसी चिन्ता में व्यग्र हैं कि इज्ज़त न जाने पावे–इज्ज़तदार और खानदानी बनने के नशे में गड़गाप फाके पर फाके होते हैं किन्तु संसार में अयश न हो इस लिये कोई हेठा काम करने से दूर भागते हैं–सब २ तकली पसहते हैं किन्तु आबरू नहीं जाने देते बड़ों की बात निभती जाय नोक न झरने पावे समाज में सुर्ख रू रहैं इस खयाल से हज़ारों तरद्दुद और कष्ट भुगतते हैं पर नाक की जगह नहीं हटते काढ़े सूसे लिये दिये जैसे बनै नाक निबाहते हैं और इज्ज़त में बट्टा नहीं लगने देते–इसी से समझ जाइये इज्ज़त क्या चीज है–धन्य हैं वे पुरुषसिंह जो प्राण से भी बड़ी इज्ज़त को मानते हैं अपना गौरव और अपनी प्रतिष्ठा के बचा रखने में जीवन के सुख को कुछ नहीं गिनते फूंक२ पांव रखते हैं उद्धतता और घमण्ड को दूर से बरकाते हैं–ऐसों ही का यह कथन है उन्न की कश्ती हमारी देखिये किस घाट लगती है—इत्यादि देश या जाति के उठने या नीचे को गिर जाने का यह भी एक सुबूत है–जो गिरी दशा में हैं वे निज सुख और आराम के पीछे आत्मगौरव को कुछ माल नहीं गिनते«प्रतिष्ठाशूकरी विष्ठा» इत्यादि अधम वाक्य ऐसेही सुख लोलुप स्वार्थतत्परों का है जिन की हमारे देश में कहीं पर कमी नहीं है—

प्राप्त

संस्कृतचन्द्रिका ॥

इस मासिकपत्रिका का आगे का एक नंबर और हमारे पास आया है—पिछली संख्या में इस मासिक पुस्तक की प्रशंसा में हम बहुत कुछ लिख चुके हैं–अपने पढ़ने वालों को फिर सूचित करते हैं संस्कृत के छात्रों के लिये छोटे २ वाक्यों में इसकी सरल संस्कृत कोमल बुद्धि वाले बालकों को बड़ी उपयोगी है विशेष कर ऐसे लोगों को जो युनिवरसिटी का इमतिहान दिया चाहते हैं—क्योंकि इसमें संस्कृत से अंगरेज़ी और अंगरेज़ी से संस्कृत बनाने की परिपाटी के क्रम पर छोटे २ जुमले दिये हैं जो दोनों भाषाओं में परस्पर अनुवाद करने के लिये बड़े काम के हैं–यह चन्द्रिका कलकत्ता में श्रीजयचन्द्र सिद्धान्तभूषण द्वारा सम्पादित होती है विद्यार्थियों से इसका मूल्य १) औरों से १॥) है–

कल यह बात सर्व साधारण कर बैठते हैं कि गवर्नमेंट ने ही ऐसी नीति अवलंबनकी है, जिससे हिंदू मुसलमान दोनों में विरोध रहै, और उस विरोध से हमारा राज्य चिरस्थायी रहे।

यद्यपि हम इस बातको नहीं मानते कि परम चतुर गवर्नमेंट ने ऐसी बोदी और जघन्य नीति अवलंबन की हो, पर इसमें भी सन्देह नहीं कि गवर्नमेंट की ओरसे बेपर्वाही बहुत रहती है। ऐसे झगड़े जिनमें एक जाति की जाति शामिल रहतीहै, या शहर का शहर शामिल रहता है, जिसमें जोशका समुद्र बढ़ा हुआ होता है और एक जाति की मान मर्यादा जिसपर समाप्त है। उस का निबटाना और प्रबंध करना एक मजिष्ट्रेट को बड़ा कठिन है। तिस पर भी जब दोनों ओर जिद और जहालत मिली हो और क़ानून उसके लिये कुछ सहायता न देसक्ता हो, तब और भी कठिन है। फिर यदि कहीं मैजिष्ट्रेट किसी एक जाति का पक्षपाती हो, और उस जातिवाले मैजिष्ट्रेट की नाक के बाल हों तो कभी संभव नहीं कि फ़साद नहो। जोकि इन झगड़ों के मिटाने का पूरा अधिकार इन्हीं मैजिष्ट्रेटोंको होता है, और मैजिष्ट्रेट मोमकी नाक जिधर चाहें, उधर फिर गये। जहां तक सुना और देखा, इस विषयमें किसी लेजिस्लेटिव् कौन्सिल् से कोई क़ानून पास नहीं हुआ, अब बुद्धिवान् जान सक्ते हैं कि यह कैसा बेहूदा, बेढंगा, क़ायदाहै? सबसे पहिले कहाजाता है कि श्री मती महारानी के राज्यमें सब धर्मोंको स्वतंत्रता है, तो भारत वर्ष के सब मैजिष्ट्रेटों को हुक्म होजाना चाहियेथा, कि हिंदू मुसलमान दोनों अपने अपने तौहार स्वाधीन भाव से करें, एकही शहर और एकही मुहल्लेमें, मुसलमानों का मातम, और हिंदुओं का आनंद दोनों हो पर ऐसा कहां होता है? आगरेमें मुहर्रमों की वजहसे हिंदुओं का जलयात्रा का मेला क्यों बंद किया गया? यदि पुरानी नजीरें ही मानी जाती हों, तो अबकी बकरीद में अलीगढ में ४२ जगह नक्कारा बजाय करके क्यों गोबध कराया गया? और हिंदुओंको जाति और धर्म का क्यों इतना अपमान कराया गया? हां, इसमें संदेह नहीं कि मैजिष्ट्रेटों को अपने शहर में शांति रखने का अधिकार है, पर शांति रखने के यह मानी नहीं हैं कि मुसलमान जो उपद्रव करने को हरबार तयार रहते हैं उनको इच्छा पूरी करके उन्हें प्रसन्न करदिया जाय, और हिंदू लोग जो भले मानस हैं, सर्कार के हुक्म के बंदेहैं, कभी उपद्रव नहीं करते, उन का सिर पकड़कर दबा दिया जाय। जहां तक देखा गया खिसारे में हिंदू लोग ही रहते हैं, मुसलमान यारों का तो लंगोटा भी नहीं भीजता। अस्तु इन सब बातों को सर्कार के न्याय पर छोड़ कर हम सर्कार से प्रार्थना करते हैं कि इस उपद्रव को शांतिके लिये एक क़ानून सुप्रीम लेजिस् लेटिव् कौन्सिल् में पास किया जाय, जिससे सदैव

यह उपद्रव शांत रहै, और मैजिष्ट्रेट् लोग उसी के अनुसार कार्य करें। इस कानून में उन बातों का निरणय और प्रबंध किया जाय, जिन बातों में फ़साद उठता है, सर्कार इसमें यह न सोचै कि यह धर्म संबंधी बिषय है, इसमें कैसे हस्तक्षेप करें अब इस बिषय में धर्म नहीं, देशोपद्रव मिल गया है. जहां तक शीघ्र हो, इसका प्रबंध करना चाहिये, यदि प्रबंध न हुआ, तो किसी दिन ये दोनों जाति लड़कर घोर उपद्रव रचा देंगी। अलम्,

---

॥ सौदामिनी ॥

[नवन्यास]

(१)

संधया का समयहै, भगवान् सूर्यनारायण को डौन मेल (Down Mail) अपने Last ष्टेशनके Compound में पहुंच चुकी है इधर वह रामपुर ष्टेशन में फतहपुर ष्टेशनसे 'लाइन् क्लोअर' पूंछा गया। तार की घंटी बजी 'टन् टन् टन्' पहरा पुकारा 'बाबू तार बोलता है' बाबू बाहरके बरामदे में ज़रादेर हुई कि लेटे थे, चौंक उठे। खट् खट् करके तार का जवाब दिया. थोड़ी देर बाद फतहपुर डांक गाड़ी छोड़ा पहरा ने आवाज़ दी गंभीर धुनि से ष्टेशनका घंटा बजा सब आदमी होशयार! टिकट बाबू टिकट पर! ष्टेशन माष्टर औफिस् में! खालटेन वाले लालटेन जलाने लगे। पोलीस वाले ट्रैफिक वाले सब प्लाटफार्म पर घूमने लगे. याचियों ने टिकट लो, ष्टेशन में आनंद धुनि छागई! ष्टेशन का प्लाटफार्म पटाहुआ, थोड़ा सा इधर उधर खुला भी था, जिस पर छोटे छोटे गुलाब के पेड़ लगे थे, दीवाल पर रेलिया तमाम छा रही थी, इस दीवाल का सहारा दिये एक द्वादश वार्षिका बालिका खड़ी है. बालिका गौरांगी स्निग्ध कुंचित केशराशि कंधों पर पड़ी हुई, भोला मुख चंचल नेत्र गले में एक फूलोंकी माला पड़ी हुई! कपूरी रंग की धोती में से जालीका मलूका चमकताथा! बालिका तृषित नेत्रोंसे गाड़ीकोतरफ़ देखरहीथी! इतनेमेंहो गाड़ी ने विसिल दो, धु, धु, धु, भु, भु, भु, वर्णमाला के चतुर्थ अक्षर पढ़ता हुआ इंजिन आया, उसके पीछे मालगाड़ी सवारी गाड़ी, ब्रेकवान करोने से आकर खड़े हुए, जेंटलमेन और अंग्रेज़ों ने जाकर रिफ्रेशमेंट रूम में शरण ली. हिंदुस्तानी दरिद्र याचो, कोई जल पीने, कोई भोजन करने, कोई और आवश्यक कार्यों के लिये उतरे. एक युवा मिसें भींगतीं, गले में मनीबेग डाले, चश्मा लगाये, सेकिन् क्लास में से टहलने को उतरा। इधर उधर घूमते जहां बालिका खड़ी थी, वहां दृष्टि गई. युवा को आश्चर्य हुआ, यह जंगल में मंगल कैसा? इधर उधर देखा तो बालिका के साथ और कोई न था! युवा को थोड़ी देर देखने का अवसर मिला, चश्मासे लच करके इस भाव

से देखा कि बालिका को लक्षित न हो, पर यह भाव बहुत देर न रहा. इधरउधर घूमते कई बार साकूत भाव से देखा बालिका अभीतक सिंगल की लाल हरी लालटैनों को तरफ़ देख रही थी, अबकी दोनों की ज़ोर से चार आंखें भिड़ गईं। बालिका एकांत में इस अभिनव दृश्यसे कुछ लज्जित हुई. और लज्जित भाव से गुलाब के पुष्प को देखते देखते युवा को देखा. इतने में ही घंटो बजी. युवा रेलको तरफ़ दौड़ा कि 'हू' 'हू' करके रेल चलदी। युवा गाड़ी पर चढ़ने लगा, सिपाहियों ने 'खबरदार' कह कर रोकदिया. युवा रहगये!

(विश्राम)

रहीम दोहावली।

आंसू निकस रहीम कहि विथा जनावहिं सोइ। जाको घरसो देखिये कहीं न भेद कहि देइ।१। दुरदिन भये रहीम जग सबै परत पहिचानि। सोच न कुछ धन हानिको होय बड़ी हित हानि।२। जो रहीम प्रति चित्र है, परसत सलिल न साइ। कहीं मूरति मिटि जाति नहिं सजल लोचनन मांहि।३। घाटि बड़ेन की जो कहे नहिं रहीम घटि जाहि। गिरिधर मुरली धर कहे कछु दुख मानत नाहिं।४। जो रहीम जग बड़ेन को करै निचाई कोइ। छार परस आदर सभै सरस जोति जगी होइ।५। नैननि में औगुन बहुत एकै गुन अवगाह। रोझे होत रहीम है नीके दानि प्रवाह।६। खोटे न साथ रहीम बस साधु हु बचते नाहिं। ठैना नैना करत हैं, उरज अमैठे जाहिं।७। जिये रहीम जो मीन गति जीवो वाको नाइ जिये कमल तजि सेइये कहा भौंरके भाइ।८। मनहि लगाय रहीम जो नीके जाने कोइ। नरको बस करवोकहा नारायण बसहोइ।९। दाह दरै सब मल हरै पापि हु करै पवित्र। ऐसो बड़ो रहीमजल नीच चलैतो चित्र।१०।

(शेष आगे)

औनरेरी मैजिष्ट्रेट्।

प्रहसन

प्रथम दृश्य।

(स्थान लाला भौंदा मल का कमरा)

(लाला भौंदामल, पंडित केवल कृष्ण, मुंशी सबसुखराय मौलवी इमाम हुसैन बैठे हैं)

भौंदा० (इमाम हुसैन की तरफ़ देखकर) कहिये मौलवी साहब! तहसीलदार साहब का मिज़ाज कैसाहै?

इमाम। हुज़ूर ग़रीब निवाज! ताबेदार कल गया था, सो हुज़ूर की तर्फ से सलाम अर्ज करके तबीअतका हाल दर्याफ़्त किया था, फ़र्माया कि बुख़ारतो बिल्कुल नहीं आता, मगर कमज़ोरी किसी क़दर है।

भाँदा० । उंह कमजोरी की कुछ फ़िक्र नहीं, दो चार रोज़ में जाती रहेगी. हाँ उस मुआमले में कुछ जिक्र आया ।

इमा० (बहुत देर याद करके) खुदाबंदा! याद नहीं रहा, किस मुआमले में ? इर्शाद फर्माइये. ताबेदार को जिक्र करने में क्या दरेग है ?

भाँदा० । जी नहीं ऐसी कोई बात नहीं (कानमें) आनरेरी मैजिष्ट्रेटी की अभी रिपोर्ट हुई या नहीं ।

इमाम० तहसीलदार साहब फर्माते थे कि आप एक दफ़ा साहब से मिल लें. तब फिर रिपोर्ट का अच्छा मौका हाथ लगेगा ।

केवल क्षण । साहबसे तो लाला कई दफ़ा मिलचुके उसका बहाना करना तो वृथा है. असल मतलब कहिये ।

इमाम । क़सम कुरान शरीफ़ की और कुछ बहाना नहीं ।

सबसुख० आपको याद होगा कि ते (ब) साहब ने आपको एक फ़िटन पसंद कीथी ?

भाँ० म० । हां याद है, मगर वह तो हमारे शौक़ की चीज है ।

इमाम० इसमें क्या शक है, मगर वहतो दाम देकर लेते हैं ।

केवल० । ज़रूर. आनरेरी मैजिष्ट्रेटी क्या शौक़की चीज नही है. और जनाब ! दाम तो उस दुसाले के जोड़ के भी तो आप के मिल गये । और मकान का किराया भी तो माह व माह आपको मिलाही जाताहै.

[सब हँस पड़ते हैं]

इमाम (बात उड़ाकर) जनाब ! आप ने सुना कि मौलवी फख़रुद्दीन साहब डिप्टी यहां तशरीफ़ लाने वाले हैं । और मुंशी जनक धारीलाल साहबका तबादला गोरख पुर को हुआ ।

भाँदा० नहीं तो आपने किससे सुना ?

इमाम० मैंने कचहरीमें अफ़वाहन् सुना.

केवल० तो लाला के पांच सौ और गये, जो डिप्टी साहब ने माके मरने पर दूकान से मंगालिये थे. मियाद भी दोचार दिन ही रहगई होगी. ब्राह्मण पंडितों को तो लाला कौड़ी नहीं देते, इन लोगों को तो लाला कर्ण हैं ।

भाँदा० बस पंडित ! चुप रहो तुम नहीं जानते कौनसी बात कहां कहना चाहिये ।

केवल० जो हुकुम, हुजूर ! अब ऐसी बेहूदा बात कभी नहीं कहूंगा. खासकर दलालों के आगे, जिस में मुआमला बिगडे ।

भाँदा० तुम बड़े बेवकूफ हो, चुप नहीं रहते मौलवी साहब इस नालायक़की बात का खयाल न करना ।

(कोचवान का प्रवेश)

को०वा० हुजूर गाड़ी तयार है ।

भौंदा० अच्छा चलिये, मौलवी साहब तहसीलदार साहब से मिल आवें।

(सब गये)

द्वितीय दृश्य।

(स्थान तहसीलदार साहब की बैठक)

(एरे गैरे पच कलयानी बहुत से खुशाम दी बैठे हैं तहसीलदार साहब हुसैनअली मुहर्रिर से चौपड़ खेल रहे हैं)

त० (पांसे फेंक कर) ये पंचड़ो (गोट चलते हैं)

दू० (पांसे फेंक कर) गयारह दो तेरह (गोट चलता है) यह गयारह में लाल मार कर वो दो कौने पर!

त० (पां० फें०) यह पंद्रह!

एक खुशामदी। उठ जाइये।

[गोट लाल होती है और एक सिपाही का प्रवेश]

सि० हुजूर! पटपर पुरा के लंबरदार हाजिर हैं।

त० बुलाओ।

(पटपर पुरा के लंबरदार डरते कांपते आते हैं और सैलाम करके खड़े रहते हैं)

त० कौं रे सूअर के बच्चों! जून खतम होना चाहता है और बाकी अभीतक नहीं अदा हुई!

एक लंबरदार। हुजूर गामनमें हवा फैल रही है, कितेक घर उजड़ है गये, जासे रुपा रुक रहे।

दूसरा लंबरदार। गरीबपर्वर! बाकी का बिना दिये छुटैगो?

त० नाजमत खां! इन हरामजादों को नोम से बांध कर पांच पांच जूते तो मारदो और वो बेटो का ··· पटवारी कहां है? बुलाओ तो उस साले को!

[पटवारी गिरता पड़ता आता है, और अपनो पगड़ो तहसीलदार के पैरोंमें रख देता है)

त० । कौंवे पटवारी के बच्चे! तेरो कंबख्तो आगई है, क्या? तुझे सर्कारो बाकी को कुछ भी पर्वाह नहीं है? बेईमान! हरामखोर! गांव में बैठाबैठा रुपे बनाता है नाजमतखां! लेजाओ, इन सब बदजातों को ज़रा ठीक तो करो!

सब। दुहाई है, सर्कार की, हमारी अर्ज सुन ले, फिर जो चाहें सो करे- हम सर्कार के ताबेदार हैं, कोई बात से बाहर नहीं।

त० अच्छा लाला शोतलदास! इन लोगों को बाहर लेजाओ, ये क्या कहते हैं, सुन कर फिर हमसे कहो।

[सब जातेहैं, और दूसरा चपरासी आताहै]

च० हुज़ूर! लाला भींदामल और मौलवी साहब तशरीफ़ लाये हैं।

त० अच्छा आनेदो!

[लाला भींदामल और मौलवीसाहब का प्रवेश]

भींदा। जनाब को आदाब अर्ज़!

त० बंदगी जनाब! आइये, तशरीफ़ रखिये।

भीं०। हुजूर का मिज़ाज।

त०। अब तो आप की इनायत है, बुखार तो जाता रहा, मगर किसी क़दर कमज़ोरी है।

भींदा। इलाज किसका होता है?

त०। अब तो किसी का नहीं, मगर पेश्तर बाबू कांतीचंदर का होता रहा।

भींदा। खुदा आपको शफ़ा बख़्शे!

त०। कहिये, जनाब! वह कलेक्टर साहब का रूबकार भी देखा है।

भींदा। जी नहीं।

त०। अरे रहमता! हमारा बक्स लाना

[रहमता बक्स लाता है]

त० (बक्स खोल कर) यह देखिये!

भींदा (रूबकार देख कर) जी हां! देख लिया; फ़र्माइये।

त० फ़र्माना क्या लेडीडफ़रिन् फंड में चंदा लिखिये!

भींदा। जी हां पहिले ज़िले के बड़े बड़े रईसों से चंदा लिखाइये, तो फिर बंदा भी हाज़िर है।

त० अरेमार्! बड़े २ रईसों से वह खुद लिखालेंगे, हम तो अपने शहरवालोंसे लिखा लें; लिखिये।

भींदा। अगर यही मंजूर खातिर है, तो लीजिये।

त०। देखना कागज़ मत बिगाड़ना।

[भींदामल १०१) रुपा चंदा लिखता है]

त० हैं हैं! यह क्या करते हो? कागज़ बिगाड़ते हो, इतना तो एक कुंजड़ा भटिहारा लिख देता है।

भींदा। आपका कहना कर दिया मैं तो पचास लिखने को था!

त०। अच्छा लाला! तुम्हारी खुशी, कहिये वह हमारा फ़िटन का वादा कब पूरा होगा?

मौलवी। जनाब! लाला साहब तो कई दफ़ा फ़र्मा चुके कि फ़िटन लेजाओ, मगर हुजूरने ही कुछ खयाल नहीं किया!

त० हां बीमारी की वजह से कुछ खयाल नहीं रहा, मगर अब उसकी क़ीमत कितब हो जानी चाहिये।

भींदा। जनाब! कहीं कांटों में घसीटते हैं? क़ीमत क्या वह तो आप ही की

चीज़ है।

त० खैर! हमारी ही चीज है तो भेज दीजियेगा।

भाँदा। हां जनाब! उस मुआमले का क्या रहा?

त० उस मुआमले का सब बंदोबस्त हो गया है मगर आप दो एक रोज में साहबसे मिल लें!

भाँ०। बहुत खूब, मगर ऐसे वक्त में मिल ना चाहिये, जब आप भी हों।

त० मैं कल ज़रूर साहब से मिलूंगा आप भी सात बजे तक आजाइयेगा।

भाँ०। बहुत खूब, तो अब इजाज़त हो.

त०। कैसे कहूं।

(सब जाते हैं)

(शेष आगे)

—(*)—

भूखे बापकी चिट्ठी।

[परिहास]

बेटा रघुवर!

जीते रहो. हम आज कल बहुत दुःखी हैं. क्योंकि तुम जानते हो कि अन्न और जल सबका जीवन है जबसे तुम आर्यसमाज में मिले अन्न तो हमारा उसी दिन से मारा गया. क्योंकि अब न तुम श्राद्ध करते हो, न हमें मुट्ठी टर अन्न मिलता है। और जल भी मारा गया, क्योंकि तर्पण का भी तुमने तर्पण करलिया. अब हमारे लिये सदा चौरानवां, चौंतीसा, और चालीसा अकाल है. भैया! आज कल कनागत हैं, हमारे और साथियों को नित्य मैदा की पूरी खस्ता कचौरी, हलवा, रबड़ी, मलाई, दूध, दही आदि छप्पन भोग, छत्तीसों व्यंजन खाने को मिलते हैं, और यह तुम्हारा बुड्ढ बाप मन ही मन में तरसता, और कुढता है, बरंच लाज से मरा जाता है क्या तुम को इस की बुभुक्षित अवस्था पर दया नहीं आती. मैं देखता हूं तो तुम कंगाल भी नहीं हो, कई लच्छ रुपये तो मैंने ही जमा करके छोड़े थे, और तुमने भी बेटा बहुत पैदा किया, पर मेरे किस अर्थ का? मैं तो एक टुकड़े रोटी का मुहताज हूं हाय! मैंने तुम्हारे मोह, और लोभ से जीतेजी कुछ धर्म नहींकिया, नहीं तो वही इसकठिन समयमें आड़े आता और अब तुम भी तोताचश्म होगये? भैया! जोतुम कहते हो कि ब्राह्मणोंके खिलानेसे तुम्हें कैसे मिलेगा, सो निरीफिलासफी की बातों से तो काम नहीं चलेगा। ज़रा दो चार ब्राह्मणों को खिला कर देखो, जो मुझे न पहुंचे, और फिर मैं तकाज़ा करूं तो धक्के देकर

निकाल देना, पर बेटा! तुम जो दयानंद कालिज, और फीरोज़पुर अनाथालय में चंदा देते हो, वह तुम्हें पर लोक में कैसे मिलेगा? क्या उसकी रसीद का तुमने भरोसा कर लिया है, खैर, तुम्हारी इच्छा हम तो अपने पुत्र ऋण को निबटा चुके, अब देखें तुम अपने पिता का ऋण कैसे चुकाते हो? बेटा! अपने मृत पितरों के नाम पर मुसलमान, और ईसाई भी कुछ कुछ फ़ातिहा को तौर पर देते हैं, पर तुमने उन्हें भी मात करदिया! यदि तुम को आज कल के पोप धूर्त्त ब्राह्मणों से घृणा हो, तो इन्हें मत भोजन कराओ, अपनी बुद्धि से अच्छे ब्राह्मणोंको निमंत्रणकरके जिमाओ। पुत्र! श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन तो उपचार मात्र है, वास्तव में इससे पितरों का स्मरण उनका सत्कार, अथवा दायभाग का प्रमाण है, हम नहीं जानते कि भविष्य सृष्टि के लिये तुमने इन बातोंका क्या प्रबंध कियाहै? हम तुमसे मिठाई मोहनभोग की हो जिद नहीं करते, यदि तुम से कुछ न बने तो एक लोटा जल, और पैसे के जव तिल ही हमें उत्सर्ग करदो, इतने में ही हम अपनी छाती ठंढी करलेंगे। और तुम्हें पुत्र पौत्रादि की समृद्धि के लिये आशीर्बाद देंगे, यदि इतने पर भी तुम्हारे कठोर चित्त में कुछ करुणा का उद्रेक नहो तो तुम को, और हम को दोनों को धिक्कार है, जिनके ऐसे कुलांगार पुत्र, और ऐसे अभागे पिताहों। अस्तु! हम तो संसार में किसी को मुख दिखलाते ही नहीं, पर तुम्हें भी किसी को मुंह दिखलाने को ठौर नहींहै, पुत्र अब हम बिदा होते हैं, यदि पितर के नाते हमको न मानो तो पूर्व पुरुषके संबंधसे ही मानो। यदि कुछ भी नहीं, तो पितृ पक्ष में हमें "बेवकूफ़" 'ओल्डफूल' कह कर तो गालियां मत दो और हमारी जली छातो को अधिक न जलाओ। कुछ तो हमारे रुधिर के अंश का विचार करो! कुछ तो आर्य भाव का भाव रखो!! कुछ तो बुड्ढों को खबर लो!!!

केवल तुम्हारा:—
दांतों से दोन, नेत्रों से हीन,
दूध खपसी का पचासा
श्राद्ध से निरासा,
बूढ़ पिता।

—(०-*-०)—

भरत मिलाप।

(पंच)

कहो यार! आज भरत मिलापका मेला है, देखोगे या नहीं? जरूर चलिये, अरे मनसुखा! घडी लाना भी: तीन बज कर चार मिनट्! कपड़े लाओ, चलिये, तो कहिये किसमें? इक्के में या रेल में? शाबाश यों न कहिये गधे पर? रेल होते इक्के पर बैठना आपही से बुद्धिमानों का काम है! दो लाख बत्तीस हजार खर्च कर रेल किस

लिये बनाई गई ? चलो देर मत करो ! ओ हो ! आज तो वृंदाबन के चारों दर्वाजों से इस तरह भीड़ चली आती है जैसे कोई भाजड़ पड़ती है ! लाला ! आज तो पुरुष ही पुरुष दिखलाई देते हैं स्त्रियां बहुत कम इक्का दुक्का यह क्यों ? भाई ! ये दूरका मेला है, पर्दानशीन नहीं जासक्तीं खैर टिकट लो, तीन पैसे का, मथानो तक का, उह ! धक्का धुक्की क्यों करते हो, दो टिकट मथानी के बाबू साहब ! 'खट् खट् लो !' चलो ! ओः बैठने को तो कहीं जगह ही नहीं है, आओ यह गाड़ी खाली है 'महाराज ! तिहारे गुलाम मत्तर बैठे हैं' हत्तेरा बुरा हो आओ ! भंगड़ों के अखाड़े में चल बैठो ! 'उस्ताद जै बलदेव ! आज तो मथुरा को भरत मिलाप खूब देखलें, रामचंद्रजी को रूप छकलें और क्या ? यह देखो स—वारी आई, ओहो' क्या भंगकी तरंग है ! रेल पर ही बैठे २ सब मेला देखलिया ! अजब शहरबीन है ! क्यों नहो 'भंग से ऊंची तरंग उठें जब अंग में राजत भंग भवानी' 'टन टन् टन्' दूसरी घंटी बजी ! आओ ! आओ ! यह जगह है ! और फिर तुम से नूरचश्मों के लिये तो कलेजा फाड़ कर जगह करदें ! आओ मिहरबान ! इतनी देर क्यों करदी ? 'क्या कहूं, यह हमारे फ्रेंड बड़े आइड्ल् हैं, यह अब तक प्रोपेर नहीं हुए, इसीसे इतना लेट् होगये ?' वाह भई ! यह क्या बोली है, यह रेलवे इंग्लिश् है ! यह लो 'लाइन् क्लोअर' गया, घंटी दी 'टन् टन् टन्' 'हू हू हू' बोल राजा रामचंद्र की जै ! ओः बोस पचोस मुसाफ़िर रहगये ! 'ध ध ध झ झ झं' यह महाराज जयपुर का मंदिर 'माधव निवास' है जब बन जायगा, तब वृंदाबन की एक दिशा को पूरी शोभा देगा ! यह दावानल कुंड ! यह परिक्रमा ! आज एकादशी है न, इसीसे माला पुर रही है ! यह पुरुषोत्तमपुरा ! यह अहिल्यागंज ! वाह भाई यह कानपुर अक्बेरा रलवे की गाड़ी बड़ी उम्दा है एक सिरेसे दूसरे सिरे तक चले जाओ ! सारा वृंदाबन गाड़ी में देखलो 'हू हू हू' यह मथानी आगई 'मथुरा सिटीका उतरने वाला उतरो' 'तीन पैसे को टिकट का मुसाफ़िर निकलो' 'फररर र' सब चिड़िया उड़गईं जाने दो, हम तुम न बिछुड़ें ! चलो ! यह कुर्सियां क्यों बिछी हैं, यहां महाराज रघुराज को आरती होगी ! ली अब बाजार आगया ज़रा क़ायदे से आहा ! आज तो मथुरा अयोधया होगई ! सारा बाज़ार दुसालों और सेलोंसे छारहा है कलाबत्तू और कमख्वाब से चमकदमक रहा है ! ओहो ! छत्तों, चौबारों पर तो तिल धरने को जगह नहीं तमाम लाल, पाल, काले, जंगाली दुपट्टे धुजाओं की तरह उड़ रहे हैं नीचे देखें, या ऊपर देखें, कुछ कहा नहीं जाता ! आज तो श्रीमद् भागवत की 'राम सवारी' और 'मथुरा प्रवेश' दोनों का पूरा अनुभव होरहा है !

वरन विचित्रता यह कि मथुरा में अयोधया! व्रज में राम! जय जय जय! आहा! आप क्यों अलग मान करके बैठे हैं? अब आपको पूंछता ही कौन है? शहर तो बहुत देखे पर मथुरा तो मथुरा ही है! सचमुच 'तीन लोक से न्यारी मथुरा' हां 'ददर्शतां स्फाटिकतुंग गोपुर द्वारांतरुद्धहेम कपाट तोरणां' लीजिये चौक आगया! बस आज यही गोद और यही मैदान! आज यहीं राम और यहीं अयोधया! और यहीं आज प्रेमी लोगों के प्राणों को न्यौछावर है! और इसी रंग भूमि में दो घंटे के लिये आज इंद्र का अखाड़ा 'तमाशा' करेगा. नीचे ही नीचे जड़ भरत की तरह मत देखो, ज़रा ऊपर भी! हायर गजब! यह कौन! यह उर्वशी! नहीं नहीं तिलोत्तमा! नहीं नूरजहां! यह नाम ही पसंद नहीं, तो 'क्लिओपेट्रा!' ओः! यह तो कुछ रूप ही विलक्षण, और अदा ही और है, पर भोलापन भी गजब का है; यह मथुरा में First class occammodation है! चलेचलिये, अभी दिल्ली दूर है, यह कौन स्त्री धारिणी परम वैष्णवी? यह कलियुग की पिंगला हैं, वाह भाई डोरी वालो! तुमने भी खूब मजा डाट रक्खा है, हां, अपनी अपनी चतुराई महाराज को दिखलाओ! यह क्या हटो, बचो गाड़ी आई गाड़ी आई! यह कौन? शहर के रईस, आनरेरी मजिस्ट्रेट, म्यूनिसिपालिटी के मेंबर वगैरः वगैरः! ओहो! यह मकान? द्विजराज जगोतिर्विद् माधवलाल जी, मथुरा के भूषण हैं! वाह यह क्या? पुरखों के पुराने पोतरे ही सही? कुछ लगा दो! यह जमर मगर! हमारे मथुरा के राजा सेठ साहब की दूकान, बस अब लौट चलो यहां से आगे कुछ देखने को नहीं, यही पराकाष्टा है! यही परमागति है! लो तो अब एकबार कहीं ऊपर चढ़ कर देख लो, चौक में क्या भीड़ है? तिल धरने को जगह नहीं इस सिरे से थाली फेरो, तो उस सिरे तक चली जाय! इस समय मेला क्या चकचका रहा है? लो वह बाजे बजे रामचंद्र जी की सवारी आपहुंची, बोल राजा रामचंद्र की जय! अहा हा! क्या तपस्वी बेष की माधुरी है, आज फूलों की ऐसी वृष्टि हो कि चौक में घुटने तक कीच होजाय? लो वह भरतजी की सवारी भी आई! थानों का फ़र्श बिछगया! आहा हा! वह नालायक है जो इस समय लीला छोड़ कर मेला देखे आहा! भरत जी कैसे प्रेम से इतनी दूर से दंडवत् प्रणाम करने लग गये, उन के पीछे शत्रुघ्नजी भी क्या [पद पद पर] अनुपद प्रणाम करते चले जाते हैं! और वह भगवान् सीता जी तथा लक्ष्मण जी भी दौड़े! यह लो भरत जी और राम जी मिलगये, बोलो राजा रामचंद्र जी की जय! जय! जय! बोलो कौशल राजकुमार की जय! यह लो सीता जी लक्ष्मणजी भी भरतजीसे मिले!

और भगवान् शत्रुघ्नजी से मिले. हां आरती लाओ, फूल बरसाओ, नौबत बजाओ, घी के दिया जलाओ, आज तो चाहे सो करो चौदह बरस में यह जोड़ी फिर मिलो, अयोधया को उजड़ गद्दा फिर बसी! बोलो राजा रा० चं० की जय! अब मेला बिछुटा चाहता है, भाई! दो बातें कान लगा कर हम से ऊतबिलावों को भी सुन लो, प्रिय भारत बासी! आज जैसे राम और भरत मिले ऐसे ही तुम सब भाई भी शुद्ध चित्त से मिलजाओ! जैसे रामचंद्रजी ने भरतजी के लिये और भरतजी ने रामचंद्रजी के लिये परस्पर बनबास किया, ऐसे ही तुम परस्पर सहानुभूति करो! एक दूसरे के लिये प्राण दो! जिस समय तुम लोगों में यह भ्रातृ भाव होगा, उसी दिन तुम्हारे देशमें मंगलमय रामराज होगा! यही भ्रातृभाव जो आज आपने देखा, सब धर्मों का सार है! हिंदू, मुसलमान, क्रिस्तान, थियोसोफिष्ट, जैन, नास्तिक सब ऐसे ही भ्रातृ स्नेह के भिक्षुक हैं! सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर! भारत बासियों में भ्रातृभाव की उत्तरोत्तर वृद्धि करें। बोल राजा रामचंद्र की जय! बोल भरत भ्राता की जय!

अजीबोगरीब।

तमाशा! तमाशा!! तमाशा!!!

बहुत शीघ्र एक तमाशा हमारे शहर में होगा. लोगों ने थियेटर, सर्कस, बाजीगर, भानुमती, स्वांग, रास आदि के तमाशे अलग अलग देखे होंगे, पर एक ही तमाशे में इतने तमाशों का मजा न देखा होगा, वह इस तमाशे में एकत्र देखलें। इस तमाशे में अव्वल तो थियेटर का ढंग रहेगा, बहुत साहब अपना अपना पार्ट करेंगे, फिर सर्कस की तरह गड़बड़ मचैगा, जिसमें कोई घोड़े की तरह, कोई हाथी की तरह, कोई बंदर की तरह, कूद, फांद, चिंघम् आदि करेंगे। फिर बाजीगर की तरह दर्शकों से पैसा वसूल होगा, और भानुमती सब पैसों को उड़ा देगी. यदि बना तो एकाद सांग भी सारे शहर में घूमेगा, और रास तो ज़रूर ही होगा. जोकि इस तमाशे में अंग्रेजी दांसभ्य काम आवेंगे, इस लिये सभ्यता का बर्त्ताव नहीं रहैगा. जोकि भांडों की नक़लों से भी लोगों को प्रसन्नता होती है, इस लिये बहुत से लखनऊ, दिल्ली के भांड़ आवेंगे, और वह बेतकल्लुफ़ नक़लें करेंगे। चाहें देखनेवाले लज्जित क्यों नहीं? सिवाय इनके मथुरा के चौबे, और दो चार व्रजबासी भोंगा भी आवेंगे, और अपनी अपनी तान आलापेंगे। पंजाबी लोग चंकि बहुत भोले हैं, उन को

इस तमाशे में 'स्पेशल' जगह दी जायगी। मगर आर्य समाजी एकभी न घुसने पावेगा क्योंकि यह मज़ा बिगाड़ने वाले पत्थर के टुकड़े हैं, पूरब के लोग इतने धोंधा नहीं है, इस्से हम उनके आने को कम उम्मेद रखते हैं; पर पश्चिम के लोगों के लिये तो यह तमाम झगड़ा हो रचा गया है, जोकि इ—मारी कंपिनी ने यह सोचा है कि पुराने टाइप् के हिंदुओं में ब्राह्मणों का ज़ोर ज़्यादा है, इसलिय ब्रह्मभोज, दक्षिणा और यज्ञ आदि का भी प्रबंध होगा। विशेष बात इस तमाशे में यह होगी कि इस के तारभी भारत शत्रु पायोनियर, सिविल् आदि को दिये जायेंगे, जिसमें सिरसे पैर तक झूंठ भरो रहैगो, जिसको पढ़ कर बहुत लोग धोखे में आवेंगे, और हमारे तमाशे को उत्तम तमाशा समझेंगे, जोकि नेशनल् कांग्रेस् का नाम सर्कारी खुशामद में आज कल बदनाम है, इस लिये उसका ज़िकर भी न आने पावेगा और गोरक्षा यदि च हिंदुओं का परम धर्म है, परंतु इस तमाशे से उस्से कोई संबंध ही नहीं, क्योंकि उस्से यह कंपिनी गवर्नमेंट में झट मशकूक होजायगी। पस जो लोग इस तमाशे को देखना चाहें, वह हम से टिकट हासिल करे।

जे० सी०

जेनरेल तमाशा कंपिनी

गोस्वामी ग्रन्थालय, वृन्दावन।

श्री राधाचरण गोस्वामी प्रकाशित पुस्तकावली

सुलभ मूल्य! नक्ददाम, या वेल्यूपेबिल!! पांच रुपयेसे ऊपर दो आना रुपया छूट!!! डाकखर्च माफ़!!!!

॥ वैष्णव धर्म ॥

१ शिक्षामृत (श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु का ८ श्लोकों में उपदेश)

२ श्रीराधारमण पदमंजरी (श्रीजी के नित्य कीर्त्तन तथा वर्षोत्सव के पद) बिना मूल्य.

३ श्री युगलकुञ्ज (घटबई, गौरसखा, चित्रकारिणी और व्यापारिणी लीला) बिना मूल्य.

४ नव भक्तमाल (भक्तमाल के पीछे प्रगट हुए भक्तों की कथा) ।)

॥ समाज संशोधन ॥

५ आर्य शब्दका उपपादन (हिंदू नाम का निषेध)) ॥

६ देशोपकारी पुस्तक (देशोपकार की मूल बातें) ⁄)

७ विदेशयात्रा विचार [विलायत जाने की

आवश्यकता तथा प्राप्त्यर्थ] ।)

८ विधवा विवाह विवरण [विधवा विवाह का युक्ति शास्त्र और कानून से विधान] ॥)

॥ शिक्षा ॥

९ हिंदी बंगला वर्णशिक्षा (बंगला प्राइमर) ⁄)

१० शिक्षासार (महानुभावों के १५० उपदेश) ⁄)

॥ कविता ॥

११ इश्क चमन [प्रेम के ४५ दोहे])।

१२ निपट नादान (बारहमासी))।

१३ दामिनी दूतिका (विरहकी कविता) ⁄)

१४ शिशिर सुषमा (शिशिर ऋतु के कवित्तों का संग्रह) ⁄)

॥ नाटक ॥

१५ तप्तासंवरण [शृंगाररस का अपूर्व नाटक लाला श्रीनिवास दास कृत] ।)

१६ भंगतरंग (भंगका रंग, भंगड़ोंका ढंग) ⁄)

१७ बूढ़ेमुंहमुंहांसे (बगुला भगतों की मिट्टी खराब) ⁄)

॥ उपन्यास ॥

१७ जाविचो (अपूर्व प्रेमकथा) ⁄)

१८ विधवा विपत्ति [असहाय विधवा की यंत्रणा] ⁄)॥

॥ परिहास ॥

२० यमलोक की यात्रा (पंचों का सरपंच, और नरकों का प्रपंच) ⁄)

२१ नापित स्तोत्र (नापितोंकी संरोपाव) ⁄)

२२ रेलवे स्तोत्र (रेल का खेल) ⁄)

२३ भारतेंदु मासिकपत्र (धर्म, कर्म, इतिहास, परिहास, नाटक, उपन्यास, पंच, प्रपंच आदि) चतुर्थ खंड ॥)

२४ व्रजेंद्र-विजय (वीररस का काव्य) भरतपुर के महाराज जवाहर सिंहजी के द्वारा दिल्ली का विजय मूल्य ⁄)

२५ तन, मन, धन, श्रीगुसाईंजी के अर्पण (प्रहसन) भंडचरित्र का दर्पण, गुरु—लोगों का तर्पण, भेड़ भगतों का सर्वस्व समर्पण मूल्य ⁄)

२६ सतीचंद्रावली (ऐतिहासिक नाटिका) चंद्रावलीका पातिव्रत्य, अशरफखाँ की दुष्टता, नरेंद्रसिंह का साहस, औरंगजेब का पक्षपात सब अपूर्व है मू० ⁄)

मनोहर पुस्तकें।

रणधीर प्रेममोहिनी [नाटक] मू० ॥)

परीक्षागुरु [उपन्यास] मूल्य ॥)

संयोगता स्वयंवर [नाटक] मूल्य ।⁄)

व्रजविनोद (व्रजके तीर्थ और प्रसिद्ध स्थानों का वर्णन) मूल्य ॥)

पावसप्रमोद [वर्षाऋतु की कविता का सं-

ग्रह] मूल्य ।≠)

॥ ईसाई खंडन ॥

ईसाई मत खंडन ।)

ईसू चरित्र)॥

गर्दभसेनोद्धार ≠)

॥ कांग्रेस ॥

बातचीत, बिना मूल्य

॥ कविता ॥

जगत विनोद १ भाग ।)

मनोज मंजरी १ भाग ।) २ भाग ।≠)

३ भाग ।)

बुढ़िया बखान ≠)

बीणारस मंजरी ≠)

॥ नाटक ॥

महाअंधेरनगरी ।)

कलिकौतुक ≠)

॥ यात्रा ॥

लंडन का यात्री ≠)

॥ परिहास ॥

मूषक स्तोत्र, वैद्यराजस्तवराज, लालगुरु संवाद [महतर स्तोत्र] ≠)

राधाचरण गोस्वामी

वृंदावन, जि० मथुरा

पुराने ग्राहकों के प्रति

भारतेंदु के जिन पुराने ग्राहकों का १) से लेकर ।) तक जो कुछ हमारे पास बाकी है, उनको १ वर्ष तक "भारतेंदु" उतने ही दाम में मिलेगा, और अधिक दाम उन से नहीं लिये जायेंगे। विशेष जब कि श्रावण १९४३ (अगस्त १८८६) में 'भारतेंदु' बंद हो गयाथा, उस समय ग्राहकों को बाकी मूल्य में नवीन पुस्तकें देने की प्रतिज्ञा की थी, और 'विदेश यात्रा विचार' तथा नवभक्तमाल' ।) मूल्य की पुस्तकें भी ग्राहकों को दी गईं थीं, उन पुस्तकों का मूल्य अब मुजरा न होगा, न पुराने हिसाब को कांट छांट की जायगी। हम आशा करते हैं कि हमारे पुराने अनुग्राहक ग्राहकगण इस प्रबंध से प्रसन्न होंगे, और हम पर पूर्ववत् अपनी दया दृष्टि रखेंगे।

१ अक्टूबर, १८९० । राधाचरण गोस्वामी अध्यक्ष भारतेंदु।

भारतेन्दुकेनवीननियम

१—यह पत्र प्रति अंग्रेजी मास की १ तारीख को छपैगा।

२—इसका वार्षिक मूल्य १) डांक व्यय सहित पेशगी लिया जायगा, पीछे का कुछ हिसाब नहीं।

३—नमूनेका १ अंक बिनामूल्य मिलेगा.

४—विज्ञापन की छपाई प्रति पंक्ति ≠) है विशेष दिनों के लिये स्वतंत्र नियम है।

५—सब चिट्ठी, पत्री, मनीआर्डर आदि इस पते से आने चाहियें।

"राधाचरण गोस्वामी

वृंदावन, जि० मथुरा"

रसिक काशी कोतक यंत्रालय—देहली

भारतेन्दु

(विविध-विषय-विभूषित मासिक पत्र)

श्री राधाचरण गोस्वामी सम्पादित.

श्रीवृन्दावन, श्रीराधारमण ष्ट्रीट १११ नम्बर
भारतेन्दु-कार्य्यालय से प्रकाशित।

"कार्य्यम्वा साधयेयम्, शरीरम्वा पातयेयम्"

पुस्तक ५ | १ फरवरी १८९१ ई० | अंक २

खालसा कालिज

अतीव प्रसन्नता पूर्वक प्रकाश करते हैं कि ईश्वर की कृपा से खालसा कालिज कमीटी बहुत कुछ कृत कार्य होगई है, प्रायः तीन चार लाख रुपये की पूंजी जितने थोड़ दिनों में इस कमीटी ने एकत्र की है, दूसरी कमीटियों का कभी इतना भागोदय नहीं हुआ। इसमें अधिक अभी सर्कारी सेना और काश्मीर कौन्सिल का चंदा बाकी है, जिस से अनुमान होता है कि धन संबंधी त्रुटी न रहै गी। हम समझते हैं कि इस कमीटी के योग्य और उत्साही मेंबर प्रतिदिन इसकार्य

को अधिक उत्साहसे करेंगे. परंतु "अनिष्ट शंकीनि बंधु हृदयानि भवंति" यह न्याय है इस से हम को दो एक बात को आशंका है. जिसे हम उन के हित के लिये अवश्य कहें गे। एक तो यह कि सहयोगी राजस्थान समाचार को अनुमति के अनुसार यह कालिज कहीं राजकुमार कालिजों का सा नुमायशी न होजाय? दूसरा हमें संदेह है कि कहीं इस का वह दुष्परिणाम न हो, जो मुहामडन कालिज का हुआ. अर्थात् मुसलमानों में जो अबतक बीरता का जोश था, वह निकल गया! अब जिसे देखिये, वह लाल टोपी पहनकर सिविलाइज्ड बन जाता है, और नौकरो की तलाश में बंगले बंगले, मारा मारा फिरता है या हाकिमों की तरह तरह को खुशामद करताहै. ऐसा हो कहीं हमारे भाई सिंह लोग अंग्रेजी पढ कर बाबू न बनजायें, जिससे लोगों को यह कहने का अवसर न मिले कि सिंहों ने सियारों की वृत्ति अवलंबन करली। तात्पर्य यह कि कालिज में निरी फिलासफी ही न पढाई जाय, कुछ वीर-विद्या की भी शिक्षा हो जिससे सिक्ख लोग अपना पूर्व गौरव न भूलें! आगे दाता गुरूजी दी मर्जी!

हिन्दुओं में जातीय भाव की आवश्यकता

हम देखते हैं तो हिंदुओं में जातीय भाव नहीं है। एक हिंदू दूसरे हिंदू के लिये उस प्रकार प्राण बिसर्जन नहीं करता, जैसा एक अंग्रेज, या मुसलमान, अपनी जाती वाले के लिये करता है। अंग्रेज दूसर अंग्रेज को मूरत देखते ही जिस आनंद से हाथ मिलाता है, मुसलमान डाढ़ी, और बायां पर्दा देखतेही जिस आल्हाद से 'सलाम' 'अलेकुमसलाम' करता है, हिंदू पुच उस प्रकार आनंद से एक दूसरे से भुजा पसार कर नहीं मिलते. इसका क्या कारण है? जहां तक सोच ते हैं, इसका मुख्य कारण यह है कि हिंदुओं में जाति भेद है. ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, ये चारों अपने को एक दूसरे से अलाहिदा समझते हैं. और क्यों न समझें जब एक दूसरे को छाया तक के रवादार नहीं एक नीची जातिका हिंदू चाहे घोर गर्मी में पानी से तड़फ कर मर जाय, पर उच्च जाति का हिंदू अपने लोटे से उसे एक बंद पानी न देगा! क्या इसी आधार में जातीय भाव रह सक्ता है? अब चारों वर्ण भी एक नहीं ब्राह्मणों में गौड़, कान्यकुब्ज, सारस्वत, एक दूसरे के साथी नहीं,। क्षत्रियों में चौहान, पंवार, सोलंकी, एक दूसरे का जल नहीं लेते. वैश्यों में अग्रवाल, खंडेलवाल भिन्न भिन्न और शूद्रों की तो कभी नाम मात्र भी

एक जातीयता नहीं.तो अब बतलाइये, जातीय भाव किसमें रहे ? फिर अंत जातियों में भी कई कई भेद हैं, जिससे हिंदुओं का जाति में चलनो से अधिक छिद्र होरहे हैं। तो फिर अत्यंत रस रूप जातीय भाव उसमें कैसे ठहर सक्ता है ? परस्पर भोजन, पान विवाह, संबन्ध आदि ही जातीय भाव के साधन हैं, सो वह तो हिंदू जाति से उड़ही गये। दूसरा कारण, धर्म की एकता, सो भी नहीं; आचार बिचार में तो कुछ एकता, है पर धर्ममें सब अलग अलग, १८ कोटि हिंदूओं में २।४ हजार धर्म होंगे, जो आपुस में बंदरों को तरह लड़कर हिंदूजातीय भाव का अंग भंग किये डालते हैं. अब थोड़ासा तीसरा कारण कुछ बाकी रहगया है, अर्थात् एक शास्त्र का मानना, पर उसमें भी गड़बड है, अपने अपने मतलब के अर्थों की गढंत करके परस्पर कलह करते हैं तो फिर यह भी जातीय भाव का मूल कारण न रहा अभी तक सिख, ब्राह्मों, आर्य समाजो, जैनी, हिंदू गिने जाते थे, पर इस लोक संखया में वह भ्रम भी जाता रहा अब ये लोग अलग जातिका दावा करते हैं हिंदू बनना नहीं चाहते हैं. निदान हिंदओं में जातीय भाव नहीं है, यह कह सक्ते हैं, परंतु जो वस्तु न हो उसे सम्पादन करना चाहिये।

(शेष आगे)

नेशनल्-कांग्रेस-कीजय !

बड़े आनंद की बात है कि नेशनल्-कांग्रेस का छठा अधिवेशन २६ डिसेम्बर से २८ तक कलकत्ते में बड़ी धूम धाम से हो गया ! कांग्रेसकी धूम धाम, और रेजोलूशन हमारे पाठकों ने समाचार पत्रों में सविस्तर पढ़ लिये होंगे, इससे हम उन का वर्णन नहीं करना चाहते केवल कांग्रेस की वर्त्तमान अवस्थापर कुछ लिखेंगे।

सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर की महिमा महान् हो कि कांग्रेस्-कल्पतरु का बीज ऐसे शुभ क्षणमें आरोपण हुआ कि अनेक विघ्न बवंडरों के होते भी प्रति दिन यह वृक्ष बढता ही जाता है. जिस समय प्रथम बंबई में सन् १८८५ में कांग्रेस् का प्रथम अधिवेशन हुआथा, उस समय ८५ प्रतिनिधि भी (डेलो गेट) न थे. सन् १८८६ में बंबई में १८८८ होगये. ५ वर्ष में इतने डेलोगेट् अंक शास्त्र के किस नियम के अनुसार बढ़े, पाठक मृत: अनुमान करलें। यदि इस वर्ष १००० डलो गेटों की मर्यादा न होतो तो ३००० तक संखया पहुंचती। कांग्रेस के खर्च और आमदनी का हिसाब हम ठीक ठीक नहीं देसक्ते हैं, पर पाठकों के संतोषके लिये कह सक्ते हैं कि आनुमानिक ५ पर ०००० बिंदु चढ़गई. अत:पर डलीगेटों का मार्ग व्यय, स्थानीय सभाओं के ऐक्सपेंस, और पुस्तकों की छपाई का खर्च इस पंज से अलगहै.

वाकी कार्य कर्त्ताओं के परिश्रम, और निज की हानि के दाम तभी ठीक ठीक गिने जायेंगे, जब कांग्रेस के द्वारा भारत वर्ष का अतुल उपकार होगा। विरोधियों में सर सैयद अहमद, और मिष्टर अमीरअली ने कुछ मुसलमान साहबों को भडकाया था, पर बुद्धिवान् मुसलमानों ने इन को एक न सुनी और कांग्रेस् में हिंदुओं के समान आज भी शरीक हैं. विशेषत: इलाहाबाद की कांग्रेस के अनंतर विरोधियों को ऐसी निराशा, वा लज्जा हुई कि अब न सैयद अहमद का मद रहा, न नवलकिशोर का शोर रहा, न राजा भिनगा को भिन भिन, न राजा शिवप्रसादका फसाद! अब चारों ओर कांग्रेस की ही जय ध्वनि सुनाई पड़ती है अब की बार कांग्रेस पर गवर्नमेंट की कुछ वक्र दृष्टि थी, परंतु उसका भी भ्रम अब जाता रहा! गवर्नमेंट ने स्वयं इस का प्रतिवाद कर दिया है. हम समझते हैं कि अब विरोध न रहा विशेषत: कांग्रेस की जड़ सत्य पर है, सत्य का विरोध चल नहीं सक्ता अंत में "सत्यमेव जयते नानृतम्" अब कांग्रेस की सफलता कहां तक हुई है, इसकी विवेचना करना चाहिये। सिविल् सर्विस की परीक्षा में जो अवस्था बढी, यह कांग्रेस का प्रथम फल है. कौंसिलों के सुधार की जो बिल बनी है, वह द्वितीय फल है. और पुलीस कमीशन तृतीय फल है. आगे जो कुछ फल होंगे, उनकी कलियां फूट आईहैं

कांग्रेस् ने इन छ: वर्षों में जिस प्रकार उद्योग, और अध्यवसाय किया है, और जो कुछ मभ्रता पूर्वक आन्दोलन भारत और इंगलेंड में किया है इस से यह बात हर एक बुद्धिवान् मान लेगा कि भारत के राजनैतिक विषय में यदि कुछ परिवर्त्तन होगा, तो ऐसी ही सभा से होगा। बस तब सब भारत वासी मात्र का यह कर्त्तव्य है कि तन मन धन से कांग्रेस की सहायता करें. और यह न सोचें कि बडों बडों के आगे हमें कौन पूंछताहै? यह बड़ी भूल है, कांग्रेस् में सबका समान अधिकार है, यहां तक कि जब तक एक भारत वासी भी कांग्रेस से विमुख रहेगा, तब तक इसको पूरी सफलता न होगी.

हम बड़े उत्साह से आशा करते हैं कि आगामी नागपुर की कांग्रेस् के लिये हमारे पाठक जन अभी से उद्योग करेंग।

हम ऐज औफकौन्सेन्ट के फेवर में हैं !!!

आज कल एक बड़े गंभीर विषय की चर्चा संपूर्ण भारत में हो रही है. वह यह है कि इन्डियन् पिनल कोड (ताज़ीरात हिंद) के अनुसार अभी तक १० बरस से कम अवस्था की स्त्री के साथ जो कोई संग करता था वह दंडनीय समझा जाता था, अब यह न

या क़ानून होने वाला है कि जो १२ बरस से कम अवस्था की स्त्री से संग करेगा, वह दंडनीय होगा। इस विषय-की मिमांसा करने से पहले इस आईन का इतिहास लिखना उचित है। यह सब को विदित है कि बाल्य विवाह से भारतवर्ष विशेषतः हिंदू समाज की बड़ी दुर्दशा होरही है, बहुत दिनों से अनेक देशहितैषी इसके बंद करने की चेष्टा कर रहे थे, परंतु हिंदू समाज उनका कहना कब सुनतो है, सिवाय थोड़े बहुत लोगों के और किसीने इस कुरीति को पर्वाह नहीं की। तब बाल्य विवाह के विरोधी (जिनमें बंबई के पार्सी मिष्टर मालाबारी मुख्य हैं) लोगों ने गवर्नमेंट से यह प्रार्थना की कि एक ऐसा कानून बने, जिससे बाल्य विवाह जबरन् रोका जाय। परंतु देशमें इसका प्रतिवाद बहुत हुआ, और यह कहागया कि हम आप अपनी कुरीति सुधारेंगे, गवर्नमेंट क्यों हाथ डालतो है? इससे गवर्नमेंट ने भी मौन साध लिया और कोई नया कानून पास नहीं किया,

परंतु अब बाल्य विवाह के बिरोधियों ने एक दूसरा उपाय सोचा है, कि संभोग की अवस्था १० से १२ करदीजाय। इससे बाल्य बिवाह का दुःख कुछ मिटेगा। और गवर्नमेंट ने भी इस को स्वीकार किया। अब इस के बिरुद्ध लोगों ने जो संमतियां दीं हैं और कोलाहल किया है उसका क्रमशः विचार करते हैं। प्रथम धर्म में गवर्नमेंट हस्तक्षेप करतो है, यह ठीक नहीं है। क्योंकि संयोग की किसी अवस्था धर्ममें प्रतिपादन नहीं है, द्वितीय "भारत" की स्त्रियां प्रायः ११-१२ वर्ष में ऋतु स्नाता होती हैं, और ऋतु स्नाता से संभोग धर्म शास्त्र में विहितहै यदि उस समय संभोग न हो, तो पति को भ्रूण हत्या का दोष लगता है" यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि प्रथम तो बारह वर्षसे पूर्व इस देश में बहुत कम स्त्रियां ऋतु स्नाता होतीं हैं, द्वितीय होने पर भी पति सहवास कम होता है क्योंकि हमारे देश में संभोग का काल रजोदर्शन ही नहीं है, स्त्री पुरुष को परिपक्व अवस्था ही है, रजोदर्शन होने पर भी जब तक पति पत्नी समर्थ हो "गौना" (द्विरागमन) नहीं होता इसी से स्त्री पुरुष का संयोग वर्षांतक रुकारहता है, और १२ वर्ष के भीतर बहुत ही कम सुना गया है, परंतु जो दुहेजू तिहेजू पुरुष होते हैं, उन के पक्ष में अवश्य इस नियमसे कुछ गड़बड़ हो सक्ती है, क्यों कि उन को रजोदर्शन की भी अपेक्षा नहीं है, वह विवाह के दस पंद्रह दिन बाद ही अपनी पशु वृत्ति चरितार्थ करना चाहते हैं, तृतीय पुलिसको दस्तंदाजी निस्संदेह यह लोमहर्षण बात है, परंतु पुलीस को दस्तंदाजी इस में न रहेगी, मैजिष्ट्रेट साहब के हाथ में ही इस का भार रहेगा, और मजिष्ट्रेट लोग बहुत सोच समझ कर किसी के नाम कोई चार्ज करेंगे, विशेषतः गुम नाम अर्जियों पर तो मैजिष्ट्रेटों को खयाल ही हो नहीं सक्ता, य

दि कोई सन्मुख वादी खडा होकरके दावी करे गा, तो अब भी अखत्यार है. पर दावी करने वाले को भी भय अवश्य ही रहता है. अब इस बिल के पक्ष में यह युक्तियां हैं कि प्रथम बाल्य विवाहका जो दुःखदायी परिणाम है, इससे कुछ घटेगा. द्वितिय अवैध अत्याचारों से स्त्रियों की प्राण रक्षा होगी, और प्रसव आदि की पीड़ा से यंत्रणा न भोगेंगी। परंतु इस आईन के पास कर देने मात्र से कुछ लाभ न होगा. क्योंकि सर्व साधारण को इसका सहज मे ज्ञान होना कठिन है. जबकि सर्व साधारण अभी तक यह नहीं जानते कि कानून में १० बर्ष को अवस्था का नियम है। वह केवल अपनी समझ के अनुसार प्रवृत्ति करते हैं और जब १२ बर्ष का आईन हो जायगा, तब भी कानून का मर्म उनको विदित न होगा, इस लिये सर्कार को उचित है कि नोटिस् और मुनादी आदि के द्वारा इस बिषय को प्रत्येक ग्राम, और नगर में विदित करदे, जिससे भ्रम से भी कोई इस अपराध का अपराधी नहो!

L. N.

लज्जा! लज्जा!! महा लज्जा!!!

चुल्लू भर पानी में डूबने लायक लज्जा!!!

बड़े लज्जा की बात है कि 'बंग बासी' [जो कांग्रेस का जानी दुश्मन, समाज संशोधन का कंटक है] सदैव कांग्रेस् पर इस लिय घृणा करता है कि वह सर्कार के विरुद्ध प्रतिबाद करती है, उसकी प्रार्थना कोई पूरी न होगी, सर्कार अपनी नीतिको कभी नहीं बदलेगी! पर बंगबासी जी! अब खुद् क्यों आंखें बंद करके कर्ण भेदी स्वर से सहबास संमति के बिरुद्ध सभा और मेमोरियल देने का कोलाहल कर रहेहैं? और क्यों गवर्नमेंट को अपने धर्म में हाथ डालते देखकर ताते दूध बिलाई की तरह उछल कूद कर रहे हैं? बंग बासी जी! जिस तरह आप धर्म पर मुखमात्र से मरते हैं, कांग्रेस् हृदय से भारत के संपूर्ण अर्थों पर तन मन धन से नौछावर है! यदि तुम्हें कुछ कहने का अधिकार है तो कांग्रेस् को भी है, फिर क्यों वृथा देश शत्रु बनते हैं? यदि तुम्हारे कोलाहल से कुछ फल होगा, तो कांग्रेस् से भी होगा! क्योंकि तुम्हारा भी मूल सूत्र महारानी का घोषण पत्र है, और कांग्रेस् काभी है, बंगबासी! यदि आप कट्टर-स-

नातन हिंदू बनते हैं तो अंग्रेज़ी रीति की सभा न करें, क्योंकि यह मूर्च्छाचार है. आप पुरानी परिपाटी के अनुसार मुंह बांधकर गवर्नमेंट हौस के दर्वाज़े पर धन्ना दे या सब इकट्ठा होकर लाट साहब के आगे रोवें, चीखें, चिल्लायें! और बंगवासी महाराज! एक तो बड़ा आश्चर्य है कि जिन सुशिक्षित बंगाली बाबुओं को आप अब तक 'दुर्वृत्त' 'कुलांगार' 'दुष्ट' 'दुर्मुख' आदि के बोलते ही न थे, अब क्यों उनके चरणों में गिरते हैं? क्यों उनकी खुशामद करते फिरते हैं? और छिः! छिः! मुसलमानों को आप अपनी पवित्र समाज में क्यों मिलाते हैं? और हां, नास्तिक चूड़ामणि जैनियों को क्यों आप सिर चढ़ाते हैं? कांग्रेस् को भी तो इसीलिये आप बुरा बतलाते थे? अब आप का वह दिमाग़ कहां है? यदि लज्जा हो तो आप फिर कभी कांग्रेस् और सुशिक्षितों को बुरा न कहेंगे!

सौदामिनी

[नवन्यास]

२

युवाका चित्त बड़ा खिन्न हुआ, सिपाहियों पर मन मन में क्रोध किया, पर कुछ कहा नहीं एक बुड्ढे जमादार ने कहा "बाबू! फिक्र न कीजिये बारह बजे गाड़ी में चले जाना" बाबू ने कहा जाने की तो फिक्र नहीं, पर हमारा असबाब गाड़ी में छुट गया, उस की चिंता है'

ज० खागा के ष्टेशन मास्टर को तार दे दीजिये, वह असबाब उतार लें

बाबू! ठीक

बाबू तार घर में गये, फार्म फिलप करके एक रुपया सिग्नेलर साहब को मेज़ पर रखा, सिग्नेलर साहब ने फार्म पढ़ते पढते बाबू से पूंछा

'आपका मकान कहां?'

'आगरा'

'इधर कहाँ का कसद है'

'इलाहाबाद'

'आप कौनसाहब हैं?'

'जो मैं खत्री हूं'

'आप के पिता का नाम'

'विशुनचंद'

'ओः! आप लाला विशुनचंद के लड़के हैं वह तो हमारे क्लास फेलो हैं अब तुम्हारे लाला कहां हैं?'

आगरे में ही है'

सिग्नेलर साहब ने रुपया फेर दिया, और कहा भाई! तुम क्यों नाहक रुपया खर्च करते हो, मैं अपने तौर पर तार देकर गुड्स में तुम्हारा असबाब मंगाये ले-

ता हूं, रात भर आराम करो, सुबह चले जाना, यह तो तुम्हारा घर है. लाला बिसुनचंद के मुझपर बहुत इहसान हैं'

युवा ने झुक कर सलाम की, और कहा 'जनाब का फर्माना वजा है, मुझको इस में क्या उज्र है, मगर सुबह इलाहाबाद पहुंचना बहुत जरूरी है, इस लिये माफ फर मावें' सिग्नेलर ने झट तार देदिया आध घंटे तक इधर उधर की बातें कीं. इतने में ही माल गाड़ी आई युवा का सब असबाब आगया. युवा बहुत प्रसन्न हुआ. इत ने में सात बजे एक बंगाली माशा आये. सिग्नेलर साहब ने उनको डुटी सपुर्द कर युबा को साथ ले क्वार्टर में आये।

३

रेलके बाबुओं के घर कैसे होते हैं, इसके लिखने की अपेक्षा नहीं. जैसे लोमड़ी स्यार आदि जंगली जानवरों को मांदें होती हैं वैसे ही इन के घर होते हैं. उन्हीं घरों में इन लोगों को जेठ बैशाख की गर्मी, सावन भादों की वर्षा और पौष माघ के जाड़े काटने पड़ते हैं। सच पूंछो तो यह पूरी तपस्या करते हैं पर सिग्नेलर बाबू को भाग्य कुछ अच्छाथा, इन के क्वार्टरमें दो कोठे थे एकमें जनानी रहताथा, एक में बाबू की बैठकथी, बाबू युवा को बैठक में लेगये. बैठक की खिड़की खोलदी. कीलों पर युवा का असबाब लटका दिया. युवा को वहां बिठलाकर सिग्नेलर साहब भोजन के बंदोबस्त करने के लिये जनाने में गये. युवा को समय मिला तो युवा ने मनी बेग में से एक सिगार निकाली दिया सलाई जलाकर पीने लगे. सामने मेज पर कुछ पत्र पुस्तकें पड़ी थीं उन्हें देखने लगे। एक कवि बचन सुधा का पुराना नंबर था, एक ताजा अमृत बाजार पत्रिका थी, एक बामा-मन-रंजन था. युवा का मन दोनों अखबारों में न लगा. बामा मनरञ्जन पढ़ने लगे. पढ़ते पढ़ते आधी पुस्तक पढ़ली, तब भी जी नहीं भरा. इतने में बाबू आये, कहो चलिये, बगाल कर लीजिये. युवा ने बहुत उज्र किया, पर कुछ न चला. भोजन करने जाना पड़ा. जनाने मकान के चौक में एक चौकी बिछी हुई थी, उसके दोनों ओर दो ऊनी आसन बिछे थे, दो थालियां कुछ कटोरियां दो गिलास जल धरा था. दोनों भोजन करने बैठे. बीच में लेंप जलरही थी. युवा को पूरियां निवट गईं, बाबू ने कहा 'पूरी देजाना' भीतरसे एक बालिका नीची नार किये आई, सलज्ज भाव से युवा को थाली में पूरियां डाल गई. इसी भोजन के क्रम में बालिका को तीन चार बार आना जाना पड़ा. युवा ने विलक्षण जान लिया कि यह वही बालिका है, जिसे संध्या को ष्टेशन पर देखा था! दोनों भोजन करके फिर बैठक में आये, युवाने

घड़ी देखो १० बजकर ५ मिनिट गये युवा ने कहा 'जनाब! मुझे इजाजत दीजिये, गाड़ी जाने में सिर्फ २ घंटे बाकीहैं," बाबूने कहा तब तक आराम करलो'गाडीके वक्त मेरी डूटीहै.मैं तुम्हें जगालूंगा. युवा सोये नहीं, कुर्सीपर बैठे बैठे वामामनरंजन का वा को भाग देखनेलगे. बाबू जनानेमें चले गये. युवा ने पुस्तक पूरा होने पर इधर उधर लौटा तो टाइटिल पेज पर मोटे मोटे अक्षरों में 'सौदामिनी' लिखा था. युवा चकित! सोचा कि यह नाम उसी भागवतो का है जिसने आज प्रथम ही मेरे चित्त का विजय किया है. युवा के हृदय में बहुत सा तर्क वितर्क हुआ. अंत में युवाने मनी बेग से पेंसल निकालकर 'सौदामिनी'के नीचे 'घनश्याम' लिखदिया.अब युवाको बाबूका नाम मालूम करना रहगया. वह कुछ कठिन न था. अमृत बाजार पत्रिका को लौटा. उसमें एड्रेस था।

Baboo Murlidhar
Baharampore.
E, I. R.

थोड़ी देरमें ग्यारह बजे. बाबू आये युवा को साथ लेकर ष्टेसन पर गये. ठीक बारह बजे गाड़ी में बिठलाकर युवा को विदा किया।

(शेष आगे)

समस्या।

भाषा कविता की उन्नति के लिये भारतेंदु के प्रति अंक में एक समस्या दीजायगी.जो पूर्त्ति उत्तम होंगी, वह प्रकाशित हुआ करेंगी. और जिस कवि की कविता वर्ष दिन तक सर्वोत्तम रहेगी, उस को १०) पारितोषिक भी मिलेगा. यह पारितोषिक एक बिशेष कमीटी की अनुमति से मिलेगा.

समस्या

'जात गढ़ि पायन बिछौना मखमल के'

नोट—कविता आदि सब इस पतेसे आवें.

राधाचरण गोस्वामी।
बृंदाबन।

रूस राजकुमार को ऐड्रेस।

[पंच].

सुंदर रूस कुमार शिरोमणि देहुं कहा कहि तालो हो (इच्छा होतो गालो हो पढ़िये) बडे लोगके औगुन बरणत सबको मति मतवाली हो। १। नाम जार बिच तुमरो कहिये याको अर्थ विचारो हो। जार बंश अवतंस विदित हो को कर सके सुधारो हो। २। रूसी रहत प्रजा सब तुम सों यासे बरने रूसो हो। छिपे रहत उन सब के भय तें यह कैसी मनहूसो हो। ३। दीन रोमके बादशाह पै तुमने करी चढ़ाई हो। मरते को सबहीकोई मारे यामें कहा बड़ाईहो।४। भारत के हित भारत निश दिन अन्न पान सब तागोहो। पर कछु कर नहिं सकत ब्रटिश भय विन पनहीं पा भागो हो। ४। तीन साख भारत लो लागो, तुम देखन इत आये हो। यह दरिद्र भूमी सब जानें कौन तुम्हें बहकाये हो। ६। तुम डचेज के अहो भतीजे यातें अतहो प्यारे हो। 'विन बातो की करें आरतो झूरे शंख उतारे हो'। ७। ब्रटिश रूस में दिन दिन बाढ़े प्रीति रीति अधिकाई हो। भारत महारानी चिर जीवे यह कछु कीरति गाई हो। ८।

औनरेरी मैजिष्ट्रेट्

(प्रहसन)

तृतीय दृश्य।

[स्थान साहब कलेक्टरका बंगला]

(साहब कलेक्टर कुछ लिख रहे हैं, अर्दली का चपरासी घूम रहा है)

सा० चपरासी!

च० खुदावंद!

सा० देखो! यह कौन आटा है?

[चपरासी घूम कर लौट आता है]

च० गरीबनवाज! तहसीलदार शहर और लाला भौंदामल मेंवर हाजिर हैं।

सा० आनेडो।

(तहसीलदार और भौंदामल आते हैं, और सलाम करके एक ओर खड़े हो-जाते हैं)

सा० बैठो

(त० दा० और भौं० म० कुर्सियों पर बैठ जाते हैं)

सा० (तहसीलदार से) यह कौन है?

त० हुजूर! यह कमेटी चुंगी के मेंबर लाला भौंदामल है।

सा० वल् मैंवर साहब! कोई शहर का नया वाट है?

भैं० म० हुजूर! कल मढ़परेमें वड़ा लट्ठ चला, अगर पुलिस् न पहुंचतो, तो दो एक खून होजाते.

सा० डेम पुलिस! पुलिस् ने क्या किया वह डोनों से मिला है, साफ साफ लड़ाई का वजह नहीं लिखता।

भैं० हुजूर! सव् इंस्पेक्टर शहर जालिम खां वड़ा ईमानदार आदमी है.

सा० ओः जालिम खां वड़ा वेईमान आडमी है. हमने उसको जिला वडर करनेको वंडोवस्ट किया है!

त० हुजूर का इर्शाद वजा है, मगर शहर को अवतरी का एक वाइस और भी है, कि जव से लाला मौधूराम का इंतिकाल होगया, कचहरी औनरेरी मैजिष्ट्रेटान् विल्कुल् सुस्त है. किसी लायक् रईस को रिपोर्ट होना चाहिये।

सा० डैम् मौढ़ूराम गढे का वच्चाथा, वह क्या शहरपर रुआव् कर सकटाथा, अव हम किसी का रिपोर्ट करना नहीं मांगटा. हम को कोई लायक नहीं दीखटा. सव उल्लू हैं.

त० ये लाला भैंदा मल साहव वडे रईस, और लायक हैं मासिवा पढ़ने लिखनेमें वहुत होशयारहैं।

सा० इनका नाम भैंदा मल है

भैं० जी हुजूर!

सा० कुछ कानून जानटा है?

भैं० जी हुजूर जानता हूं, कई वडे वडे मुकद्दमे जीत चुका हूं.

सा० हम यह नहीं पूछटा? इंडियन पिनल कोड जावटा फौजदारी जानटा है?

भैं० हुजूर! कई मर्त्तवा देखा है?

सा० अच्छा दफा ३२१ का मतलव कह सकटा है?

भैं० (इधर उधर देखकर) जी उस दफा का मतलव यह है कि जो कोई किसी से दग़ा फ़रेव करे, उसको तीन वर्ष को कैद होगी।

सा० (हंसकर) वेरी वेल्! वेरीवेल् तहसीलदार! यह शख्स वेशक औन रेरो मैजिष्टैटी के लायक है! अच्छा अव रुखसट.

(सव जाते हैं)

संभोगसंमति के विषय स्त्रीपुरुषमें झगडा।

स्त्री। आज तुम सुस्त क्यों वैठे हो?

पुरुष। सुस्त क्या वडा ग़ज़व होनेवाला है. सर्कार हमारा धर्म

नाशकरना चाहतीहै!

स्त्री। क्या? सर्कार ने हुकुम दे दिया है कि सब हिंदू ईसाई हो-जायें?

पुरुष। यहतो नहीं पर दूसरे ढंग से धर्म नाश करने की तजवीज है!

स्त्री। सो क्या?

पुरुष। सरकार एक ऐसा हुकुम जारी करने वालीहै कि कोई पुरुष बारह वर्ष से कम अवस्था की स्त्री से संग न करै।

स्त्री। चलो रहनेदो! तुम्हें हर बखत हंसी ही सूझा करती है.

पुरुष। हंसी नहीं, सच ही ऐसा होने वालाहै। नमानों अखबार देखलो।

स्त्री। (अखबार देखकर) हां जो सच मुच सर्कार ने ऐसा विचारा हो तो मैं घी के दीये बालूंगी. पर इसमें तुम्हारा धर्म नाश क्या हुआ?

पुरुष। लो धर्मही नाश नहीं हुआ। हमारे शास्त्र में लिखा है कि जो ऋतु सनाता स्त्री से संग न करै, वह नरक को जाय। और आज कल १२ बर्ष की स्त्री के तो लडका होता है।

स्त्री। ठीक, पर तुम्हारे शास्त्र में यह भी तो लिखा है, कि ऋतु के सिवाय और कभी संग न करे. क्या ऐसा होता है?

पुरुष। यह अब कलियुग में कहां बनता है?

स्त्री। वाह अच्छी बात बनाई! इस के लिये तो कलियुग और उस के लिये सतयुग 'मीठामीठा गप्प, कड़वाकड़वा थू'

पुरुष। तुम क्या जानो. बंगाल के बडे बड़े पंडितों ने व्यवस्था दे दी है कि यदि कानून पास हो जायगा, तो बड़ा भारीअधर्म होगा और वहां के बड़े बडे राजा महाराजा इस के खिलाफ हैं।

स्त्री। मैं नहीं जानती कि ये कैसे पंडित और प्रतिष्ठित लोगहैं जो ऐसी गंदी बात के लिये इत ना झगड़ा कर रहे हैं. ठीक वही

मसल कि 'शर्म चि: कुत्तीस्त, कि पेश मर्दां बिआयद' खैर बंगालकी बात बंगाली जानें। यहां क्या तुम्हे फिक्र पैदा हुआ ?

पुरुष। क्यों ? कानून का सब जगह एकसा बर्ताव है. यहां भी कोई ऋतु सनाता से संग न कर ने पावेगा.

स्त्री। आप को यह भी मालूम कि यहांकेऋतु सनाता का नियम नहींहै यहां चाहें जितने दिनोंतक ऋतुस्नाता होतीरहै,जब तक गौना न हो, पति के घर नहीं जाती। और गौना लड़का लड़कीके सामर्थ्य होने पर होता है.

पुरुष (कुछ सोचकर) यह तो ठीक है, पर पुलिस जो तुम को पकड ले जायगी।

स्त्री। हमने क्या किया ?

पुरुष। पुलीस झूंठा इलजाम लगाकर मुकद्दमा चालान कर देगी कि इसने ऐसा किया.

स्त्री। वाह! वाह! अब दस बरस की उम्र में भी तो पुलिस झूंठा चालान कर सक्ती है. पर क्यों नहीं करती ? और जो पुलिस का भय है, तो पुलिस को सुधारो। हम लोगों पर क्यों छुरी फेरते हो ? अच्छा, और अब जो लड़की वाले रुपये लेकर लडकियां ब्याहते हैं, उनको पुलिस क्यों नहीं चालान करती यह भी तो बड़ी फरेबी है। फिर बिना सुबूत पुलीस कैसे चालान कर सक्ती है. और सुबूत होना कठिनहै. फिर आप कम उमर में गर्भवती होने के नुकसानों को नहीं सोचते कि प्रसव के समय बहुतसी स्त्रियां मरजाती हैं, और अनेक प्रकार की बीमारियां पैदा होजाती हैं. बहुत सी संतान नष्ट होजाती हैं पर आप को इससे क्या, पुरुष तो पुरुष की ही पक्ष करेगा। यदि कोई स्त्री भी लाट साहब को कौं

सिल की मेंबर होतो तो स्त्रियोंका पक्ष करती। देखें श्री मती महारानी की भी हम लोगों पर दृष्टि होगी।

L. N.

ज्ञानगुदरी

(परिहास)

एक दिन मुझे थोड़ेसे ज्ञानके लेनेकी आवश्यकता हुई तो मैं ज्ञान गुदरी को गया। बस ज्ञान गुदरीके दर्वाजेपर पहुंच तेही मुझे कई एक दल्लाल मिले, और मेरे संग हो लिये, सब से पहिले एक दल्लाल ने कहा कि चलिये जगद् गुरु शंकराचार्य की दूकान बहुत पुरानी है, इसका माल बहुत टकसाली है, यहां से ज्ञान खोजिये, इस दूकान के मुनीब एक मोटे ताजे सन्यासी थे, उन्हों ने ब्रह्मज्ञान दिखलाया माल बढ़िया था, परंतु हमारा उनका भाव न बना, इससे हम आगे चले, इसके बराबर ही धर्म समाज की दूकान देखी, इसके मुनीब एक बुड्ढे पंडित थे, उन्हों ने हलते कांपते कई चीजें दिखलाईं, पर जी नहीं भरा, विशेषतः वर्णाश्रम ज्ञान, पर वह बहुत पुराना, और उसका चलन बाजार से उठाता जाता है, विशेष किसी किसी में धोखा भी था इससे छोड़ दिया। वहां से आगे आर्य समाज की दूकान पर गये, बड़ा साईनबोर्ड लगा था, दूकान करोने की थी, कांच की अलमारियों में माल था, इसके मुनीब एक पंजाबी खत्री थे, उन्हींने बहुत सा पदार्थ विज्ञान दिखलाया, और कहा कि धर्म सभा की दूकान से यहां माल बहुत चोखा है पर माल कुछ भद्दा था, जब वहांसे भी तृप्ती न हुई, तो पास ही एक ब्रह्मसमाजी की दूकान थी, वह देखी, एक बंगाली महाशय टेबल कुर्सी लगाये बैठेथे, उन्हों ने बक्स मेंसे बहुतसा ब्रह्मज्ञान दिखलाया पर इस मालमें बिदेशी माल बहुत था, इस से न लिया, आगे बढ़े तो बहुतसी चिच बिचिच दूकाने दृष्टि पड़ी, जिनमें कोई गुरु नानक, कोई कबीर, कोई दादूराम, तुकाराम आदि के नामसे ज्ञान बेच रहे थे, पर सब टटपूंजिया थे, थोक माल किसी के यहां न निकला! आगे एक तरफ़ मौलवी साहब ज़हाद की तलवार के हाथ फेंक रहेथे, दूसरी ओर पादरी साहब 'बप्तिस्मा' नीलाम कर रहेथे, एक कोनेमें पंचमकारी सरभंगी जुदाही कान फोड़ कर चिल्ला रहेथे! एक चबूतरे पर हाथ में डंडा लिये फ्रीथिंकर डट रहेथे, और खरीदारों को तंग कर रहेथे,

उनके बराबर ही थियोसोफिष्ट कुछ तमाशा करके लोगों को खींचते थे. पास ही एक मंदिर में आचारियों के बाजे बजरहे थे, गोष्टो होरही थी, भूखे टूट रहे थे! आगे गोकुल स्थियों के मंदिर में प्रसाद बिकरहा था, निदान इस बाज़ार के प्रपंच को देखकर ऐसा व्यामोह हुआ कि गांठ की अकल की पुड़िया भो जातो रही. अब तो घर आना भी कठिन हो गया! दलालोंने भो खाली देखकर संग छोड़ दिया, और में रास्ता भूल कर लगा इधर उधर फ़िरने! इतने में ही इस बाज़ार के बाहर एक पोपल का वृक्ष दिखलाई दिया, उसके नीचे कई ऋषि मुनि बैठे हुए बड़ी उदारता से ज्ञान का सदाव्रत बांट रहे थे. मैंने उनसे ज्ञान मांगा, उन्हों ने झट एक चुंगल भर ज्ञान मुझे दिया. वह ज्ञान गीता का यह बचन था—

"सर्व धर्मान् परित्यज्य मामे कं शरणं व्रज"

हैं हैं! छूनामत!

हैं हैं! छूना मत! लेना मत! देखना मत! नहीं तो काट खायगा, जहर चढ जायगा, बिष बढ़ जायगा! सांप है! काला भुजंगहै! इस का काठा नहीं बचता. लहरे भी नहीं आवेगी! खेलना कैसा? ओहो! 'भारतेंदु' है. दूर ही से दंडवत् लिखो (Refused) अखबार लेने से इन्कार है. अरे भाई हम ५ बर्ष बाद आये हैं, ज़रा तो घरमें घुसने दो. नहीं नहीं, निकालो इस बद माश को नहीं तो कीमत देनी होगी. अच्छा साहब! कीमत आपकी पहिले से ही जमा है, आप क्यों इतना संकोच करते हैं, हम से जरा बात चीत तो कीजिये हुश! वह कीमतभी हमने छोड़ी हमको अखबार देखने को भी फ़ुर्सत नहीं. तुम का 'पायोनियर' सरीखे पडे सड़ रहे हैं. अच्छा साहब! हमें किसी पंसारी को रद्दी में ही बेच देना. वहां हींग मिर्चकी सुगंध ही सूंघेंगे बस जो बस ज्यादे दिक मतकरो, हमारे अंधेरा सर्कारका हुक्महै कि कोई अखबार, पाकर, पाकट पुस्तक आवै, मुहर्रिर या प्राइवेट् सिक्रटरीफौरन् इन्कार करदे' बहुत खूब खुश रहो, शादरहो, आबाद, रहो, 'भारतेंदु' बिना बुलाये बिना विजिट लिये कहीं नहीं जाते आपके दर्बारमें उस पुराने नाते आयेहैं, खेर अब न सहो मगर याद रहे कि आप हम को फिर बुलावें गे, गाड़ी भेजेंगे, हमारा निहोरा करेंगे और हम बड़े नखरों से आवें गे लो चले, पर अफसोस है कि हमें आपके और संपादक के तथा अपने भी जोते जो मृतु स्थान (Dead letter office) को भेजे जाते हैं!!!

वृन्दाबन।

कुंभ की धूमधाम है. बंगाली यत्री गाड़ी भर भर कर आरहे हैं. मकानों को तेजी है कुछ यात्री ज्वर और शीत से मरगये. सफाई की तरफ हुक्काम को बहुत नजर है साधु लोगोंके डेरे रेती में आपडे बड़ा मेला रहता है. स्त्रियोंके जूथकेजूथ दर्शनोंको जातेहैं. मन वांछित फल पाते हैं. बाजार में मेले की वजहसे सब चीजें महंगी हैं रेल पर यात्रियों का हुजूम है. बाबू केदारनाथ साहब ष्टेशन माष्टर की होशियारी और पंडित गोपीनाथ साहब गार्ड की मशक्कतसे यात्रियों को कुछ कष्ट नहीं पड़ता.

भारतेंदुके नवीननियम

१. यह पत्र प्रति अंगरेजी मास की १ तारीखको छपैगा।

२. इसका वार्षिक मूल्य १) डाकव्ययसहित पेशगी लिया जायगा, पीछेका कुछ हिसाब नहीं।

३. नमूनेका १ अंक बिना मूल्य मिलेगा।

४. विज्ञापन की छपाई प्रति पंक्ति ≈) है. विशेष दिनों के लिये स्वतंत्र नियम है।

५. सब चिट्ठी, पत्री, आदि इस पते से आने चाहियें।

"राधाचरण गोस्वामी
बृंदाबन, जि० मथुरा"





भारतेन्दु

(धर्म, कर्म, राज, समाज, इतिहास, परिहास, नाटक, उपन्यास, काव्य, कला, पंच, प्रपञ्चादि)

विविध-विषय-विभूषित मासिक पत्र।

॥ श्री राधाचरण गोस्वामी-संपादक ॥

श्री वृंदाबन-श्री राधारमण ष्ट्रीट "भारतेंदु" कार्यालय।

"कार्य्यम्वा साधयेयम्, शरीरम्वा पातयेयम्"

पुस्तक ५ } १ मार्च, अप्रैल, मई, जून १८९१ ई० { अंक ३, ४, ५, ६

संपादकीय।

बाद निवारण के ३ अंक हमें दिल्ली से श्री पंडित जगन्नाथ भारतीय के द्वारा प्राप्त हुए हैं, जिनको आलोचना में हम इतना मात्र कहना उचित समझते हैं कि भारतीय महाशय के विचार परम उदार, प्रशस्त, और दंभमें शांति फैलाने वाले हैं, इनके लेखों में

सच्ची देश हितैषिता कूट कूट कर भरी रहती है.

श्री जगन्नाथजी के मंदिर के जीर्णोद्धार के लिये जो एक कमीटी ऋटकमें नियत हुई है, उसके ओनरेरी सेक्रेटरी श्रीबाबू बलराम मल्लिक के द्वारा हमें कई प्रोसीडिंग्स् मिले हैं. हम सर्व साधारण हिंदू मात्र से प्रार्थना करते हैं कि श्री जगन्नाथजी के मंदिर के जीर्णोद्धार के लिये शीघ्रही यथा शक्ति दान करें नहीं तो पीछे पछतायेंगे. जब म्यूनीसिपलटी तोडना आरंभ करदेगी. क्योंकि मंदिर बहुत जीर्ण है.

निम्नोक्त पुस्तकों की प्राप्ति हम धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करते हैं.

ऋतु तरंगिणी, महिमन स्तोत्र, [भ.षा] क्षत्रिय प्रकाश, मोरध्वजनाटक।

समस्या।

दामिनी नहीं ये कुल कामिनी कुशलहै।

महात्मा श्री गोस्वामि श्री ६ गल्लूजी महाराज का जीवन वृत्तांत (१)

श्री गोस्वामी श्री गल्लूजी महाराज मेरे पिता थे. उनका जन्म मि० जेष्ट कृष्णा ८ सं० १८८४ को श्री वृंदाबन में हुआ. पिताजी के पिता का नाम श्री रमणदयालु गोस्वामी, और माता का नाम श्री सखी देवी था. जिस समय पिताजी ने जन्म ग्रहण किया था, उस समय इस घराने की दशा अच्छी नहीं थी. मेरे बाबाजी विशेष ऋण ग्रस्त थे, इसीसे वह श्री वृंदाबन छोड कर फर्रुखाबाद में विशेष रहत थे. फर्रुखाबाद में एक मंदिर था, और बहुतसे शिष्य सेवक थे, इससे उनका यथेष्ट निर्बाह हुआ जाता था. परंतु ऋण नहीं चुकता था. मेरे पिताजी को इसका बाल्य वय में ही बडा खेद था. पिताजी ने शिवचरण दास जी नामक एक पंडित जी अपने कुटुंब के शिष्य थे, उन से फर्रुखाबाद में अध्ययन किया. दस बर्ष की अवस्था में साहजी साहब के घराने में लखनऊ में प्रथम ही सत्य नारायण की कथा बांची थी, जिसमें अनुमान ५००) रुपे

---

(१) यह जीवन चरित्र इस दृष्टि से नहीं लिखा गया कि मेरे पिताजी का है, बरंच इसलिये कि यह एक असाधारण पुरुष थे. इनके नैतिक और पारमार्थिक जीवनसे शिक्षा मिलेगी.

की भेट हुई. पिताजी ने इस द्रव्य से अपने पिताके ऋणका बहुतसा अंश चुका दिया था. इसके अनंतर पिताजी एक बड़ी दुर्घटना में पडे. अर्थात् हमारे कुटुंबमें से एक महात्मा पुरुष ने हमारे सब परवार में बूरे के द्वारा विष प्रयोग किया था, और सबने खा भी लिया था, परंतु पीछे से विदित होजाने से सबने निवारण का उपाय किया, उससे प्राण रक्षा तो हुई, पर मेरे पिताजी को अर्श [बवासीर] की पीड़ा होगई. इस समय पिताजी की केवल १६ बर्ष की अवस्था थी, लोगोंने विष दाता को पुलिसमें देने की इच्छा की, परंतु पिताजी ने अनेक अनुनय, बिनय करके उन्हें छुडा लिया, और आजन्म उनका यथोचित सत्कार करते रहे.

सं० १९०१ में मेरे पिताजी का प्रथम विवाहफर्रुखाबादमें जगन्नाथ पुरोहितजीकी कन्या श्री महारानी देवी से हुआथा. इनसे एक पुत्र भी हुआ था, पर वह तत्क्षण मर गया. और कुछ दिनमें हमारी विमाता भी शांत होगई. इन्हीं दिनों में सं० १९०८ में पिताजी कई बार लखनऊ गये. और वहाँ कई महीनोंतक साहजीसाहब के बागमें रहे वहां साहकुंदनलालजी, कुंदनलालाजी [जिनका श्रीवृंदाबनमें बडा मंदिर, और जो इस समय के एकबडे हरि भक्त थे] की इष्ट उपासनाकी शिक्षा करतेरहे. इस समय पिताजी की दूसरा विवाह करनेकी इच्छानथी, परंतु माता पिता के आग्रह से करना पडा. पिता माता की इच्छा थी कि इनका विवाह फर्रुखाबादमें ही हो, परंतु पिताजी की रुचि श्री वृंदाबन वास करने की थी, इससे कहा कि "यदि बेडी डालना ही अभिष्ट है, तो फिर लोहे की बेडी क्यों डालते हो? सोने की बडी डालो" अर्थात् विवाह श्री वृंदाबन में ही हो, जिससे कभी कभी स्त्री के आग्रह से भी श्री वृंदाबन के दर्शन हो जाया करें, निदान द्वितिय विवाह श्री वृंदाबन में श्री जगन्नाथ मिश्रजी की कन्या श्री सूर्यादेवी से हुआ सं० १९१२ में श्रीवृंदाबन में श्री यमुना जीका बडा चढ़ाव हुआ. उस चढाव में हमारा एक बाग था, वह कटने लगा. पिताजी ने इसको श्री यमुना जी की इच्छा समझ कर श्री यमुनाजी को भारती को, और बाग को श्री यमुनार्पण कर दिया। अथच वृक्ष, मशाला आदि कुछ भी बागसे नहीं निकाला. इसी समय गदर हुआ. पिताजी फर्रुखाबाद से बृंदाबन आते थे. रास्ते में चोरों ने गाड़ी लूटली, चोर असबाब में से पुस्तकें भी ले चले. पिताजी ने उस समय पुकार कर कहदिया कि "भाई! तुम जो चाहें सो और लेजाओ, पुस्तकें छोडदो" चोर असबाब लेगये, पुस्तकें खेतों में डाल गये. पिताजी ने पुस्तकें बड़े प्रेम से बटोरलीं. मि० फाल्गुण कृ० ५ सं० १९१५ में मेरा जन्म हुआ. इसके अनंतर पिता जी

ने भरतपुर को पवित्र किया. भरतपुर के श्री लक्ष्मणजी आदि सर्कारी मंदिरों में कितनी ही कथायें हुईं. जिनके प्रभावसे भरतपुर में घर घर भगवद् भक्ति छागई. यहां तक कि जिस समय पिताजी कथा बांचने के लिये बाजार में सवारी पर निकलते थे, दोनों ओर से 'दंडवत श्री महाराज' की ऐसी धुनि उठती थी कि सवारी का रास्ता चलना कठिन हो जाता था, सं० १८२३ में मेरी माता का परलोक हो गया. फिर पिताजी ने विवाह नहीं किया सं० १८२५ में भरतपुर में श्री राधारमणजी का मंदिर प्रतिष्ठित हुआ. सं० १८२८ में शाहजहानपुर में दूसरा श्री राधारमणजी का मंदिर स्थापित हुआ, सं० १८२९ में काशी के प्रसिद्ध धनी श्री बाबू हर्ष चंद्रजी ने पिताजी को बुलाया. और निज पुत्र, श्री बाबू माधवदासजी, श्री बाबू विश्वेश्वरदास जी, तथा पौत्र बाबू श्यामादास जी बाबू रामादासजी को शिषा कराया. सं० १८३२ में पिता जीने श्री वृंदावन में निज सम्प्रदायाचार्य श्री भगवदवतार श्री षड् भुजमहाप्रभुजी का बड़ा मंदिर स्थापित किया. सं० १८३७ से फिर अखंड श्री वृंदाबन बास पिताजी ने किया, नित्य श्री राधारमण जी का सेवन, दर्शन, कथा, कीर्त्तन, आदि कर ते रहे. अष्टप्रहर भगवद् विषय के अतिरिक्त और कुछ कार्य नहीं करते थे. घर की सब उपाधि मेरे ऊपर थी. प्रति अढाई बरस में श्री राधारमणजी की सेवा [१] आती थी. तब बड़े आनंद से सैंकड़ों ब्राह्मण वैष्णव को प्रसाद सेवन कराते थे. नित्य दीन दुखी ब्रजवासी वैष्णवों को दो तीन रुपये के पैसे बांटते रहते थे. श्रीराधारमण जी के मंदिर की प्रबंधकारिणी पंचायत के पंचथे. निदान ६३ वर्षकी अवस्था में मि० मार्ग कृ० १ सं० १९४७ को दिन के १२। १५ पर दस बारह दिन के ज्वर से) निजेष्टदेव के चरणों में प्राप्त हुए.

पिताजी का स्वभाव परम सौम्य था यहां तक कि नौकर चाकरों से नुक्सान होजाने पर भी कुछ नहीं कहते थे. इन का जो कुछ करतव्य था, अकृत्रिम था. किसीके दिखाने के लिये नहीं था. एकांत और जनांत सब में एकसा ही व्यवहार था. कई बार लोगों ने परीक्षा करके देखा था. सत्य की निधि थे. मिथ्या स्वप्न में भी नहीं बोलते थे. हुथा वाक्य व्यय कभी नहीं करते थे क्रोध कभी किसी ने देखा ही नहीं. मधुर वाणी का यहां तक व्यवहार था कि कुत्ता बिल्लीको भी 'हरे कृष्ण' नाम कहकर हटा

---

[१] श्री वृंदाबन में श्री राधारमणजी के सुप्रसिद्ध मंदिरके प्रायः ४० साझी हैं, अपनी अपनी बारीसे 'सेवा' करते हैं, उसे 'सेवा' कहतेहैं.

देते थे. भगवच्चरणारविंद में अनन्य भक्ति थी. हमारे घर की स्त्रियां तक कभी अन्य देव पूजन वा अन्य व्रतादि नहीं करसकीं थीं. लौकिक कार्य सिद्धि के लिये कोई मंत्रादि प्रयोग, अथवा ज्योतिष, अथवा करामात आदि का उपाय पिता जी किसीको नहीं बतलाते थे. वह सब भगवदिच्छा और भगवत् कृपा पर निर्भर करते थे. वर्त्तमान नवीन मतों के विषय केवल इतना कहते थे कि 'निंदक लोगों ने जब साक्षात् श्री राम कृष्णादि के वर्त्तमान में ही उन की निंदा की तब अब निंदा करे तो क्या आश्चर्य है?' फ़ार्सी शब्द न बोलने का बड़ा नियम था. एक दिन बंदूक चलने का वर्णन साहजी साहब से इस प्रकार किया कि 'लौह नलिका में श्याम चूर्ण प्रवेश कर के अग्नि जो दीनो, तो भड़ाम शब्द भयो' आत्मश्लाघा का नाम नहीं था. इस अवस्था में भी अपना यावत् कार्य और श्रीजी की सेवा आदि अपने हाथसे ही करते थे. साहस और उत्साह ऐसा था कि सदैव कुछ न कुछ परोपकारी कार्य करतेही रहतेथे. श्रीभागवत की शुद्धप्रेम और वैराग्यमयकथा इनको आभूषण थी. पद रचना परम उत्तम करते थे, पद में 'गुण मंजरी' नाम धरते थे. पिताजी ने धर्म संबंधी कई ग्रंथ संस्कृत, भाषा और बंगला में लिखे हैं. जिनमें से श्रीराधारमण पद मंजरी, और श्री युगलाष्टम प्रकाशित भी होगये हैं. पिताजी का सर्वोपरि गुण यहथा कि अपनी भुजासे एक लक्षके निकट द्रव्य उपार्जनकिया औरसबभगवत्सेवा और परमार्थ में व्यय करदिया! गृह खर्च बहुत ही कमथा साधारण वृत्ति से रहना पसंद था. पिताजी के मंत्र शिष्य १००० से कम न होंगे, और कृपापात्र तो हजारों ही हैं.

मुझसे जो कुछ देश और भाषा की सेवा हुई है, वह सब परमाराध्य, परम पूज्य श्री पितृचरणों के अनुग्रह से हुईहै! उन्हीं का आश्रय मुझे लोक परलोक में है! स एको गतिर्नः! स एको गतिर्नः!!

संपादक

प्रकृत हिन्दू धर्म।

आज हम उस प्रस्ताव को अपने पत्र में अंकित करते हैं, जिसकी ज्वाला कई माससे हमारे हृदय को भस्म कर रही थी. जिस का स्मरण हमारे दिन रात्रि के आनंद का कंटकथा. जिसकी निष्पत्ति हमारी समस्त अभिलाषाओं का मूल है। इस के पहिले कि हम प्रकृत हिंदू धर्म लिखें, हमको यह बतला देना आवश्यक है कि हिंदू शब्द की सीमा कहां तक है? 'हिंदू' शब्द के फार्सी और अरबी अर्थ को हम छोड़ देते हैं, और इसके लिये खेद करते हैं कि आर्यसमाजियों को अत्यंत घृणा होने से 'आर्य' नाम का व्यवहार भी न कर सके 'हिंदु' नाम एक

जाति का है, जिस में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, अंत्यज, चांडाल, ब्राह्म, जैनी, सिख सब शामिल हैं. यह बात दूसरी है कि ब्राह्म आदि अब दूसरी जाति बतलावें, पर वास्तव में वह हिंदू ही हैं, क्योंकि उनका दायभाग हिंदू धर्म शास्त्र से ही सिद्ध होता है. और हजारों ही उनमें वर्णाश्रम मानते हैं। अब इस जाति के प्रकृत धर्म का विचार करेंगे। कोई समय था, जब संपूर्ण हिंदू जाति का एक ही मत और एक ही धर्म था, पर अब वह बात नहीं है, हिंदू जाति में अनेक मत धर्म, उपधर्म फैल हुए हैं। यदि विचार से देखा जाय तो अभी तक समग्र हिंदू जाति में उस एक धर्म का मूल तत्व नष्ट नहीं हुआ है, परंतु शाखा अवश्य नष्ट होगई हैं वरंच उनके स्थान में दूसरी शाखा लग गई हैं यह तो सब को मानना होगा कि सर्वतः पूर्व हिंदू जाति में जाति भेद नहीं था. संपूर्ण हिंदू गण एक ही जाति भुक्त थे, और परस्पर आदान प्रदान था. अनंतर जब वर्ण भेद हुआ, तभी से फूट हुई. और धर्ममें भी विभेद हुआ. पठन, पाठन, यजन, याजन, प्रजा रक्षण, कृषि, वाणिज्य, सेवा आदिको हम जीविका अथवा कर्म कहसक्ते हैं. और स्नान पंच यज्ञ आदि आचार में परिगणित होसक्ते हैं. धर्म जिस पदार्थ का नाम है, वह केवल मानसिक उत्तम वृत्ति है. वह यह कि 'धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयम् शौच मिं द्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्य मक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्' धीरज, क्षमा, बाह्य इंद्रिय का दमन, चोरी न करना, सब इंद्रियों का दमन, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना, य दश धर्म के लक्षण हैं। फिर इन वृत्तियों पर ही हिंदू धर्म की इति श्री नहीं है इसमें उत्कृष्ट कोटिका धर्म ज्ञान है. उसमें भी उत्कृष्ट कोटि में भक्ति और प्रेम है। तात्पर्य यह कि प्रकृत हिंदू धर्म का आश्रय उदार-मनोराजा है. अतएव वेद, पुराण, शास्त्र सब का यही निष्कर्ष है कि चित्त को शुद्धि, ज्ञान और प्रेम करो [१]

अब देखना चाहिये कि स्वार्थी लोगों ने प्रकृत हिंदू धर्म को कहांतक नाश किया है और विरोधियों ने उसको कहांतक उसको धूल उड़ाई है। (शेष आगे)

तीर्थ पुरोहितो!

सावधान!!

यह सब कोई जानते हैं कि साधारण ब्राह्मणों की अपेक्षा हम लोगों में तीर्थ पुरोहितों का विशेष मान है. साधारण ब्राह्मण

---

[१] प्रस्ताव बढ़ जाने के भयसे हम शास्त्रों के बचन नहीं लिखसके।

दम बीस घरों के पूजा होते हैं, परंतु तीर्थ पंडों को एक देश का देश मानता है। और तीर्थ माहात्मों में भी उनको विशेष महिमा गाई है, यहां तक कि कहीं कहीं तो उन ब्राह्मणों के आगे और सब ब्राह्मणों को तुच्छ करदिया है। इसका क्या कारण है? इसका कारण केवल यही है कि पहले समय में तीर्थ पंडे लोग बड़े सुशिक्षित, सच्चरित्र, सुशील आदि होते थे, और उन्हीं लोगों की योग्यता, वा परिश्रम से यह सब स्थान ऐसी उत्तम दशा को प्राप्त हुए हैं, वरंच उन्हीं लोगों के प्रताप से बड़े बड़े राजा महाराजाओंने उनहे माना और उन्हीं लोगों के उपदेश से उन तीर्थों में लक्षों रुपयों का दान पुण्य प्रवृत्त हुआ है, परंतु अब इन लोगोंके संतानोंको क्या दशा है, यह बिचारना चाहिये? अब तीर्थ पंडों को पंडा न कहकर संडा, अथवा गुंडा कहना चाहिये। क्योंकि पढने के हक में तो काला अक्षर हाथी बराबर हो है, पर ब्राह्मणों के धर्म कर्म कांड को भी इन्हों ने मार जूते तीर्थ के बाहर कर दिया है, रही सुशीलता, यदि उसमें चलें, तो इन्हें एक याचो भी न मिलें, अब तो ये लोग खासे ठगों के जमादार हैं, कि अनेक प्रकार को झूठसचबोल कर यात्रियोंको पकड करलाते हैं, और अपने भिटे में घसाकर उनका सर्व स्व हरण करके उन्हें निकाल बाहर करते हैं। और छुप छुपा से गांजा, चरस, रंडो, मुंडो आदि में आप भी खराब होतेहैं और दाता को भी नरक का अधिकारी बनाते हैं। हा! शोक इनकी बुद्धि पर! अब इन लोगों में श्रद्धा तो कौन करता है, बात करने को जो नहीं चाहता, अब इनसे मुसाफिर और भटिहारो का नाता बाकी है, सो वह भी जाना चाहता है, क्योंकि अब लोग निरे उल्लू के पट्ठे नहीं रह गये, अब तो 'खरो मजूरो चोखो काम' है, हात में माला डाल कर घंटों तक हवालात में बिठला रखना बहुत मुश्किल है। जो हो इससे हम तीर्थ पंडों से पुकार कर कहदेते हैं कि भाइयो! अब भी संभ लो, नहीं तो पोछे रोने के लिये मजदूर भी नहीं मिलेंगे। क्योंकि सर्कार को ओर से तो आपके ऊपर जल्द ही कानूनी चक्कर आनेवाला ही है पर कहीं साधारण हिंदू गण भी आप से न फिर बैठें, क्योंकि 'आर्य समाज' 'भारत धर्म महा मंडल' आदि सभायें आपके अखंड राजा के नाश करने के लिये उत्पन्न हो गई हैं ऐसा न हो कि कुछ दिन में आप लोगों में कोरो अकड़ ही अकड़ रहजाय। और यह दंडा, और यह कानतक की लंबीलाठी जो अभी यात्रियों के हांकने, डाटने के काम में आती है केवल इक्के हांकने के, या दर्बानी करने के काम में न आवे। आगे आप की इच्छा, और परमेश्वर की इच्छा!

सर्कार को बैल, और भैंसों पर भी दया करनीचाहिये !

बड़े आश्चर्य, और खेद की बात है कि हमारी सर्कार ने इक्के, और घोड़े गाड़ियों के वास्ते नियम बनाये हैं परंतु गाड़ी, और किरांचो, वा छकड़ा, मझोलो, जिनमें बैल और भैंसे जोते जाते हैं, उनके लिये कुछ नियम नहीं बनाये गये। दुष्ट गाड़ीवान गाड़ियोमें एक बे अंदाज माल, और सवारियां भरते हैं, और बिना किसी कानूनी भय के जो चाहते हैं, उन पर अत्याचार करते हैं। फिर इक्के बग्गियों को तो सड़कों पर ही चलना पड़ता है, पर इन गौ के जायों को ज्यादा हिस्सा कच्चो सड़क, रेत, ऊंची नीचो जमीन में तय करना पड़ता है. हम नहीं जानते कि 'हेक्नी केरीअज् एक्ट' के बनाने वालों को कभी इस ओर दृष्टि क्यों नहीं गई ? यद्यपि सर्व साधारण पशुओं पर अत्याचार करने वालों को दंड मिलता है, पर जबतक इन सवारियों के बैल और भैंसों के लिये स्वतंत्र नियम न बनेगा, तबतक कुछ भी इनको प्राणरक्षा न होगी ? यद्यपि यह बात ठीक है कि बैल, भैंसे, घोडा आदि से मजबूत होते हैं पर इसके मानी यह नहीं कि उनके प्राण ही नहीं हैं अथवा उन पर बोझ, और सवारी लादने की एक हद न मुकर्रर कीजाय ? बैल आदि तो चेतन जीव हैं जबकि रेल के अचेतन इन. जिनके लिये नियम है, तब इनके लिये क्यों नहीं नियम होना चाहिये ? हम प्रार्थना करते हैं कि शीघ्रही कोई नियम, बैल, भैंसों को गाडी में, सवारी, वा माल भरने की हद बांधने के विषय में सर्कार पास करे जिससे गरीब बैल भैंसे इस कठिन आपत्तिसे बचें। और यह नियम हरएक म्यूनीसिपल्ल टौन् और सड़कों तथा गावों में जारी होना चाहिये !

मथुरा रेलवेष्टेशन बड़ा होना चाहिये।

मथुरा का रेलवे ष्टेशन रेलवे कंपनी की किफायत सारी का पूरा नमूना है. जब से मथुरा में रेल जारी हुई है. तब से हम इस ष्टेशन का एक ही रूप देखते चले आते हैं. इतने दिनों में दुनियां में बड़ी बड़ी इमारतें बनगईं, बड़े २ शहर ऊजड़ होगये, पर मथुरा का रेलवे ष्टेशन जों का तों बना है एक तिल भर का अंतर नहीं पड़ा. ईश्वर ने हमें आंखें दी हैं, इसलिये प्लाटफार्म जो कुछ बढ़ाया गया है उसे, हमने देखा है, बाकी राम राम सत्त है, और मथुरा का ष्टेशन

पट्ट है' यह तो सभी जानते हैं कि ष्टेशन में टिकट घर होता है सो यहां भी है, पर उसका वृत्तांत तो सुनिये: तीन चार गज वर्ग भूमि में एक अलमारी है, और उसी में टिकटें रक्खी रहती हैं. एक मेज पड़ी है, टिकट बाबू की किताबें उस पर किसी प्रकार खड़ी हैं. बस एक कोने में एक बड़ी अलमारी में टिकटों के बंडल रखे हैं. अब टिकट बाबू इस अंधेरी कोठरी में बंद हैं, क्या मजाल जो हवा लगसके. घंटों तक एक पैर से बाबू साहब खड़े रहें, और तपस्या करते रहें. इसी बुकिंग् औफिस में तारघर है, इधर मुसाफिर खाने में शोर उधर प्लेटफार्म पर शोर, बगलमें टिकटका खट,खट, धन्य हैं मथुरा के सिग्नेलरों के कान [कान क्या हवा दान कहने चाहियें] जो इतने में भी ठीक ठीक मैसेज पहुंचा देते हैं. इस तार घर में एक ही इंष्ट्रूमेंट नहीं है, छः सात लाइनें इधर उधर से आई हैं इस पर भी जरासा यही तार घर, और यही टिकट घर! अब पार्सल घरको सुनिये, उसमें इतनी पार्सल और लगेजों की भर मार रहती है कि दो कोठरियों के सिवाय बाहर भी राम आसरे बहुतसा माल पड़ा रहता है. पर पार्सल घर कौन तड़ाता है. अब ष्टेशन माष्टर्स् रूम में आइये. आप जानते हैं कि ष्टेशन माष्टर का काम कितना नाजुक और परिश्रम का है, उसके विश्राम लिखने पढ़ने आदि के लिये एक स्वच्छ कमरा चाहिये, पर मथुरा में कमरा, क्या एक कोठरी भी अच्छी तरह से ष्टेशन माष्टर को नसीब नहीं। एक ही कोठरी में ष्टेशन माष्टर, असिष्टेंट ष्टेशन माष्टर, टिकट कलेक्टर, ट्रैनक्लर्क, और गार्ड सब का अखाड़ा है. अभी घबड़ाइये न! यहां का रिफ्रेशमेंट रूम भी मुलाहज़ा करलीजिये. वाह तमाम दुनियां के आराम तो इसीमें कूट कूट कर भरे हैं! इस रूममें यदि मर्द हों तो स्त्रियों का निर्बाह नहीं, स्त्रियां हों तो मर्द मारे मारे फिरें! यह भी सहो, यदि दो चारघंटे रहनेकाकाम पड़े,तो फिर और आफ़त! और यदि इस रूममें कहीं कोई अहल यूरोप आगये हों, तो फिर काला आदमी धूपमें सिकाकरे। सिवाय इसके यदि कोई खाना आदि का बंदोबस्त करे, तो केवल धूल फांकना पड़े। खैर अब हिंदुस्तानी थर्डक्लास के मुसाफिर खाने में आइये. वाह! वाह! इसका सच्चा नाम 'मुसाफिरों को खानेवाला अथवा खाना' है ज़रा इसकी शोभा तो देखिये. एक लंबी पांच दरी में, एक ओरकोतो जलघर बना है. जिसके चारों ओर कीचड़ है. इसी के बराबर एक खंभ के नीचे हलवाई की दूकान है जिसमें अक्सर चूल्हा जलता रहता है, बराबर खटीककी दूकान है जिसके चारों ओर गन्ने के छिलके पड़े रहते हैं दूसरे खंभ के नीचे फिर पानवाले का मढ़ा, और खटीक की दूकान, और कोने में २ तख्तों

पर एक बजाज साहब और हलवाई साहब बिराजमान हैं, जो बड़ी तेजी की दूकान हारो करते हैं. इसके सिवाय कभी कभी दूकान दारों के पास हजरात पुलिस मूंछों पर ताजमते हैं, और कहीं कहीं एक दो कुत्ते भी जोभ हलाते पड़े रहते हैं, बस एक छोटेसे मुसाफिर खाने में अब बतलाइये मुसाफिर कहां निर्बाह करे? फिर यदि घसापसी में बैठ भी गये, तो फिर रास्ता छोडने के लिये आने जाने वाले धमको देते हैं इधर फेरो और भिखमंगे जुदाही दिक करते हैं, एक ओर टिकट चबूतरा की धक्कम धुक्का का असर भी मुसाफिरों पर पड़ता है, गरज यह कि यह मुसाफिर खाना क्या भटियार खाने का नाना है, भले आदमी का इसके अंदर जानेसे जी मिचलाता है. लाचार बाहर सड़क पर पड़े रहते हैं. या बेपुलिस् के पास महतरों के डेरेके नीचे जा कर शरण लेते हैं. इधर उधर कोई बाग इत्यादि नहीं. जहां घड़ी दो घड़ी यात्री विश्राम करें. अजमेर जयपुर इत्यादि में तो ष्टेशनों के पास धर्मात्मा लोगोंने धर्मशालायें भी बनवादी हैं, पर मथुरा जहां धर्म का खंभ गढ़ा है, और जहां बड़े २ पुश्तैनी धर्मात्मा बास करते हैं, वहां यात्रियों के ठहरने की एक झोंपड़ा भी नहीं. मथुरा में जहां दो चार नये मंदिर प्रति वर्ष बनते हैं, यदि कोई मंदिर के बदले ऐसी धर्मशाला बनवादे, तो क्या उसकी कीर्ति, और पुण्य न होगा? खैर यह तो दूसरी बात है, रेल वे कंपिनी को जिस मथुरा को बदौलत लाखों रुपयों का लाभ होता है, और जिस ष्टेशन की आमदनी कानपुर अछनेरा लाइन में सबसे बढकर है, क्या उसी ष्टेशनका यह कंपिनी अच्छा नहीं बनवा सक्ती? जबसे बृंदाबन लाइन खुलगई है, तबसे इस ष्टेशन पर और भी अधिक भीड़ रहती है, इसीसे अब इस ष्टेशन का बढ़ना बहुत आवश्यक है, बीचमें सुनाथा कि यह ष्टेशन कुछ बढ़ेगा, पर दो तीनबर्ष से कुछ भीनहीं हुआ. हम रेलवे कंपिनी से प्रार्थना करते हैं कि वह अपने कर्मचारो, और यात्रियों पर दया करके इस ष्टेशन को बड़ा बनावे, और लाख डढ लाख रुपये का इस बहुत जरूरी इमारतके लिये मुंहन देखे! समझले कि एकपुल और टूटगया! हम समझते हैं कि हमारी परम उदार गवर्नमेंट भी इस बिषय का रेल वे कंपिनी से नोटिस् लेगी, और यात्रियों का कष्ट निवारण करने के लिये उत्तम प्रबंध करेगी. यदि और न हो, तो एक मुसाफिरखाना और वेटिंग रूम तो नया और बनवादे. बाकी फिर सही!

———•———

कुंभ का मेला।

जय जय कुंभ निकुंभ हननि चंडी चर्चित पद। कुंभकर्ण कुल कमल कलानिधि जय जय जय वद। कुंभ पाणि धन्वंतरि वपु धर कुंभज मुनि मद। कुवलय करिवर कुंभ विदारण दारुण दुइ रद। जय कुंभ स्तनि ब्रज गोपिका मन वांछित पूरण करण। जय कुंभ समय हरिद्वार में धर्मारधू प्रश-रण शरण।

'जोवन्नरो भद्र शतानो पश्यात्' 'बारह बरस में घूरे के भी दिन फिरते हैं' 'बारह बरस का एक जुग होता है' 'बारह बरस में संसार का चाल चलन बदल जाता है' बस इसी के अनुसार यह बारह बरस पीछे कुंभ का मेला भी आया. यद्यपि इस बारह वर्ष में, प्रयाग, उज्जयिनी, और नासिक के तीनकुंभ होजाते हैं, पर मुखाकुंभ हरिद्वार का ही है. नहीं कह सक्ते कि यह कुंभ कब से चला है, और इसका प्रवर्त्तक कौन है, पर इसमें संदेह नहीं कि यह ३४८ वर्ष से कमका मेलानहीं है.क्योंकिविक्रमकी उन्नीस वीं शताब्दी का पिछला कुंभ सं० १८०० में हुआ था, अब १२ का भाग तीनसौ वर्ष पीछेही १९०० में पूरा होता है. इससे जाना जाता है कि विक्रम की १७ वीं शताब्दी के आरंभ में ही इस कुंभ के मेले का आरंभ हुआथा. उसमें भी सबसे प्रथम कुंभहरिद्वार का है. यद्यपि प्रयाग का कुंभ भी प्राचीन बोधहोताहै, क्योंकि एकवार अकबरकेसमय में इसी कुंभ पर साधुओं को बड़ी लड़ाई हुई थी, पर हरिद्वार का कुंभ ही मुखा है, क्योंकि कुंभ के बृहस्पति इसी कुंभमें रहते हैं. कुंभ का अर्थ यह कि जब कुंभराशि पर बृहस्पति हो, तब मेष को संक्रांति के दिन श्री गंगाजी का स्नान करना, और यह संयोग केवल हरिद्वार में ही मिलता है,परंतु अब लोकाचार से प्रयाग आदि का स्नान भी कुंभ कहलाता है. इस कुंभ के मेले के विषय अनेक मनुष्य अनेक प्रवाद करते हैं. कोई कहता है कि पहिले मुसलमानों का अधिक जोर था.इसलिये सब साधु हरिद्वार में इकट्ठा होकर स्नान करते थे, फि अपनी अपनी इच्छा पूर्वक देश देशांतर को चले जाते थे. कोई कहता है कि साधुओंने अपनी जमातोंके मिलाप के लिये यह तीन तीन बरस पीछे मेला नियत किया. जोहो इस मेले की जड़ साधु लोग है. साधु लोगों के तीन मुखाभेद हैं. गुसाईं, अथवा सन्न्यासी, बैरागी, अथवा वैष्णव, उदासी अथवा नानक शाही. यद्यपि ये तीनोंसाधु काम क्रोध वर्जित हैं, तथापि इनमेंएक

टूसरे से लाग डाट, विरोध, और खट पट रहती है. इसी से कईवार बड़ो २ लड़ाइयां हुईं, परंतु अब परम प्रताप शाली ब्रटिश गवर्नमेंट के राज्य में सबके मान मर्दन होगये हैं, अब कोई लड़ाई झगड़ नहीं कर सक्ता. इस हरिद्वार के कुंभ के मेले का आरंभ श्री वृंदाबन से होता है. इसलिये पहिले वहीं से आरंभ करते हैं।

श्री वृन्दाबन का चढ़ाव

जो कि बैरागी साधुओं में और गुसाईं सन्यासियों में सदा से शैव, वैष्णव मत का विवाद चला आताहै, इसलिये बैरागी लोग पहिले वृंदाबन में इकट्ठा होजाते हैं. फिर वहां से हरिद्वार पर चढ़ते हैं, इसीसे इसका नाम चढ़ाव अर्थात् लड़ाई को चढ़ाई है. सं० १९४७ के माघ के आरंभ ही से श्री वृंदाबन में साधुओं का आना शुरू होगया था। केशी घाट से महारानी टिकारी के मंदिर के आगे तक जो रेत का मैदान य-मुना जी के किनारे है, उसी में साधु लोग पड़ने लगे. इसी बीच में यहां के कुछ स्वार्थी लोगों ने जिनमें घाट के ठेकेदार साहब मुखिया थे सबोंने मिलकर एक अर्जी साहब मैजिष्ट्रेट् बहादुर की सेवा में भेजी कि अब कि बार सब साधुओं को यमुनाजी के उस पार उतारा जाय, जिससे वृंदाबन में बीमारी न फैले. परंतु साहब बहादुर ने इस अर्जी को खारिज करदिया. मतलब इन लोगों का यह था कि यदि साधु लोग यमु-ना पार उतारे जायेंगे, तो पुल का महसूल बहुत आवेगा. दूसरा विघ्न और पड़ा कि अब की साल बंगाली यात्री लोगों के आने की बहुत कुछ आशा थी, परंतु प्रयाग का अर्द्धोदय योग स्नान कर जो सब बंगाली यात्री वृंदाबन में आए, कि तड़ातड़ ज्वर, दस्त, सर्दी और हैजे से मरने लगे. हफ्ते भर में १०००। १२०० यात्री मरगये होंगे. जब इसकी खबर तार और डांक के द्वारा बंगाल को पहुंची तो वहां के लोगों का सब उत्साह बतासे की तरह बैठगया. किसी ने पश्चिम की ओर मुंह तक न फेरा, जिससे वृंदाबन बासियों की आशालता अकाल में मुरझा गई.

इन दोनों क्षुद्र उपद्रवों के निवारण के अनंतर वृंदाबन का चढ़ाव आरंभ हुआ.

माघ के आरंभ ही से फुटकर साधु लोग आने लग गये थे, और रेती में अपने अपने नियत स्थानों पर पड़ने लग गये. सब से प्रथम महंत घोरम दासजी के शिष्य महंत नंददास जी आये. और मलूकजी के अखाड़े के आगे ऊंची ठौर पर पड़े। अब की रेती में एक सर्कारी अड़ंगा लगगया था, अर्थात्

झंडी गाढ़ कर सड़कें बनाई गई थीं. साधु लोगों के डेरे सड़कों के दोनों ओर लाइन के हिसाब से पड़े थे. यदि यह सड़कें खोद कर पहिले से बनजातीं तो बहुत अच्छा था पर ये सड़कें जब साधु पड़ गये, तब बनाई गईं. जिस्से किसी २ साधू से पुलिस को तकरार भी करनी पड़ी ! साधू लोगों से जब कोई पुलिस वाला डेरा हटाने को कहता, तब कहते 'चलबे ! धर रख अपनी सड़क कहीं फक्कड़ों के डेरे भी हटते हैं' और मरने मारने को तयार होजाते थे ! लाचार कईजगह सड़क टेढ़ी करनी पड़ी. फालगुण लगते ही २। ३ हजार साधू आपड़े, और जंगल में मंगल होने लगा. फिर तो नित्य किसी दिन २०० किसी दिन ४०० इस हिसाब से बढ़ने लगी, जैसे वर्षा में 'मेंडकें' बढ़ते हैं।

अब जरा साधुओं के डेरों को देख लीजिये. कैथी घाट से जो सड़क बंशीबट को जातीहै, उसपर पक्के कुए परसेही साधुओंके डेरे पड़े थे. सिरे पर महावीर दास खाकी और 'सोहंम' फक्कड़ झोंपड़ीमें पड़ेथे. यहीं सिद्ध रामचरण दास का आसन था. इस से आगे छोलदारी में एक ब्रह्मचारी काशी के थे. जो वामन होने के सिवाय दोनों पैरों से लूले भी थे. उसके आगे धूनी के ऊपर एक जवान खूबसूरत मौनी था, जिसको लंगोटी लोहे की थी, और भभत लगा कर बड़ी मजधज से बैठा दर्शनियों को कभी कभी प्रसाद बांटा करता था। और अपने को महादेव जी का रूप बतलाया करता था. इसके आगे एक योगी था, जो हत्थमें उलटा झूलता था, पर कच्चा होने से केवल दो एक दिन मात्र झूला। यहां तक जो साधू पड़े थे वह फुटकर थे, किसी खालसे के अधीन न थे, यहां से अर्थात् बड़ी कुंज के आगे से बंशीबट तक चार संप्रदाय का खालसा था, इसके महंत राघोदास जी थे। इसमें ५००० साधू थे, इस के आरंभ में एक अयोधया की जमात थी, जिस में बहुत से जंठ और निशान थे। रास्ते के सिरे पर पंडित मदन मोहन की बड़ी मनोहर कथा होती थी कथा मंडप के बराबर सड़क के दोनों ओर अनेक ठाकुर सेवा थीं, जिन में कहीं नृसिंह कहीं राम लक्ष्मण, कहीं राधा कृष्ण कहीं बालमुकुंद जी आदि विराजमान थे। उत्तर की तरफ आगरे के साधुओं का भड़कीला डेरा था. जिसमें चांदीके कलशे का छत्ताथा इसी खालसे में कुछ साधु गुफा बना कर बैठे थे. इस खालसे के महंत बहुत सादा स्वभाव और दयालु थे. इस खालसे के बराबर ही डकौर के महंत सरजूदास जी का खालसा था. यह खालसा बीचका था, इसी से इसकी भीड़ भी औसत, अर्थात् बीचकी थी. सब ३००० मात्र साधु थे. यह महंतजी साक्षर, बुद्धिवान् और चतुर थे. इनकी जटा

का मंडल एक मरहठो पगड़ो से कम नथा. ठाकुर सेवा इनके यहां परम उत्तम रीति से होतो थो. पूजा के बर्त्तन बहुत उज्जुल थे. इनके खालसे में एक शर शैय्याखले साधु थे, जो बहुतसी बनात, और दुशालों को दूकान लगाये रहते थे. और इसी खालसे में काशी के गोविंद परमहंस थे. जो लड़कों से खेला करते, और परम निस्पृह साधु थे. इस खालसे के आगे सब से बड़ा खालसा धीराम दासजी का था. इसके दो दल थे. एक दल नंददास जो, दूसरा दल जगन्नाथ दास जो का था. नंददास जो तरुण बुद्धिवान् और सभा चतुर पुरुष थे, और जगन्नाथ दास जी इनके सिवाय पंडित भो थे. इस खालसे में प्राय: ७००० साधु थे. जिसमें सैंकड़ों महंत थे. इस में दोनों महंतोंके दोमंदिरबनातोथे. जिसमें सैंकड़ोंमूर्त्ति भगवान्की बिराजमान थीं बाकोकोटिमोटे अनेक डेरेऔर मंदिर थे. इस खालसे में प्राय: अच्छे २ टकसाली साधु थे, श्री अयोधराजो के रसिक वैष्णवों की रामलीला वाली मंडलो इसो में थो. इस में एक दूकानदार साधु थे. जो १ पैसा लेकर हाथ देखते थे. एक साधु ऐसे भो थे. जो राख मार मार कर चौथैया, और तिजारो उतारते थे. राधा कुंडवासी रामचरण दास के डेरे में दिग्विजयो पंडित गोविंद बल्लभ भट्ट जो श्री भागवत को साठ टन् को तोप चला रहेथे, और जिस समय हरेकृष्ण धुनि का बंब का गोला चलाते थ, यमुना जो के दोनों पार कोसों तक पापो पाखंडियों का विजन होजाता था। इसी खालसे में एक खड़ेश्वरी बाबा थे. जो घंटो तक खड़े रहते थे। इसो के पास साधुओं के भाटों का डेराथा. जो सवेरे उठकर साधुओं के डेरे में बंशावलो गाय आते थे। निदान १५—१६ हजार साधुओं से कम न थे. अब एक सामान्य दृष्टि से इस साधु समागम को देखना चाहिये. कोई साधु झोंपड़ा के नीचे कोई साधु छत्ता के नीचे; कोई चादर तान कर, कोई डेरे में, कोई छपपर के नीचे. कोई वृक्ष के नीचे स्वतंत्र पड़े थे. असबाब जंचा हुआ गृहस्थो का सा फैला फूटा हुआ नहीं. लोटा कठारो आगे, खड़िया बगल में धूनो जलती हुई. कोई सेवा कर रहा है, कोई भभूत लगा रहा है, कोई तिलक चात रहा है. कोई पाठ, कोई पूजा, कोई उपदेश कोई झाड़ा, कोई फूंक, कोई भजन, कीर्त्तन कथा आदि. निदान इस साधु समागम में जाने से एक अभूत पूर्व भाव उदय होताथा इन साधु लोगों के विश्वास, नियम, संस्कार आदि के विषय में यदि कुछ लिखें, तो उन्नीसवीं शताब्दो गर्दन मारतो है. खैर जब साधु लोग आकर पड़े तो दो चार ईमाई जिनका काम दूसरों को छेड़ना और गालो खाना है, वह लोग इन के डेरों के इधर उधर बकने लगे; पर जब साधु

लोगों ने चिमटों से खबर लेना शुरू किया तो फिर दुम दबा कर घर चल आय, और फिर उधर मुंह न किया. सच है 'मार के आगे भूतभागता है' वृंदाबन में साधुओं को भोजन को कुछ परवाह नहीं थी, इतनी वैष्णव सेवा, देशी और परदेशी लोगों की ओरसे हुई कि बाबाजी अजीरण के मारे जीरण होय गये। वास्तव में वृंदाबन वासी इस लिय प्रशंसा के योग्य हैं कि इनहीं ने अपने तीर्थ में आये हुए अतिथि अथवा मह मानों का (Guests) अच्छा सत्कार किया निम्न लिखित महाशयों ने सब साधुओं को एक एक दिन रसोइयां दीं।

१ राधा रमण गोस्वामी, कपींद्र कुंज
२ महंत ईशान चंद्र
३ लोईवाले सेठ लोग
४ लाला निक्कामल नारायण दास
५ बाबू बालकृष्ण दास कलकत्ते वाले
६ बाबू बनमाली राय, राय बहादुर
७ श्री स्वामी रंगा चारी जी
८ श्री ब्रह्मचारी जी गोविंदजी महाराज

निम्न लिखित महाशयों ने सब साधुओं को एकएक दिन सीधा दिया.

१ श्री गोस्वामी प्रेमलाल जी महाराज
२ साह माधुरी शरण साहब
३ सेठ लक्ष्मी नारायण साहब

इसके सिवाय छोटी मोटी रसोइयां, और बक्षायतो मालजी सबधुओं को पहुंचता था, उसको गिनती नहीं.

एक महीने भर तक इस साधु समागम का ऐसा अपूर्व मेला रहा कि 'न भूतो न भविष्यति' प्रातः काल जाइये, तो सब संत स्नान ध्यान पाठ पूजा कथा वार्त्ता करते मिलते थे. मध्याह्न में सैकड़ों साधु पंचाग्नि, दशाग्नि, पंचाशदग्नि, शताग्नि को धूनो तापते मिलते थे. मध्याह्न १२ बजेसेही खो लोगों की घटा छाजाती थी. स्त्रियां गृह कर्म से निबट २ कर साधुओं के लिये माल बांध २ करलेआतीं, और साधुओंके भेट करके उनसे नाना प्रकार को प्रार्थना करतीं। कोई रोग निवृत्ति, कोई संतान, कोई धन, कोई पति का बशीकर्ण, कोई सास नंद का मारण, कोई चोरो का पता इत्यादि पूंछतीं। बाबा जो जादू टोना मंत्र यंत्र में भी बहुत कुछ पैदा करलेते, और दूकान दारी चेताते! तो सरे पहर तक स्त्रियों का हल्ला रहता, इसमें कुछ रसिक लोग भी पहुंच जाते थे, जिससे एक पंथ दो काज, और मेले में रौनक आजाती। ४ बज और फिर हल्ला हुआ. तू चल, मैं चल, छोरा छोरी बूढ़ा, बूढ़ी, खी पुरुष जिसे छुट्टा मिला, चल खाक चौक को! एक एक मंदिर और स्थानमें ठट्ठके ठट्ठ लगरहेहैं! जगह २ झंझ कुटं और रामायण. घंटा भर में एक चौपाई गाकर पूरो करें कहो सारा दिन एक चौपाई में लगादें. जिस तरह प को छत कुटतो है, उसी तरह एक ही पर

घंटों झांझ और ढोलक बजा करे! हजारों आदमी इधर के उधर चक्कर लगाते मेलेका आनंद लूटते फिरते थे। संधया को जिस समय आरती होतीथी, चारोंओर घड़ो घंटा, ढोल, नगाड़ा, झांझ, मृदंग, शंख, नरसिंहा की धुनि होतो, और वृंदाबन को आरतियों के साथ मिलकर यमना तट पर छा जाती और उसकी प्रति धुनि मानसरोवर और मानसरोवर की प्रति धुनि वृंदाबन में आती तो बस ऐसा आनंद का समुद्र उमड़ता कि दर्शनो लोग सब गति मति भूल जाते! और घंटों तक वैष्णव धर्म की अखंड जय धुनि घोषित होतो, और जोवंत भागवत धर्म तांडव नृत्य करने लगता! और बीच बीच में जो जय धुनि, और उच्चे सुरसे नाम संकोर्त्तन, और आनंद को रोल उठतो, तो फिर चतुर्दिक करुणा वरुणालय को महिमा महान् होकर रसिक भक्त जनों को उन्मत्त कर देतो, और केवल 'जय जय सीता राम, 'जय जय राधा श्याम' के और कुछ नहीं सुन पड़ता!!! केवल राम! राम! राम! श्याम! श्याम! श्याम!!!

इन अभागत साधुओं के सिवाय स्थान धारी ११ अखाड़े वाले और आए थे, इनके साथ भी २। ४ हजार से कम भोड़ न थो. ये लोग अपने अपने अखाड़ों में अलग ठहरे थे. फाल्गुण शु० १। २ से ही हजारों यात्री बाहर के आने लगे, पर अष्टमी से तो बहुत ही भोड़ थो. कितनो ही स्पेशल ट्रेनें मथुरा से छोड़ी जातीं थो एकादशी को प्रातःकाल मेला चक चका गया. ३ लाख से कम भोड़ न होगो. सूर्योदय के साथ ही नगाड़े पर चोब पड़ो और साधुओं की जमातें वृंदाबन को परिक्रमा के लिये उठीं! चार अलग अलग साधुओं के दल घंटे घंटे को देर करके निकाले गये. पहिले दिगबरी साधुओंकी जमात थो. इसमें निशान बहुत अचकेथे. दूसरोजमात निंबार्क संप्रदायकोथो, जिसमें ब्रह्मचारोजो की सवारी थो. तीसरो रामानंदियों की जमात थो, जिसमें स्वामी रंगा चारो जो की सवारी थी. चौथों बलभद्रो अखाड़े को जमात थो. जिस में गौड़ेश्वर थे. हरएक जमात के आगे अरबो बाजे हाथो, घोड़ा, ऊंट, पटेबाज, आसाबल्लम, झंडा, झंडी, आदि जुलूस था. बीच में पोशाकों से जर्क वर्क हथियारों से सजे बज, पृथ्वो को कंपायमान करते नागा लोग चले जाते थे. इनके पीछे कमखाब, ताश, जरबफ्त, कारचोबो, कलाबत्तू, अतलस आदि के निशान आकाश मंडल को भेदन करते चले आते थे. जिन में सूर्य को किरणें पड़ कर चतुर्दिक् में तेजःपुंज को माला फैलातो जातीं थीं। उनके पीछे पीछे श्रीमूर्त्ति, महंत, आचार्य, घड़ो, घंटा, शंख, ढोल, ढफ, झांझ, मृदंग आदि के घनघोर शब्द में गुलाल उड़ाते, फूल बरसाते, हरि संकी-

र्शन का रंग मचाते चले आते थ. इनके पीछे हजारों स्त्री पुरुष बाल वृद्ध जयजय शब्द करते चले आते थ. इनके देखने के लिय घाट, बाट, छत्त, चौबारे, गोखा, मोखा, झरोखा आदि में दर्शनोकों को इतनी भीड़ था कि वृंदाबन में तिल धरने को जगह नहीं था! क्या घाट क्या सड़क, क्या बाग क्या परिक्रमा सबत्र मेला ही मेला था! जिधर दखिये, उधरहीलाल, काली, जंगाला, नारंगी, पीली, नीली, साड़ी दुपट्टाका घमसान था! जिधर जाइये, उधर ही रूप की घटा, प्रेमियों की कटा, और व्रज चौरासी कोस को निराली छटा थी! जिससे पूछिये, वही मेले का मतवाला, और सैर का सदर-आला था! रात्रि के बारह बजे दशमी से द्वादशी के प्रातःकाल तक 'बोल श्री राधे' बोल श्री राधे' की तरंगों के बिना और कुछ नहीं सुन पड़ा. मेला क्या मनुषों का तूफ़ान था. राम राम करके यह बारह बरस का चढाव घटाव, बढाव, करके पूरा किया. अब जो जियेगा, सो फिर ६० की सालमें देखगा. 'बोल वृंदाबन चंद्र की जय! बोल श्री राधे!

ब्रह्मोत्सव और नुमायश।

इस वर्ष ब्रह्मोत्सव और नुमायश का मेला बहुत हलका हुआ. कारण यह कि बाहर के लोग चढाव पर बहुत आये थे, फिर वह नहीं आये। इससे भीड़ बहुत हलकी, बल्कि आधी थी, पर और धूम धाम सवारी, रोशनी आदि चढ़बढ कर थी। पर नुमायश में बहुत सुस्ती थी. यहां तक कि नुमायश सिर्फ नुमायश मात्र थी। मि० केडल् साहब के बाद नुमायश दिन, व दिन सुस्त होती जाती है, यहांतक कि अब लकीर पीटना रहगया है, यदि यही हाल थोडे दिन और रहा, तो नुमायश का मैदान ही मैदान बाकी रहजायगा। इसका मुख्य कारण यह है कि हरएक कमीटी के मेंबर, वा सेक्रेटरी नुमायश के बाद कभी यह नहीं सोचत कि हम अपने अपने बिभाग की उन्नति करें. फिर इनाम देने के समय भी बहुत बिचारकर इनामदेना चाहिये, अर्थात् इनाम कारीगरों को ही मिले। हम कहते हैं कि इस चार वर्षमें नुमायश के द्वारा क्या फायदा हुआ? क्या कपड़ा, क्या दस्तकारी, क्या खेती, क्या सब्जी, क्या फल फूल, क्या कुश्ती किसी में. इस जिले ने तरक्की नहीं की. न अभी तरक्की करने की आशा है। तब इस नुमायश कमीटी को यह अवश्य

विचारना चाहिय कि किस प्रकार इस जिले को वास्तविक उन्नति हो सक्ती है और खर्च जो अनाफ़शनाफ़ होता है, इस को भी कुछ कम करना चाहिये. यद्यपि इस मेले में बहुत सस्ती थी, पर महाराजा बहादुर जयपुराधीश ने बरलो से पार्सी ओरिजिनल् थिएटर कंपिनी को बुलाकर मेले को बहुत मनोहर कर दिया। यह कंपिनी सब बातों में आज कल चढ़ी बढ़ी हुई है. ड्रेज़, सीन, एक्टर, फर्नीचर, सब अपूर्व हैं, परंतु गाने बजाने की कुछ चटी थी. इन्हों ने ४ दिन क्रमागत ४ अभिनय किये थे. अर्थात् दर्यादे इंद्र सभा, खान दान हामान प्रभास यज्ञ, नतीजः इश्मत सब बहुतसफाई. और अपूर्व रीतिसे किये, पर 'प्रभास यज्ञ' बहुत ही उत्तम रहा. यह नाटक इन्होंने शुद्ध हिंदी भाषा में शुद्ध हिंदी रीतिसे किया था. यद्यपि एक्टरों में पार्सी और महामिडन अधिक थे, तथापि नाटक अक्रुत्रिम था! केवल कोई कोई वेष, आनंदराज, श्रीकृष्ण श्री बलदेव, श्री नारदजी इत्यादि का ठीक नहीं था। जो आशा है कि आगेसे संभाल दिया जायगा. इन नाटकों में श्री महाराज स्वयम् विराजमान रहकर कंपिनी का उत्साह बढ़ाते थे. हम आशा करते हैं कि यह कंपिनी औरभी हिंदी नाटकोंका अभिनय करके हिंदू लोगोंको प्रसन्न करेगी। इसकंपिनी के वृद्ध, सिद्ध, प्रसिद्ध कवि मिष्टरजरीफ, मैनेजर मि० नौरोजी बहुत बुद्धिवान्, और उत्साही है. इस कंपिनी के अभिनय से श्री महाराजा बहादुर बहुत प्रसन्न रहे, और १०००) परितोषिक दिया।

हरिद्वार को हमारी आंखों से देखिये!

८ एप्रिलको १९—४५ पर वृंदावन छोड़ा रेलपर यहीं से भीड़ मिली. जिससे पूंछिय 'हरिद्वार'. सिवाय 'हरिद्वार' के दूसरा शब्द ही रेलपर सुनाईनही देताथाहरिद्वार जानेके समय यहतो सोचही लिया था, कि 'पार गये तो पार है, धार रहे तो पार' घर वालों को फारकती लिखदी थी. २४—, पर हाथरस जंक्सन० यहां यात्रिय के ठट्ट के ठट्ट जमा थे. तीन तीन दिन से रेल नहीं मिलती थी. सिपाही और बाबू लोग यात्रियोंको कुछ मुट्ठीगरम करनेपर अच्छी जगह देतेहैं यह कायदा सर्वत्र है, पर यहां कुछ बसी था! तीन बजे उस धकापेल रेल में ठेल कर किसी तरह बैठे तो चार बजे अलीगढ़में आंखें खुलीं। मेरे पूज्य पिताजी कहा करते थे कि 'एक रेल से उतर कर दूसरी रेलमें बैठने में उतना ही कष्ट है, जितना एक देह को छोड कर दूसरी देह

के धारण करने में वही दशा अलीगढ़ में गाड़ी बदलने में हुई, पर गंगाजी का नाम लेकर गाड़ी में घुसहीं तो पड़! ज्यों त्यों कर गाड़ी चली सबने 'बोल श्री गंगाजी की जय' बोली अब निश्चय हो गया कि हरिद्वार पहुंचेंगे, निदान सब दिन चंदौसी मुरादाबाद, नगीना आदि की सैर करते ८ तारीख को रात्रि के ८ बजे हरिद्वार पहुंच रास्ते में भीड़, जल का कष्ट, शौच प्रस्राव आदि के संयम का कष्ट जो हुआ, सो लिख नहीं सक्ते, पर जिस समय "हरिद्वार" "हरिद्वार" यह मधुर शब्द रेल वालों के मुख से सुना, आनंद की सीमा नहीं रही, रेल से उतर रहे एक लंबे लंबे बांसों के बाड़े में अपने को पाया उसके दर्वाजे पर मशालें लिये तहसील के सिपाही खड़े थे, एक आने की टिकट प्रत्येक यात्री को दी जाती थी बिना टिकट के मेले में नहीं जाने पाते थे, यहां से निकल कर जब ललिता रौ (अर्थात् नाले) पर पहुंचे तो सिपाहियों ने हरिद्वार में जाने से रोका, पर यार लोग कब मानते थे, इन्हें छींटा देकर हरिद्वार में हो आये, जो लोग मलीन वेष थे, वह गंगा पार रोड़ी में उतारे जाते थे, रात्रिभर श्रवणनाथ [सरमन नाथ] जी के मंदिर में रही, उस समय मेला निस्तब्ध था, प्रातःकाल होतेही वह कर्ण भेदी शब्द चारों ओर व्याप्त हो गया, कि बात कही सुनाई नहीं देती थी! उठते ही शौच को चले, हमारे मंदिर के सामने ही, एक बंपुलिस् था, उसमें घुसतेही मालूम हुआ कि हम कुंभीपाक नरक में आगिरे! स्त्री और पुरुष बराबर नंगे बैठे हुए एक कतार में शौच कर रहे थे, कुछ किसी को लज्जा नहीं, 'आपत् काले मर्यादानास्ति,' अथवा हरिद्वार ब्रह्म पुरी में 'एकोब्रह्मद्वितीयो नास्ति' इस महा वचन का राज्य है, इस से किसी को कुछ संकोच हीं न था। इस बंपुलिस् की क्या शोभा बरणन की जाय? एक ओर निर्लज्ज स्त्री पुरुष बैठे थे, दूसरी ओर बीसों आदमी उनके ऊपर लोटा लिये खड़े थे, तीसरी ओर भंगी टोकरा और पांसू लिये साफ़ करने के बहाने बैठे हुओं को उठाते और गाली देते जाते, चौथी ओर टोकरों मलबे का दल दल, और मक्खी और कीड़ों की भन, भन, बस कुंभीपाक में इससे बढ़कर क्या बीभत्स होगा? खैर यहां से जैसे तैसे फंद काट कर गंगाजी के स्नान किये, सब मन की मलीनता दूर होगई! गंगाजी का ब्रह्मद्रव नाम यहीं पड़ा होगा, एक छोट से पाठ में गंगाजी बड़े वेग और गर्जना के साथ प्रवाहित थीं! बीच बीच में चट्टर और भंवर ऐसी भयंकर पड़ती थी, मनका कोमों पतानहींलगता! यद्यपि गंगा जी का वर्ण श्वेत है, पर यहां नील पर्वत की आभा से नील था। वह प्रभात की मंद मंद पवन, वह श्री गंगाजी की उच्छलि

तरंगे! वह उदयोन्मुख सूर्य नारायण की कमनीय किरणें! वह हिमालयकी प्राकृतिक शोभा! बस आगे न पूंछिये, ऐसा मनोरम लगा कि बैठे २ कई घंटे बीत गये! यहां से अब चक्कर को ठहरो, 'कुशावर्त्त पर पंडे लोग बड़ी २ बहियां लिए हुए बैठे थे! और बहीके पत्रों को अपनी अंगुली में थूक लगाकर पलटते जाते थे! यह भ्रष्ट, चार हरिद्वारी पंडों में ही देखा! एक और बात इन लोगोंमें थी किसब पायजामा पहने और हिंमामे बांधे हुए थे, तिलक किसी २ के माथे पर था, बाकी 'ब्रह्म तेज नदारद, यहां यात्री लोग श्राद्ध करते हैं, यहांसे नंबर ५ पुल पर उतर कर गंगा पार रोड़ो में पहुंचे रोड़ो में ही जाट मेला पड़ा था, रोड़ो में बड़ीबड़ी सड़कें बनाई गई थीं, उनके दो नों तरफ दूकानें थी, दूकानों के पीछे को ओर यात्रियों के कुप्पर थे, जोयात्री यहां ठहरे थे, वह वास्तव में तप करते थे, पर्ण कुटी में धूप ओस सहकर गंगाजल पीते थे, और भोजन के साथ में बहुत कुछ गंगातरंज भक्षण करजाते थे। इसी रोड़ी में एक ओर वह सब वैष्णव पड़े थे, जो वृंदावन से आये थे पर यहां उनकी वह शोभा नहीं थी। महंत लोग अकेले बैठे मक्खी मार रहे थे! यह रोड़ी एक टापू है, इसके दूसरी ओर नील धारा है, जो बड़े वेगसे ऊंचे पत्थरके ढोकों को तोड़ती फोड़ती बह रही थी! इसके सामने नील पर्वत है, जिसकी छटा दूर से फीरोजी रंगकी मारती है, और प्रकृति का बहुत ही सुंदर चित्र है। यह सब शोभा देखकर थोड़ी देर विश्राम किया प्रायः ४ बजे फिर सैर को निकले, यहां कोई बड़ा भारी बाजार नहीं लगता, हरिद्वार में जो सब दूकानें बनी हैं, उन्हीं को १००) रुपये तक किराया देकर लोगों ने खोली थीं, बाजार में कोई बढ़िया चीजें बिकने नहीं आई थीं, यात्रियों को जरूरी चीजें सब मिलती थीं, हलवाई, परचूनिया, तरकारी वाले, पंसारी आदि के सिवाय कसेरों की दूकानें थीं, जिनमें गंगाजली, और कलशे बहुत बिकते थे। टीनवाले टीनकी गंगाजली, और कनस्तर बेच ते थे; सब से ज्यादा बिक्री पंजाबी पंखियों की हुई, जिसका कारण यहकि गर्मीका मौसम, और सौगात थी। मुरादाबादी बर्त्तन, पंजाबी कपड़े, पहाड़ी औषधि, पुस्तकें, बिसाती, धूप, आदि की भी बिक्री बहुत थी, पर संबसे चुनरियां, जो हलकी और रंगकी चटक थीं लोगों ने बड़े उत्साह से लीं, वार्नी शीशे बोतल, चटाई, डबियां आदिभी हाथों हाथ उठी जातीथीं, बाजारमें कोई बढ़िया माल न था, यात्री यहां सब देशों के थे, पर पंजाब अवध, पश्चिमोत्तर और अवध दोयम, मारवाड़ी सोयम, बिहार बंगाल

चहारम, और गुजरात महाराष्ट्र पंजम था. बाकी थोड़े बहुत सब जगह के यात्री थे। राजाओं में महाराजा काश्मीर, राजा साहब अयोधया, रानी साहब महिषादल, राजा साहब कामा थे। रईसों में सेठ राधा कृष्ण चूड़ीवाले मथुरा के, काशी के बाबू विश्वेश्वरदास जी, लाहौर के राजा हरिवंश सिंहजी, वृंदावन के साहु माधुरीशरण जी कलकत्ते के सेठ हरिदयाल जी आदि थे। निदान बाजार देखते हुए कनखल को चले प्रथम 'नाटकवाड़ा' देखा. यहां बाबा नानक की करुणामय मूर्त्ति स्थापित है आगे उदासियों के अखाड़े में मठ की सार्वभौम सभा थी. जिसके आचार्य पंडित गिरिधारी लाल जी थे. सभा में बड़ा गड़बड़ बैठने उठने का कुछ नियम नथा. सभा के मैनेजर लोग भले भले आदमियों को इधर उधर उठा कर तिरस्कार करते थे. इतने में ही दक्षिणा बांटी गई, बस पंडित लोग दौड़ २ कर एक कूपर में से लेले आते थे. दक्षिणा दो दो रुपा, और मुट्ठीभर बतासे. इतनेमें ही पंडित गट्टू जी आये, एक टेबल पर उन्हें पकड़कर मूर्त्ति की तरह बिठला दिया. पंडित गट्टूजी ने कुछ आर्य समाज का खंडन किया कि इतने में ही राजा साहब अयोधया आये. पंडित गिरिधारी लाल जो जो गर्व के मारे किसी से बोलते नथे, सटर पटर करते दो चार जनों को खूंदते उन्हें लिवा लाये, लाकर के उन्हें गट्टू जी के आगे बिठला दिया. राजा साहब को ठकुर सोहाती होने लगी इतने में गट्टू जी से अभिधान करने की प्रार्थना की पर उनको महा मंडल में जाना था, इससे एक समस्या पूर्ण कर चलते हुए. चलती समय कुछ पंडित जी को भेंट हुई पर पंडित जी ने उसे तीर्थ की भेंट समझ कर नहीं ली. जिसे कि और पंडितों ने बड़े आग्रह से लीथी. यहां से भारत-धर्म-महामंडल में गये. यह मंडल कनखल में दक्षेश्वर महादेव के बाड़े में था. एक बड़े भारी मायवान के नीचे इस की बैठक थी. अंतके दिन इसमें महाराजा दर्भंगा की ओर से महोपदेशकों को मोने के पदक बांटे गये थे. खैर यह तो अचकाही हुआ. पर जनरल सेक्रेटरी और असिष्टेंट सेक्रेटरी आदि का महाराज ने सत्कार कुछ नहीं किया इस का हमें खेद है. यदि परिश्रम की दृष्टि से यह सत्कार हुआ, तो सबसे पहिले पंडित दीनदयालु जी और पंडित ठाकुर प्रसाद जी तथा बख्शी कृष्ण प्रसाद जी का होना उचित था. अस्तु अब दूसरी बार महाराज इसका धयान रखेंगे। इन दिनों सभाओं की कार्य प्रणाली केवल हिंदुस्तानी पंचायतों की सी थी, और आर्य समाज से शास्त्रार्थ आदि भी नहीं हुआ. न इन सभाओं का कुछ प्रभाव मेले पर पड़ा. पर इतना अवश्य हुआ कि सर्व साधारण में जो यह विश्वास

है कि गंगाजी की अवस्था अब कुल सात वर्ष रहगई है, इसका खूब खंडन हुआ. और पत्रावालों को बड़ी लज्जा उठानीपड़ी और गंगाजी का अचल राजी रहा! कनखल एक अच्छा नगर है, और बड़ी २ पक्की इमारतें यहां बनी हैं. हरिद्वार से बहुत आबाद है. कनखल से जो कच्ची रास्ता हो कर हरिद्वार को चले तो रास्ते में गुसाईंयों के बड़े २ अखाड़े पड़े। जिनमें हजारों साधु ठहरे हुएथे, और जहां देखिये, वहीं मोहन भोग, लड्डू, कचौरी, उड़ रहे थे। जिधर देखिये, उधर ही गेरुआ रंग दिखलाई देता था. न मालूम इतना गेरू किस खान से आताहै? और इनकी हजामत बनाने को नापित किस देश से आते हैं? इन अखाड़ों के नाम कहां तक लिखें, हम केवल इनके मुखिया भेद बतलाते हैं. जो इस समय हरिद्वार में आयेथे. १ सन्न्यासी (शंकर मतानुयायी) २ गुसांईं [शंकर मतानुयायी, पर अखाड़े आदि बांध कर रहते है] ३ गृहस्थी गुसांईं [इन्होंने गृहस्थाश्रम कियाहै, बाकी और गुसांईं लोगों की सी वृत्ति रखते है] ४ नागा [राख लगाते बिलकुल नंगी रहते है] ५ खाकी [राख लगाते हैं पर कोपीन कपड़े की या काठ की रखते है] ६ बैरागी चारों संप्रदाय के वैष्णव] ७ उदासी (नानक के मत मानने वाले) ८ निर्मले [गुलाबी पकड़े वाले] ९ दादू पंथी [दादूराम के चेले] १० जंगम [कमर में घंटे बांधे भिक्षा मांगते हैं, जो घंटों की आवाज सुन कर भिक्षा दे, तो लेलें, ठहरते नहीं] ११ भैरव [कुत्ता संग में रखते है] १२ सरभंगी (जो भंगियों के गुरू होतेहैं, मद्य मांस सब खातेहैं] १३ कनफटे (गोरखनाथ के चेले) आदि बहुत से पंथ यहां इकट्ठा थे। यहां लक्षों ही साधु इकट्ठे थे, पर संसार से विरक्त लोग बहुत ही कम दिखलाई दिये. प्रपंच का सब जगह प्रवेश था.

एक बात हम भूलगये. वह यह कि इसी दिन प्रातःकाल हमारे एक मित्र ने कहा कि सूरज कुंड चलिये, यहां और क्या काम था चले. सूरज कुंड एक पहाड़ की घाटी में है, हमने सोचा कि यह बड़ी रमणीय जगह होगी, क्योंकि व्रज वासियों को कुंडके नाम सेही 'तरावत' आजाती है, पर वाहरे सूरज कुंड! पहाड़ पर चढ़ते चढ़ते जब पैरों का कचला होगया, तब एक देवी का मंदिर मिला. वहां से जितना ऊंचा चढ़े उतनाही फिर नीचे उतरना पड़ा, तब कहीं सूरजकुंड मिला। सूरज कुंड एक दो गज लंबा चौड़ा गढ़ा है, जिसमें कीचड़ भरी थी, पर वाहरे अंध परंपरा कि यहां खेंच लाई! फिर वही चढ़ा उतरी करनी पड़ी, प्यास से बेचैनी, धूप का त्रास ऐसा हुआ कि अबतक रोमांच होते हैं! सुना है कि यह सूरज कुंड कोई

तीर्थ नहीं है, धूर्तों ने बनालिया है, हमारी राय में सर्कार इसको रास्ता बंद करदे क्यों कि एक तो इस चढ़ाई में कहीं जल नहीं मिलता. दूसरे यदि रास्ते में कोई चोरडकैत करले, तो पता नहीं लगे. यात्रो को दोनों तरह कष्ट है. अस्तु प्रकृत मनु सरामः।

११ तारीख को यह मनादी होगई कि कल स्नान के बाद कोई मनुष्य हरिद्वार में नहीं घुसने पावैगा, जिसके पास कपड़े को नई टिकट न होगी, और यह टिकट तहसील में ≠) में मिलेगी, जिन लोगों को हरिद्वार में रहना था उन्हों ने टिकट ली। हम भी टिकट लाये. १२ को प्रातःकाल ही से स्नान का आरंभ होगया। सब नाके बंद करके मायापुर से जो सड़क हरि की पैड़ी तक आतीहै, वही रास्ता स्नान करने वालों के लिये रखी. हरि की पैड़ी के दो फर्लांग इधरसे फाटक बनाये गये थे, यात्री लोग फाटक पर रोक दियेजाते थे, जब एक फाटक पर खूब भीड़ हो गई, तब फाटक खोला, और वह निकाल दिये गये, और दूसरे फाटक को बंद करदिया, जब वह भी भरगया, तब तीसरे में निकाल दिया इस तरह हजार बारह सौ आदमी से अधिक एकबार नहीं निकाले जाते थे, जब हरि की पैड़ी पर स्नान किया तब भीड़ पार उतार दिया। यह फाटक अफसर लोग झंडी दिखला कर खोलते और बंद करते थे। जो यात्री टिकट होल्डर थे, वही हरिद्वार में आने पाये. स्नान के समय कोई यात्रक या पंडा भीतर नहीं घुसने पाया। दाता लोग यात्रियों को पुकारते फिरतेथे कि कोई हैं! साधू लोगों के स्नानके लिये बड़ा कड़ा प्रबंध था! एक एक अफसर मय सवारों के एक एक दल के साथ था, ठीक समय पर उनको स्नान कराकर लौटाया गया। इस लिये गंगाजीमें दस बारह पुल और कितनी ही रास्तायें बनीं। सबसे पहिले नागा, गुसाईं, दूसरे बैरागी, तीसरे उदासी आदि को स्नान कराया! पर जो शोभा वृंदावन में जमातों के निकास की हुई वह नहीं थी, वहां झलामलो के निशान, यहां गेरुआ निशान, वहां होली, और ब्रजका आनंद, यहां लड़ाई भिड़ाई की चिंता, पर तब भी बहुत अच्छा था, यह तपोवन, और वह व्रजभूमी! कथा संक्षेप, यह दिन बारह वर्ष बाद निर्विघ्न भारत भूमिने देखा! इस कुंभ के समय हरि की पैड़ीपर खड़े होकर बहुत से भाव उदय हुए उनमें से दो एक यहां लिखता हूं. १ लोगों को संदेह है कि हिंदू धर्म मरा, नहीं तो मरनेवाला तो जरूर है, पर यह मिथ्या है, जिस धर्म में इतनी शक्ति है कि एक बात की बात में लाखों मनुष्य एकत्र होजाते हैं वह न मरा, न मरेगा २ भारत में हजारों मत मतांतर हैं, पर इस समय सब एक उद्देश की सिद्धि के लिये

यहां उपस्थित है, ऐसाही कभी देशोन्नति में भी एक चित्त होंगे ? ३ श्री गंगाजी भी भारत का कैसा अपूर्व तीर्थ है जिसके दर्शन मात्र से लक्षों जीवों का चित्त शुद्ध होता है जो श्री गंगा स्नान को निंदा करते हैं वह बड़े पामर हैं, ४ हमारे पूर्वज ऋषियोंका मत बड़ा गूढ़ और गंभीर है, उनका धर्म जीवंत है, आज भी किसी धर्म ने इतनी उन्नति नहीं की ? ऐसे ऐसे अनेक विचार कर रहा था, कि इतनेमें ही एक धक्का लगा, तो फिर भीड़ में हमारा पता न लगा.

प्रातःकाल सप्त स्रोत को चले. रास्ते में 'भीम घोड़ा' मिला 'भीम घोड़ा' का शुद्ध नाम "भीम गदा" है. पांडव लोग जब स्वर्ग को जाने लगे, तो रास्ते में पर्वत को रोक थी, भीमसेन ने पर्वत को गदासे तोड़दिया, तब से इसका नाम 'भीमगदा' हुआ. बोध होता है कि भीमगदा को लोगोंने 'भीमगधा' कहा होगा तब विवकी लोगों ने 'गधा' को 'घोड़ा' कर दिया बड़ा घोड़ा अभीतक चला जाताहै, आगे घोड़े को क्या बनना पड़े ? काल की भी क्या विचित्र गति है ! यहांसे थोड़ी ही दूर पर सप्त स्रोत है, यह बड़ा रमणीय स्थान है. कभी सप्त ऋषियों के लिये गंगाजी की सात धारा हुई थीं, पर अब तो एक ही धारा है। यहां बहुत से एकांती साधु वेदांत का अनुशीलन करते हैं। पतित पावनी भागीरथी की यहां बड़ी अद्भुत छटाहै ! 'बोल गंगाजी की जै'

यहां से लौट कर बिल्वकेश्वर और ललिता देवी के दर्शन किये। यहभी रमणीय स्थान है। इसी के निकट रेती में गोरक्षिणी सभा का डेराथा। यहां पंडित जगत्नारायण जी गो सेवक, और पंडित रामखेलावन अयोध्या वासी के लेक्चर होते थे। लोग बड़े उत्साह से सुनते, और गोरक्षा में भेट करते थे। इस सभा को हरिद्वार गोरक्षिणी सभा नहीं समझना, जनाब ! उसका तो एक कुत्ता भी यहां नहीं मिला. वह सभा न जाने किस लोक में थी, यदि उस सभा की ओर से कुछ उपाय होता, तो बहुत कुछ चंदा मिल जाता. हरिद्वार और कनखल के बीच में मायापुर में आर्य समाज का भी एक अखाड़ा था, वहां बहुत से आर्य लोग प्रीत देते थे, पर आता बहुत कमथे। मायापुर में जहां से कानपुर को नहर निकली है, वह स्थान भी दर्शनीय है, गंगाजी का सब वेग नहर में चला आयाहै, प्रकृत धारा में बहुत थोड़ा २ जल जाता है। इसी से गंगा जी इतनी क्षीण हैं।

अब हम यहां का कुछ इंतिजाम लिखते हैं. साहब कलेक्टर, सिनेटरी कमिश्नर पुलिस, और मिलोटरी चारोंके सुपुर्द यह इंतिजाम था. पुलोंकी देखभाल और सफाई

मिलिटरी के हाथ में थी। पुलिस के हाथ में चोर बदमाशों का प्रबंध था. सिनेटरी कमिश्नर, सफाई और हस्पताल के प्रबंधक थे.साहब कलेक्टरको तो कुल जिमेंदारी ही थी. हजारों मिहतर बाहर से बुलाये गयेथे, हर बंपुलिस्, और प्रेशाब घर पर मुनासिब मदद थी। सिवाय इनजगहोंके कोई पेशाब, अथवा पायखाना नहीं जासक्ता था। इसको देख भाल थी। जंगलों तक में कहीं मैला नहीं पड़ा रहने पाता था। बदमाशों के लिये ष्टेशन, और बीमारों के लिये हस्पताल जगह जगह बनाये गये थे। डाक्टर लोग बराबर मुस्तैदथे. डांक और तार भी सिवाय पिछले पहरों के बराबर खुला रहता था। यदि इंतिजाम खराब था, तो रेलवेका था। यद्यपि कितनी ही जगह ष्टेशन पर टिकटें बंटती थीं, पर मालगाड़ियों मेंही मुसाफिर भरे जाते थे. और बिना मर मार टिकटें नहीं मिलतीं थीं। सेकेंड क्लास् वालों तक को मालगाड़ी नसीब हुई. बहुत से आदमी आठ दस रोज तक भीड के इंतिजार में पड़े रहे. खैर तब भी इंतिजाम बनिस्बत और मेलों के अच्छा था। इस मेले में जो कुछ बीमारी और कष्ट का भय था, वह सब औफीसरों की कृपा से नहीं रहा. यहां तक कि यदि इतनाही मेला और आता तब भी कुछ गड़बड़ न होता। डाक्टर बर्मन की हैजे की दवाई के बडे बड़े मोटे अक्षरों के विज्ञापन हर दरो दीवार में लगे थे, पर सुना कि बहुत थोड़ी शीशियां बिकीं. हम समझते हैं कि डाक्टर वर्मन की दवाई का नोटिस् भी शायद हैजा दूर करसक्ता है,इसी से यहां हैजे का उपद्रव न हुआ. बीमारी तो यहां नाम मात्र की नहीं थी, जिसका एक मुख्य कारण यह भी था कि मौसम सर्द थी. दूसरे लोगोंके दिल भी बडे वजबूत थे, यदि चित्त दुर्बल होते तो बहुत जल्दी मेला नौ दो गयारह होता। जोहो, इस मेला के निर्विघ्न समाप्त होने का अनेक अनेक धन्यवाद हम मिष्टर पीटरसन साहब बहादुर को देतेहैं कि जिनकी दृढ़ता, योग्यता, बुद्धिमत्ता, और आनुभाविकता से यह मेला ऐसी सुंदरता से हुआ. केवल धन्यवाद ही नहीं, बधाई भी देते हैं, और प्रार्थना करते हैं कि जगदीश्वर ऐसे सुयोग्य आफिसर को सदैव ब्रटिश मुकुट (British Crown) की शोभा बनाये रखे। इसके बाद हम और और औफिसर लोगों को धन्यवाद देतेहैं कि जिनके परिश्रम का यह फल है। इससे अधिक हम समस्त भारतवर्ष को बधाई देते हैं कि जिससे कितने ऊजड़ होने से बच गये।

अब हम हरिद्वार के मेले की दो एक साधारण बातें लिख कर प्रस्ताव समाप्त करते हैं। प्रथम इस मेले में यह बात बड़ी अपूर्व थी कि लक्षों स्त्री पुरुषों में मथुरा

वृंदाबन अथवा काशी, प्रयाग के समान व्यभिचार का प्रचार नहीं था, प्रचार तो दूर विकार भी नहीं था, द्वितीय इस समारोह में 'बोल गंगा माई को जय! बोल गंगा रानी को जय! गंगा माई तेरी सदाही जय! जो बोलेगा सो निहाल होगा, गंगा माई को जय!' इत्यादि जयध्वनि भक्तलोग ऐसे प्रेम से करतेथे कि हृदय गद्गदहोजाता था, तृतीय इस धूमधाम में भी यहां ऐसी स्वाभाविक शांति थी, कि हृदय को स्वतः वैराग्य होता था। चतुर्थ गंगाजी का जल ऐसा मधुर, स्वादिष्ट और शीतल था कि अमृत भी उसके आगे तुच्छ है, उसके पान से ही चित्त द्रवीभूत होता था, हम अपने शांति प्रयासी पाठकों को परामर्श देते हैं कि जब कभी घर से लड़ कर बाहर जाना चाहें तो सीधे हरिद्वार को जायें, इससे बढ़ कर उदासीन स्थान कहीं नहीं मिलेगा क्योंकि उत्तराखंड तपोभूमि का यही द्वार है, तथाहिः—

'हरिद्वारे कुशावर्त्ते बिल्वके नील पर्वते, स्नात्वा कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते'

सौदामिनी।

(नवन्यास)

४

युवा एक बजे इलाहाबाद पहुंचे, रात्रि का समय था, रेफ़िशमेंट रूम में जाकर शयन को, प्रातःकाल होते ही एक जोड़ी गाड़ी भाड़ा करके कालिज को चले वहां प्रिंसिपल साहब को जाकर चिट्ठी दी, उन्हीं ने कालिज में F. A. क्लास में भरती किया बोर्डिंग हौस में कोई अच्छी जगह नथी, इसलिये एक मकान की फ़िक्र में अपने एक संबंधी के पास चौक में गये। उन्हीं ने एक उत्तम स्थान बरुआ घाट पर यमुना किनारे किराये को लेदिया, और स्थान को मेज, कुर्सी, टेबल, लेंप, फ़र्श आदि से सुसज्जित करदिया, एक रसोइया ब्राह्मण, एक कहार और एक चपरासी नौकर रखदिया। और एक गाड़ीवाले से कालिज के आनेजाने का २०) माहवारी में ठेका कर दिया। बाबू साहब का पठनपाठन आनंद में होनेलगा। इसी स्थान के निकट एक बंगाली बाबू

हाईकोर्ट के वकील रहते थे, उनके पुत्र बाबू मुकुंदचंद्र बोसभी F. A. क्लास में बाबू के साथ पढ़ते थे, उनसे बाबू की बड़ी मित्रता होगई. निदान बाबू को इलाहाबाद परदेश नहीं मालूम पड़ता था।

. मकान के एक कोने में यमुना तट पर कुछ फुलवारी थी. एक दिन रात्रि को एकांत में बाबू साहब वहां बैठे थे, यमुना जी की तरंगो में जो तारों के प्रतिबिंब पड़े थे, उनको मछलियां आटे की गोलियां समझ कर खाने को आतीं थी, पर मुंह मार कर निराश हो कला खाकर फिर जल में डूब जातीं थीं, इसका कौतुक देख रहेथ। इतने में ही यमुना ब्रज पर रेल निकली। बड़ा घर्घर शब्द हुआ, रेल को देखते ही बाबू साहब की गढ़ी चोट उछल आई, बहरामपुर रेलवे ष्टेशन पर जो आतो वार कांड हुआ था, रेल को देखते ही उसकी याद आगई. उस कांड की एक एक अध्याय याद करने लगी. उसमें भी सौदामिनी का प्रतिचित्र स्मरण करके बहुत ही बेकली हुई. बाबू साहब इसी की उधेरबुनी में एक घंटे तक बैठे रहे. प्राकृतिक शोभा उन की और भी सहायता देती थी कि 'हां अवश्य एकवार फिर बहरामपुर चलना चाहिये'

५.

दूसरे दिन रविवार था. बाबू साहब भोजन करसे ११ बजे को गाड़ी में सवार हो कर कोई एक बजे बहरामपुर पहुंचे. गाड़ी से उतरते ही तारघर में गये. वहां एक बाबू से पूंछा 'बाबू मुरलीधर कहांहै ?' बाबू के घर पर पहुंच. आवाज़ दो'

'जनाब बाबू साहब !,

भीतर से सौदामिनी निकल आई. दर्वाजे का पर्दा उठाकर जो घनश्याम को खड़ा देखा, तो मुंह ढक कर पर्दा गिरकर सौदामिनी भाग गई. और माता से कहा कि वह आगरे वाले बाबू हैं, जो उस दिन रात को यहां रहे थे माता ने कहा 'अच्छा तो उनहे बिठलाद' सौदामिनी बोली 'मैंतो उसके सामने निकलती नहीं, मुलिया को मा को बुलाये देतो हूं' सौदामिनीने खिड़की खोलकर पास के क्वार्टर में से मुलिया की मो को पुकारा। मुलिया की मा रोटी कर रही थी. उसने मुलिया को भेज दिया मुलिया कूदती फांदती आई. सौदामिनी की माता ने उसे ताली देकर बाबू को बैठक में बिठलाने कहा। मुलिया बाहर जाकर पुकारी 'ओ बाबू! एहर बैठक में बैठ जा,

बाबूने कहा 'बाबूजी! कहां हैं?' मुलिया बोली 'ओ तो आज कानपुर गये हैं' 'तो हम जाते हैं' कहकर बाबू लौटे। मुलिया बोली 'अच्छा जाव! काम कोई तुही को बुलानेगयो था' बाबूने अप्रतिभ होकर देखा मुलिया सौदामिनी केघर फिरघुसी कहा 'दरजरवा को ष्टेशन बाहर निकाल आई' सौदामिनी को मा ने कहा 'रांड! तुझे बैठक में बिठलाने कहा था, सो काकर आई'? 'जा बुलायला' मुलिया फिर बाहर आई' और आवाज़ दी 'ओमन सरुआ एहर आ एहर आ, तुहिको सुद्दा को मा बुलावत हैं बाबू लौटे, इतने में ही मुलिया को मा को सौदामिनो को मा ने भेजा. मुलिया की मा ने बाबू से आकर कहा कि 'बाबू जी! यह लड़की गंवार है, आपसे काम बोलना जाने, बहूजीने कहाहै कि आप बैठकमें ठहरें, शाम को बाबू जी आवेंगे, तब उनसे मिलयेगा बाबू ने कहा 'बहू जी से मेरी सलाम कहो और मैं ष्टेशन पर हूं' बाबूजी से मिलकर जाऊंगा' मुलिया को मानें लौटकर कहा, नहीं आप बैठक मेंही ठहरें, नहीं तो बहू जी बुरा मानेगी, और बैठक में बाबू को लिवालाई. कुर्सी पर बाबू को बिठलाकर पंखा करने लगी! बाबू ने कहा 'तुम जाओ, मैं बैठा हूं' थोड़ी देर में मुलिया को मा शर्बत, पानी, और पान लाई. बाबूको शर्बत पिला, पान खिला चली गई.

६

बाबू साहब थोड़ी देर ठंढे होकर अपना सबक याद करने लगे. उधर सौदामिनो को माने मुलिया को मा से कहला भेजा कि 'बाबू साहब! खाना तयारहै, खा लीजिये' बाबू ने कहा कि मैं. इलाहाबाद से खाना खाकर चलाहूं, माफ कीजिये, शाम को खालूंगा, अनंतर मुलिया को मा और बाबू को कुछ बातचीत न हुई. बाबू सबक पढ़ते पढ़ते एकबार उठे और इधर उधर आले दिवालों को टटोलने लगे कि कोई अखबार पढ़ने को मिले. इतने में बाबू साहब को एक खुली अलमारी मिली उसमें एक कागजका टुकड़ा मिला. जिसमें बड़े २ मोटे अक्षरों में कईजगह 'घनश्याम' २ लिखाथा बाबूनिस्तब्ध! दांतोंमेंअंगुली दाबकररहगये और इधर उधर टहलने लगे. बाबू साहब इसका अर्थ समझ गये, और उसी कागज के साथ दूसरे कागज पर कुछ लिखकर रख लिया. और फिर थोड़ी देर उस कागज को देखभाल पहिले कागज के साथ लपेट कर एक बस्ते में रख दिया. फिर कुछ देर समय नष्ट करके बाबू ष्टेशन पर आये. और बाबू मुरली धर की प्रतीक्षा करने लगे. शाम को

गाड़ी में बाबू मुरलीधर आये. बाबू मुरली धर इनको देखते ही प्रसन्न होगये. दोनों जने बड़े प्रेम से घर आये. बहुत सी कथा वार्त्ता के अनंतर बाबू घनश्याम एक पिटारी लाये. उसमें से एक पत्थर की तश्तरी, पेठे की मिठाई, दाल मौठ, गुड़िया, और एक शृंगारदान कुछ काठके प्याले निकाले. और एक चिट्ठी दी. बाबू मुरलीधर उसे पढ़ कर बहुत संतुष्ट हुए, और कहा 'आपके लाला साहब की इस मेहरबानी का मैं बहुत शुक्रिया अदा करता हूं, और उससे ज़्यादा आपका कि आपने इस गर्मी में तकलीफ की, और इन सब चीजों की क्या जरूरत थी? खैर आपके लाला साहब की यह यादगार रहेगी। इसके अनंतर रात्रि ११ बजे को गाड़ी में भोजन करके घनश्याम बाबू फिर इलाहाबाद लौट आये।

७

प्रातःकाल हुआ. सौदामिनी स्नान करके बैठक में आई. अपनी अलमारी में से बस्ता निकाला. बस्तामें से अपने पढ़ने की पुस्तक गुटका दूसरा खंड निकाला. उसके एक कोने में एक कागज अपना लिखा जिस पर 'घनश्याम! घनश्याम' लिखाया, पाया. उसी के साथ एक दूसरा कागज जिस पर यह लिखाया, पाया.

'लिखन पढ़न की है नहीं कहीं सुनी नहिं जात। अपने मनमें जानियो मेरे मनकी बात'

१५ जून १२ बजे रात के.

सौदामिनी को यह पढ़ कर रोमांच हो आये. और कुछ हर्ष, कुछ संभ्रम, कुछ भय, कुछ चांचल्य ऐसा उदय हुआ कि पढ़ने में तनक भी जो नहीं लगा. लाचार पुस्तक बंद कर मां की कोठरी में जा सोई. और अनेक प्रकार की तरंगें उठने लगीं कुछ देर में माने पूंछा 'सुही! आज क्या है? जो पढ़तो लिखतो नहीं सवेरे से पड़ी है?'

'मा! मेरा जी अच्छा नहीं'

थोड़ी देर में बहुत सा नाज आया, उस के उठाने धरने में सौदामिनी लगगई'

इधर घनश्याम कालिज में गये. पर जी उड़ता था. जैसे तैसे छः घंटे काट कर घर आये. वहांभी पढ़ने लिखनेमें कुछ जी नहीं लगा. लाचार हवा खाने गये. वहां भी उस पापी चित्त विक्षोभ ने पीछा नहीं छोड़ा.

अंत को घनश्याम ने बड़े कठिन से १५

तारीख तक दिन काटे। पंद्रह तारीख को हमारी हिंदी अमावसवाली थी. रात्रि ८ बजे को गाड़ी में घनश्याम बहरामपुर पहुँचे. स्टेशन के बाहर जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठे रहे. बाबू मुरलीधर का मकान वहां से दीखता था. ११ बजे बाबू मुरलीधर लालटेन लेकर अपनी डूटी पर गये. घनश्याम ने अच्छा समय पाया. यह चुपचाप मुरलीधर के क्वार्टर के नीचे पहुंचे. इनका हृदय थर थर कांपता था, क्योंकि प्रथम ही चोरी करने निकले थे. चारों ओर देखा, कहीं सेंध नहीं पाई. अंत को बैठक की तरफ गये, बैठक में भी अंधकार पाया. उस समय एक बुद्धि स्फुरी. इनके पास इलेक्ट्रिक् तार था, उसको जलाया, तो चारों ओर चांदनी खिल गई. जो दो एक मनुष्य जगते थे, उन्हों ने इसका भेद न समझा. कि यह क्या है? पर सौदामिनी को मालूम होगया वह बड़े यत्न से बैठक में आई. और खिड़की का एक किवाड़ खोला, और लेंप जलादी. घनश्याम ने देखा कि बैठक में रोशनी है, घनश्याम झट इधरको आये, और खिड़की में होकर बैठक में प्रवेश किया. और फिर झट किवाड बंद करदिये. सौदामिनी एक कोने में नीची नार किये बैठी थी. और लज्जा से मुंह ढक रखा था. घनश्याम ने पास जाकर थोड़ी दूरसे कहा कि 'यह मुसाफ़िर इस ष्टेशन पर बेतरह लुटगया. इस का सब जानी माल आपके पास है. अब इसको जीने में कुछ मजा नहींहै. अब आप इसको बेदाम गुलाम बना लीजिये'

सौदामिनी ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया. नीची नार किये जो कुछ सोच विचार कर रही थी, एक दम से जी भर आया, रो उठी. यह दशा देख कर घनश्याम का भी जी भर आया. नेत्रोंसे अश्रु गिरने लगे. और हाथ बढ़ा कर सौदामिनी के अश्रु पोंछना चाहा, पर सौदामिनी ने अंग स्पर्श अनुचित समझा, इससे कुछ हट गई. घनश्याम ने कहा कि 'मैं प्रयाग में एफ़० ए० क्लास में कालिज में पढ़ता हूं, पढ़ने के साथही मुझ पर आपकी कृपा हुई. इसको मैं अपना बड़ा भाग्य समझता हूं, कि लक्ष्मी, और सरस्वती दोनों प्रसन्न हुईं, अब मैं ज्यादा नहीं ठहर सक्ता. सिर्फ एक सवाल है, मुझे आप अपनी खिदमत में क़बूल करेंगी कि नहीं, जो मेरे ऊपर आपकी कृपा हो, तो फिर थोड़ दिनों की इंतिजारी है, नहीं तो यह जिंदगी आप पर निसार है' यह कह कर बड़ी देर तक सौदामिनी की तरफ देखा. सौदामिनी ने एक कागज जो पहिले से लिख रखा था, धीरेसे ज़मीन पर मोड़ कर डाल दिया. घनश्याम ने उसे उठा लिया. उस में लिखा था:—

कमलन को रवि एक है रवि को कमल अनेक। तुमको हम से बहुत हैं हम को तुमसे एक.

मैं आपको.

घनश्याम का हृदय प्रफुल्लित होगया और कहा कि जब इतनी कृपा है, तो फिर थोड़ी सी कृपा और कीजिये. मेरी थोड़ीसी अर्जी सुन कर मुनासिब हुक्म दीजिये. सौदामिनी ने इसका कुछ उत्तर नहींदिया, पर घनश्याम अर्गनबाजेकी तरह आध घड़ीतक अपने प्रेम की स्पीच देते रहे. सौदामिनी के हृदय पर इसका बड़ा असर हुआ. अंतमें लज्जा को बड़ा कठिन से तिलांजलि देकर घनश्याम के चलते वक्त मंह फेर कर इतना कहा 'इतवार को इसी वक्त फिर आना'

'इतवार को तो बंदा हाजिर हो होगा मगर तब तक मेरा फोटो आपके पास रहेगा' यह कह कर अपना फोटो सौदामिनी के हाथ में दिया.

घनश्याम के पास रिटर्न टिकट था. चुप चाप गाड़ी में सवार होकर इलाहाबाद दाखिल हुए.

८

दूसरा रविवार भी पहुंचा. ठीक समय पर घनश्याम बहरामपुर पहुंचे. संकेत के अनुसार बैठक में मिलने का प्रबंध था. घनश्याम खिड़की की राहसे बैठक में घुसे. सौदामिनी उसी तरह कोनेमें नवविवाहिता बधू की तरह बैठीथी. घनश्यामने थोड़ी देर ठहर कर यह प्रस्ताव किया कि 'अब ऐसा कुछ होनाचाहिये कि जिससे हमारातुम्हारा कभी वियोग नहो' सौदामिनी ने कुछ नहीं कहा. बहुत पूंछने और हठकरने पर इतना जतलाया कि 'दिल्ली में' [किसी के यहां विवाह की बात चीत है] घनश्याम ने और बहुतसी आवश्यक बातें पूंछी, जिनका उत्तर सौदामिनी ने संक्षेप में दिया. परस्पर दोनों की बातें होही रहीं थीं कि बरका एक किवाड़ खुला. सौदामिनी की मा यशोदा बैठक में आई. उसे देखतेही घनश्याम तो खिड़की की राहसे भागगये. सौदामिनी को प्रेम वैचित्तो में कुछ खबर न थी. यशोदा ने सौदामिनी का हाथ पकड़ कर कहा 'सुही! यहां क्या रही थी'?

'अरी अंमा! बड़ा गजब हो गया, मैंने

बैठक में खटका सुना तो दिया बलाकर आई, यहां देखा, तो चोरहै, मेरा गला भर आया, मुझसे बोला न गया, तुझे देखते ही वह भाग गया'.

यशोदा को निश्चय हो गया कि चोर है, घबड़ाकर बोली 'जा बाबू जो को इष्टेशन से बुलायला, और कौन है, जिसे भेजूं' सौदामिनी लालटैन लेकर बाहर आई, घनश्याम दीवालके नीचे मा बेटी की बातें सुन रहा था, सौदामिनी को आते देख ठिठक रहा, कहा 'चोर जाताहै, अब आना जाना मुश्किल है, चिट्ठी से मुलाक़ात होगी चिट्ठी मुन्नियां की मा के नामसे आवेगी'.

कहकर अच्छा सौदामिनी इष्टेशन से बाबू मुरली धर को बुला लाई, उन्हों ने घबड़ा कर सब असबाब देखा, तो कुछ नहीं गया था परमेश्वर का धन्यवाद किया.

दूसरे दिन बाबू मुरलीधर ने सोचा कि अब इस इष्टेशन को छोड़ देना चाहिये, यहां जंगल में रहना अच्छा नहीं, किसी शहरके इष्टेशन को तबदीली करानी चाहिये.

६

घनश्याम कालिज से लौटते वक्त रेलवे इष्टेशन पर गये, वहांसे एक तार आगरे को देना था, इसलिये तारघर में गये वहां एक बाबू आये उन्हींने सिगनेलर से पूंछा 'कल बाबू! आपके यहां किस तरह ट्रांसफ़र हुआ?

बाबू छेदीलाल तो यहां से बहरमपुर जायेंगे, और बाबू मुरलीधर बहरमपुर से बर्दवान जायेंगे, और गोकुल चंद्र बनर्जी बर्दवान से यहां आवेंगे'.

बाबू मुरली धर का नाम सुनतेही घनश्याम का तार कुतार होगया, और सब खेल भंड होगया! जैसे तैसे तार देकर घर आये, और ऐसे अथाह शोक सागर में डूबे कि फिर पता नहीं लगा, इस दिन कहीं हवा खाने नहीं गये, केवल यमुना तट पर बैठे बैठे बाबू मुरली धर की तबदीली का शोच बिचार करनेलगे, और डी० टी० एस० की जान को रोते रहे.

इतने में ही एक आदमी चिट्ठी लेकर सामने से आया, उसने लाकर चिट्ठी दी, चिट्ठी एक सादा लिफाफे में बंद थी, खोल कर देखा तो उसमें केवल यह लिखा था.

'बाबू साहब! आखिरी राम राम! कल बर्दवान का कूंच है'

बाबू साहब ने आदमी को कुछ इनाम देकर विदा किया, आपने कुमुद बाबू को

बनाया, और उनके आगे सब क़िस्सा कह सुनाया. उन्हों ने बड़ा शोक किया, और भर्त्सनाको कि अफ़सोस! आपको इस शिक्षा का यह नतीजा हुआ. आपने तो यह बहुत जगह पढ़ा होगा, कि जो कुछ शिक्षा हो, उस पर अमल करो. आपने जो रातोंमिल, और कोमत् को फ़िलासफ़ी पढ़ी, उन का यही फल हुआ ? आप सब बातों में अंग्रेजों को नक़ल करते हैं. इस वक्त आपको वह यूरोपियन तबीयत कहां है ? अपने दिलको सावधान करो. और इस खयालसे दरगुज़रो नहीं तो आपको तरक्की इल्म यहीं तक रहे गी. बल्कि आगे तनज़्ज़ुली है फिर मुझे और खयाल है कि इस सब का नतीजा क्या ? आपके इतने प्रेम पर भी यदि उसको शादी किसी दूसरे से होजायगी, तो आप क्या करेंगे ? इस्से अब यहीं तक रखो. वह बर्दवान जाते हैं. चलो सहज झगड़ा निबटा.

घनश्याम को इस्से कुछ बोध न हुआ. और बग लेकर पहुंचे.

१०

आजकी रात घनदामिनी के लिये पहाड़ है. घरके बाहर एक कोने में दोनों मृतकल्प बैठे हैं. रात्रि को बाक़ी घड़ी पूरी कर रही है आज दोनों में कुछ हास्य नहीं, वह कटाक्षनी और उलहना नहीं, वह प्रेमका जोश नहीं आज वियोग ने दोनों को ऐसा ग्रसा है कि दोनों मूर्छित हैं. आज सिवाय 'हाय !' के दूसरा शब्द मुखसे नहीं निकलता. घनश्याम ने कहा 'प्यारी !' और आगे नहीं बोलसका. कंठ रुकगया. फिर कहा 'प्यारी ! तुह्मारे ऊपर मैं तन मन धन से नौछावर होचुका. अब कभी संभव नहीं कि तुह्मार मुख चंद्र के दर्शन के बिना यह प्राण पखी जो सकें. तुम किसी प्रकार का संदेह मत करो. मैं बराबर बर्दवान में हफ्ते वार पहुंचूंगा.

'प्यारी यह मत जानियो दूर हमारो बास। देह गेह कितहू रहो प्राण तिहारे पास'

सौदामिनी ने बहुत सोच विचार कर के कहा कि तुम इतनी तक़लीफ मत करो. वहां न जाने कैसा मौका लगे. तुह्मारे पढ़ने में हर्ज होगा. मैं चिट्ठी भेजूंगी' इतना कह कर दोनों गले लग कर बहुत देर तक आंसू बहाते रहे. कुछ चित्त का वेग घटने पर घनश्याम ने अपनी अंगूठी सौदामिनी को और सौदामिनी की अंगूठी आप पहन ली.

और कहा कि 'लो प्यारो! क्षत्रियों को रीति से तो हमारा तुम्हारा गांधर्व विवाह होगया' सौदामिनी ने एकबार टकटकी लगा कर घनश्याम के मुख देखा, और फिर लज्जा से मुख नीचा कर लिया, चार बजे मेघ और बिजुली का वियोग होगया!

११

गर्मी की छुट्टियों में कालिज दो महीने के लिये बंद होगया! घनश्याम आगर आये, सौदामिनी को चिट्ठी बराबर डांक में घनश्याम को मिलती थी, लाला विष्णुचंद्र ने घनश्याम का रूप रंग कुछ फीका देखा, और प्रति दिन ज्यादा उदास देखकर बहुत डरे, कईवार घनश्याम से पूंछा, पर उन्हों ने कुछ जवाब नहीं दिया, विष्णुचंद्र को अनुमान हुआ कि लालाजी के हृदय पर कोई तीक्ष्ण बाण लगा है, उन्हीं ने घनश्याम के विवाह के लिये इधर उधर बात चीत की, जब दो तीन जगह बातचीत पक्की होगई, तो एक दिन घनश्याम के मित्र बिश्वंभर से लाला विष्णुचंद्र ने एकांत में आलाप किया,

'विश्वंभर भाई! तुम्हें घनश्याम के विवाह की कुछ फिक्र नहीं है'

'लाला जी! आप बुजुर्ग हैं, आप को फिक्र करनी चाहिये, हम लड़कों को क्या अख्तयार है'

'भाई! अब जमाना बदल गया, अब विवाह लड़का लड़की की राजी पर मुकर्रर है जानकीदास, खुशाल, और रामनारायण तीन ठिकाने की बात चीत है, इसमें जो तुम्हारी और तुम्हारे यार की इच्छा हो, सो करें।

बिश्वंभर उनकी बात सुनकर चुपचाप चला गया, और घनश्याम से यह सब वृत्तांत कहीं, घनश्याम ने कुछ जवाब नहीं दिया, बहुत आग्रह करने पर केवल इतना कहा कि 'मुझे बिवाह करना ही मंजूर नहीं' फिर जब बहुत कुछ बिश्वंभर ने हठ किया, तब बिवाह न करने का मुखाकारण बतलाया, बिश्वंभर ने हाथ दे मारा, और कहा 'बस अब क्या है?' तुम तो हाथ से जाचुके, अब तो बिवाह करना फ़जीहत है,

इन दोनों में यह बातचीत होही रहीथी कि इतने में ही एक पोओन् तार लेकर आया, घनश्याम ने तार पढ़ा,

Marriage with Gobind Lal on 13th come soon try.

तार पढ़ते ही छक्के छूट गये, एकबार तो

होगइवास सब जाते रहे. पर थोड़ी देर में सावधान होकर विश्वंभर नाथ से कहा. 'मित्र! अब हमारे जीवन का अंतिम समय आ पहुंचा. १३ तारीख को हमारा इस दुनियां से कूंच है. सौदामिनी के बिवाह मंगल में हमारे प्राणों को नौछावर है. एक वार पिताजी के चरण छूकर याचा करता हूं.

विश्वंभरनाथ ने कहा घनश्याम! 'विपदि धैर्यम' घबड़ाओ मत हम इसकी चेष्टा करते है. विश्वंभरनाथ घनश्यामको अपने साथ लाला विष्णुचंद्र के पास लेगये विश्वंभर ने कहा 'बर्दवान में लाला मुरलीधर की लड़की का बिवाह है. यह तार घनश्याम को बुलाने का आया है. ये जाना चाहते है. हुक्म हो, तो जायें'

विष्णुचंद्र ने बहुत हक पकाकर आज्ञा दी को 'छुट्टियों में भी तुम्हें घर नहीं सुहाता' खैर बियाह होते ही चले आना. विश्वंभर तुम भी इन के साथ जाना.

दोनों जने साथ चले. मेलट्रेन में १२ वे १२ बजे बर्धमान पहुंचे. वर्धमान में पहुंचने ही पहिले गोविंदलाल को तलाश किया तो मालूम हुआ कि वह एक बहुत बड़े महाजन का पुत्रहै. अवस्था उसकी १२ वर्ष की है. विश्वंभर ने गोविंदलाल के सिपाही को जो उस पर तैनात था बुलाया, और उसे १००) के नोट दिये कि तू इस लड़के को तीन दिन के लिये कहीं छिपा दे. जब तीन दिन पूरे होजायेंगे, तब तुझे २०० और देंगे. और हमेशा के लिये नौकरी लिखालो। सिपाही वजीरखां मुसलमान था. गोविंदलाल को संध्या को हवा खिलाने के बहाने गंगा तट लेगया. वहां एक डोंगी में बैठे, और डोंगीवाले से कहा कलकत्ते लेचल डोंगा छुड़वा दिया. अब गोविंदलाल का कहीं पता नहीं रात्रिभर लोगों ने गोविंदलाल को ढूंढ़ा पर कहीं पता नहीं लगा.

इधर प्रातःकाल घनश्याम, और विश्वंभर नाथ बाबू मुरलीधर के मकान पर पहुंचे. बिवाह का सब सामान उपस्थित था. परंतु गोविंदलाल के खो जानेसे सब रंग फीका था. सौदामिनी इन दोनों को देखते ही प्रफुल्लित होगई. कहा अब जो कुछ होनाहै, सो होजायगा. घनश्याम ने अपने कलकत्ते जाने का परिचय दिया, और मुरलीधर ने सब बिवाह की कथा कही. अंत में विश्वंभर नाथ ने कहा कि 'क्यों साहब! यह तो बड़ा अंधेर है कि हलद लगी लड़की कुआरी रहे. इस में आपको देशमें बड़ी बदनामी होगी. आप यदि बुरा न मानें तो कुछ मैं अर्ज करूं'।

'फ़र्माइये'

गोविंदलाल का० तो अब पता लगना कठिन है, आज १२ बजे रात्रि को लग्न है, आप मुनासिब समझें, तो घनश्याम के साथ विवाह करदें'

'क्या घनश्याम का विवाह नहीं हुआ ?

'नहीं तो'

'बस बस बहुत ठीक, पुरोहित जी को बुलाना, कोई है ?'

पुरोहित जी, मुरलीधर और सौदामिनी को मा तीनों की गोष्टी होकर यह बात लाला बंशीधर से कहलाई गई कि अब हम लड़की का दूसरा संबंध करते हैं, उन्हों ने कहा 'जो आपकी इच्छा'

बस यहां घनश्याम के मंगलाचार होने लगे, लाला विष्णुचंद्र की आज्ञा तार में मंगवाली गई, रात्रि को १२ बजे घनश्याम और सौदामिनी का विवाह पुरोहित जी ने विधि पूर्वक करादिया, विश्वंभर ने घन दामिनी का बिछुड़ा जोड़ा, सदा के लिये मिला दियो!!!



रहीम दोहावली।

(प्रथम अंक से)

तें रहीम मन आपनो कीनो चित्त चकोर। निस बासर लागो रहै कृष्णचंद्र की ओर। ११। मुक्ताकर करपूरकर चातक रसह न कोई। एतो बड़ो रहीम जल कुथल परे बिथ होई। १२। सर सूखे पंछी उड़े जहं सर जल अधिकाइ। मीन दीन बिन पंखके कह रहीम कित जाइं। १३। बड़ेपेट के भरनकू है रहीम दुख बाढि। तातें हाथी हहरके रह्यो दांत है काढ़ि। १४। थोरो करे बड़ेन को बहुत बड़ाईहोय। जो रहीम हनुमंततें गिरिधर कहै न कोय। १५। ससि को सुखद जु चांदनो सुंदर सबै सुहाति। लगो चोर चित जोकसो घटत रहीम न कांति। १६। जो रहीम मुख पावहीं बढ़े आपनो गोत। तो बड़री अंखियान लखि आंखन ही सुख होत। १७। ससि सकोच साहस सलिल सज्जन सनेह रहीम। बढ़त बढ़त बढ़ि जातहैं घटैन तिनको सीम। १८। रूप कथो पद चारु पद कंचन दोहा लाल। ज्यों ज्यों निरखत अलप गति मोल रहीम बिसाल। १९। यहरहीम सबसंगलै जनमत नाहीं कोई। बैर प्रीति अभ्यास जस होत

होतही होइ। २०। निजकर क्रिया रहीम कहि सिधि भावी के हाथ। पासे अपने हाथ हैं दावन अपनेहाथ। २१। जे रहीम विधि बड़ किये घटि को डारत काढि। चंद कुंवरी दूबरो तउ नखतनतें बाढि। २२ बड़े दीन के दुख सुने होत दया उर आनि। हरि हाथो सों कब हुतो कह रहीम पहचानि। २३। जैसी तुम हमकों करी करी करो के तोर। बाढ़े दिनके मीत हैं, गाढ़े दिन रघुवीर। २४। राम नाम जान्यो नहीं भई पुंजो में हानि। कहि रहीम कों राखि है, जमके किंकर कानि। २५। राम नाम नहीं लेत है रह्यो विषै लिपटाई। घास चरै पशुआपतें गुड़गलगलायेखाई। २६। रामनाम जान्यो नहीं जानोसदा उपाधि। कह रहीम तिन आपनो जनम गंवायो बादि। २७। राज रहीम सराहिये जो बिधि को बिधि होइ। तप्यो निगोड़ो भानुसो रह्यो तरैयन खोइ। २८। दुर दिन परे रहीम प्रभु दुर थल जैयत भागि। जैसे जैयत घूर पर तऊं घर लागी आगि। २९। क्षमा बडेन कों उचित है, ओछेन कों उत्पात। कहा रहीम प्रभुको घट्यो जो भृगुमारीलात। ३०। जो रहीम ओछों बड़ो तोकि चलै इतराइ। राइ करोंदा होतहै कठहर होतअराई। ३१। पोतम.छबि नैनन बसी पर छवि दृग न समाइ। भरो सराय रहीम लखि जों पंथी फिर जाइ। ३२। ओछे हितहु डरात नहिं जे रहीम बड़लोग। कहा सुदामा बापुरो कृष्ण मिलता जोग। ३३। गुरुता फबहि रहीम तिहि फबि आई है ताहि। उर पर कुच नीके लगैं अंब अंबेस लखाहिं। ३४। कमला थिर न रहीम कहि यह जानत सब कोइ। पुरुष पुरातन की वधू क्यों न चंचला होइ। ३५। कमला थिर न रहीम लखि लखत अधम जो कोइ। प्रभु को सों अपनो कहै क्यों न फ़जीहत होइ। ३६। जबै समानो उदधि में गंग नाम भयो धीम। काको महिमा नाघटो परघरगयेरहीम। ३७। मान सरोवर में मिलें हंस न मुक्ता भोग। सफ़री मरे रहीम ये बिपुल बिलोकन जोग। ३८। बढ़त रहीम धनाढि धन धनै धनो को जाय। घटै बढ़ै तिन को कहा भीख मांग जो खाय। ३९। यह न रहीम सराहिये दैन लैन को प्रीति। प्रान हवालों राखिये हार हीय कै जीत। ४०। गुनतें लेत रहीम कहि सलिल कूपतें काढ़ि। मनु काहू को होयगो कहा कूपतें बाढि। ४१। रहमन कहत जो पेट सों तू न भयो किन पीठो। रोते मान बिगारई भरें बिगारे डीठि। ४२। रहमनहित अनहित अरे तजै न तिनको पौरि। नींद बिचारो आवतो मुठिकन मारी दौरि। ४३। जो रहीम उत्तम प्रकृति कहा कर सकत कुसंग। चंदन विषव्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग। ४४। जो रहीम गति दीपको कुल कपूत गति

सोइ। बारे उजियारो लगै बढ़े अंधेरो होइ। ४५। धनि रहीम जल पंक को लघु जिहि पियत अघाय। उदधि बड़ाई कौन है जगत पियासो जाय। ४६। रहमन नीचन संग बसि लगत कलंक न काहि। दूध कलारन हाथ लखि मद समझत सब ताहि। ४७। बिगरी बात बनै नहीं लाख करो किन कोय। रहमन बिगरे दूध को मथे न माखन होय। ४८। रहमन चुप ह्वै बैठिये देखि दिनन को फेर। जब नीके दिन आइ हैं, बनत न लागहि बेर। ४९।

समस्या पूर्त्ति।

रसिक कहाओ पैन रस भेद जानौ रंच फरक पिछानौ ना कुमोदनी कमल के। एक चंद्रमा के एक रवि के कलापैं मुद एक सत संग सुखमाने एक खल के॥ देखी हैं तुम्हारी बुद्धिमानी को नमूना खूब कसर न नेकु हो अजीरन अकल के। प्रौढ़ातें विसेस ना नवोढ़ा कों सतायो जाहि जाति गड़ि पायन बिछौना मखमल के॥ १॥ साँच करि जानौ नेकु बात मैं बनावती ना एक ही दिखाऊं परे अंबर जल थल के। रंभारति सची औ तिलोत्तमा हू त्यागि मन आपै ह्वै जाय बस जाकै करतल के। कहाँ लौं बखानौं कोमलाई सुघराई स्याम अंग अंग फैलत तरंग परिमल के। दबिसी रही है भार सोभाकै अपार चले जाति गड़ि पायन बिछौना मखमल के॥ २॥

पत्तनलाल.

पटना

कवित्त।

मंजुमार्त्तंडकी मरीचें नहिं छूती जाय सेज सूती जाय दूध के मे फैन हलके। कुसुम कठोर कुचभार काश्मीर हू की विविध समीर हूकी भीर होत छल के॥ चांदनी हू चपत कपत देख दामिनी हू भामिनी हू भुवन न देखी तीन तल के। जलके कमल कैधौं थलके अ-

मल एजू जात गढ़ि पायन विछौना मखमल के ॥ १ ॥

L. N.

औनरेरी मैजिष्ट्रैट्।

(प्रहसन चतुर्थ दृश्य)

(स्थान पब्लिक लाइब्रेरी)

[बाबूरामचंद्र और गोपीनाथ पत्र देखरहेहैं]

रा० चं०। कहिये, बाबू साहब! कोई नई खबर शहर की.

गो० ना०। जो आपने नहीं सुना कि लाला भौंदामल बडी कशमकश में पड़े हैं.

रा० चं०। जी नहीं, खुदाके वास्ते फर्माइये, तो क्या हुआ?

गो० ना०। जो हुआ कुछनहीं, औनरेरी मैजिष्ट्रेटी के शौक में कुछ खोबैठे।

रा० चं०। क्या?

गो० ना०। यह क्या पूछते हो? एक फ़िटन् और औरभी बहुतकुछ० मगर इसपर भी लाला कुलो के कुली ही बने रहे. हजरत दो एक बातें बनाकर यहां से रफूचक्कर होगये। अब लाला सिरपटक कर रोते हैं. दलालों के गहरे हुए।

रा० चं०। खैर यह तो हुआ, पर उनकी रिपोर्ट भी हुई, या नहीं.

गो० ना०। जी कैसी रिपोर्ट! उस दिन बडे साहब ने मुझसे कहा कि यह शख्स बड़ा बेवकूफ है! और मेरे हाथ से औनरेरी मैजिष्ट्रेटी चाहता है!

रा० चं०। हां यह तो बहुत ठीकहै कि हमारे बडे साहब के आगे किसी की दाल नहीं गलती. यह साहब जैसे बेदार मग़्ज और मुंसिफ़ हैं, दूसरे अंग्रेज ऐसे कम देखे होंगे।

गो० ना०। हम नहीं जानते कि इन लोगों को औनरेरी मैजिस्ट्रेटी में क्या मज़ा मिलताहै?

रा० चं०। मज़ा कुछ नहीं. गरीबों को हाय अपने ऊपर लेते हैं, और बदमाशों की नज़र का निशाना बनते हैं.

गो० ना०। खैरअपनोकरनी पारउतरनी हमें क्या। 'कोऊ नृपहोइ हमें काहानी'

'चेरी छांड न हुइबे रानी'

पंचम दृश्य

(स्थान लाला भौंदामलका कमरा)

(लालाभौंदामल और इमाम हुसैन मौलवी)

इमा०। जनाब! खुदाने चाहा, तो अब बहुतजल्द उम्मेदवार आयेगो, क्योंकि यह

तहसीलदार साहब भी अपने मेल के हैं, उधर वह साहब कलेक्टर भी तबदील हो गये, यह साहब तो आपसे बहुत खुश है. मैंने सुनाकि जबसे आप ऐंटी कांग्रेस् के जलसे के प्रेसीडेंट हुए. और गंजमें कई दूकानें आपने बनवादीं, आपको अव्वल् दर्जे का रईस खयाल करते हैं. मुझे तो यकीन कामिल है, कि अबको आप की रिपोर्ट जरूर होगी। मैंने सुना कि उस दिन जब बहुसे गरीबलोग अनाजको तेजी के सबब साहब के पास गये थे, आपसे भी कुछ राय लीथी ?

भींदा ! हां मुझसे पूंछा था कि वल् सेठ साहब ! आपका इस मुआमले में क्या राय है ? मैंने कहा 'ग़रीब पर्वर ! यहसब साले बदमाश हैं ! शहर को लूटना चाहते हैं. नाज का सब जगह यही भाव है ! बनिये लोग कहां से भाव बढ़ावें। और सर्कार के घर क्या खजाना गढ़ा है, जो इन निकम्मों को खाने को दे. इसी तरह एक दिन साहब ने पूंछा कि बाजार के चबूतरे फुड़वा दिये जायें, मैंने कहा जी हुजूर बहुत मुनासिब है. चबूतरों के नीचे बहुत गलीज रहता है, एक रोज चौराहे में जो महादेव का मंदिर है, उसके फुड़वाने के लिये साहब ने पूंछा, मैंने कहा जरूर फुडवा दिया जाय, इससे रास्ता बहुत तंग है, सो चौड़ा हो जायगा। साहब ने कहा तुमहिंदू होकर ऐसा कहता हैं. मैंने कहा मजहब तो हुजूर के कदमों को बर्कत है. गरज यह कि मैंने तो साहब को खुशामद करनेमें इतनी बदनामी और जरबारी उठाई कि कोई क्या करेगा। अब भी अगर मैजिस्ट्रेटी नदें तो इससे जयादा क्या बेइंसाफी है.

इमा०। जो हुजूर ! मुझे यकीन कामिल है कि आप जरूर आनरेरी मैजिस्ट्रेटी को कुर्सी को रौनक बखशेंगे।

छठा दृश्य।

[स्थान लाला भींदामल का कमरा]

लाला भींदामल और कई खुशामदी बैठ हैं

[रंडो भांड़ भगतुए आते है]

रंडो। मजिस्ट्रेटी अनाड़ी भींदामल लाला मुबारक हो। रैयत के क़तल करने का यह भाला मुबारक हो। अलिफ, बे, ते नहीं सीखे न कुछ कानून को जाना। रुपेके जोर से यह तेरा मुंह काला मुबारक हो। जो दिल में आवे वह करना नहीं है खौफ इकताला। व मोटी तोंद धोती खुल रहीवाला मुबारक हो। कर कोई शिकायत खुद वही फंस जाय आफत में। वो दुश्मन फांसने का मकरी का जाला मुबारक हो। मिले दर्बार शाही में खिलत सो०एस०आई का। सलामी तोप तेरह गुलबये आला मुबारिक हो।

भांड़। लाला हमारे मजष्टर होगये, मजष्टर होगये, कलष्टर होगये। लगारहे दरबार हरबखत लाला कोठे में सोगये सोगये। कै कै महीने अर्ज़ी पड़ी रहें कितने बिचारे तो रोगये रोगये। जुर्बाना और कैद बोल कर बग्गो में चढ़ लाला वोगये वोगये। कितने शुहदे हैं तलाश में तब तो लाला खोगये खोगये। रुपयों की पर्वाह नहीं कुछ जोगये जोगये जोगये जोगये।

[लाला भींदामल सब को इनाम देते हैं और सब मुबारक गाते चले जाते हैं]

सप्तम दृश्य।

स्थान कचहरी

(लाला भींदामल, और शेख इलाही बख्श का इजलास)

(लाला भींदामल, शेख इलाही बख्श, अरिश्तेदार, चपरासी, अहलमुकद्दमाआदि)

श्र० दा०। हुजूर! ये आजके मुकद्दमात हैं।

भींदा०। अच्छा पेश करो.

श्र० दा०। हीरा घोसी हाजिर.

(हीरा घोसी का प्रवेश)

श्र० दा०। तुमने अपने मकान के आगे गोबर डाल रखा था?

हीरा। हां हुजूर! हम घोसी हैं, गाय भैंस का गोबर कहां डालें. चबूतरे पर पड़ा था. गाय भैंस का महसूल देते हैं. हमारे गवाह हाजिर हैं.

भींदा। गवाह कैसे? जमादार हल्केने क्या झूठी रिपोर्ट लिखाई है?

हीरा। हां साहब! उन्हीं ने मुझसे एक दिन ईद को दूध मांगा था, मेरे यहां उस दिन दूध बिक गया था, इससे नहीं दिया, तबसे अदावत रखता है.

शेख। अच्छा इसके गवाह लेलो।

भींदा। जनाब! मैंजानता हूं, यह बड़ा बदमाश है, इसपर हमारे भी पंचास रुपये चाहिये, रोज बहाना करता है. अच्छा इस पर दो रुपे जुर्बाना।

हीरा। वाह! अच्छे मजिष्टर हुए, पहिले इजलासमेंही यह कैफ़ियतहै? क्या आप के ऊपर और कोई हाकिम नहीं. खैर टके की हांडी गई, कुत्ते की जात तो पहचानी गई.

भींदा। चपरासी! इसको निकालो।

हीरा। निकालते क्यों हो? दो रुपे तो लेलो, जिससे आजकी रोटीका काम चले।

(दो रुपये देकर रसीद लेजाता है)

श्र० दा०। अकड़ूखां को बुलालो।

(अकड़ूखाँ का प्रवेश)

अक०। कहिये साहब! (अकड़ता है)

भाँदा। खड़े रहो शहर से

अक०। बैठे रहो शहर से

भाँदा। शरिश्तेदार साहब! इसका क्या मुकद्दमा है?

श० दा०। इसने मुरलो बनियां को एक जूता मारा था

भाँदा। तुमने मुरलो बनियां को जूता मारा था?

अकड़ू। माराथा। और फिर मारेंगे, क्या किसी बनियां बक्काल के दबैलहैं

शरि०। जो हुजूरपूछें, उसकाजवाब दो।

अक०। उसो का जवाब देता हूं, नहीं तुम क्या चोज़ हो, जो तुम्हारी बात का जवाब दूं,

भाँदा० मैं जानता हूं, यह बड़ा बदमाश है, उस दिन हमारे आदमियोंसे यह नाहक लड़पड़ा, अच्छा इसने मुरलो को एक जूता मारा, इसपर एक अठन्नी जुर्माना किया गया।

सिपाही (अकड़ूखां को पकड़ कर)लाओ आठ आने!

अकड़ू। देते हैं, जल्दी क्यों करते हो? [अंटी में से रुपया निकाल कर] यह रुपया रखाहै, आठ आने तो मुरलोको एक जूता मारने का जमा कर लीजिये और आठ आने कहां भुनाता फिरूं यह आठ आने दूसरे जूते का लीजिये.

[बगल में से दूसरा जूता निकाल कर लाला भाँदामल को तरफ फेंकता है कि फौरन् पुलिस पकड़ लेती है, इधर अहल मुकद्दमात गड़बड़ करते हैं उधर इजलास से औनरेरी मैजिस्ट्रेट् भागते हैं धीरे धीरे पर्दा आजाता है]

दफ़ा चौंतीस।

[प्रहसन]

(प्रथम दृश्य)

[कालेखाँ चपरासी का प्रवेश]

कालेखाँ। या खुदा! आज तो कोई अच्छी शिकार हाथ आवे (इधर उधर देख कर) अरे इस मुहल्ले का महतर कौन है? शायद चैना है, अरे चैना! चैना!

[चैना का प्रवेश]

चैना! महाराज! हुकुम, हाजिर हूं.

काले। कीवे बदमाश! गधेके तखे! अभीतक झाड़ नहीं दो! देख यह क्या हाल होरहा है, साले! आज साहब शहर का गश्त करेंगे।

चैना। अजी महाराज! रात भर पांसू में दर्द भयो, सो बिल्लायो करो [झाड़ू से साफ करता है]

काले। अबे रहने दे हमारे साथ चल, बंगले पर! तेरी आज अक्ल ठीक होगी।

चैना। अजो महाराज! मोकू दर्दके मारे देर होगई।

काले। अबे देर कैसी? तू बद्जाती कर के नहीं झाड़ता।

चैना [टोपोजमीनमें रखकर] महाराज! अब देर न होगी, और सर्कार नये आये हैं यासे महोना नहीं पहुंचो। अब उनतीसे दिन चार आना महोना सर्कार कू पहुंचा दियो करूंगो.

काले। अच्छा, जल्दी साफ करदे।

चैना! जो हुकुम, सर्कार को

कालेखां। चलो चारआने महीनातो सहो हुआ लोग कहतहैं कि भंगीसे न लियाकरो भंगी से नलें तो खायें क्या पांच रुपे में क्या गुजर होती है?

(एक परदेशी आता है, और पेशाब कर ने को बैठता है)

कालेखां। ओ आदमी! यह क्या किया?

परदेशी। कांई पेसाव करया छे? कांई भया?

कालेखां। कांई भया? (हाथ पकड़ कर) चल कचहरी को

परदेशी। भाई! ह्यांतो परदेसी छां, या बात तो को जाणी नहीं।

कालेखां। अब सब आटे दाल का भाव मालूम होजायगा। चल!

परदेसी। भाई जमादार! अब तो कुसूर भया, याकू माफ करो, आगे ऐसा न करांगा

(मंगू पुलिस के चौकीदार का प्रवेश)

कालेखां। मंगू भाई! सलाम, खूब आये लो इसको कचहरी लेचलो।

परदेशी। अरे यातो एक से दो होगया। अच्छा भाई! ले तमाखू पी जो (दो पैसे देता है)

मंगू। दो पैसे का सत्तू ले खैयो, चला देने को

पर०। और तो मझारे पास कछु है नहीं, लेचलो चाहें जहां मह्यां को

(एक दलाल का प्रवेश)

द०। ओ परदेसी! तू कुछ इनको दे दिला कर पीछा छुड़ा नहीं तो बड़ा खराब होगा।

पर। भाई! बतातो दे, कांईकांई होगा?

द०। यहांसे ये तुझे कोतवाली लेजायेंगे, वहां कफ़नखसोटो होगी। जमानत लेकरके तुझेछोड़ेंगे, औरकहीं किसीने जमानतनदी, तो फ़िर हवालात करदेंगे वहां से फ़िर दो तीन दिन में आनरेरी मैजिस्ट्रेटों को कचहरी जाना पडेगा, वहां रुपा दोरुपा जुर्वाना देना होगा, और अमला बगैरह भी कुछ लेमरेंगे, नाहक़ दो तीन दिन लग जायेंगे, इससे इनको कुछ देदिला कर पोछा छुड़ा

पर०। अरे यातो बडा पाप बिसाया भाई! म्हाने दो पैसा दिखाया तो सहो, पण यातो कोलियना।

द०। ये दो पैसे नहीं लेंगे दो जने हैं, दो दो आने दे।

पर०। अच्छा चार आना ही देवांगा थे बात करो,

द०। बातकरी कराई, चार आने हमें दो तुम अपने घर जाओ

[परदेशी चार आने देता है]

द०। मगा ये चारआने लो! इस बिचारे गरीब परदेशी को जाने दो।

काले०। अच्छा लाला! तुम्हारे कहने से चार आने लिये लेते हैं, नहीं तो यह शिकार रुपये को थी।

[सब गये]

मच्छर स्तोत्र।

१ हे मच्छर देव! नमोनमः! यदि आप को प्रणाम न करें, तो रात भर आपके कोपसे मरें, और दिन भर आपके विषसे जलें, अतएव हे अहो रात्रि काल स्वरूप! आप को प्रणाम सलाम दोनों!

२ हे मशक महादेव! किसी कवि ने आपके पराक्रम की प्रशंसा में समस्या दी है कि 'मशक गलक रंध्रे हस्ति यूथाः विशांति' और आज कलके प्रसिद्ध कवि गोवर्द्धन भट्ट, और रामकृष्ण आदिने इसको अनेक प्रकार से पूर्ण किया है, यद्दिच ये लोग इसको अद्भुत, और असंभव कहते हैं, परतु मैं तो समझता हूं कि आपके गलेमें हस्ति यूथ क्या त्रिलोको भी समा सक्ती है, अतएव हे विराट् भगवान्! आप की जय! जय! जय!

३ हे मिश्र जी महाराज! बहुधा लोग विवाह शादी में हासा से मिस्सर जी से मच्छर जी कहते हैं तो यदि हम उसके बदला लेने के लिये आप मच्छर जी से मिस्सर जी कहें तो कुछ अनर्थ न होगा। अतएव आज से हमारे आपके हिसाब की फारगखती है

४ हे पंडित मच्छरनाथ महा महोपाधयाय जी! भट्ट मोक्ष मूलर आदिने भूमं

इन की अनेक जीवित, और मृतक भाषायें पढीं, और बड़े बड़े प्रघट वा गुप्त वेदादि ग्रंथों का उद्धार किया है, परंतु जिस समय आप अपनी छात्र मंडली ले करके पंचम स्वर में अपना लवेद आरंभ करते हैं, उस समय इन विद्वानों की बुद्धि भी मोहित हो जाती है, और नहीं जानते कि आप किस लोकोत्तर विषय का वर्णन कर रहे हैं, अतएव हे विद्वत्सभा सभाजित ! आप की बलिहार !

५ हे महा भागवत मच्छरदास जी ! आपका वर्णन श्रीमद् भागवत में भी आया है, लोग यह न समझें कि आप अश्लोय हैं, श्री भागवत में कहा है कि 'कस्त्वंमच्छ-रणे लोके वलाद्वमा बलान् बला' अतएव 'हे निगमकल्पतरोर्गलितम् फलम् !, हम आप की कथा सुनते हैं.

६ हे मियां मशकदीन ! आपका संस्कृत नाम 'मशक' है और उर्दू में मशक प-खाल से कहते हैं, सो वास्तव में आपका मशक नाम बहुत ठीक है, क्योंकि आपके उदर में मनों रुधिर भर सक्ता है, परंतु आप को मगरो के लिय एक बैल की कमी है, सो आशा है कि आप बैल की ? मनोपुर के राजा के हाथी पर सवार होंगे, अतएव हे गजपति ! घणी खमा !

७ हे भुनभुनानंद सरस्वती ! यदि च आप रात्रि को काठ काठ कर शरीर को बैलून के समान फुला दें, यदि च आप समस्त शरीर में वेदना करदें, परंतु छिंदूशास्त्र कहता है कि आपको कोई न मारे, यदि मारे, तो वर्षों तक नरक में पड़े. अतएव हे दैवी विपत्ति ! हम आपके शरण हैं !

८ हे थ्री नंबर मास्को इनफेंट्री के कर्नेल ! यद्यपि बुद्धिमानों ने आपके रिसाले-तोपखाने, और पलटन के आक्रमण के बचाने के लिये अनेक यत्न मशहरी, नल, धूआं आदि से किया है, परंतु आपके वेगको रोकनेवाला आज तक कोई हुआ हो नहीं आप अपना पराक्रम किये बिना नहीं मानते. क्योंकि अतंयत सूक्ष्म मशहरो में आप अतंयत सूक्ष्म होजाते हैं, नल में आप प्रवेश करते ही नहीं, धुंए में आप हिलमिल कर एक होजाते हैं. निदान आप हमारे अदृष्ट स्वरूप हैं, यदि कोई आपके शासन का उपाय अविष्कार करै, तो हम उसे भारतेंदु की एडिटरी मुफ्त में देदें।

९ हे कविकुल कमल कलाधर ! आप की प्रशंसा में कवियों ने बहुत कुछ वर्णन किया है.

प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ट मांसं, कर्णे कलंकि मपि रौति शनैर्विचित्रम्। छिद्रान्निरू

पा सहसा प्रविशत्य शंकं, सर्वं खलस्य चरितमशकः करोति ॥

अर्थात् पहिले पैरों में पड़ता है, पीछे से मांस खाता है, फिर कुछ कानों में कहता है, और छिद्र देख कर झट घुस बैठता है, निदान खलके सब चरित्र मच्छर करता है. परंतु आप को इससे भी लज्जा नहीं आई. वरंच प्रति दिन आपको खलता बढ़ती ही जाती है, अतएव आपको खल, और भूमी दोनों नज़र है

१० हे सम बिषम बिज्ञान बिरहित! यद्यपि आपका डंक बहुतछोटा, और खोटा है, पर उससें बिच्छू भिड़, सांप आदि सब के डंक हार मानते हैं, अतएव आप पेटंट 'बिषस्य बिष मौषधम्' है.

११ हे अनादि अनंत निर्गुण निराकार! जैसे आप इत्यादि बिबिध बिरुदावली बांदित हैं वैसेही आप की उत्पत्ति भी बिचित्र है. जहां कूड़ा कर्कट गंदापन हो, वहां आप स्वतःसिद्ध उत्पन्न होजाते हैं. अतएव आप स्वयं भगवान् हैं. हम आपकी स्तुति करते हैं.

१२ हे संसारसार सर्बस्व! संसार के षड्वर्ग में एक मत्सर भी है. बस आप भी वही हैं. जैसे मत्सर का मारा दिन रात बेचैन बाकुल रहता है, वैसेही आपका काटा भी दिन रैन बचैन रहता है अतएव 'हे निर्मत्सराणाम् मताम्' नतास्म।

१३ हे दिनमणि मंडन! हे राचिरंजन! आपका दिनमें कुछजोर कम, और राचिको बिशेषबढ़ताहै, अतएव आप निशाचरहैं, और शायद लंका के प्रबल प्रतापी महाराज रावण के बंश से आप का संबंध हो तो आश्चर्य नहीं. अतएव हम गवर्नमेंट से आप को सिफारिश करते हैं कि आप को शीघ्र ही कोई टाईटिल् द. क्योंकि आप पुराने खानदानी हैं।

१४ हे सीता संदेश सहायक! सुना है कि जिस समय हनूमान् जी सीताजी की खबर लेने लंका गये थे, उस समय सुरसा राक्षसी के भयसे आपही का रूप धारण किया था, अतएव हनूमान् जी के प्रथमावतार! जय, जय, सीताराम!

१५ हे पदार्थ बिद्या प्रतिपादित! बड़े बड़े डाक्टरों का मत है कि आपके द्वारा भी कुछ सृष्टि का उपकार है. अर्थात् आप दुष्ट रुधिर का पान करके जीवों को सुख पहुंचाते हैं, बस यदि यहसत्य हो, तो आप की दीर्घायु की प्रार्थना करते हैं। स्वस्ति! स्वस्ति!! स्वस्ति!!!

१६ हे चिन्मूर्ति! किसी कबि ने कहाहै

हरो हिमालये शते शेषे शेतेसदा

हरिः। आकाशे भ्रमते सूर्यो जाने मशक शंकया

अर्थात् आपकी शंका से महादेव जो हिमालय पर सोते हैं, शेष पर नारायण शयन करते हैं, और सूर्य आकाश में नित्य विचरते हैं, तो बतलाइये अब आप से बड़ा कौन है? अतएव त्राहिमाम्! त्राहिमाम्!!

१७ हे कलिकाल कुतूहल! वर्त्तमान समय के उन्नतिवादी आर्य समाजियों के गुरु श्री स्वामि दयानंद जो जिस समय सर्वांग में मिट्टी लगाते थे, उस समय उन्हीं ने भी आपही के भयसे यह भगर कहा था, अतएव आप भूत, भविष्य, सत्य, कल्कि, वेद, पुराण, आस्तिक, नास्तिक, सबके मान्य, अमान्य, दृष्ट, दृश्यिच, शिष्ट सच्चरित्र आदि हैं, अतएव आपको नमस्ते! नमस्ते!! नमस्ते!!!

हास-परिहास।

भारतवर्ष के नाश करनेवाले वचन

१ हुइ है वही राम रच राखा, कोकर तर्क बढ़ावै शाखा।

२ कोई नृप होय हमें का हानी, चेरी छांडि न होइ व रानी।

३ हानि लाभ जीवन, मरण यश अपयश विधि हाथ।

४ यद्दाचा लिखितं ललाट पटले तन्मार्जितुंकः क्षमः।

५ नहिचलति नराणां भावनी कर्मरेखा,

६ यदस्मदीयन्नहि तत् परेषाम्।

७ तुलसी विरला बागके सींचतही कुंभिलाय, रामभरोसे जेरहें पर्वत पे हरि आय।

८ तक़दीर से चलती नहीं तदबीर किसीकी।

इत्यादि, इत्यादि,

किसी काले कुरूप मबज़ज़ के इजलास में किसी काली भुशुंड खोने एक सुरूप नवयुवा भद्रलोक पर खान पान को नालिश की थी मबज़ज़ ने कहा तुह्मारा दावी हमें झूंठ मालूम होताहै, क्योंकि तुझ सरीखी बद शकल औरत पर यह खूब सूरत जवान मुश्ताक नहोता, खोने जवाबदिया हुजूर! दुनियां में रूप को कोई नहीं पूंछता, गुण का क़दर होती है, नहीं तो यह शकल और सबजजी?

बैजू बावरे के अनमेल।

वाह! वाह! क्या कविता है? इसका अर्थ

ओरिएन्टल् कॉपिस् को करना चाहिये.

पूरब तें कोलहू उड़ो मैं जानो बड़बेल।
खटामदेसी मुंड में आन लगो।१।
सोटा मारूं आम में झर झर परै डिभोरो।
गहिकै लठा मारूं तो सवा मन मूंग ऐसो
झरो जैसी छाछ।२।
खर खर खर नंदो वहै घोंट समाने ढोम।
पगास लगो है तो आंच बराय के तापलै।३।
[बस बहुत है, इसीके समझनेवाले मरगये]

शनैश्चर की दृष्टि।

आज कल मंदिर और मस्जिदों पर शनैश्चर की दृष्टि है. दर्भंगा का मंदिर टूटा, बनारस से मंदिर का हाल सुन ही चुके, कलकत्तेमें मस्जिदको खरांबो आगई, जबलपूरमें महावीरके मंदिरपर दांत लगरहाहै अबसुनतेहैं कि यदि जगन्नाथजीके मंदिरकी मरंमत न हुई. तो उसका भी कुछ हिस्सा स्वाहा. चलो झगड़ा निबटा! बहुत टंटं पीं पीं लगा रखी थी!

क्षमा! क्षमा!! क्षमा!!! घणो क्षमा!!!

प्रिय पाठक महा महोदय!

भारतेंदु के विलंब में और एक साथ प्रकाश होनेमें हमारी कुछ भी त्रुटि नहीं है, यह त्रुटि, बृंदा बन, होली, चढ़ाव, हरिद्वार और कुंभ की हैं. इन से किसने कहा था कि तुम भारतेंदु के तीसरे अंक में ही अटक जाइये. खैर जैसे तैसे इन सबको हिंदुस्तान के बाहर निकाल कर छुट्टी पाई कि फिर गर्मी को गर्मागर्मी हुई. विचार तो यह था कि दंड कमंडल बांध कर नैनीताल, या शिमला चले जाते, परंतु आप लोगों की चिट्ठियों ने बेचैन कर दिया 'पत्र भेजो' २ लो महाराज! पत्रलीजिये अब यदि ईश्वर ने चाहा तो हम समय पर ही मिलेंगे, विलंब सब निकालदी गई. एक बात और है कि कुछ पेज अबकी कम हैं, सो इसकी कमी आगे पूर्ण करदी जायगी. कोई विषय हाथ आजावे। बाकी क्षमा, क्षमापन की रीति तो सदा से चली आई है, सो आप जानतेही हैं, हम क्या कहें. आप को क्षमा जाने और आप जाने.

संपादक।

National Library, Calcutta-27

रसिकप्रकाश प्रेस—देहली में बाबू रामचंद्र के कृपा।